

1693

उर्दू संग्रह

पुस्तक का नाम ~~मार्कण्डे पुराणा भाग~~

उर्दू भाग दोयम

लेखक ~~पाण्डित रघु राज दूबे बनारस~~

प्रकाशन वर्ष - 1884

आगत संख्या - 1693

मार कण्डे प्राण

माकेण्डे

1693

Entered in Database

~~Signature~~ with Date

मा

مارکراڈے پورا ساریک

جیلد ۲

پرستاری سہا سونی اسیار مارکراڈے جی کا بنایا ہوا

جیس میں

برہما جی کی اُتپاتی فیر سب دےوتا، راسس، مہنوی، پش، پکسی، ولس بڑیا دی سب
جگات کی اُتپاتی اُور پڑھی کے ساتوں ڈیپ اُور پڑت اُور سہد اُور ندیاں
اُور مہننتر اُور بریوں کا ہتانت اُور دےوی ماہاتمہ ولسار پُورک کھائے

اُتسکو

راجکسار بابو دےونندن سینگ ریس رانانان راجشیرہر اُور جمی داس پراگات
جیلے تیرہت و چسارن نے پریوکار کی دھ سے اُور پریڈت راجراج دے ساری-

فیکٹ یا کتا بنارس کالین سے اُتھا کا کے سات کو بے ج

سویہ پورا

اُور پریڈت بال دے پراساد اُور پریڈت سہنل پراساد کے دھار اُور اُور اُور اُور

سویہ سواسی دھال نے لیرا

رہان لیر بن ج

سویہ نول کیشور کے پنا لیر میں سہریت اُور

سہنل ۱۹۸۰

مارکنڈے پورا

ح ترجمہ بھاشا وارو

جلد دوم
پرستاری سہا سونی اسیار مارکراڈے جی کا بنایا ہوا

شری برہما جی کی پیدایش پھر سب دیوتا و اسیس و آدمی و ورنہ و پرنہ و چرنہ و ہنات و غیرہ سب مخلوقات
کی پیدایش اُور زمین کے ساتویں اُور کھنڈا اُور سہنل اُور پھار اُور دیرا اُور مہننتر کی کھا اُور دیرا سہا
مفصل بیان کیا گیا ہے

اسکو
شری راجکار بابو دیونندن سنگہ ریس خاندان راج نیوہر دیوندار پرگنات اضلاع ترمیت و جیارن
بنظر فہ عام ہنود کے پندت راج دے سب ساریکات یا فہ ہنارن کالج سے ترجمہ کرا کے مطبع کو مہرٹ دیا

چناچہ
پریوکار سوامی دیال صاحب کا سہر شری شری خوشنویس ناگری و فارسی مرتب ہو کر بالی ہتی مالک
مقام کھنڈ

مطبع نشی نول کشورین چسپا گیا

جنوری ۱۹۸۰



11
५११

स
न
म
र
न
ः
ज
म
व
र
म
व
र
म
प
र
र

सूचीपत्रमार्कण्डेयपुराण. जि. २

فہرست مارکنڈے پیران جلد ۲

تلفاثری	صفحہ	صفحہ	خلاصہ مضمون
योगیوں کا برہم چرچہ -	۴۱ ۲	۶ ۴۱	جوگیوں کا برہم چرچہ -
اوتکار کا ویرنن -	۴۲ ۳	۱۱ ۴۲	اوتکار کا ویرنن -
میتو کے لکھنا -	۴۳ ۱۳	۲۸ ۴۳	آمارک -
راجا ااکر کا لکھنا پانے سے	۴۴ ۱۴	۴۱ ۴۴	راجا ااکر کا لکھنا پانے سے
کار ویرنن ہو جاننا -			تارک الدنیا ہو جاننا -
برہما جی کی اوتپنن -	۴۵ ۱۵	۵۶ ۴۵	برہما جی کی اوتپنن -
برہما جی کی آیا یو کا پ	۴۶ ۱۶	۶۰ ۴۶	برہما جی کی عمر کا اندازہ اور
ماہ اور مہنہ نرے اور			مہنہ نرے اور دیوتوں کی
دے ونا جی کے وپ کی سنہا -			پس کی مہار -
جگت کی اوتپنن -	۴۷ ۱۷	۸۰ ۴۷	جگت کی اوتپنن -
راکھس اور دے ونا پتر	۴۸ ۱۸	۹۱ ۴۸	راکھس و دیوتا و پتر و آدمی
مہنہ دین رات سنہا			و دن و رات و صبح و شام
جیوتنا گنہ و پشوپتی			و گنہ و پشوپتی و چنڈ و ورن
رکھ وادل وینولی دے ونا			جانور و نباتات و بادل و بجلی
دی کی اوتپنن -			و غیرہ کی پیدائش -
اوتپنن کی آدی مہنہ	۴۹ ۱۹	۱۰۸ ۴۹	اہمار پیدائش مین آدمی کی
جی کی دنا اور سہا			حالت اور خاصیت -
سہا مہنہ اور مہنہ	۵۰ ۲۰	۱۳۰ ۵۰	سہا مہنہ اور مہنہ
پا سہی سے ورنہ دکھنا			استری سے جگت اور دیکھنا
اکھ لکھنی پوہنی تونہ			اور شرکھا اور کھنی اور کھنی
لکھنا شانتی سہنی			اور کھنی اور کھنی

تتواری	صفحہ	ادھی	خلاصہ معنون
ہیرامی رھاڈ کا رُتانت سوارو چیہ مَنوَنتر کی ک یا مَہَ ایک براہِمن کا ایک دین مَہَ چار ہزار کو شِو ل کر ہِما چل پَرنِی ت پَر پہنچنا اُور وِہاں بَروِثِنی نام اُپسرا کا اُس پَر اُپ سکت ہونا اُور براہِمن کا اُس کو اُپسرا کا رُتانت کرنا ایک گنڈھ کا براہِمن کا ہو کر بَروِثِنی سے بَہار کرنا براہِمن کا گنڈھ سے بَروِثِنی نام اُپسرا کے سَروِج نام لڑکا پیدا ہونا سَروِج کا سَورِمان نام دَھر گنڈھ سے اپنا بواہ کرنا پھر بھاوری نام کینا سے بواہ کر کے اُس سے سب جانور وِکی بولی سمجھنے والی پڑیا سیکھنا پھر ایک اُپسرا کی بیٹی سماء کلاوتی سے بواہ کرنا اور اُس سے پد منی پڑیا پانا (پد منی پڑیا کی صفت ادھی اُپسرا مین مَشرَح بیان کی گئی ہے)	۶۱	۲۹۸	۶۱
۶۲	۲۹۹	۲۹۹	۶۲
۶۳	۳۰۱	۳۰۱	۶۳
۶۴	۳۰۲	۳۰۲	۶۴
۶۵	۳۰۳	۳۰۳	۶۵
۶۶	۳۰۴	۳۰۴	۶۶
۶۷	۳۰۵	۳۰۵	۶۷
۶۸	۳۰۶	۳۰۶	۶۸
۶۹	۳۰۷	۳۰۷	۶۹
۷۰	۳۰۸	۳۰۸	۷۰
۷۱	۳۰۹	۳۰۹	۷۱
۷۲	۳۱۰	۳۱۰	۷۲
۷۳	۳۱۱	۳۱۱	۷۳
۷۴	۳۱۲	۳۱۲	۷۴
۷۵	۳۱۳	۳۱۳	۷۵
۷۶	۳۱۴	۳۱۴	۷۶
۷۷	۳۱۵	۳۱۵	۷۷
۷۸	۳۱۶	۳۱۶	۷۸
۷۹	۳۱۷	۳۱۷	۷۹
۸۰	۳۱۸	۳۱۸	۸۰
۸۱	۳۱۹	۳۱۹	۸۱
۸۲	۳۲۰	۳۲۰	۸۲
۸۳	۳۲۱	۳۲۱	۸۳
۸۴	۳۲۲	۳۲۲	۸۴
۸۵	۳۲۳	۳۲۳	۸۵
۸۶	۳۲۴	۳۲۴	۸۶
۸۷	۳۲۵	۳۲۵	۸۷
۸۸	۳۲۶	۳۲۶	۸۸
۸۹	۳۲۷	۳۲۷	۸۹
۹۰	۳۲۸	۳۲۸	۹۰
۹۱	۳۲۹	۳۲۹	۹۱
۹۲	۳۳۰	۳۳۰	۹۲
۹۳	۳۳۱	۳۳۱	۹۳
۹۴	۳۳۲	۳۳۲	۹۴
۹۵	۳۳۳	۳۳۳	۹۵
۹۶	۳۳۴	۳۳۴	۹۶
۹۷	۳۳۵	۳۳۵	۹۷
۹۸	۳۳۶	۳۳۶	۹۸
۹۹	۳۳۷	۳۳۷	۹۹
۱۰۰	۳۳۸	۳۳۸	۱۰۰

موضوع	صفحہ	ادھیا	خلاصہ مضمون
हंसिनी और चकई और हिरन हिरनियों के आपुस में बात चीत -	६५	३०२	३०१
एक हिरनी का स्त्री हो जाना और उसी स्त्री और स्वरोचि के सम्भोग से स्वरोचि मनुका उत्पन्न होना -	६६	३१०	३११
स्वरोचि मन्वन्तर के देव ता और ऋषियों के नाम -	६७	३२१	३२२
पद्मिनी विद्या और उसके धीन ज्ञातों निधियों का वृ- त्तान्त कि किस निधि से कौ- न लाभ होता है -	६८	३२३	३२४
शीतम नाम मन्वन्तर की क- था में एक ब्राह्मण की कथा जो अपनी खोई हुई स्त्री को मँगवा देने की प्रार्थना राजा उ- त्तम से इस वास्ते करता था कि स्त्री न होने से धर्म का ना- श और पापों का सम्बन्ध होता है	६९	३३४	३३५
राजा उत्तम का बलाक नाम रासस से उस ब्राह्मण की खो- ई हुई स्त्री को लाकर उसके पति के घर पहुँचा देना -	७०	३४१	३४२
एक हंसिनी और एक चकई एक हिरन और हिरनियों की गفتگو और سوال و جواب -	७१	३४३	३४४
एक हिरनी का स्त्री हो जाना और उसी स्त्री और स्वरोचि के सम्भोग से स्वरोचि मनुका उत्पन्न होना -	७२	३४५	३४६
स्वरोचि मन्वन्तर के देव ता और ऋषियों के नाम -	७३	३४७	३४८
पद्मिनी विद्या और उसके धीन ज्ञातों निधियों का वृ- त्तान्त कि किस निधि से कौ- न लाभ होता है -	७४	३४९	३५०
शीतम नाम मन्वन्तर की क- था में एक ब्राह्मण की कथा जो अपनी खोई हुई स्त्री को मँगवा देने की प्रार्थना राजा उ- त्तम से इस वास्ते करता था कि स्त्री न होने से धर्म का ना- श और पापों का सम्बन्ध होता है	७५	३५१	३५२
राजा उत्तम का बलाक नाम रासस से उस ब्राह्मण की खो- ई हुई स्त्री को लाकर उसके पति के घर पहुँचा देना -	७६	३५३	३५४

تلاش	صفحہ	صفحہ	صفحہ	ملاحظہ مضمون
راجا उत्तम का अपनी भी	७१	३६३	३५८	41
खेड़ी हुई स्त्री का पता लग				
ने के बाले एक मुनि के पा				
स जाना और मुनि से उस				
का पता लगना -				
राजा उत्तम का अपनी नि:	७२	३६६	३६८	42
प्रेमा स्त्री के चित्त में प्रेम उ				
त्पन्न होने के बाले मित्र वि				
न्दा की पत्न करना और उस				
बाल से उस दुष्टीला स्त्री				
का सुधीला हो जाना फिर				
पाताल से उस स्त्री का आ				
कर प्रेम पूर्वक राजा से मि				
लने और सरस्वती का सक्त				
जपने से नाग राज की गूंगी				
कन्या का वक्ता हो जाना -				
और इस कथा के सुनने वा				
ले के चित्त में परस्पर प्री				
ति का उत्पन्न होना -				
औत्तम नाम मन्वन्तर के	७३	३७०	३८८	43
इन्द्र और देवता और ऋ				
षियों और राजाओं के नाम -				
नामस मन्वन्तर की कथा -	७४	३७५	३९१	44
रेवत मन्वन्तर की कथा -	७५	४००	४१५	45

راجا اُتم کا اپنی بھی کھوئی ہوئی
استری کا پتہ ملنے کے واسطے
ایک من کے پاس جانا اور
اُس من سے اُسکا پتہ
لگ جانا۔

راجا اُتم کا اپنی بیوفا و بد مزاج
عورت کے دل میں موافقت و
محبت پیدا ہونے کے واسطے
بشرِ بندا کی جگہ کرنا اور اُس جگہ
کرنے سے اُس بد مزاج عورت
کا نیک مزاج ہو جانا پھر پاتال
سے اُس عورت کا اگر راجا سے
بمحبت تمام ملنا اور سرسوتی جی
کے ارشٹ اور سوگت جینے سے
ناگ راج کی گونگی کتیا کا گویا ہو
جانا اور اس کتھا کے سنتے
والے کے مزاج میں مع سکے
لواحقون کے موافقت باہمی
پیدا ہو جانا۔

اوتتم نام منو نتر کے انور اور
دیوتا اور ریکھ اور راجا لوگون
کے نام۔

نامس منو نتر کی کتھا۔

ریوت منو نتر کی کتھا۔

तत्त्वार्थ	अध्याय	श्लोक	صفحہ	ادھیا	خلاصہ مضمون
वासुध मन्वन्तर की कथा—	१६	४२६	२५१	६५	चाहیکم منو نتر کی کہتا۔
वैवस्वत मन्वन्तर की कथा और सूर्य भगवान से यमुना और यमराज का उत्पन्न होने की कथा—	७७	४३४	२५२	६६	بیوسوت منو نتر کی کہتا اور سورج بھگوان سے یمنہ اور جمراج جی کے پیدا ہونے کی کہتا۔
सूर्य भगवान की स्तुति—	७८	४४५	२५२	६७	سورج دیوتا کی استت۔
वैवस्वत मन्वन्तर के देवता और ऋषियों के नाम—	७९	४४४	२५६	६७	بیوسوت منو نتر کے دیوتا اور رکھ وغیرہ کے نام۔
सावर्णिक मन्वन्तर की कथा और उस मन्वन्तर के देवता और ऋषियों के नाम—	८०	४५८	२५०	७०	سابرنیک منو نتر کی کہتا اور س منو نتر کے دیوتا اور رکھ وغیرہ کے نام۔
देवीजीका नाहात्म्य और दशभुजा वाली महा काली की उत्पत्ति और मधुकैटभ देव का मारा जाना —	८१	४६१	२६७	७१	دیوی جی کا مہاتم اور دس بھجا والی مہاکالی جی کی پیدائش اور مہد کی بھجہ نام اسٹر کا مارا جانا۔
अगरह भुजा वाली और सिंह बाहनी महालक्ष्मीजी की उत्पत्ति और महिषासुर की सेना और सेनापति का मारा जाना—	८२	४८४	२७६	७२	اگرہ بھجا والی سنگھ باہنی مہا بھمی جی کی پیدائش اور مکھیا سر نام راجپس کی سپاہ اور سپہ سالار لوگوں کا بھی مارا جانا۔

فرست ختم ہوئی

تعلیم خاکیاے اہل کمال سوامی مال مصنف ہذا

मार्कण्डेयपुराण

जिल्द दूसरी॥

ماركندے پوران جلد دوم

मू. अलर्क उवाच ॥ भगवन् योगिनश्चर्यां
श्रोतुमिच्छामितत्त्वतः । ब्रह्मवर्त्मन्यनु-
सरन् यथा योगी न सीदति ॥ २ ॥ १ ॥ १ ॥

टी. फिर अलर्क ने कहा कि हे भगवन् योगी की चर्या सुनने की
इच्छा रखता हूँ उसको तत्त्व पूर्वक वर्णन कीजिये कि जिस ब्र-
ह्मवर्त्म में प्राप्त होकर योगी फिर कष्ट नहीं पाते ॥ २ ॥

मू. दत्तात्रेय उवाच ॥ मानापमानौ यावेतौ प्रीत्युद्वेगकरो
वृणां । तावेव विपरितायौ योगिनः सिद्धिकारकौ ॥ २ ॥

टी. दत्तात्रेयजी कहते हैं कि मान से प्रीति और अपमान से उद्वेग जो मनुष्यों को
होता है इसी को उलटा मान लेने से योगी को सिद्धि प्राप्त होती है ॥ २ ॥

मू. मानापमानौ यावेतौ तावेवाहुर्विषासृते । अ-
पमानौऽमृतं तत्र मानस्तु विषमं विषं ॥ ३ ॥

टी. और यह मान और अपमान विष और अमृत के सदृश है
अपमान को अमृत और मान को विष समझना चाहिये ॥ ३ ॥

मू. चक्षुःपूतं न्यसेन्यादं वस्त्रपूतं जलं पिबेत् । सत्यं
पूतां वदेद्वाणीं बुद्धिपूतञ्च चिन्तयेत् ॥ ४ ॥

टी. और नेत्र से पवित्र करके राह चलना चाहिये और पानी छानकर पिये
और सच बोले और अपनी जान में जो बात अच्छी हो वही करे ॥ ४ ॥

मू. आतिथ्यश्राद्धयज्ञेषु देवयानोत्सवेषु च । महा-
जनञ्च सिद्ध्यर्थं न गच्छेद्योगवित्कचित् ॥ ५ ॥

टी. और अतिथ्यकाल और श्राद्ध और यज्ञ और देवयान और उत्सव

वदन्त्यादि कालों में योगी को अर्थसिद्धि के वास्ते न जाना चाहिये ॥ ५ ॥

मू. व्यस्तेविधूमेव्यङ्गारेसर्वस्मिन्भुक्तवर्जने । ज्ञे-
तयोगविद्वैद्यंनतुविधेवनित्यशः ॥ ६ ॥

टी. और क्लेश के समय और विधूम अर्थात् जिस समय घर में धुआँ न निकलता हो और जिस किसान के घर में आग न हो और वह भोजन कर चुका हो इन वक्तों में भी भिक्षा के वास्ते योगी को खाल न करना चाहिये ॥ ६ ॥

मू. यद्यैवमवमन्यन्तेजनपरिभवन्तिच । तथायु-
क्तश्चरेद्योगीसतांवर्त्मनदूषयन् ॥ ७ ॥ ७ ॥

टी. जिससे कोई अपमान और गिल्ला न करे और महात्मा लोगों के मार्ग में अर्थात् उन सब की बताई हुई राह में दोष न लगाना चाहिये ॥ ७ ॥

मू. भैक्ष्यञ्चरेद्गृहस्थेषुयायावरगृहेषुच । श्रेष्ठातु-
प्रथमाचेतिवृत्तिरस्योपदिश्यते ॥ ८ ॥ ८ ॥

टी. और गृहस्थों में जो बड़े बड़े मालदार हैं उन्हीं से भोजन माँगे क्यों कि योगियों के वास्ते प्रथम यही उत्तम व्रत है ॥ ८ ॥

मू. अथनित्यंगृहस्थेषुशालीनेषुचरेद्यतिः । अद्भ-
धानेषुदान्तेषुश्रोत्रियेषुमहात्मसु ॥ ९ ॥

टी. इस वास्ते जहाँ गृहस्थ धनो और श्रद्धावान् और इन्द्रीजित् और पण्डित और महात्मा हों वही योगी को जाना चाहिये ॥ ९ ॥

मू. अत ऊर्ध्वं पुनश्चापिअदुष्टापतितेषुच । भैक्ष्य-
चर्याविवर्णोपुजघन्यावृत्तिरिष्यते ॥ १० ॥

टी. और इसके सिवाय जो गृहस्थ दुष्ट और पतित न हों उनसे भी भिक्षा माँगे और जो पतित और हीन वर्ण हों उनसे भिक्षा माँगना योगी के वास्ते नीच वृत्ति है ॥ १० ॥

मू. भैक्ष्यंयवागूतक्रांवापयोयावकमेववा । फलंमू-
लंप्रियङ्गंवाकाणपिण्याकशक्तवः ॥ ११ ॥

टी. और यवागू और नक्र और दूध और कुर्घी और कौनी और फल और मूल और कणपिन्याक और सतुआ ॥११॥

मू. इत्येतेचशुभाहारयोगिनःसिद्धिकारकाः। त
त्प्रयुज्यान्मुनिर्भक्त्यापरमेणाममाधिना ॥१२॥

टी. वही अहार उत्तम और सिद्धि देने वाला योगियों को है इस वाले ए-
क चित्त होकर भक्ति पूर्वक नियम के साथ यही भोजन किया करे ॥१२॥

मू. अपःपूर्वसंस्तुतप्राश्यतूर्णाभूत्वासमाहितः। प्रा
णायैनिततस्तस्यप्रथमाह्वाहतिःस्मृताः ॥१३॥

टी. और भोजन के समय पहिले हाथ में कबल लेकर प्राणाय नमः क
हकर उसको भोजन करलेवै और जल पीकर हाथ धो डाले इस
को प्रथम आहुति कहते हैं ॥१३॥

मू. अपानायद्वितीयातुसमानायेतिचापरा। उदा-
नायचतुर्थीस्यात्स्यानायेतिचपञ्चमी ॥१४॥

टी. फिर हाथ में दूसरा कौल लेकर अपानाय स्वाहा कहकर हा-
थ मुख धो डाले इसको दूसरी आहुति कहते हैं और तीसरे में
समानाय कहै और चौथी आहुति में उदानाय नमः और पांचवीं में
व्यानाय स्वाहा कहकर जल पीवै ॥१४॥

मू. प्राणायामैःप्रथक्कृत्वाशेषंभुञ्जीतकामनः। अ-
पःपुनःसकृत्प्राश्यआचम्यहृदयंस्पृशेत् ॥१५॥

टी. इसी तरह से अलग अलग प्राणायाम करके विशेष अन्न भोज-
न कर हाथ धो फिर एक बार जल पीवै फिर हाथ धोकर हृदय
अपना स्पर्श करै ॥१५॥

मू. अस्तैर्यज्जस्रैश्चर्य्यैश्चत्यागोऽलोभस्तथैवच। व्र-
तानिपञ्चभिर्दूष्णसहिंसावरमाणि वै ॥१६॥

टी. और ब्रह्मचर्य के साथ रहै चोरा इत्यादि न करै और अनोभ

और अहिंसा और विरक्त हो रहे यही पाँचों व्रत भिक्षुक के वा-
ले हैं ॥ १६ ॥

मू. अक्रोधोगुरुशुश्रूषाशौचमाहारलाघवं। नित्य
साध्यायइत्येतेनियमाः पञ्चकीर्तिताः ॥ १७ ॥

टी. और क्रोध न करे गुरु की सेवा किया करे और पवित्र रहकर थोड़ा
भोजन करे और अध्ययन करता रहे यही पाँच उसके नियम हैं ॥ १७ ॥

मू. सारभूतमुपासीतज्ञानयत्कार्यसाधकं। ज्ञाना
नां बहुतायेयं योगविघ्नकरा हि सा ॥ १८ ॥

टी. और जो ज्ञान कार्य का साधन करे और सब से उत्तम हो
परन्तु थोड़ा हो उसी ज्ञान की उपासना करना चाहिये क्योंकि
बहुत ज्ञान योग में विघ्न कारक होता है ॥ १८ ॥

मू. इदं ज्ञेयमिदं ज्ञेयमिति यस्तृषितश्चेत्। अपि
कल्पसहस्रेषु नैव ज्ञेयमवाप्नुयात् ॥ १९ ॥

टी. और जो योगी तृषित होकर कहते हैं कि यह बात जानने के
लायक है इस को जानना चाहिये और उसी में कैसे रहते हैं उन
को हजारों कल्प में ज्ञान नहीं होता ॥ १९ ॥

मू. त्यक्तसङ्गोजितक्रोधोलघाहारोजितेन्द्रियः।
विधाय बुद्ध्या दाराणि मनो ध्याने निवेशयेत् ॥ २० ॥

टी. और जो संग का त्याग करके क्रोध को जीत कर थोड़ा आ-
हार करके जितेन्द्री होकर बुद्धि से सब दावाओं को विधान क-
रके ध्यान में मन लगाते हैं ॥ २० ॥

मू. शून्येष्वेवावकाशेषु गुहासु च बनेषु च। नित्ययु-
क्तः सदा योगी ध्यानं सम्यगुपक्रमेत् ॥ २१ ॥

टी. उनको चाहिये कि एकान्त में और अवकाश स्थान और प-
हाड़ की खोह और जंगल में ध्यान किया करे ॥ २१ ॥

मू. वाग्दाहः कर्मदाहश्च मनोदाहश्च ते त्रयः ।

यस्यैते नियता द्वाजः स त्रिदाहो महायतिः ॥ २२ ॥

टी. और वाक्दाह और कर्मदाह और मनोदाह यही तीन दाह जिस योगी के रहते हैं वही महायती और त्रिदाही कहलाता है ॥ २२ ॥

मू. सर्वमात्मयं यस्य सदसज्जगदीदृशं । गुणा-

गुणमयन्तस्य कः प्रियः को नृपा प्रियः ॥ २३ ॥

टी. दत्तात्रेयजी कहते हैं कि हे अपलर्क यह संसार गुण और अगुण और सन और असत के संयुक्त है इसको जो योगी एकही अत्मा करके जानता है उस योगी को न कोई मित्र है न शत्रु है ॥ २३ ॥

मू. विशुद्धबुद्धिः समलोष्टकाञ्चनः समस्तभूते

पुचतत्समाहितः । स्थानं परं शाश्वतमव्य-

यञ्च परं हिमत्त्वानपुनः प्रजायते ॥ २४ ॥

टी. और निर्मल बुद्धि हो कर लोहे और सोने को तुल्य जाने और सब प्राणियों में सम बुद्धि रखे तो वह ज्ञानी परमात्मा को जानकर परम स्थान में प्राप्त होता है और फिर संसार में नहीं आता ॥ २४ ॥

मू. वेदाः श्रेष्ठाः सर्वयज्ञक्रियाश्च यज्ञाज्जप्यं ज्ञा-

नमार्गश्च जप्यात् । ज्ञानाद्यानं सङ्गरागव्य-

पेतंतस्मिन् प्राप्ते शाश्वतस्योपलब्धिः ॥ २५ ॥

टी. और सब में श्रेष्ठ वेद है और वेद से सम्पूर्ण यज्ञ क्रिया श्रेष्ठ है और यज्ञ से जप और जप से ज्ञान और ज्ञान से सङ्गरागवर्जित ध्यान श्रेष्ठ है क्योंकि ध्यान प्राप्त होने से शाश्वत जो है परब्रह्म वह प्राप्त होता है ॥ २५ ॥

मू. समाहितो ब्रह्मपरोऽप्रमादी शुचिस्तथैकान्त-

रतिर्यतेन्द्रियः । समाधुयाद्योगमिमं महा-

त्माविमुक्तिमाप्नोति ततः स्वयोजितः ॥ २६ ॥

टी. और एक चित्त हो और परब्रह्म परायण हो प्रमाद को छोड़

पवित्र होकर परमेश्वर में निरन्तर प्रेम करके जितेन्द्रा होकर योगी बनने योग को पूरा करे तब वह योगी योग के प्रभाव से मुक्ति पदवी को प्राप्त होता है ६

इति श्री मार्कण्डेय पुराणे योगि चर्याध्यायः॥ ४२॥

अक्तालिस्रानां अष्टाव्यासः

१- पछा लोके ने कहा है जेकून में जोगी का बरत जेज तू तो बरक सत्ते की खोश
रक्ता भोन जे बरत जेज में जोगी रहे कसी भवित में नैन पडते में बान फरमाये
२- दत्ता तरे जी कने लगे के अरे राजा मान ऐसी छत्र से خوشी औरा पान ऐसी भिदरी
से संच जो आदिसु को होता है अस्मिको ब्रह्मण्य एल करने से जोगी सद्ध हो जाते हैं -
३- और ये मान औरा पान मल नर औरा भवित के ही ऐसी पान को भवित समझना चाहे और
मान को नर - ४- और रास्ते को पहिले दिखे ते तब आगे फल रहे औरा पान को चहा नकर पिये
और संच बोली औरा पान दान्त में जो बात अच्ची हो वही करी - ५- और अत्ते काल औरा श्राद्ध
और कल औरा दियो जात्रा औरा दिके कसी अत्तो में जोगी को अत्ते सद्ध करने के واسطे बना जात
६- और कसी की त्कलिय की हालत में औरा जसोत अत्ते के गहर से दूधान न सक्ता हो और जे
सान के गहर में जसोत अत्त न हो औरा जे जे चका हो ऐसे वत्तन में जोगी को जे जे का
मवाल करना चाहे - ७- जे से कोनी पान ऐसी तो हैं शकुन न करी औरा माला लोकोन की
भला होली रासोन में दोष न लगा दी - ८- औरा गेहसते अन्तरम वालोन में जो ब्रह्म ब्रह्म
माला रासोन अन्तरम से काने का सवाल करी कोन के जोगी के वासते भला अन्तरम ब्रह्म
९- असो सत्ते जोगी को अन्तरम के बान जो माला हो, औरा माला लोकोन के बान
श्रद्धावान ऐसी जेत दत्तनो वासे होन औरा नदरी जेत औरा नदरी होन जाना चाहे -

۱۰ اور جو کسان زشت اور پست یعنی بے دھرم نہوں انھیں لوگوں سے بھیجے مانگنا چاہی
اور میں برن یعنی بیج ذات سے بھیجے مانگنا جوگی کے لیے بیج برت ہے۔ ۱۱ اور جو اگو اور گھوڑ
اور دودھ اور گڑھی اور کوئی اور پھل اور مول اور کن پنک اور ستہ۔ ۱۲ یہی انار اتم اور
جو گیہ کو ستہ دینے والا ہے اس واسطے ایک چٹ ہو کر جھکت ہو ربک ہی بھوجن نیم کے ساتھ کرنا چاہیے
۱۳ اور بھوجن کر نیکی وقت جب پہلا اناج کھا دے تو پراٹا سے نہ لکھ کر منہ میں رکھی اور کھائی اور
پانی پیکر پاتھ دھو ڈال دے پہلی آہٹ کھاتی ہے۔ ۱۴ اور دوسرے لقمہ میں اپنا سے سوا لکھ
کھائے اور پاتھ نہ دھو ڈال یہ دوسری آہٹ ہے اس طرح تیسرے لقمہ میں سمانا سے نہ کھی
یہ تیسری آہٹ ہے اور چوتھے لقمہ میں اڈانا سے نہ اور پانچویں لقمہ میں بیانا سے سوا لکھ کھا
اور پانی پیے۔ ۱۵ اس طرح پانچون لقمہ کے ساتھ الگ الگ پرانا یا مکر کے باقی کھانا کھا
اور پانی پیکر پاتھ تیر دھو ڈال اور اپنے ہر دی کو چھو۔ ۱۶ اور ہر چہرے کے ساتھ
رہی خوری وغیرہ مری اور لالچ اور جان کشی سے پرہیز کری اور برکت ہو رہی ہے پانچ
برت جو گیہوں کے واسطے ہیں۔ ۱۷ اور کرودھ یعنی غصہ مری اور گرو کی سیوا کیا کرے
اور پوتر رہی اور تھوڑا بھوجن کری اور ادھین کری یعنی بید پڑھا کری یہی پانچ نیم فقیری
کے ہیں۔ ۱۸ اور جوگ چرج کا سادھن کری اور جو گیان سب سے اتم اور تھوڑا ہو
اسکی آبا سنا کرے کیونکہ زیادہ گیان جوگ میں گھن ڈالتا ہے۔ ۱۹ اور جو جوگی لوگ
ترشا کر کے کہتے ہیں کہ یہ بات جاننے کے لائق ہے اسکو جانتا جاہیے اور اس میں مصروف
رہتے ہیں انکو نزاروں کپ میں بھی گیان نہیں ہوتا۔ ۲۰ اور جو جوگی سنگ ساتھ لوگوں کا
چھو کر کرودھ کو بس کر کے تھوڑے آثار کے ساتھ رکھ کر اندری کو جیت کر بدھ سے سب درواز
کو بدھان کر دھیان میں من لگاتے ہیں۔ ۲۱ انکو چاہیے کہ تنہائی میں اور ہمار کی کھوہ
اور جنگل میں رہ کر عیشہ دھیان کریں۔ ۲۲ جس جوگی میں پاک دھ اور من دند اور لوم
دند ہوتا ہے وہی جوگی مہاتھی اور تر دندی کہلاتا ہے۔ ۲۳ دتا تر سے جی کہتے ہیں کہ ہے
الوک یہ سنار جو گن اور گن اور ست اور است سے شام ہے اسکو جو جوگی ایک ہی آتما
جاننا ہے اسکا نہ کوئی دوست ہے نہ دشمن۔ ۲۴ اور نرمل بدھ ہو کر لوہے اور مٹے کو
ایک جانی اس طرح سب پرانیوں میں ایک تھا و دیکھی تودہ گیانی پر ماتا کو جان کر پریم
استھان میں پہنچ جاتا ہے اور پھر اس سندھ میں نہیں آتا ہے۔ ۲۵ سب سے افضل بیدی

और स्मिथोन बंद से जग कर या और जग से जब और जब से गियान और गियान से सग
राग ब्रजित दहियान अफुल हो किनके दहियान प्रभित होने से शांत होत प्रेम ब्रह्म प्रभित
होता है - ५५ और एक चित होकर और प्रभित के शून होकर और प्रभित को चोखोकर और प्रभित
होकर और प्रभित शून प्रभित प्रभित कर के जो गी अंदरी जित होकर अपने जो गी को सपित करी
तब वह जो गी अपने जो गी के प्रभित से मक्त प्रभित को प्रभित होता है - فقط

भू. दत्तात्रेय उवाच ॥ एवं यो वर्तते योगी सम्य
योग व्यवस्थितः । न स व्यावर्त्तितुं शक्यो
जन्मान्तर शतैरपि ॥ १ ॥ २ ॥ १ ॥ १ ॥

टी. दत्तात्रेयजी कहते हैं कि हे अलर्क जो योगी सम्यक् प्रकार
से योग में व्यवस्थित रहते हैं वह इस संसार के आवगमन में
कभी नहीं आसते हैं ॥ १ ॥

मू. दृष्ट्वा च परमात्मानं प्रत्यक्षं विश्वरूपिणं । विश्व
पादशिरो ग्रीवं विश्वेशं विश्वभावनं ॥ २ ॥

टी. इसवास्ते विश्व रूप जो परमात्मा विश्व के मालिक और उ
त्पन्न करने वाले हैं उनका प्रत्यक्ष रूप जानकर ॥ २ ॥

मू. तत्प्राप्तये महत्पुण्यसामित्येकाक्षरं जपेत् । त
देवाध्ययनं तस्य स्वरूपं शृणुवतः परं ॥ ३ ॥

टी. उनकी प्राप्ति के वास्ते अति पवित्र होकर ओंकार जो एकाक्षर परब्रह्म
का स्वरूप है उसको जपे और उसी के गुणों को पढ़े और सुने ॥ ३ ॥

मू. अकारश्च तथोकारो मकारश्चाक्षरत्रयं । एता
एव त्रयो मात्राः सात्वराजसतामसाः ॥ ४ ॥

टी. और उस ओंकार में तीन अक्षर हैं अकार और उकार और मकार यह
तीनों मात्रा सतोगुण रजोगुण तमोगुण संयुक्त हैं ॥ ४ ॥

मू. निर्गुणयोगिगम्यान्याचर्द्धमात्रोर्द्धसंस्थिता
गान्धारीतिचविज्ञेयागान्धारस्वरसंश्रया ॥ ५ ॥

टी. और इसके ऊपर जो अर्द्ध मात्रा विराजमान है वह निर्गुण है अर्थात् तीनों गुणों से रहित है और योगियों के जानके योग्य है और वह गान्धार स्वर के आश्रित है इसी सबब से वह गान्धारी कहलाता है ॥ ५ ॥

मू. पिपीलिकागतिस्पर्शाप्रत्युक्तामूर्ध्विलक्ष्यते। य.
थाप्रयुक्तओंकारःप्रतिनिर्यातिमूर्ध्वेनि ॥ ६ ॥

टी. जिस तरह चींटी का चलना शिर पर मालूम होता है उसी तरह ओंकार शब्द के उच्चारण में वह अर्द्ध मात्रा शिर पर जाती है ॥ ६ ॥

मू. तथोङ्कारमयोयोगीत्वक्षरेत्वक्षरोभवेत्। प्राणो
धनुःश्रोत्यात्माब्रह्मवेध्यमनुत्तमं ॥ ७ ॥

टी. उसी तरह ओंकार मय जो योगी हैं उसमें त्व अक्षर हो जाते हैं और प्राण धनुष है और आत्मा बाण है और ब्रह्म वेध्य अर्थात् लक्ष्य है ॥ ७ ॥

मू. अप्रमत्तेनवेद्भुव्यंशरवत्तन्मनोभवेत्। ओमि-
त्येतत्रयोवेदास्त्रयोलाकास्त्रयोऽग्नयः ॥ ८ ॥

टी. अप्रमत्त अर्थात् चैतन्य होकर आत्मा रूपी बाण को प्राण रूपी धनुष पर चढ़ाकर ब्रह्म लक्ष्य का शिकार करे और जिस तरह बाण साज-ज को छेद कर उसके अङ्ग में मिल जाता है उसी तरह योगी ब्रह्म में मिल जाता है और उस ओंकार में तीनों वेद और तीनों लोक और तीनों अग्नि हैं ॥ ८ ॥

मू. विष्णुर्ब्रह्माहरश्चैव ऋक् सामानियजुषिच। मा-
त्रासाहोश्चितिसश्च विज्ञेयाः परमार्थतः ॥ ९ ॥

टी. अर्थात् विष्णु और ब्रह्मा और महादेव यह तीनों देवता और ऋक् और साम और यजु यह तीनों वेद हैं और अर्द्ध मात्रा समेत ओंकार चार मात्रा भी कहलाता है ॥ ९ ॥

मू. तत्रयुक्तस्तुयोयोगीसनल्लयमवाप्नुयात्।

अकारस्त्वथभूर्लोकउकारश्चोच्यतेभुवः॥ १० ॥

टी. इसमें जो योगी सदा युक्त रहते हैं वह उसमें लीन हो जाते हैं और अकार भूर्लोक है और उकारभुवर्लोक है ॥ १० ॥

मू. सव्यञ्जनोमकारश्चस्वल्लोकःपरिकल्प्यते। व्य-
क्तातुप्रथमामात्राद्वितीयाव्यक्तसंज्ञिता॥ ११ ॥

टी. और व्यंजन संयुक्त जो मकार है उसको स्वरलोक कहते हैं और प्रथम मात्रा जो है उसको व्यक्त कहते हैं और दूसरी मात्रा का नाम अव्यक्त है ॥ ११ ॥

मू. मात्रातृतीयविच्छक्तिर्द्धमात्रापरंपदं। अ-
नेनैवक्रमेणैताविज्ञेयायोगभूमयः॥ १२ ॥

टी. और तीसरी मात्रा को विच्छक्ति अर्थात् चैतन्य शक्ति कहते हैं और अर्द्धमात्रा परं पद है इसी क्रमसे इन सभी को योग की भूमि जानना चाहिये ॥ १२ ॥

मू. ओमित्युच्चारणात्सर्वंगृहीतंसदसङ्गवेत्। ह्र-
स्वातुप्रथमामात्राद्वितीयादैर्घ्यसंयुता॥ १३ ॥

टी. केवल एक ओंकार के उच्चारण करने से सत् और असत् इत्यादि का उच्चारण हो जाता है और पहिली मात्रा ह्रस्व और दूसरी मात्रा दीर्घ है ॥ १३ ॥

मू. तृतीयाचक्षुतार्द्धाख्यावचसःसानगोचरा। इ-
त्येतदक्षरं ब्रह्म परमोङ्कारसंज्ञितं ॥ १४ ॥

टी. और तीसरी मात्रा सुत की आधी है वह कहने योग्य नहीं है यही तीनों अक्षर मिलकर ओंकार नाम परब्रह्म का हुआ ॥ १४ ॥

मू. यस्तुवेदनरःसम्यक्तथाध्यायेतिवापुनः। सं-
सारचक्रमुत्सृज्यत्यक्तत्रिविधबन्धनः॥ १५ ॥

टी. इसको जो कोई हर तरह से समझ बूझकर ध्यान करता है

वह मनुष्य तीनों प्रकार के बन्धन से छूट कर जीव संसार चक्र को छोड़कर ॥ १५ ॥

मू. प्राप्नोति ब्रह्मणिलयं परमे परमात्मनि । अक्षी
णकर्मवन्धश्च ज्ञात्वा मृत्युमरिष्ठतः ॥ १६ ॥

टी. वह परमात्मा जो परब्रह्म है उसमें लीन हो जाता है और वह अक्षीणक है अक्षय जो है कर्मवन्धन उसमें जो योगी प्राप्त हैं वह अरिष्ट से अपनी मृत्यु को जानकर ॥ १६ ॥

मू. उत्क्रान्तिकाले संसृत्य पुनर्योगित्वमृच्छति ।
तस्मादसिद्धयोगेन सिद्धयोगेन वा पुनः । ज्ञे-
यान्यरिष्टानि सदा यो नोत्क्रान्तौ न सीदति ॥ १७ ॥

टी. अपने मरने के समय सम्यक् प्रकार से योग का स्मरण रखते हैं तो वह दूसरे जन्म में भी योगी होते हैं इसवास्ते योगी सिद्ध हो या न हो परन्तु अरिष्ट उसको अवश्य जानना चाहिये कि जिससे उसको मरने के समय दुःख न हो ॥ १७ ॥

इति श्री मार्कण्डेय पुराणे यो-
गधर्मो ओङ्काराध्यायः ॥ ४२ ॥

بیالیسواں اویہیا

۱۔ دتارے جی کہتے ہیں کہ اے آرکن جو جوگی ہر طرح سے جوگ میں ثابت قدم رہتے ہیں وہ سنسار کے آواگن سے بالکل جھوٹ جانے میں ۲ اسواسطے بشور و پ جو پر ماتا سب بشوٹے مانک اور پیدا کرنے والے ہیں انکا پرچھ روپ جانکر ۳ اُن سے ملنے کیواسطے بخوبی پوچھ ہو کر انکا (جی) جو ایک الجھ اور برترتھ کا سور و پ ہی اسکو جیے اور اسی کے گنو کو بڑھے اور شیخے۔
۴ اور اونکار میں تین الجھ ہیں اکار اور اکر اور سکار یہ تینوں ماترا استوگن اور رجوگن اور

تو گن سے ملی ہیں۔ ۵ اور اسکے اوپر جو اردھ ماترا براجمان ہر وہ نرگن ہی یعنی تینوں گنوں سے رہت ہی اور اسکا جاننا جو گینو کو ضروری اور وہ گاندھار سور سے ملا ہوا ہی اسوجہ سے گاندھاری کہلاتا ہے۔ ۶ جیسے چھٹی کا چلنا سر پر معلوم ہوتا ہے اسبطرچ او نکار شتد کے اچارن (تلفظ) میں اردھ ماترا سر پر چلتی ہے۔ ۷ اور اسبطرچ جو جوگی لوگ او نکار بکثت میں وہ تو (८) اکچھ ہو جاتے ہیں اور جاننا چاہیے کہ پران شل دھنکچ کے ہی اور آٹا اسکا بان مینی تیر اور برتھ ساوج مینی شتہ ہے۔ ۸ پس ہر شیار ہو کر آٹا روپی بان کو پران روپی دھنکچ پر چڑھا کر برتھ روپی ساوج کا شکار کرے اور اسبطرچ بان ساوج کے شریر میں پرورش کر جاتا ہے اسبطرچ جوگی برتھ میں مل جاتے ہیں اور اس او نکار میں تینوں پند اور تینوں لوگ اور تینوں گن موجود ہیں۔ ۹ یعنی لشن اور برٹھا اور ہما و نوہ تینوں دیوتا میں اور رک اور سام اور چتر یہ تینوں پند ہیں اور او نکار مع اردھ ماترا کے چار ماترا بھی کہلاتا ہے۔

۱۰ اس میں جو جوگی سدا بکثت رہتے ہیں وہ لین ہو جاتے ہیں اور آگ اسکا اپنی او نکار کا پاتال لوگ ہے اور آگار بھو لوگ ہے۔ ۱۱ اور بنجن کے ساتھ جو نکار ہی اسکو سور لوگ کہتے ہیں اور جو پہلی ماترا ہی اسکو بکثت کہتے ہیں اور دوسری ماترا کا نام ابکثت ہے۔ ۱۲ اور تیسری ماترا کا نام چت شکت مینی چیتن شکت ہے اور اردھ ماترا پریم پدی ہی اسی سلسلہ سے ان سمیوں کو جوگی کی دھرتی مینی زمین جانتا چاہیے۔ ۱۳ فقط او نکار کے اچارن کرنے سے ست اور است وغیرہ کا اچارن ہو جاتا ہے اور پہلی ماترا ہر شو اور دوسری ماترا دیر گھ ہے۔

۱۴ اور تیسری ماترا بکثت کی ادھی ہے وہ کہنے سے باہر ہے یہی تینوں اکچھ ملکر او نکار نام پر چر کا ہوا۔ ۱۵ اسکو جو لوگ سمی ہو چکا دھیان کرتے ہیں وہ تینوں طرح کے بندھن سے چھوٹ جاتے ہیں اور اس سنسار چکر سے نکل کر۔ ۱۶ اس پر ماتا میں جو پر برتھ ہی مل جاتا ہے اور جوگی لوگ اکچھ گرم بندھن میں پھنسے ہوئے ہیں وہ ارشت مینی علامات بد سے اپنے مرنے کا وقت پہچان کر۔ ۱۷ مرنے وقت ہر طرح سے اپنے جوگ کا خیال رکھتے ہیں اور دوسرے جنم میں بھی جوگی ہوتے ہیں اس واسطے جوگی سدھ ہو یا نہ ہو لیکن ارشت اسکو ضرور جاننا چاہیے تاکہ مرنے وقت اسکو دکھ نہ ہو۔ فقط

मू. दत्तात्रेय उवाच ॥ अरिष्टानि महाराजशृणु
वक्ष्यामितानिते । येषामालोकनान्मृत्युं
निजं जानाति योगवित् ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

टी. दत्तात्रेयजी कहते हैं कि हे अलर्क अब मैं उन अरिष्टों को कहता हूँ
कि जिनको देखकर योगी लोग अपने मरने को जान लेते हैं ॥ १ ॥

मू. देवमार्गध्रुवंशुक्रं सोमच्छायामरुन्धती । यो
न पश्येन्न जीवेत्स नरः स च त्सात्परम ॥ २ ॥

टी. वह यह है कि देव मार्ग और ध्रुव और शुक्र और अरुन्धती का तारा
और चन्द्र छाया जब मनुष्यों को नहीं दिखलाई पड़ता है तो वह मनुष्य
वर्ष दिन से ऊपर नहीं जी सकता है ॥ २ ॥

मू. अरश्मिबिम्बं सूर्यस्य बन्धि चैवांगुमालिनं ।
दृष्ट्वा दशमासानुनगेनोद्धतु जीवति ॥ ३ ॥

टी. और जब सूर्य के उदयकाल की लाली और आग की गरमी मनुष्य
को न मालूम हो तो जानना चाहिये कि यह मनुष्य ग्यारह महीने से बढ़कर नहीं जी सकता है ॥ ३ ॥

मू. वान्ते मूत्रपुरीषे च यः स्वर्णरजतं तथा । प्रत्यक्षं
कुरुते स्वप्ने जीवेत्स दशमासिकं ॥ ४ ॥

टी. और जो बमन या मूत्र या विष्टा में सोना या चाँदी स्वप्न में देखे
तो वह मनुष्य दश महीने तक जीता है ॥ ४ ॥

मू. दृष्ट्वा प्रेतपिशाचादीन् गन्धर्व्वनगराणि च । सु
वर्णवर्णान् रक्षाञ्च न वमासान्स जीवति ॥ ५ ॥

टी. और जो स्वप्न में प्रेत और पिशाच इत्यादि और गन्धर्व्वों का नगर
और सोने का दृष्ट इत्यादि देखे तो नौ (९) महीने तक जीता है ॥ ५ ॥

मू. स्थूलः कृशः कृशः स्थूलो योऽस्मादेव जायते
प्रकृतेऽन्यनिवर्त्तेत तस्यायुश्चाष्टमासिकं ॥ ६ ॥

टी. और जो मनुष्य इकाइक मोटे से दुबला या दुबले से मोटा होजाय और प्रकृति उसकी बिगाड़ जाय तो वह मनुष्य और महीने तक जीता है ॥ ६ ॥

मू. स्वाङ्गस्य पदं पायां पादस्याग्नेन धामवेत् ।
पांशुकर्मयोर्मध्ये सप्त मासान् स जीवति ॥ ७ ॥

टी. और जिस मनुष्य के पाँव के अग्रभाग का चिन्ह या एड़ी का चिन्ह साँढ़े या धूल में मालूम न हो तो जानना चाहिये कि वह सात महीने से ऊपर न जियेगा ॥ ७ ॥

मू. गृध्रः कपोतः काकोलीनायसोवापिमूर्द्धनि । क-
ब्बोदोवाखगोनीलः परमासायुः प्रदर्शकः ॥ ८ ॥

टी. और जिस किसी के शिर पर गिह या कबूतर या कौवा या उलू या कबूतर अर्धात् बान या काली चिड़िया इत्यादि बैठजाय तो वह मनुष्य छः महीने से ज़ियादा नहीं जी सकता ॥ ८ ॥

मू. हन्येते काकपङ्क्तिभिः पांशुर्वर्षणवानरः । स्वाङ्गा-
यामन्यथा दृष्ट्वा चतुः पञ्च स जीवति ॥ ९ ॥

टी. और जिसके शरीरमें कौवे की पंक्ति भी पड़ा मार दे और जिसकी देह पर ज़नायाश धूर की वर्षा हो और उससे चोट लगे और जिसको अपनी परछाही न देख पड़े तो वह मनुष्य चार या पाँच महीने जीता है ॥ ९ ॥

मू. अनभे विद्युतं दृष्ट्वा दक्षिणां दिशमाश्रितां । रात्रा-
विन्दुधनुश्चापि जीवितं द्वित्रिमासिकं ॥ १० ॥

टी. और जो बिना मेघ के दक्षिण दिशा में बिजली चमकती हुई देखे या रात की इन्द्रधनुष निकला देखे तो वह मनुष्य भी दो राती न महीने तक जीता है ॥ १० ॥

मू. घृते तैलेन धादृशे तोयवानात्मनस्तनुं । यः प-
स्पेदशिरस्कां वामासादूर्ध्वं स जीवति ॥ ११ ॥

टी. अथवा घी या तेल या पानी या शीशा में अपने शरीर की

बिना शिर के देखै तो वह मनुष्य एक महीने से बढ़कर नहीं जी सकता है ॥ १२ ॥

मू. यस्य वस्तु समो गन्धो गन्धेश वसतोऽपि वा । त
स्याहमात्मिकं ज्ञेयं योगिनो नृपजीवितं ॥ १३ ॥

टी. और जिस योगी के शरीर में बिछा या मुँदे की ऐसी बदबू मालूम हो वह पन्द्रह दिन तक जीता है ॥ १३ ॥

मू. यस्य वैस्नानमात्रस्य हृत्पादमनश्चुष्यते । पांच
तस्य जलं शोषो दशाहं तोऽपि जीवति ॥ १४ ॥

टी. और स्नान करने के पश्चात् तत्काल ही पाँच और हृदय जिसका सूखा ही रह जाय या जानी देने पर भी जल सूखा ही रहे वह मनुष्य दश दिन जीता है ॥ १४ ॥

मू. संभिन्नो मास्तो यस्य मर्मस्थानानि कृन्तति । ह
ष्यते नाम्बुसंस्पर्शात् तस्य मृत्युर्हृत्पस्थितः ॥ १५ ॥

टी. और जिस मनुष्य के मर्मस्थानों में वायु कुँस देती हो और उस को ऐसा मालूम होता हो कि मानौ कोई शरीर को काटता है और जल का स्पर्श अच्छा न मालूम हो तो वह तुरन्त मर जायगा ॥ १५ ॥

मू. ऋक्षवानरयानस्यो गायत्र्यो दक्षिणं दिशं । स्व
भे प्रायाति तस्यापि न मृत्युः कालमुच्छति ॥ १६ ॥

टी. और जो स्वप्न में ऋक्ष या वन्दर के ऊपर अपने को सवार और गाते हुवे दक्षिण दिशा में जाते देखै तो उसकी मृत्यु तुरन्त ही होती है ॥ १६ ॥

मू. रक्तकृष्णं वरधरा गायंती हस्तौ च यं । दक्षिणा
शान्नेये नारी स्वप्ने सोऽपि न जीवति ॥ १७ ॥

टी. और जो स्वप्न में देखै कि स्त्रियाँ लाल या काले वस्त्र पहिने हुवे और गायती और हँसती हुई मुँह दक्षिण दिशा को

लिये जाती है तो वह भी जल्द मर जायगा ॥ १६ ॥

मू. नग्नं क्षपाणकं स्वप्ने हसमानं महाबलं । एकं सं-
वीक्ष्य वलान्तं विद्यान्मृत्युमुपस्थितं ॥ १७ ॥

टी. और जो कोई स्वप्न में महाबलवान् हसामत बनवाये नंगा हँसता और
बकता हुआ पुरुष को देखे तो वह भी तुरन्त ही मर जायगा ॥ १७ ॥

मू. ग्रामस्तकनलाद्यस्तु निमग्नः पङ्कसागरे । स्व-
प्रेषस्यत्यथात्मानं सद्यो म्रियते नरः ॥ १८ ॥

टी. और जो मनुष्य स्वप्न में अपने को शिरसे पाँव तक काँहों में डूब ग-
या देखे तो उसकी भी मृत्यु तुरन्त ही जानता ॥ १८ ॥

मू. केशाङ्गरांस्तथा भस्मभुजङ्गान्निर्जलां नदीं ।
दृष्ट्वा स्वप्ने दशाहातुमृत्युरेकादशे दिने ॥ १९ ॥

टी. और जो मनुष्य केश या अग्नि या धूर या सोंप या खरवी हुई नदी
इत्यादि को स्वप्न में देखे तो वह ग्यारहवें दिन मर जायगा ॥ १९ ॥

मू. करालैर्विकटैः कृलैः पुरुषैरुद्यतायुधैः । पाषा-
णैस्ताडितः स्वप्ने सद्यो मृत्युं लभेन्नरः ॥ २० ॥

टी. और जो स्वप्न में देखे कि कोई विकट पुरुष काला रूप भ-
यावनी सूरत हाथ में हथियार या पत्थर लिये हुवे मुझे मारता
है तो वह भी जल्द मर जाता है ॥ २० ॥

मू. सूर्योदये यस्य शिवाक्रोशन्ती याति सम्मुखं ।
विपरीतं परीतं वा सद्यो मृत्युमृच्छति ॥ २१ ॥

टी. और सूर्योदय काल में गीदड़नी बोलती हुई जिसके सामने सीधी
चली जाय अथवा विपरीत यानी दहिने या बाँयें होकर चली जाय तो व-
ह मनुष्य भी तुरन्त ही मर जायगा ॥ २१ ॥

मू. यस्य वैभुक्तमात्रस्य हृदयं बाधते क्षुधा । जाय-
ते दन्तघर्षश्च स गतायुर्न संशयः ॥ २२ ॥ २२ ॥

टी. और जिसको भोजन करने पर भी क्षुधा से हृदय में कष्ट मालूम हो और अपनायास दाँत पर दाँत का घिसा लगता रहे तो जानना चाहिये कि उसकी आयुर्वल घट गई ॥ २२ ॥

मू. दीपगन्धनयोवेतिवस्यत्यहि तथानिशि । ना
त्मानं पानेन वस्य वीक्षते न स जीवति ॥ २३ ॥

टी. और जिसको दीपक की गन्ध न मालूम हो और जो दिन और रात को उरता रहे और अपनी देह की छाया दूसरों की छाया में न देख पड़े तो वह भी जल्द मरता है ॥ २३ ॥

मू. शक्रायुधं चार्द्धरात्रे दिवा ग्रह गणं तथा । दृष्ट्वा
मन्येत स क्षीणमात्मजीवितमात्मवित् ॥ २४ ॥

टी. अथवा आधी रात को इन्द्रधनुष और दिन को तारागण देखे तो उसको जानना चाहिये कि आयुर्वल भेग घट गया है ॥ २४ ॥

मू. नासिकावक्रतामेति कर्णयोर्नमनोन्नतीने च
चक्षुर्भ्रमवतियस्य तस्यायुरुद्गतं ॥ २५ ॥

टी. और जिसकी नाक टेढ़ी और कान ऊँचा नीचा हो जाय और बाँयी आँख से हमेशा आँशु बहता रहे तो उसका आयुर्वल घट गया समझना चाहिये ॥ २५ ॥

मू. आरक्ततामेति मुखं निहावाश्यामतां यदा । त
दा प्राप्नोति जानीयान्मृत्युमासन्नमात्मनः ॥ २६ ॥

टी. और जिसका मुख लाल और जीभ काली हो जाय उस बुद्धिमान को जानना चाहिये कि मेरी मृत्यु का समय नजदीक आ पहुँचा ॥ २६ ॥

मू. उष्ट्रासभयानेन यः स्वप्ने दक्षिणां दिशं । प्रयाति
तच्च जानीयात् सद्यो मृत्युं न संशयः ॥ २७ ॥

टी. अथवा जो मनुष्य स्वप्न में देखे कि मैं गदहे या ऊँट पर बद्ध कर दक्षिण

टी. और जो मनुष्य अपने श्वेत कपड़ों को धूम से लाल या काले समान उसकी भी मृत्यु जल्द ही जानना ॥ ३३ ॥

मू. स्वभाववैपरीत्यन्तु प्रकृतेश्च विपर्ययः । कथ-
यन्ति मनुष्याणां सदा सन्नो यमान्नको ॥ ३४ ॥

टी. और जिसका स्वभाव विपरीत अर्थात् बदलकर प्रकृत भी बहूत जाय तो जानना चाहिये कि इस मनुष्य के पास यमदूत आया ॥ ३४ ॥

मू. येषां विनीतः स ततं येऽस्य पूज्यतमा मताः ।
तानेव चावजानाति तानेव च विनिन्दति ॥ ३५ ॥

टी. और जिस मनुष्य को किसी से प्रीति बहुत हो और सदा जिसको पूजना हो और फिर उसीकी निन्दा और अपमान करने लगे ॥ ३५ ॥

मू. देवान्नार्चयते वृद्धान् गुरुन् विप्रांश्च निन्दति । मा-
तापित्रोर्न सत्कारं जा मातृणां करोति च ॥ ३६ ॥

टी. और देवता इत्यादि का भी पूजन न करे और वृद्ध और गुरु और ब्राह्मण की निन्दा करे और माता और पिता और दामाद का आदर न करे ॥ ३६ ॥

मू. योगिनां ज्ञानविदुषामन्येषाञ्च महात्मनां । प्रा-
प्ते तु काले पुरुषस्तद्विज्ञेयं विचक्षणैः ॥ ३७ ॥

टी. और योगी और ज्ञानी और पण्डित और महात्मा इत्यादि लोगों का भी सत्कार करना जो कोई छोड़ दे तो उसका काल भी ज्ञानी लोग समीप ही समझते हैं ॥ ३७ ॥

मू. योगिनां सततं यत्नादरिष्टान्यवनीपते । सञ्च-
त्सरान्ते तज्ज्ञेयं फलदानि दिवा निशं ॥ ३८ ॥

टी. हे महाराज इन अरिष्टों को यत्न पूर्वक योगी लोगों को सदा देखते रहना चाहिये क्योंकि यही अरिष्ट वर्ष और दिन और रात सब दिन मनुष्यों को फल देते रहते हैं ॥ ३८ ॥

मू. विलोक्या विशदा चैषां फलपंक्तिः सुभीषणा

विनायकार्यो मनसि सच कालो नरेश्वर ॥ ३६ ॥

टी. और इन अरिष्टों के फल बड़े भयानक हैं इसवास्ते इनको अच्छी तरह जानकर उनके बन्तों को अपने मन में खयाल रखै ॥ ३६ ॥

मू. ज्ञात्वा कालञ्च तं सम्यग्भयस्थानमाश्रितः। यु-
ज्जीत योगी कालोऽसौ यथानासा फलो भवेत् ॥ ४० ॥

टी. और उसी काल को अच्छी प्रकार जानकर योगी लोग अभयस्थान अर्थात् एकान्त में जाकर योग करें जिसमें वह काल योगी का कुछ बिगाड़ न कर सकै ॥ ४० ॥

मू. दृष्ट्वा रिष्टं तथा योगीत्यक्ता मरणं भयं । तत्स्व-
भावं तदा लोक्य काले यावत्पुपा गतं ॥ ४१ ॥

टी. इसी तरह योगी अरिष्टों को देखकर अपने मरने का भय छोड़कर उस के स्वभाव को देखकर जब तक वह काल पहुँचै ॥ ४१ ॥

मू. तस्य भागे तथैवान्हो योगं युज्जीत योगवित् ।
पूर्वाह्ने चापराह्णे च मध्याह्ने चापि तद्दिने ॥ ४२ ॥

टी. उसके पहिले ही काल का स्वभाव समझकर उसी दिन योगी योग का यत्न करके पूर्वाह्न या मध्याह्न या अपराह्न काल में ॥ ४२ ॥

मू. यत्र वारजनी भागे तदरिष्टं निरीक्षितं । तत्रैव
तावद्युज्जीत यावत्प्राप्ते हि तद्दिनं ॥ ४३ ॥

टी. या रात में जबही उस अरिष्ट को देखै तो उस दिन यानी अरिष्ट के दिन से पहिले ही योग करै ॥ ४३ ॥

मू. ततस्त्यक्ता भयं सर्वं जित्वा तं कालमात्मवान्
तत्रैवावसथे स्थित्वा यत्र वास्थैर्यमात्मनः ॥ ४४ ॥

टी. और उस काल के सम्पूर्ण भय को छोड़कर और काल को जीतकर उसी अस्थान में या दूसरे ही स्थान में मन को स्थिर करके रखै ॥ ४४ ॥

मू. युज्जीत योगं निर्जित्य त्रीन गुणान् परमात्मनि

तन्मयश्चात्मनाभूत्वाचिह्निमपिसंत्यजेत् ॥ ४५ ॥

टी. और तीनों गुणों को जीतकर योग करे और परमात्मा में मन लगा कर चिह्न वृत्ति यानी चैतन्य वृत्ति को भी छोड़ दे ॥ ४५ ॥

मू. ततः परमनिर्वाणमतीन्द्रियगोचरं । यदुद्देयं
चचारव्यानुशक्यते तत्स मश्नुते ॥ ४६ ॥

टी. बाद इसके बुद्धि से अगोचर और इन्द्रियों से अग्राह्य और अक-
मनीय जो परम निर्वाण पद है उसमें वह योगी प्राप्त हो जाता है ॥ ४६ ॥

मू. एतत्सर्वं समाख्यातं तत्रालंकार्यथार्यवत् । प्रा-
प्यसेयेन तद्ब्रह्म संक्षेपात्तन्निबोधमे ॥ ४७ ॥

टी. इसविषयी कहते हैं कि हे छलक यह सिद्धान्त बार्ता हमने तुमसे कही अ-
ब जिससे योगी को वह ब्रह्म प्राप्त होता है संक्षेप से कहते हैं सुनो ॥ ४७ ॥

मू. शशाङ्करश्चिसंयोगाच्चन्द्रकान्तमणिः पयः । स-
मुत्सृजति नायुक्तः सौपमायोगिनः स्मृता ॥ ४८ ॥

टी. जिसतरह चन्द्रकान्त नाम मणि चन्द्रमा की किरण लगने से ज-
ल छोड़ता है और जब किरण नहीं लगती तो नहीं छोड़ता है यही
उपमा योगी की भी है ॥ ४८ ॥

मू. यच्चार्करश्चिसंयोगादरक्तकान्तोद्भूताशनं । अ-
विष्करोति नैकः सन्नुपमासापियोगिनः ॥ ४९ ॥

टी. और जिसतरह सूर्यकान्त नाम मणि में सूर्य की किरण पड़ने
से अग्नि उत्पन्न होती है और जब किरण न पड़े तो अग्नि नहीं पैदा
होती यही उपमा योगियों की है ॥ ४९ ॥

मू. पिपीलिकाखुनकुलगृहगोधाकपिंजलाः । व-
सन्ति स्वामिव द्देहे ध्वस्ते यान्ति ततो न्यतः ॥ ५० ॥

टी. और जिसतरह चींटी और मृग और नेउला और गृहगोधा कही छिपकली और क-
पिंजल इत्यादि घरके स्वामी ही के समान सब एक घर में रहते हैं और उस घर

के नाश हो जाने पर वे सब दूसरे स्थान को चले जाते हैं ॥ ५० ॥

मू. दुःखन्तुस्वामिनो ध्वंसेतस्यतेषां न किञ्चन । वे-
श्मनो यत्र राजेन्द्र सौपमा योगसिद्धये ॥ ५१ ॥

टी. पान्तु उस घर का दुःख उसके स्वामी ही को होता है उन जान-
वों को कुछ दुःख नहीं होता इसी तरह हे राजन योग सिद्धि की
भी उपमा जानो ॥ ५१ ॥

मू. मृदेहिकाल्पदेहापि मुखग्रेणायणीयसा । करो-
ति मृद्गारचयमुपदेशः स योगिनः ॥ ५२ ॥

टी. और जिस तरह पिपीलिका छोटा जानवर छोटा मुख होने पर भी
उसी मुख से मिट्टी खींच खींच कर ढेर लगाता है वह मानो योगी
लोगों को उपदेश करता है कि तुम भी थोड़ा २ करके तप को बटोरौ ॥ ५२ ॥

मू. पशुपक्षिमनुष्याद्यैः पत्रपुष्पफलान्वितं । वृक्षं
विलुप्य मानन्तु हृद्वासिद्धंति योगिनः ॥ ५३ ॥

टी. और पशु और पक्षी और मनुष्य इत्यादि कोई पत्ता कोई फूल फ-
ल युक्त वृक्ष को थोड़ा थोड़ा काटते काटते काट डालते हैं इसको
देखकर योगी को योग सिद्ध करना चाहिये ॥ ५३ ॥

मू. रुरुशावविषाणाग्रनालक्ष्यतिलका कृतिं । स-
हतेन विवर्द्धतं योगी सिद्धिं मवाप्नुयात् ॥ ५४ ॥

टी. और जिस तरह हरिण के बच्चे के शिर में शृङ्ग का अग्रभाग यानी नोक प-
हिले तिल समान देखाई देता है बाद उसके ज्यों ज्यों वह मृग बढ़ता है त्यों त्यों
शृङ्ग भी बढ़ता है इसको भी देखकर योगी सिद्धि को प्राप्त करते हैं ॥ ५४ ॥

मू. द्रवपूर्णमुपादाय पात्रमारोहतो भुवः । तुङ्गम-
ङ्गं विलोक्योच्चैर्विज्ञातं किं न योगिना ॥ ५५ ॥

टी. और पात्र में जल भाकर शिर पर रखकर पृथ्वी पर कोई चलता है तो
चलने वाले की ऊँचाई व पात्र की ऊँचाई देखकर योगी को भी योग में

अपना मन ऊँचा रखना चाहिये ॥ ५५ ॥

मू. सर्वस्वे जीवना पालनं निश्चति पुरुषस्य या । चेष्टां
तां तत्त्वतो ज्ञात्वा योगिनः कृतकृत्यता ॥ ५६ ॥

टी. और तुच्छ वस्तु जो जमीन खोदकर अपने जीवन के वास्ते मनुष्य रखते हैं और उसमें उनका मन लगा रहता है इसको तत्त्वपूर्वक समझने से योगीलोग कृतकृत्य होजाते हैं ॥ ५६ ॥

मू. तद्गृहं यत्र वसति तद्भोज्यं येन जीवति । येन सम्यग् यते चार्थस्तत्सुखं ममता वका ॥ ५७ ॥

टी. क्योंकि घर वही है जिसमें बसें और भोजन वही है जिससे छिन्दगी बसर हो और भुख वही है कि जिस से अर्थ सिद्ध हो तो फिर ऐसे घर इत्यादि से ममता करना क्या ॥ ५७ ॥

मू. अभ्यर्थितोऽपितैः कार्यं करोति कर्णैर्यथा । त
था बुद्ध्यादिभिर्योगी पारम्यैः साधयेत्परं ॥ ५८ ॥

टी. जिसतरह उद्यमों में कोई यद्यपि बाधा भी करता है तो भी बुद्धिमानलोग अपने कार्य को नहीं छोड़ते इसीतरह सब इन्दीभी यद्यपि अपना अपना विषय चाहती हैं उसीतरह योगीलोग उनका अनादर करके अपना योग सिद्ध करते हैं ॥ ५८ ॥

मू. जड उवाच ॥ ततः प्रणम्या त्रिपुत्रमलर्कः सम
हीपतिः । प्रश्रयावनतो वाक्यमुवाचानि-
मुदान्वितः ॥ ५९ ॥ ५९ ॥ ५९ ॥ ५९ ॥

टी. जड अर्थात् सुमति कहते हैं कि हे पिता यह वचन सुनकर राजा अलर्क दत्तात्रेयजी को प्रणाम करके अतिहर्षसे विषयसंयुक्त बोले ॥ ५९ ॥

मू. अलर्क उवाच ॥ दिष्ट्या देवैरिदं ब्रह्म नृप
राभिभव सम्भवं । उपपादितमत्युग्रं प्राणस-
न्देहदम्भयं ॥ ६० ॥ ६० ॥ ६० ॥ ६० ॥

श्री. कि हे ब्रह्मन् हमारे बड़े भाग्य हैं जो आप को बन्धे प्र देने वाला डर मुझे पैरा हुआ ॥ ६० ॥

मू. दिष्ट्या काशिपते भूरि नल सम्यत्पराक्रमः । यदु
च्छेदादिहायातः संयुक्तमद्वैतमम ॥ ६१ ॥

श्री. और मेरे भाग्य से काशी नरेश को बहुत बल और विभव और पराक्रम हुआ कि जिस से पीड़ित होकर मैं यहाँ आया जो आप का सन्तुष्ट हुआ ॥ ६१ ॥

मू. दिष्ट्या मन्दबलश्चाहं दिष्ट्या भूत्याश्च मे हताः । वि
ष्ट्या कोशं शयं यातो दिष्ट्या हं भीतिमागमः ॥ ६२ ॥

श्री. और मेरी सेना और नौकर चाकर जो मारे गये और मेरे ही भाग से कोश यानी खजाना भी बंद गया और मुझे खौफ भी पैरा हुआ ॥ ६२ ॥

मू. दिष्ट्या त्वत्पादयुगलं मम स्मृति पथं गतं । दिष्ट्या
त्वदुक्तयः सर्वममचेतसि संस्थिताः ॥ ६३ ॥

श्री. और आप के चरणों का दर्शन मिला और भाग्य ही से आप की कही हुई बातों सब मेरे मन में बैठ गई ॥ ६३ ॥

मू. दिष्ट्या ज्ञानं ममोत्पन्नं भवतश्च समागमात् । भ
वता चैव कारुण्यं दिष्ट्या ब्रह्मन् कृतं मम ॥ ६४ ॥

श्री. और भाग्य ही के सबब आप के समागम से मुझे ज्ञान उत्पन्न हुआ और आपने मुझ पर कृपा की है ॥ ६४ ॥

मू. अनर्थोऽप्यर्थतां याति पुरुषस्य शुभोदये । यथे
दमुपकाराय व्यसनं सङ्गमात्तव ॥ ६५ ॥

श्री. जब मनुष्य का कल्याण उदय होता है तो अनर्थ से भी उसको अर्थ प्राप्त होता है जैसे आप के संगम से यह मेरा दुःख मेरी भलाई के वास्तु उत्पन्न हुआ है ॥ ६५ ॥

मू. सुबाहु रूपकारी मे सच काशिपतिः प्रभो । य
योः कृतेऽहं संप्राप्नो योगीश भवतोऽन्तिकं ॥ ६६ ॥

टी. सुबाहु और काशीनरेश भी मेरे उपकारी हुवे कि जिसके बब से मैं आप की शरण में आया ॥ ६६ ॥

मू. सोऽहं तव प्रसादाग्निनिर्द्दग्धाज्ञानकिल्बिषः।
तथायतिष्येनेदं भूयां दुःखभाजनं ॥ ६७ ॥

टी. और आप के प्रसाद रूपी अग्नि से मेरे अज्ञान रूपी पाप सब जल गया अब मैं वही यत्न करूंगा कि जिससे फिर मुक्त को ऐसा दुःख न हो ॥ ६७ ॥

मू. परित्यजिष्ये गार्हस्थ्यमार्तिपादपकाननं । त्व
त्तोनुतां समासाद्य ज्ञानदानुर्म्हन्मात्मनः ॥ ६८ ॥

टी. क्योंकि आप ऐसे ज्ञानदाता महात्मा से आज्ञा लेकर पीड़ा रूपी दुःखों का बन्धन समान जो गृहस्थाश्रम है उसको त्याग करूंगा ॥ ६८ ॥

मू. दत्तात्रेय उवाच ॥ गच्छ राजेन्द्र भद्रन्ते यथा
ते कथितं मया । निर्म्ममो निरहंकारस्तथा
चर विमुक्तये ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥

टी. तब दत्तात्रेय जी ने कहा कि हे राजेन्द्र तुम जाओ तुम्हारा कल्याण होगा और जिस तरह मैं ने तुम से कहा है सो जमता और अहंकार को छोड़कर अपनी मुक्ति के वास्ते करना ॥ ६९ ॥

मू. जड उवाच ॥ एवमुक्तः प्रणम्यैनमाजगा-
मत्वरान्वितः । यत्र काशिपतेर्भाता सुबा-
हुश्चास्य सोऽग्रजः ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥

टी. सुमति कहते हैं कि राजा अलर्क यह सुनकर दत्तात्रेय जी को आश्रम करके जहाँ काशीनरेश और उनके भाई सुबाहु थे पहुँचे ॥ ७० ॥

मू. समुत्पत्य महाबाहुं सोऽलर्कः काशिभूपतिं ।
सुबाहोरग्रतो वीरमुवाच प्रहसन्निव ॥ ७१ ॥

टी. और काशीनरेश के समीप जाकर सुबाहु के मासने बैठकर

अलर्क जी काशीनरेश से कहने लगे ॥ ७१ ॥

मू. राज्यकामुककाशीशभुज्यतां राज्यमूर्जितं । तथा
चरोचनेतद्वत्सुबाहोः संप्रयच्छवा ॥ ७२ ॥

श्री. किसे राजके कामुक काशीनरेश तुमने अपनेशक्त से जो राज्य जीत
लिया है उसको तुम भोग करे चाहो सुबाहु को दे दो ॥ ७२ ॥

मू. काशिराज उवाच ॥ किमलर्कपरित्यज्या
ज्यन्तेसंयुगंविना । सत्रियस्यनधर्म्मोऽयंभ
वांश्चक्षत्रधर्म्मवित् ॥ ७३ ॥ ७३ ॥ ७३ ॥ ७३ ॥

श्री. तब काशीनरेश बोले कि हे अलर्क तुम क्यों राज्य को बि
ना संग्राम के छोड़कर इससे अलग होते हो यह सत्री का ध-
र्म नहीं है और तुम शावधर्म के जानेवाले हो ॥ ७३ ॥

मू. निर्जितामात्यवर्गस्तुत्यक्तामराणजंभयं । सन्द
धीतशरंराजालक्षमुद्दिश्यवैरिणं ॥ ७४ ॥

श्री. जब राजाओं की सेना मारी जाती है तब वह राजा अपने
मरने का डर छोड़कर धनुष बाण धारण करके लाखों दुश्मनों
का झकेले ही सामना करते हैं ॥ ७४ ॥

मू. तंजित्वानृपतिर्भोगान्यथाभिलषितान्वरान्
भुज्जीतपरमंसिद्धौयजेतचमहामखैः ॥ ७५ ॥

श्री. और जब दुश्मनों को जीतकर अपनी इच्छानुसार भोग करने
हैं और अपनी परम सिद्धि के वास्ते महायज्ञ भी करते हैं ॥ ७५ ॥

मू. अलर्क उवाच ॥ एवमीदृशकंवीरममाप्या
सीन्मनेःपुरा । साम्प्रतंविपरीतार्थंशृणुच-
प्यत्रकारणं ॥ ७६ ॥ ७६ ॥ ७६ ॥ ७६ ॥

श्री. तब अलर्क बोले कि हे काशीनरेश जैसा तुम कहते हो वैसा ही मेरा भी
मन पहिले था पर अब विपरीत हो गया इसका कारण कहना हूँ सुनो ॥ ७६ ॥

मू. यथायं भौतिकः सङ्गस्तथान्तःकराणानृणां। गु
णास्तु सकलास्तद्वद्वेषेष्वेव जन्तुषु ॥ ७७ ॥

टी. कि जैसा यह भौतिक सङ्ग है वैसाही मनुष्यों का अन्तःकरण भी है
और जितने जीव और जन्तु हैं उन सभी में है ॥ ७७ ॥

मू. तच्छक्तिरेक एवायं यदानान्योऽस्ति कश्चन। तदा
कानृपतेजानान्मित्रारिप्रभुभृत्यता ॥ ७८ ॥

टी. परन्तु शक्तिमान जो पुत्र है वह सब में एक ही है यथा (एकमेवा
द्वितीयं ब्रह्मानेह नानास्ति किंचन) तो फिर जबकि दूसरा कोई नहीं है हे का
शी नरेश तो अज्ञानता से मित्र-शत्रु-सेवक-सामी यह सब मानता हूँ है ॥ ७८ ॥

मू. तन्मया दुःखमासाद्य त्वद्वयोद्भवमुत्तमं। दत्ता
त्रेयप्रसादेन ज्ञानमाप्तं नरेश्वर ॥ ७९ ॥

टी. और हे नरेश्वर तुम से मैं दुःख पाकर दत्तात्रेय जी के शरण में ग
या और उन्हीं के प्रसाद से यह उत्तम ज्ञान मुझको प्राप्त हुआ है ॥ ७९ ॥

मू. निर्जितेन्द्रियवर्गस्तु त्यक्त्वा सङ्गमशेषतः। म
नो ब्रह्मणि सन्धाय तज्जये परमोजयः ॥ ८० ॥

टी. मैं ने सब सङ्ग छोड़कर इन्द्रियों और मन को जीतकर मन को ब्रह्म
में लगा दिया इस मन को जीतना यही उत्तम विजय है ॥ ८० ॥

मू. संसाध्य मन्यत्सिद्धयतः किञ्चिन्न विद्यते।
इन्द्रियाणि च संयम्य ततः सिद्धिं नियच्छति ॥ ८१ ॥

टी. और उसीके सिद्ध होने के वास्ते सम्पूर्ण साधना है जिससे प
र और कोई बात इस जगत में कुछ नहीं है जब इन्द्रियों का सं
यम करे तभी वह सिद्धि प्राप्ति होती है ॥ ८१ ॥

मू. सोऽहं न तेऽरिर्न ममासि शत्रुः सुबाहु रेणो नम
मापकारी। दृष्टं मया सर्वमिदं यथात्मा अ
न्विष्य तां भूपरिपुस्त्वयान्यः ॥ ८२ ॥ ८२ ॥

श. और हे काशीनरेश न हम तुम्हारे शत्रु और न तुम हमारे शत्रु हो और सुबाहु भी मेरा अपकारी नहीं है मैं सबको अपनी ही आत्मा समझता हूँ इस वास्ते हे काशीनरेश अब तुम दूसरा शत्रु खोज लेउ ॥ ८२ ॥

सू. इत्यसतेनाभिहितो नरेन्द्रो हृष्टः समुत्थाय ततः सुबाहुः । दिष्ट्येतितं भ्रातरमाभिनन्द्य काशीश्वरं वाक्यमिदं वभाषे ॥ ८३ ॥ ८३ ॥

टी. जड़ अर्थात् सुमति कहते हैं कि जब इसतरह राजा अलर्क ने काशीनरेश को कहा तब सुबाहु हर्षित हो उठकर अपने भाई से कहने लगे कि भाग्य से मुझे तुम्हारे दर्शन मिले यह कहकर भाई की बहुत प्रशंसा करी फिर काशीनरेश से कहने लगे कि ॥ ८३ ॥

इति श्री मार्कण्डेय पुराणेः ष्टाध्यायः ॥ ४३ ॥

تینتالیسواں اویہیانے

۱۔ دثاترے جی کہتے ہیں کہ اے آرک اب میں اُن آرشتوں کو نینی علامات و آثار ناقص کو بیان کرتا ہوں کہ جنکو جوگی لوگ دیکھ کر اپنے مرنے کے وقت کو پہچان لیتے ہیں -
۲۔ اور وہ یہ ہیں کہ دیومارک یعنی ملکشان اور دھرومینی قطب اور شکر اور آرنہ دھتی نام ستار اور چاند کا سایہ یعنی چاندنی جس آدمی کو نہ دیکھ پرے تو وہ آدمی ایک برس سے زیادہ نہیں جی سکتا ہے - ۳۔ اور اگر آفتاب نکلنے کے وقت کی سرخی اور آفتاب اور آگ کی گرمی و تیزی جب شریر میں نہ معلوم ہو تو سمجھنا چاہیے کہ یہ آدمی گیارہ مہینہ سے بڑھ کر نہ جیے گا - ۴۔ اور اگر خواب میں تے یا علی یا پیشاب میں سونا یا چاندی پڑا ہو اور دیکھے تو وہ شخص دس مہینہ تک زندہ رہتا ہے - ۵۔ اور اگر خواب میں خیریت اور پیشاب اور

گندھربون کی بستی اور سونے کا درخت دیکھ کر تو وہ آدمی نو مہینہ تک زندہ رہتا ہے -
 ۷۔ اور جس آدمی کا بدن دہلے سے مٹا یا مٹے سے دہلا بلا کسی وجہ کے ہو جائے اور نہ کرے
 یعنی عادت اسکی بگڑ جائے تو وہ آدمی آٹھ مہینہ تک زندہ رہتا ہے - ۸۔ اور جس آدمی کے
 پانوں کے پنجہ یا اڑسی کا نشان کچھ یا خاک میں معلوم نہ ہو تو سمجھنا چاہیے کہ یہ آدمی سات
 مہینہ سے زیادہ نہ رہے گا - ۹۔ اور جس آدمی کے سر پر گندہ یا گندہ یا گندہ یا گندہ یا گندہ یا
 کالی چڑیا بیٹھ جائے تو وہ آدمی چھ مہینہ سے زیادہ نہ رہے گا - ۱۰۔ اور اگر کوئی آدمی کی
 قطار اڑی جاتی ہو اور اس میں سے کسی کو سے کا دھکا جس آدمی کے بدن میں لگ جائے
 یا بلا وجہ اوپر سے خاک بدن پر برسے لگے اور اسکی جوت معلوم ہو اور جو شخص اپنی پرچھان
 کو نہ دیکھے تو وہ شخص چار یا پانچ مہینہ میں مر جائیگا - ۱۱۔ اور جو کوئی بلا ابر کے دھن
 طرف بجلی چلتی ہوئی دیکھے یا رات کو اندر دھنکے یعنی قوس قزح دیکھے تو وہ شخص دو مہینہ
 مہینہ میں مر جائیگا - ۱۲۔ اور اگر کھی یا تیل یا پانی یا آئینہ میں اپنے بدن کو بغیر سر کے
 دیکھے تو وہ آدمی ایک مہینہ سے زیادہ نہ رہے گا - ۱۳۔ اور جس آدمی کے بدن سے غلیظ
 یا مڑھ کی ایسی بد بو آتی ہو وہ آدمی پندرہ دن سے زیادہ نہیں رہے گا - ۱۴۔ اور جس
 آدمی کا سینہ اور پشت پا غسل کر نیکے بعد فوراً سوکھ جائے اور پانی پینے پر بھی حلق ٹھوکی
 رہے تو وہ آدمی دن تک جیتا رہتا ہے - ۱۵۔ اور جس شخص کے سرمہ استھان بینی
 نازک مقامات میں باؤ یعنی نوا سٹاتی ہو اور اسے ایسا معلوم ہوتا ہو کہ گویا کوئی بدن کو
 کاٹتا ہو اور پانی کا چھونا بھی اسکو اچھٹا معلوم ہو تو وہ آدمی فوراً مر جائیگا - ۱۶۔ اور
 اگر خواب میں اپنے کو ریچھ یا بندر یا سوار اور گاتے ہوئے دھن کی طرف جانے دیکھے تو
 سمجھے کہ میری موت نزدیک ہے - ۱۷۔ اور جو شخص خواب میں دیکھے کہ سرخ یا سیاہ کپڑا پہن
 ہو تو وہ تین گاتی اور بستی ہوئی مجھے دھن کی طرف لیے جاتی ہیں تو وہ بھی جلد مر جائیگا - ۱۸۔ اور
 جو شخص خواب میں کسی بڑے ہلو ان زبردست آدمی کو حجامت بنوائے ہوئے اور ننگا اور
 ہنٹا اور بکتا ہوا دیکھے تو وہ بھی جلد مر جاتا ہے - ۱۹۔ اور جو آدمی خواب میں بل
 پانوں تک کچھ مین دوبا ہوا دیکھے وہ بھی جلد مر جاتا ہے - ۲۰۔ اور اگر آدمی خواب میں بل
 اور آگ اور خاک اور سانپ اور سونکھی ہوئی نڈی وغیرہ کو دیکھے وہ گیارہ مہینہ دن مر جائیگا -
 ۲۱۔ اور اگر خواب میں دیکھے کہ کوئی خونناک صورت کا آدمی سیاہ رنگ کال کی صورت مجھے پھرتا

ہتھیار سے مارتا ہی تو وہ جلد مر جاتا ہے۔ ۲۱ اور اگر آفتاب نکلنے وقت سیارن بولتی ہوئی
 جس کسی کے سامنے اور سیدھی چلی جائے یا دایہ یا بائیں طرف ہو کر چلی تو وہ بھی جلد مر جاتا
 ہے۔ ۲۲ اور جس شخص کو کھانا کھانے پر بھی بھوکہ سے دل میں درد معلوم ہو اور بلا وجہ دانت پر
 دانت کا گھٹا لگتا رہے تو جاننا چاہیے کہ اُسکی بھی عمر گھٹ گئی۔ ۲۳ اور جسکو چراغ اور آگ
 کی بونہ معلوم ہو اور رات کو ڈرتا ہو اور اپنی صورت دوسروں کی آنکھ کے اندر نہ دیکھائی
 دے تو وہ بھی جلد مر جاتا ہے۔ ۲۴ اور جس کیسکو آدھی رات کے وقت اندر دھنکے یعنی
 قوس قزح اور دن کو ستارے بھی دیکھ کر پین اُسکو جاننا چاہیے کہ میری عمر گھٹ گئی۔
 ۲۵ اور جس کیسکی ناک ٹیڑھی اور کان اونچا نیچا ہو جائے اور سر وقت بائیں آنکھ سے پانی
 بہتا رہے اُسکی عمر گھٹ گئی سمجھنا چاہیے۔ ۲۶ اور جس کسی کا منہ سرخ اور زبان سیاہ
 ہو جائے تو اُس پر جان کو سمجھنا چاہیے کہ میری موت کا وقت قریب آگیا۔
 ۲۷ اور جو شخص خواب میں دیکھے کہ میں گدھے یا اونٹ پر سوار ہوں اور دھنکے کی طرف
 جاتا ہوں تو اُسکے جلد مرنے میں کچھ شک نہیں ہے۔ ۲۸ اور جو آدمی اپنے دونوں کانوں
 کے سوراخوں کو اپنی انگلیوں سے بند کر کے کچھ بولے اور اُس بولنے کی آواز سنائی نہ دیوے
 اور آنکھ کی بینائی بھی جاتی رہے تو وہ بھی جلد مر جاتا ہے۔ ۲۹ اور جو کوئی خواب میں دیکھے
 کہ میں کنواں میں گر پڑا ہوں اور اُس کنوین کا منہ بند ہو گیا تو اُسکو سمجھنا چاہیے کہ زندگی
 میری ختم ہو چکی۔ ۳۰ اور جسکی درشت اور دم ہو جائے یعنی آنکھ اُلٹ جائے اور ایک نہ گری
 اور آنکھ سرخ ہو کر گھومنے لگے اور منہ سے گرم بھاپ نکلنے لگے اور ناف بھی سوجھ جائے تو سمجھنا
 چاہیے کہ اب یہ شہر کو چھوڑا چاہتا ہے۔ ۳۱ اور جو کوئی خواب میں اپنے کو آگ میں گر پڑا
 یا پانی میں ڈوبا ہوا دیکھے اور اُس نے نہ نکلے تو اُسکی بھی عمر آخر سمجھنا چاہیے۔ ۳۲ اور
 جس کیسکو دشت بھوت رات دن مارتا رہے اُسکی بھی موت ساتوین رات کو ضرور ہوگی۔
 ۳۳ اور جس کیسکو اپنا سفید لباس سرخ رنگ یا سیاہ رنگ کا معلوم ہو اُسکی بھی موت
 نزدیک ہی سمجھنا چاہیے۔ ۳۴ اور جس کیسکا سبھا و بدل جائے اور برکرت بھی اُٹھی ہو
 جائے تو یہ علامت اُسکے پاس جسم دوت کے آنے کی ہے۔ ۳۵ اور جس آدمی کو کسی سے
 بہت بت ہو اور ہمیشہ اُسکو پوچتا رہتا ہو اور پھر اُسی کا گلا دھنکے اور اُپمان یعنی تو میں
 کر۔ ۳۶ اور دیوتا وغیرہ کا پوچن بھی چھوڑ دے اور ضعیف ہوٹھے اور گرے اور ہر شخص

की बदगुनी करी और मान और बाप और दामाद की غ़रत और दुःकरे - ३६ और जोगी ओगिनी
 और नंदत और महता और غیرہ کا بھی شکار کرنا چھوڑ دے تو اسکی بھی موت گمانی لوگ نزدیک
 ہی سمجھتے ہیں - ३७ اے ہمارا ج ان ارشٹوں کو جن سے جوگیوں کو ہمیشہ دیکھنا چاہیے
 کیونکہ ہی ارشٹ سب آدمیوں کو ہمیشہ دن اور رات چل دیتے رہتے ہیں - ३۸ اور ان
 ارشٹوں کا پھل بڑا بھیاںک ہر اس واسطے اسکو اچھی طرح سے جانکر اسکے وقت کو اپنے دل
 میں خیال رکھو - ۳۹ اور اُس وقت کو بخوبی سمجھا جوگی لوگ تنہا دہشت ناک جگہ میں جا کر
 جوگ کریں جہیں وہ کال یعنی وقت مرگ جوگی کا کچھ ہرج نہ کر سکے - ۴۰ اس طرح جوگی ارشٹوں کو
 دیکھ کر اور اپنے مرنے کا خوف چھوڑ کر جب تک وہ دل یعنی وقت پہنچے - ۴۱ اسکے پہلے ہی
 کال کا سنبھاؤ جانکر جوگی جوگ کی جتن کر کے صبح یا شام یا دوپہر - ۴۲ یا رات کی وقت جس
 وقت ارشٹ کو دیکھ کر اسی دن یعنی اپنے مرنے کے دن پہلے ہی سے جوگ کریں - ۴۳ اور
 موت کا خوف چھوڑ کر اور کال کو جیت کر اسی جگہ یا دوسری جگہ من کو اسٹھر یعنی قائم
 کر کے رہیں - ۴۴ اور تینوں گنوں کو جیت کر جوگ کریں اور پر ماتما میں من لگا کر جیتن پر
 کو بھی چھوڑ دے - ۴۵ تو پھر جوگی اُس پر مہربان پد کو پہنچ جاتا ہے جو کہ عقل سے اور
 بیان سے باہری اور کسی اندری سے پکڑا نہیں جاسکتا - ۴۶ دھاتر سے جی کہتے ہیں کہ آ
 اگرک یہ سدھانت کی باتیں سمجھتے کسی اب جس سے جوگی برہمن مل جاتے ہیں وہ مختصر
 طور سے کہتا ہوں سنو - ۴۷ کہ خطرح چندرکانت نام جو اسر چندرمان کی جوت پڑنے سے
 پانی چھوڑتا ہے اور بغیر جوت چندرمان کے نہیں چھوڑتا یہی کیفیت جوگی کی ہے - ۴۸ اور خطرح
 سورج کانت نام جو اسر سورج کی کرن پڑنے سے آگ ظاہر کرتا ہے اور بغیر کرن پڑنے کے
 آگ نہیں نکلتی یہ بھی نظیر جوگی کے واسطے ہے - ۴۹ اور جس طرح جینٹی اور جونا اور نیولا
 اور سانپ اور گؤہ اور کینچل وغیرہ اور گھڑ کے مالک ایک ہی گھرمین رہتے ہیں اور اُس
 گھڑ کے گر جانے یا جل جانے پر وہ سب جانور دوسری جگہ چلے جاتے ہیں - ۵۰ اور اُس گھڑ کا
 رنج گھڑ والے ہی کو ہوتا ہے اُن جانور و گؤہ کو گھڑ رنج نہیں ہوتا اس طرح جوگ سدھ کا حال ہے -
 ۵۱ اور جینٹی جو اپنے چھوٹے منہ سے مٹی کاٹ کاٹ کر اور کھینچ کھینچ کر ڈھیر لگاتی ہے یہ گویا جوگیوں
 کے واسطے اُپر لکھ کر ہے کہ تم بھی اس طرح تھوڑا تھوڑا تپ کا ڈھیر لگاؤ - ۵۲ اور پھر
 خطرح پش اور چھپی پشے اور پھولی کو اور آدمی چل دار درخت کو تھوڑا تھوڑا کر کے کاٹ

دالتے ہیں اسی طرح جو گیونکو جوگ سدھ کرنا چاہیے۔ ۵۴ اور جی طرح ہرن کے بچہ کے
 مہرین پنے سینگ کا اگلا حصہ مثل تل کے دکھلائی دیتا ہے اور پھر جیسے جیسے وہ بچہ بڑھتا
 ہے ویسے ویسے سینگ بھی اُسکا بڑھتا جاتا ہے اس بات کو بھی جوگی لوگ دیکھ اور سمجھ کر
 سدھ کو حاصل کرتے ہیں۔ ۵۵ اور جی طرح پانی بھرے ہوئے برتن کو سر پر رکھ کر چلنے
 سے وہ برتن اُونچا نظر آتا ہے اسی طرح جو گیون کو جوگ میں اپنا من اُونچا رکھنا چاہیے۔
 ۵۶ اور دنیا کی اونی اونی نعمتوں کو جبین دُنیادار لوگ ہوس نفسانی کی وجہ سے پھنسنے
 رہتے ہیں تو پوربک جان لینے سے جوگی کرت کرت ہو جاتے ہیں۔ ۵۷ کیونکہ گھر وہی
 جبین رہنا ہو اور کھانا وہی جی جس سے زندگی بسر ہو اور اتھ وہی جی جس سے سکھ ہو
 تو پھر ایسے گھر کی محبت اور مٹا کیا۔ ۵۸ اور جی طرح عقلمند لوگ کسی کے منع کرنے سے
 اچھے کام کو نہیں چھوڑتے اسی طرح اگرچہ سب اندریان اپنا اپنا کچھ چاہتی ہیں لیکن جوگی
 لوگ اُنکا اُتار کر کے اپنا جوگ سدھ ہی کر لیتے ہیں۔ ۵۹ سمیت کہتے ہیں کہ اے
 پتا یہ باتیں سن کر راجا الوک دُشترے جی کو پر نام کر کے بہت خوشی سے کہنے لگے۔ ۶۰ کہ
 اے براجن میرے بڑے بھاک ہیں کہ پران کا سدھ پھونینے والا ڈر مجھے پیدا ہوا۔
 ۶۱ اور میرے بڑے بھاک ہیں کہ کاشی نریش کے بڑی دولت اور فوج اور طاقت ہوئی
 کہ جس سبب سے میں یہاں تک عاجز ہو کر آیا کہ آپ کا ست سنگ مجھے نصیب ہوا۔
 ۶۲ اور میری فوج اور نوکر اور چاکر جو مارے گئے اور خزانہ جو گھٹ گیا اور خوف جو مجھ کو پیدا
 ہوا اُسکو بھی میں اپنی خوش قسمتی سمجھتا ہوں۔ ۶۳ اور میرے بڑے بھاک ہیں کہ میں
 وزیر سے مجھ کو آپ کے چرنون کے درشن ملے اور آپ کی کسی ہوئی باتیں میرے جی میں گڑ
 گئیں۔ ۶۴ اور میرے دھن بھاک ہیں کہ آپ کے ست سنگ سے مجھے گیان پیدا ہوا اور
 آپ نے مجھ پر کرپا کی۔ ۶۵ جب آدمی کا پُٹ اُڑے ہوتا ہے تو اُسکو اترتھ میں بھی اترتھ
 حاصل ہوتا ہے جیسے آپ کی صحبت سے میرا دکھ میری بھلائی کا دینے والا ہوا۔ ۶۶ سُباہ
 یعنی میرا بڑا بھائی اور کاشی نریش بھی میرے اُپکاری ہوئے جنکے سبب سے آپ کی سرن میں
 میں آیا۔ ۶۷ اور آپ کو پر ساد رُوی اگن سے میرا گیان رُوی دُش سب جل گیا اب
 میں وہی تیر میر کر دنگا کہ جس سے پھر مجھ کو ایسا دکھ نہ ہو۔ ۶۸ کیونکہ آپ ایسے گیان داتا
 نہا تھے آگیا لیکر گریستی دھرم کو جو بن کے سمان ہے اور جبین درودکھ کے سب برچھ ہیں

چھوڑ دوں گا ۶۹ تب دتا ترے جی نے کہا کہ اے مہاراج آپ جاسیے آپکا لکھیاں ہوگا جس
 طرح سے میں نے آپ سے کہا ہی اسی طرح سے اُسکو ممتا اور اسکا چھوڑ کر اپنی ملکیت کے واسطے
 کیجیے۔ ۷۰ سمیت کہتے ہیں کہ راجا الکرک یہ بات سنکر دتا ترے جی کو پرنام کر کے فوراً وہاں
 گئے مہمان کاشی نریش اور اُنکے بڑے بھائی سُباہ تھے۔ اے اور سُباہ کے سامنے الکرک
 نے کاشی راج سے ہنسکر کہا۔ ۷۱ کہ اے مہاراج آپ نے اپنے پر اکرم سے جو راج حیت
 لیا ہی اُسکو آپ بھوک کیجیے یا سُباہ کے حوالہ کیجیے۔ ۷۲ تب کاشی نریش بولے کہ اے
 الکرک تم غیر جنگ کیے ہوئے کیوں راج کو چھوڑ کر علیحدہ ہوتے ہو یہ چھتری کا دھرم نہیں ہے اور
 تم چھتری کے دھرم کو چھوڑتے ہو ۷۳ کہ جب فوج راجاؤں کی ماری جاتی ہے تو وہ اپنے مرنے کا خوف
 چھوڑ کر لاکھوں دشمنوں کے سامنے جا کر تیر و کمان لیکر اکیلے مقابلہ کرتے ہیں۔ ۷۴ تب دشمنوں
 کو مار کر اپنی خواہش کے مطابق سکھ بھوک کرتے ہیں اور اپنی پر ہم سب کو واسطے بڑی بڑی جنگ
 بھی کرتے ہیں۔ ۷۵ تب الکرک نے کہا کہ اے کاشی نریش جیسا کہ آپ کہتے ہیں ویسا ہی میرے
 دل میں بھی پہلے تھا لیکن اب وہ باتیں میرے دل سے جاتی رہیں اور اسکا سبب میں بیان
 کرتا ہوں سنئے۔ ۷۶ کہ جیسا اس ہنسار کا شک تو ویسا ہی آدمیوں کا انتہ کرنا بھی ہے اور
 یہی سبب سب جانداروں کا بھی۔ ۷۷ مگر شکست مان جو ترکہ ہو وہ سب میں ایک ہی ہے اسی کاشی
 نریش جب یہی بات ہی تو نادانی سے لیکوہ دست یا دشمن یا مالک یا نوکر سمجھنا محض بیجا ہے۔
 ۷۸ میں تم سے دکھ پا کر دتا ترے جی کی سرن میں گیا اور اُنکی کرپا سے یہ گیان مجھ کو حاصل ہوا
 ۷۹ کہ جس سے میں نے سب کچھ چھوڑ کر اور اندری اور من کو جیت کر من کو برہمن لگا دیا
 من کا جیت لینا ہی بڑی جیت ہے۔ ۸۰ اسی مطلب کے حاصل ہونیکے واسطے سب سادھنا
 کی جاتی ہیں اسکے سواے دنیا میں اور کوئی بات نہیں ہے جب اندریاں قابو میں ہو جاتی ہیں
 تب ہی آدمی سب سے ہو جاتا ہے۔ ۸۱ اے کاشی نریش نہ میں تمھارا دشمن ہوں اور نہ تم میرے
 دشمن ہو اور نہ سُباہ میرے دشمن ہیں میں سب کو اپنی اتما جانتا ہوں اے کاشی نریش اب تم
 اپنا مقابلہ کرنا لا دشمن دوسرا ڈھونڈ لو۔ ۸۲ سمیت کہتے ہیں کہ جب اس طرح سے الکرک
 نے کاشی نریش سے کہا تب سُباہ خوش ہو کر اٹھکر اپنے بھائی الکرک سے کہنے لگے کہ میرے دین
 بھاگ ہیں کہ تمھارے درشن سے یہ کمکر سُباہ نے الکرک کی بہت تعریف کی اور کاشی نریش کی
 طرف مخاطب ہو کر کہنے لگے۔ فقط۔

मू. सुबाहु रुवाच ॥ यदर्थं नृपशाहूलत्वा महं
शरणं गतः । तन्मया सकलं प्राप्तं यास्यामि
त्वं सुखी भव ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

टी. सुबाहु कहते हैं कि हे नरो में व्याघ्र काशीनरेश जिस काम के
वास्ते मैं तुम्हारी शरण में आया था अब वह सब मुझे हासिल हुआ
आ अब मैं जाता हूँ आप सुख से रहिये ॥ १ ॥

मू. काशिराज उवाच ॥ किन्निमित्तं भवान् प्रा-
प्नो निष्पन्नो ऽर्थश्च कस्तव । सुबाहो तन्मया
चक्ष परं कौतूहलं हि मे ॥ २ ॥ २ ॥ २ ॥ २ ॥

टी. तब काशीनरेश ने पूछा कि हे सुबाहु तुम किस काम के वास्ते मेरे
पास आये और तुम्हारा कौन मतलब हासिल हुआ मुझ से कहो क्योंकि
मुझको बड़ा अश्चर्य्य है ॥ २ ॥

मू. समाक्रान्तमलर्केन पितृपैतामहं महत् । राज्यं
देहीति निर्जित्य त्वया ह मभिचोदितः ॥ ३ ॥

टी. क्योंकि पहिले तो तुमने मुझ से यह कहा था कि अलर्क ने मेरे
बाप दादे का पैदा किया हुआ राज्य और धन जबरदस्ती से ले लि-
या है उसको जीतकर राज्य मुझे देदो ॥ ३ ॥

मू. ततो मया समाक्रम्य राज्यं मत्वा नुजस्यते । एत-
त्तेवलमानीतं तद्गुह्यं स्वकुलोचितं ॥ ४ ॥

टी. सो तुम्हारे कहने से मैंने राज्य उससे जीतकर तुम्हारे वास्ते ले लिया
है यह राज्य तुम्हारे खानदान का है इसको लेवो और भोग करो ॥ ४ ॥

मू. सुबाहु रुवाच ॥ काशिराज निबोध त्वं यदर्थं
मयमुद्यमः । कृतो मया भवांश्चैव कारितो-
ऽत्यन्तमुद्यमं ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥

टी. सुबाहु ने जगन दिया कि हे महाराज जिस अर्थ के वास्ते मैंने

इस काम का जोन आपके ऊपर उलाया उसका हाल कहता हूँ सुनिये ॥ ५ ॥

मू. आताममायं ग्राम्ये पुग्रक्तो भोगे पुतत्ववित् । वि
सूदौ बोधवन्तौ च भानरावयजौ मम ॥ ६ ॥

टी. कि यह मेरा भाई अलर्क तत्व का जाननेवाला संसारी भोग
में फँस गया था और मेरे दो बड़े भाई भी पहिले सूद ये पी-
छे उनको ज्ञान हुआ ॥ ६ ॥

मू. तयोर्ममचयन्मात्रावात्येस्तन्यं यथामुखे । त
थावबोधो विन्यस्तः कर्णयोरवनीपते ॥ ७ ॥

टी. उसी तरह मुझको भी ज्ञान हुआ जैसे पहिले बच्चे को दूध पीने का ज्ञान
होना है फिर पीछे बात सुननेकी ताकत होती है ॥ ७ ॥

मू. तयोर्ममचविजेयाः पदार्था ये मतानृभिः । प्र-
काश्यम् मनसो नीतास्ते मात्रानास्य पार्थिव ॥ ८ ॥

टी. इसी तरह मेरे भाइयों को और मुझको वह पदार्थ हासिल हुआ जिस
को सबकोई नहीं जानता है और वह पदार्थ ऐसा है कि जिसके जाननेसे
हृदय में प्रकाश होता है परन्तु हे राजन् वह बात अलर्क में नहीं ॥ ८ ॥

मू. यथैकमर्थं यातानामेकस्मिन्नवसीदति । दुःखं
भवति साधूनां तथा स्माकं महीपते ॥ ९ ॥

टी. जिस तरह साधुलोगों को अर्थ प्राप्त होने से सुख का खयाल नहीं रह-
ता उसी तरह हम सबको भी धन होने से दुःख होता है सुख नहीं ॥ ९ ॥

मू. गार्हस्थमोहमापन्ने सीदत्यस्मिन्नेश्वर । सम्ब-
न्धिन्यस्य देहस्य विभ्रति भ्रातृ कल्पना ॥ १० ॥

टी. और इस शरीर का सम्बन्धी आत्मा जो मेरे भाई की सूरत में है
वह गृहस्थी के मोह में फँस कर कष्ट पाना था ॥ १० ॥

मू. ततो मया विनिश्चित्य दुःखाद्वैराग्यभावना । भ-
विष्यतीत्यस्य भवानित्युद्योगाय संश्रितः ॥ ११ ॥

टी. यह कह उसका देखकर मैं ने विचार किया कि दुःख पड़ने से ज्ञान होता है इसी बात को दिल में बहराकर मैं आप के पास आया और उद्योगी होकर आप से उसकी यत्न चाही ॥ ११ ॥

मू. तदस्य दुःखाद्वैराग्यं संबोधादवनीपते । समुद्र-
तं कृतं कार्यं भद्रं तेऽस्तु ब्रजाम्यहं ॥ १२ ॥

टी. बरे आप की इस लड़ाई के जीत लेने से अलर्के को दुःख होकर स्नान हुआ और उस ज्ञान से वैराग्य भी पैदा हुआ इसी मतलब के वास्ते मैं आप के पास आया था सो ब्राह्मण हुआ आपका कल्याण रहै मैं जाना हूँ ॥ १२ ॥

मू. उष्टमदालसा गर्भे पीत्वा तस्यास्तथा स्तनं । ना-
न्यनारी सुतैर्यातं वर्त्म याति ति पार्थिव ॥ १३ ॥

टी. हे राजन् मैं मदालसा के गर्भ में रहा और उनका दूध पिया तो अब जिसमें फिर दूसरी स्त्री के गर्भ में न जाऊँ ॥ १३ ॥

मू. विचार्य तन्मया सर्वं युष्मत्संश्रयपूर्वकं । कृतं
तच्चापि निष्पन्नं प्रयास्ये सिद्धये पुनः ॥ १४ ॥

टी. यह सब शोचकर मैं यहाँ आया और आप के सबब से यह सब बातें मुझे प्राप्त हुई अब मैं अपना योग सिद्ध करने के वास्ते जाना हूँ ॥ १४ ॥

मू. उपेक्ष्य ते सीदमानः स्वजनो बान्धवः सुहृत् । यैर्न-
रेन्दुनतान् मन्ये सेन्द्रिया विकलाहिते ॥ १५ ॥

टी. और जो नरेन्दु लोग अपने भाई बन्धु और दोस्त आशना वगैरा को दुःख में छोड़ देते हैं उन लोगों को मैं सुखी नहीं समझता हूँ और उन लोगों की सब इन्द्रियाँ और वे सदा विकल रहते हैं ॥ १५ ॥

मू. सुहृदि स्वजने बन्धौ समर्थे योऽवसीदति । धर्म्मार्थ-
काम मोक्षेभ्यो वाच्यास्ते तत्र न त्वसौ ॥ १६ ॥

टी. और जिसके दोस्त आशना भाई बन्धु सब सुख में हों और आप कुछ पाना हो तो उसी को अर्थ और धर्म्म और काम और मोक्ष

प्राप्त होता है और उन सुखी लोगों को नहीं होता ॥१६॥

मू. एतत्त्वत्सङ्गमाद्भूपमयाकार्यमहत्कृतं। स्व-
स्तितेऽस्तुगमिष्यामिज्ञानभागभवसत्तम ॥१७॥

टी. और हे महाराज तुम्हारे सङ्गम से यह बड़ा कार्य मैंने किया तुम्हारा क-
ल्याण हो मैं जाना हूँ और तुम भी उत्तम ज्ञानी हो जाओ ॥ १७ ॥

मू. काशिराज उवाच ॥ उपकारस्त्वयासाधोर-
लर्कस्य कृतो महान् । ममोपकाराय कथं न
करोषि स्वमानसं ॥ १८ ॥ १८ ॥ १८ ॥ १८ ॥

टी. तब काशीनरेश बोले कि हे सुबाहु तुमने अलर्क का बड़ा उपकार
किया अब मेरा उपकार करने में क्यों मन नहीं लगाते हो ॥ १८ ॥

मू. फलदायी सतांसद्भिः सङ्गमो नाफलो यतः । त-
स्मात्त्वत्संश्रयाद्युक्तामया प्राप्ता समुन्नतिः ॥ १९ ॥

टी. क्योंकि साधुओं की संगति मनुष्यों को फल देने वाली होती है दुखी कभी
नहीं रहने देती इस वास्ते आपकी सङ्गति से मैं बड़ी पदवी को प्राप्त हुआ ॥ १९ ॥

मू. सुबाहुरुवाच ॥ धर्मार्थकाममोक्षारव्यं पु-
रुषार्थचतुष्टयं । तत्र धर्मार्थकामास्ते स-
कला हीयतेऽपरः ॥ २० ॥ २० ॥ २० ॥ २० ॥

टी. सुबाहु बोले कि अर्थ और धर्म और काम और मोक्ष यही चार पुरु-
षार्थ हैं आपको अर्थ धर्म काम तो प्राप्त है पर एक मोक्ष नहीं है ॥ २० ॥

मू. तत्ते सङ्क्षेपतो वक्ष्ये तदिहैकमनाः शृणु । श्रुत्वा
च सम्यगालोच्य यतेथाः श्रेयसे नृप ॥ २१ ॥

टी. तो उसको भी मैं संक्षेप से कहता हूँ जो लगाकर सुनिये और
सुनकर अपनी भलाई के वास्ते यत्न कीजिये ॥ २१ ॥

मू. ममेति प्रत्ययो भूपनकार्योऽहमितित्वया । स-
म्यगालोच्य धर्मो हि धर्माभावे निराश्रयः ॥ २२ ॥

टी. अर्थात् हे राजन् ममत्व का घमण्ड कभी न करौ हरतरह से ज्ञान में रहिकर धर्म की इच्छा रखवौ क्योंकि एक धर्म के छोड़ देने से सब सत्कर्म बूझा होजाते हैं ॥२२॥

मू. कस्याहमितिसञ्ज्ञेयमित्वालोच्यत्वयात्मना । वा-
ह्यान्तर्गतमालोच्यमालोच्यापररात्रिषु ॥ २३ ॥

टी. और तुम अपने मन में समझो कि हम नाम किसका है और सब के भीतर और बाहर जो आत्मा प्राप्त है उसको जिसतरह रात्रि में जागकर योगी लोग देखते हैं उसीतरह तुम भी देखौ ॥२३॥

मू. अव्यक्तादिविशेषान्तमविकारमचेतनं । व्यक्ता
व्यक्तं त्वया ज्ञेयं ज्ञाता कश्चाहमित्युत ॥ २४ ॥

टी. और उस जीवात्मा का आदि और मध्य और अन्त और अव्यक्त यानी कोई नहीं जानता है और वह विकार रहित है और अचेतन है यानी बुद्धि से बाहर है व्यक्ता व्यक्त है इसको जानों और हम कौन हैं इसको भी जानों ॥२४॥

मू. एतस्मिन्नेव विज्ञाते विज्ञातमखिलं त्वया । अ-
नात्मन्यात्मविज्ञानमस्वस्वमिति मूढता ॥ २५ ॥

टी. इन सब बातों के जानलेने से सब जानजाओगे और जो आत्मानहीं है उसको आत्मा कहना और धन को जो किसी का नहीं है उसको अपना कहना यह सब मूढ़ता है ॥२५॥

मू. सोऽहं सर्वगतो भूपलोकसंव्यवहारतः । मये-
दमुच्यते सर्वं त्वया पृष्टो ब्रजाम्यहं ॥ २६ ॥

टी. और हे राजन् वही मैं सर्वगत यानी सब में प्राप्त हूँ पर तुम्हारे पूछने से लौकिक व्यवहार के सबब से मैं ने कहा अब जाता हूँ ॥२६॥

मू. एवमुक्त्वा ययौ धीमान् सुबाहुः काशिभूमिपं ।
काशिराजोऽपि संपूज्य सोऽलर्कस्वपुंरययौ ॥ २७ ॥

टी. सुबाहु यह बातें काशीनरेश से कहकर बिदा हुवे और काशीनरेश

भी हरतरह से अलर्क का पूजन करके अपनी राजधानी को गये ॥ २७ ॥

मू. अलर्कः पिसुतं ज्येष्ठमभिषिच्य नराधिपं । वनं
जगाम सन्त्यक्तस्त्वसङ्गः स्वसिद्धये ॥ २८ ॥

टी. और अलर्क भी अपने बड़े बेटे को राज्य सौंप कर और आप बिलकुल
दुनिया का संग छोड़ अपनी सिद्धि के लिये जंगल को चले गये ॥ २८ ॥

मू. ततः कालेन महता निर्दन्दो निष्परिग्रहः । प्रा-
प्य योगर्द्धिमतुलां परं निर्व्याणमाप्तवान् ॥ २९ ॥

टी. फिर कितने दिनों तक बेफिक्र और बेखटके योग सिद्ध करने
परम निर्व्याण पद को पहुँच गये ॥ २९ ॥

मू. पश्यन् जगदिदं सर्वं स देवा सुरमानुषं । पाशैर्गु-
णमयैर्वह्मवध्यमानञ्च नित्यशः ॥ ३० ॥

टी. और सम्पूर्ण देवता और असुर और मनुष्य आदि से संयुक्त
जो यह संसार है और गुण की फाँस में बँधा हुआ है और दिन दि-
न बँधता जाता है ऐसा देखकर ॥ ३० ॥

मू. पुत्रादिभ्रातृपुत्रादिस्वपारक्यादिभावितैः । आ-
कृष्यमाणं करणैर्दुःस्वार्त्तं भिन्नदर्शनं ॥ ३१ ॥

टी. पुत्र और भाई बन्धु की मुहब्बत में जो मन पारा के समान
बेकरार रहता है ॥ ३१ ॥

मू. अज्ञानपङ्कगर्भस्थमनुद्धारं महामतिः । आत्मा
नञ्च समुत्तीर्णं गाथा मेतामगायत ॥ ३२ ॥

टी. और जो अज्ञान रूपी फाँस में फँसे हुवे हैं कि जिससे निकलना
मुश्किल है अपने को उससे निकला हुआ समझकर यह गीत
गाने लगे ॥ ३२ ॥

मू. अहो कष्टं यदस्माभिः पूर्वं राज्यमनुष्ठितं । इ-
ति पश्चान्मया ज्ञातं धीगन्नास्ति परं सुखं ॥ ३३ ॥

टी. कि पहिले जो राज्य करने की मुझे इच्छा थी वह कष्ट देने वाली थी यह बात अब मालूम हुई कि सिवाय योग के दूसरी बात में सुख नहीं है ॥३३॥

मू. जड उवाच ॥ तातै न त्वं समातिष्ठ मुक्तये योग मुत्तमं । प्राप्स्यसे येन तद्रूपं यत्र गत्वान शोचसि ॥ ३४ ॥ ३४ ॥ ३४ ॥ ३४ ॥

टी. जड अर्थात् सुमति कहते हैं कि हे तात इसी उत्तम योग में आप अपने मन को लगाइये कि जिसके सबब से ब्रह्मपद में पहुँच जाइयेगा और फिर किसी तरह का शोच आपको न होगा ॥३४॥

मू. ततोऽहमपियास्यामि किं यन्नैः किं जपेन मे । कृतकृत्यस्य कारणं ब्रह्मभावाय कल्पते ॥ ३५ ॥

टी. और मैं कृतकृत्य हूँ मुझे योग और तप वगैरा करना क्या जरूर है अच्छे लोगों को वही करना चाहिये कि जिसमें ब्रह्म प्राप्त हो ॥३५॥

मू. त्वतोऽनुज्ञामवाप्याहं निर्दन्दो निष्परिग्रहः । प्रयतिष्ये तथा मुक्तौ यथायास्यामि निर्द्वेति ॥ ३६ ॥

टी. और मैं आपकी आज्ञा पाकर बेफिक्र और बेखटके होकर मुक्ति के वास्ते वही यत्न करूँगा जिससे निर्द्वेति पद में प्राप्त हो जाऊँ ॥३६॥

मू. पक्षिण ऊचुः ॥ एवमुक्त्वा सपितरं प्राप्यानुज्ञां ततश्च सः । ब्रह्मन् जगाम मेधावी परित्यक्तपरिग्रहः ॥ ३७ ॥ ३७ ॥ ३७ ॥ ३७ ॥

टी. पक्षी कहते हैं कि हे जैमिनि जी इतना कह कर वह बुद्धिमान् ब्राह्मण अर्थात् सुमति अपने पिता को प्राणाम कर और उनसे आज्ञा लेकर संसारी व्यवहार छोड़ कर जंगल को चला गया ॥३७॥

मू. सोऽपि तस्य पिता तद्वत्क्रमेण सुमहामतिः । वाणप्रस्थं समास्थाय चतुर्थ्यं श्रममभ्यगात् ॥ ३८ ॥

टी. और उनके पिता महा बुद्धिमान् भी उसी तरह क्रम से वाणप्रस्थाश्रम

में प्राप्त होकर फिर बाद उसके यती आश्रम में प्राप्त हुवे ॥ ३७ ॥

गू. तत्रात्मजं समासाद्य हित्वा बन्धं गुणादिकं । आ-
सिद्धिं परां प्राप्नुत्वा लोधात्तसंमतिः ॥ ३८ ॥

श्री. हे जैमिनि जी इस तरह वह ब्राह्मण अपने पुत्र से ज्ञान पाकर
और गुणादिक बन्धनों को छोड़कर ज्ञान होजाने से परम सिद्धि
को पहुँच गया ॥ ३८ ॥

मू. एतन्नेकथितं ब्रह्मन्यत्पृष्ठं भवता वयं । सुवित्त-
रं यथा वच्च किमन्यच्छोनुमिच्छसि ॥ ४० ॥

श्री. और हे ब्रह्मन् जो बात आप ने हम लोगों से पूछा उसको हम
ने विस्तार पूर्वक कहा अब आप और किस बात के सुनने की इच्छा
रखते हैं सो कहिये ॥ ४० ॥

इति श्री मार्कण्डेय पुराणे
पिता पुत्र सम्वादे जड़ोपा-
ख्यानं समाप्तम् ॥ ४४ ॥

چوالیسواں اڈھیاے

۱۔ سبب کہتے ہیں کہ اے شیر نر کاشی زرش جس کام کے واسطے میں آپ بی پناہ میں آیا تھا
وہ سب مجھے حاصل ہوا آپ خوش رہیے اب میں جاتا ہوں - ۲ کاشی زرش نے پوچھا کہ ا
ستہم کس کام کے واسطے میرے پاس آئے تھے اور تم کو کیا حاصل ہوا مجھ سے بیان کرو
مجھے تعجب ہے - ۳ کیونکہ پہلے تو میں نے مجھے کہا تھا کہ اگر میں نے میرے باپ دادے کا حاصل کیا
ہو اراج زبردستی سے چھین لیا ہوں اس راج کو جیت کر مجھے دیجیے - ۴ تب تمہارے کہنے سے

تمہارے واسطے میں نے راج اُس سے جیت لیا ہے جو کہ یہ راج تمہارے خاندان کا ہی اس لیے
 یہ راج تم لےو اور بھوک کرو۔ ۵۔ سبہ نے جواب دیا کہ اسے مہاراج جس لیے یہ کام آپ سے لیا
 اسکا حال آپ سے مفصل کہتا ہوں سنئے۔ ۶۔ کہ یہ میرا بھائی ارک ٹو کا جاننے والا ہو کر سنساری
 بھوک اور ہوس نفسانی میں پھنس گیا تھا اور میرے دو بڑے بھائی بھی پہلے موڑھ یعنی جاہل
 پیچھے اُنکو گیان ہوا۔ ۷۔ اسی طرح مجھکو بھی گیان حاصل ہوا جیسے بچہ کو پہلے دودھ پینے کا گیان
 ہوتا ہے اور پھر بات سننے کی طاقت ہوتی ہے۔ ۸۔ اسی طرح میرے بھائیوں کو اور مجھکو وہ پدارتھ
 حاصل ہوا جسکو ہر ایک نہیں جانتا اور وہ پدارتھ ایسا ہی کہ جسکے جاننے سے دل میں روشنی ہوتی
 ہے مگر اے راجا وہ بات ارک میں نہ تھی۔ ۹۔ جس طرح سادھ لوگوں کو دولت حاصل ہونے
 سے کچھ سکھ نہیں ہوتا اسی طرح ہم سبکو بھی دولت حاصل ہونے سے سکھ نہیں ہوتا بلکہ دکھ ہوتا ہے
 ۱۰۔ اور اس جسم میں رہنے والا آتما جو میرے بھائی کے روپ میں ہے وہ گمستھی کے موئے یعنی
 محبت دنیاوی میں پھنس کر کشت پاتا تھا۔ ۱۱۔ وہی کشت اُنکا دیکھ کر میں سوچا کہ دکھ پڑنے
 سے آدمی کو گیان ہوتا ہے اس سے کوئی تدبیر ایسی ہو کہ جمین ارک کو بڑا دکھ ہو یہ بات دل میں
 ٹھہر کر میں آپ کے پاس آیا تھا۔ ۱۲۔ اور میرے کہنے سے آپ نے اُنکا راج بھی جیت لیا
 کہ جس سبب سے ارک کو بڑا دکھ ہوا اور اُس دکھ سے اُسکو گیان پیدا ہوا اور اُس گیان سے میرا گ
 حاصل ہوا غرض کہ اسی کام کے واسطے میں آپ کے پاس آیا تھا اور وہ مراد میری حاصل ہوئی اب
 میں جاتا ہوں آپ کا بھلا ہو۔ ۱۳۔ اے راجا میں بدالسا کے گرجہ میں رہا اور اُنکا دودھ بھی
 پیا تو اب جمین پھر کسی استری کے گرجہ میں نہ آؤں۔ ۱۴۔ اس واسطے میں بیان آیا اور آپ
 کے سبب سے یہ مراد میری حاصل ہوئی اب میں اپنا جوگ سدھ کر نیکے واسطے جاتا ہوں۔
 ۱۵۔ جو لوگ اپنے بھائی بندھ دوست آشنا کو دکھ میں چھوڑ کر آپ دنیا کا سکھ کرتے ہیں ایسے
 لوگوں کو میں سکھ نہیں سمجھتا ہوں بلکہ اُن لوگوں کی سبب اندریاں اور وہ آپ ہمیشہ دکھ
 میں رہا کرتے ہیں۔ ۱۶۔ اور جسکے دوست آشنا بھائی بندھ عزیز اقارب سکھ میں ہوں
 اور آپ تکلیف اٹھاتا ہو تو اُسکو ارتھ دھرم کام موکش حاصل ہوتا ہے اُن سکھی لوگوں کو
 نہیں ہوتا۔ ۱۷۔ اے مہاراج تمہارے ذریعہ سے یہ بڑا کام ہوا تمہارا بھلا ہوں میں جاتا ہوں آپ
 تم بھی اتم گیانی ہو جاؤ۔ ۱۸۔ کاشی نریش بولے کہ اے سبہ تینے ارک کا بڑا بھاری کجا
 کیا میرا بھی آپکا کرو۔ ۱۹۔ سادھ لوگوں کی سنگت آدمیوں کو پھل ذایک ہوتی ہے دکھی

رہنے نہیں دیتی میں بھی آپ کی صحبت سے بڑی پروی کو پہنچنا چاہتا ہوں۔ ۲۰ سبہ
 نے کہا کہ ارتھ دھرم کام موکش ہی چار پدارتھ ہیں سو آپ کو ارتھ اور دھرم اور کام تو
 حاصل میں صرف ایک موکش نہیں ہے۔ ۲۱ سو اسکو بھی مختصر طور سے میں آپ کو بتاتا ہوں
 جی لگا کر شفیہ اور اسکو شکر اپنی بھلائی کے واسطے تدبیر کیجیے۔ ۲۲ اور وہ یہ ہے کہ خودی کو
 چھوڑ کر ہر طرح سے دھرم کو قائم رکھیے کیونکہ ایک دھرم کے چھوٹ جانے سے سب ارتھ بے اثر
 ہو جاتے ہیں۔ ۲۳ اور تم اپنے دل میں سوچو کہ خودی کس کا نام ہے اور ظاہر اور باطن سے
 جاننے کے لائق جو آتما ہے اور جسکو گیانی لوگ شب بیداری اختیار کر کے دیکھتے ہیں۔ ۲۴ اور
 جس جو آتما کا آؤ اور مدھ اور آمت کوئی نہیں جانتا اور وہ سب عیبوں سے پاک ہے اور
 ظاہر عقل سے باہر اور بیکت اور ابیکت ہے اسکو جانو۔ ۲۵ ان باتوں کے جاننے سے
 سب کچھ جان جاو گے اور جو آتما نہیں ہے اسکو آتما کہنا اور دھن دولت جو کسکی نہیں ہے اسکو
 اپنی سمجھنا محض نادانی ہے۔ ۲۶ اسے راجا جو ہی میں ہوں جو سب میں موجود ہوں بھارت
 پونچھنے سے دنیا کی رسم کے سبب سے میں نے بیان کیا اب جاتا ہوں۔ ۲۷ یہ باتیں کاشی کے
 راجا سے لکھ سبہ تو رخصت ہوئے اور کاشی تشریف ہر طرح سے الگ کا یو جن کر کے اپنی راہ چلی
 کو گئے۔ ۲۸ اور اگر ان اپنا راج اپنے بڑے بیٹے کو سونپ کر آپ دنیا کا تعلق بالکل چھوڑ کر
 اپنے سدم ہونیکے واسطے جنگل کو چلے گئے۔ ۲۹ پھر تو بفر اور بے تردد ہو کر حیدریت کے بعد
 جوگ کو سدم کر کے پریم زبان پر کو حاصل کیا۔ ۳۰ اور سنسار کو دیوتا اور اسر اور شنگھ کے ساتھ
 گن کی پھانٹ میں پھنسا ہوا اور روز بروز جہالت کے سبب سے پھنستا جاتا تصور کر کے
 ۳۱ اور بیٹے بھائی بندہ وغیرہ کی محبت سے (جس میں طبعیت مثل سیلاب یعنی پارے کی طرح
 بیکرا رہتی۔ ۳۲ اور اگیاں روپی و لدل میں ایسے پھنسنے ہوئے تھے کہ جس میں سے نکلتا
 مشکل تھا) اپنے کو علوہ اور نکلا ہوا سمجھ کر یہ گیت گانے لگے۔ ۳۳ کہ پہلے راج کر تیکی
 خواہش جو مجھے ہوئی تھی وہ بیفائدہ تھی یہ بات مجھے اب معلوم ہوئی کہ سوائے جوگ کے اور
 کسی میں سکھ نہیں ہے۔ ۳۴ سمجھتے تھے کہ اسے پتا اسی اتم جوگ میں آپ اپنے من کو
 لگا بیٹے اسی کے سبب سے آپ برہم پد میں پہنچ جائیے گا پھر کس طرح کا سوچ آگیا باقی نہ سکا۔
 ۳۵ میں تو کرت کرت ہوں مجھے جات اور جب کرنے سے کیا کام اچھے لوگو کو دسی کرنا چاہیے کہ
 جس میں برہم پر اپت ہو۔ ۳۶ آپ کی اگیا پاکر میں بفر اور بے تردد ہو کر گت کے واسطے وہ

जन्म करुणगावस से जन्म मन से चोठ जाउन - ३६ पंचमी कते हैं कि असे जमिन जी सी
 बात ककर समेत अपने पता को प्रमाम कर के और अन्ते अक्या लिकर दुनिया के सब तल्लकत को चोठ कर
 जगल को चले गये - ३७ और समेत के पता भी अष्टम के मोफत बां प्रसत्त अष्टम में
 अकर जती अष्टम में आये - ३८ मनी अपने पत्र से गियान पाकर गन आदक बन्धन से चोठ कर
 प्रम सत्तह भोगे - ३९ पंचमी जमिन जी से कते हैं कि असे जमिन जी जो बात आप ने हम
 लोगन से पूछी असुने मन्त्र आप से कह सुनाया आप और किस बात के सुने की खरा
 रकते हैं वह किये - फल

मू. जैमिनिरुवाच ॥ सम्यगेतन्ममारव्यातंभ
 वद्विर्द्विजसत्तमाः । प्रवृत्तिश्च निवृत्तिश्च
 द्विविधं कर्म वैदिकं ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

श्री. जैमिनि जी कहते हैं कि हे पक्षी प्रवृत्ति और निवृत्ति दो तरह के
 वैदिक कर्म की तरह से आप लोगों ने मुझसे कहा ॥ १ ॥

मू. अहोपितृप्रसादेन भवतां ज्ञानमीदृशं । ये
 नतिर्यक्तमप्येतत्प्राप्य मोहस्तिरस्कृतः ॥ २ ॥

श्री. पर बड़े आश्चर्य की बात है कि पिता के प्रसाद से ऐसा ज्ञान
 आप सभी ने पाया जिसके सबब से इस पक्षि योनि में भी सब तरह
 के मोह को छोड़ दिया है ॥ २ ॥

मू. धन्याभवन्तः संसिद्धौ प्रागवस्थास्थितं यतः । भ
 वतां विषयोद्भूतैर्न मोहैश्चाल्यते मनः ॥ ३ ॥

श्री. आप लोग धन्य हैं क्योंकि आपने सिद्ध होने के वास्ते ज
 गे जैसा मन आप लोगों का था अब भी वैसा ही है और मोह जो वि
 षय से उत्पन्न है उसी के सबब से आप सभी का मन अचल हो रहा है ॥ ३ ॥

मू. दिष्ट्या भगवता तेन मार्काण्डेयेन धीमता । भव
 न्तो वै समारव्याताः सर्वसन्देहहन्तमाः ॥ ४ ॥

टी. हमको भाग्य से मार्कण्डेयजी ऐसे ज्ञानी मिले थे कि जिन्होंने आप ऐसे महात्माओं का पता बतलाया हमको कि बेलोग निःसन्देह सन्देह को छुड़ा देंगे ॥ ४ ॥

मू. संसारस्मिन्मनुष्याणां भ्रमतामति सङ्कटे । भवद्विधैः समसंगो जायते न तपस्विनां ॥ ५ ॥

टी. जो मनुष्य लोग इस संकट भरे हुवे संसार में घूमते हैं उनको आप ऐसे महात्माओं का सङ्गम भाग्य से होता है बल्कि बड़े बड़े तपस्वियों को भी आप लोगों का दर्शन दुर्लभ है ॥ ५ ॥

मू. यद्यहं संगमासाद्य भवद्विज्ञानदृष्टिभिः । न स्यात्कृतार्थस्तन्मूननमेऽन्यत्र कृतार्थता ॥ ६ ॥

टी. जबकि हम आप लोगों की ज्ञान दृष्टि के संग से कृतार्थ नहीं गे तो फिर हमारे बड़े दुर्भाग्य हैं आप ऐसे महात्माओं के सिवाय दूसरा कौन है जो हमको कृतार्थ करेगा ॥ ६ ॥

मू. प्रवृत्ते च निवृत्ते च भवतां ज्ञानकर्मणि । मतिमत्तमला मन्ये यथानान्यस्य कस्यचित् ॥ ७ ॥

टी. क्योंकि प्रवृत्ति और निवृत्ति के ज्ञान कर्म में जैसी आप लोगों की मति निर्मल है वैसी किसी की नहीं ॥ ७ ॥

मू. यदित्वनुग्रहवती मयि बुद्धिर्हि ज्योत्तमाः । भवतां तत्समाख्यातुमर्हते दमशेषतः ॥ ८ ॥ ८ ॥

टी. हे हिजोत्तम मुझपर जो आप लोगों की कृपा हो तो जो मैं पूछता हूँ उसको कहिये ॥ ८ ॥

मू. कथमेतत्समुद्भूतं जगत्स्थावरजङ्गमं । कथञ्च प्रलयकालेषु न्यस्यन्ति सत्तमाः ॥ ९ ॥ ९ ॥

टी. अर्थात् स्थावर और जंगम मय यह जो संसार है सो किस तरह उत्पन्न होता है और काल प्राप्त होने पर फिर किस तरह भिड़ जाता है ॥ ९ ॥

मू. कथञ्चवंशाद्देवविपितृभूतादिसम्भवाः । म-
न्वन्तराणिचकथंवंशानुचरितञ्चयत् ॥ १० ॥

टी. और देवता और पितर और ऋषि और भूत इत्यादि किस तरह और
किस वंश से पैदा होते हैं और मन्वन्तर कितना रहते हैं और उनके
वंश की कथा किस तरह पर है वह कहिये ॥ १० ॥

मू. यावंत्यः सृष्टयश्चैव यावन्तः प्रलयास्तथा । यथा
कल्पविभागश्च याचमन्वन्तरस्थितिः ॥ ११ ॥

टी. और सृष्टि और प्रलय का प्रमाण और कल्पों का विभाग और म-
न्वन्तरो का प्रमाण ॥ ११ ॥

मू. यथाचक्षितिसंस्थानं यत्प्रमाणञ्च वैभुवः । यथा
स्थितिसमुद्रादिनिम्नगाः काननानि च ॥ १२ ॥

टी. और पृथ्वी के स्थिति रहने का हाल और जितना उसका प्रमाण है और
समुद्र और पर्वत और नदी और जंगल वगैरा जिस तरह स्थिति हैं ॥ १२ ॥

मू. भूर्ल्लोकादिस्ल्लोकानां गणः पातालसंश्रयः ।
गतिस्तथार्कसोमादिग्रहर्क्षजोतिषामपि ॥ १३ ॥

टी. और भूर्ल्लोक और स्ल्लोक और पाताल आदि का संस्थान और सूर्य
और चन्द्रमा और ग्रह और रिष और जोतिष वगैरा का जो हाल है ॥ १३ ॥

मू. श्रोतुमिच्छाम्यहं सर्वमेतदाहृतसंश्रयं । उपसं-
हत्य यच्छेषं जगत्स्मिन् भविष्यति ॥ १४ ॥

टी. और एकार्थ होने पर सबको समेट कर परमेश्वर जब अपने उदर में
ले लेते हैं तो क्या बाकी रह जाता है उसको भी कहिये ॥ १४ ॥

मू. पक्षिण ऊचुः ॥ प्रश्नभारोऽयमनुलोयस्व
यामुनिसत्तम । पृष्टस्तत्ते प्रवक्ष्यामस्ततश्च
एषेह जैमिनि ॥ १५ ॥ १५ ॥ १५ ॥ १५ ॥

टी. पक्षी कहते हैं कि हे जैमिनि जी तुमने हम सभी पर प्रश्न का बड़ा

बोम डाला परन्तु जो बात तुमने पूछी वह हमलोग कहते हैं सुनो ॥ १५ ॥

मू. मार्कण्डेयेन कथितं पुरा क्रीडु कथेयथा । द्विज
पुत्राय शान्ताय व्रतस्नाताय धीमते ॥ १६ ॥

टी. कि पहिले जिस तरह मार्कण्डेय मुनि ने ब्राह्मण के पुत्र शान्ती और
शान्त और व्रतनेष्टिक क्रीडु की नाम से वर्णन किया है वही सब
बातें मैं तुम से कहता हूँ ॥ १६ ॥

मू. मार्कण्डेय महात्मानं मुपासी न द्विजोत्तमैः । क्री-
डु की परिपश्येत्तत्पुत्रवान् प्रभो ॥ १७ ॥

टी. कि एक समय सब ब्राह्मणों ने मार्कण्डेय महात्मा की बहुत सेवा कि-
या और जो बात आपने हमलोगों से पूछी है वही बात वहाँ पर क्रीडु की
नाम ब्राह्मण ने मार्कण्डेयजी से पूछी थी ॥ १७ ॥

मू. तस्य चाकथयत् प्रीत्या यन्मुनिर्भृगुनन्दनः । त-
त्ते प्रकथयिष्यामः शृणु त्वं द्विज सत्तम ॥ १८ ॥

टी. हे द्विज सत्तम तब उनसे जो भृगुनन्दन यानी मार्कण्डेयजी ने क-
हा है वही हमलोग आपसे कहते हैं सुनिये ॥ १८ ॥

मू. प्रणिपत्य जगन्नाथं पद्मयोनिपितामहं । जग-
द्योनिं स्थितं सद्यो स्थितौ विष्णुस्वरूपिणं ॥ प्र-
लये चान्तकर्त्तारौ द्रुद्रस्वरूपिणं ॥ १९ ॥

टी. जगत् के स्थिति और पालन करने में प्रवृत्त जो हैं विष्णु और उत्प-
त्ति करने में प्रवृत्त जो हैं ब्रह्मा और नाश करने में हैं प्रवृत्त जो महादेवी
इन तीनों स्वरूपी परमेश्वर को प्रणाम करके ॥ १९ ॥

मू. मार्कण्डेय उवाच ॥ उत्पन्नमात्रस्य पुरा ब्र-
ह्मणोऽव्यक्तजन्मनः । पुराणमेतद्वेदाश्च
मुखेभ्योऽनुविनिःश्रुताः ॥ २० ॥ २० ॥

टी. मार्कण्डेयजी बोले कि पूर्वकाल में जब ब्रह्मा उत्पन्न हुवे तब यह

उत्तम पुराण और चारों वेद उनके मुख से पैदा हुवे ॥२०॥

मू. पुराणसंहिताश्चकुर्वद्ब्रह्माः परमर्षयः । वेदानां
प्रविभागश्चरुतस्तैस्तु सहस्रशः ॥२१॥ २१॥

टी. उस पुराण की संहिता ब्रह्मर्षिलोगों ने बहुतसी बनाई है और
वेदों के विभाग भी हजारों किये ॥ २१ ॥

मू. धर्मज्ञानञ्चवैराग्यमैश्वर्यञ्चमहात्मनः । त
स्योपदेशेनविनानहिसिद्धञ्चतुष्टयं ॥ २२ ॥

टी. कि जिसके उपदेश के बिना धर्म और ज्ञान और वैराग्य और
ऐश्वर्य यह चारों सिद्ध नहीं होते हैं ॥ २२ ॥

मू. वेदान्सप्तर्षयस्तस्माज्जगद्ब्रह्मस्तस्यमानसाः । पु
राणंजगद्ब्रह्मद्यामुनयस्तस्यमानसाः ॥२३॥

टी. ब्रह्मा के मानसी पुत्र जो सप्तर्षि लोग हुवे उन्होंने वेद को ग्रहण किया
और उनके मानस से जो मुनिलोग पैदा हुवे भृगु आदि उन्होंने ने
पुराण को ग्रहण किया ॥ २३ ॥

मू. भृगोः सकाशाच्चयवनस्तेनोक्तञ्चद्विजन्मनां । ऋ
षिभिश्चापिदक्षायप्रोक्तमेतन्महात्मभिः ॥२४॥

टी. भृगुमुनि से इस पुराण को चयनमुनि ने ग्रहण किया और चयनमुनि ने ऋ
षिलोगों से वर्णन किया और ऋषिलोगों ने दक्ष से कहा ॥ २४ ॥

मू. दक्षेणाचापिकथितमिदमासीत्तदा मम । तत्तु
भ्यं कथयाम्यद्य कलिकल्मषनाशनं ॥२५॥

टी. और दक्ष ने हम से कहा वही यह पुराण है जो कलयुग के पापों
को नाश करता है सो मैं इस समय आप से कहता हूँ ॥ २५ ॥

मू. सर्वमेतन्महाभागश्रूयतां मे समाधिना । य
थाश्रुतं भयापूर्वं दक्षस्य गदतो मम ॥ २६ ॥

टी. हे महाभाग जिस तरह ये बातें हमने दक्ष से सुनी थीं उसी तरह

आप से कहते हैं जी लगाकर सुनिये ॥२६॥

मू. प्रणिपत्य जगद्योनिमज्जमव्ययमाश्रयं । चरा-
चरस्य जगतो धातारं परमं पदम् ॥ २७ ॥

टी. जगत् चराचर को उत्पत्ति स्थान जो पैदा नहीं हुआ और जिसका नाश नहीं होता ऐसा जो परमपद तिसको नमस्कार करके ॥ २८ ॥

मू. ब्रह्माणमादिपुरुषमुत्पत्तिस्थितिसंयमे । य-
त्कारणमनौरस्यं यत्र सर्वं प्रतिष्ठितम् ॥ २८ ॥

टी. और ब्रह्मादि पुरुषों को उत्पत्ति और स्थिति और नाश करने के जो कारण हैं और संयम हैं और जिनमें सब कोई स्थिति है ॥ २८ ॥

मू. तस्मै हिरण्यगर्भाय लोकतंत्राय धीमते । प्रण-
म्य सम्यग्ब्रह्मामिभूतवर्गमनुत्तमं ॥ २९ ॥

टी. उस हिरण्यगर्भ बुद्धिमान् को प्रणाम करके भूतवर्ग अनुत्तम को अच्छी तरह से बगान करना हूँ ॥ २९ ॥

मू. महदाद्यं विशेषान्तं स वै रूप्यं स लक्षणं । प्रमाणैः
पञ्चभिर्गम्यं श्रोतोभिः सद्भिरन्वितं ॥ ३० ॥

टी. महदादियानी आदि जो है महान् जिनका विशेष अन्त नहीं है और जो विशेषरूप और लक्षणों से युक्त और पंचप्रमाण से जानने योग्य है और समीचीन तरंग से युक्त हैं ॥ ३० ॥

मू. पुरुषाधिष्ठितं नित्यमनित्यमिव च स्थितं । न-
च्छूयन्तां महाभाग परमेण समाधिना ॥ ३१ ॥

टी. और नित्य हैं और पुरुषों में अधिष्ठित हैं और अनित्य की तरह जगत् में रहता है उसको हे महाभाग खूब मन लगाकर सुनिये ॥ ३१ ॥

मू. प्रधानकारणं यत्तदव्यक्ताख्यं महर्षयः । यदा-
हुः प्रकृतिं सूक्ष्मां नित्यां सदसदात्मिकां ॥ ३२ ॥

टी. जिनको महाऋषिलोग अव्यक्त प्रधान कारण कहते हैं और सदा

असत् मय नित्या सूक्ष्मा प्रकृति वही है ॥३२॥

मू. ध्रुवमक्षयमजरममेयं नान्यसंश्रयं । गन्धरूप
रसैर्हीनं शब्दस्पर्शविवर्जितं ॥ ३३ ॥ ३३ ॥

टी. और ध्रुव और अक्षय और अजर है और वह प्रमाण के योग्य नहीं है और न किसीके आश्रित है और गन्ध और रूप और रस से रहित है और शब्द और स्पर्श से भी रहित है ॥३३॥

मू. अनाद्यन्तं जगद्योनिं त्रिगुणप्रमवाप्ययं । असा-
म्प्रतमविज्ञेयं ब्रह्माग्रे समवर्त्तत ॥३४॥ ३४ ॥

टी. और उसका आदि और अन्त नहीं है और जगत् का कारण है और तीनों गुणों की उत्पत्ति और नाश करने वाला और सदा रहने वाला और अविज्ञेय है यानी कोई उसको जान नहीं सकता ऐसा जो ब्रह्म है वही पहिले सम्यक् प्रकार वर्त्तमान रहता है ॥३४॥

मू. प्रलयस्यानुतेनेदं व्याप्रमासीदशेषतः । गुण
साम्यात्ततस्तस्मात्क्षेत्रज्ञाधिष्ठितान्मुने ॥३५॥

टी. और प्रलय के होने पर वही ब्रह्म सब में व्याप्त रहता है और वही ब्रह्म क्षेत्रज्ञाधिष्ठित गुणों के साथ ॥३५॥

मू. गुणभावात्सृज्यमानात्सर्गकाले ततः पुनः । प्र-
धानं तत्त्वमुद्भूतं महान्तं तत्समावृणोत् ॥३६॥

टी. उत्पन्न होकर सृष्टिकाल में प्रधान महत्त्व को उत्पन्न करता है जिस महत्त्व को गुण और साद घेरलेता है ॥३६॥

मू. यथा बीजं त्वचा तदद्वयं तेनादृतो महान् । सा-
त्त्विको राजसश्चैव तामसश्च त्रिधा दितः ॥३७॥

टी. जिस तरह बीज को बकला घेर डुबे रहता है उसी तरह अव्यक्त से महान् घेर डुबता है और उस अव्यक्त का गुण भाव करके सत् रज तम तीन तरह का है ॥३७॥

मू. ततस्तस्मादहङ्कारस्त्रिविधोवैचजायत । वैका-
रिकस्तैजसश्चभूतादिश्च सतामसः ॥ ३८ ॥

टी. फिर उसी महान् से तीन तरह का अहंकार उत्पन्न होता है
वैकारिक और तैजस और तमस इन्हीं तीनों से भूतादि हैं ॥ ३८ ॥

मू. महताचारुतः सोऽपि यथाव्यक्तेन वै महान् । भू-
तादिस्तु विकुर्वाणः शब्दस्तन्मात्रकन्ततः ॥ ३९ ॥

टी. और उस अहंकार को भी महान् घेरे हुवे हैं जिस तरह अव्यक्त
से महान् पैदा हुआ है और भूतादि जब विकार को प्राप्त होते हैं
तब शब्द तन्मात्रा पैदा होती है ॥ ३९ ॥

मू. ससर्जशब्दतन्मात्रादाकाशशब्दलक्षणं । आ-
काशशब्दमात्रन्तु भूतादिश्चावृणोत्ततः ॥ ४० ॥

टी. फिर उसी शब्द तन्मात्रा से आकाश शब्द लक्षण होता है तब उस आ-
काश शब्द मात्रा को भूतादि घेर लेते हैं ॥ ४० ॥

मू. स्पर्शतन्मात्रमेवेह जायते नात्र संशयः । बल-
वान् जायते वायुस्तस्य स्पर्शगुणो मतः ॥ ४१ ॥

टी. उसी आकाश शब्द मात्रा में स्पर्श तन्मात्रा पैदा होती है इसमें कु-
छ सन्देह नहीं और उसी स्पर्श से बलवान् वायु पैदा होती है उस
का भी स्पर्श गुण कहा जाता है ॥ ४१ ॥

मू. वायुश्चापि विकुर्वाणो रूपमात्रं ससर्जह । ज्यो-
तिरुत्पद्यते वायोस्तद्रूपगुणमुच्यते ॥ ४२ ॥

टी. फिर वायु जब विकार को प्राप्त होती है तो रूपमात्रा को पैदा करती है
और उसी वायु से ज्योति उत्पन्न होती है जिसका गुण रूप है ॥ ४२ ॥

मू. स्पर्शमात्रस्तु वैवायुरूपमात्रं समावृणोत् । ज्यो-
तिश्चापि विकुर्वाणं स मात्रं ससर्जह ॥ ४३ ॥

टी. और स्पर्श मात्र जो है वायु तो रूपमात्रा को घेरे हुवे रहती है और

जब ज्योति विकार को प्राप्त होती है तो उस मात्रा को उत्पन्न करती है ॥४३॥

मू. सम्भवन्ति ततो ह्यापश्चादसन्वैतारसात्मिकाः ।
समावन्तु ता ह्यापो रूपमात्रं समावृणोत् ॥४४॥

टी. उसीसे रसात्मिका जो है जल वह पैदा होता है और उसी रसात्मिका जल को रूपमात्रा आकर घेर लेती है ॥ ४४ ॥

मू. आपश्चापि विकुर्वन्त्योगन्धमात्रं ससर्जिरे । स
द्वातो जायते तस्मात्स्य गन्धो गुणो मतः ॥४५॥

टी. और जब वह जल विकार को प्राप्त होता है तब गन्धमात्र को पैदा करता है फिर सब मिलकर एकत्र हो जाते हैं तब गुण उसका गन्ध कहलाता है ॥ ४५ ॥

मू. तस्मिन् तस्मिन्स्तु तन्मात्रं तेन तन्मात्रता स्मृताः । अ-
विशेषवाचकत्वादविशेषास्ततश्च ते ॥ ४६ ॥

टी. और तन्मात्रा उसको कहते हैं जो सभी में रहती है वही सब से तन्मात्रा कहलाती है और वह विशेष अर्थ को नहीं कहती इसलिये वह अविशेष कहलाती है जिसको उस कहते हैं उसीको समात्रा भी कहते हैं ॥४६॥

मू. न शान्तानां पि घोरस्ते न मूढाश्च विशेषतः । भू-
ततन्मात्रसर्गोऽयमहङ्कारात्तु तामसात् ॥४७॥

टी. और ये सब न शान्त हैं न घोर न मूढ़ हैं क्योंकि अविशेष हैं इसकी भू ततन्मात्रा सर्ग कहते हैं यह तामस अहंकार से पैदा होते हैं ॥ ४७ ॥

मू. वैकारिका दहङ्कारात् सत्वोद्भिता तु सात्विकात्
वैकारिकः ससर्गस्तु युगपत् सम्प्रवर्तते ॥ ४८ ॥

टी. फिर जब सात्विक अहंकार विकार को प्राप्त होता है तो उससे वैकारिक सर्ग एक ही समय में पैदा होता है ॥ ४८ ॥

मू. बुद्धीन्द्रियाणि पञ्चैव पञ्चकर्मोन्द्रियाणि च । ते
जसानीन्द्रियाण्याहुर्देवा वैकारिकादश ॥४९॥

श्री. और पाँच ज्ञान इन्दी और पाँच कर्म इन्दी जो हैं इन्हीं को दे-
वता लोग तैजस इन्दी कहते हैं इन्हीं दश इन्द्रियों को वैकारिक भी क-
हते हैं ॥ ४६ ॥

मू. एकादशमनस्तत्र देववैकारिकाः स्मृताः । श्रो-
त्रं त्वक् चक्षुषी जिह्वा नासिका चैव पञ्चमी ॥ ४७ ॥

श्री. और उसमें ग्यारहवाँ मन है इन सभी के देवता वैकारिक कहते हैं
पहिले कर्ण दूसरा त्वक् तीसरा नेत्र चौथी जिह्वा पाँचवीं नासिका ॥ ४७ ॥

मू. शब्दादीनामवाप्रथं बुद्धियुक्तानिवक्ष्यते । पादौ
पायुरुपस्थश्च हस्तौ वाक् पञ्चमी भवेत् ॥ ४८ ॥

श्री. ये पाँचों बुद्धि युक्त होकर शब्द वगैरा का ज्ञान प्राप्त करने हैं इस
को ज्ञान इन्दी कहते हैं और एक चरण दूसरे गुदा तीसरा लिङ्ग चौ-
था हस्त पाँचवाँ वाक् इसको कर्म इन्दी कहते हैं ॥ ४८ ॥

मू. गतिर्विसर्गो ह्यानन्दः शिल्पं वाक्यञ्च कर्म ततः ।
आकाशशब्दमात्रं तु स्पर्शमात्रं समाविशत् ॥ ४९ ॥

श्री. चरण का कर्म गति है और गुदा का कर्म मल त्याग और लिङ्ग का ज्ञान
नन्द और हस्त का कारीगरी और वाक् का बोलना तो आकाश शब्द म-
न्मात्रा जो है उसमें जब स्पर्श तन्मात्रा प्रवेश करती है ॥ ४९ ॥

मू. द्विगुणो जायते वायुस्तस्य स्पर्शगुणो मतः । रूपं
तथैवाविशतः शब्दस्पर्शगुणबुधौ ॥ ५० ॥

श्री. तब उसमें से द्विगुण होकर वायु उत्पन्न होता है उस वायु
का भी गुण स्पर्श है उसी तरह शब्द और स्पर्श जब दोनों रूप
गुण में प्रवेश करते हैं ॥ ५० ॥

मू. द्विगुणस्तु ततश्चाग्निः स शब्दस्पर्शरूपमान् । श-
ब्दस्पर्शश्च रूपश्च स मात्रं समाविशत् ॥ ५१ ॥

श्री. तो तीनों गुणों से अग्नि उत्पन्न होता है और वह अग्नि

शब्द और स्पर्श और रूपवाला कहलाता है और शब्द और स्पर्श और रूप और अग्नि जब रस में प्रवेश करते हैं ॥५४॥

मू. तस्माच्चतुर्गुणाद्यापोविज्ञेयास्तारसान्तिकाः।

शब्दस्पर्शश्चरूपश्चरसोगन्धसमाविशतः ॥५५॥

टी. तब चारों गुण के संयुक्त रसान्तिका जल पैदा होता है फिर शब्द और स्पर्श और रूप और रस जब गन्ध में प्रवेश करते हैं ॥५५॥

मू. संहतागन्धमात्रेण जायते महीमिमां । न

स्मात्पञ्चगुणभूमिः स्थूला भूतेषु दृश्यते ॥५६॥

टी. तब गन्ध समेत पाँचों इकट्ठा होकर पृथ्वी को घेर लेते हैं इसी वत्ते यह पृथ्वी पंचगुणभूमि कहलाती है इसी सब वत्ते सब भूतों में भी स्थूलदिखावट देती है ॥५६॥

मू. शान्ता घोरश्च मूढाश्च विशेषास्तेन ते स्मृताः ।

परस्परानुप्रवेशाद्धारयन्ति परस्परं ॥ ५७ ॥

टी. ये पाँचों शान्त और घोर और मूढ़ विशेष कहलाते हैं और ये सब परस्पर एक में एक प्रवेश करते हैं और परस्पर एक को एक धारण करते हैं ॥५७॥

मू. भूमे रजस्त्विमं सर्व्वं लोकालोकं घनाद्यतं । वि

शेषाश्चेन्द्रियग्राह्या नियतत्वाच्च ते स्मृताः ॥५८॥

टी. और पृथ्वी के बीच में यह सम्पूर्ण जो घनाद्यत यानी मेघ से आच्छादित लोकालोक है इसको प्राप्त करते हैं और विशेष हैं और निश्चय हैं इसलिये इन्द्रियों से ग्राह्य कहलाते हैं ॥५८॥

मू. गुणान्पूर्व्वस्य पूर्व्वस्य प्राप्नुवन्त्युत्तरोत्तरं । नाना

वीर्याः पृथग्भूताः सप्तैतैः संहतिं विना ॥५९॥

टी. और आपस में पहिले का गुण पीछे वाले प्राप्त करते हैं और इन लोगों का पराक्रम बहुत है और सब अलग अलग हैं मगर ये सब बिना एक होने के ॥५९॥

मू. नाश कुर्वन् प्रजाः सृष्टुमसं सागम्य कृत्स्नशः ।
समेत्यान्योन्यसंयोगमन्योन्याश्रयिनश्च ते ॥ ६० ॥

टी. अकेले प्रजा उत्पत्ति नहीं कर सकते हैं और ये सब परस्पर एक के आश्रित एक हैं ॥ ६० ॥

मू. एकसंघातचिन्हांश्च संप्राप्यैक्यमशेषतः । पुरु-
षाधिष्ठितत्वाच्च अत्यक्तानुग्रहेण च ॥ ६१ ॥

टी. और ये सब अव्यक्त के अनुग्रह से पुरुषाधिष्ठित यानी पुरुष में प्रवेश कर एक हो जाते हैं ॥ ६१ ॥

मू. महदाद्या विशेषान्ताद्याण्डमुत्पादयन्ति ते । ज-
लबुद्बुदवत्तत्र क्रमाद्वै बृद्धिमागतं ॥ ६२ ॥

टी. और अव्यक्त के अनुग्रह से उस महदादि आण्ड को उत्प-
त्ति करते हैं जैसे जल में बुलबुला पैदा होता है उसी तरह व-
ह आण्ड भी पैदा होकर बढ़ता है ॥ ६२ ॥

मू. भूतेभ्योऽण्डं महाबुद्धेरुहंतदुदकेशयं । प्राकृ-
तेऽण्डे विबुद्धः सन्क्षेत्रज्ञो ब्रह्मसंज्ञितः ॥ ६३ ॥

टी. हे महाबुद्धिमान् वह आण्ड उत्पन्न होकर और बढ़कर जल
में रहता है और उसी प्राकृत आण्ड में ब्रह्मा नाम क्षेत्रज्ञ पुरुष बढ़ते हैं ॥ ६३ ॥

मू. सर्वैशरीरी प्रथमः सर्वै पुरुषरुच्यते । आदिक-
र्त्ता च भूतानां ब्रह्माग्रे समवर्त्तत ॥ ६४ ॥ ६४ ॥

टी. और वही ब्रह्मा शरीरी है प्रथम पुरुष और वही आदिकर्त्ता है और सम्पूर्ण भू-
तों से पहिले केवल वही ब्रह्मा विराजमान रहते हैं ॥ ६४ ॥

मू. तेन सर्वमिदं व्याप्तं त्रैलोक्यं सचराचरं । मेरुस्त-
स्थानुसंभूतो जरायुश्चापि पर्वताः ॥ ६५ ॥

टी. और उन्हीं से यह सम्पूर्ण चराचर त्रैलोक्य व्याप्त रहता है और प-
र्वत वगैरा सब उन्हीं से उत्पन्न होते हैं ॥ ६५ ॥

मू. समुद्रागर्भ उलिलंत स्यादस्य महात्मनः । त-
स्मिनादे जगत्सर्वं स देवा सुर मानुषं ॥ ६६ ॥

श्री. और उसी महान् आड़े के भीतर काजल सब समुद्र है और उसी आड़े में सम्पूर्ण जगत् और देवता और दानव और मनुष्यादि प्राप्त रहते हैं ॥ ६६ ॥

मू. दीपाद्यदिसमुद्रश्च स ज्योतिर्लोक संग्रहः । ज-
लानिलानलाकाशैस्ततोभूतादिनावहिः ॥ ६७ ॥

श्री. और सम्पूर्ण दीप और समुद्र और पर्वत ज्योति के साथ लोक संग्रह जल और वायु और अग्नि और आकाश जब इन सभी का साथ हुआ तब भूतादि ने बाहर से ॥ ६७ ॥

मू. दृतमाहं दशगुणैरैकत्वेन तैः पुनः । महता
तत्प्रमाणेन सहैवानेन वेष्टितः ॥ ६८ ॥ ६८ ॥

श्री. उस आड़े को घेर लिखा फिर दश दश गुण एक एक होकर महत्त्व के साथ पुरुष को घेर लेते हैं ॥ ६८ ॥

मू. महोत्तैः सहितः सर्वैरव्यक्तेन समावृतः । एभि-
रावर्णैराहं सप्तभिः प्राकृतैर्दृतम् ॥ ६९ ॥

श्री. और वह सबके साथ महान् को अव्यक्त आवरण करते हैं और इन सातों प्राकृत आवरण से वह आँडा आवृत है ॥ ६९ ॥

मू. अन्योन्यमावृतवता अष्टौ प्रकृतयः स्थिताः । ये
पांसाप्रकृतिर्नित्या तदन्तः पुरुषश्च सः ॥ ७० ॥

श्री. और वह सब से सब आवृत है इसके साथ आठौ प्रकृति भी आवृत रहती हैं यानी पंचतन्मात्रा और महत्त्व यही नित्याप्रकृति हैं इसी के अन्दर वह पुरुष विराजमान रहता है ॥ ७० ॥

मू. ब्रह्मारव्यः कथितो यस्ते समासात् श्रूयतां पुनः ।
यथा मग्नीजले कश्चिदुन्मज्जनं जलसंभवं ॥ ७१ ॥

श्री. जिसका नाम ब्रह्मा कहा है उसको विस्तार से मैं कहता हूँ सुनिये

कि जैसे कोई जल में डूबकर फिर निकलै ॥ ७१ ॥

मू. जलञ्च क्षिपति ब्रह्मा स तथा प्रकृतिं विभुः । अ-
व्यक्तं क्षेत्रमुद्दिष्टं ब्रह्मा क्षेत्रज्ञ उच्यते ॥ ७२ ॥

टी. और जल को फेंकै उसी तरह इस प्रकृति में ब्रह्मा उत्पन्न होते हैं और अव्यक्त जो है वह क्षेत्र कहलाते हैं और ब्रह्मा क्षेत्रज्ञ कहलाते हैं ॥ ७२ ॥

मू. एतत्समस्तं जानीयात् क्षेत्रक्षेत्रज्ञलक्षणं । इत्ये-
ष प्राकृतः सर्गः क्षेत्रज्ञाधिष्ठितस्तुतः ॥ अबु-
द्धिपूर्वः प्रथमः प्रादुर्भूतस्तद्विद्यया ॥ ७३ ॥

टी. यही सब क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ का लक्षण है सो जानौ और इसी को क्षेत्रज्ञाधिष्ठित प्राकृत सर्ग कहते हैं और यह अबुद्धिपूर्व है या-
नी बुद्धि से इसका आदि मालूम नहीं होता और प्रथम बिजुली के समान उत्पन्न हो जाता है ॥ ७३ ॥

इति श्री मार्कण्डेय पुराणे
ब्रह्मोत्पत्तिर्नाम ॥ ४५ ॥

پیتا لیسوان اودھیاء

۱۔ جین جی نے کہا کہ اے ائمہ دج پرورت اور زورت جو دو طرح کے بیدک کرم ہیں انکو تو
ہر طرح سے آپ لوگوں نے مجھے بیان کیا۔ ۲۔ تعجب کی بات ہے کہ آپ لوگوں نے پتا
کے پر ساد سے ایسا گیان پایا کہ جس گیان کے باعث سے پیچی جوئن میں ہونے پر بھی

بالکل موء (مجت دنیاوی) سے چھوٹ گئے ہیں۔ ۳۳ آپ لوگ دھن ہیں کہ سدم ہوتے
 واسطے آپ لوگوں کا من جیسا پہلے تھا ویسا ہی اب بھی ہے اور موء جو بچے سے پیدا ہوتا
 ہے اس سے آپ لوگوں کا من الگ ہو رہا ہے۔ ۳۴ مجھ کو خوش نصیبی سے مارکنڈے جی ایسے
 گیانی ہے کہ مجھ کو نے آپ لوگوں کا پتا و نشان مجھ کو دے کر کہا کہ وہ لوگ بیشک
 تمہارا سندھید بنا دیں گے۔ ۳۵ جو لوگ اس کٹھن سنسار میں گھومتے ہیں انکو آپ ایسے
 مہاتماؤں کی صحبت خوش نصیبی سے نصیب ہوتی ہے بلکہ بڑے بڑے تپسیوں کو بھی آپ
 لوگوں کے درشن دُر لہجہ ہیں۔ ۳۶ جبکہ ہم آپ ایسے گیان درشت کی سنگت سے کرتا رہے
 ہوں گے تو ہماری بڑی بد نصیبی ہی آپ ایسے مہاتماؤں کے سوا سے دوسرا ہون سے ہو
 کرتا رہ کرے گا۔ ۳۷ کیونکہ پرورت اور پرورت کے گیان کرم میں جیسی آپ سچوں کی ہر
 نیک سی ویسی اور سچ کی نہیں ہے۔ ۳۸ اسے اتم وچ اگر مجھ پر آپ سب مہر بان ہیں تو جو چھ
 میں پوچھتا ہوں اسکو بیان کیجیے۔ ۳۹ یعنی میں یہ پوچھتا ہوں کہ استھا اور اور حنکم (یعنی
 ساکن و متحرک) کے ساتھ جو یہ سنسار ہے وہ کس طرح پیدا ہوتا ہے اور پھر وقت آنے پر
 کس طرح مٹ جاتا ہے۔ ۴۰ اور دیوتا اور پتر اور بھوت وغیرہ کس طرح اور
 کس خاندان سے پیدا ہوتے ہیں اور متونتر کس طرح ہوتا ہے اور متونتر کے خاندان کا قصہ
 کیونکر ہی بیان کیجیے۔ ۴۱ اور سرشت یعنی مخلوقات اور پتر کے یعنی قیامت کا اندازہ اور
 کلیوں کا حصہ اور متونتر کا اندازہ۔ ۴۲ اور زمین کے قائم رہنے کا حال اور اسکا اندازہ
 اور سمندر اور دریا اور جنگل اور پہاڑ جو قائم ہیں۔ ۴۳ اور بھو لوک اور مہر لوک اور پاتال
 وغیرہ کا حال اور سورج اور چندرمان اور گرہ اور رکش اور جوتش وغیرہ کی جو گت ہے وہ
 بیان فرمائیے۔ ۴۴ اور ایکار تو ہونے پر جبکہ پریشور سب کو اپنی قدرت کی گود میں سمیٹ
 لیتے ہیں تو کیا باقی رہتا ہے ان سب باتوں کو مفصل بیان کیجیے۔ ۴۵ پنجھی کہتے ہیں کہ اسے
 میں جی آپ نے ہم سچوں پر بڑے سوال کا بڑا بوجھ ڈالا یعنی یہ بات جو آپ نے پوچھی ہے
 یہ بات کو۔ ۴۶ پہلے مارکنڈے من نے ایک براہمن کے پتر کر و شکی نام سے جو گیانی
 ارشانت اور برت نیشٹھک تھا کہا تھا۔ ۴۷ یعنی کسی وقت میں سب براہمنوں نے
 مارکنڈے جی مہاتما کی بڑی سیوا کئی تھی اور جو باتیں آپ نے ہم لوگوں سے پوچھی ہیں وہی
 میں کر و شکی نام براہمن نے مارکنڈے جی سے پوچھی تھیں۔ ۴۸ اب ان سے جو قصہ

بھگنندن من یعنی مارکنڈے جی نے کہا ہر وہی ہم لوگ آپ سے کہتے ہیں نیسے ۱۹ کہ جگت کے
 استھت یعنی قائم اور پالن کرنے والے جویشن ہیں اور پیدا کر نیوالے جو برہما ہیں اور مٹا نیوالے
 جو مادہ یو جی ہیں انکو پر نام کر کے اس حال کو ۲۰ مارکنڈے جی نے کروٹسکی نام برائے
 اس طرح کہا تھا کہ گوب کاں میں جب برہما جی پیدا ہوئے تہ انکے لکھ سے یہ آتم پُران
 اور چارو بد پیدا ہوئے ۲۱ انھیں پُرانوں کی سنگھٹا برتھو رکھ لوگون نے بہت اسی
 بنائی ہیں اور بدون کے ٹکڑے کیے ہیں ۲۲ کہ جسکے ایش کے بغیر دھرم اور گنا
 اور سرگ اور ایشورج یہ چارو بد نہ ہوتے ۲۳ غرض کہ برہما کے مانتی پتر پتھ
 رکھ لوگون نے پیدا کو لیا اور ان کے من سے جو من لوگ برتھو رکھ کے پیدا ہوئے
 انھوں نے پران کو لیا ۲۴ اور ان سے چون من نے لیا اور چون من نے رکھوں سے
 بیان کیا اور رکھوں نے دھم سے کہا ۲۵ اور دھم نے ہمسے کہا کہ جو کلجک کے پاؤ کو
 ناش کرتا ۲۶ اے مہا بھاگ ان باتوں کو ہم نے جس طرح دھم سے سنا تھا اسی طرح
 ہم بھی آپ سے کہتے ہیں جی لگا کر نیسے ۲۷ کہ ساکن و متحرک جگت کے پیدا کر نیوالے اور اجنا یعنی کسی سے
 پیدا نہیں ہوئے اور انسانی ایسے جو پر م پد ہیں ۲۸ اور برہما اور ریشون کے پیدا اور قائم
 اور غیت نابود کر نیوالے اور سویمبھو (یعنی از خود پیدا ہوا) اور جس میں سب کو فی قائم ہیں -
 ۲۹ ایسے پریشہ گریجو برہما کو پر نام کر کے جھوت برگ آتم کو ہر طرح سے میان کرتا ہوں
 ۳۰ مہاں جو آدمین اور جبکہ انت کو بھی کوئی نہیں جانتا بہت روتوں اور چھون سے سخت
 اور پنج پران سے جاننے کے لائق اور قدیم ہیں ۳۱ اور نیت اور ریشون میں آدھشت
 ہیں اور آنت کی طرح جگت میں رہتے ہیں ۳۲ اور جبکو مہا رکھ لوگ آبلیک (پوشیہ)
 اور پردھان کا تب تبلائے ہیں اور ست اور است کے ساتھ نیت سوکشم برکرت وہی ہیں -
 ۳۳ اور دھرو اور اکشے اور آجر ہیں انکا پرمان کوئی تبلا نہیں سکنا اور کسی کے محتاج
 نہیں ہیں اور گندھ اور روپ اور ریش انہیں ہیں اور شبہ اور اسپرٹس سے زہیت ہیں -
 ۳۴ اور آد اور آنت انکا نہیں ہو اور سبب پیدائش مخلوقات کے ہیں اور تینوں گون
 کے پیدا کرنے والے اور ناش کر نیوالے ہیں اور قدیم ہیں انکو کوئی نہیں جان سکنا اور وہ برہما
 ہیں کہ پہلے ہی ہر طرح سے موجود رہتے ہیں ۳۵ اور پرلے ہونے پر بھی وہی برتھو ہر جگہ موجود
 رہتے ہیں اور وہی برتھو چیت کیا دھشت گن کے ساتھ ۳۶ پرگٹ ہو کر سرشت کال میں پردھان

۳۷ - تہ تو کو پیدا کرتے ہیں جس مہمتو کو گن اور بھاؤ گھیر لیتا ہے ۳۷ اور جب طرح جیج کو چھلکا
 گھیرے ہوئے رہتا ہے اسی طرح ابھیکت سے مہان گھرا ہوا رہتا ہے اور اس ابھیکت کا گن
 بھاؤ کر کے راجس اور تامس اور ساتوک تین طرح کا ہے - ۳۸ پھر اسی مہان سے
 تین طرح کے اہنکار پیدا ہوتے ہیں بیکارک اور تیجس اور تامس اور یہی بھوتوں کی اصل ہے
 ۳۹ جیسے ابھیکت سے مہان گھرا ہوا ہے اسی طرح اہنکار کو بھی مہان گھیرے ہوئے ہے
 اور جب وہ بیکار کو پر ایت ہوتا ہے تو نشدن ماترا پیدا ہوتی ہے - ۴۰ پھر اسی شبد
 تنماترا سے جب آکاش شبد چھن ہوتا ہے تب آکاش شبد ماترا کو بھوتاؤ گھیر لیتے ہیں -
 ۴۱ اسی آکاش میں اسپریش تنماترا پیدا ہوتی ہے اسپریش کچھ شک نہیں ہے اور اسی اسپریش
 سے بلوان بائو پیدا ہوتی ہے جسکو اسپریش کا گن کہتے ہیں - ۴۲ اور جب بائو بیکار کو پر ایت
 ہوتی ہے تو روپ ماترا کو پیدا کرتی ہے اور اسی بائو سے جوت بھی پیدا ہوتی ہے جسکا گن روپ
 ہے - ۴۳ اور اسپریش ماترا جو بائو سے وہ روپ ماترا کو گھیرے رہتی ہے اور جب جوت بیکار
 کو پر ایت ہوتی ہے تو اس سے بس ماترا پیدا ہوتی ہے - ۴۴ اسی سے رساتمکا یعنی جل پیدا
 ہوتا ہے اور اسی رساتمکا جل کو روپ ماترا گھیرے رہتی ہے ۴۵ اور جب وہ جل بیکار ہو
 جاتا ہے تو اسی سے گندھ (بو) پیدا ہوتی ہے اور جب سب یکجا ہو جاتا ہے تو اسکا گن گندھ
 کہلاتا ہے - ۴۶ اور تنماترا اسکو کہتے ہیں جو سمجھون میں رہتی ہے اور اسی وجہ سے اسکو
 تنماترا کہتے ہیں اور وہ بسیکھ ارتھ کو نہیں کہتی اسی سے ابھیکھ کہلاتی ہے اور جسکو رس کہتے
 ہیں اسیکو رس ماترا بھی کہتے ہیں - ۴۷ یہ سب نہ اچھے ہیں نہ بُرے ہیں نہ جاہل ہیں
 کیونکہ ابھیکھ ہیں انکو بھوت تنماترا سورگ کہتے ہیں اور تامس اہنکار سے پیدا ہوتا ہے -
 ۴۸ اور ساتوک اہنکار جب بیکار ہو جاتا ہے تو اس سے بیکارک شرگ پیدا ہوتا ہے -
 ۴۹ اور بانج گیان اندری اور بانج کرم اندری جو ہیں انھیں کو دوتو نا لوگ تیجس اندری کہتے
 ہیں اور یہی دوتو اندریان بیکارک بھی کہلاتی ہیں - ۵۰ اور انہیں گیارہ جوان من ہیوان
 سبھو نکو دوتو بیکارک کہتے ہیں اور اندریان یہ ہیں - کان - کھال - اکھ - زبان -
 ناک - ۵۱ یہ بانچون اندریان تہ کے ساتھ ہر کر شبد وغیرہ کا گیان حاصل کراتی ہیں انھیں
 گیان اندری یعنی حواس خمسہ کہتے ہیں اور پانون اور گدا (یعنی مقام مہر و مقصد) اور لنگ
 اور ناٹھ اور گویائی یہ بانچون کرم اندری ہیں - ۵۲ ان سمجھون کا کرم علیحدہ علیحدہ بیان

کرتا ہوں کہ پانوں کا کرم چلتا ہے اور گدا کا کام ٹپکا کرنا اور لنگ کا کام آندھ ہے اور ماتھ کا کرم
 و شکاری اور باک کا کرم بولنا ہے تو آکاش جو شبد مانتر ہے اس میں جب اسپیش ماٹرا
 پرولیش کرتی ہے - ۵۳ تو اس میں سے دو گن ہو کر باپو پیدا ہوتی ہے پھر اس باپو کا گن
 بھی اسپیش ہے اس طرح شبد اور اسپیش یہ دونوں گن جب روپ میں پرولیش کرتے
 ہیں - ۵۴ تو ان تینوں گنوں سے اگن پیدا ہوتی ہے اور وہ اگن شبد اور اسپیش اور
 روپ والی کھلاتی ہے اور پھر شبد اور اسپیش اور روپ اور اگن جب ریس میں پرولیش
 کرتے ہیں - ۵۵ تب چارو گنوں کے ساتھ رسا تمکا جل پیدا ہوتا ہے پھر شبد اور اسپیش
 اور روپ اور ریس جب گندھ میں پرولیش کرتے ہیں - ۵۶ تب گندھ بہت پانچون
 جمع ہو کر زمین کو گھیر لیتے ہیں اسی سبب سے یہ زمین پنج گن جھوم کھلاتی ہے اور اسی سے
 سب بھوتوں میں بھی استھول دیکھلاتی ہے - ۵۷ یہ پانچون شانت اور گھور اور مٹور
 بیکھ کھلاتے ہیں اور یہ پانچون آپس میں پرولیش کرتے ہیں اور آپس میں ایک کو ایک دھرن
 کرتے ہیں - ۵۸ اور پرتھوی کے بیج میں جو یہ سمپورن گھاہرت یعنی میگھ سے لوکا لوک میں
 انکو بھی حاصل کرتے ہیں یہ بیکھ اور سج میں اور اندریوں سے جاننے کے لائق ہیں -
 ۵۹ اور آپس میں پہلے کا گن مجھے وائے اختیار کرتے ہیں اور انھوں کا پر اکرم بہت ہے اور
 سب علیحدہ علیحدہ ہیں مگر یہ سب تغیر ایک ہونے کے - ۶۰ اکیلے پر جا آتے نہیں کر سکتے
 یہ سب آپس میں ایک دوسرے کے محتاج ہیں - ۶۱ اور یہ سب آبکیٹ کی کرپا سے پرکھا
 دھشت یعنی چرکھ میں پرولیش ہو کر ایک ہو جاتے ہیں - ۶۲ اور آبکیٹ کی کرپا سے
 اس مند وغیرہ انڈے کو پیدا کرتے ہیں جیسے پانی میں بلبلا پیدا ہوتا ہے اس طرح انڈا میں
 بیضہ بھی پیدا ہو کر بڑھتا ہے - ۶۳ اور وہ انڈا بڑھ کر پانی میں رہتا ہے اور اسی پر اگر
 انڈے میں برشمانام چھتر گتہ پرکھ بڑھتے ہیں - ۶۴ اور وہی برشھا شریر میں اور وہی
 پرکھم پرکھ آکر کرتا ہے اور بھوتوں سے پہلے وہی برشھا براجمان رہتے ہیں - ۶۵ اور انھیں
 سے یہ سب چر اور آخر تر لوک بناتے رہا ہے اور بھار وغیرہ بھی انھیں سے پیدا ہوتے ہیں -
 ۶۶ اور اسی همان انڈے کے اندر کا پانی یہ سب سمڈ ہے اور اسی انڈے میں تمام جگت اور دلتوتا اور
 دانو اور آدمی وغیرہ ہیں - ۶۷ اور تمام دیپ اور پیا اور سمڈ رجوت کے ساتھ لوک سنگرہ
 جل اور باپو اور اگن اور آکاش جب ان سبھوں کا ساتھ ہوا تب بھوت وغیرہ نے باہر سے -

५८. अंस अंडे को गहिरा घरो घरो हर एक दल दल लूट लूट कर मत्त मत्त करके सातों प्रकृतियों को गहिरा
 ५९. भिन- ५९. और वे सब के साथ मत्त मत्त करके अंस अंडे को लूट लूट करके सातों प्रकृतियों को
 ६०. से वे अंस अंडे को लूट लूट करके अंस अंडे को लूट लूट करके सातों प्रकृतियों को
 ६१. रहती हैं यानी सख सख और मत्त मत्त करके अंस अंडे को लूट लूट करके सातों प्रकृतियों को
 ६२. भिन- ६२. अंस अंडे को लूट लूट करके अंस अंडे को लूट लूट करके सातों प्रकृतियों को
 ६३. जो भिन- ६३. अंस अंडे को लूट लूट करके अंस अंडे को लूट लूट करके सातों प्रकृतियों को
 ६४. के लक्षण भिन- ६४. अंस अंडे को लूट लूट करके अंस अंडे को लूट लूट करके सातों प्रकृतियों को
 ६५. होती और प्रकृतियों को लूट लूट करके अंस अंडे को लूट लूट करके सातों प्रकृतियों को

मू. कौण्डिक उवाच ॥ भगवंस्त्वण्डसम्भूतिर्यथाव
 तकथितामम । ब्रह्माण्डे ब्रह्माण्डजन्मत
 याचोक्तं महात्मनः ॥१॥ १॥ १॥ १॥

टी. कौण्डिकी कहते हैं कि हे भगवन् आपने ब्रह्माण्ड और उसमें ब्रह्मा की उत्पत्ति भी जिस तरह हुई उसको तो वर्णन किया ॥१॥

मू. एतदिच्छाम्यहं श्रोतुं त्वत्तो भृगुकुलोद्भव । य
 दानमृष्टिर्भूतानां मस्तिकिन्नुनचास्ति वा ॥
 काले वै प्रलयस्यान्ते सर्वस्मिन्नुपसंहते ॥२॥

टी. पर जब मेरी यह सुनने की इच्छा है कि प्रलयकाल के अन्त होने पर जब सृष्टि का नाश हो जाता है तो भूतों की स्थिति रहती है या नहीं ॥२॥

मू. मार्कण्डेय उवाच ॥ यदानुप्रकृतौ या
 तिलयं विश्वमिदं जगत् । तदोच्यते प्रा
 कृतौ ऽयं विद्वद्भिः प्रतिसञ्चरः ॥३॥ ३॥

श्री. तब मार्कण्डेयजी बोले कि जब यह सृष्टि प्रकृति और पुरुष में
जय होजाती है तो उसको पण्डित लोग प्रतिसम्भार कहते हैं ॥३॥

मू. स्वात्मन्यवस्थिते व्यक्ते विकारे प्रतिसंहते
प्रकृतिः पुरुषश्चैव साधर्म्येणावतिष्ठतः ॥ ४ ॥

श्री. और अव्यक्त पुरुष विकार को छोड़कर जब अपने रूप में
स्थित होते हैं तब प्रकृति और पुरुष अपने अपने धर्मों के
साथ स्थित होजाते हैं ॥४॥

मू. तदा तमश्च सत्त्वश्च समत्वेन व्यवस्थितौ । अ-
नुद्विक्तावनूनौ च तत्रोन्नौ च परस्परं ॥ ५ ॥

श्री. तब तमोगुण और सतोगुण मिलकर एक होजाते हैं और
एक से एक न कम रहते हैं न अलग रहते हैं अर्थात्
आयुष में एक से एक मिले रहते हैं ॥५॥

मू. तिलेषु वा यथा तैलं घृतं पयसि वा स्थिते । त-
था तमसि तत्त्वे च रजोऽप्यनुसृतं स्थितं ॥ ६ ॥

श्री. जिस तरह तिल में तेल और दूध में घी रहता है उसी तरह त-
मोगुण और सतोगुण में रजोगुण मिला रहता है ॥६॥

मू. उत्पत्तिं ब्रह्मणो यावदायुषो द्विपरार्द्धिकं । ता-
वद्दिनं परेशस्य तत्समासं यमं निशा ॥ ७ ॥

श्री. और ब्रह्मा की उत्पत्ति और उनकी आयुर्बल के अन्त तक
को द्विपरार्द्ध कहते हैं और वह परब्रह्म का एक दिन कहा-
जाता है और उतनी ही बड़ी उनकी रात्रि भी है जिसमें सम्पू-
र्ण जगत् को अपने उदर में लेकर शयन करते हैं ॥७॥

मू. अहर्मुखे प्रबुद्धस्तु जगददिनादिमान् । स-
र्वहेतुरचिन्त्यात्मा परः कोऽप्यपरक्रियः ॥ ८ ॥

श्री. और वह जगत् के आदि और अन्तादिमान् सबके कारण हैं

और अचिन्तात्मा परक्रिया हैं अर्थात् जिनके पोर कोई दूसरी क्रिया नहीं है वह जल अहर्मुख यानी प्रातःकाल में जागकर ॥ ८ ॥

मू. प्रकृतिपुरुषश्चैव प्रविश्यामुजगत्यतिः । सो-
भयामासयोगेन परेण परमेश्वरः ॥ ९ ॥

टी. वे जगत के पति जल्द प्रकृति और पुरुष में प्रवेश कर जाते हैं और परमयोग से उस प्रकृति और पुरुष को क्षोभित करते हैं ॥ ९ ॥

मू. यथा मदीनवस्त्रीणां यथा वामाधवाः निलः । अ-
नुप्रविष्टः क्षोभाय तथा सौयोगमूर्त्तिमान् ॥ १० ॥

टी. जैसे बसन्त ऋतु का शीत और सुगन्धयुक्त मन्दवायु नवीन स-
दयुक्त स्त्री के शरीर में प्रवेश करके उसके मन को क्षोभित करता है
उसी तरह वह योगमान पुरुष प्रकृति और पुरुष में प्रवेश क-
रे उसको क्षोभित करते हैं ॥ १० ॥

मू. प्रधाने क्षोभमाने नु स देवो ब्रह्म सज्जितः । स-
मुत्पन्नोऽण्डकोशस्थो यथा ते कथितं मया ॥ ११ ॥

टी. वह प्रधान पुरुष जब क्षोभित हो जाते हैं तब वही दे-
जिनकी ब्रह्म संज्ञा है उस अण्ड में प्रवेश करके उत्पन्न हो ज-
ते हैं जैसा कि मैंने पहिले बयान किया है ॥ ११ ॥

मू. स एव क्षोभकः पूर्वोऽक्षोभ्यः प्रकृतेः पतिः । स-
संकोचविकाशाभ्यां प्रधानत्वेऽपि च स्थितः ॥ १२ ॥

टी. और वही पुरुष जो पहिले क्षोभित थे पीछे क्षोभ से रहित हो-
कर प्रकृति के मालिक होते हैं और संकोच विकाश के साथ
प्रधानत्व में स्थित रहते हैं ॥ १२ ॥

मू. उत्पन्नः स जगद्यो निरगुणोऽपि रजोगुणं । भुञ्ज-
न्प्रवर्तते सर्गे ब्रह्मत्वं स मुपाश्रितः ॥ १३ ॥

टी. और वही जगद्योनि होकर तीनों लोकों को पैदा करते हैं और

अगुण और अज हैं परन्तु जोगुण को भोग करके पैदा करने में प्रवृत्त होने से ब्रह्मा कहलाने हैं ॥ १३ ॥

मूः ब्रह्मत्वे सप्रजाः सृष्ट्वा ततः सत्त्वातिरेकवान् । विष्णुत्वमेत्यधर्मेण कुरुते परिपालनं ॥ १४ ॥

टीः ब्रह्मा होकर सृष्टि उत्पन्न करते हैं और सत्तोगुण युक्त विष्णु नाम होकर धर्म पूर्वक सभी को पालन करते हैं ॥ १४ ॥

मूः ततस्तमोगुणोद्भित्त्वरुद्रत्वे चाखिलं जगत् । उपसंहृत्य वैशेते त्रैलोक्यं त्रिगुणो गुणः ॥ १५ ॥

टीः फिर तमोगुण से युक्त रुद्र नाम होकर सम्पूर्ण सृष्टि का नाश करके सो रहते हैं ॥ १५ ॥

मूः यथा प्राग्व्यापकः क्षेत्री पालको लावकस्तथा । तथा ससंज्ञा मायातिब्रह्मविस्त्रीयकारिणी ॥ १६ ॥

टीः जिस तरह गृहस्थलोग पहिले खेत में बीज बोते हैं फिर जमने पर निगते खाकरते हैं फिर तैयार होने पर काट भी लेते हैं उसी तरह वह प्रधान पुरुष ब्रह्मा और विष्णु और महादेव कहा कर जगत् को करते और हरते हैं ॥ १६ ॥

मूः ब्रह्मत्वे सृजने लोकान् रुद्रत्वे संहृत्यापि । विष्णुत्वे चाप्सु दासीनस्त्रिस्तोः वस्था स्वयम्भुवः ॥ १७ ॥

टीः ब्रह्मा होकर लोक को पैदा करते हैं और विष्णु होकर पालन करते हैं और रुद्र होकर सबको नाश करते हैं वही प्रधान पुरुष स्वयम्भू जो सब से परे हैं उन्हीं की यह तीन अवस्था हैं ॥ १७ ॥

मूः रजो ब्रह्मा तमो रुद्रो विष्णुः सत्त्वं जगत्पतिः । एत एव त्रयो देवा एत एव त्रयो गुणाः ॥ १८ ॥

टीः यानी उनका रज नाम जो गुण है वह ब्रह्मा और तम गुण रुद्र और सत्त्व गुण विष्णु कहा जाता है यही तीनों देवता तीनों गुण के प्रधान हैं ॥ १८ ॥

मू. अन्योन्यमिधुना ह्येते अन्योन्याश्रयिणस्तथा ।

क्षणवियोगेन ह्येषां न न्यजन्ति परस्परं ॥ १९ ॥

श्री. और ये तीनों गुण आपस में मिले रहते हैं और एक के एक
आश्रित हैं परस्पर एक क्षण दूसरे से भूदे नहीं होते हैं ॥ १९ ॥

मू. एवं ब्रह्मा जगत्पूज्यो देवदेवश्चतुर्मुखः । रजोगु

णं समाश्रित्य सृष्ट्वे सव्यवस्थितः ॥ २० ॥

श्री. मार्कण्डेयजी कहते हैं कि इस तरह वे ब्रह्मा देवों के देव
चतुर्मुख जो जगत् के आदि हैं रजोगुण में प्राप्त होकर सृ-
ष्टि के उत्पन्न करने वाले कहलाते हैं ॥ २० ॥

मू. हिरण्यगर्भो देवादि रनादिरुपचारतः । भूपद्म

कर्णिका संस्थो ब्रह्माग्रे समजायत ॥ २१ ॥

श्री. और वही हिरण्यगर्भ देव सब देवों के आदि और अनादि
उपचार से कहते हैं और उन्हीं की नाभी कमल कोश में पड़ि-
ले ब्रह्मा उत्पन्न होकर विराजमान रहते हैं ॥ २१ ॥

मू. तस्य वर्षशतं त्वेकं परमायुर्महात्मनः । ब्राह्मे

णैव हि मानेन तस्य संख्या निबोधमे ॥ २२ ॥

श्री. उन महात्मा की आयुर्वल सौ वर्ष तक है उस वर्ष का प्रमाण
ब्रह्म मान करके कहता हूँ सुनिये ॥ २२ ॥

मू. निमेषैर्दशभिः काष्ठा तथा पञ्चभिरुच्यते । क-

लास्त्रिंशच्च वै काष्ठा मुहूर्तैर्विंशताः कलाः ॥ २३ ॥

श्री. कि दश पाँच निमेष की एक काष्ठा होती है और तीस काष्ठा
एक कला और तीस कला की एक मुहूर्त होती है ॥ २३ ॥

मू. अहोरात्रं मुहूर्तानां नृणां विंशतु वै स्मृतं । अहो

रात्रौ च विंशद्भिः पक्षौ द्वौ मास उच्यते ॥ २४ ॥

श्री. और तीस मुहूर्त का एक दिन रात मनुष्यों का होता है और पन्द्र-

दिन रात का एक पक्ष और दो पक्ष का एक महीना होता है ॥२४॥

मू. तैः षड्विंशत्यनं वर्षं देवैः यने दक्षिणीत्तर । तद्देवा
नामहोरात्रं दिनं तच्चोत्तरायणं ॥ २५ ॥ २५ ॥

टी. और छः महीने का एक अयन और दो अयन का एक वर्ष
मानवी कहलाता है और अयन दो तरह का है एक दक्षिणायन
दूसरा उत्तरायण और इस वर्ष का एक दिन रात देवों को हो
ता है उत्तरायण दिन है और दक्षिणायन रात है ॥ २५ ॥

मू. दिव्यैर्वर्षसहस्रैस्तु कृतत्रेतादिसंज्ञितं । चतु-
र्युगं द्वादशभिस्तद्विभागं ऋणुष्वमे ॥ २६ ॥

टी. और देवों के बारह हजार वर्ष की एक चौयुगी मनुष्यों की
गुजरती है यानी सतयुग त्रेता द्वापर कलियुग अब युगों का
विभाग कहता हूँ सुनिये ॥ २६ ॥

मू. चत्वारितुसहस्राणिवर्षाणां कृतमुच्यते । श-
तानि सन्ध्या चत्वारि सन्ध्यांश्च तथा विधः ॥ २७ ॥

टी. देवों के वर्ष से चार हजार वर्ष सतयुग का प्रमाण है और इसमें चार
सौ वर्ष सन्ध्या और इतना ही सन्ध्यांश्च गुजरता है ॥ २७ ॥

मू. त्रेता त्रीणिसहस्राणि दिव्याब्दानां शतत्रयं । त-
त्सन्ध्या तत्समाचैव सन्ध्यांश्च तथा विधः ॥ २८ ॥

टी. और तीन हजार वर्ष देवों के वर्ष से त्रेता का प्रमाण है इस
में तीन सौ वर्ष सन्ध्या और तीन सौ वर्ष सन्ध्यांश्च गुजरता है ॥ २८ ॥

मू. द्वापरं द्वे सहस्रे तु वर्षाणां द्वे शतं तथा । तस्य स-
न्ध्या समाख्याता द्वे शताब्दे तदंशकः ॥ २९ ॥

टी. और उसी वर्ष से दो हजार वर्ष द्वापर का प्रमाण है और
दो सौ वर्ष सन्ध्या और इतना ही सन्ध्यांश्च भी है ॥ २९ ॥

मू. कलिः सहस्रं दिव्यानामब्दानां द्विजसत्तम ।

सन्ध्यासन्ध्यांशकश्चैव शतको समुदाहृतौ ॥ ३० ॥

श्री. और हे दिन सत्तम देव वर्ष से हजार वर्ष कलियुग का प्रमाण है इसमें एक सौ वर्ष सन्ध्या और इतना ही सन्ध्यांश भी है ॥ ३० ॥

मू. एषाद्वादशसाहस्रीयुगारव्याकविभिः कृता । एत
तसहस्रगुणितमहो ब्राह्म्यमुदाहृतं ॥ ३१ ॥

श्री. इन्हीं युगों का नाम कविलोगों ने द्वादश साहस्री र-
क्या है और इसी बारह हजार चौयुगी का एक दिन ब्रह्मा
का होता है ॥ ३१ ॥

मू. ब्रह्मणो दिवसे ब्रह्मन् मनवः स्युश्चतुर्दश । भव
न्ति भावशस्तेषां सहस्रं तद्विभज्यते ॥ ३२ ॥

श्री. और हे ब्रह्मन् ब्रह्मा के एक दिन में चौदह मनु गुजरते हैं उन लोगों
का भी विभाग हजार से किया जाता है ॥ ३२ ॥

मू. देवाः सप्तर्षयः सेन्द्रामनुस्तत्सूनवो नृपाः । म-
नुना सहस्रं ज्यन्ते संह्रियन्ते च पूर्ववत् ॥ ३३ ॥

श्री. इन्द्र सहित सम्पूर्ण देवता और सप्तर्षि और मनु और मनु
के बेटे राजालोग मनु के साथ ही पैदा होते हैं और उसी तरह
नाश को भी प्राप्त होते हैं ॥ ३३ ॥

मू. चतुर्युगानां संख्याता साधिका ह्येक सप्ततिः । म-
न्वन्तरं तस्य संख्यां मानुषाद्वैर्निबोध मे ॥ ३४ ॥

श्री. और इकहत्तर चौयुगी का एक मन्वन्तर होता है जब म-
नुष्यों के वर्ष से उसका प्रमाण कहता हूँ सुनिये ॥ ३४ ॥

मू. विंशतकोट्यस्तु सम्पूर्णः संख्याताः संख्यया द्विज ।
सप्तषष्टिस्तथान्यानि नियुतानि च संख्यया ॥ ३५ ॥

श्री. हे ब्रह्मन् तीस करोड़ सरसठ लाख ॥ ३५ ॥

मू. विंशतिश्च सहस्राणि कालोऽयं साधिकं विना ।

एतन्मन्वन्तरं प्रोक्तं दिव्यैर्वर्षैर्निबोध
मे ॥ ३६ ॥ ३६ ॥ ३६ ॥ ३६ ॥

टी. और बीस हजार वर्ष मनुष्यों के वर्ष के प्रमाण से एक मन्वन्तर होता है जब देव वर्ष से प्रमाण कहना हूँ सुनिये ॥ ३६ ॥

मू. अष्टौवर्षसहस्राणिदिव्यया संख्यायुतं । द्विप-
ञ्चाशन्नयान्यानि सहस्राण्यधिकानितु ॥ ३७ ॥

टी. कि देवताओं के साठ हजार वर्ष का एक मन्वन्तर होता है ॥ ३७ ॥

मू. चतुर्दशगुणो ह्येष कालो ब्रह्म महः स्मृतं । तस्या-
न्ते प्रलयः प्रोक्तो ब्रह्मन् नैमिन्निको बुधैः ॥ ३८ ॥

टी. इसीको चौदह गुण करने से जो काल व्यतीत होता है वह ब्रह्मा का एक दिन होता है यानी जब चौदह मन्वन्तर गुजरते हैं तब ब्रह्मा का एक दिन होता है वही जो ब्रह्मा के दिन का अन्त है उसको पंडित लोग नैमिन्निक प्रलय कहते हैं ॥ ३८ ॥

मू. भूर्लोकोऽथ भुवर्लोकः स्वर्लोकश्च विनाशिनः । त-
था विनाशमायाति महर्लोकश्च तिष्ठति ॥ ३९ ॥

टी. और इस प्रलय में भूर्लोक और भुवर्लोक और स्वर्लोक भी नाश हो जाता है इसी तरह महर्लोक भी नाश हो जाता है ॥ ३९ ॥

मू. तद्वासिनोऽपि तायेन जनलोकं प्रयान्ति वै । ए-
कार्णावेच वै लोके ब्रह्मा स्वपिति वै निशि ॥ ४० ॥

टी. और इसमें के रहने वाले लोग ताप से विकल होकर जन लोक में भाग जाते हैं और यह लोक सब मिट जाता है ब्रह्मा रात को सो रहते हैं ॥ ४० ॥

मू. तत्प्रमाणैव सारास्ति दन्ते सृज्यते पुनः । एव-
न्तु ब्रह्मणो वर्षमेकं वर्षशतन्तु तत् ॥ ४१ ॥

टी. और जितना प्रमाण ब्रह्मा के दिन का है उतना ही प्रमाण

उन की रात का भी है रात बीत जाने पर जब ब्रह्मा जागते हैं तो फिर सृष्टि की रचना करते हैं इसी प्रमाण से तीन सौ साठ दिन का एक वर्ष होता है और इसी वर्ष से एक सौ वर्ष ब्रह्मा जीते हैं ॥ ४१ ॥

मू. शतंहितस्य वर्षाणां परमित्यभिधीयते । पञ्चा-
शद्विंशत्या वर्षैः पराद्धमिति कीर्त्यते ॥ ४२ ॥

टी. उसी वर्ष से पचास वर्ष का एक पराद्ध ब्रह्मा का होता है ॥ ४२ ॥

मू. एवमस्य पराद्धन्तु व्यतीतं द्विजसत्तम । यस्या-
न्तो भून्महाकल्पः पाद्म इत्यभिविभ्रुतः ॥ ४३ ॥

टी. और हे द्विज सत्तम इस पहिले पराद्ध को पद्म नाम महा-
कल्प कहते हैं ॥ ४३ ॥

मू. द्वितीयस्य पराद्धस्य वर्त्तमानस्य वै द्विज । वरा-
ह इति कल्पोऽयं प्रथमः परिकल्पितः ॥ ४४ ॥

टी. और जब दूसरा पराद्ध गुजरता है तो वह बाराह कल्प
कहलाता है ॥ ४४ ॥

इति श्री मार्कण्डेय पुराणे
ब्रह्मायुः प्रमाणं ॥ ४६ ॥

چھالیسواں آویہاے

۱۔ کروشنکی کہتے ہیں کہ اے بھگوان برہما کا پیدا ہونا اور اُس میں برہما کی پیدائش بطرح
سے ہوئی اُسکو تو آپ کہہ چکے - ۲۔ اب مجھے یہ بتلایے کہ سرشٹ یعنی مخلوقات اور برہما
یعنی قیامت کے اخیر پر جب سب ناس ہو جاتے ہیں تو بھوت تاقم رہتے ہیں یا نہیں

۳۔ تب مارکنڈے جی نے کہا کہ یہ سرشت جب برکرت اور پریش میں مل جاتی ہے تو چریت
لوگ اسکو برت تنہا کہتے ہیں ۴۔ اور ایک پریش بکار کو چھوڑ کر اپنے روپ میں جب قلم
ہوتے ہیں تو برکرت اور پریش اپنے دھرم کے ساتھ اسخت ہو جاتے ہیں۔ ۵۔ اور توگن
اور ستوگن بھی ایک ہو جاتے ہیں الگ الگ نہیں رہتے یعنی توگن میں ستوگن اور ستوگن
میں توگن مل جاتے ہیں۔ ۶۔ اور جسطرح تل میں تیل اور دودھ میں گھی ملا رہتا ہے اسی
طرح توگن اور ستوگن کے ساتھ جوگن بھی ملا رہتا ہے۔ ۷۔ اور برہما کی پیدائش سے
اور انکی اخیر زندگی تک دو پراردھ گذرتے ہیں اور وہ (یعنی برہما کی تمام عمر) پر برہم کا
ایک دن ہوتا ہے اور اسی کے مطابق رات بھی ہوتی ہے اسی رات کو پریشفور سمجھو کہ وہ اپنے
پیٹ میں لیکر سو رہتے ہیں۔ ۸۔ پھر وہ بھگوان جو جگت کے آدھن اور آنا دھن اور
اتما اور اپر کر یا دھن یعنی جگے پر کے کوئی کر یا نہیں ہے اور سب کے کارن ہیں پر اہ کال
میں جاگ کر۔ ۹۔ جلد برکرت اور پریش میں پرویش کرتے ہیں اور پریم جوگ سے اُس
پرکرت اور پریش کو فریفتہ کرتے ہیں۔ ۱۰۔ جیسے نسبت رت کی ٹھنڈی ہلک اور سنگند
ہو انوجوان عورت کے جسم میں لگ کر اسکو فریفتہ کر لیتی ہے اسی طرح وہ جوگ مان پریش
پرکرت پریش میں پرویش کر کے اسکو فریفتہ کر لیتی ہیں ۱۱۔ اور جب وہ پردھان پریش جگنا نام برہم
فریفتہ ہو جاتے ہیں تب اسی اندے میں پرویش کر کے پیدا ہو جاتے ہیں جیسا کہ میں نے
پہلے بیان کیا۔ ۱۲۔ وہی پریش جو پہلے فریفتہ تھے پھر فریفتگی سے علیحدہ ہو کر برکرت کے لپ
ہوتے ہیں اور سکوچ اور بکاش سے شامل پردھان میں بھی قائم رہتے ہیں۔ ۱۳۔ اور انھیں
سے تینوں لوگ پیدا ہوتے ہیں وہی جگت کی جون (مقام پیدائش مخلوقات) ہو کر باوجودیکہ
اگن اور اجنا ہیں مگر جوگن کو بھوک کر کے مزہ شیط پیدا کرتے ہیں۔ ۱۴۔ اور ستوگن کے ساتھ
۱۵۔ اور ستوگن کے ساتھ رڈر نام مشہور ہو کر دھرم کے مطابق سمجھو کہی پرورش کرتے ہیں۔
۱۶۔ اور ستوگن کے ساتھ رڈر نام مشہور ہو کر سمجھو کہ نامش کر کے سو رہتے ہیں۔
۱۷۔ جسطرح گرستہ لوگ پہلے کھیت میں بیج بوتے ہیں اور جب وہ بیج ختم کر زمین سے اگتا
اور برہما ہی تب اسکو پانی سے سنبھالتے اور نراتے ہیں اور بعد طیار ہونے غلہ کے کاٹ لیتے
ہیں اسی طرح وہ پردھان پریش برہما اور پریش اور رڈر ہو کر سکو پیدا اور پالن اور پریش
کرتے ہیں۔ ۱۸۔ برہما ہو کر لوگ کو پیدا کرتے ہیں اور پریش ہو کر سکو پالتے ہیں اور رڈر ہو کر

سبھو کو نامش کرتے ہیں وہی پر وہاں پرش جو سوئے بھو اور سب سے الگ ہیں انھیں کی یہ
 تیون اور ستھیا ہیں - ۸۸ اور جو گن سے برتھا اور سو گن سے بشت اور تو گن سے رڈر یہ تیون
 دیوتا اسی پر وہاں پرش کے پیدا کیے ہوئے ہیں اور تیون گن بھی وہی کہلاتے ہیں -
 ۱۹ اور آپس میں ملے ہوئے رہتے ہیں اور ایک کے ایک محتاج بھی ہیں اور آپس میں ایک خطہ
 بدھانین ہوتے - ۲۰ مارکنڈے جی کہتے ہیں کہ اسے کروٹسکی اس طرح دیوتوں کے دیو چتر
 برتھا جی جو جگت کے آدم ہیں جو گن میں پراپت ہو کر پیدا کر نوالے کہلاتے ہیں - ۲۱ اور
 برتھا جی کہتے ہیں کہ جو جگت ان میں جنکا آوا اور آئٹ کوئی نہیں جاتا انھیں کی ناجد کے مکمل میں برتھا
 پیدا ہو کر رہتے ہیں - ۲۲ اور ان مہاتما جی برتھا جی کی عمر تو برس کی ہی اور اس میں
 کا اندازہ برتھا مان کر کے کہتا ہوں سنو - ۲۳ کہ پندرہ بیکھ (بھنی) پکاک مارنگی ایک کا نشا
 اور تیس کا نشا کی ایک کھا اور تیس کھا کی ایک مہورت - ۲۴ اور تیس مہورت کا ایک
 دن رات آدمیوں کا ہوتا ہے اور پندرہ دن کا ایک پچھ اور دو پچھ کا ایک مہینا ہوتا ہے -
 ۲۵ اور چھ مہینہ کا ایک آہن ہوتا ہے اور آہن دو طرح کا ہوتا ہے ایک دچھنا میں دو مہر آہن
 اور دو آہن کا ایک برس ہوتا ہے آدمیوں کے برس کے برابر دیوتوں کا ایک دن رات
 ہوتا ہے آہن کو دن اور دچھنا کو رات سمجھنا چاہیے - ۲۶ اور دیوتوں کے بارہ ہزار
 برس کے برابر ایک چوٹلی گذرتی ہے یعنی ست جگ تریتا دو پر کلجک اب ان سبھوں کا حصہ
 الگ الگ بیان کرتا ہوں سنئے - ۲۷ کہ ست جگ کا اندازہ دیوتوں کے برس سے چار ہزار
 برس کا ہے اور اسیمن سندھیا چار سو برس کی گذرتی ہے اور اتنا ہی سندھیا کا آئٹش ہے -
 ۲۸ اور تریتا جگ دیوتوں کے برس سے تین ہزار برس کا ہوتا ہے اسیمن تین سو برس سندھیا
 اور تین سو برس سندھیا کا آئٹش گذرتا ہے - ۲۹ اور دو پر جگ دیوتوں کے برس سے
 دو ہزار برس کا ہوتا ہے اسیمن دو سو برس سندھیا اور اتنا ہی سندھیا کا آئٹش گذرتا ہے -
 ۳۰ اور کلجک دیوتوں کے برس سے ایک ہزار برس کا ہوتا ہے جہین جی اسیمن ایک سو برس
 کی سندھیا اور اتنا ہی سندھیا کا آئٹش گذرتا ہے - ۳۱ ان جگن کا نام کب لوگوں نے
 دوا دس ساہسری رکھا ہے اور اسی بارہ ہزار چوٹلی کا برمھا کا ایک دن ہوتا ہے -
 ۳۲ ہے براہمن برمھا کے ایک دن میں چودہ سن گذر جاتے ہیں اور ان سبھوں کا بھگاک
 یعنی تقسیم ہزار سے کیا جاتا ہے - ۳۳ اور انڈر اور سب دیوتا اور بیکھ اور مین اور مین کے

بیٹے راجا لوگ من کے ساتھ ہی پیدا ہوتے ہیں اور اس طرح ناش ہو جاتے ہیں -
 ۳۴ اکثر چو جلی کا ایک منو منتر ہوتا ہے اسیوں کے برس کے حساب سے اسکا اندازہ یہ ہے
 ۳۵ یعنی اسے برابھن تئیس کروڑ ست لاکھ ۳۶ - ۳۷ ویش ہزار برس کا آدمیوں کے
 برس کے حساب سے ایک منو منتر ہوتا ہے اب دیوتوں کے برس کے حساب سے اسکا اندازہ کتے
 میں سنو - ۳۸ کہ دیوتوں کے ساتھ ہزار برس کا ایک منو منتر ہوتا ہے - ۳۹ اسکو چودہ گنا
 کرنے سے جو زمانہ گزرتا ہے وہ برہما کا ایک دن ہوتا ہے یعنی چودہ منو منتر گزرنے پر برہما کا بھی
 ایک دن گزر جاتا ہے یہ جو برہما کے دن کا اخیر ہوتا ہے اسکو پندت لوگ کیمشک پرے کہتے ہیں
 ۴۰ اور اس پرے میں جھو لوک اور پاتال لوک اور سور لوک سب ناش ہو جاتے ہیں اور اس طرح
 ہر لوک بھی ناش ہو جاتا ہے - ۴۱ تب اسمین کے رہنے والے لوگ تپ یعنی گرمی سے بیتاب
 ہو کر جن لوک میں بھاگ جاتے ہیں اور یہ لوک سب مٹ جاتے ہیں تب برہما رات کو سو رہتے
 ہیں - ۴۲ اور جتنا بڑا برہما کا دن ہوتا ہے اتنی ہی رات بھی ہوتی ہے جب رات گزر جاتی ہے
 تب پھر برہما کو کون کو پیدا کرتے ہیں اسی حساب سے تین ٹسو ساٹھ دن کا ایک برس ہوتا
 ہے اور اسی برس کے حساب سے اکیس برس کی برہما کی عمر ہوتی ہے ۴۳ اور برہما کے
 سال کے حساب سے پچاس برس کا ایک پر اردھ ہوتا ہے - ۴۴ اور پہلے پر اردھ کے
 گزرنے کو اسے جمن جی پدم مہاکپ کہتے ہیں - ۴۵ اور دوسرے پر اردھ کے گزرنے
 کو بارہ کلپ کہتے ہیں - فقط -

मू. कौटुकि रुवाच ॥ यथा ससर्ज वै ब्रह्मा भ-
 गवानादिकृत्प्रजाः । प्रजापतिः पतिर्देव
 स्तन्मे विस्तारतो बद्ध ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

श्री. कौटुकि कहते हैं कि हे मुनि जिस तरह भगवान् ब्रह्मा आदि
 कर्त्ता प्रजापति देवता ने प्रजा लोगों को फिर उत्पन्न किया उसको
 विस्तार पूर्वक मुझ से कहिये ॥ १ ॥

मू. मार्कण्डेय उवाच ॥ कथं धाम्येव ते ब्रह्म-

न ससर्ज भगवान् यथा । लोककच्छाश्व
तः कृत्स्नं जगत्स्थावरजङ्गमं ॥ २ ॥ २ ॥

टी. तब मार्कण्डेय जी कहने लगे कि हे ब्रह्मन् भगवान् लोक क-
र्त्ता ब्रह्माजी शास्त्र पुस्तक ने जिस तरह स्थावर और जङ्गम मय
इस संसार को पैदा किया है वह मैं कहता हूँ सुनो ॥ २ ॥

मू. पद्मावसाने प्रलये निशासु प्रोत्थितः प्रभुः । स
त्योद्भूतस्तदा ब्रह्मा शून्यं लोकमवैक्षत ॥ ३ ॥

टी. कि पद्म कमल के प्रलय के अन्त में जब ब्रह्माजी सोकर उठे तो
सम्पूर्ण लोकों को सूना देखा ॥ ३ ॥

मू. इमं ज्योदाहरन्त्य नृश्लोकं नारायणं प्रति । ब्रह्म
स्वरूपिणं देवं जगतः प्रभवाव्ययं ॥ ४ ॥ ४ ॥

टी. तब ब्रह्म स्वरूपी श्री नारायण जो जगत् के उत्पत्ति और नाश करनेवा-
ले हैं उनकी तरफ ध्यान करके यह श्लोक स्तुति के साथ कहने लगे ॥ ४ ॥

मू. आपो नारा वैतनवदन्य पां नाम शुश्रुम । तासु
शेते सयस्माच्च तेन नारायणः स्मृतः ॥ ५ ॥

टी. कि हे भगवन् नारा और तनु और आप जल का नाम है आप उसमें
शयन करने हैं इस वास्ते नारायण कहलाते हैं ॥ ५ ॥

मू. विबुधः सलिले तस्मिन् विज्ञायान्तर्गता मम हीं ।
अनुमानात् समुद्धारं कर्तुं कामास्तदाक्षितेः ॥ ६ ॥

टी. यह स्तुति ब्रह्माजी की सुनकर वह नारायण उठे और पृथ्वी को
जल के भीतर डूब गई थी अपने अनुमान से ब्रह्माजी की इच्छा
को समझकर पृथ्वी के उद्धार के वास्ते ॥ ६ ॥

मू. अकरोत् सतनू रन्याः कल्पादिषु यथापुरा । मत्स्य
कूर्मादिकास्तद्वद्वारा हं वपुरा स्थितः ॥ ७ ॥

गो. वह भगवान् दूसरा शरीर धारण करने भये जिस तरह कल्पा

के ज्ञादि में पहिले मत्स्य कूर्म वाराहादि रूप धारण किये हैं उ-
सी तरह फिर धारण करते भये अर्थात् मीन रूप होकर ॥७॥

मू. वेदयज्ञमयं दिव्यं वेदयज्ञमयो विभुः । रूपं कृ-
त्वा विवेशाप्सु सर्वगः सर्वसम्भवः ॥८॥ ८॥

टी. यज्ञादि के संयुक्त जो वेद हैं उनको उस यज्ञपुरुष जगतपति ने उद्धार
किया और फिर वाराह रूप होकर जल में प्रवेश किया ॥८॥

मू. समुद्रं त्यज्य पातालान्मुमोच सलिलेभुवं । जन-
लोकस्थितैः सिद्धैश्चिन्त्यमानो जगत्पतिः ॥९॥

टी. और पाताल से पृथ्वी को लाकर जल के ऊपर स्थित कि-
या उस समय जनलोक के रहनेवाले सिद्ध लोगो ने भगवा-
न की बहुत स्तुति किया ॥९॥

मू. तस्योपरि जलौघस्य महती नौरिव स्थिता । वितत-
त्वात्तु देहस्य न महीयाति संप्रभं ॥१०॥ १०॥

टी. और उस पानी के ऊपर पृथ्वी को नौका के समान स्थि-
त किया और कच्छप रूप होकर अपने ऊपर पृथ्वी को र-
ख लिया कि जिससे वह पृथ्वी फिर डूब न सकी ॥१०॥

मू. ततः क्षितिं समीकृत्य पृथिव्यां सोऽसृजद्विरीन ।
प्राक्सर्गे दह्यमाने नुतदा सम्वर्त्तकाग्निना ॥११॥

टी. तब उस प्रजापति ने पृथ्वी को बराबर करके पहिले पर्वतों को पैदा
किया जो पहिले सर्ग संवर्त्तक अग्नि से जल गया था ॥११॥

मू. तेनाग्निना विशीर्णोऽपर्वर्त्ता भुवि सर्वशः । शै-
ला एकाण्ये मग्ना वायुना पस्तु संहताः ॥१२॥

टी. और उस अग्नि से फट फट कर सारी पृथ्वी पा पड़े ये फिर एकाशीव हो
ने पर वायु के मौंके से अलग होकर बह गये थे ॥१२॥

मू. निषक्ता यत्र यत्रा संस्तवत वाचला भवन । भू-

विभागन्तः कृत्वा सप्त द्वीपेषु शोभितं ॥ १३ ॥

टी. उन सभों को जिस २ जगह पहिले थे फिर उसी जगह दुरुस्त करके रक्त्वा बाद उसके पृथ्वी में सानौ द्वीप का भाग लगाकर ॥ १३ ॥

मू. भूराद्याश्चतुरोलोकान् पूर्ववत् समकल्पयत् ।

सृष्टिं चिन्तयत् तत्तस्य कल्पादिषु यथापुरा ॥ १४ ॥

टी. भूलोक आदि चार लोकों को पहिले की तरह बनाया और जिस तरह पहिले कल्प के आदि में सृष्टि थी उसका ध्यान किया ॥ १४ ॥

मू. अबुद्धिपूर्वकस्तस्मात्प्रादुर्भूतस्तमो मयः । तमो
मोहो महामोहस्तामिश्रोह्यन्धसंज्ञितः ॥ १५ ॥

टी. उस ध्यान के करते ही तमो मय तम और मोह मय मोह और तामिश्र और अन्धतामिश्र नाम करके अबुद्धि संयुक्त उत्पन्न हुआ ॥ १५ ॥

मू. अविद्या पञ्चपूर्वेषां प्रादुर्भूता महात्मनः । पञ्च
धावस्थितः सर्गो ध्यायतोऽप्रतिबोधवान् ॥ १६ ॥

टी. और पहिले के समान उस महात्मा से पाँच अविद्या उत्पन्न हुईं और उन्हीं के ध्यान करने से पाँच तरह का प्राकृत सर्ग उत्पन्न हुआ ॥ १६ ॥

मू. बहिरन्तश्चाप्रकाशः संवृतात्मानगात्मकः । मु-
ख्यानगायतश्चोक्ता मुख्यसर्गस्तत्स्वयं ॥ १७ ॥

टी. प्रथम मुख्य सर्ग है कि जिसके बाहर और भीतर कुछ भी प्रकाश नहीं है यह सब पर्वतों में मुख्य हैं इसलिये इनको मुख्य सर्ग कहते हैं ॥ १७ ॥

मू. ब्रह्मासाधकं सर्गममन्यदपरं पुनः । तस्याभि-
ध्यायतः सर्गतिर्यक् सोतो ह्यवर्त्तत ॥ १८ ॥

टी. यह साधक सर्ग देखकर ब्रह्मा ने दूसरे सर्ग का ध्यान किया तो तिर्यक् और तत्सर्ग उत्पन्न हुआ ॥ १८ ॥

मू. यस्मात्तिर्यक् प्रवृत्तिः सातिर्यक् सोतस्ततः सतः

पश्वादयस्तेविरव्यातास्तमः प्रायाह्यवेदिनः ॥ १९ ॥

टी. वसववतिर्यक्तप्रवृत्ति होने के इसको तिर्यक्त और तमर्ग कहते हैं इससे सब तमोगुणी और अज्ञानी पशु इत्यादि उत्पन्न हुवे ॥ १९ ॥

मू. उत्पद्यग्राहिणश्चैव तेऽज्ञाने ज्ञानमानिनः ।
हं कृताग्रहं मानाग्रहाविशद्विधात्मकाः ॥ २० ॥

टी. और ये सब देही राह के चलनेवाले और अज्ञान हैं पर अपने को ज्ञानी समझते हैं और वे सब अहंकारी और अभिमानी हैं ॥ २० ॥

मू. अन्तःप्रकाशास्ते सर्वे आवृतास्तु परस्परम् । त-
मप्यसाधकं मत्वा ध्यायतोऽन्यस्ततोऽभवत् ॥ २१ ॥

टी. परन्तु इन्हीं के भीतर केवल खाने पीने का प्रकाश है और पर-
स्पर आवृत हैं अर्थात् एक पर एक जबरदस्त हैं इस सर्ग को भी अ-
साधक समझकर ब्रह्माने जब ध्यान किया तो तीसरा ऊर्ध्वस्वोत्तमर्ग पैदा हुआ ॥

मू. ऊर्ध्वस्वोत्तमस्तृतीयस्तु सात्विकोर्ध्वमवर्त्तत । ते
सुखप्रीतिबहुला वहिरन्तस्त्वनारुताः ॥ २२ ॥

टी. और इस सर्ग में सब कोई सत्तोगुण युक्त पैदा हुवे और इन
लोगों को आपुस में सुख और प्रीति बहुत है और बाहर और
भीतर अनावृत यानी अज्ञान से रहित हैं ॥ २२ ॥

मू. प्रकाशा वहिरन्तश्च ऊर्ध्वस्वोत्तमः समुद्रवाः । तु-
ष्टात्मनस्तृतीयस्तु देवसर्गो हि स स्मृतः ॥ २३ ॥

टी. इन लोगों को बाहर और भीतर प्रकाश रहता है और ऊर्ध्वस्वो-
त्तम से ये लोग उत्पन्न हैं और तुष्टात्मा हैं इसवासे यह तीसरा सर्ग
देवसर्ग भी कहलाता है ॥ २३ ॥

मू. तस्मिन्सर्गेऽभवत्प्रीतिर्निष्पन्ने ब्रह्माणस्तदा ।
ततोऽन्यसतदादध्योसाधकं मर्गमुत्तमं ॥ २४ ॥

टी. जब यह सर्ग भी हो चुका तो ब्रह्मा की इससे बहुत प्रीति हुई

बाद इसके सिद्ध करनेवाले उत्तम सर्ग का ध्यान किया ॥ २४ ॥

मू. तस्मिन्निह सत्यस्य सत्यमिध्यायिनस्ततः । प्रा-
दुर्बलमौतदाव्यक्तगद्व्याहृतस्तुसाधकः ॥ २५ ॥

टी. तब उस ब्रह्मा सत्यवादी अव्यक्त के ध्यान करने से अर्वाक
स्रोत साधक सर्ग उत्पन्न हुआ ॥ २५ ॥

मू. यस्तद्व्यावा प्रवर्त्तन्तततोऽर्वाकस्रोतस्तुते
तेचप्रकाशबहुलास्तमोदित्ता रजोऽधिकाः ॥ २६ ॥

टी. जोकि और सर्गों से यह सर्ग उत्तम पीछे पैदा हुआ इस सब
व से यह अर्वाक स्रोत सर्ग कहलाता है इन सबों में प्रकाश अ-
धिक है और तमोगुण युक्त हैं परन्तु रजोगुण अधिक है ॥ २६ ॥

मू. तस्मान्नेदुःखबहुलाभूयोभूयश्चकारिणः । प्रका-
शावहिरन्तश्चमनुष्याः साधकाश्चते ॥ २७ ॥

टी. इसवास्ते इनलोगों को दुःख अधिक है क्योंकि बार बार बसव-
व कर्म के जन्मवगैरा में प्रवृत्त कराये जाते हैं और इन सबों के भी-
तर और बाहर प्रकाश भी रहता है इसीको चौथा मनुष्य साधक सर्ग कहते हैं ॥ २७ ॥

मू. पञ्चमोऽनुग्रहसर्गः सचतुर्द्वाव्यवस्थितः । वि-
पर्ययेण सिद्धा च शान्त्या तुष्ट्या तथैव च ॥ २८ ॥

टी. और पाँचवाँ जो अनुग्रह सर्ग है वह चार तरह का है एक वि-
पर्यय दूसरा सिद्धि तीसरा शान्ति चौथा तुष्टि ॥ २८ ॥

मू. निर्वृत्तं वर्त्तमानञ्चतेऽर्थजानन्तिवैपुनः । भूता-
दिकानां भूतानां षष्टः सर्गः उच्यते ॥ २९ ॥

टी. और ये लोग निवृत्ति और प्रवृत्ति के अर्थ को जानते हैं और जि-
समें भूतादि की उत्पत्ति है वह छठवाँ सर्ग कहा जाता है ॥ २९ ॥

मू. नेपरिग्रहिणः सर्वे संविभागरतास्तथा । चोद-
नाश्चाप्यशीलाश्च ज्ञेया भूतादिकाश्चते ॥ ३० ॥

टी. और ये लोग सब जगह घूमते फिरते रहते हैं और ये एक और अशील होते हैं और हरतरह से विभाग में रत रहते हैं यह भूतादिक सर्ग कहलाता है ॥ ३० ॥

मू. प्रथमो महतः सर्गो विज्ञेयो ब्रह्माण्डसुतः । तन्मा
त्राणां द्वितीयस्तु भूतसर्गः स उच्यते ॥ ३१ ॥

टी. और महान् जो है ब्रह्मा उनकी उत्पत्ति प्रथम सर्ग है और तन्मात्रा की उत्पत्ति दूसरा सर्ग है और इसी को भूतसर्ग भी कहते हैं ॥ ३१ ॥

मू. वैकारिकस्तृतीयस्तु सर्गश्चेन्द्रियकः स्मृतः । इ-
त्येष प्राकृतः सर्गः संभूतो बुद्धिपूर्वकः ॥ ३२ ॥

टी. और वैकारिक जो सर्ग है जिससे इन्द्रियों की उत्पत्ति है वह तीसरा सर्ग कहलाता है यह तीनों प्राकृत सर्ग बुद्धिपूर्वक उत्पन्न हुवे हैं ॥ ३२ ॥

मू. मुख्यः सर्गश्चतुर्थस्तु मुख्यवैस्थावरास्मृतः । नि-
र्यकस्रोतस्तु यः प्रोक्तः स्तेर्यग्योन्यः स पञ्चमः ॥ ३३ ॥

टी. और मुख्य सर्ग चौथा है जिससे स्थावर सब पैदा हुवे हैं और जिसको निर्यक स्रोत सर्ग कह आये हैं जिससे निर्यक योनि पैदा हुवे हैं यह पाँचवाँ सर्ग कहलाता है ॥ ३३ ॥

मू. ततोऽर्द्धस्रोतसां षष्ठो देवसर्गस्तु स स्मृतः । ततो
ऽर्द्धाकस्रोतसां सर्गः सप्तमः स तु मानुषः ॥ ३४ ॥

टी. फिर ऊर्द्ध स्रोत सर्ग है जिसमें देवता लोग उत्पन्न हैं उसको छठवाँ सर्ग कहते हैं फिर अर्द्धाक स्रोत सर्ग है जिसमें मनुष्य लोग पैदा हैं यह सातवाँ सर्ग कहलाता है और इसको मनुष्यसर्ग भी कहते हैं ॥ ३४ ॥

मू. अष्टमोऽनुग्रहः सर्गस्तत्त्विकस्तामसश्च सः । पञ्चै-
ते वैकृताः सर्गाः प्राकृतास्तु त्रयः स्मृताः ॥ ३५ ॥

टी. और आठवाँ अनुग्रह सर्ग है जिसमें तामस और सात्विक दोनों हैं यही सब पाँच वैकृत और तीन प्राकृत सर्ग कहलाते हैं ॥ ३५ ॥

मू. प्राकृतो वैकृतश्चैव कौमारो नवमस्मृतः । इत्ये
ते वैसमाख्यातानवसर्गाः प्रजापते ॥ ३६ ॥

टी. यही प्राकृत और वैकृत दोन सह के आठ सर्ग हैं और नवाँ कौमा
र सर्ग है जिसमें मानस पुत्र सनकादि उत्पन्न हुवे हैं यही नौ सर्ग
प्रजापति के कहलाते हैं ॥ ३६ ॥

इति श्री मार्कण्डेय पुरा णे प्राकृत वैकृत सर्गः ।

॥ ४७ ॥

सिन्धुलिखितानां अथवा

१-कुरुष्की कहे हैं कि हे मनु वह बह्मण ब्रह्मा आकर ता जो सभ्यो न के माला हैं पहर कस्य सभ्यो न
पिदा करते हैं अस्को मफल किये - २ मार्कण्डेय जी ने कहा कि हे ब्रह्मण बह्मण लोक करता ब्रह्मा
जो दैव हैं अन्धों ने ब्रह्मण साकन और मत्तक जानदारों के साथ असंसार को पिदा किया
कता हों सन् - ३ कि प्रथम कल्प के प्रलय के अन्तिम जब ब्रह्मा सुकृष्ट अथवा तुल्य लोको
विराट और सन्धान दिक्या - ४ तब ब्रह्मा ने ब्रह्मण रोपी शरीर नागिन जो सन्धार के पिदा
वाले और नाश करिवाले हैं अन्धा दहियान किया और अन्की भवत कुर्यात और तुल्य कर के अस्त्र
कहे लगे - ५ कि हे प्रथम नाग और तन और आप ये तिनो नाम तल के हैं और तल में आप
सिन्धुलिखितानां अथवा नागिन कहे हैं - ६ ये नागिन ब्रह्मा की सुकृष्ट बह्मण नागिन
अथवा और अपने अन्धारे से ब्रह्मा की खांश को समझकर तल के लाने के दास्ये - ७ बह्मण
सुदुर्ग और शरीर दहियान किया ब्रह्मण क्लेश के शुरुवात में मत्तक और ब्रह्मण और ब्रह्मण और ब्रह्मण
दहियान किया तत्पश्चात् ब्रह्मण दहियान किया - ८ और ब्रह्मण और ब्रह्मण और ब्रह्मण और ब्रह्मण और ब्रह्मण

جنت کے مالک چھپا کاروب رکھ کر لائے از پھر بارہ روپ ہو کر پانی کے اندر جا کر - ۱۱ باتل
 سے زمین کو لا کر پانی کے اوپر قائم کیا اسوقت جن لوگ کے رہنے والے سبھ لوگ بھگوان
 کی اسنت کرنے لگے - ۱۰ جب بھگوان نے زمین کو ناو کی طرح پانے کے اوپر بھرا یا سب
 گچھوار روپ ہو کر اس زمین کو اپنی پیچھے پر رکھ لیا کہ جس سبب سے پھر وہ زمین پانی میں دو
 نہ سکی - ۱۱ تب اس پر جا پت نے زمین کو برابر کر کے پہلے پہاڑوں کو پیدا کیا جو کہ پہلے سرگ
 سترنگ نام آگ میں جل گئے تھے - ۱۲ اور بیٹ بیٹ کر تمام زمین پر پھیلے تھے اور پھر اچار کو
 ہونے پر ہوا کے بھونکے سے آگ آگ ہو کر بہ گئے تھے - ۱۳ ان سبھ کو جمع کر کے جس
 جس جگہ وہ پہلے تھے اسی اسی جگہ قائم کیا بعد اسکے زمین میں سات دیوؤں کا یعنی ہفت
 اقلہ کا حصہ لگا کر - ۱۴ بھو لوک چار لوگ وغیرہ کو پہلے کی طرح بنایا اور پہلے ملک کے شروع
 میں نیکی سرشت تھی اسکا خیال کیا - ۱۵ تو اس خیال سے تم اور موتہ اور تامل اور تاندھ
 تامل تمام ابدھ کے ساتھ پیدا ہوا - ۱۶ اور پہلے کی طرح اس مہاتما سے پانچ ابدیا اور اس کے
 دھیان کرنے سے پانچ طرح کا پرکرت سرگ پیدا ہوا - ۱۷ سب سے پہلے گھم سرگ ہی اس کے
 ظاہر اور باطن میں پرکاش نہیں ہی اور سب پہاڑوں میں گھم ہی اس سے اسکو گھم سرگ کہتے ہیں
 ۱۸ اس سادھک سرگ کو برمھانے دیکھ کر دوسرے سرگ کا خیال کیا تو ترچک سروت
 سرگ پیدا ہوا - ۱۹ بسبب ترچک پرورت ہوئی اسکو ترچک سروت سرگ کہتے ہیں اور
 اس سرگ سے چار پایہ وغیرہ ہو گئی اور اکیانی (غفہ ورو جابل) پیدا ہوئے - ۲۰ اور سب
 سیرھی راہ کے چلنے والے اور بے عقل ہیں مگر اپنے کو وہ عقلمندی سمجھتے ہیں اور یہ سب انہکاری
 و ابھکاری یعنی مغرور ہیں - ۲۱ ان سبھ کو فقط کھانے پینے کا پرکاش ہے اور ایک پر ایک
 غالب و زبردست ہی اس سرگ کو بھی برمھانے اسادھک سمجھا جو دھیان کیا تو تیسرا
 سرگ اور دم سروت نام پیدا ہوا - ۲۲ اور اس اور دم سروت سرگ میں سب لوگ سترگی
 یعنی دیوتا پیدا ہوئے اور ان لوگوں کو آسین سکھ اور مہبت بہت ہی اور ظاہر اور باطن میں
 اکیان سے مہبت ہیں - ۲۳ اور ان لوگوں کے ظاہر اور باطن میں ہمیشہ پرکاش ہے
 ہی اور تشٹ آتما ہیں اور جو کہ یہ لوگ اور دم سروت سے پیدا ہیں اور تشٹ آتما ہیں ایسے یہ دیو سرگ کہلاتے
 ۲۴ جب یہ سرگ بھی پیدا ہو چکا تو برمھا کو اس سے مہبت زیادہ ہوئی بعد اسکے برمھا جی نے
 سبھ کو نیا اور تھوڑا تم سرگ کو دھیان کیا - ۲۵ تو ست باومی اشکیت برمھا کے دھیان

کرتے ہی ارباک سروت ساؤھک سترگ پیدا ہوا ۲۶ جو کہ اور سترگوں سے پیچھے یہ پیدا ہوا
 اسلئے یہ ارباک سروت سترگ کہلاتا ہے اس سے آدمی پیدا ہوئے جو کہ توگوں سمیت ہوئے مگر
 رجگوں زیادہ ہے۔ ۲۷ اسلئے ان لوگوں کو بہ نسبت اورون کے تکلیف زیادہ ہے اور غش
 کرم کے بار بار جنم پاتے ہیں ان لوگوں کو بہ نسبت اورون کے عقل بھی زیادہ ہے طائر و
 باطن میں بھی پرکاش ہے اور اس سترگ کو شکھ ساؤھک سترگ بھی کہتے ہیں۔ ۲۸ اور
 پانچواں انگرہ سترگ ہے اس میں چار طرح کے لوگ پیدا ہیں ایک بھیرجے دوسری ساؤھک تیسری شانت چو
 نشٹ۔ ۲۹ اور یہ لوگ بھی ضرورت اور پرورت کے ارتھ کو جانتے ہیں اور حسین بھوت وغیرہ
 کی پیدائش ہے وہ چھٹھوان سترگ کہلاتا ہے۔ ۳۰ اور یہ سب ہر جگہ گھومتے اور چلے پھرتے
 ہیں اور ہر طرح سے اپنے اپنے بھاگ میں رہا کرتے ہیں اور ہر پرک اور بے مروت ہوتے ہیں
 اس سے یہ بھوتادک سترگ کہلاتا ہے۔ ۳۱ اور مہمان جو ہر مہمان انکی پیدائش پہلے سترگ میں
 ہے اور تنہا تراکی پیدائش دوسرے سترگ میں ہے اور اسکو بھوت سترگ کہتے ہیں۔
 ۳۲ اور بیکارک جو سترگ ہے حسین اندریوکی پیدائش ہے وہ تیسرا سترگ ہے یہ تینوں براکرت
 سترگ بدھ پوربک پیدا ہوئے ہیں۔ ۳۳ اور چھٹھوان سترگ جو تھا ہے حسین استھاور (یعنی
 جانداران ساکن) پیدا ہوئے ہیں اور تریجک سروت سترگ کا بیان پہلے ہو چکا ہے حسین
 تریجک جو (یعنی پرند) پیدا ہوئے ہیں اور وہ پانچواں سترگ کہلاتا ہے۔ ۳۴ اور حسین
 دیوتا لوگ پیدا ہوئے ہیں وہ چھٹھوان سترگ کہلاتا ہے اور ارباک سروت سترگ حسین آدمی
 پیدا ہوئے ہیں وہ ساتواں سترگ کہلاتا ہے اور اسکو سترگ بھی کہتے ہیں۔ ۳۵ اور
 اٹھواں انگرہ سترگ ہے حسین تانس اور ساتواں دونوں ہیں یہ سب پانچ بیکرت اور تین
 براکرت کہلاتے ہیں۔ ۳۶ نواں کمار سترگ ہے حسین مانس پتر سنکا دک پیدا ہوئے
 ہیں یہی نو سترگ پر جاپت کے کہلاتے ہیں۔ فقط

मू. क्रीष्टुकिरुवाच ॥ समासात कथिता सृष्टिः
सम्यग्भगवता मम । देवार्दीनां भवं ब्रह्म
न विस्तारानुब्रवीहि मे ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

टी. क्रीष्टुकि बोले कि हे भगवन् सृष्टि को तो आपने हरतरह से मु
झ से कहा अब देवतादिकों की उत्पत्ति विस्तार पूर्वक मुझ से कहिये ॥ १ ॥

मू. मार्कण्डेय उवाच ॥ कुशला कुशलैर्ब्रह्म
न भाविताः पूर्व कर्मभिः । ख्याताः तथा
ह्यनिर्मुक्ताः प्रलये ह्यपसंहताः ॥ २ ॥ २ ॥

टी. मार्कण्डेयजी बोले कि हे ब्रह्मन् जिसकी करनी पहिले की अच्छी
है उसका फिर भी अच्छा ही होता है पुण्यवानलोग प्रलय में नाश हो
जाते हैं फिर पुण्यवान् ही होकर उत्पन्न होते हैं ॥ २ ॥

मू. देवाद्याः स्थावरान्ताश्च प्रजाव्रह्मश्चतुर्विधाः ।
ब्रह्मणः कुर्वतः सृष्टिं जगिरे मानसास्तदा ॥ ३ ॥

टी. ब्रह्मा जब सृष्टि उत्पन्न करने लगे तो देवता से स्थावर पर्यन्त चार
तरह की प्रजा उत्पन्न किया अपने मानस करके ॥ ३ ॥

मू. ततो देवासुरपितृन् मानुषाश्च चतुष्टयं । सिंसुर
म्भास्ये तानि स्वमात्मानमयूयुजत् ॥ ४ ॥

टी. बाद इसके देवता और असुर और पितर और मनुष्य को पैदा कर
ने की इच्छा की तो जल और अपनी आत्मा को एकत्र किया ॥ ४ ॥

मू. युक्तात्मनस्तमोमात्रा उद्विक्ताभूत् प्रजायतेः ।
सिंसुर्जघनात् पूर्वमसुराजजिरेततः ॥ ५ ॥

टी. जो कि ब्रह्माने पहिले तमो मात्रा संयुक्त शरीर धारण किया इस स
बब से उनकी जांघ से असुर लोग पैदा हुवे ॥ ५ ॥

मू. उत्सर्जत तस्तान् तमोमात्रात्मिकां तनुं । सा
पविद्या तनुस्तैर्न सद्यो रात्रिरजायत ॥ ६ ॥

श्री. फिर जब उस तमोमात्र शरीर को छोड़ दिया तो वही शरीर
त्रि होगया ॥ ६ ॥

मू. अन्यांतनुमुपादायसि सृष्टुः प्रीतिमापसः । स
त्वोदेकास्ततो देवामुखतस्तस्य जज्ञिरे ॥ ७ ॥

श्री. फिर जब दूसरा शरीर धारण करके प्रीति संयुक्त सृष्टि रचने की इच्छा की तो
उनके मुख से सत्तोगुण के साथ देवता लोग उत्पन्न हुवे ॥ ७ ॥

मू. उत्ससर्जचभूतेशस्तनुंतामप्यसौविभुः । साचा
पविद्वादिवसंसत्त्वप्रायमजायत ॥ ८ ॥ ८ ॥

श्री. जब उस शरीर को भी ब्रह्मा ने छोड़ दिया तो वही सत्तोगुण सं-
युक्त शरीर दिन होगया ॥ ८ ॥

मू. सत्त्वमात्रात्मिकामेव ततोऽन्यांजगृहेतनुं । पि-
तृवन्मन्यमानस्य पितरस्तस्य जज्ञिरे ॥ ९ ॥

श्री. तब फिर सत्तोगुण युक्त दूसरा शरीर धारण किया और उसमें पिता भाव
किया इस वास्ते उस शरीर से पितृ लोग उत्पन्न हुवे ॥ ९ ॥

मू. सृष्ट्वा पितृनुत्ससर्जतनुंतामपि सप्रभुः । साचीन
सृष्टाभवत्सन्ध्यादिननक्तान्तरस्थिता ॥ १० ॥

श्री. पितरों के पैदा होने पर फिर ब्रह्मा ने उस शरीर को छोड़ दिया तो वही
शरीर रात दिन के बीच में सन्ध्या काल होगया ॥ १० ॥

मू. रजोमात्रात्मिकामन्यांतनुंभेजेऽथ सप्रभुः । ततो
मनुष्याः सम्भूतारजोमात्रा समुद्भवाः ॥ ११ ॥

श्री. फिर रजोगुण संयुक्त दूसरा शरीर धारण किया तो उससे रजोगुण
के साथ मनुष्य लोग उत्पन्न हुवे ॥ ११ ॥

मू. सृष्ट्वा मनुष्यानसविभुरुत्ससर्जतनुंततः । ज्यो-
त्स्ना समभवत्सा च नक्तान्तेऽहर्मुखे च या ॥ १२ ॥

श्री. जब ब्रह्मा ने उस शरीर को भी छोड़ दिया तो वह शरीर दिन के अन्तिम

में और राति के अन्त में ज्योत्स्ना (प्रातःकाल) पैदा हुआ ॥१२॥

मू. इत्येतास्तनवस्तस्य देवदेवस्य धीमतः । रत्या-
तारा अहनी चैव सन्ध्या ज्योत्स्ना च वै द्विज ॥ १३ ॥

टी. इसवास्ते हे ब्रह्मन् सब देवों के देव जो ब्रह्मा हैं उनका यह दिन और रात और सन्ध्या और ज्योत्स्ना शरीर कहलाता है ॥१३॥

मू. ज्योत्स्ना सन्ध्या तथैवाहः सत्त्वमाचात्मकं त्रयं ।
तमोमात्रात्मिका रात्रिः सा वै तस्मात् त्रियामिका ॥ १४ ॥

टी. और ज्योत्स्ना और सन्ध्या और दिन यह तीनों सत्त्वगुण कहलाते हैं और रात तमोगुण है इसी सब से वह त्रियामी कहलाती है ॥ १४ ॥

मू. तस्माद्देवादि वाराचावसुरास्तु बलान्विताः । ज्यो-
त्स्ना गमे च मनुजाः सन्ध्यायां पितरस्तथा ॥ १५ ॥

टी. इसवास्ते देवता दिन में बलवान् रहते हैं और असुर रात में और मनुष्य ज्योत्स्ना में और पितर सन्ध्याकाल में ॥ १५ ॥

मू. भवन्ति बलिनोऽधृष्या विपक्षाणां न संशयः । तद्दि-
पर्ययमासाद्य प्रयान्ति च विपर्ययं ॥ १६ ॥

टी. अपने अपने समय में कोई शत्रु से पराजय नहीं हो सकते हैं इसमें कुछ सन्देह नहीं है जब इसमें विपरीत होता है तब विपरीत फल होता है ॥ १६ ॥

मू. ज्योत्स्ना रात्र्यहनी सन्ध्या च त्वार्येतानि वै प्रभोः । ब्र-
ह्माणस्तु शरीराणि त्रिगुणोपश्रितानि तु ॥ १७ ॥

टी. ज्योत्स्ना और रात और दिन और सन्ध्या ये चारों तीनों गुणों के संयुक्त ब्रह्मा का शरीर है ॥ १७ ॥

मू. चत्वार्येतान्यथोत्पाद्यतनुमन्यां प्रजापतिः । र-
जस्तमो मयी रात्रौ जग्रहे क्षुतविडम्बितः ॥ १८ ॥

श्री- इन चारों को पैरा करके फिर ब्रह्मा ने रात में रजोगुण और तमोगुण और भूख और प्यास संयुक्त दूसरा शरीर धारण किया ॥ १८ ॥

मू- तदन्यकारेक्षु तक्षामानसजङ्गवानजः । विरू-
पानश्मश्रुलानत्तुमारब्धास्ते च तांतनुं ॥ १९ ॥

श्री- और उस शरीर से उस जँधेरी रात में ऐसी प्रजा को उत्पन्न किया जो कुदूप और भूख से व्याकुल और बड़ी २ दाढ़ी मोछ भयावनी सूरत थी तब वह तमोगुणी प्रजा ब्रह्मा को खाने पर मुसौद हुई ॥ १९ ॥

मू- रक्षामदितितेभ्योऽन्ये य ऊचुस्ते तु राक्षसाः । खादा-
मदितिये चोचुस्ते य क्षायक्षणात् दिज ॥ २० ॥

श्री- और उन्हीं प्रजाओं में से जो लोग मना करते थे कि ब्रह्मा की मत खाव वह राक्षस गण कहलाये और जो उनमें से कहते थे कि इन को खाही जाव वह यक्ष गण कहलाये ॥ २० ॥

मू- तां दृष्ट्वा ह्यप्रियेणस्य केशाः शीर्यन्त वेधसः ।
समारोहणहीनाश्च शिरसो ब्रह्मणस्तुते ॥ २१ ॥

श्री- जब ब्रह्मा ने उन लोगों को शत्रु भाव करके देखा तो देखते ही ब्रह्मा के शिर के बाल गिर पड़े और फिर ब्रह्मा के शिर पर बाल नहीं जमे ॥ २१ ॥

मू- सर्पणात्तेऽभवन् सर्पाहीनत्वादहयः स्मृताः । स-
र्पान् दृष्ट्वा ततः क्रोधात् क्रोधात्मानौ विनिर्म्ममे २२

श्री- और वही गिरे हुये बाल ज़मीन पर सिकुड़ कर चलने लगे इस सबब से वह साँप कहलाये और वह नीच योनि हैं इसलिये यह भी कहलाते हैं उसको देख कर ब्रह्मा की क्रोध हुआ तब उसी क्रोध से कितने क्रोधी पैदा होगये ॥ २२ ॥

मू- वर्णैः न कपिलेनोग्रास्ते भूताः पिशिताशनाः । ध्या-
यतो गांततस्तस्य गन्धर्व्वा जज्ञिरे सुताः ॥ २३ ॥

श्री. उन क्रोधी लोगों का बर्ण कपिल हुआ और वह सब उग्रभूत कहलाते हैं और वे लोग विशेष मांसाहारी हैं बाद उसके ब्रह्मा ने वाणी का ध्यान किया उस समय गन्धर्वलोग पैदा हुवे ॥ २३ ॥

मू. जज्ञिरेपिवतोवाचंगन्धर्वास्तेनतेस्मृताः । अष्टाष्वेतासुसृष्टासुदेवयोनिषुसप्रभुः ॥ २४ ॥

श्री. जोकि ब्रह्मा उस समय वचन पान करते थे इस सबव से वे गन्धर्वलोग कहलाते हैं इस आठ देव योनि को पैदा करने के बाद ब्रह्माजी ने ॥ २४ ॥

मू. ततःस्वदेहतोऽन्यानिवयांसिपशवोऽसृजत् । मुखतोऽयाःससर्ज्जायवक्षसश्चावयोऽसृजत् ॥ २५ ॥

श्री. बायस इत्यादि पक्षी और पशु इत्यादि को अपने शरीर से पैदा किया अर्थात् मुख से बकरा बकरी और छाती से भेड़ा भेड़ी को पैदा किया ॥ २५ ॥

मू. गावश्चैवोदराद्ब्रह्मापार्श्वोभ्याञ्चविनिर्ममे । पद्भ्याञ्चाश्वान्समातङ्गान्नासमान्शयकान्मृगान् २६

श्री. और पेट और पाँजर से गाय और दोनों पाँव से घोड़ा हाथी और गदहा और खरहा और हरिन ॥ २६ ॥

मू. उष्ट्रानश्चतरांश्चैवनानास्त्पांश्चजातयः । औषधयःफलमूलिन्योरोमभ्यस्तस्यजज्ञिरे ॥ २७ ॥

श्री. और ऊँट और अश्वतर वगैरा को पैदा किया और नाना रंग के फल मूल बाली औषधियों को ब्रह्मा ने अपने रोम से पैदा किया ॥ २७ ॥

मू. एवंपश्वौषधोऽसृष्टा यजयच्चाधरोविभुः । तस्मादादौतुकल्पस्यत्रेतायुगमुखेतदा ॥ २८ ॥

श्री. इस तरह पशु और औषधियों को पैदा करने के बाद ब्रह्मा ने यज्ञ किया इसी सबव से कल्प के आदि त्रेतायुग में यज्ञ को

प्रधान किया है ॥ २८ ॥

मू. गौरजः पुरुषो मेघो अश्वश्च तर्गद्विमाः । एता
न ग्राम्यान् पशूनाहाराणाञ्च निबोध मे ॥ २९ ॥

टी. और गाय और बकरा और पुरुष और भेड़ा और अश्व और
अश्वतर और गदहा इत्यादि यह सब ग्रामपशु कहलाते हैं और
जंगली जानवरों का बयान सुनौ ॥ २९ ॥

मू. श्वापदं दिषुरंहस्तीवानराः पक्षिपञ्चमाः । औ-
दकाः पशवः षष्ठा सप्तमास्तु सरीसृपाः ॥ ३० ॥

टी. श्वापद यानी व्याघ्र और सिंह और दिषुर यानी हाथी घोड़ा इत्या-
दि और बन्दर पाँचवाँ पक्षी छठवाँ जलचर सातवाँ सर्प इत्यादि हैं ॥ ३० ॥

मू. गायत्रीञ्च त्र्यम्बकञ्चैव त्रिवृतसामरथन्तरं । अग्नि-
ष्टोमञ्च यज्ञानां निर्म्ममे प्रथमान्मुरवात् ॥ ३१ ॥

टी. और गायत्री और ऋग्वेद और त्रिवृत और सामरथन्तर और यज्ञो-
में अग्निष्टोम यह सब ब्रह्मा के प्रथम मुख से पैदा हैं ॥ ३१ ॥

मू. यजुषि त्रैष्टुभं छन्दः स्तोमं पञ्चदशन्तथा । वृहत्
साम तथोक्तञ्च दक्षिणादसृजन्मुरवात् ॥ ३२ ॥

टी. और यजुर्वेद और त्रिष्टुभं छन्द और स्तोम और पंचदश वृहत्
साम ये सब ब्रह्मा के दक्षिण मुख से पैदा हैं ॥ ३२ ॥

मू. सामानि जगती छन्दः स्तोमं पञ्चदशन्तथा । वै-
रसमतिरात्रञ्च निर्म्ममे पश्चिमान्मुरवात् ॥ ३३ ॥

टी. और साम वेद और जगती छन्द उसी तरह पन्द्रह स्तोम और वै-
रस और अतिरात्र ये सब पश्चिम मुख से पैदा हैं ॥ ३३ ॥

मू. एकविंश मध्वर्जाणामापोर्यमाणा मेव च । अ-
नुष्टुभं सवैराजमुत्तरादसृजन्मुरवात् ॥ ३४ ॥

टी. और इक्कीस मध्वर्जा और अपोर्यमाणा और अनुष्टुप छन्द और

वैराज ये सब उत्तर मुख से पैदा हैं ॥ ३४ ॥

मू. विद्युतोऽशनिमेघांश्चरोहितेन्द्रधनुषि च । वयां-
सिचससर्ज्जोदौकल्यस्य भगवान् विभुः ॥ ३५ ॥

टी. और विद्युत् और बज्र और मेघ और इन्द्र धनुष और पक्षी इन्हों
को ब्रह्मा ने कल्प के आदि में पैदा किया ॥ ३५ ॥

मू. उच्चावचानिभूतानि गन्धर्वैस्तस्य जज्ञिरे । सृ-
ष्ट्वा चतुष्टयं पूर्वदेवासुरपितृन् प्रजाः ॥ ३६ ॥

टी. और उच्चावच जो भूत हैं वह सब ब्रह्मा के शरीर ने उत्पन्न
हैं और देवता और असुर और पितर और मनुष्य इन चारों प्र-
जाओं को पहिले उत्पन्न किया ॥ ३६ ॥

मू. ततोऽसृजत् सभूतानि स्यावराणि चराणि च ।
यक्षानपिशाचान् गन्धर्वान् स्तथैवाप्सरासाङ्गणान् ३७

टी. तब स्यावर और जङ्गम प्राणियों को पैदा किया उसी तरह यक्ष
और पिशाच और गन्धर्व और अप्सरागण को उत्पन्न किया ॥ ३७ ॥

मू. नरकिन्नरक्षांसिवयः पशुमृगोरगान् । अय्य-
यज्वव्ययञ्चैव यदिदं स्थाणुजङ्गमं ॥ ३८ ॥

टी. और नर और किन्नर और रक्षोगण और पशु और पक्षी और
मृग और उरग और जो स्यावर और जङ्गम हैं और अय्यय और
व्यय वगैरा को पैदा किया ॥ ३८ ॥

मू. तेषां येयानि कर्माणि प्राकृष्टेषु प्रतिपेदिरेता
न्येव प्रतिपद्यन्ते सृज्यमानाः पुनः पुनः ॥ ३९ ॥

टी. और इन लोगों में जो कर्म जिसका पहिले था वही कर्म फिर
सृष्टि होने पर प्राप्त हुआ ॥ ३९ ॥

मू. हिंसा हिंसे मृदु क्रूर धर्मा धर्मानृता नृते । न
ज्ञाविता प्रपद्यन्तस्मात्तत्तस्य रोचते ॥ ४० ॥

टी. और हिंसा और अहिंसा और कोमल और क्रूर और धर्म और अधर्म और सत्य और असत्य में इन सभी की प्रीति जैसी पहिले थी वैसी ही फिर हुई ॥ ४० ॥

मू. इन्द्रियार्थेषु भूतेषु शरीरेषु च सप्रभुः । नाना
त्वं विनियोगञ्च धातैव व्यदधात् स्वयं ॥ ४१ ॥

टी. और इन्द्रियों के कार्य में और मूर्तों में और शरीरों में उस प्रभु ने बहुत
हुत तरह का संयोग कायम किया ॥ ४१ ॥

मू. नामरूपञ्च भूतानां कृत्यानाञ्च प्रपञ्चनं । देव
शब्देभ्य एवा दौ देवादीनाञ्च कारसः ॥ ४२ ॥

टी. और सब भूतों का नाम और रूप और कर्म का प्रपञ्च और
वता वगैरा का शब्द भी वैसा ही कायम किया ॥ ४२ ॥

मू. ऋषीणां नामधेयानि याश्च देवेषु सृष्टयः । सर्व-
व्यन्ते प्रसूतानामन्येषाञ्च ददाति सः ॥ ४३ ॥

टी. और ऋषियों का जो नाम था और देवों में और और सब भूतों में जिसका
पहिले सृष्टि थी उसी तरह फिर कायम किया ॥ ४३ ॥

मू. यथार्तारुचुलिङ्गनिनानारूपाणि पर्यये । दृश्य-
न्ते तानि तान्येव तथा भावायुगादिषु ॥ ४४ ॥

टी. जिस तरह ऋतुकाल में स्त्री जैसा रूप देखती है वैसा ही बालक जो
के पैदा होता है उसी तरह युगादि में जिसका जो भाव था ॥ ४४ ॥

मू. एवं विधाः सृष्टयस्तु ब्रह्माणोऽव्यक्तजन्मनः । स-
र्वव्यन्ते प्रदुष्टस्य कल्पे कल्पे भवन्ति वै ॥ ४५ ॥

टी. वैसा ही रात के गुजरने पर ब्रह्मा कल्पों में उत्पन्न करते हैं ॥ ४५ ॥

इति श्री मार्कण्डेय पुराणे
सृष्टिप्रकरणे ॥ ४५ ॥ ॐ ॥

اڑمالیسوان اویاے

۱۔ کریشکی نے کہا کہ اسے جگن آپ نے مخلوقات کی پیدائش کا حال تو ہر طرح سے بیان کیا اب دیوتوں وغیرہ کی پیدائش کا بھی حال مفصل بیان کیجیے۔ ۲۔ مارکڈے جی کہتے ہیں کہ سہ براہمن جس کیسکی کرنی پہلے کی اچھی ہوتی ہے اسکا پھر بھی اچھا ہی ہوتا ہے پتیا تاکوگ پرلے توبہ پر جانش ہو جاتے ہیں وہ پھر پتیا تاکوگ پیدا ہوتے ہیں۔ ۳۔ جب براہمن نے خلقت پیدا کرنی شروع کی تو دیوتا سے استھا اور (جانداران ساکن مثل درخت دہاڑ وغیرہ) تک چار طرح کی پرچا کو پیدا کیا۔ ۴۔ ہم یعنی راجس اور دیوتا اور پتر اور منکھ کے پیدا کرنگی جب خواہش کی تو پانی اور اپنی آتما کو مکیا کیا۔ ۵۔ پہلے تو ماترا سنجکت شریر برھمانے دھارن کیا تو انکی جانکھ سے راجس لوگ پیدا ہوئے۔ ۶۔ تب تو ماترا شریر کو چھوڑ دیا اور وہی شریر رات ہو گیا۔ ۷۔ اور جب دوسرا شریر دھارن کر کے مجت کے ساتھ سرشت پیدا کرنگی اچھا کی تو انکے منکھ سے شوگن کے ساتھ دیوتا لوگ پیدا ہوئے۔ ۸۔ جب اس شریر کو بھی چھوڑ دیا تو وہی شریر شوگن بہت دن ہو گیا۔ ۹۔ پھر جب شوگن بہت شریر کو دھارن کیا تو اس شریر کو پتیا سمجھا اس واسطے اس شریر سے پتر لوگ پیدا ہوئے۔ ۱۰۔ بعد اسکے برھمانے اس شریر کو بھی چھوڑ دیا تو رات اور دن کے درمیان میں وہی شریر سندھیا ہو گیا۔ ۱۱۔ اور راجگن بہت جو شریر دھارن کیا تو اس سے راجگن کے ساتھ سب آدمی پیدا ہوئے۔ ۱۲۔ جب اس شریر کو بھی چھوڑ دیا تو وہی شریر یعنی جنم رات کا اخیر وقت اور صبح سے پہلے جو تینا یعنی صبح صادق ہو گیا۔ ۱۳۔ ایسے اسے براہمن یہ رات اور دن اور سندھیا یعنی شام اور جو تینا یعنی صبح دیوتوں کے جو دیوتا ہیں برتھا انکا شریر کھلا تا ہی۔ ۱۴۔ اور جو تینا اور سندھیا اور دن یعنی تینوں سترگن کھلا تے ہیں اور رات تموگن کھلائی ہے ایسے ترجامی کھلاتے ہیں۔ ۱۵۔ اور اسی سبب سے دیوتا لوگ دن کو بلوان رہتے ہیں اور راجس لوگ رات کو اور آدمی جو تینا یعنی صبح کو اور پتر لوگ سندھیا یعنی شام کے وقت۔ ۱۶۔ اور اپنے اپنے وقت میں کوئی کسی دشمن سے زیر نہیں ہوا اور جو اپنے وقت کے خلاف کرتے ہیں وہ اسکا نتیجہ برخلاف پاتے ہیں اس میں بھی شک نہیں۔ ۱۷۔ اور جو تینا اور رات اور دن اور سندھیا یہ چارو تینوں گنوں کے ساتھ برہما

کے شریہ میں - ۱۸ اور ان چاروں کے پیدا کرنے کے بعد برہمانے رات کے وقت رہو گئی
 اور تموگن اور چوکھ اور پیاس کے ساتھ شریہ دھارن کیا - ۱۹ تب اُس شریہ سے اُس اندھیری
 رات میں ایسی پر جا کو پیدا کیا جو شکل اور چوکھ سے بیتاب اور پُری پُری دارھی مونچھ اور
 خوفناک صورت تھی تب وہ تو گئی پر جا برٹھا کو کھانیکو مستد ہوئی - ۲۰ اور اُس پر جان
 سے جو لوگ منع کرتے تھے کہ انکو مت کھاؤ وہ رات چھس کھلا کے اور جو مستد و آمادہ تھے کہ سہ
 برٹھا کو کھاسی جائیگے وہ چچھ کھلائے - ۲۱ جب برٹھانے اُن سبھو کو اپنا دشمن پایا تو
 انکی طرف غصہ سے دیکھا اُس وقت برٹھا کے سر کا بال گر پڑا اور پھر سر میں جا ۲۲ وہی بال
 جو زمین پر گرا سانپ ہو گیا اور ٹیڑھا ہو کر چلنے لگا اس واسطے سانپ کھلایا اور یہ سچ چون
 سی اس سے اسکو آہ بھی کہتے ہیں اُس سانپ کو دیکھ کر برٹھانے بہت کُرو دھ کیا اور اُسی
 کُرو دھ کے سب سے کتنے کُرو دھ پیدا ہوئے - ۲۳ اور وہ کُرو دھ ہی سب کیل زنگ کے
 ہوئے اور اگر جھوٹ کھلائے یہ سب نائسن کے کھانیاو لے ہوئے بعد اسکے برٹھا جی نے
 سر شوقی کا دھیان کیا تب گندھرب لوگ پیدا ہوئے - ۲۴ جو کہ اُس وقت برٹھا بول
 رہے تھے اور یہ سب اُس وقت پیدا ہوئے اسیلئے گندھرب کھلائے اور ان اکھو دیو جون
 پیدا کرنے کے بعد برٹھانے - ۲۵ پرند اور چرند اور درند جانوروں کو اپنے جسم سے پیدا
 کیا یعنی مٹھہ سے بکرا بکری اور سینہ سے بھینڑا بھینڑی - ۲۶ اور پیٹ اور پانچھر سے گٹھو اور
 دونوں پانوں سے مانتھی گھوڑا گدھا خرگوش اور ہرن - ۲۷ اور اونٹ اور اشتوترا اور
 طرح طرح کے جانور و نکو پیدا کیا اور پھل اور مٹول جو کھانے پینے اور دواؤں میں کام آتے
 ہیں انکو اپنے ہرن کے رُو میں سے پیدا کیا - ۲۸ ان سبھو کو پیدا کرنے کے بعد برٹھانے
 جاکت کیا اسی وجہ سے کلپ کے پہلے تریٹا تک میں جاکت کو مقدم رکھا - ۲۹ گٹھو بکرا
 آدمی بھینڑی اشتوترا گھوڑا گدھا یہ سب گھر بار و جانور کھلاتے ہیں اب جنگلی جانوروں کا
 بیان سنو - ۳۰ کہ شیر اور سنکھ اور ہرن اور مانتھی اور بندر اور پرند اور پانی کے جانور
 اور سانپ وغیرہ جنگلی جانور ہیں - ۳۱ اور کایتری اور رگ ریبہ اور ترے
 برٹ اور جلیون میں اگر گشتوم جاکت یہ سب برٹھا کے پہلے گٹھ سے پیدا ہیں - ۳۲ اور
 جگر بند اور تریشٹھہ چنڈ اور استوم اور پندہ پر بہت سام یہ سب برٹھا کے دھن گھو سے
 پیدا ہیں - ۳۳ اور سام بند اور جلیتی چنڈ اور پندہ استوم اور پندہ پ اور آت راتر یہ سب

برمھا کے چھمکے سے پیدا ہیں - ۳۴ اور اکیس آتھرن اور ارجاما اور ایشیہ چھند اور
 نیراج یہ سب برمھا کے اتر منہ سے پیدا ہیں - ۳۵ اور بجلی اور بجر اور میگھ اور اندر دھ
 اور چھپی ان سبھو کو برمھا نے کلپ کے شروع میں پیدا کیا - ۳۶ اور آقا وچ جو بھوت ہیں
 وہ برمھا کے شریت سے پیدا ہیں اور دیوتا اور امر اور میترا اور منکے ان چاروں کو پہلے پیدا کیا -
 ۳۷ تب ساکن و متحرک جانداروں کو پیدا کیا اسی طرح چھہ اور پشاج اور گندھرب اور اسی
 لوگوں کو پیدا کیا - ۳۸ اور نر اور کتر اور رکشو گن اور چرند اور پرند وغیرہ جو اسی
 اور جنگم ہیں اور بیے اور اسیے کو پیدا کیا - ۳۹ اور ان سبھوں کا جو جو کرم پہلی پیدائش
 میں تھا وہی کرم پھر پیدا ہونے پر انکو حاصل ہوا - ۴۰ جان مارنا اور جان بچانا اور مملکت
 اور سختی اور دھرم اور اادھرم اور سچ اور جھوٹ سے محبت جس طرح پہلے تھی ویسی ہی پھر ہوئی
 ۴۱ اور اندریوں کے ارتھ میں اور پرائیون میں اور شریروں میں اس پر بھونے بہت بہت
 طرح کا بنیوگ قائم کیا - ۴۲ اور مخلوقات کا نام اور روپ اور کرم پر پنج اور دیوتاؤں
 کا بول چال طریقہ سب علیحدہ علیحدہ مقرر کیا - ۴۳ اور رکھیوں کا جو نام تھا اور دیوتوں اور
 اوروں کی جس طرح پیدائش تھی رات گزر جانے پر برمھا نے پھر اسی طرح قائم کیا -
 ۴۴ جس طرح عورت ایام حیض میں جس شکل کا لڑکا دیکھتی تھی اسی شکل کا لڑکا پیدا کرتی تھی
 اسی طرح جنگ کے شروع میں جس کا جو بھاؤ تھا - ۴۵ ویسا ہی رات کے گزرنے پر برمھا جی
 کلپ میں پیدا کرتے ہیں - فقط

मू. क्रीष्टुकिरुवाच ॥ अर्वाकश्चोतस्तु कथि-
 तो भवतायस्तु मानुषः । ब्रह्मन् विस्तार-
 तो ब्रह्मि ब्रह्मा समसृज यथा ॥ १ ॥ १ ॥

टी. क्रीष्टुकि ने कहा कि हे ब्रह्मन् आपने अर्वाकस्म को
 वर्णन किया जिसमें मनुष्य की उत्पत्ति ब्रह्मा ने किया है अब
 उसको विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिये ॥ १ ॥

मू. यथा च वर्णानसृज यद्गुणांश्च महामते । य-
 चयेषां स्मृतं कर्म विप्रादीनां वदस्व तत् ॥ २ ॥

टी. और हे महामति ब्राह्मण इत्यादि चारों वर्णों का जो कर्म और गुण है उसको भी वर्णन कीजिये ॥ २ ॥

मू. मार्कण्डेय उवाच ॥ ब्रह्माणः सृजतःपूर्वं
सत्याभिधायिनस्तथा । मिथुनानांसह-
स्रन्तुमुखात्सोऽथासृजन्मुने ॥ ३ ॥ ३ ॥

टी. मार्कण्डेयजी कहते हैं कि हे मुने ब्रह्मा सत्य रूप ने सृष्टि रचने के समय पहिले अपने मुख से हजारों स्त्री और पुरुषों को पैदा किया ॥ ३ ॥

मू. जातास्तेह्युपपद्यन्तेसत्वोदित्ताःस्वतेजसः।
सहस्रमन्यदसस्तोमिथुनानांससर्जह ॥ ४ ॥

टी. और वे सब सत्वगुण संयुक्त पैदा हुवे और अपने तेज से दिन दिन बढ़ने लगे बाद इसके हजारों स्त्री और पुरुष को फिर अपनी छाती से पैदा किया ॥ ४ ॥

मू. तेसर्वैरजसोदित्ताःशुष्मिन्श्चाप्यमर्षिणः। स
सर्जान्यतसहस्रन्तुदुःस्थानंमरुतःपुनः ॥ ५ ॥

टी. और वे सब रजोगुण संयुक्त बड़े भोगी और क्रोधी हुवे बाद इसके हजारों मरुतगण को अपने दुःस्थानों से पैदा किया ॥ ५ ॥

मू. रजस्तमोभ्यामुदित्ताद्देहाशीलास्तुतेस्पृताः।
पट्भ्यांसहस्रमन्यच्चमिथुनानांससर्जह ॥ ६ ॥

टी. वह सब तमोगुण और तमोगुण संयुक्त इच्छा और शीलवान् हुवे बाद इसके हजारों मिथुन अर्थात् स्त्री पुरुषों को अपने दोनों पोंव से पैदा किया ॥ ६ ॥

मू. उदित्तास्तमसासर्वैर्निश्रीकाहृत्यचेतसः। त
तःसंहर्षमानास्तेहन्दोत्यन्नास्तुप्राणिनः ॥ ७ ॥

टी. वह सब महा तमोगुणी और लक्ष्मी आदि से रहित और अल्प बुद्धी और प्रसन्नचित्त हुवे और वह स्त्री पुरुष दोनों एकही साथ पैदा हुवे ॥ ७ ॥

मू. अथोन्यरुद्धयाविष्टामैथुनायोपचक्रमुः।

ततः प्रभृतिकल्पेऽस्मिन्मिथुनानां हि सम्भवः ॥ ८ ॥

टी. और उन सभी को मैथुन कर्म में बहुत चाह हुई और उसी दिन से इस कल्प में मैथुन जारी हुआ और मैथुन ही से उत्पन्न होते थे ॥ ८ ॥

मू. मासि मास्यार्तवयन्तु न तदा सीचु योषितां । तस्या
तदानसुषुवुः सेवितैरपि मैथुनेः ॥ ९ ॥ ९ ॥

टी. और उन दिनों में स्त्रियों को मास करतु नहीं होता था इस सब व से पुरुष के प्रसंग से भी स्त्रियों के लड़का पैदा न होता था ॥ ९ ॥

मू. आयुषोऽन्ते प्रसूयन्ते मिथुनान्येव ताः सकृत् ।
ततः प्रभृतिकल्पेऽस्मिन्मिथुनानां हि सम्भवः ॥ १० ॥

टी. जब उन लोगों की उमर ख़रीर होती थी तब एक ही बार प्रजा पैदा करने थे तब से बराबर इस कल्प में मैथुन से पैदा होते गये ॥ १० ॥

मू. ध्यानेन मनसा तासां प्रजानां जायते सकृत् । श-
ब्दादिविषयाः शुद्धाः प्रत्येकं पञ्चलक्षणा ॥ ११ ॥

टी. केवल मन और ध्यान से एक ही बार प्रजा उत्पन्न होती थी शब्द इत्यादि पाँचों विषय उन सभी के अलग अलग रहते थे ॥ ११ ॥

मू. इत्येषामानुषी सृष्टिर्वा पूर्ववै प्रजापतेः । तस्या
नवायसम्भूतायै रिदं पूजितं जगत् ॥ १२ ॥

टी. प्रजापति यानी ब्रह्मा की पैदा की हुई इसी मानुषी सृष्टि कहलाती है जिससे सब संसार भरा हुआ है ॥ १२ ॥

मू. सरित्सहस्रमुद्रांश्च ते वन्ते पर्वतानपि । तास्त-
दाह्यल्यग्नीतीष्णा युगे तस्मिन्मरन्ति वै ॥ १३ ॥

टी. और उन दिनों में वे प्रजालोक नदी और नालाब और समुद्र और पर्वत आदि के पास रहते थे और वह युग में जल गभीर कम होता था ॥ १३ ॥

मू. वृश्चिंश्चाभावि कीं प्राप्ता विषयेषु महामते । न
तासां प्रतिघातोऽस्ति न रेपो नापि मत्सराः ॥

टी. हे महामति उनलोगों को जो पहिले से विषय था उसीमें वह नष्ट रह
ते थे और किसी तरह का निघ्न न था और न द्वेषामर्ष था ॥१४॥

मू. पर्वतोदधिसे विन्योह्यनिकेतास्तु सर्वशः । तावै
निष्कामचाणयो नित्यं मुदितमानसाः ॥ १५ ॥

टी. और वे लोग हर तरह से नदी और पर्वतों की सेवा करने वाले बगैर
घर के और निष्काम सदा हर्षमुक्त रहते थे ॥१५॥

मू. पिशाचो रगरक्षांसितथामत्सरिणोजनाः । पश-
वः पक्षिणाश्चैव नक्रामत्स्याः सरीसृपाः ॥ १६ ॥

टी. बाद इसके ब्रह्मा ने पिशाच और सर्प और राक्षस और अभिमानी लो-
ग पशु और पक्षी आदि और मत्स्य और बिच्छू वगैरा को पैदा किया ॥१६॥

मू. अवारका हाण्डजावाते ह्यधर्ममसूतयः । नमू-
लफलपुष्पाणि नार्त्तवावत्सराणि च ॥ १७ ॥

टी. इसके बाद अवारक और हाण्डजाव इत्यादि विशेष जानवरों को
पैदा किया ये सब धर्म और फल और मूल और फूल और ऋतु
और वर्ष इत्यादि के विचार से रहित हैं ॥१७॥

मू. सर्वकालसुखः कालो नात्यर्थधर्मशीलता । का-
लेन गच्छता तेषां चित्रा सिद्धिर जायत ॥ १८ ॥

टी. उनलोगों को सर्वकाल में सुख रहता है और धर्म और शील से रा-
हित हैं कुछ दिनों बाद इनलोगों को अनायास सिद्धि प्राप्त होती थी ॥१८॥

मू. ततश्च तेषां पूर्वाह्ने मध्याह्ने च वितृप्तता । पुन-
स्तथेच्छतां तृप्तिरनायासेन साभवत् ॥ १९ ॥

टी. और उनलोगों की मध्याह्न और पूर्वाह्न काल में तृप्ति नहीं होती थी
किन्तु जब इच्छा करते थे तब तृप्त हो जाते थे ॥१९॥

मू. इच्छताञ्च तथा यासो मनसः समजायत । अपां
सौहर्मांत तस्मात्सं सिद्धिर्नाम्ना वयोनसा ॥ २० ॥

टी. जब इच्छा करते थे तब मन ही से आशा भी पैदा होती थी और जल और सूखा सिद्धि भी होजाती थी ॥ २० ॥

मू. समजायतचैवान्यासर्वकामप्रदायिनी । असं-
स्कार्यैः शरीरैश्च प्रजास्ताः स्थिरयौवनाः ॥ २१ ॥

टी. बाद इसके सम्पूर्ण कामना देनेवाली सिद्धि उन लोगों को प्राप्त होती थी और वे लोग संस्कार रहित और शरीरों से स्थिर और युवा अवस्था बन रहते थे ॥ २१ ॥

मू. तासां विना तु संकलं जायन्ते मिथुनाः प्रजाः । स-
मं जन्म च रूपं च सिध्यन्ते चैव ताः समं ॥ २२ ॥

टी. और वह सब प्रजा स्त्री पुरुष दोनों एकही साथ पैदा होते थे और जिस तरह एक साथ पैदा होते थे उसी तरह एक साथ आयुर्वल धन पर मर भी जाते थे ॥ २२ ॥

मू. अनिच्छा द्वेष संयुक्तां वर्तन्ते तु परस्परं । तुल्यरू-
पा युषः सर्वा अधमोत्तमतां विना ॥ २३ ॥

टी. और इच्छा और द्वेष रहित आपस में रहते थे और सब की सूरत और उमर बराबर ही होती थी और रूप भी समान ही होता था और उनमें कोई उत्तम अधम न था ॥ २३ ॥

मू. चत्वारिनु सहस्राणि वर्षाणां मानुषाणि तु । आ-
युः प्रमाणं जीवन्ति न च क्लेशा हि पन्नयः ॥ २४ ॥

टी. मनुष्यों के वर्ष से चार हजार वर्ष तक सब कोई जीते थे और उन लोगों को किसी तरह का क्लेश और विपत्ति न होती थी ॥ २४ ॥

मू. क्वचित् क्वचित् पुनः साभूतक्षितिर्भाग्येन सर्वशः ।
कालेन गच्छतां न शमुपयान्ति यथा प्रजाः ॥ २५ ॥

टी. कभी कभी पृथ्वी के सम्बन्ध से उन सभी को सिद्धि प्राप्त होती थी फिर काल पाकर जिस तरह प्रजा लोग नाश होते थे उसी तरह वह सिद्धि भी नाश होजाती थी यानी स्वर्ग प्राप्त होता था ॥ २५ ॥

मू. तथा ताः क्रमशो नाशं जग्मुः सर्वत्र भिद्युः ।

तामुसर्वासुनष्टासुनभसः प्रच्युतानराः ॥ २६ ॥

टी. उसी तरह जब मनुष्यों की सिद्धि नाश होजाती थी तब उसी समय स्वर्ग से ज़मीन पर गिर पड़ते थे ॥ २६ ॥

मू. प्रायशः कल्पवृक्षास्ते सम्भूता गृहसंज्ञिताः सर्वे
प्रत्युपभोगाश्च तासां तेभ्यः प्रजायते ॥ २७ ॥

टी. वही लोग प्रायशः कल्पवृक्ष गृहसंज्ञक होकर ज़मीन पर पैदा होते थे और प्रजाओं के बीच में उसी वृक्ष से हर तरह का भोग भी पैदा होता था ॥ २७ ॥

मू. वर्त्तयन्ति स्म तेभ्यस्तास्त्रेतायुगमुखेतदा । ततः
कालेन वैरागस्तासामाकस्मिकोऽभवत् ॥ २८ ॥

टी. त्रेतायुग में ये सब वर्त्तमान थे बाद उसके उन प्रजाओं को बिना परिश्रम ज्ञानायास मन में प्रीति उत्पन्न हुई ॥ २८ ॥

मू. मासि मास्यर्त्तवोत्पत्या गर्भोत्पत्तिः पुनः पुनः । रा
गोत्पत्या ततस्तासां वृक्षास्ते गृहसंज्ञिताः ॥ २९ ॥

टी. बाद उसके मास मास में ऋतु की उत्पत्ति और बाद उसके गर्भ भी होते गे लगा और उन लोगों को उस गृहसंज्ञक वृक्ष में राग पैदा होने लगा ॥ २९ ॥

मू. ब्रह्मन् न्वपेरषान्तुपेतुः शाखामहीरुहां । वस्त्रा-
णि च प्रसूयन्ते फलेष्वाभरणानि च ॥ ३० ॥ ३० ॥

टी. और हे ब्रह्मन् उस वृक्ष से जो वृक्ष पैदा होते थे और उनमें जो फल पैदा होते थे उन फलों में भी वस्त्र और भूषणदि उत्पन्न होते थे ॥ ३० ॥

मू. तेष्वेव जायते तेषां गन्धवर्णरसान्वितं । अमा-
क्षिकं महावीर्यं पुटके पुटके मधु ॥ ३१ ॥

टी. और उस फल में अच्छा वर्ण और गन्ध और रस इत्यादि पैदा होता था और उसका पत्ता देने की तरह होता था और उस दोने में बिना मक्खी के मधु भरा रहता था ॥ ३१ ॥

मू. तेन तावर्त्तयन्ति समुखे चैतायुगस्य वै । ततः
कालान्तरेणैव पुनर्लोमान्वितास्तुताः ॥ ३२ ॥

टी. चैतायुग में प्रजालोग उसी से वर्त्तमान रहते थे बाद उसके कालान्तर पाकर वह प्रजालोग लोमान्वित होगये ॥ ३२ ॥

मू. वृक्षास्ताः पर्यगृह्णन्तममत्वा विष्टचेतसः । ने
शुस्तेनापचारेण तेऽपि तासां महीरुहाः ॥ ३३ ॥

टी. जब प्रजालोग लोभी होकर नमता संयुक्त उस वृक्ष को ग्रहण करने लगे तब वह वृक्ष भी इन लोगों के अपचार से नाश होगया ॥ ३३ ॥

मू. ततो हन्धान्यजायन्त शीतोष्णान्मुखानिवै । ता
स्तदन्धोपधातार्यचक्रुः पूर्वपुराणि नु ॥ ३४ ॥

टी. बाद नाश होजाने वृक्ष के उन लोगों को आपुस में हरनरहका इन्ध मानी लड़ाई मगड़ा पैदा हुआ जिसके सबब से जाड़ा और गर्मी और भूख सबकी प्रबल हुई तो सब कोई अपने नाश होने के डर से पहिलेही स्थान बनाने लगे ॥ ३४ ॥

मू. मरुधन्वेषु दुर्गेषु पर्वतेषु दरीषु च । संश्रयन्ति
च दुर्गाणि वार्क्षी पार्वत मौदकं ॥ ३५ ॥

टी. मरु और धनु देश में और अन्य दुर्गस्थानों और पर्वतों और कन्दरा इत्यादि में सब कोई रहने लगे ॥ ३५ ॥

मू. रुचिमञ्च तथा दुर्गमित्वा नित्यात्मनोऽङ्गुलैः ।
मानार्थानि प्रमाणानि तास्तु पूर्वप्रचक्रिरे ॥ ३६ ॥

टी. और सब कोई अपनी अँगुली की नाप से गढ़ इत्यादि बनाने लगे और प्रमाण के वास्ते एक कायदा भी मुक़रर किया ॥ ३६ ॥

मू. परमाणुः परं सूक्ष्मं वशरेणुर्महीरजः । वालाग्रञ्चै
व निष्काञ्च यूकां चाथय वोदरं ॥ ३७ ॥ ३७ ॥

टी. जाली के छिद्र में सूर्य की किरण पड़ने से जो सूक्ष्म धूल देख

पड़ती है उसके तीसरे हिस्से को द्वाणु कहते हैं और तीसरा
माणु का एक चरणेण और तीसरा चरणेण का एक बालाय होता है
और तीसरा बालाय का एक निष्क और तीसरा निष्क का एक यूका
और तीसरा यूका का एक यवोदर होता है ॥ ३७ ॥

मू. एकादशगुणं तेषां यवमध्यं तथाङ्गुलं । षडङ्गु-
लं पदन्तश्च वितस्ति द्विगुणं स्मृतं ॥ ३८ ॥

टी. और ग्यारह यवोदर का एक यवमध्य हुआ और ग्यारह यवमध्य
का एक अंगुल और छः अंगुल का एक पद और दो पद का एक वितस्ति होता है

मू. देवितस्ती तथा हस्ती ब्राह्मती र्थो दिवेष्टनं । च-
तुर्हस्तं धनुर्दण्डो नाडिका युगमेव च ॥ ३९ ॥

टी. और दो वितस्ति का एक हाथ होता है जो ब्राह्मती र्थो दिवेष्टनं है और
चार हाथ का एक धनुष उसी को नाडिका युग और दण्ड भी कहते हैं ॥ ३९ ॥

मू. धनुषां द्वे सहस्रे तु गव्यूतिस्तच्चतुर्गुणं । प्रोक्त-
ञ्च योजनं प्राज्ञैः संख्यानाथं मिदपरं ॥ ४० ॥

टी. और दो हजार धनुष को एक गव्यूति या मी दो कोश कहते हैं और चार
हजार धनुष को बुद्धिमान लोग एक योजन कहते हैं ॥ ४० ॥

मू. चतुर्लोकमयदुर्गाणां स्वसमुत्थानि त्रीणि त्तु । च-
तुर्थं किञ्चिदुर्गतं तच्च कुर्यात् सतस्तुते ॥ ४१ ॥

टी. बाद इसके चार किला के मध्य में तीन तो उन लोगों के उठने के वास्ते
कहा गया और चौथा कञ्चिम दुर्ग वह सब किसी ने बनाया ॥ ४१ ॥

मू. पुरञ्च खेटकञ्चैव तद्दोणीमुखं द्विजः । शाखा-
नगरकञ्चापितथा कर्बदकं च यी ॥ ४२ ॥

टी. पुर और खेटक और दोणीमुख और शाखानगर और कर्बदक
नगर के नियत किये ॥ ४२ ॥

मू. ग्रामसंघोषविन्यासं तेषु चावसथानं पृथक् ।

सोत्थेधवप्रकारञ्च सर्वतः परिखादृतं ॥ ४३ ॥

टी. और इन्ही स्तंभों में शम्भों का और रहने का स्थान अलग-अलग बनाते गये और किला और गढ़ चारों तरफ खाई सहित तरह तरह के बनाते गये ॥ ४३ ॥

मू. योजनार्द्धविष्कम्भमष्टभागायतं पुरं । प्रागुदकं लवणं च संशुद्धवं च वह्निर्गमं ॥ ४४ ॥

टी. जो बस्ती एक कोस चौड़ी और आठ कोस लम्बी हो उसको पुर कहते हैं और इसमें पूर्व और उत्तर तरफ उतार होता है और शुद्ध बाँस वगैरा चारों तरफ लगाये जाते हैं ॥ ४४ ॥

मू. तदूर्ध्वेन तथा खेटं तथा देन च कर्बटं । न्यूनं द्रोणी मुखं तस्मादन्तर्भागो न चोच्यते ॥ ४५ ॥

टी. और जो बस्ती आध कोस चौड़ी और चार कोस लम्बी हो उसको खेटक कहते हैं और इसका जो आधा हो उसको कर्बटक कहते हैं और उसके आधे को द्रोणी मुख और उसके आधे को अन्तर्भाग कहते हैं यानी कर्बटक का चौथा हिस्सा ॥ ४५ ॥

मू. प्राकारं परिखाहीनं पुरं वर्मवदुच्यते । शारवा नगरकञ्चान्यनमन्त्रिसामन्तभुक्तिमत् ॥ ४६ ॥

टी. और जो किला बिना खाई का हो और चारों तरफ उसके बाँस वगैरा घिरे हुये हों उसको पुर कहते हैं और जिसमें मंत्री और अच्छे लोग बसते हों और उसमें भोग वस्तु बहुत हों वह शारवा नगर कहलाता है ॥ ४६ ॥

मू. तथा शूद्रजलप्रायाः स्वसमृद्धिरूपीधलाः स्त्री-त्रोपभोग्यभूना धेवसतिर्ग्रामसंज्ञिता ॥ ४७ ॥

टी. इसी तरह जिसमें शूद्र लोग अधिक बसे हों और जल और भोजन और धन और सेती करने वाले लोग बहुत हों और खूबामी ॥

उसका बहुत हो उसको ग्राम कहते हैं ॥ ४७ ॥

मू. अन्यस्मान्नगरादेर्याकार्यमुद्दिश्यमानवैः ।

क्रियतेवसतिः सावैविज्ञेयावसतिर्नवै ॥ ४८ ॥

टी. और नगरादिक से बाहर किसी काम करने के वास्ते जो घर बनाते हैं उसको बस्ती कहते हैं ॥ ४८ ॥

मू. दुष्टप्रायोविनाक्षेत्रैःपरिभूमिचरोवली । ग्राम
एवाक्रिभीसंज्ञो राजवल्लभसंश्रयः ॥ ४९ ॥

टी. और बगैर खेती के दूसरे की जमीन पर बसने वाले चाहे वह राज के हितकारी या सम्बन्धी या दुष्ट या अधिक बली हों जिस में बसते हों वह अक्रिभी गाँव कहलाता है ॥ ४९ ॥

मू. शकटारूढभाण्डैश्चगोपालैर्विपणंविना । गो-
समूहस्तथाघोषोयत्रेच्छाभूमिकेतनः ॥ ५० ॥

टी. और जहाँ गोपाल लोग अपना वर्त्तन भाँड़ा गाड़ी पर लादकर रखते हों और गोधन बगैर बहुत हों और वहाँ बाजार न हो और अपनी इच्छा के मवाफिक जमीन मिले उसको घोष कहते हैं ॥ ५० ॥

मू. त एवं नगरादींस्तु कृत्वा वासार्थमात्मनः । नि-
केतनानिद्वन्द्वानांचक्रुरावसथायवै ॥ ५१ ॥

टी. इसीतरह वे लोग अपने रहने के वास्ते नगर बगैर आबाद करके घर बनाकर स्त्री पुरुष रहने लगे ॥ ५१ ॥

मू. गृहाकारायथापूर्वतेषामासन्महीरुहाः । त-
थासंस्मृत्यतत्सर्वंचक्रुर्वैश्वानिताः प्रजाः ॥ ५२ ॥

टी. उन लोगों का पहिले घर के बदले में वृक्षों की शाखा ही मानों घर था इसीतरह उसको खयाल करके सभी ने घर बनाया ॥ ५२ ॥

मू. वृक्षस्यैवङ्गताः शाखास्तथैवचापरागताः । न-
ताश्चैवोन्मताश्चैवतदच्छाखाः प्रचक्रिरे ॥ ५३ ॥

टी. पहिले कल्पवृक्ष की शाखा घर के सदृश होती थी और कल्पवृक्ष से जो जो वृक्ष बढ़ते गये वह भी उसी समान होते गये कोई छोटे कोई बड़े उसी तरह प्रजालोग भी कोई छोटा कोई बड़ा घर बनाते गये ॥ ५३ ॥

मू. याः शाखाः कल्पवृक्षाणां पूर्वमासनद्विजोत्तम
ता एव शाखागेहानां शालात्वन्तेन तामृतम् ॥ ५४ ॥

टी. हे मुनि सत्तम जिस तरह की शाखा कल्पवृक्षों की पहिले थी उसी तरह के अब घर होते हैं जिसमें प्रजालोग रहने हैं ॥ ५४ ॥

मू. कृत्वा दन्दोपघातन्ते वार्तोपायमचिन्तयत् ।
नष्टेषु मधुना सार्द्धं कल्पवृक्षेष्वशेषतः ॥ ५५ ॥

टी. और वह लोग स्त्री पुरुष घर में रहकर व्यवहार की विन्ता कालेस गे जब मधु संयुक्त वृक्षों का नाश हो गया ॥ ५५ ॥

मू. विषादव्याकुलास्ता वै प्रजास्तृष्णाक्षुधार्दिताः ।
तः प्रादुर्बभूता सां सिद्धिस्त्रेतामुखे तदा ॥ ५६ ॥

टी. और प्रजालोग विषाद से व्याकुल और दुःखा तथा से पीड़ित हुवे तब फिर उन लोगों को उसी त्रेता युग के प्रथम ही चरण में सिद्धि उत्पन्न हुई ॥ ५६ ॥

मू. वार्तास्वसाधिता ह्यन्या वृष्टिस्तासां निकामतः ।
तासां वृष्ट्युदकारी हयानि निम्नगतानि वै ॥ ५७ ॥

टी. यानी वर्षा रूपी सिद्धि हुई जो पानी वर्षा और जमीन में भर गया ॥ ५७ ॥

मू. वृष्ट्या वरुद्धैरभवत्स्रोतः स्वातानि निम्नगाः ।
ये पुरस्तादपांस्तोका आपन्नाः पृथिवीतले ॥ ५८ ॥

टी. उसी जलस्तोक से यानी उस पानी से जो जमीन के गड़हों में भरहाया नदी और सोता वगैरा जारी हो गये ॥ ५८ ॥

मू. ततो भूमेऽस्य संयोगादोषधस्तास्तदा भवन् ॥

अफालकृष्टाश्चानुप्राग्र्यारायाश्चतुर्दश ॥ ५६ ॥

टी. और उस जल के योग से तमाम जमीन पर औषधि इत्यादि उत्पन्न हुईं ग्राम और जंगल में बगैर जोते बोये आपसे आप चौदह वस्तु पैदा हुईं ॥ ५६ ॥

मू. ऋतुपुष्पफलाश्चैव वृक्षा गुल्माश्च जन्तिरे । प्रा-
दुर्भावस्तु चेताया माद्योऽयमौषधस्य तु ॥ ६० ॥

टी. और सब ऋतुओं के फल फूल वृक्ष गुल्म वगैरा पैदा हुवे चेता के आदि में औषधियों की यही उत्पत्ति है ॥ ६० ॥

मू. तेनौषधेन वर्तन्ते प्रजास्वेता युगे मुने । रागलो-
भौ समासाद्य प्रजाश्चाकस्मिकौ तदा ॥ ६१ ॥

टी. और हे मुनि उन्हीं औषधियों से उस चेता के आदि में प्रजालोग अपनी जीविका करने लगे कुछ दिनों के बाद प्रजालोगों को अनायास राग और लोभ फिर चित्त में पैदा हुआ ॥ ६१ ॥

मू. ततस्ताः पर्यगृह्णन्त नदीं क्षेत्राणि पर्वतान् ।
वृक्षगुल्मौषधीश्चैव मात्मन्या याद्यथा बलं ॥ ६२ ॥

टी. अब प्रजालोगों ने राग और लोभ में फँस कर अपने अपने बल के अनुसार नदी और खेत और पर्वत और वृक्ष गुल्म इत्यादि औषधियों को अपने अपने कब्जे में कर लिया ॥ ६२ ॥

मू. तेन दोषेण ताने शुगौषधो मिषतां हिज । अग्र-
सङ्ख्येयुगपन्तास्तदौषधो महामते ॥ ६३ ॥

टी. हे हिज उसी दोष से प्रजाओं के देखते ही देखते वह सब औषधियाँ नाश हो गईं हे महामति उन औषधियों को एक ही बार पृथ्वी अपने में लय कर गई ॥ ६३ ॥

मू. पुनस्ताः सुप्रणष्टा सुविभ्रान्तास्ताः पुनः प्रजाः । त्र-
ह्णाणां शराणां जग्मुः सुधान्ताः परिमेषिनं ॥ ३४ ॥

श्रीः तब सब औषधियाँ नाश हो गईं तब प्रजालोग विभ्रान्त होकर सुधा से अत्यन्त पीड़ित होकर ब्रह्माजी की शरण में गये ॥ ६४ ॥

मूः सचापितत्वतो ज्ञात्वा तदाग्रस्तां वसुन्धरां । वत्सं कृत्वा सुमेरुन्तु दुदोह भगवान् विभुः ॥ ६५ ॥

श्रीः तब ब्रह्मा ने तब पूर्वक पृथ्वी को जो औषधियों को घात कर गई थी जानकर सुमेरु पर्वत को बछड़ा बनाया और उस पृथ्वी स्त्री गऊ को दुहा ॥ ६५ ॥

मूः दुग्धेयुं गौस्तदा तेन सस्यानि पृथिवी तले । जसिरेतानि बीजानि ग्राम्याण्यस्तुताः पुनः ॥ ६६ ॥

श्रीः तब दूध की जगह पृथ्वी से बीज पैदा हुवे और वही बीज तमाम गाँव और जङ्गलों में होते भये ॥ ६६ ॥

मूः औषध्यः फलपाकान्ता गणा सप्तदश स्मृताः । ब्रीहयश्च यवाश्चैव गोधूमा अणवस्तिलाः ॥ ६७ ॥

श्रीः और फल के पकने पर जो सत्रह औषधियों का बीज रह गया उसको कहता हूँ प्रथम ब्रीह - यव - गोधूम - अणव - तिल ॥ ६७ ॥

मूः प्रियङ्गु बोह्यु दाराश्च कोरदूषाः सचीनकाः । माषा मुद्गा मसूराश्च निष्पावाः सकुलत्थकाः ॥ ६८ ॥

श्रीः और कौनी - उदार - दूषा - चीना - माष - मूँग - मसूर - निष्पाव - और कुलथी ॥ ६८ ॥

मूः आढकाश्चणकाश्चैव गणाः सप्तदश स्मृताः । इत्येता औषधीनान्नु ग्राम्याणां जातयः पुरा ॥ ६९ ॥

श्रीः और आढक - चना - इत्यादि यही सप्तदश गण कहलाते हैं और यही सब औषधियाँ सब गाँव और जङ्गलों में पैदा हैं इनको ग्रामौषधि कहते हैं ॥ ६९ ॥

मूः औषध्यो यन्त्रियाश्चैव ग्राम्याण्यश्चतुर्दश ।

मू. ब्रीहयश्च यवाश्चैव गोधूमाञ्जणवत्तिलाः ॥ ७० ॥

टी. और यज्ञवाली औषधियाँ जो गोंव और जंगलों में होती हैं चौरह तरह की हैं उनके नाम ये हैं प्रथम ब्रीह. यव. गोधूम. अणव. तिल ॥ ७० ॥

मू. प्रियङ्गु सप्तमाह्येते अष्टमास्तुकुलत्थकाः । श्या-
माकास्त्वथनीवारपतिलासावेधुकाः ॥ ७१ ॥

टी. और सौनी. कुलथी. श्यामाका. पसही. पतिल. और सावेधुका ॥ ७१ ॥

मू. कुरुविन्दामर्कटकास्तथावेणुग्रधान्वये । आ-
म्यारायाः स्मृताह्येता औषधश्चतुर्दश ॥ ७२ ॥

टी. और कुरुविन्द. मर्कटका. वेणुग्रध. ये सब गोंव और जंगलों में होते हैं और चौरह औषधि कहलाते हैं ॥ ७२ ॥

मू. यदा प्रसृष्टा औषधो न प्ररोहन्ति ताः पुनः । ततः
सतासां च धर्धं वार्त्ता पायञ्चकार ह ॥ ७३ ॥

टी. जब उन जगों के बोने पर भी इन औषधियों का बीज पृथ्वी पर न जा तो फिर ब्रह्मा ने इन सभी के वास्ते दूसरा यत्न किया ॥ ७३ ॥

मू. ब्रह्मा स्वयम्भूर्भगवान् हस्तसिद्धिञ्च कर्मजां ।
ततः प्रभृत्य औषध्यः कृष्टपञ्चास्तुजशिरे ॥ ७४ ॥

टी. यानी उस स्वयम्भू भगवान् ब्रह्मा ने अपने हस्त कर्मजा सिद्धि को पैदा किया तब से वही कृष्टपञ्चा औषधियाँ जो पहिली पड़ी हुई थीं सब जमने लगीं ॥ ७४ ॥

मू. संसिद्धा यान्तु वार्त्ता यां ततस्तासां स्वयंप्रभुः ।
मर्यादां स्थापयामास यथान्यायं यथागुणं ॥ ७५ ॥

टी. जब यह बात सिद्ध होगई तब ब्रह्मा ने यथा योग्य जैसा जितना गुण था वैसा उसका मर्यादा कायम किया ॥ ७५ ॥

मृ. वर्णानामाश्रमाणाञ्चधर्मानधर्मभूताम्वर ।
लोकानांसर्ववर्णानांसम्यक्धर्मार्थपालिनां ॥ ७६ ॥

टी. और हे धर्मात्माओं में और वर्णों और आश्रमों का जो धर्म है उसको भी मुकरे किया और धर्मार्थ के पालन करने वाले सब वर्णों का स्थान भी मुकरे किया ॥ ७६ ॥

मृ. प्रजापत्यब्राह्मणानां स्मृतस्थानं क्रियावतां । स्था
नमैन्द्रक्षत्रियाणां संग्रामेष्वपलायिनां ॥ ७७ ॥

टी. सम्पूर्ण क्रिया करने वाले ब्राह्मणों का प्रजापत्य स्थान है और जो क्षत्री
समर में नहीं भागते हैं उनके वास्ते इन्द्र स्थान है ॥ ७७ ॥

मृ. वैश्यानां मातृतं स्थानं स्वधर्मा मनुवर्त्ततां । गा
न्धर्वशूद्रजातीनां परिचर्यानुवर्त्ततां ॥ ७८ ॥

टी. और जो वैश्य अपने धर्म में बने रहते हैं उनको वायुलोक मिलता है
और जो शूद्र सेवावर्त्ती हैं वे गन्धर्वलोक में जाते हैं ॥ ७८ ॥

मृ. अष्टाशीतिसहस्राणामृषीणामूर्द्ध्वरेतसां । स्मृ
तं तेषान्तु यतस्थानं तदेव गुरुवासिनाम् ॥ ७९ ॥

टी. और जो लोग गुरु के घर रहिकर गुरु की सदा सेवा करते हैं वे लोग अ-
ष्टासी हजार ऋषेश्वरों के स्थान में जाते हैं ॥ ७९ ॥

मृ. सप्तर्षीणान्तु यतस्थानं स्मृतं तद्वैवनौकसां । पा-
जापत्यगृहस्थानान्यासिनां ब्राह्मणः क्षयः ॥
योगिनाममृतं स्थानमिति वै स्थानकल्पना ॥ ८० ॥

टी. और बनवासी लोगों को सप्तर्षियों का स्थान मिलता है और गृहस्थों
को प्रजापत्य स्थान मिलता है जो अपने धर्म में स्थिर रहते हैं और म-
न्यासियों को ब्रह्मस्थान मिलता है और योगियों को अमृत यानी मोक्ष
स्थान मिलता है इसी तरह सबके वास्ते ब्रह्मने स्थान मुकरे किये हैं ॥ ८० ॥

इति श्री मार्कण्डेय पुराणे सृष्टिप्रकरणे ४६

انچاسواں اڈھا سے

اگر دشمنی نے کہا کہ اے برہمن ارباک مروت کو تو آپ نے بیان کیا اب جسین برہما جی نے
 سنگیوں کو پیدا کیا اور اسکو مفصل بیان کیجیے - ۲ اور ہے مہانت برہمن وغیرہ چاروں برہمنوں
 جو گرم اور گن ہوا اسکو بھی مفصل بیان کیجیے - ۳ مارکنڈے جی کہتے ہیں کہ بتاتے ہیں
 ہائے واسے برہما جی نے اپنے مکھ سے ہزاروں مرد و عورت کو برہشت پیدا کرنے کے وقت پہلے
 پیدا کیا - ۴ اور دے سب سنگی پیدا ہوئے اور روز بروز اپنے تیج سے بڑھنے لگے بعد
 اسے برہما نے ہزاروں مرد و عورت کو اپنے سینہ سے پھر پیدا کیا - ۵ اور دے لوگ رجوگنی
 اور برہے بھوگی اور کرو دھئی ہوئے پھر اپنے اور اوسمبھون سے ہزاروں مروت کن کو پیدا کیا
 ۶ وہ سب رجوگنی اور توجنی پیدا ہوئے اور خواہش اور مروت والے ہوئے پھر برہما نے اپنے
 دونوں پانٹوں سے ہزاروں مرد و عورت کو پیدا کیا - ۷ اور دے سب مہا بھوگنی اور بھوگنی
 وغیرہ سے زہت اور بے عقل اور خوش مزاج ہوئے اور مرد و عورت تو ام یعنی ایک ساتھ
 پیدا ہوئے - ۸ اور ان بھون کو جماع کرنے اور کرانے کی نہایت خواہش ہوئی اس روز سے
 اس کلپ میں بیٹھن یعنی جماع جاری ہوا اور جماع کرنے سے مرد و عورت ایک ساتھ پیدا ہونے
 لگے - ۹ اگلے زمانہ میں عورتوں کو سینے میں سے حیض نہوتا تھا اسلئے مرد کی صحت سے عورت
 کے لڑکا بالا پیدا نہوتا تھا - ۱۰ جب ان لوگوں کی عمر اخیر ہوتی تھی تب اکبارگی لڑکا
 پیدا ہوتا تھا تب سے برابر اس کلپ میں جماع کرنے سے پیدا ہوتے گئے - ۱۱ اگلے صرف
 طبیعت اور خیال کرنے سے ایک ہی بار لڑکا پیدا ہوتا تھا اور شب و غیرہ پانچ بجھے سکو
 علاحدہ علاحدہ ہوتے تھے - ۱۲ غرضکہ خاص برہما کی پیدا کی ہوئی یہی خلقت آدمیوں کی
 جس سے تمام دنیا آباد و قائم ہے - ۱۳ اور اگلے زمانہ میں وہ سب رعایا ندی
 اور تالاب اور شدر اور پریت وغیرہ کے نزدیک رہتی تھی اور اس زمانہ میں جاڑا اور
 گرمی کم ہوتا تھا - ۱۴ ہے مہانت ان لوگوں کو جو پہلے بکھے تھے اسی میں خوش رہتے
 تھے کیسکو کسی سے کھار یا رنج نہوتا تھا اور حسد اور غرور بھی نہ تھا - ۱۵ ندی اور بہاروں
 پر گھومنے کے راکھ تھے اور کسی چیز کی خواہش نہ رکھتے تھے اس سے ہمیشہ خوش رہتے تھے -

۱۶ بعد اسکے برٹھانے پشاج اور سانپ اور راجپس اور ضرور آدمی اور چرند اور پرند اور گراہ اور بھیلی اور بچھو وغیرہ کو پیدا کیا۔ ۱۷ پھر ابارک اور مانڈ جاب وغیرہ فاس جاندار و نگو پیدا کیا یہ سب دھرم سے خالی ہوئے اور پھل اور پھول اور مٹول اور فصل اور سال وغیرہ کی تمیز نہیں رکھتے تھے۔ ۱۸ ان سبکو ہمیشہ سکھ رہتا تھا اور دھرم اور مروت سے خالی تھے کچھ زمانہ کے بعد انکو از خود سیدھی حاصل ہو جاتی تھی۔ ۱۹ اور ان سبھو کو وقت دوپہر یا صبح کو آسودگی نہ ہوتی تھی جو وقت چاہتے تھے آپ سے آپ ہو کر ہو جاتے تھے۔ ۲۰ جب چاہتے تھے تب طبیعت سے امید پیدا کر لیتے تھے اور جل اور سو جیا سیدھی بھی ہو جاتی تھی۔ ۲۱ بعد اسکے سب کا سنا دینے والی سیدھی بھی انکو حاصل ہوتی تھی اور بغیر سنسکار کے رہتے تھے اور جسم سے تندرست اور چیشہ نوجوان بنے رہتے تھے۔ ۲۲ اور عورت و مرد تو ام نینی ایک ساتھ پیدا ہوتے تھے اور جسطرح ایک ساتھ پیدا ہوتے تھے اسی طرح ایک ہی ساتھ زندگی ختم ہونے پر مر بھی جاتے تھے۔ ۲۳ اور بغیر خواہش اور حسد کے آپس میں رہتے تھے اور ان سبھو کی صورت اور عمر ایک ہی طرح کی ہوتی تھی اور انھوں میں کوئی بُرا بھلا نہ تھا۔ ۲۴ آدمیوں کے برس کے حساب سے چار ہزار برس تک سب جیتے تھے اور ان سبھو کو کیس طرح کی تکلیف اور نصیب ہوتی تھی۔ ۲۵ کبھی کبھی زمین کے تعلق سے سیدھ ہو جاتے تھے پھر وقت آنے پر جسطرح سب پر جا ناش ہو جاتی تھے اسی طرح وہ سیدھی بھی ناش ہو جاتی تھی۔ ۲۶ جسطرح آدمیوں کی سیدھی جب ناش ہو جاتی تھی تب سورگ سے زمین پر گر جاتے ہیں۔ ۲۷ اسی طرح وہ کلپ برچھ ہو کر زمین پر پیدا ہوتے تھے اور خلعت کے درمیان اسی برچھ سے اپنی درخت سے جسطرح کی نعمت پیدا ہوتی تھی۔ ۲۸ اور تریتا جگ تک یہ سب موجود رہتا تھا بعد اسکے ان لوگو کو بغیر محنت و مشقت کے از خود طبیعت میں محبت پیدا ہوتی۔ ۲۹ اور مہینہ مہینہ بعد عورتوں کو حیض پیدا ہونے لگا اور بعد گزرنے ایام حیض کے حمل قائم ہونے لگا۔ ۳۰ اسے برجن اس برچھ سے جو اور برچھ پیدا ہوتے تھے اور جو جبل آسمین لگتے تھے ان بھلون میں بھی کپڑا اور گھنٹا پیدا ہوتا تھا۔ ۳۱ اس بھل میں گندھ (خوشبو) اور برن (رنگ) اور رس (عرق) پیدا ہوتا تھا اور اس درخت کا پتلا شل ہونا کے ہوتا تھا اور اس دُونے میں بغیر کچی کے شہد بھرا رہتا تھا۔

۳۳۔ تریا جگ میں اسی شہد سے سب لوگ جیتے تھے بعد اُس کے اسی زمانہ میں سب لوگ لالچی ہو گئے۔ ۳۴۔ جب سب لوگوں نے محبت میں اگر اُن درختوں کو اپنے اپنے قبضہ میں کر لیا تب وہ درخت اُن لوگوں کے فساد و تکرار سے نیست نابود ہو گئے۔

۳۵۔ پھر اُن لوگوں میں ہر طرح کا فساد ہونے لگا جسکی سبب سے جاڑا اور گرمی اور بھوک اور پیاس بھی بہت پیدا ہوئی تب سب لوگ اپنی حفاظت کے لیے اور مرنے جانے کے خوف سے مکان وغیرہ بناتے گئے۔ ۳۶۔ اور مرنے اور دھن دیش میں اور اور دشوار مقامات اور پہاڑوں اور گھاٹیوں وغیرہ میں رہنے لگے۔ ۳۷۔ اور اپنے انگل کے ناپ کے پیمانہ سے ناپ ناپ کر عمارت وغیرہ بناتے گئے اور پیمائش کے واسطے ایک تار بندہ بھی مقرر کیا۔

۳۸۔ یعنی جالیوں اور سوراخوں سے جو آفتاب کی کرن کے ساتھ ذرہ اُڑتا ہوا نظر آتا ہو اُس کے تینوں حصے کو ایک پران کہتے ہیں اور تین پران کا ایک ترسین ہوتا ہے اور تین ترسین کا ایک بالاکر ہوتا ہے اور تین بالاکر کا ایک نشاک اور تین نشاک کا ایک جو کا اور تین جو کا ایک جو ودر ہوتا ہے۔ ۳۹۔ اور گیارہ جو ودر کا ایک دھیم جو اور گیارہ دھیم جو کا ایک انگل اور چھ انگل کا ایک پد اور دو پد کا ایک نشاک ہوتا ہے۔ ۴۰۔ اور دو نشاک کا ایک ماتھ ہوتا ہے جو برتھ تیرتھ وغیرہ کا پیشکھن ہے اور چار ماتھ کا ایک دھنک ہوتا ہے اور اسکو ناک جگ اور دھنک بھی کہتے ہیں۔ ۴۱۔ اور دو ہزار دھنک کا ایک گبیت یعنی دو کوس اور چار ہزار دھنک کا عقلمن ہے ایک جو جن مقرر کیا ہے۔ ۴۲۔ بعد اسکے چار درگ کے درمیان میں تین تو اُن لوگوں کے تنہا بن گئے واسطے رکھے گئے اور چوتھا کرترم درگ اسکو سب کسی نے بنایا۔

۴۳۔ پھر اور کھٹک اور درونی مکھ اور ساکھانتر اور کرنگ تین طرح کے مقرر کیے۔ ۴۴۔ اور ان تینوں میں مکان وغیرہ علیحدہ علیحدہ اور قلعہ اور گڑھ مع جو طرفی کھان کے انواع اقسام کے بنائے گئے۔ ۴۵۔ جو بستی ایک کوس جوڑی اور آٹھ کوس لمبی ہو اسکو پربت کہتے ہیں اور پربت اور اتر طرف آتا ہو اور سیدھے بائیں وغیرہ اسکے گرد مکھ ہوتے ہیں۔ ۴۶۔ اور جو بستی آدھ کوس جوڑی اور چار کوس لمبی ہو اسکو کھٹک کہتے ہیں اور جو بستی اسکی آدھی ہو اسکو کرنگ کہتے ہیں اور جو اس سے بھی آدھی ہو اسکو درونی مکھ اور درونی مکھ کے آدھے کو آنت بھاگ کہتے ہیں۔ ۴۷۔ اور وہ بنو تھان

کے ہر اور جو قلعہ بانس وغیرہ سے چار و طرف سے گھرا ہوا ہو اسکو بھی پڑھتے ہیں اور جہین
وزیر و امیر لوگ رہتے ہوں اور اس بستی میں عیش و عشرت کی چیزیں سب موجود ہوں
اسکو ساکھا کر کہتے ہیں - ۱۴۴ جس بستی میں شودر لوگ بہت رہتے ہوں اور پانی اور
ان دھن اور کھیتی کرنیوالے ہوں اور اسکا رقبہ بھی زیادہ ہو اسکو گرام کہتے ہیں -
۱۴۵ اور اگر بستی سے علاوہ کسی کام کے واسطے گھر بناوے تو اسکو بھی بستی کہتے ہیں -
۱۴۶ اور دوسرے کی زمین وزمیندار ہی میں بنیز کا شکاری کے لوگ خواہ وہ راجا کے نوکر
یا غریب یا دوست یا دشمن زور آور ہوں جہاں رہتے ہوں وہ گائون اگر می کھلاتا ہی -
۱۴۷ اور جہاں گویال (امیر) سب برتن وغیرہ گاڑی پر رکھتے ہوں اور گائون بھی ان لوگوں
کے پاس بہت ہوں اور دھان بازار بنواؤ انھوں کی خواہش کے مطابق زمین ملی ہو اسکو
گھوس کہتے ہیں - ۱۴۸ اس طرح وہ سب آدمی اپنے اپنے رہنے کے لئے مشہور دیہات وغیرہ
آباد کر کے امین عورت و مرد سب رہنے لگے - ۱۴۹ اور ان لوگوں کو گھر کے عرصہ درخت کا
سایہ ہی گویا گھر تھا بعد ازاں اس کے نقشہ اور طرز کو خیال کر کے سبھوں نے گھر بنانا شروع کیا
۱۵۰ کیونکہ پہلے کلپ برچھو کی شاخیں مثل مکانات کے ہوتی تھیں اور کلپ برچھو سے اور
جو درخت پیدا ہونے لگے ان کی بھی شاخیں ویسی ہی ہوتی گئیں کوئی چھوٹے مکان کی طرح
کوئی بڑے مکان کی طرح اسی طرح وہ سب لوگ بھی چھوٹے اور بڑے مکان بنانے لگے -
۱۵۱ ۱۵۲ جہین جی بس طرح کلپ برچھوں کی شاخیں پہلے ہوتی تھیں اسی طرح کے اب گھر
ہوتے ہیں جہین سب آدمی رہتے ہیں - ۱۵۳ اور وہ سب مرد و عورت ان گھروں میں رہ کر
بیویا وغیرہ سوچنے لگے جسوقت شہد والے درخت نیست نابود ہو گئے - ۱۵۴ اور ان کے
سب سے سب لوگ بے قرار اور بھوک پیاس سے عاجز ہوئے تب ان لوگوں کو تریا جگ کے
پہلے چرن میں سترہ حاصل ہوئی - ۱۵۵ یعنی پانی برسا اور جو پانی برس کر گرنوں
میں رہ گیا - ۱۵۶ اسی جل اسکو کہے (یعنی جو پانی گرنوں میں بھر رہا تھا اس سے)
مدی اور جھیل اور چشمہ وغیرہ جاری ہو گئے - ۱۵۷ اسی پانی سے گائون اور جھل وغیرہ کی
تمام زمین میں بنیز جڑتے اور بوٹے چودہ طرح کی اوکھد (نباتات) پیدا ہوئی - ۱۵۸ اوفیل
کے پھل اور پھول اور درخت اور بیل بوڑھے پیدا ہوئے - غرض کہ تریا جگ میں پہلے یہی
اوکھد یوں کی تھی - ۱۵۹ تریا جگ میں انھیں اوکھد یوں سے سب لوگ جیتے تھے

کچھ دنوں کے بعد ان سبھوں کو از خود طبیعت میں مسدا اور لالچ پیدا ہوا۔ ۶۲۔ اور اس
 مسدا اور لالچ کے سبب سے نڈی اور کھیت اور پہاڑ اور درخت اور لٹا اور اوکھدہ وغیرہ کو
 اپنے اپنے قوت و زور کے سبب سے جس قدر جسکو حاصل تھا اُس قدر اُس نے اپنے قبضہ میں
 لیا۔ ۶۳۔ پھر برہمن اُسی دُوش سے وہ سب چیزیں اُن سبھوں کے دیکھتے ہی دیکھتے
 کبارگی زمین میں سما گئیں۔ ۶۴۔ جب سب چیزیں نالود ہو گئیں تب سب لوگ گھبرا کر
 اور بھوکھ سے عاجز ہو کر برہمن کے پاس گئے۔ ۶۵۔ اور جس طرح زمین نے اُن سب
 اوکھدہ کو کھالیا تھا اُسکو مفصل بیان کیا تب برہمن نے سب پر ربت کو بچھڑا دیا اور
 برہمنی رُوی کو دُھنے لگے۔ ۶۶۔ تو بعض دُودھ کے زمین سے وہی سب چیزیں
 پیدا ہوئیں اور ان کے بچوں سے تمام گھر اور جنگل میں اوکھدہ وغیرہ پیدا ہوئیں۔
 ۶۷۔ اور یہ دیکھنے بھلون کے سترہ طرح کا بیج پیدا ہوا اُسکو بیان کرتا ہوں سنو۔ برہمن
 یعنی چاول جو گہنوں میں پل۔ ۶۸۔ کھجور۔ آوار۔ چلو۔ دوکھا۔ چٹا۔
 ماش۔ مونگ۔ مسور۔ کشا۔ کرکھی۔ ۶۹۔ آرکھ۔ چٹک۔ وغیرہ۔ سترہ
 گن کھاتے ہیں اور یہی سب اقسام کے غلہ گرام اوکھدہ بھی کھاتے ہیں۔ ۷۰۔ اور جو اوکھدہ
 کھانے میں کام آتی ہے وہ خواہ گھروں میں خواہ جنگل میں پیدا ہو جو وہ قسم کی ہے۔ یعنی چاول
 جو۔ گہنوں۔ آبل۔ پل۔ اے۔ کھجور۔ کھجور۔ ساوان۔ نیوار۔ پل۔ گوہ۔ کھجور۔
 ۷۱۔ کرکھ۔ کرکھ۔ بینکرہ۔ یہ سب گھر میں پیدا ہوں یا جنگل میں مگر جو وہ اوکھدہ
 کھاتے ہیں۔ ۷۲۔ جب اُن لوگوں کے بونے پر بھی بے سب اوکھدہ زمین پر نہ چھین
 تو برہمن نے دوسری تدبیر کی۔ ۷۳۔ یعنی اپنی کرکھیا سترہ کو پیدا کیا اُس وقت وہ سب
 اوکھدہ ہی جو پہلے کی پڑی تھیں پیدا ہوئیں۔ ۷۴۔ جبکہ یہ بات حاصل ہوئی اور جایدا
 پیدا ہوئی تو جسکا جیسا خواص تھا اُسکا ویسا مٹیہ قائم کیا۔ ۷۵۔ اور سب برہمن اور
 اشرمون کا دھرم مقرر کیا اور دھرم اور ارتھ کے پالنے والے سب برہمن کا استھان بھی
 علیحدہ علیحدہ مقرر کیا۔ ۷۶۔ سمپورن کر یا کر نیوالے براہمنوں کا استھان پر اجا پتہ
 استھان مقرر کیا اور جو چھتری لڑائی کے میدان سے نہیں بھاگتے ہیں اُنکا اندر استھان ہی
 ۷۷۔ اور جو ہمیں اپنے دھرم میں قائم رہتے ہیں اُنکو بائو لوک ملتا ہے۔ اور جو شودر سمیوا
 یا کر تاسی اُسکو گندھرب نوک ملتا ہے۔ ۷۸۔ اور جو لوگ گروؤں کے گھر میں رہ کر گروؤں کی خدمت

मर्ते हैं वे लोग असंख्य हैं जिनका अंश ही नहीं है।
 १००. और इन बासीसों को सृष्टि रक्षित करने का अंश ही नहीं है।
 का अंश ही नहीं है।
 १००. और इन बासीसों को सृष्टि रक्षित करने का अंश ही नहीं है।
 १००. और इन बासीसों को सृष्टि रक्षित करने का अंश ही नहीं है।

मृ. मार्कण्डेय उवाच ॥ ततोऽभिधाय तत्त-
 स्य जज्ञिरे मानसी प्रजाः । तच्छरीरसमुत्प-
 न्नैः कार्यैस्तैः कारणैः सह ॥ १ ॥ २ ॥ २ ॥ १ ॥

टी. मार्कण्डेयजी बोले कि हे कौटुकि फिर ब्रह्माजी ने ध्यान करके मा-
 नसी प्रजा को अपने शरीर से कार्य और कारण संयुक्त उत्पन्न किया ॥ १ ॥

मृ. क्षेत्रज्ञाः समवर्तन्त गात्रेभ्यस्तस्य धीमतः । ते
 सर्वे समवर्तन्त ये मया प्रागुदाहृताः ॥ २ ॥ २ ॥

टी. और बुद्धिमान ब्रह्माजी के शरीर से क्षेत्रज्ञ पुरुष यानी ब्रह्मज्ञानी लोग
 उत्पन्न हुये और वह सब लोग शरीर ही से पैदा हुये जो पहिले कह चुका हूँ ॥ २ ॥

मृ. देवाद्याः स्थावरान्ताश्च वैगुण्यविषयाः सृताः । ए-
 वं भूतानि सृष्टानि स्थानराणि चराणि च ॥ ३ ॥

टी. देवता से स्थावर तक सब प्रजा वैगुण्य विषयक कहलाते हैं इसी प्रकार से
 स्थावर जंगम प्राणियों को ब्रह्माजी ने पैदा किया ॥ ३ ॥

मृ. यदा स्य ताः प्रजाः सर्वानव्यवर्तन्त धीमतः । अ-
 धान्यान्मानसान् पुत्रान् सदृशान् आत्मनोः सृजन् ॥ ४ ॥

टी. जब इन प्रजाओं से सृष्टि न बड़ी तब अपने समान मानसी पुत्रों
 को ब्रह्माजी ने पैदा किया ॥ ४ ॥

मृ. भृगुं पुलस्त्यं पुलहं क्रतुमङ्गिरसं तथा । मरीचिं
 दक्षमत्रिञ्चनशिष्टं चैव मानसं ॥ ५ ॥ ५ ॥

टी. यानी भृगु और पुलस्त्य और पुलह और क्रतु और मङ्गिरा और

मरिचि और दक्ष और अत्रि और वशिष्ठ ॥ ५ ॥

मू. नवब्रह्माण्डत्वेतेपुराणेनिश्चयङ्गताः । ततो
सृजत्पुनर्ब्रह्मा रुद्रं क्रोधात्मसम्भवं ॥ ६ ॥

टी. ये सब नव ब्रह्म पुराणों में कहलाते हैं बाद इसके ब्रह्मा ने अपने क्रोध से एकादश रुद्र को पैदा किया ॥ ६ ॥

मू. संकल्पञ्चैव धर्मञ्च पूर्वेषामपि पूर्वजं । सन-
न्दनादयो ये च पूर्वसृष्टाः स्वयम्भुवा ॥ ७ ॥

टी. और संकल्प और धर्म को पैदा किया जो पहिलों से पहिले पैदा हैं और सनन्दनादि को पहिले ही काल में पैदा किया ॥ ७ ॥

मू. न तेलोकेषु सज्जन्तो निर्पेक्षाः समाहिताः । सर्वे
तेऽनागतज्ञाना वीतरागविमत्सराः ॥ ८ ॥

टी. ये लोग इस लोक में आशक्त न हुवे निर्पेक्ष और अनागत यानी निरन्तर ज्ञानी राग और मत्सर वगैरा से रहित हुवे ॥ ८ ॥

मू. तेष्वेवं निरपेक्षेषु लोकसृष्टौ महात्मनः । ब्रह्म-
णोऽभून्महा क्रोधस्तत्रोत्पन्नोऽर्कसन्निभः ॥ ९ ॥

टी. ये लोग जब सृष्टि करने से अलग होगये तब ब्रह्माने महा क्रोध किया और उस समय सूर्य के समान महान्तेजवान् ॥ ९ ॥

मू. अर्द्धनारीनरवपुः पुरुषोऽतिशरीरवान् । विभ-
जात्मानमित्युक्ता स तदन्तर्दधे ततः ॥ १० ॥

टी. आधा अर्द्ध स्त्री आधा अर्द्ध पुरुष का प्रगट हुआ और कहा कि आत्मा का विभाग करो इतना कहकर अन्तर्धान होगया ॥ १० ॥

मू. सचोक्तो वै पृथक् स्त्रीत्वं पुरुषत्वं तथा करोत् । वि-
भेदं पुरुषत्वञ्च दशधा चैकधा तु सः ॥ ११ ॥

टी. यह आज्ञा उसकी पाकर ब्रह्मा ने स्त्री और पुरुष को पृथक् पृथक् पैदा किया और पुरुषों में ग्यारह भेद किये ॥ ११ ॥

मू. सौम्यासौम्यैस्तथाशान्तैःपुंस्त्वंस्त्रीत्वञ्चसप्रभुः।

विभेदबहुधादेवाःपुरुषैरसितैःसितैः॥ १२ ॥

टी. और कितने सुजन और दुर्जन और शान्त और कितने श्वेत और श्याम स्त्री पुरुष देवता इत्यादि को पैदा किया ॥ १२ ॥

मू. ततोब्रह्मात्मसम्भूतंपूर्व्वंस्वायम्भुवंप्रभुः।आत्म-

नःसदृशं कृत्वाप्रजापालंमनुं द्विज ॥ १३ ॥

टी. हे मुनि फिर ब्रह्मा ने अपने शरीर से अपने तुल्य स्वायम्भू मनु को जिन्हें पहिले पैदा किया था प्रजापालन में प्रवृत्त किया ॥ १३ ॥

मू. शतरूपाञ्चतानारीतपोनिर्धूतकल्मषां।स्वा-

यम्भुवोमनुर्देवाःपत्नीत्वेजगृहेविभुः॥ १४ ॥

टी. और जो बहुत तपस्विनी और निष्पापिनी शतरूपा नाम स्त्री को पैदा किया था वही स्वायम्भुमनु की स्त्री हुई ॥ १४ ॥

मू. तस्माच्चपुरुषात्पुत्रौशतरूपाव्यजायत।प्रि-

यव्रतोत्तानपादौप्रख्यातावात्मकर्मभिः॥ १५ ॥

टी. और उन स्वायम्भुमनु से शतरूपा के गर्भ रहिकर दो लड़के पैदा हुवे बड़े का नाम प्रियव्रत और छोटे का नाम उत्तानपाद हुआ दोनों अपने पराक्रम से सम्पूर्ण पृथ्वी में विख्यात हुवे ॥ १५ ॥

मू. कन्येदेवतयाऋद्धिंप्रसूतिञ्चततःपिता।ददौ

प्रसूतिंदक्षायतयाऋद्धिरुचेःपुरा ॥ १६ ॥

टी. बाद इसके उनके दो कन्या पैदा हुई पहिली का नाम ऋद्धि दूसरी का नाम प्रसूति ऋद्धि को रुचिमुनि से और प्रसूति को दक्ष से विवाह दिया ॥ १६ ॥

मू. प्रजापतिःसजग्राहतयोर्यज्ञःसदक्षिणः।पु-

त्रोयज्ञेमहाभागदम्पतीमिथुनंततः॥ १७ ॥

टी. तब दक्ष प्रजापति और प्रसूति से यज्ञपुरुष और दक्षिणा उनकी स्त्री दोनों जुड़िश पैदा हुवे ॥ १७ ॥

मू. यजस्य दक्षिणा यान्तु पुत्रा द्वादश जजिरे । यामा
इति समाख्याता देवाः स्वायम्भुवोऽन्तरे ॥ १८ ॥

टी. फिर यज्ञ के दक्षिणा स्त्री से बारह पुत्र उत्पन्न हुवे वही लोग स्वायम्भुवमन्वन्तर में यामा प्रसिद्ध हुवे ॥ १८ ॥

मू. तस्य पुत्रास्तु यजस्य दक्षिणायां सभास्वराः । प्रसू-
त्याञ्च तथा दक्षश्च तसो विशति स्तथा ॥ १९ ॥

टी. और वह सब बड़े तेजस्वी हुवे और प्रसूति के दक्ष में और चौबीस कन्या उत्पन्न हुईं हे ब्रह्मन् उन सबके नाम सुनो ॥ १९ ॥

मू. सप्तर्ज्जकन्यास्तासाञ्च सम्यङ् नामानि मे शृणु । अ-
ह्वालक्ष्मीर्धृतिस्तुष्टिः पुष्टिर्मेधा क्रिया तथा ॥ २० ॥

टी. अष्टा १ लक्ष्मी २ धृति ३ तुष्टि ४ पुष्टि ५ मेधा ६ क्रिया ७ ॥ २० ॥

मू. बुद्धिर्लज्जा वपुः शान्तिः सिद्धिर्कीर्तिस्त्वयोदशी ।
पत्न्यर्थे प्रतिजग्राह धर्म्मो दाक्षायिणीः प्रभु ॥ २१ ॥

टी. और बुद्धि ८ लज्जा ९ वपु १० शान्ति ११ सिद्धि १२ कीर्ति १३ इन सभी का विवाह धर्म्म से हुआ ॥ २१ ॥

मू. नाम्न्यः शिष्या यवीयस्य एकादश सुलोचनाः । ख्या-
तिः सत्यथ सम्भृतिः स्मृतिः प्रीतिस्तथा क्षमा ॥ २२ ॥

टी. और उन सभी से छोटी जो ग्यारह कन्या थीं उनके नाम सुनो ख्याति १ सती २ सम्भृति ३ स्मृति ४ प्रीति ५ क्षमा ६ ॥ २२ ॥

मू. सन्ततिश्चानसूया च ऊर्ज्जा स्वाहा स्वधा तथा । भृ-
गुर्भवो मरीचिश्च तथा चैवाङ्गिरा मुनिः ॥ २३ ॥

टी. और सन्तति ७ अनसूया ८ ऊर्ज्जा ९ स्वाहा १० स्वधा ११ इन सभी का विवाह भृगु महादेव १२ मरीचि ३ अङ्गिरा ४ ॥ २३ ॥

मू. पुलस्त्यः पुलहश्चैव क्रतुश्च नृपयस्तथा । वशि-
ष्ठाः त्रिस्तथा वह्निः पितरश्च यथाक्रमं ॥ २४ ॥

दी. पुलस्त्य ५ पुलह ६ क्रतु ७ वशिष्ठ ८ अत्रि ९ अग्नि १० पितर ११ इ-
सी क्रम से इन लोगों के साथ हुआ ॥ २४ ॥

मू. स्वात्माद्यानगृहुः कन्यामुनयोमुनिसत्तमाः
अद्वाकामं श्रीश्वदर्पेनियमं धृतिरात्मजं ॥ २५ ॥

दी. हे मुनि सत्तम जब इन लोगों की सन्तान सुनिये अद्वा का पुत्र
काम और श्री का दर्प और धृति का नियम ॥ २५ ॥

मू. सन्तोषश्चतथानुदिलोभं पुष्टिरजायत । मेधा-
श्रुतं क्रियादाहं नयं विनयमेव च ॥ २६ ॥

दी. और दुष्टि का सन्तोष और पुष्टि का लोभ और मेधा का श्रुत
और क्रिया का नय और विनय ॥ २६ ॥

मू. बोधं बुद्धिस्तथालज्जाविनयं वपुरात्मजं । व्यव-
सायं प्रजज्ञे वै सेशं शान्तिरमृतं ॥ २७ ॥ २७ ॥

दी. और बुद्धि का बोध और लज्जा का विनय और वपु का व्यवसाय
और शान्ति का शेष ॥ २७ ॥

मू. सुखं सिद्धिर्यशः कीर्तिरित्येते धर्मयोगिनः । का-
मादतिमुदं हर्षं धर्मपौत्रमसूयत ॥ २८ ॥

दी. और सिद्धि का सुख और कीर्ति का यश ये सब धर्मयोगि धर्म
की सन्तान कहलाते हैं ॥ २८ ॥

मू. हिंसाभार्यात्वधर्मे स्य तस्यां जज्ञेन यानृतं । क-
न्याच निर्ऋतिस्तस्यामुतौ द्वौ नरं भयम् ॥ २९ ॥

दी. और अधर्म की हिंसा नाम स्त्री से अनृत पुत्र और निर्ऋत नाम क-
न्या पैदा हुई और उसके और दो पुत्र पैदा हुवे नरक और भय ॥ २९ ॥

मू. माया च वेदना चैव मिथुनं दयमेतयोः । तयोर्ज-
नेऽथ चैव मायामृत्युं भूतापहारिणं ॥ ३० ॥ ३० ॥

दी. बाद इसके और दो कन्या पैदा हुईं एक का नाम माया दूसरी

वेदना नाम ज्ञाया पुत्र मृत्यु दुःखा जो सब जीवों को नाश करता है ॥ ३० ॥

मू. वेदनात्म सुतञ्चापि दुःखं जज्ञे यो रवात् । मृत्यो
व्याधिजराशोकतृष्णाक्रोधाश्च जज्ञिरे ॥ ३१ ॥

टी. और और सब वेदना के दुःख नाम पुत्र दुःखा और मृत्यु के पुत्र व्याधि
और जरा और शोक और तृष्णा और क्रोध उत्पन्न हुये ॥ ३१ ॥

मू. दुःखोद्भवाः सृता ह्येते सर्वे ता धर्मलक्षणाः । नै
पां भार्या स्ति पुत्रो वा सर्वे ते ह्युद्धरेतसः ॥ ३२ ॥

टी. ये सब अधर्मी हैं इन सबों के न स्त्री है न पुत्र है और दुःख हीने
इन लोगों की उत्पत्ति है ये सब ऊद्धरेतस कहलाते हैं ॥ ३२ ॥

मू. निर्वर्ततिश्च तथा चान्या मृत्यो भार्या भवन्मुने ।
अलक्ष्मीर्नाम तस्याश्च मृत्योः पुत्राश्च तु देश ॥ ३३ ॥

टी. और हे मुनि मृत्यु की प्रथम भार्या निर्वर्तति और दूसरी अ-
लक्ष्मी है जिससे मृत्यु के चौदह पुत्र हुये ॥ ३३ ॥

मू. अलक्ष्मी पुत्र का ह्येते मृत्यो रदेश कारिणः । विना
शकालेषु न रात्रि भजन्त्येते शृणुष्व तान् ॥ ३४ ॥

टी. और वे सब मृत्यु के आज्ञाकारी हैं मनुष्यों के विनाश काल
में जिस जिस अङ्ग में साथ रहते हैं वह सुनो ॥ ३४ ॥

मू. इन्द्रियेषु दशमे ते तथा च मनसि स्थिताः । स्वस्व
नरं स्त्रियं वापि विष्णुप्रेषो जयन्ति हि ॥ ३५ ॥

टी. दशौ इन्द्रियों में और मन में बेलोग रहकर अपने अपने वि-
षय में स्त्री और पुरुषों को मिलाते हैं ॥ ३५ ॥

मू. अथेन्द्रियाणि वा क्रम्य रागक्रोधादिभिर्नरान् । यो
जयन्ति यथा हानिं यान्त्यधर्मादिभिर्हि ज ॥ ३६ ॥

टी. इन्द्रियों को आकर्षण करके मनुष्यों को क्रोधादिक में योजित करते हैं
जिससे वे ब्रह्मन् मनुष्य अधर्मा इत्यादि करके हानि को प्राप्त होता है ॥ ३६ ॥

मू. अहंकारगतश्चान्यस्तथान्योबुद्धिसंस्थितः। वि-
नाशायचस्त्रीणां यतन्ते मोहसंश्रिताः ॥ ३७ ॥

टी. कोई अहंकार में कोई बुद्धि में रहकर स्त्रियों और पुरुषों के वि-
नाश के वास्ते यत्न करते रहते हैं ॥ ३७ ॥

मू. तथैवान्ये गृहे पुसांदुःसहो नाम विश्रुतः। क्षुत्क्षामोऽधोमुखो न गन्श्चीरीका कसमस्वनः ॥ ३८ ॥

टी. इसी तरह एक दूसरा भी दुःसह नाम मनुष्यों के घर में विघ्न डालने वाला रहता है जो भूख से पीड़ित और अधोमुख और नंगा है और कौवे की ऐसी आवाज है ॥ ३८ ॥

मू. तत्सर्वान्खादिनुंसृष्टो ब्रह्माण्डतपसोनिधिः। दं-
ष्ट्राकसलमत्यर्थं विदुतास्यं सुभैरवम् ॥ ३९ ॥

टी. इसको ब्रह्माने जब पैदा किया तो बड़ा मुख और विकराल दाँत और भयावनी सूरत से सब को खाने को मुस्तैद हुआ ॥ ३९ ॥

मू. तमनुकाममाहेदं ब्रह्मालोकपितामहः। सर्व-
ब्रह्ममयः शुद्धः कारणं जगतोऽव्ययः ॥ ४० ॥

टी. तब वह लोक पितामह शुद्ध ब्रह्मस्वरूपी सम्पूर्ण जगत् के कारण अव्यय ब्रह्माजी उससे कहने लगे ॥ ४० ॥

मू. ब्रह्मो वाच ॥ नातव्यन्ते जगदिदं जहिकोपंश-
मंत्रज। तजैतान्तामसीं वृत्तिमपास्य रजसः क-
लां ॥ ४१ ॥ ४१ ॥ ४१ ॥ ४१ ॥ ४१ ॥

टी. कि तुम इस जगत् को मत खाव अपना क्रोध निहत्त करो और अपने मन को स्थिर करो तामसी वृत्ति और राजसी कला को छोड़ दो ॥ ४१ ॥

मू. दुःसह उवाच ॥ क्षुक्षामोऽस्मि जगन्नायपिपा-
सुश्चापि दुर्बलः। कथं तृप्ती मया द्वाधमं वेयं बलवान्क-
थं ॥ कश्चाश्रयो ममारया हि वर्तेय यत्र निवृत्तः ॥ ४२ ॥

टी० तब दुसह कहने लगा कि हे जगन्नाथ मैं दुर्वल और बुधा तूया से पीड़ित हूँ मुझे किस तरह वृद्धि होगी और शरीर में कैसे बल होगा और कहाँ मेरा आश्रय है वृद्ध स्थान मुझे बतलाइये कि जहाँ निवृत्त होकर रहूँ ॥ ४२ ॥

मू० ब्रह्मो वाच ॥ तवाश्रयो गृहं पुंसां जनश्चाधा-
र्मिको बलं । पुष्टिं नित्यक्रिया हान्या भवा-
न्वत्स गमिष्यति ॥ ४३ ॥ ४३ ॥ ४३ ॥

टी० तब ब्रह्माजी बोले कि जहाँ अधर्मी पुरुष रहते हैं वहाँ तुम्हारे रहने की जगह है और जहाँ नित्य क्रिया की हानि होती है उता से तुमको बल प्राप्त होगा वही तुम जाव ॥ ४३ ॥

मू० वृथा स्फोटश्च ते बस्त्रमाहारश्च दहामिते ।
क्षतं कीटावपन्नश्च तथा श्वभिरवेक्षितं ॥ ४४ ॥

टी० और जो लोग वृथा हँसते या बोलते हैं वही तुम्हारा बस्त्र है और जिस में रुधिर या कीड़ा पड़ा हो अथवा कुत्ते का देखा हुआ हो ॥ ४४ ॥

मू० भग्नभाण्डगतं तद्वत् मुखवातोपशामितं । उ-
च्छिष्टापक्कमस्विन्नमवलीढमसंस्कृतं ॥ ४५ ॥

टी० और जो फूटे बर्तन में रक्खा हो या मुख से फूँक कर बंटा किया गया हो या जूँटा या अपक्क हो या जो जन संस्कार होन हो ॥ ४५ ॥

मू० भग्नासनस्थितैर्भुक्तमासन्नागतमेव च । विदि-
द्गुणं सन्धयोश्च नृत्यवाद्यस्वरो नमं ॥ ४६ ॥

टी० और फटे हुये आसन पर बैठ कर या अस्थायी को न देकर या अविहित दिशा की ओर बैठ कर या सन्ध्या के समय चाना चने या गाने या किसी बाजा बजने के वक्त जो कोई खाना हो ॥ ४६ ॥

मू० उदरगोपहतं भुक्तमुदरमादृष्टमेव च । यच्चोप-
तवत्किञ्चित् भक्ष्यं पेयमथापि वा ॥ ४७ ॥

टी० या रजस्वला स्त्री का देखा हुआ या छुआ हुआ या किसी

जुगान्ना हुआ या किसी तरह का दानित अन्न जो कोड़े खाता हो वह तुम्हारा ही भक्ष्य होगा ॥ ४७ ॥

मू. एतानितवपुष्ट्यर्थमन्यचापिदामिते । अथ ह
याहुतंदत्तमस्नातैर्वदवत्तया ॥ ४८ ॥ ४८ ॥

टी. वह सब तुम्हको दिया और और भी तुम्हारी पुष्टि के वास्ते देता हूँ मुनो कि अन्न और स्नान बिना अभिमान युक्त जो दोम दान करता है वह तुम्हें मिलेगा

मू. यन्नामुपूर्वकंक्षिप्तमनर्थोक्तमेवच । त्यक्तु
माविष्टतंयत्तुदत्तं चैवातिविस्मयात् ॥ ४९ ॥

टी. और बिना जल की छिड़की हुई वस्तु और जो वस्तु बेकाम पड़ी हो और जो अपनी त्यागी हुई हो और जिस अन्न को बहुत लोगों ने देखा हो और जो अन्न किसी ने भय से दिया हो ॥ ४९ ॥

मू. दुष्टंक्रुशार्तदत्तञ्चयक्षतद्वागितत्फलं । यच्चपौ
नर्भवःकिञ्चित्करोत्यामुष्मिकंक्रमं ॥ ५० ॥

टी. और जो अन्न दुष्ट या क्रोधी या दुर्ग्री का दिया हुआ हो उसके खाने का फल तुम्हें होगा और पुनर्भूलोग जो कर्म करते हों ॥ ५० ॥

मू. यच्चपौनर्भवायोषित्तद्यक्षतवत्प्रये । कन्या
शुल्कोपधानायसमुपास्तेधनक्रियाः ॥ ५१ ॥

टी. और पुनर्भवा स्त्री भी जो कर्म करती हो वह सब तुम्हारी पुष्टि के लिये हे यक्ष मैं देता हूँ और कन्या बेचकर जो धन पैदा करता है और उस धन से जो कुछ कर्म करता है ॥ ५१ ॥

मू. तथैवयक्षपुष्ट्यर्थमसच्छास्त्रक्रियाश्चयाः । य
च्चार्यनिवृत्तंकिञ्चिदधीतंयन्नसत्यतः ॥ ५२ ॥

टी. और इसी तरह जो कर्म बिना शास्त्र के करता है वह सब तुम्हारी पुष्टि के वास्ते देता हूँ और जो बिना अर्थ का भोजन या अध्ययन है ॥ ५२ ॥

मू. तत्सर्वंतवकालांश्चदामि तवसिद्धये । गु-

व्यिण्य भिगमे सन्धानित्यकार्यव्यतिक्रमे ॥ ५३ ॥

टी. इन सबका फल तुमको मिलेगा और तुम्हारी सिद्धिका सम्पत्ति
यत्न करता हूँ सुनौ कि गर्भिणी से गमन करने वक्त और सन्ध्या और
नित्य कर्म के व्यतिक्रम यानी छूट जाने के वक्त ॥ ५३ ॥

मू. असच्छास्त्रक्रियालापदूषितेषु च दुःसह । तवा
भिभवसामर्थ्यं भविष्यति सदानृषु ॥ ५४ ॥

टी. और असत् शास्त्र की क्रिया या आलाप करने में जो वक्त गुजरें इन वक्तों
में हे दुःसह तुम्हारा सदा पापक्रम मनुष्यों पर होगा ॥ ५४ ॥

मू. पङ्क्तिभेदे दृष्टापाके पाकभेदे तथा क्रिया । नि
त्यञ्च गृह कलहे भविता वसति स्तव ॥ ५५ ॥

टी. जब तुम्हारे रहने की जगह बतलाता हूँ सुनौ कि जहाँ पर पंक्ति
भेद होता हो और जहाँ अर्थ पाक होता हो यानी अपने ही वास्ते रसोई बना
ता हो या जिस घर में सदा अक्रिया या कलह होता हो वहाँ तुम रहा करो ॥ ५५ ॥

मू. अपोष्यमाणे च तथा बड़े गोवाहनादिके । अ-
सत्याभ्युक्षिता गोरकाले त्वत्तोभयं नृणां ॥ ५६ ॥

टी. और जहाँ पर बिना घास भूसा दिये हुये गौ घोड़ा इत्यादि पशु को बाँ
ध देते हों और जिस घर में श्यास्त होने के प्रथम अर्धरात्रिकाल में माँस न दी
जाय ऐसे स्थानों में मनुष्यों को तुम से भय होगा ॥ ५६ ॥

मू. नक्षत्रग्रहपीडा मुत्रिविधोत्पातदर्शने । अशा-
न्तिक परान्यक्षनरानभिभविष्यति ॥ ५७ ॥

टी. और नक्षत्र या ग्रह रुत पीडा होने पर या तीनों तरह के उत्पान
दिग्बलाई देने पर जो मनुष्य उसकी शान्ति नहीं करते हैं उन सबोंके
तुम अपना भय दिखानोगे ॥ ५७ ॥

मू. दृष्टोपवासिनो मर्त्या द्यूतस्त्रीपुंसदारताः । त्व-
द्वाषणोपकर्त्तारो वै डालवृत्तिकाश्च ये ॥ ५८ ॥

टी. और जो मनुष्य वृथा उपवास करता है और जो जुआँ और स्त्री में संन्यास
रहता है और जो दुर्बचन बोलता है और जो बिडाल वृत्तों यानी वि-
ल्ली की तरह छल से अपना कार्य सिद्ध करता है ॥ ५८ ॥

मू. अत्र संचारिणा धीतमिज्या चाविदुषाकृता । त-
पो बने ग्राम्यभुजां तथैवानिर्जितात्मनां ॥ ५९ ॥

टी. और जो बिना ब्रह्मचर्य के वेदपाठ करता है और सूर्यों का कि-
या हुआ यज्ञ और तपोवन में गृहवासियों की तरह कर्म और चंच-
ल मन वाले का अध्ययन यानी वेदपाठ इत्यादि ॥ ५९ ॥

मू. ब्राह्मण क्षत्रियविशंशुद्राणाञ्च स्वकर्मतः ।
परिच्युतानां वा चेष्टा परलोकार्थं गोप्सताम् ॥ ६० ॥

टी. ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र जो अपने कर्म को छोड़ कर परलोक
के वास्ते क्रिया करते हैं ॥ ६० ॥

मू. तस्याद्ययत्फलं सर्वतन्नेयस्य भविष्यति । अन्य-
च्चेत्ते प्रयच्छामि पुष्ट्यर्थं सन्निबोधत ॥ ६१ ॥

टी. इन सभी की क्रिया का फल है यक्ष तुमको मिलेगा और भी
तुम्हारी पुष्टि के वास्ते देता हूँ सुनो ॥ ६१ ॥

मू. भवतो वैश्वदेवान्तेनामोच्चारणपूर्वकं । एतत्त-
वेति दास्यन्ति भवतो बलिमूर्जितं ॥ ६२ ॥

टी. कि वैश्वदेव कर्म के अन्त में ब्राह्मण लोग तुम्हारा नाम लेकर
तुम्हें भी बलि देंगे उसी से तुमकी पुष्टि होगी ॥ ६२ ॥

मू. यः संस्कृताशीविधिवच्छिरन्तस्तथावहिः ।
अलोलुपोऽजितस्त्रीकस्तद्देहमपवर्जयेत् ॥ ६३ ॥

टी. और जो लोग संस्कार क्रिया हुआ अन्न भोजन करते हों और स्थ-
न्तर बाहिर से पवित्र रहते हों और लोभ और स्त्री से वश न हों और
कलह न करते हों हे यक्ष उन लोगों के पास तुम मत जाना ॥ ६३ ॥

मू. पूज्यन्ते ह्यकव्याभ्यां देवताः पितरस्तथा । या-
मयोऽतिथयश्चापि न द्वेहं यक्षवर्ज्यम् ॥ ६४ ॥

टी. और जहाँ पर देवता पितर का पूजन हव्य और कव्य से होता हो और
जहाँ ब्राह्मण और अभ्यागतों को भोजन मिलता हो वहाँ भी न जाना ॥ ६४ ॥

मू. यत्र मैत्रीगृहे बालवृद्धयोऽपि नोपुच । तथा
स्वजनैर्लोपुगृहं तच्चापि बर्ज्यम् ॥ ६५ ॥ ६५ ॥

टी. और जिस घर में लड़का और बूढ़ा और स्त्री और नौकर चाकर
वैराग के आपस में प्रीति हो वहाँ भी न जाना ॥ ६५ ॥

मू. योषितोऽभिरतायत्र नर्वाहर्गमनोत्सुकाः । त-
ज्ज्ञान्विता सदा गेहं यक्षतत्परिवर्ज्यम् ॥ ६६ ॥

टी. और जिस घर में स्त्रियाँ लाज और शर्म के साथ रहती
हों वहाँ तुम हरगिज न जाना ॥ ६६ ॥

मू. वयःसम्बन्धयोग्यानि शयनान्यशनानि च । य-
त्र गेहे त्वया यक्षतद्वर्ज्यं वचनान्मम ॥ ६७ ॥

टी. और जिस घर में चापनी उमर और औकात के मवाफिक शयन और
भोजन करते हों हे यक्ष उस घर को भी हमारे कहने से छोड़ देना ॥ ६७ ॥

मू. वचकाणि कानि त्वं साधुकर्मण्यवस्थिताः । सा-
मान्योपस्कारैर्युक्तास्त्यजेथा यक्षतद्वहं ॥ ६८ ॥

टी. और जिस घर में नित्य दया वाले लोग रहते हों और अच्छे कामों में त-
यार हों और उसी तरह का चालचलन रखते हों वहाँ भी न जाना ॥ ६८ ॥

मू. यत्रासनस्थास्तिष्ठत्सु गुरुवृद्धदिजातिषु । न ति-
ष्ठन्ति गृहं तच्च वर्ज्यं यक्ष त्वया सदा ॥ ६९ ॥

टी. और जिस घर में गुरु या बूढ़ या ब्राह्मण अगर आवैं और उनके सामने
बराबर घरवाला न बैदता हो (मारे अदब के) वहाँ भी तुम कभी न जाना ॥ ६९ ॥

मू. तरुगुल्मादिभिर्द्वारं न बिड्ढं यस्यवेश्मनः ।

मर्मभेदो यवापुंसस्तच्छ्रेयो भवन्ननते ॥ ७० ॥

टी. और जिस घर का दरवाजा वृक्ष या लता से घिरा न हो और जो किसी को मर्मभेदी बात न कहता हो उस घर में जाने से तुम्हारा कल्याण न होगा ॥ ७० ॥

मू. देवतापितृमर्त्यानामतिथीनाञ्चवर्त्तेन । य-
स्यावशिष्टेनान्नेनपुंसस्तस्यगृहं त्यज ॥ ७१ ॥

टी. और जो कोई देवता या पितृ या मनुष्य या अतिथि को खिलाकर जो अन्न बचता है उसी को आप खाता है उस घर में भी तुम न जाना ॥ ७१ ॥

मू. सत्यवाक्यानक्षमाशीलानहिंस्रान्नानुतापिनः ।
पुरुषानीदृशानयक्षत्यजेथाश्चानसूयकान् ॥ ७२ ॥

टी. और जो लोग सत्य बोलते हों और जो क्षमा और शील रखते हों और जो न हिंसा करते और न किसी को पीड़ा देते हों और न किसी का गिल्ला करते हों हे यक्ष ऐसे लोगों के पास भी तुम न जाना ॥ ७२ ॥

मू. भर्तृशुश्रूषणयुक्तामसत्स्वीसंगवर्जिता । कुटु-
म्बभर्तृशेषान्नं पुष्टाञ्चत्यजयोषितं ॥ ७३ ॥

टी. और जो स्त्री अपने पति की सेवा करती हो और बदकार और लड़ाका स्त्री का साथ न करती हो और सब कुटुम्ब और परिवार को खिलाकर पीछे आप खाती हो वहाँ भी न जाना ॥ ७३ ॥

मू. यजनाध्ययनाभ्यासदानासक्तमनिसदा । याज-
नाध्यायनादानकृतवृत्तिं हि जंत्यज ॥ ७४ ॥

टी. और यजन और अध्ययन और वेदाभ्यास वगैरा में जिसका मन सदा लगा रहै और यज्ञ और अध्ययन और दान लेता जिस ब्राह्मण की वृत्ति हो उसको भी छोड़ देना ॥ ७४ ॥

मू. दानाध्ययनयज्ञेषु सरोद्युक्तञ्च दुःसह । क्षनि-
यंत्यजसच्छुल्कशस्त्राजीवात्तवेतनं ॥ ७५ ॥

टी. और जो क्षत्री दान देने और वेद पढ़ने और यज्ञ करने में

प्रवृत्त रहते हों और अपने स्थाव धर्म के साथ शस्त्रादिक बों
धकर जीविका करते हों वहाँ भी न जाना ॥ ७५ ॥

मू. त्रिभिः पूर्वगुणैर्युक्तं पाशुपाल्यवाणिज्ययोः। कृ-
वेश्वावाप्तवृत्तिश्चत्यजवैश्यमकल्मषं ॥ ७६ ॥

टी. और जो वैश्य दान और अध्ययन और यज्ञ करना हो और
र पशुपालन और वाणिज्य और खेती करके अपनी जीविका
करता हो ऐसे पवित्र वैश्य को भी छोड़ देना ॥ ७६ ॥

मू. दानेज्याद्विजशुश्रूषातत्परयज्ञसन्त्यज। शूद्र-
ञ्चब्राह्मणादीनां शुश्रूषावृत्तिपोषकं ॥ ७७ ॥

टी. और जो शूद्र दान और यज्ञ और ब्राह्मण इत्यादि वर्णों की सेवा सदा करता
हो और उसी से अपनी जीविका करता हो उसको भी छोड़ देना ॥ ७७ ॥

मू. श्रुतिस्मृत्यविरोधेन कृतवृत्तिर्गृहे गृही। य-
त्तत्र च तत्पत्नी तस्यैवानुगतात्मिका ॥ ७८ ॥

टी. और जो गृहस्थ श्रुति और स्मृति के अनुसार अपनी वृत्ति रखता हो
और स्त्री उसकी कहीं रहै पर मन अपने ही पति में रखती हो ॥ ७८ ॥

मू. यत्र पुत्रो गुरोः पूजां देवानाञ्च तथा पितुः। पत्नी-
च भर्तुः कुरुते तत्रालक्ष्मी भयं कुतः ॥ ७९ ॥

टी. और जिस घर में पुत्र गुरु और देवता और पिता की सेवा और स्त्री अप-
ने पति की सेवा पूजा करती हो उस घर में अलक्ष्मी का भय किस तरह होगा ॥ ७९ ॥

मू. यदानुलिप्तं सन्ध्यासु गृहमम्बुसमुक्षितं। कृत-
पुष्पबलियक्षनत्वं शक्नोषिवीक्षितुं ॥ ८० ॥

टी. जो घर सन्ध्या के समय लीपा जाय या जल छिड़क दिया जाय और पुष्पादि
से देवता का पूजन हो हे वक्ष उस घर की तरफ तुम मत देखना ॥ ८० ॥

मू. भास्करादृष्टशय्यानि नित्याग्निमलिलानि च
सूर्यावलोकदीपानिलक्ष्म्यागेहानि भाजनं ॥ ८१ ॥

टी. और जिस घर की सेज को सूर्य न देखने हों और अग्नि और जल कभी न घटता हो और रात भर दीपक जलता हो उस घर में लक्ष्मी रहती है ॥ ८१ ॥

मू. यत्रोक्षा चन्दनं बीणा आदर्शो मधु सर्पिषी । वि-
षाज्यता स्रपात्राणि तद्गृहं न तवाश्रयः ॥ ८२ ॥

टी. और जिस घर में बैल या चन्दन या बीणा या शीशा या मधु या घी या विष या ताँबे के वर्तन हों वहाँ भी तुम मत जाना ॥ ८२ ॥

मू. यत्र काटकि नो वृक्षाय त्रिण्याव वल्लरी । भार्या
पुनर्भूवे ल्मी कस्त्यक्षतवमन्दिरं ॥ ८३ ॥

टी. और जिस घर में काँटेदार वृक्ष या आँगन में धान चगेरा बोया हो या पुनर्भू स्त्री हो या जिस घर में दोनक का घर हो हे यक्ष वह घर तुम्हारा ही है ॥ ८३ ॥

मू. यस्मिन् गृहे नराः पञ्च स्त्री त्रयं तावतीश्च गाः । अ-
न्धकारे न्यनाग्निश्च तद्गृहं वसतिस्तव ॥ ८४ ॥

टी. और जिस घर में पाँच पुरुष और तीन स्त्री और तीन गऊ रहें और लकड़ी जलाकर रोशनी करते हों वह घर तुम्हारे ही रहने को है ॥ ८४ ॥

मू. एकच्छागं दिवालेयं त्रिगवं पञ्च माहिषं । षड्
श्वं सप्त मातङ्गं गृहं यच्छाशुशोषय ॥ ८५ ॥

टी. और जिस घर में एक बकरी दो स्त्री तीन गऊ पाँच भैंस छः घोड़ा सात हाथी रहते हों हे यक्ष उस घर को तुम जल्द नाश कर देना ॥ ८५ ॥

मू. कुक्षालदात्र पिठकं तद्वत्स्थाल्यादिभाजनं । य-
त्र तत्रैव क्षिप्रानि तव दद्युः प्रतिश्रयं ॥ ८६ ॥

टी. और जिस घर में कुक्षाल और हंसिया और पीड़ा और थाली चगेरा वर्तन जहाँ तहाँ बेठिकाने पड़े रहते हैं वह लोग उस घर में मानो तुम को बुलाते हैं ॥ ८६ ॥

मू. मुशलो लूखले स्त्रीणां मास्थातदुदुम्बरे । अव-
स्करे मन्त्राञ्च यज्ञैतदुपकृतं तव ॥ ८७ ॥

टी. और जिस घर में स्त्रियाँ मूशल या औरवली के ऊपर या गूलर के रक्ष के नीचे बैठती हों और घर के पिछवारे आपुस में बात चीत करती हों हे यक्ष ये सब तुम्हारे उपकारी हैं ॥ ८७ ॥

मू. लङ्घांतेयत्रधान्यानिपकायकानिवेशमनि ।

तदच्छास्त्राणितत्रत्यंयथेष्टंचरदुःसह ॥ ८८ ॥

टी. और जिस घर में कच्चे या पके अन्न और शास्त्र का अनादर हो उस घर में हे दुस्सह तुम अपनी इच्छा के अनुसार रहो ॥ ८८ ॥

मू. स्थालीपिधानेयत्राग्निर्दत्तोदर्वीफलेनवा । यृ-

हेनत्रहिरिष्टानामशेषाणांसमाश्रयः ॥ ८९ ॥

टी. और जिस घर में घाली या सरपोश या करछुल से घरवाली किसी को जागदिती हो उस घर में सब अरिष्टों का स्थान है ॥ ८९ ॥

मू. मानुषास्थिगृहेयत्रदिवारात्रंमृतस्थितिः । तत्र

यक्षतवावासस्तथान्येषाञ्चरक्षसां ॥ ९० ॥

टी. और जिस घर में मनुष्य की हड्डी हो या एक दिन रात तक मृतक पड़ा रहे उस घर में तुम्हारा और और राक्षसों का स्थान है ॥ ९० ॥

मू. अदत्त्वाभुञ्जतेयेवैबन्धोःपिण्डंतथोदकं । सपि

ण्डानसोदकांश्चैवतत्कालेतान्सरान्भज ॥ ९१ ॥

टी. और जो कोई अपने भाई बन्धु सपिण्ड को भोजन पान दिये बिना आपस ता पीता है उस अन्न जल के साथ उस मनुष्य के पास तुम रहो ॥ ९१ ॥

मू. यत्रपद्ममहापद्मौयुवतीमोदकाशिनी । वृष-

भैरावतौयत्रकल्प्येतेनद्गृहं त्यज ॥ ९२ ॥

टी. और जिस घर में पद्म या महा पद्म रहता हो और स्त्री मोदक खाती हो और नंदी बैल और ऐरावत हाथी हो वहाँ तुम न जाना ॥ ९२ ॥

मू. अशस्त्रादेवतायत्रसशस्त्रास्त्राहवंबिना । क-

ल्प्यन्तेमनुजैरर्चास्तत्परित्यजमन्दिरं ॥ ९३ ॥

टी. और जहाँ पर आश्व देवता और बिना संग्राम के आश्व गस्त्र को मनुष्यलोग पूजते हैं वहाँ भी तुम न जाना ॥८३॥

मू. पौरजानपदोयत्राकप्रसिद्धमहोत्सवाः। क्रि-
यन्तेपूर्ववद्देहेनत्वंतत्रगृहेचर ॥ ८४ ॥

टी. और जिस घर में पुरवासी या परदेशीलोग आकर उत्सव पूर्वक रहें उस घर में भी न जाना ॥ ८४ ॥

मू. शूर्पवातघटाभोभिःस्नानंवस्त्राम्बुविप्रुषैः। न-
खाग्रसलिलैश्चैवतानयाहिहतलक्षणान् ॥ ८५ ॥

टी. और सूप की हवा से ठंढे किये हुवे जल से या घड़ा के जल से या भी-
गे कपड़े के जल से या उस जल से जिसमें नारबून का पानी मिला हो ऐसे
जल से जो अलक्षणीलोग स्नान करते हैं वहाँ तुम जाकर रहो ॥ ८५ ॥

मू. देशाचारानुसमयानुत्तातिधर्मजपंहोममङ्गलं दे-
वतेष्टिं। सम्यक् शौचंविधिवल्लोकवादान्
पुंसस्त्वयाकुर्वतोमाःस्तुतङ्गः ॥ ८६ ॥

टी. और जो लोग देश और काल के अनुसार आचार व्यवहार और जातिधर्म
और जप और होम और मंगल और देवताओं का पूजन और सम्यक् पवित्रता और
विधिपूर्वक वातचीत करने हों उन लोगों को तुम से भय न होगा ॥ ८६ ॥

मू. मार्कण्डेय उवाच ॥ इत्युक्त्वा दुःसहं ब्रह्मात-
त्रैवान्तरधीयत। चकारशासनं सोऽपितथा
पङ्कजजन्मनः ॥ ८७ ॥ ८७ ॥ ८७ ॥ ८७ ॥

टी. मार्कण्डेयजी कहते हैं कि हे कौटुकि इतनी बातें दुःसह को कह कर ब्रह्माजी
अन्तर्धान होगये और दुःसह उनकी आज्ञानुसार जगत् में रहने लगा ॥ ८७ ॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणेयक्षानुशा-
सनं नाम पञ्चाशोऽध्यायः ॥ ५० ॥

پچاسواں ادھیائے

۱۔ مارکنڈے جی کہتے ہیں کہ اے کروشنکی اسکے بعد برمھاجی نے پھر دھیان کیا تو انکے شریر سے کارن اور کارج بہت مانسی پر جا پیدا ہوئی۔ ۲۔ اور وہ سب پر جا پھیر گئے۔ یعنی برمھ گمانی ہوئی اور وہ لوگ بھی برمھاجی کے شریر ہی سے پیدا ہوئے۔ میں جنکایان پہلے ہو چکا۔ ۳۔ دیوتا وغیرہ سے استھا ورتک پر جاؤں کو تینوں گون سے شوکت پیدا کیا۔ ۴۔ جب ان سبھوں سے خلقت نہ بڑھی تو پھر اپنے برابر برمھاجی نے مانسی شیرو کو پیدا کیا۔ ۵۔ یعنی بھگ۔ پست۔ پتہ۔ کرٹ۔ انکرا۔ مریچ۔ دھیم۔ اتر۔ کشٹھ۔ ۶۔ یہی سب براؤن میں نو برہمن کہلاتے ہیں اسکے بعد برمھاجی نے اپنے کو پ سے گیارہ رور۔ ۷۔ اور شکپ اور دھرم کو جو پہلوں سے پہلے ہیں پیدا کیا اور ستندن من وغیرہ کو بھی پہلے ہی زمانہ میں پیدا کیا۔ ۸۔ یہ لوگ دنیا کی عیش و عشرت میں نہیں پہننے اور کسی بات کی آرزو نہ رکھتے اور ہمیشہ گمانی اور بعض وحد وغیرہ سے پاک رہے۔ ۹۔ جب یہ لوگ بھی دنیا کے کاروبار میں مشغول ہوئے اور خلقت نہ بڑھی تو برمھا کو نہایت رنج ہوا اسوقت غیب سے ایک شخص جنکا چہرہ مثل آفتاب کے چمکتا ہوا۔ ۱۰۔ اور آدھا جسم عورت کا اور آدھا جسم مرد کا تھا ظاہر ہوا اور کہا کہ آتما کا بھاگ یعنی حصہ کرو اتنا کمر انتر دھان ہو گئے۔ ۱۱۔ تب برمھاجی نے عورت و مرد کو علیحدہ علیحدہ پیدا کیا اور پرشون میں گیارہ بھاگ کیا۔ ۱۲۔ اور اس پر بھور بھاگ کتنے نیکمیت اور کتنے بد بخت اور کتنے شانت یعنی حلیم اور کتنے گندمی رنگ اور کتنے سیاہ رنگ اور کتنے سنانو لے رنگ کے مرد و عورت اور دیوتا وغیرہ کو پیدا کیا۔ ۱۳۔ اے من پھر برمھاجی نے سو میجھو من کو جنھیں اپنے شریر سے اپنے برابر پہلے پیدا کیا تھا پر جا یعنی خلقت کے پالنے میں مصروف کیا۔ ۱۴۔ بعد اسکے ست روپا نام استری کہ جو بہت شیشونی اور پ سے رکت تھی پیدا کیا اور وہی ست روپا استری سن کی استری ہوئی۔ ۱۵۔ آخر خلک سو میجھو من سے ست روپا کے حمل رہا بعد گزرنے ایام مہودہ کے دولک کا پیدا ہوئے ایک کا نام پر پرت اور چوٹے کا نام آمان یاد ہوا یہ دونوں اپنے پر اکرم سے تمام دنیا میں مشہور ہوئے۔ ۱۶۔ بعد اسکے من کے دو دختر پیدا ہوئیں ایک کا نام ردم دوسری کا نام پر پوتی ہو جب

دونوں بالغ ہوئیں تو رتھ کو ریح نام من کے ساتھ اور پرستوتی کو دچھ کے ساتھ بواہ کر دیا۔
 ۱۷۔ اب دچھ پر جاپت اور پرستوتی سے جگ پریش اور دچھنا انکی استری توام پیدا ہوئی۔
 ۱۸۔ اور جگ کے دچھنا استری سے بارہ لڑکے پیدا ہوئے اور دے لوگ سو سو بیٹو منو شترین
 جا ما مشہور ہوئے۔ ۱۹۔ اور رتھ اقبال مند ہوئے بعد اسکے دچھ سے پرستوتی کے چوبیس لڑکیاں
 پیدا ہوئیں اے براہمن ان سب کے نام کننا ہوں سنو۔ ۲۰۔ شردھا۔ پٹی۔ دھرت
 ریشٹ۔ پشٹ۔ میدھا۔ کریا۔ ۲۱۔ بدھ۔ بجا۔ ب۔ شانت۔ سہو۔ کرٹ
 ان حیرتوں لڑکیوں کا بواہ دھرم کے ساتھ ہوا۔ ۲۲۔ اور جو ان سب سے چھوٹی لڑکیاں بن
 انکے نام سنو۔ گھیاتی۔ سنی۔ سمجھوت۔ اسمرت۔ پریت۔ جھا۔ ۲۳۔ سنت۔
 انسوا۔ اور جا۔ سواکا۔ سو دھا۔ ان سب کا بواہ بھگت۔ مہادیو۔ میرج۔ اگرا۔
 ۲۴۔ پست۔ پلک۔ کرٹ۔ ریشٹ۔ اکر۔ اکر۔ پتر سے ہوا یعنی ان گیارہوں نے پتر
 سلسلہ ان گیارہ لڑکیوں سے بواہ کیا۔ ۲۵۔ اے من اب میں ان لوگوں کی سننا کا حال
 بیان کرتا ہوں سنو۔ کہ شردھا سے کام اور شری یعنی لچھی سے دپ اور دھرت سے نیم۔
 ۲۶۔ اور ریشٹ سے سنو کہ اور ریشٹ سے لوبھ اور میدھا سے شرت اور کریا سے دولڑکے
 نے اور بنے۔ ۲۷۔ اور بدھ سے بودھ اور لجا سے بنے اور پ سے بیوساے اور شانت
 سے چیم۔ ۲۸۔ اور میدھ سے سکھ اور کرٹ سے جس پیدا ہوئے یہ سب دھرم کے
 ستان کہلاتے ہیں۔ ۲۹۔ اور ادھرم کے ہنسا نام عورت سے ایزت نام لڑکا اور نرت
 نام لڑکی پیدا ہوئی۔ پھر اور دولڑکے پیدا ہوئے جنکا نام نرک اور بھی یعنی خوف مشہور ہوا
 ۳۰۔ بعد اسکے مایا اور بیدنا نام دولڑکیاں پیدا ہوئیں مایا کا بیٹا مرٹ یعنی موت ہوا جو
 سب جیون کا ناش کرتا ہے۔ ۳۱۔ اور رور و سے میدھا کا بواہ ہوا اور اس سے دکھ
 نام لڑکا پیدا ہوا اور مرٹ سے مایا دھ اور بدھ اور شوک اور ترشنا اور کرو دھ پیدا
 ہوئے۔ ۳۲۔ یہ سب ادھرمی ہیں اور ان سبھوں کے استری اور پتر نہیں ہیں اور دکھ
 میں ان لوگوں کی پیدائش ہوئی اور اور دھ ریشٹ کہلاتے ہیں۔ ۳۳۔ اے من مرٹ
 کے دو استریان ہوئے ایک کا نام نرت اور دوسری کا نام اچھی تھا کہ جس سے مرٹ کے
 چوک لڑکے پیدا ہوئے۔ ۳۴۔ اور وہ سب مرٹ کے لگیا کاری ہوئے یعنی جبوت
 جانداروں کی زندگی اخیر ہوتی ہے اسوقت یہ سب موجود ہوتے ہیں اب ان سب کے

استھان بیان کرتا ہوں سنو۔ ۳۵ کہ ولسو اندری اور من میں یہ لوگ رہ کر اپنے رنگ
 برعورت و مرد کو لگا لیتے ہیں۔ ۳۶ مہارکھنڈ کے اندریو کو اپنے قابو میں کر کے ادھیون کو کڑو
 مینی غصہ وغیرہ میں مصروف کرتے ہیں جس سے اسے برا مین آدمی لوگ برا کام وغیرہ کر کے
 نقصان اٹھاتے ہیں۔ ۳۷ اور وہ سب کوئی تو اٹھکارتین اور کوئی بڑھ میں رہ کر
 عورت و مرد کے نسبت نابود ہو جاسکی تدمیر کرتے رہتے ہیں۔ ۳۸ اس طرح ادھیون کے
 گردن میں دسہ دکھ رہتا ہے جو بھوکہ سے عاجز اور بقیہ ار اور سر نیچے کیے ہوئے اور ننگا اور
 کوسے کی ایسی آواز کھاتی ہے۔ ۳۹ اور بڑا منہ اور بڑے بڑے دانت اور خوفناک صورت
 ہے جب دسہ دکھ (یعنی وہ مہیبت جسکا نہنا مشکل ہو) کو بر مہانے پیدا کیا تو وہ سریش کے
 کھانے کو مستعد ہوا۔ ۴۰ تب بر مہاجی جو لوگ کے پتامنہ اور بر مہا روپ اور شندھ اور
 اچھے اور سب جگت کے کارن ہیں اس سے مینی دسہ دکھ سے کہنے لگے کہ۔ ۴۱ تم جگت
 کو مت کھاؤ اور اپنے کو پ کو شانت کرو اور اپنے من کو استھ کر و اور تاسی برت اور
 راجسی کھا کو چھوڑ دو۔ ۴۲ تب دسہ دکھ بولا کہ اے جگتا تھ میں دہلا اور بھوکھا اور
 پیاسا ہوں مجھے کیونکر قوت اور اسودگی حاصل ہو اور میں کہاں رہوں آپ مجھے بتلا دیجیے
 ۴۳ تب بر مہانے کہا کہ جہاں ادھر می لوگ رہتے ہوں وہیں تمھارے رہنے کی جگہ ہے
 اور جہاں نہت کر یا نہوتی ہو اس سے تلو قوت حاصل ہوگی۔ ۴۴ اور جو آدمی بے فائدہ
 ہنست یا بولتا ہو وہی بھٹھارالباس ہوگا اور جس کھانے میں خون پاکیرا ہو یا کتے نے دیکھا
 ہو۔ ۴۵ یا ٹوٹے ہوئے برتن میں رکھا ہو یا منہ سے پھوک کر ٹھنڈا کیا گیا ہو یا جو ٹھما ہو
 یا لگ ہو یا چیکھا ہو یا بونیر سنسکار کا ہو۔ ۴۶ اور وہ کھانا جسکا کھانے والا پھٹے ہوئے آسن
 بر مہیکر اور ابھیلا گت کو نہ دے کر آپ کھاتا ہو یا جو ابھت دشا کی طرف (یعنی جس طرف بھٹھکر
 کھانا چاہیے) بھٹھکر کھاتا ہو یا شام کے وقت یا ناک یا گانے کے وقت یا کسی با جان بننے
 کے وقت کھاتا ہو۔ ۴۷ اور وہ کھانا جو حیض و اتی عورت کا دیکھا ہو یا چھو ا ہو یا
 کسی کا جاشنی چکھا ہو اور وہ کھانا جو ممنوع ہو یا کسی سب سے کھانے کے قابل نہ رہا ہو یا
 سب کھانے تمھاری ہی خوراک ہیں۔ ۴۸ اور سواے اسکے اور بھی کھانے کو بغیر حوصلہ و
 زیر انسان کیے یا غور کے ساتھ جو ہو م یا دان کوئی کر لیا وہ سب تلو لیکا۔ ۴۹ اور
 زیرانی کی چھڑکی ہوئی چیز اور جو چیز بیکار پڑی ہو اور جس چیز کو کسی نے چھوڑا ہو یا جو جس

۵۱
۵۲
۵۳
۵۴
۵۵
۵۶
۵۷
۵۸
۵۹
۶۰
۶۱
۶۲
۶۳
۶۴
۶۵
۶۶
۶۷
۶۸
۶۹
۷۰
۷۱
۷۲
۷۳
۷۴
۷۵
۷۶
۷۷
۷۸
۷۹
۸۰
۸۱
۸۲
۸۳
۸۴
۸۵
۸۶
۸۷
۸۸
۸۹
۹۰
۹۱
۹۲
۹۳
۹۴
۹۵
۹۶
۹۷
۹۸
۹۹
۱۰۰

کھانیکو بہت آدمیوں نے دیکھا ہو اور جو کھانا کسی نے خوف سے دیا ہو ۔ ۵۰ اور نوشت او
یا کرو دھی بادکھی کا دیا ہوا ان جو کوئی کھانیکا اسکا پھل سکولیکا اور جو کرم میرجو ۔
۵۱ یا پینر جو استری کرین وہ سب تمھاری آسودگی کے لیے مین دیتا ہوں اور جو کوئی لڑکی سچ کر
دھن بینی دولت حاصل کرتا ہو اور اس دھن سے جو کچھ کرم کرے اسکا پھل ۔ ۵۲ اور جو
کرم بنیر شاستر کے کیا جائے اسکا پھل یہ سب تمھاری قوت کے واسطے مین دیتا ہوں اور جو جو
یا آدھین (پنڈ پانڈ) برتھا ہوتا ہو ۔ ۵۳ ان سب کا پھل سکولیکا اب تمھارے سیدھ چوٹ
کا وقت مقرر کرتا ہوں سنو کہ عاظم عورت کے ساتھ محاموت کرتے وقت اوسنڈھیا اور نہت کرنا
کے چھوٹ جانیکے وقت ۔ ۵۴ اور جو چھٹے شاستر کے موافق کرم کرنے یا لاسیہ کرنے میں جو
وقت گزرتا ہو ان وقتوں میں اسی دسہ دھم ہمیشہ آدمیوں پر تمھارا زور ہوگا ۔ ۵۵ اب تمھارے
رہنے کے مقاموں کو بتلاتا ہوں سنو کہ جہاں نکلت بھید ہوتا ہو اور جہاں برتھا پاک ہوتا ہو
جو عرف اپنے ہی واسطے کھانا بناتا ہو (یعنی ٹھاکر جی کے بھوک کیواسطے بنا چاہیے) اور جس جگہ
بڑے کانوں کے کرنے والے ہوں اور جس گھر میں ہمیشہ جھگڑا و فساد ہو اگر تا ہوں ان جگہوں میں
تم رہنا کرو ۔ ۵۶ اور جہاں بنیر گھاس اور بھوسا کے گھوڑا اور گھوڑ وغیرہ چار پاؤں کو بانہر دیتے
ہوں اور جس گھر میں سندھیا سے پہلے جاروب کشی ہوتی ہو ایسے گھروں میں تم سے آدمیوں کو
نہت ہوگا ۔ ۵۷ اور چھتر اور گرہ کے سبب سے دھم مین اور مین طرح کے اشیات (آفت)
دیکھ پڑنے میں جو شخص شانت اسکی نہیں کرتا ان سب کو تم اپنا خوف دکھانا ۔ ۵۸ اور جو
شخص بنیر برت یا کھانے کی چیز موجود رہتے ہوئے جھوکھا رہے یا جو اکیلے یا عورتوں کی محبت
میں پھنسا رہی یا سخت باتیں بولتا ہو یا جو شخص بلی کی طرح مکر و فریب سے اپنا کام سیدھ کرتا ہو
۵۹ یا بنیر برمھ جرج کے بید پڑھا ہو اور جاہلون کا کیا ہوا جگت اور جو عبادت خانوں میں دنیا
کارو بار کرتا ہو اور پھیل چیت والے کا بد پانڈ ۔ ۶۰ اور جو براہمن یا جھتری یا بیش یا شود
اپنے کرم کو چھوڑ دیتے ہیں یہ سب لوگ جو کر یا اپنے پر لوک کے واسطے کرتے ہوں ۔ ۶۱ اسکا
بھی پھل اے دسہ دھم سکولیکا اور تمھاری قوت کے واسطے اور بھی دیتا ہوں سنو ۔ ۶۲ کہ
بیشود دیو کرم کے اخیر میں براہمن وغیرہ تمھارا نام لیکر ٹکڑ بھی بل (حقہ) دیکے اس سے ٹکڑ زور
حاصل ہوگا ۔ ۶۳ اور جو لوگ سنسکار کیا ہوا ان بھوجن کرتے ہیں اور جو طار و باطن میں پاک
وصاف رہتے ہیں اور جو لوہ اور عورت کے تابع نہیں ہیں اور جو شخص کسی سے جھگڑا و فساد

نہیں کرتے اسے دسہ دیکھ ان سبھوں کے تم پاس بھی بنانا - ۶۴ اور جس جگہ دیوتا یا پتر و کا
 پوجن ہیشہ اور کتیس سے ہوتا ہو اور جہاں براہمن اور اٹھیا گت کو بھوجن ملتا ہو وہاں بھی بنانا -
 ۶۵ اور جس گھر میں بوڑھا اور لڑکا اور عورت اور نوکر چاکر کے آئینہ محبت اور الفت ہو وہاں
 تم ہرگز ہرگز نہ جانا ۶۶ اور جس گھر میں عورتیں عصمت والی باخترم و دیارہتی ہوں وہاں بھی
 تم بنانا - ۶۷ اور جہاں اپنی عمر کے موافق سوتی اور اوقات کے موافق کھاتے ہوں وہاں بھی
 تم بنانا - ۶۸ اور جس گھر میں نت دیا والے لوگ رہتے ہوں اور جو نیک کاموں میں آمادہ قائم
 رہتے ہوں اور اسی طرح کا چال چلن رکھتے ہوں وہاں بھی بنانا - ۶۹ اور جس گھر میں گرو
 یا براہمن یا بوڑھے لوگ آوین اور اس گھر کا مالک ان لوگوں کے سامنے یا برابر (بیاضا اوپ
 کے) نہ بیٹھتا ہو وہاں بھی تم بنانا - ۷۰ اور جس گھر کا دروازہ درخت اور لٹا وغیرہ سے گھرا
 ہو انہو اور جو کسی مرم بھیدی بات (یعنی جس سے کیسے دل پر زخم ہو جائے) نہ کہتا ہو اسکے گھر
 میں جانے سے تنہا رہنا چھوڑنا - ۷۱ اور جو شخص دیوتا اور پتر کو بھوک لگا کر اور گھر والوں
 اور اٹھیا گت وغیرہ کھانا کھلا کر اسکے بعد آپ کھاتا ہو اسکو بھی چھوڑ دینا - ۷۲ اور جو لوگ
 سچ بولتے ہوں اور مہربانی اور مروت کے ساتھ ہر کسی سے پیش آتے ہوں اور نہ کسیا کلمہ شکوہ
 کرتے ہوں نہ کسیکو ایذا دیتے ہوں اسے دسہ دیکھ تم ان لوگوں کے نزدیک ہرگز ہرگز نہ بنانا -
 ۷۳ اور جو عورت اپنے شوہر کی خدمت دل و جان سے کرتی ہو اور فاحشہ اور جھگڑاؤ عورت
 کی محبت سے پرہیز رکھتی ہو اور شکر و تحسین اور شہر کو کھانا کھلا کر بعد اسکے آپ کھاتی ہو اسکے بھی تم
 نزدیک بنانا - ۷۴ اور جس براہمن کی طبیعت جاپ اور پاٹھ وغیرہ میں ہمیشہ راغب رہے اور
 اسکی اوقات جگت کرانے اور پڑھانے میں بسر ہوتی ہو اسکے گھر بھی بنانا - ۷۵ اور جو چھتری
 بنیڈ پڑھنے اور جگت کرنے میں مستغرق رہتے ہوں اور چھتری دھرم کے ساتھ سپاسیانہ اپنی زندگی
 بسر کرتے ہوں انکے گھر بھی تم بنانا - ۷۶ اور جو پوٹر بیش دان اور بنیڈ پاٹھ اور جگت کرتا ہو
 اور جو پائیوں کی پرورش اور تجارت اور کھیتی کر کے اپنی اوقات بسر کرتا ہو اسکو بھی تم مت
 ستانا - ۷۷ اور جو شودر دان اور جگت اور براہمن وغیرہ سب برہمنوں کی خدمت کیا کرتا ہو
 اور اسی سے اپنی زندگی بسر کرتا ہو اسکو بھی چھوڑ دینا - ۷۸ اور جو گریہ ستھ بید اور شاستر کے موافق
 کام کرتا ہو اور استری اسکی اگر کہیں جاوے بھی تو بھی اپنے پت کا دھیان من میں رکھ کر
 ۷۹ اور جس گھر میں پتر اپنے گرو اور دیوتا اور پنا کا پوجن اور سوا کرتا ہو اور عورت اپنے

سوہر کی خدمت کرتی ہو ایسے گھر دن میں در در کا خوف نہوگا۔ ۸۰ اور جو مکان سندھیا کے وقت لپٹا جاتا ہو یا آسمین پانی چھڑکا جائے اور بچوں وغیرہ دیوتوں کو چڑھایا جاتا ہو اسے دیکھ کر اس گھر کی طرف تم کبھی نہ دیکھنا۔ ۸۱ اور جس گھر کی سیج یعنی بچھونے کو سورج نہ دیکھتے ہوں اور جس گھر میں آگ اور پانی ہر وقت موجود اور تمام شب چراغ روشن رہتا ہو وہاں بھی نجانا کیونکہ ایسے گھر دن میں ٹپتی رہتی ہیں۔ ۸۲ اور جس گھر میں بیل (نرگاؤ) اور چنڈ اور بین اور شیشہ اور شہد اور گھی اور زہر اور تانبے کے برتن وغیرہ ہوں وہاں بھی نجانا۔ ۸۳ اور جس گھر میں خاردار درخت یا صحن میں دھان وغیرہ بویا ہو یا جس گھر میں پینز بھو استری ہو یا رک کا بوٹ یعنی گھر ہو وہ گھر تنہا رہی ہو۔ ۸۴ اور جس گھر میں پانچ مرد یا تین عورتیں یا تین گھوہوں اور بھون چراغ کے لکڑی جلا کر روشنی کرتے ہوں یہ سب تنہا رہنے کی جگہ ہیں۔ ۸۵ اور جس گھر میں ایک بکرا اور دو عورتیں اور تین گھوہوں اور پانچ گاؤں شیش یعنی بھینس اور چھ گھوہوں اور سات ما بھتی ہوں اسے دیکھ کر اس گھر کو تم جلد تباہ کرنا۔ ۸۶ اور جس گھر میں گدال و ہنسیا (یعنی آنرا کہ بغاسی داس گوید) و پیرٹھا و برتن وغیرہ بل بوتہ جہاں تھان پڑے رہتے ہوں اس گھر کے رہنے والے گویا تنہا رہنے کی جگہ قائم کرتے ہیں۔ ۸۷ اور جس گھر میں عورتیں موش یا اوکھلی پر یا گولر کے درخت کے سایہ میں بیٹھتی ہوں یا مکان کے کچھ اڑے بات جیت یا مشورہ وغیرہ آپس میں کیا کرتی ہوں یہ سب تنہا رہنے کی جگہ ہیں۔ ۸۸ اور جس گھر میں چنے یا لکے آن کا یا شاستر کا آدرا ہوتا ہو وہاں تم خوشی سے رہنا۔ ۸۹ اور جس گھر میں گھر والی تعالیٰ یا برتن کے سر پوش یا کرچھیل سے آگ نکال کر کسی کو دیتی ہو اس گھر میں سب ارشٹوں کا استھان ہوتا ہے۔ ۹۰ اور جس گھر میں آدمی کی ہڈی ہو یا جس گھر میں مردے کی لاش ایک دن راست تک بیڑی رہی ہو تو اس گھر میں تنہا رہنا اور اور راتیں کاندھوگا۔ ۹۱ اور جو شخص بھائی بندھ کو بغیر کھلائے پلائے آپ کھاتا پیتا ہو اس آٹھ کے ساتھ تم اسکے پاس رہو۔ ۹۲ اور جس گھر میں پدم مہا پدم ہوا عورت مودک (لڈو) کھاتی ہو اور نندی بیل اور ایراوت ما بھتی ہو وہاں تم نجانا۔ ۹۳ اور جہاں بغیر شستر کے دیوتا اور بغیر سنگرام کے شستر شستر کو لوگ پوجتے ہوں وہاں بھی قدم نہ کھنا۔ ۹۴ اور جس گھر میں پیاسی یا پردیسی لوگ آتے ہوں اور فرد ہوتے ہوں اور سب باتوں سے آرام پاتے ہوں اس جگہ بھی تم نجانا۔ ۹۵ اور سوپ کی ہوا سے سرد

किया हो पानी या गहर के का पानी या बहिके जो नै किर के का पानी या रो पानी मसिन माखन का पानी ग्राह
 ऐसे पानी से जो अचिन्ति सनान करे उसके गहर तहार से रसो की जगह पर - १५५ और जो कोनी अपने
 दलिन का चाल चलन और भोग और अपनी दात का दहर में कत्ता हो और जब और जब और मुक्तल
 रीत ताउन का पुत्र जन किरता हो और पुत्र रत्ता हो और मिथी मिथी बातें सुनोत के साथे नर की से
 किरता हो ऐसे लोग को नर से खोफ नहो का - १५६ मार्कण्डेय जी कहते हैं कि हे क्रौडकि
 सब बातें ब्रह्मजी दुसरे से कहकर अन्तर दहियान हो गये और दुसरे दुसरे भी उन के حکم के
 مطابق दुनिया में रहने लगे - फल

मृ. मार्कण्डेय उवाच ॥ दुःसहस्याभवद्भार्यानि
 म्माहिर्नामनामतः । जाता कलेस्तु भार्या
 या मृतौ चाण्डाल दर्शनात् ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

श्री. फिर मार्कण्डेयजी कहते हैं कि हे क्रौडकि दुःसह की स्त्री निम्माहिना
 महुई जो कलि की स्त्री में ऋतुकाल में चाण्डाल के दर्शन से उत्पन्न हुई थी ॥ १ ॥

मृ. तयोरपत्यान्यभवन जगद्वापी निषोडश । अ
 द्यौकुमाराः कन्याश्च तथा वतिभीषणाः ॥ २ ॥

श्री. उसी स्त्री से दुःसह के आठ पुत्र और आठ अत्यन्त भयावनी पुत्री उत्प
 न्न हुई जो सकल संसार में प्रसिद्ध और व्याप्त हैं ॥ २ ॥

मृ. दन्ताकृष्टिस्तथोक्तिश्च परिवर्तस्तथापरः । अ
 ङ्गधृक्शकुनिश्चैव गाडप्रान्तरतिस्तथा ॥ ३ ॥

श्री. उन पुत्रों के नाम ये हैं दन्ताकृष्टि १ तथोक्ति २ परिवर्त ३ अ
 ङ्गधृक् ४ शकुनी ५ गाड प्रान्तरति ६ ॥ ३ ॥

मृ. गर्भहासस्यहाचान्यः कुमारस्तनयास्तयोः । क
 न्याश्चान्यस्तथैवाष्टौ तासां नामानि मे शृणु ॥ ४ ॥

श्री. गर्भ हा ७ सस्य हा ८ अब आगे कन्याओं के नाम कहता
 सुनो ॥ ४ ॥

मू. नियोजिकावैप्रथमातयैवान्याविरोधिनी । स्व
यंहारकरीचैवभ्रामणीऋतुहारिका ॥ ५ ॥

टी. नियोजिका १ विरोधिनी २ स्वयंहारकरी ३ भ्रामणी ४ ऋतुहा
रिका ५ ॥ ५ ॥

मू. स्मृतिबीजहरेचान्येतयोःकन्येतिशरणे । वि
देषण्यष्टमीनाम्नीकन्यालोकभयावहा ॥ ६ ॥

टी. स्मृतिहरा ६ बीजहरा ७ ये दोनों अत्यन्त भयङ्करी हुई और आठ
वीं विदेषिणी ८ जो संसार को बहुत डर देती है ॥ ६ ॥

मू. एतासांकर्मवक्ष्यामिदोषप्रशमनञ्चयत् । क्ष
णानांचकुमाराणांश्रूयतांहिजसत्तम ॥ ७ ॥

टी. हे हिजसत्तम इन सब के कर्म और सब के दोष छुड़ाने का यत्न क
रता हूँ सुनो पहिले आठों पुत्रों का वृत्तान्त कहता हूँ ॥ ७ ॥

मू. दन्ताकृष्टिःप्रसूतानांवालानांदशनस्थितः ।
करोतिसंहर्षमतोचिकीर्षुर्दुःसहागमम् ॥ ८ ॥

टी. कि दन्ताकृष्टि तो लड़कों के दाँत पर आकर दाँत को किटकिटाता है कि जि
सके सबब से वहाँ पर दुःसह भी आता है ॥ ८ ॥

मू. तस्योपशमनंकार्यंमुप्रस्यतिलसर्षपैः । शय
नस्योपरिस्त्रिपैर्मानुषैर्दशनोपरि ॥ ९ ॥

टी. उसकी यह यत्न करे कि जब लड़का सो जावे तो उसके दाँत पर और
शय्या पर तिल और सरसों छिड़क दे ॥ ९ ॥

मू. सुवर्चसौषधीस्तानान्तथासच्छास्त्रकीर्तनात् ।
उष्ट्रकाटकखड्गास्थिसौमवस्त्रविधारणात् ॥ १० ॥

टी. या सुन्दर औषधियों के जल से स्नान करावे या शतचाण्डी इत्यादि
का पाठ करावे या ऊँट या गैंडा की हड्डी लड़के के गले में बांध दे और
शौम अर्थात् रेशमी वस्त्र धारण करावे ॥ १० ॥

मू. तिष्ठत्यन्यकुमारस्तु तथास्त्वित्यसहद्वुवन । शु-
भाशुभेनृणांयुं केतथोक्तिस्तच्चनान्यथा ॥ ११ ॥

टी. और जो लड़का हर घड़ी ब्रह्मा बोलता रहै तो ससदना चाहिये कि वह तथोक्ति के दोष से बोलता है ॥ ११ ॥

मू. तस्माददृष्टंमाङ्गल्यं वक्तव्यं परिदुनैः सदा । दुष्टे
श्रुतेतथैवोक्तो कीर्त्तनीयोजनार्दनः ॥ १२ ॥

टी. उसके छुड़ाने के वास्ते बुद्धिमानों को चाहिये कि हर समय मङ्गल और अमङ्गल के देनेवाले जो अरिष्ट हैं उनका जप या जनार्दन भगवान् का नाम उच्चारण करावे ॥ १२ ॥

मू. चराचरगुरुब्रह्मायायस्यकुलदेवता । अन्यग-
र्भपरानगर्भान्सदैवपरिवर्त्तयन् ॥ १३ ॥

टी. और चराचर के गुरु जो ब्रह्माजी हैं उनका पूजन करे और जिस के जो कुलदेवता हों उनका भी पूजन करे तो तथोक्ति का दोष छूट जावे और जो दूसरे का गर्भ दूसरे के गर्भ में रखने से प्रसन्न होता है ॥ १३ ॥

मू. रतिमाप्नोतिवाक्यञ्च विवक्षोरन्यदेवयत् । परि-
वर्त्तकसंज्ञोऽयंतस्यापिसितसर्षपैः ॥ १४ ॥

टी. और उन स्त्रियों से ज्ञान का ज्ञान बरकवाता है उसका नाम परिवर्त्तक है उसके दूर होने के वास्ते श्वेत सरसों उस स्त्री पर छिड़क दे ॥ १४ ॥

मू. रक्षोघ्नमन्त्रजप्यैश्चरक्षांकुर्वीततत्त्ववित् । अन्य-
श्चानिलवन्तृणांमङ्गेऽपुस्फुरणोदितं ॥ १५ ॥

टी. और रक्षोघ्न मन्त्र का जप कराकर रक्षा करे और चौथा अङ्ग-धत्त तो है वह मनुष्यों के अङ्ग में वायु के समान पैठ जाता है जिससे मनुष्य का अङ्ग फड़कता है ॥ १५ ॥

मू. शुभाशुभं समाचष्टे कुशैस्तस्याङ्गताडनं । काका-
दिपक्षिसंस्थोऽन्यः खादेतखगतोऽपि वा ॥ १६ ॥

टी. और शुभाशुभ बातें बकता है उसके दूर होने के वास्ते मनुष्य के जन्म पर कुशभौर और पांचवाँ जो शकुन नाम है वह काग इत्यादि पक्षियों में प्रवेश करके आकाश में उड़ता है ॥१६॥

मू. शुभाशुभञ्चकुशलैः कुमारोऽन्योऽवधीतिवै । तत्रापिदुष्टेऽप्यक्षेपः प्रारम्भत्याग एव च ॥१७॥

टी. यानी मनुष्यों के शुभाशुभ कामों को बतलाता है उसके बोलने के वक्त (यानी कुवाक्य बोलने के वक्त) जो काम करते हों उसको छोड़ दें और किसी काम का आरम्भ भी उस समय न करें ॥१७॥

मू. शुभेदुततरं कार्यमिति प्राह प्रजापतिः । गाण्डान्तेषु स्थितश्चान्यो मुहूर्त्त इदं विजोत्तम ॥१८॥

टी. और जब शुभ बोलै तो काम जल्द सिद्ध होता है यह बात प्रजापति की कही हुई है और छठवाँ गाण्डप्रान्तरति जो दुःसह का पुत्र है वह मनुष्यों के गाण्डान्त योग में मुहूर्त्त के अर्धमात्र तक रहता है ॥१८॥

मू. सर्वारम्भान् कुमारोऽतिशस्तताञ्च न स्यतां । विप्रोक्त्या देवतास्तुत्या मूलोत्तरवातेन च विज ॥१९॥

टी. वह सर्वारम्भ देवताओं के स्तोत्र पाठ करने से और अत्यन्त प्रशस्त अनिष्टित ब्राह्मणों को आशीर्वाद से और मूल नक्षत्र के शान्त करने से ॥१९॥

मू. गोमूत्रसर्पपत्नानैस्तदक्षग्रहपूजनैः । पुनश्च धर्मोपनिषत्करणैः शस्त्रदर्शनैः ॥ २० ॥

टी. और गऊ के मूत्र और सर्पों से स्नान करने से और उसके नक्षत्र का जो ग्रह है उसके पूजन करने से और धर्मोपनिषद के पाठ करने से और हथियारों को देखने से ॥२०॥

मू. अवज्ञाजन्मश्चैव प्रशमं याति गाण्डवान् । गर्भस्त्रीणां तथाऽन्यस्तु फलनाशो मुदारुणः ॥२१॥

टी. और उसके (अर्थात् बालक के) जन्म के उत्सव न करने से उसकी

ज्ञान्ति हो जाती है और उस गाण्डान्त में जन्म होने का दोष भी छूट जाता है और दुःसह का सातवाँ पुत्र जो गर्भहा नाम है वह स्त्रियों के गर्भ को नाश कर देता है उसका रूप भयानक है ॥ २१ ॥

मू. तस्य रक्षा सदा कार्य्या नित्यं शौच निषेवणात् । प्र-
सिद्ध मन्त्र लिखना च्छस्तमाल्यादि धारणात् ॥ २२ ॥

टी. उसका दोष छुड़ाने के बाले सदा पवित्र रहना चाहिये और प्रसिद्ध मन्त्र लिखवाकर धारण करना चाहिये और श्रेष्ठ माला उस गर्भवती के गले में रखना चाहिये ॥ २२ ॥

मू. विशुद्धगेहावसथादनायासच्च वै दिज । तथैव
सस्यहाचान्यः सस्यर्द्धिमुपहन्तियः ॥ २३ ॥

टी. और पवित्र घर में उसको रहना चाहिये और दान इत्यादि उस से कराना चाहिये और दुःसह का आठवाँ लड़का जिसका नाम सस्यहा है वह धन की वृद्धि में विघ्न डालता है ॥ २३ ॥

मू. तस्यापिरक्षां कुर्वीत जीर्णोपानदि धारणात् । त-
थापसव्यगमनाच्चाण्डालस्य प्रवेशनात् ॥ २४ ॥

टी. उसकी रक्षा के बाले पुराना जूता खेत में रक्खे और बाईं तरफ से खेत को चौकेट दे और उसमें चाण्डाल का स्पर्श करा देवे ॥ २४ ॥

मू. बहिर्वलिप्रदानाच्च सोमाम्बुपरिकीर्तनात् । प-
रदारपरद्रव्यहरणादिषु मानवान् ॥ २५ ॥

टी. या खेत के बाहर बलिप्रदान करे या चन्द्रमा या जल का स्तोत्र पाठ कर देवे और जो दूसरे की स्त्री या दूसरे का धन इत्यादि हरण करने में मनुष्यों को ॥ २५ ॥

मू. नियोजयति चैवान्यान्कन्यासाचनियोजिका ।
तस्याः पवित्रपठनात् क्रोधलोभादि वर्जनात् ॥ २६ ॥

टी. प्रवृत्त करती है वह दुःसह की प्रथम कन्या है जिसका नाम

नियोजिका है उसकी शान्ति के वास्ते पवित्र स्नान पाठ करावे और क्रोध और लोभादिक को छोड़ दे ॥ २६ ॥

मू. नियोजयति मामेषु विरोधाच्च विवर्जनं । आक्रु-
ष्टोऽन्येन मन्येत ताडितो वा नियोजिका ॥ २७ ॥

टी. और समझ कि नियोजिका इन बातों में प्रवृत्त करती है इस वास्ते विरोध बातों को छोड़ दे यदि कोई गाली भी दे या मारे तो भी यही समझ कि यह सब नियोजिका का दोष है ॥ २७ ॥

मू. नियोजयत्येनमिति न गच्छेत्तद्वशं बुधः । परा-
रादिसंसर्गे चित्तमात्मानमेव च ॥ २८ ॥

टी. और वही दूसरे को नियोजित अर्थात् प्रेरित करके गाली अथवा मार दिलाती है इस वास्ते जानी लोगों को चाहिये कि इसके बश में हो कर परस्त्री के संभोग में अपने मन को न फँसावे ॥ २८ ॥

मू. नियोजयत्यत्र सामामिति प्रालोचि चिन्तयेत् । वि-
रोधं कुरुते चान्वादा मृत्योः प्रीयमाणयोः ॥ २९ ॥

टी. और जानियों को समझना चाहिये कि नियोजिका की यही करनी है और दुःसह की दूसरी लड़की जिसका नाम विरोधिनी है वह स्त्री पुरुषों की अत्यन्त प्रीति में भी विरोध करा देती है ॥ २९ ॥

मू. बन्धूनां सुहृदं पित्रोः पुत्रैः सावर्णि कैश्च या । वि-
रोधिनी सा तद्दृष्ट्वां कुर्वीत बलिकर्म्मणा ॥ ३० ॥

टी. और भाई बन्धु माता पिता पुत्र इत्यादि में भी विरोध करा देती है उसकी शान्ति के वास्ते बलिकर्म्मदिक करना चाहिये ॥ ३० ॥

मू. तथातिवाद सहनाच्छास्त्राचारनिषेवणात् । धा-
न्यं स्वलाह हाहोभ्यः पयः सर्पिस्तथा परा ॥ ३१ ॥

टी. इसी तरह मगडों से अलग रहकर शास्त्रोक्त पवित्र क्रियाओं को करना चाहिये और तीसरी कन्या जो खरिहान और घर से भी

अन्न और गऊ से दूध और दूध में का घी ॥ ३१ ॥

मू. समृद्धिमृद्धिमद्व्यादपहन्ति च कन्यका । सा
स्वयंहारिकेत्युक्ता सदान्तर्यानतन्यग ॥ ३२ ॥

टी. और द्रव्यादिक का हरण करके ऋद्धि और सिद्धि का हरण करती है उसका नाम स्वयंहारिकी है वह सदा अन्नहीन रहती है ॥ ३२ ॥

मू. महानसादृद्धसिद्धमन्नागरस्थितं तथा । परि
विश्यमाणञ्च सदा सादं भुङ्क्ते च भुञ्जता ॥ ३३ ॥

टी. और रसोई या घर में प्रवेश करके अन्न को सिद्ध नहीं होने देती है और खाने वाले के साथ जाप खाती है ॥ ३३ ॥

मू. उच्छेषां मनुष्याणां हरन्त्यन्यच्च दुर्हरा । कर्मा-
न्नागरशालभ्यः सिद्धिं हरति द्विज ॥ ३४ ॥

टी. और हे द्विज जिस घर में अन्न की राशि में से जो कोई कुछ अन्न चुना ले तो उसके अन्न को भी हरण करती है और जिस घर में कोई अच्छा कर्म न हुआ हो उस घर की ऋद्धि और सिद्धि को हरण कर लेती है ॥ ३४ ॥

मू. गेस्त्रीस्तनेभ्यश्च पयः क्षीरहारी सदैव सा । दध्नी
घृततिलान्नैलं सुगगान्तथा सुगं ॥ ३५ ॥

टी. और गऊ और स्त्री के स्तन में से दूध और दही में से घी और तिल में से तेल और मदिरा की भट्टी में से मदिरा हर लेती है ॥ ३५ ॥

मू. रंगंकुसुम्भकादीनां कार्पासात् सूत्रमेव च । सा
स्वयंहारिकानामहरत्यविरतं द्विज ॥ ३६ ॥

टी. और कुसुम में से रंग और कपास में से सूत हे द्विज वह स्वयंहारिका हरण कर लेती है ॥ ३६ ॥

मू. कुर्याच्छिखण्डिनो हन्द्वाक्षार्थं कृत्रिमास्त्रियं ।
रसाश्चैव गृहे लेख्या वर्ज्या च सोष्मता तथा ॥ ३७ ॥

टी. इसकी रसा के वास्ते घर में एक स्त्री और दो भोर नाम पक्षी की

तसवीर लिखना चाहिये और वह तसवीर मिटने न पावे ॥ ३७ ॥

मू. होमाग्निदेवताधूपभस्मनांचपरिष्क्रिया । का-
र्याक्षीरदिभाण्डानामेक्षसदृक्षांस्मृतं ॥ ३८ ॥

टी. और होम करे और देवतों को अग्नि में धूप दे और उसी अग्नि की भस्म दूध इत्यादि के वर्त्तन में रख दे और स्त्री अपने स्नान पर मलै इसी से वह दोष मिट जाना है ॥ ३८ ॥

मू. उद्देगंजनयत्यन्याएकस्थाननिवासिनः । पुरुष
स्यनुयाप्रोक्ताभ्रामणीसातुकन्यका ॥ ३९ ॥

टी. और दुःसह की चौथी कन्या जिसका नाम भ्रामणी है वह एक स्थान निवासी पुरुषों में प्रवेश करके उद्देग करती है ॥ ३९ ॥

मू. तस्याथरक्षांकुर्वीतविशिष्टैः सितसर्षपैः । आ
सनेशयनेचोर्व्यायत्रास्तेसनुमानवः ॥ ४० ॥

टी. इसकी रक्षा केवास्ते जहाँपर वह मनुष्य रहता हो उसके चप-सन और बिछावनपर श्वेत सरसों छिड़का दे ॥ ४० ॥

मू. चिन्तयेच्चनरः पापामामेषादुष्टचेतना । भ्राम
यत्यसहज्जप्यभुवःसूक्तं समाधिना ॥ ४१ ॥

टी. और उसको अपने चित्त में विचार करना चाहिये कि मुझे भ्रामणी पापात्मा हैरन करनी है और बारम्बार पृथ्वी का सूक्त जपे ॥ ४१ ॥

मू. स्त्रीणां पुष्पं हरत्यन्याप्रवृत्तं सातुकन्यका । अ
थप्रवृत्तं साज्ञेयादौः सहा ऋतुहारिका ॥ ४२ ॥

टी. और दुःसह की पाँचवीं लड़की जिसका नाम ऋतुहारिका है वह स्त्रियों की ऋतु (मासिक धर्म) को हरण करती है ॥ ४२ ॥

मू. कुर्वीत तीर्थदेवैकश्चैत्यपर्वतसानुषु । नदी
सङ्गमखानेषुस्तपनंतप्रशान्तये ॥ ४३ ॥

टी. इसकी रक्षा केवास्ते उस स्त्री को तीर्थ या देवालय या यज्ञ

की शाला में या पर्वतों के किनारों में या नदी के संगम या किसी दे-
व कुण्ड में स्नान करावे ॥ ४३ ॥

मू. मन्त्रवितृकततत्वज्ञः पर्वण्युषस च द्विज । चि-
कित्साञ्च वै वैद्यः संप्रयुक्तैर्वरौषधैः ॥ ४४ ॥

टी. और हे द्विज मन्त्र और तत्व के जाननेवाले लोगों को चाहिये कि उ-
स पर्वों में प्रातःकाल स्नान करावे और चिकित्सा जाननेवाले अच्छे वै-
द्य से शास्त्रोक्त अच्छी औषधि दिलाकर उसका दोष छुड़ा दें ॥ ४४ ॥

मू. स्मृतीञ्चापहरत्यन्यास्त्रीणां सा स्मृतिहारिका । वि-
विक्तदेशसेवित्वात्तस्याश्चोपशमो भवेत् ॥ ४५ ॥

टी. और दुःसह की छठी कन्या जिसका नाम स्मृतिहरा है वह स्त्रि-
यों की बुद्धि को हरा करती है इसकी शान्ति के वास्ते पवित्र स्ना-
नों में उस स्त्री को रहना चाहिये ॥ ४५ ॥

मू. बीजापहारिणी चान्यास्त्रीपुंसोरनिभीषणा । मेध्या-
न्नभोजनैः स्नानैस्तस्याश्चोपशमो भवेत् ॥ ४६ ॥

टी. और सातवीं कन्या जिसका नाम बीजहरा है वह मय में स्त्री पुरु-
षों का बीज हरण करती है इसकी शान्ति के वास्ते पवित्र अन्न भोज-
न और स्नान करना चाहिये इससे वह मिट जाती है ॥ ४६ ॥

मू. अष्टर्मादेषणी नाम कन्यालोकभयापहा । या-
करोति न वद्विष्टं न रंजारी मथापि वा ॥ ४७ ॥

टी. और आठवीं कन्या जिसका नाम देषिणी है वह मनुष्यों को
देष में प्रवृत्त करती है ॥ ४७ ॥

मू. मधुक्षीरघृताक्तांस्तु गान्त्यर्थं होमयत्तिलान् ।
कुर्वीत मित्रं रुन्दाञ्च तथेष्टिन्तत्प्रशान्तये ॥ ४८ ॥

टी. इसकी शान्ति के वास्ते मधु और दूध और घी और तिल से
होम करे और मित्र रुन्दा का यज्ञ करे ॥ ४८ ॥

मू. एतेषान्तुकुमाराणांकन्यानां द्विजसत्तम । अष्ट
त्रिंशदपत्यानितेषां नामानि मे शृणु ॥ ४८ ॥

टी. हे द्विजसत्तम यह तो दुःसह के लड़के और लड़कियों का वृत्तान्त तुमसे कहा अब उन लड़के और लड़कियों के जो अड़तीस सन्तान हैं उनके नाम कहता हूँ सुनो ॥ ४८ ॥

मू. दन्ताकृष्टेरभूतकन्याविजल्याकलहा तथा । अ-
वज्ञानृतदुष्टोक्तिर्विजल्यातत्प्रशान्तये ॥ ५० ॥

टी. कि दन्ताकृष्टि के दो कन्या हैं एक विजल्या दूसरी कलहा जो मनुष्यों को झूठ और अपमान और दुष्ट बातों में प्रवृत्त कराती है उस विजल्या के दोष के शान्ति के वास्ते ॥ ५० ॥

मू. तामेव चिन्तयेत्प्रातःप्रयतश्च गृहीभवेत् । क-
लहाकलहंगेहेकरोत्यविरतं नृणाम् ॥ ५१ ॥

टी. बुद्धिमान् गृहस्थों को चाहिये कि विजल्या का ध्यान करें और वह कलहा जो मनुष्यों के घर में सदैव लड़ाई कराती है ॥ ५१ ॥

मू. कुटुम्बनाशहेतुः सातत्प्रशान्तिं निशामय । दू-
र्वाङ्कुरान्मधुघृतक्षीराक्तान्बलिकर्मणि ॥ ५२ ॥

टी. और कुटुम्ब के नाश का कारण वही है उसकी शान्ति के वास्ते दू-
ब के अङ्कुर और मधु और घी और दूध के बलि से ॥ ५२ ॥

मू. विक्षिपेज्जुहुयाच्चैवानलमित्रज्वकीर्तयेत् । भू-
तानां मातृभिः सार्द्धं बालकानान्तुशान्तये ॥ ५३ ॥

टी. अग्नि में होम करे और घर में छिड़के और मित्रवृन्दा का कीर्तन यानी नामोच्चारण करे और भूतों का पूजन कीर्तन मातृगण के साथ करे जिसमें लड़कों की रक्षा हो ॥ ५३ ॥

मू. विद्यानांतपसांश्चैव संयमस्य यमस्य च । कृष्णं
वाणिज्यलाभे च शान्तिं कुर्वन्तु मे सदा ॥ ५४ ॥

श्री. और कहै कि मेरी विद्या और तप और संयम और यम और खेती और वणिज के लाभ में आपलोग हमारी रक्षा सदा करें ॥५४॥

मू. पूजिताश्च यथान्यायं तुष्टिं गच्छन्तु सर्वशः । कूष्माण्डया तु धानाश्च ये चान्ये गणसंजिताः ॥५५॥

श्री. और यथायोग्य पूजित होकर कूष्माण्ड और यानुधान इत्यादि जो और और गण हैं वे सब मेरी पूजा को ग्रहण करके मेरे ऊपर प्रसन्न रहें ॥५५॥

मू. महादेवप्रसादेन महेश्वरमतेन च । सर्व एते नृणां नित्यं तुष्टिमाशु ब्रजन्तु ते ॥५६॥५६॥

श्री. और श्री महादेवजी के प्रसाद से सब कोई इन लड़कों के ऊपर शीघ्र सन्तुष्ट होकर सदा रक्षा करें ॥५६॥

मू. तुष्टाः सर्वं निरस्यन्तु दुष्कृतं दुरनुष्ठितं । महापातकजं सर्वं यच्चान्यद्विघ्नकारणं ॥५७॥

श्री. और तुष्ट होकर सम्पूर्ण पाप और दुष्कर्म इत्यादि महापातकों से उत्पन्न जो है कष्ट और और भी जो विघ्न के कारण हैं उन सब को नाश करौ ॥५७॥

मू. तेषामेव प्रसादेन विघ्नानशयन्तु सर्वशः । उद्धाहेषु च सर्वेषु वृद्धि कर्मसु चैव हि ॥ ५८ ॥

श्री. और आपलोगों के प्रसाद से विवाहादि शुभ कर्मों की वृद्धि में जो कुछ विघ्न हों वह सब नाश को प्राप्त होवें ॥५८॥

मू. पुण्यानुष्ठानयोगेषु गुरुदेवार्चनेषु च । जपयज्ञविधानेषु यात्रासु च चतुर्दश ॥ ५९ ॥

श्री. और पुण्य के अनुष्ठान में और गुरु और देवता के पूजन और यज्ञ और जप और यात्रा इत्यादि में जो चौदह भूतगण हैं ॥५९॥

मू. शरीरा रोग्यभोग्येषु सुखदानधनेषु च । वृद्ध

बालानुरेष्वेव शान्तिं कुर्वन्तु मे सदा ॥ ६१ ॥

टी. वे सब मेरे शरीर के आसपास में और भोग और सुख और दान और धन और बाल और दूध और आतुर इन सब की सदा रक्षा करें ॥ ६० ॥

मू. सोमास्यु पौनथाम्भोधिः सविताचानिलानिलौ
तथोक्तेः कालजिह्वो भूतपुत्रस्तालनिकेतनः ॥ ६१ ॥

टी. और चन्द्रमा वरुण समुद्र सूर्य वायु अग्नि ये सब लोग भी मेरी रक्षा करें और हे दिव्य तथोक्त का पुत्र कालजिह्वा नाम हुआ वह ताड़ के वृक्ष पर रहा करता है ॥ ६१ ॥

मू. संयथांजननी तं स्थस्तानसाधून् विवाधते । परि
वर्त्तमुतौदौतु विरूपविरुतौ दिज ॥ ६२ ॥

टी. हे ब्रह्मन् वह कालजिह्वा जिस स्त्री के शरीर में प्रवेश करता है उसके लड़कों को बहुत दुःख देता है और परिवर्त्तक के दो पुत्र हुये एक का नाम विरूप दूसरे का नाम विरुत है ॥ ६२ ॥

मू. तौतुरक्षाग्रपरिखायाकाराभ्यो धिसंश्रयौ । गु
र्विण्णः परिवर्त्तन्तौ कुरुतः पादपादिषु ॥ ६३ ॥

टी. ये दोनों वृक्ष के ऊपर और परिखायानी खाई और कोठा और नदी इत्यादि जलाशय में रहते हैं और अन्य स्थानों में भी घूमकर रहते हैं और गर्भिणी स्त्री के दुःखदायी होते हैं ॥ ६३ ॥

मू. क्रौष्टुके परिवर्त्तन्त्या गर्भस्थान्योदरात्ततः । नव
संचैव नैवाटनप्राकारं महोदधिं ॥ ६४ ॥

टी. हे क्रौष्टुकि जो गर्भवती इन स्थानों में घूमती फिरती है उसके गर्भ में वह दुःख देता है इसवास्ते गर्भिणी स्त्री को वृक्षों में और कोठे पर और जलाशयों के किनारे पर ॥ ६४ ॥

मू. परिखावासमाक्रामिदवलागर्भधारिणी । अङ्ग
धरुतनयने मे पिशुनं नाम नामतः ॥ ६५ ॥

टी. और खाई में जाना न चाहिये और अङ्गधक का पुत्र पि
युन नाम है ॥ ६५ ॥

मू. सोऽस्थिमज्जागतः पुंसां बलमत्यजितात्मनां । श्ये
नकाकपोतांश्च गृह्णन् कैश्च वै सुतान् ॥ ६६ ॥

टी. वह अजितात्मा पुरुषों के चर्बी और हड्डी में प्राप्त हो
उनके बल को खाना है और बाज और कौआ और कबूतर
और गिद्ध और उल्लू ये पुत्र ॥ ६६ ॥

मू. अवापशकुनिः पञ्चजगदुत्तानसुरासुरः । श्ये
नं जग्राह मृत्युश्च काकं कालो गृहीतवान् ॥ ६७ ॥

टी. पाँच शकुनी के पैदा हुवे इन्हीं को देवता और राक्षसों ने ग्रहण
किया यानी रक्ता बाज को मृत्यु ने और काग को काल ने लिया ॥ ६७ ॥

मू. उलूकनिर्जतिश्चैव जग्राह तिग्मया वह्निं । गृह्ण
व्याधित्तमैशोऽयं कपोतं च सूर्यं यमः ॥ ६८ ॥

टी. और उल्लू जो अत्यन्त भयावन है उसको निर्जति ने रक्ता और
ह को व्याधि ने और कबूतर को यमराज ने रक्ता ॥ ६८ ॥

मू. एतेषामेव चैवोक्ता भूताः पापोपपादते । तस्मा
च्छेनादयो यस्य निलीयेयुः शिरस्यथ ॥ ६९ ॥

टी. इन्हीं लोगों के बोलने से प्राणी पाप करने में प्रवृत्त होते हैं इसवा
ले बाज वगैर पाँचों पक्षी जिसके घर पर या शिर पर बैठें तो ॥ ६९ ॥

मू. तेनात्मारक्षणाया लंशान्तिं कुर्याद्विजोत्तमः । गेहे
प्रसूतिरेतेषां तद्वन्नीडनिवेशनं ॥ ७० ॥

टी. वह पुरुष अपनी रक्षा के वास्ते हे दिजोत्तम शान्ति करे और ये पक्षी
जिस घर में बच्चा दे या घोसला लगावें तो ॥ ७० ॥

मू. नरत्नवर्जयेद्देहं कपोताक्रान्तमस्तकं । श्येनः
कपोतो गृधश्च काको लूको गृहे द्विजः ॥ ७१ ॥

टी. तो उस मनुष्य को चाहिये कि उस घर को छोड़ दे अगर कबूतर भी मि
र पर बैठे तो उसकी शान्ति करना चाहिये और हे दिन बाज या कबूतर
या कौआ या गिद्ध या उल्लू जो घर में ॥ ७१ ॥

मू. प्रविष्टाः कथयेदन्तं वसन्तातत्रवेश्मनि । ईदृक्
परित्यजेद्देहं शान्तिं कुर्याच्च पण्डितः ॥ ७२ ॥

टी. पैर जाय तो जानना कि उस घरवाले का नाश बनलाता है इस वास्ते
उस घर को छोड़ दे या उसकी शान्ति करे ॥ ७२ ॥

मू. स्वप्नेऽपि हि कपोतस्य दर्शनं न प्रशस्यते । पडप-
त्यानिकथ्यन्ते गण्डप्रान्तरास्ते स्तथा ॥ ७३ ॥

टी. और स्वप्न में भी कबूतर को देखना बुरा है और गण्डप्रान्त
रति के छः पुत्र हैं ॥ ७३ ॥

मू. स्त्रीणां रजस्यवस्थानं तेषां कालांश्च मे शृणु । च-
त्वार्यहं निपूर्वानितथैवान्यत्र योदश ॥ ७४ ॥

टी. वे सब स्त्रियों के रजस्थान में रहते हैं उनके वक्त मुनौ कि चतुर्गुरु
होने के दिन से चौथे दिन तक पहिला लड़का उसमें रहता है और दूसरा
लड़का त्रयोदशी के दिन उसमें रहता है ॥ ७४ ॥

मू. एकादशतथैवान्यदपत्यंतस्य वै दिने । अन्य
दिनाभिगमने श्राद्धदाने तथा परे ॥ ७५ ॥

टी. और तीसरा एकादशी के दिन और चौथा दिन में एति करने के समय व
हों रहता है और पाँचवाँ श्राद्ध और दान के दिन उस रजस्थान में रहता है ॥ ७५ ॥

मू. पर्वस्वथान्यतस्मात्तु वर्ज्या न्येतानि पण्डितैः ।
गर्भहन्तुः सुतो विधो मोहनी चापिकन्यका ॥ ७६ ॥

टी. और छठवाँ पर्वों के दिन रजस्थान में रहता है इस वास्ते पण्डित लो
गों को पूर्वोक्त दिनों में स्त्री गमन करना न चाहिये और गर्भहा का नेत्र
विघ्न नाम हुआ और कन्या मोहनी नाम हुई ॥ ७६ ॥

मू. प्रविश्य गर्भमत्येको भुक्त्वा सोहयतेऽपरा । जायं-
ते मोहना तस्याः सर्पमादृक् कच्छपाः ॥ ७७ ॥

टी. वह विप्र स्त्री के गर्भ में पैदा उस गर्भ को खा जाता है और मोहनी भी गर्भ को खाकर मोह यानी माया कर देती है कि जिसके सबब से साँप और मेंढक और कछुवा उस गर्भ से पैदा होता है ॥ ७७ ॥

मू. सरीसृपाणि चान्यानि पुरीषमथ वा पुनः । ष-
ण्मासान् गुर्विणी मांसमश्नुवानामसंयतां ॥ ७८ ॥

टी. जयदा सरीसृप यानी दृष्टिक या बहुतेरे नाग पैदा होते हैं या उस गर्भ को पुरीष यानी विष्टा कर देती है हे विप्र गर्भिणी स्त्री को छः महीने तक मांस न खाना चाहिये और असंयम रहना भी न चाहिये क्योंकि जो गर्भिणी मांस खाती है या असंयम रहती है ॥ ७८ ॥

मू. वृक्षच्छायाभ्यां रात्रावथ वा त्रिबन्धये । श्म-
शानकटभूमिषामुत्तरीयविवर्जितां ॥ ७९ ॥

टी. या रात को वृक्ष की छाया में या चौबटी या त्रिबटी या स्मशान में जाती है या चटाई या ज़मीन पर सोती है या नग्न यानी नंगी रहती है ॥ ७९ ॥

मू. रुचमानां निशीथेऽथ आविशेत्तामसौ स्त्रियं । स-
स्यहन्तुस्तथैवैकः क्षुद्रको नामनामतः ॥ ८० ॥

टी. या आधी रात को सोती है उन स्त्रियों के गर्भ में वह मोहनी प्रवेश कर जाती है इसवास्ते गर्भिणी स्त्री को इन बातों और इन जगहों से दूर रहना चाहिये हे मुनि सस्यहा के एक पुत्र क्षुद्रक नाम हुआ ॥ ८० ॥

मू. सस्यर्द्धिं स सदा हन्ति लब्ध्वा रन्ध्रं शृणुष्वतत् ।
अमाङ्गल्यदि नारम्भे सुतु प्रोवपते च यः ॥ ८१ ॥

टी. वह छिद्र पाकर सब काल में सस्य यानी धन को नाश करती है उस छिद्र को पुनो अर्धरात्रि बुरे दिनों या बुरे नक्षत्रों में वृत्ति युक्त

खेत बोया जाता है ॥ ८२ ॥

मू. क्षेत्रेष्वनुप्रवेशं वैकरोत्यन्तोपसङ्गिषु । तस्मात्कल्पः सुप्रशस्ते दिने भ्यर्च्य निशाकरं ॥ ८२ ॥

टी. उसके सब व से वह खुदक उस जाय दाद में प्रवेश करता है इस वास्ते अच्छे दिन और अच्छी साइत में चन्द्रमा का पूजन करके ॥ ८२ ॥

मू. कुर्यादारम्भमुपि च हृष्टुष्टः सहायवान् । नियोजिकेति या कन्या दुःसहस्यमयोदिता ॥ ८३ ॥

टी. हर्ष और सन्तुष्ट और बलवान होकर खेत बोना चाहिये और नियोजिका नाम कन्या दुःसह की जिसको मैं वर्णन कर चुका हूँ ॥ ८३ ॥

मू. जातं प्रचोदिका संज्ञं तस्याः कन्या चतुष्टयं । मत्तोन्मत्तप्रमत्तास्तु न वानार्यस्तुताः सदा ॥ ८४ ॥

टी. उसके चार कन्या हुई पहिली का नाम मत्ता दूसरी का उन्मत्ता तीसरी का प्रमत्ता चौथी का नवा नाम हुआ इन चारों का जो धर्म है उसका प्रचोदिका नाम है ॥ ८४ ॥

मू. समाविशन्ति नाशाय चोदयन्ति रुदारुणं । अधर्मधर्मरूपेण कामञ्चा कामरूपिणं ॥ ८५ ॥

टी. क्योंकि वह मनुष्यों के शरीर में प्रवेश करके उसके नाश के वास्ते धर्म से छुड़ा कर अधर्म में फँसाती है और इच्छा रहित पुरुष के मन में इच्छा पैदा करती है ॥ ८५ ॥

मू. अनर्थचार्यरूपेण मोक्षञ्चामोक्षरूपिणं । दुर्विनीता विनाशो च दर्शयन्ति पृथक् कनरान् ॥ ८६ ॥

टी. और अनर्थरूप को अनर्थ में और मोक्ष को अमोक्ष में यानी मुक्ति वाले को अमुक्ति में फँसाती है ये सब लड़कियाँ बुरे काम की करने वाली हैं जो अपवित्र रहती हैं उसको दिखाई देती हैं ॥ ८६ ॥

मू. भ्राम्यन्ते ताभिः पुरुषार्थात् पृथक् कनराः ॥

तासां प्रवेशश्च गृहे सन्त्यसेषु उद्दुम्बरे ॥ ८७ ॥

टी. और दुःसह की आठों कन्या भी मनुष्यों को शुभ कर्मों से छुड़ाकर अलग कर देती हैं इन लोगों का प्रवेश घर में और सन्ध्या और ऋतु और गूलर में होता है ॥ ८७ ॥

मू. धाता विधातोश्च बलिर्यत्र कालेन दीयते । भुञ्जतां पिवतां वापि सङ्गिभिर्जलविप्रुषैः ॥ ८८ ॥

टी. जिस घर में धाता और विधाता की बलि दिये बिना मनुष्य भोजन करता है उस भोजन के साथ मनुष्य के शरीर में प्रवेश करती हैं ॥ ८८ ॥

मू. नवनारीषु संक्रान्तिस्तातामाश्च भिजायते । विरेधि न्यास्त्रयः पुत्राश्चोदको ग्राहकस्तथा ॥ ८९ ॥

टी. और नवीन स्त्रियों के शरीर में इन सभी का प्रवेश शीघ्र होता है और विरेधिनी के तीन पुत्र पैदा हुवे पहिले का नाम चोदक दूसरे का नाम ग्राहक ॥ ८९ ॥

मू. तमः प्रच्छादकश्चान्यस्तत्स्वरूपं शृणुष्व मे । प्रदीपते लसंतर्गदूषिते लङ्घिते तथा ॥ ९० ॥ ९० ॥

टी. और तीसरे का नाम तमप्रच्छादक है इन लोगों का वास स्थान जो है वह सुनो कि दीपक के तेल से जो जगह भीगी हुई होती है और नांघी हुई चीजों में ॥ ९० ॥

मू. मुशलो लखलेयत्र पादुके वासने स्त्रियः । सर्परात्रादिकं यत्र पदाकृष्य तथासनं ॥ ९१ ॥

टी. और जहाँ स्त्रियाँ ऊखल या मुशल या खड़ाऊँ या सूप या दोती या पाँव से रबीच हुवे आसन बगैरा पर बैठती हैं ॥ ९१ ॥

मू. यत्रोपलिप्तश्चानर्घ्यविहारः क्रियते गृहे । दर्वीमुखेन यत्राग्नि साहृतोऽन्यत्र नीयते ॥ ९२ ॥

टी. और जहाँ घर लीपने उपरान्त बिना देवतार्चन किये स्त्रियाँ क

फिर करती हैं और जहाँपर करछुल से आग निकाल कर दूसरे को देती हैं ॥ ६२ ॥

मू. विरोधिनीसुनास्तत्रविजृम्भन्तेप्रचोदिताः । ए-
कोजिह्वागतःपुंसांस्त्रीणाञ्चालोकसत्यवान् ॥ ६३ ॥

टी. इन्हीं जगहोंपर वे विरोधिनी के लड़के रहते हैं एक तो स्त्री और पुरुषों के जीभ पर बैठ कर मूँठ मच बकवाता है ॥ ६३ ॥

मू. चोदकोनामसप्रोक्तःपेशून्यंकुसुतेगृहे । अव-
धानकृतश्चान्यःअवाणस्योऽतिदुर्मतिः ॥ ६४ ॥

टी. उसका नाम चोदक है और वही घरमें कुटिलपना कराता है और दूसरे का हाल सुनो जो दुबुद्धी स्त्री और पुरुष के कानमें रहता है ॥ ६४ ॥

मू. करोतिग्रहणन्तेषांवचसाग्राहकस्तुसः । आक्र-
म्यान्योमनोचृणांतमसाश्चाद्यदुर्मतिः ॥ ६५ ॥

टी. और उनलोगों के बचन को ग्रहण करता है उसीका नाम ग्राहक है और तीसरा मनुष्यों के मन को खींचकर तमोगुण से आच्छादित करता है ॥ ६५ ॥

मू. क्रोधंजनयतेयस्तुतमःप्रच्छादकस्तुसः । स्वयं
हार्यास्तुचौर्येनजनितन्ननयत्रयं ॥ ६६ ॥

टी. और क्रोध उत्पन्न करता है उसका नाम तमप्रच्छादक है और स्वयंहारी के चौर्य से तीन पुत्र उत्पन्न हुवे ॥ ६६ ॥

मू. सर्वहार्यर्द्धहारीचवीर्यहारीतथैवच । अना-
चान्तगृहेष्वेतैमन्दाचारगृहेषुच ॥ ६७ ॥

टी. प्रथम सर्वहारी दूसरा अर्द्धहारी तीसरा वीर्यहारी ये सब जिस घरमें लीपा पोता नहीं जाता और नेमनिष्ठा भी नहीं होती है ॥ ६७ ॥

मू. अप्रहालितपादेषुप्रविशत्सुमहानसं । खले
पुगोष्ठेषुचवैशोहायेषुगृहेषुचै ॥ ६८ ॥

श्री- और जहाँ बिना पाँव धोये हुये चौके में जाते हैं और खरिदान
गोड़ा और उस घर में जहाँ परशोह होना है ॥ ८८ ॥

मू- तेषु सर्वे यथान्यायं विहरन्ति रमन्ति च । आम
ह्यास्तनयस्त्वैकः काकजंघ इति स्मृतः ॥ ८९ ॥

श्री- इन्हीं स्थानों में वह तीनों अपनी इच्छा पूर्वक विहार करते हैं
आमणी के एक ही पुत्र हुआ जिसका नाम काकजंघ है ॥ ८९ ॥

मू- तेनाविष्टोरतिं सर्वे नैव प्राप्नोति वैपुर । भुञ्ज
न्योगायते मैत्रे गायते हसते च यः ॥ ९० ॥

श्री- वह काकजंघ जिस मनुष्य के शरीर में प्रवेश करता है उसे
किसी जगह ज्ञानन्द नहीं मिलता और जो मनुष्य खाते
गाने या हँसने हैं ॥ ९० ॥

मू- सन्ध्यामैथुनिनञ्चैव नरमाविशति द्विज । क
न्यायप्रसूतासायाकन्याऋतुहारिणी ॥ ९१ ॥

श्री- और हे ब्रह्मन् जो सन्ध्याकाल में मैथुन करते हैं उन्हीं के शरीर
वह प्रवेश करता है और ऋतुहारिणी के तीन कन्या पैदा हुईं ॥ ९१ ॥

मू- एका कुचहरा कन्या अन्या व्यञ्जनहारिका । तृ
तीया नुसमारव्याता कन्यका जातहारिणी ॥ ९२ ॥

श्री- प्रथम कुचहरा दूसरी व्यञ्जनहारिका तीसरी का नाम
हारिणी है ॥ ९२ ॥

मू- यस्यानक्रियते सर्वः सम्यक् वैवाहिको विधिः ।
कालौ तीनोऽथवा तस्या हरत्येका कुचद्वयं ॥ ९३ ॥

श्री- और जिस स्त्री का विवाह सम्यक् प्रकार की विधि से नहीं हो
या विवाह की साइत बीतने पर विवाह होता है तो उस स्त्री के दो
नो को वह कुचहरा हरण कर लेती है ॥ ९३ ॥

मू- सम्यक् श्राद्धमदत्वा च तथानर्घ्यचमातरं ।

विवाहितायाः कन्याया हरति व्यञ्जनन्तया ॥ २०४ ॥

टी. और सम्यक् प्रकार आहु या नाविगणों का पूजन किये बिना जिस कन्या का विवाह होता है उस कन्या के खाने के पदार्थ को वह व्यञ्जन हारिका हरण कर लेती है ॥ २०४ ॥

मू. अग्न्यम्बुशून्ये च तथा विधूये सृत्तिका गृहे । अ
दीपशस्त्रमुशले भूति सर्षपवर्जिते ॥ २०५ ॥

टी. और जिस प्रसूती (यानी जन्मा) के घर में अग्नि या जल या धूप या दीप या कोई हथियार या मूशल इत्यादि न रहे और सरसों और बाल भी न छिटकाई जाय ॥ २०५ ॥

मू. अनुप्रविश्य सा जातमुपहृत्यात्मसम्भवं । क्ष
णप्रसविनी वालन्तत्रैवोत्सृजते द्विज ॥ २०६ ॥

टी. उस घर में वह जात हारिका प्रवेश करके उस लड़के को हरण कर लेती है और वह ब्रह्मन् वह लड़का एक क्षण में मर जाता है ॥ २०६ ॥

मू. सा जातहारिणी नाम सुधोरपिशिता शना । त
स्मात्संरक्षणं कार्यं यत्नतः सृत्तिका गृहे ॥ २०७ ॥

टी. और वह जातहारिणी की सूरत भयावनी है और सदा मांसही खाती है इसलिये उसकी रक्षा के वास्ते प्रसूती के घर में सम्यक् प्रकार से यत्न करना चाहिये ॥ २०७ ॥

मू. स्मृतिञ्चाप्रयतानाञ्च शून्या गारनिषेवणात् । अ
पहन्ति सुतस्तस्याः प्रचाडो नाम नामतः ॥ २०८ ॥

टी. और जब प्रसूती का घर सूना रहता है तब प्रचाड नाम स्मृतिहर का पुत्र उस घर में जाकर प्रसूती की बुद्धि को हरण कर लेता है ॥ २०८ ॥

मू. पौत्रेभ्यस्तस्य सम्भूतालीकाः शतसहस्रशः । चा
ण्डालयो नयश्चाष्टौ दाडपाशातिभीषणाः ॥ २०९ ॥

टी. और उस प्रचाण्ड के बेटी और पोती से लाखों लीक पैदा हुये और वे सब चाण्डाल योनि दाण्ड और फाँसी हाथ में लिये रहते हैं और सब भयावनी सूरत हैं ॥ ११६ ॥

मू. क्षुधाविष्टास्तलीकास्ताश्चाण्डालयोनयः।

अभ्यधावन्तचान्योन्यमनुकामाः परस्परं ॥ ११७ ॥

टी. वह चाण्डाल योनि लीक सब क्षुधा से व्याकुल होकर आपुसही में एक को एक खाने के वाले जब रौंड़े ॥ ११७ ॥

मू. प्रचाण्डो वारयित्वा तु तास्ताश्चाण्डालयोनयः। स

मये स्थापयामास यादृशेतादृशं शृणु ॥ ११८ ॥

टी. तब प्रचाण्ड ने उन सबों को रोका और उन सबों का समय जिस तरह स्थापन किया वह सुनौ ॥ ११८ ॥

मू. अद्य प्रभृति लीकानामावासं यो हि दास्यति। द

ण्डं तस्याहमनुलं पातयिष्ये न संशयं ॥ ११९ ॥

टी. प्रचाण्ड ने कहा कि आज से लीकों को जो कोई रहने की जगह देगा उसको मैं बहुत दाण्ड करूँगा कि जिसमें वह मनुष्य स्थिर न रहेगा यह बात निस्सन्देह जानौ ॥ ११९ ॥

मू. चाण्डालयोन्येऽवसथे लीकाया प्रसविष्यति। त

स्याश्च सन्ततिः पूर्वासावसद्यो न शिष्यति ॥ १२० ॥

टी. चाण्डाल के घर में जिस स्त्री के गर्भ होता है तो उन्हीं लीकों के दोष से उस स्त्री का वह लड़का और पहिले के पैदा हुये लड़के भी सब नाश हो जाते हैं ॥ १२० ॥

मू. प्रसूते कन्य के देतु स्त्री पुंसोर्वीर्यहारिणी। वात

रूपामरूपा च तस्याः प्रहरणान्तुते ॥ १२१ ॥

टी. और स्त्री और पुरुष के वीर्य को हरण करने वाली जो बीज हारिणी है उसके दो कन्या पैदा हुईं एक का नाम वात रूपा दूसरी—

अरूपा है इसके प्रवेश और छुड़ाने का यत्न कहता हूं मुनौ ॥११४॥

मू. वानरूपा निषेकान्ते सायस्मैक्षिपते मुनः । सप्रभा
नवानशुक्रत्वं प्रयाति वनितापिवा ॥११५॥

टी. जो पुरुष ऋतुवाली स्त्री बिना पवित्र हुई के साथ गमन करता
है उस पुरुष के शरीर में वानरूपा प्रवेश करके उसको प्रमेहादिक
का रोग पैदा करदेती है और इसी तरह उस स्त्री को भी ॥११५॥

मू. तथैव गच्छतः सद्यो निर्वीर्यत्वमरूपया । स्ना-
ताशीनरो योः सौ तथा चापि वियोगिनः ॥११६॥

टी. और इसी तरह जो पुरुष ऋतुमती स्त्री से पवित्र होने पर मो-
ग नहीं करता है तो उस पुरुष के शरीर में वह अरूपा प्रवेश क-
रके उसका वीर्य हरण करती है ॥११६॥

मू. विद्वेषिणी तु या कन्या भृकुटी कुदिलानना । तस्या
द्वौ तनयौ पुंसामपकारप्रकाशकौ ॥११७॥

टी. और विद्वेषिणी जो सर्वदा भौं चढ़ाये रहती है उसके दो लड़के हु-
वे एक का नाम मनुष्यों का अपकारक दूसरे का नाम प्रकाशक है ॥११७॥

मू. निर्वीजत्वं नरो याति नारी वा शौचवर्जिता । पैशु-
न्याभिरतं लोलमसञ्जल निषेवणं ॥११८॥

टी. जो स्त्री या पुरुष सर्वदा ही अपवित्र रहते हैं और जो पुरुष नपुंसक
हो रहे हैं और जो किसी की चुगली करते हैं और जो असञ्जल अर्थात्
अशुद्ध जल से स्नानादि करते हैं अथवा चंचल रहते हैं ॥११८॥

मू. पुरुषद्वेषिणा चैतौ नरमाक्रम्यतिष्ठतः । मात्राभ्या-
न्ना तथा मित्रैरभीष्टैः स्वजनैः परैः ॥११९॥११९॥

टी. और जो मनुष्य परद्रोह करते हैं इन्हीं पुरुषों के शरीर में
वह दोनों प्रवेश करके माता और भ्राता और मित्र और गुरु
त्यादि स्वजन लोगों से भी ॥११९॥

मू. विद्विष्टो नाशमायानिपुरुषोधर्मतोऽर्थतः । ए
कस्तुस्वगुणाल्लोके प्रकाशयति पापकृत ॥ १२० ॥

टी. विरोध करता है और मनुष्यों के अर्थ और धर्म को भी
नाश करता है एक तो यह है जो अपना गुण लोक में प्रकट कर
ता है जिसका नाम प्रकाशक है ॥ १२० ॥

मू. द्वितीयस्तु गुणानमैत्रीलोकस्थामपकर्षति । इत्ये
ते दौः सहाः सर्वे यक्षाः सन्ततावध ॥ पापाचा-
राः समाख्याता ये व्याघ्रमखिलं जगत् ॥ १२१ ॥

टी. और दूसरा जो है अपकारक वह मनुष्य के गुण और मित्र
को खींच लेता है हे क्रौष्टुकि यह सब दुःसह की सन्तान जो म
हापातकी और दुष्टात्मा और सम्पूर्ण जगत् में व्याघ्र और वि-
ख्यात है उसको मैंने वर्णन किया ॥ १२१ ॥

इति श्री मार्कण्डेय पुराणे दौः
सहोत्पत्ति समापनं नाम ॥ ५१ ॥

اور ہمارے کیا ون

۱۔ مارکندے جی کہتے ہیں کہ ہے کر و شکی دوسہ کی استری کا نام نہراشی تھا جو کھجک کی
استری کو ایام حیض میں چاندال کے دیکھنے سے پیدا ہوئی تھی ۲۔ دوسہ کی راشی سے آٹھ لڑکے
اور آٹھ لڑکیاں پیدا ہوئیں جو تمام جہان میں پھیلی رہتی ہیں اور ان سبھوں کی شکل عجیب غریب
اور خوفناک ہے ان سب کے نام کتابوں سنو۔ ۳۔ پتلے لڑکے کا نام دیتا کرشت دوسرے
کا نام تھوکت بیسرے کا پر بڑے جو تھے کا انگ دھڑک پانچویں کا شکنی چھٹویں کا گندڑ
۴۔ ساتویں کا گرجہ آٹھویں کا سٹیہ ناناں ہر اب لڑکیوں کے نام سنو۔

۵ پہلی لڑکی کا نام نیو جگا دوسری کا نام برو دھنی تیسری کا نام سونیک مارکری جو بھی
 کا نام بھرا منی پانچویں کا نام رٹ مارکا - ۶ چھٹویں کا نام اسیرت ہر اساتوین کا نام ہر
 یہ دونوں لڑکیاں نہایت ڈراونی صورت ہیں آٹھویں کا نام بڑو دیکھنی یہ لوگوں کو خوف دینے والی ہے
 ۷ اے براہمن اب میں انھوں کا دوست اور اسکے دور ہونے کی تدبیر علیحدہ علیحدہ بیان کرتا
 ہوں سنو - پہلے آٹھ لڑکوں کا حال بیان کرتا ہوں - ۸ جسکا نام دتا کرشت ہے وہ سوتے
 ہوئے لڑکوں کے پاس جاتا ہے تب وہ لڑکے دانت کرکرتے ہیں اور اسکے سبب سے دسہ
 (دکھ) بھی دمان آتا ہے - ۹ اسکے دور کرنے کی تدبیر یہ ہے کہ جس بچھونے پر لڑکا سوتا ہو اس
 بچھونے پر تھوڑے تل اور سرسوں چھڑک دے اور اس لڑکے کے دانت پر بھی چھڑک دے -
 ۱۰ اور اگر مودہ دھاؤں کے پانی سے اسنان اور شت چنڈی وغیرہ کا پاٹھ کراوین اور اونٹ
 یا گنڈے کی ہڈی اس لڑکے کے گلے میں باندھیں اور چھوٹے پتھر لٹھی لٹھی کپڑا اٹھائیں ۱۱ اور
 لڑکا ہر وقت آپ سے آپ اور بیفایدہ بولتا رہے تو سمجھنا چاہیے کہ وہ تھوکت کے دوست سے
 بولتا ہے - ۱۲ اسکے دفع کرنے کے واسطے پندت لوگوں کو چاہیے کہ ہر وقت منگل اور انگل دینے
 والے جو ارشت ہیں انکا جب یا بھگوان کا نام اُچارن کراوین - ۱۳ اور چارچ کے گرو
 جو برہما جی ہیں انکا پوجن کریں اور اپنے گلے کے دیوتا کا بھی پوجن کریں تو تھوکت کا دوست
 چھوٹ جائے اور چھکا نام پر برت ہے اسکا یہ کام ہے کہ ایک کا گر بھ لینی حمل دوسرے کے گرج
 میں رکھ کر خوش ہوتا ہے - ۱۴ اور جس عورت پر دخل کرتا ہے وہ عورت واسیات باتین بجا کرتی
 ہے اس کے آنے کی شناخت ہے اسکے دفع کرنے کی تدبیر یہ ہے کہ سفید سرسوں اس عورت
 پر چھڑک دے - ۱۵ اور رچھوک منتر کا جب اسکی بھلائی کے واسطے کراوین اور جسکا نام
 انگ دھیرک ہے وہ ہوا کی طرح آدمیوں کے جسم میں سما جاتا ہے جسکے سبب سے اس آدمی کا
 بدن کاپنے اور بھر مکنے لگتا ہے - ۱۶ اور بھلی ٹری باتین کرتا ہے اسکے دفع کرنے کی یہ تدبیر
 ہے کہ اس آدمی کو کٹھا سے مارے اور جسکا نام سنگنی ہے وہ کوٹا وغیرہ پوند جانور دن کے جسم میں
 سما کر آسمان میں اڑا کرتا ہے - ۱۷ اور آدمیوں کے اچھے اور بُرے کاموں کی خبر دیتا ہے
 جو وقت وہ اسبھ لولے اسوقت جو کام کرتے ہوں چھوڑ دیں اور اسوقت کوئی کام شروع
 بھی کریں - ۱۸ اور اگر سبھ (یعنی اچھا) بولے تو اسوقت جو کام کریں وہ سبھ ہو جائے
 یہ بات پر جا بت کی کہی ہوئی ہے - اور جسکا نام گنڈ پانت رت ہے وہ آدمیوں کے گنڈ دانت جو ک

۱۹ | وہ ستر بار منجھ دیو توں کے استوترا پاتھ کرانے اور
 راضون کے آشیر باد اور مول نچھتر کے شانت کرنے سے - ۲۰ اور گنو کے پیشاب اور ستر
 سے اس لڑکے کو انسان کرانے اور اس کے نچھتر کا جو گرہ ہوا اسکا یوجن کرنے اور دھرم آپ نیکھ
 کے پاتھ کرنے اور ہتھیاروں کے دیکھنے سے - ۲۱ اور اس لڑکے کے پیدا ہونے کی خوشی وغیرہ
 کرنے سے دفع ہو جاتا ہے اسکی شانت ہو اور اس گنڈانت میں پیدا ہونیکا دوش بھی
 بھٹ جاتا ہے اور جسکا نام گرہ با ہے وہ عورتوں کے حمل کو ضائع کر دیتا ہے - ۲۲ اس کے دفع
 کرنے اور حمل ضائع ہونے کی تدبیر یہ ہے کہ وہ حاملہ ہمیشہ پاک و صاف رہا کرے اور پرستہ ستر
 لکھا کر دھارن کرے اور آتم مالا گلے میں پہنے رہے - ۲۳ اور پوٹر گھر میں رہے اور دان
 وغیرہ کرے - اور جسکا نام سسہ نامی وہ جایداو کے اگنے اور بڑھنے میں نقصان کرتا ہے -
 ۲۴ اس کے دفع کرنے کے واسطے پرائنا جو تا اس کھیت میں رکھ دے اور بائیں طرف سے اس
 کھیت کو چوگیٹ دی یعنی گھوم دے اور چاندال آدمی کو اس کھیت میں چلا دے - ۲۵ اور کھیت کے
 ہر بلدان کرے یا چندرمان یا جل کا استوترا پاتھ کرادیوے - اب لڑکیوں کا حال کہتے ہیں ستر
 کو دوسرے کی عورت یا دوسرے کی دولت کو لے لینے کے واسطے آدمی کو - ۲۶ قائم و مستعد
 کرے اسکا نام نیو جکا ہے اور وہ دسہ کی پہلی لڑکی ہے اس کے دفع ہونیکے واسطے چاہیے کہ پوٹر ستر
 کو پڑھے اور کرودھ اور کو بھ دیگر کو ترک کرے ۲۷ اور یہ سمجھے کہ جھکوان بڑے کاموں میں
 نیو جکا پھنساتی ہے اس لیے غصہ کو چھوڑ دے اگر کوئی گالی دے یا مارے تو بھی یہی سمجھے کہ یہ
 سب نیو جکا کا تصور ہے اور کسی کانیں - ۲۸ اور وہی نیو جکا دوسرے کو بھی بھڑکا کر
 گالی اور مار کھلاتی ہے اس واسطے عقل مند کو چاہیے کہ اس کے قابو میں نہ آوے اور غیر کی عورت
 کو نظر بد سے نہ دیکھیں - ۲۹ دوسری لڑکی جسکا نام برودھنی ہے وہ عورت و مرد یعنی زوجہ
 و شوہر میں اگرچہ بڑی محبت بھی ہو تو بھی لڑائی کرادیتی ہے - ۳۰ اور مان اور باب اور لڑکا
 اور دوست اور بھائی بندھ میں بھی لڑائی کرادیتی ہے اس کے دفع ہونے کے واسطے بلی کو تم کرنا
 چاہیے - ۳۱ اور لڑائی جھگڑوں سے پرہیز اور شاستر کی کسی ہوئی پوٹر کر یا کرنا چاہیے تیسری لڑکی
 جسکا نام سونیک نام کرے اسکی خاصیت یہ ہے کہ کھلیان اور گھرون سے غلہ وغیرہ اور گنو
 سے دوہ اور دوہ میں سے گھی - ۳۲ اور دولت وغیرہ کو ہرن کر کے رڈھ اور ستر
 ہی ہر لیتی ہے اور ہمیشہ غائب و پوشیدہ رہتی ہے - ۳۳ اور جس گھر میں کھانا پکتا ہے

وہاں جا کر کھانا خراب کر دیتی ہے اور کھائے والے کے ساتھ بھی آپ کھاتی ہے ۳۳ اور
 اسے برا مہن اگر گھر میں غلہ کا ڈھیر لگا ہو اور اس ڈھیر میں سے کوئی شخص چرائے اور گھر
 سے پوشیدہ کھاوے تو اس کے بھی آن کو ہر لیتی ہے اور جس گھر میں کبھی نیک کام نہ ہوتا ہے
 اس گھر کی برہمہ سترہ کو ہر لیتی ہے ۳۵ اور گھو اور عورتوں کے تھن اور چھاتی سے دودھ
 اور وہی میں سے گھی اور تیل میں سے تیل اور شراب کی جھبٹی سے شراب - ۳۶ اور گھر
 سے رنگ اور کپاس سے سوت بھی اسے برا مہن وہ ہر لیتی ہے - ۳۷ اس کی حفاظت کے
 واسطے گھر کی دیوار پر ایک عورت اور دو مورینی طاؤس کی تصویر کھینچو ادینا چاہیے اور وہ
 تصویر بننے چاہوے - ۳۸ اور موم کرے اور اکن میں دھوپ اپنے دیوتاؤں کے نام سے
 جلاوے اور اس کی خاک دودھ وغیرہ کے برتنوں میں چھڑک دے اور عورت اپنی چھاتیوں پر
 اس خاک کو ملے - یہی اس کی شانت ہے - ۳۹ اور جو بھتی لڑکی جس کا نام بھرا منی ہے وہ جس
 شخص پر آتی ہے اس کو گھر میں ٹھہرنے نہیں دیتی وہ بھرمین اگر ادھر ادھر گھومتا پھرتا رہتا
 ہے - ۴۰ اس کی حفاظت کے واسطے جس مکان میں وہ سوتا یا رہتا ہو وہاں سفید سرسوں
 چٹکا دے - ۴۱ اور وہ شخص یہ سمجھے کہ مجھے پاپ آتا بھرا منی بھرا منی ہے یعنی جہاں
 وہ پریشان کر رہی ہے تو ہر وقت پر تھوڑی کا سوکٹ جی لگا کر جیسا کرے - ۴۲ اور پانچویں
 لڑکی جس کا نام رتھ مار کا ہے وہ عورتوں کا خون حیض ہر لیتی ہے - ۴۳ اس کے دفع ہو چکے
 واسطے یہ تدبیر کرے کہ اس عورت کو تیرتھ یا مندر یا جات کی جگہ یا پیڑوں کے کنارے
 یا ندی کے سنگم یا دیو کنڈوں میں انسان کراوی - ۴۴ اسے برا مہن منتر اور تھو کے جانے
 والے کو اور بندہ لوگوں کو مناسب ہے کہ ہر پرست میں انسان کراویں اور مجرب دواؤں سے
 اس کا دوش چھڑا دیوں - ۴۵ اور چھٹیں لڑکی جس کا نام اسمرت ہے اسے وہ عورتوں کی
 عقل زائل کر دیتی ہے اس کی شانت کے واسطے عورتوں کو پوچھ کر گھروں اور پاک جگہوں میں
 رہنا چاہیے - ۴۶ ساتویں لڑکی جس کا نام بیج ہے اسے وہ خواب میں مرد اور عورتوں کو
 احتلام کرا کے بیج کو ہر لیتی ہے اس کے دفع کے واسطے پوچھ بھون اور انسان کرا چاہیے
 ۴۷ آٹھویں لڑکی جس کا نام بدو کہنی ہے وہ انسان کے دل میں بغض و حسد پیدا کرتی ہے -
 ۴۸ اس کی شانت کے واسطے شہد اور دودھ اور گھی اور تیل سے موم کرے اور منتر پڑھا کر جات
 کرے تو اس سے نجات ہو - ۴۹ اسے برا مہن دس کے آٹھ لڑکے اور آٹھ لڑکیوں کا یہ بیان

کیا اب ان لڑکے اور لڑکیوں کے جو اڑتیس لڑکے با لے ہوئے ان سبھوں کے نام سنو۔
 ۵۰ کہ دوتا کریشٹ کے دولڑکیاں ہوئیں ایک کا نام بچلپا دوسری کا نام کلہا۔ بچلپا کا
 یہ کام ہے کہ آدمیوں سے جھوٹے اور اپان اور سخت باتیں کراتی ہے اسکی شانت کے واسطے۔
 ۵۱ بڑھان کرستہ کو چاہیے کہ اسیکا دھیان کرے تاکہ اسکا دوش چھوٹ جائے اور کلہا کا
 نام ہے وہ آدمیوں کے گھروں میں ہمیشہ جھگڑا و فساد کراتی ہے۔ ۵۲ اور بھائی بھندہ خیر
 کو بھی چھڑا دیتی ہے اور ناش کا کارن ہے۔ اسکی شانت یہ ہے کہ دُوب کے اکر اور شمد اور
 گھی اور دودھ کے بل سے۔ ۵۳ اکن میں موم کری اور گھر میں چھڑا کر اور مٹر پرنا کا کیرتن
 اور ماریوں کے ساتھ بھوت گن کا پوجن کری کہ جسین لڑکوں کی بھلائی ہو۔ ۵۴ اور
 یہ کہو کہ جاری بدیا اور تپ اور سنج اور ییم اور کھتی اور سوداگری وغیرہ میں آپ لوگ جاری
 ہمیشہ رچھا کریں۔ ۵۵ اور چھٹا جوگ پوجا کر کو کھانڈ اور جات دھان اور اور جو سب
 گن میں وہ لوگ ہم پر دیال رہیں۔ ۵۶ اور ماد یوجی کی کرپا سے اور انکی آگیا سے
 لڑکوں کے اور پروے سب خوش ہو کر ہمیشہ رچھا کرتے ہیں۔ ۵۷ اور سب گناہوں اور
 بڑے کاٹھک اور بڑے بڑے گناہوں سے جو بکھن پیدا ہوتے ہیں ان سب کو بھی ناش کریں
 ۵۸ اور انھیں لوگوں کے پر ساد سے بیاہ میں اور اچھے کاموں کی ترقی ہونے میں جو جو
 بکھن ہوں وہ سب ناش ہو جاویں۔ ۵۹ اور نیک کاموں کے کرنے میں اور گرو اور دیوتا
 کے پوجن اور جپ اور جات اور غیر کرنے میں جو چوڑہ بھوت گن ہیں ۶۰ وہ سب بھاری
 سخت بدنی و آرام و بھوکہ دان اور دھن اور لڑکے اور بوڑھے اور اتر ان سبھوں کی ہمیشہ رچھا کریں
 ۶۱ اور چند رمان اور برن اور سمد اور سورج اور بائو اور اکن یہ سب بھی رچھا اور شانت
 کریں۔ اسے برا بھن تھوکت کا بٹا کال صیغہ نام ہوا اسکے رہنے کا مقام تار کے دخت پہ ہے
 ۶۲ وہ جس عورت پر آتا ہو اسکے لڑکوں کو بہت شانتا ہے۔ اور پر برت کے دو پتر ہوئے
 ایک کا نام برپ دوسرے کا نام بکرت ہے۔ ۶۳ وہ دونوں دخت پر اور اکثر کو ٹھون پر
 اور کھائیں اور پانی کی جگہ (یعنی چشمہ) میں رکھتے ہیں اور اور جگہوں میں بھی گھومتے اور پھر
 رہتے ہیں اور حاملہ عورتوں کو اکثر سستا کر تے ہیں۔ ۶۴ اسے کریشٹکی جو حاملہ عورتیں
 ایسی ایسی جگہوں میں گھومتی پھرتی ہیں انکے حل کو نقصان پہنچتا ہے اسلیے حاملہ عورت کو چاہیے
 کہ بوقت باغ اور کوٹھے اور دریا وغیرہ کے کنارے نہ جاوے۔ ۶۵ اور لکھنوں میں نہ جی

۸۱ یا آدھی رات کیوقت کسی وجہ سے روتی ہو تو ایسی عورت کے حمل میں وہ سما جاتی ہے
 واسطے حاملہ عورت کو چاہیے کہ ایسی باتوں سے پرہیز کریں اور ان جگہوں میں ہرگز نہ گز
 ریں۔ اور سستیہ نام کے ایک بیٹا چھترک نام ہوا۔ ۸۱ وہ اپنا وقت پا کر جایدا کو
 بولتا ہوا اسکا جو وقت ہو وہ بھی کہتے ہیں سنو کہ جس دن اور بڑے پنجشنبہ میں جو کھیت
 سان لوگ بوئے ہیں۔ ۸۲ اسکے سبب سے وہ چھترک اس جایدا میں سما جاتا ہے اس لیے
 اسکو چاہیے کہ مبارک دن اور نیک ساعت میں چند مان کا پوجن کر کے۔ ۸۳ اور
 خوش اور آسودہ اور بلوان ہو کر کھیت کو بو دیں۔ اسے برا من اب دوسہ کی لڑکیوں
 کی اولاد کا حال بیان کرتا ہوں سنو کہ نیوچکا کے۔ ۸۴ چار لڑکی پیدا ہوئیں پہلی لڑکی کا
 نام سنا اور دوسری کا نام اُن سنا اور تیسری کا نام پرتسا اور چوتھی کا نام نواسی ان چار
 لڑکیوں کا جو دھرم ہی اسکو پرچود کا کہتے ہیں۔ ۸۵ یہ سب لڑکیاں آدمی کے جسم میں سما
 کر کے اسکے ناش کر نیے واسطے آدمی کو نیک کاموں سے چھڑا کر بڑے کاموں میں بھنساتی ہیں
 اور جو لوگ کسی بات کی خواہش نہیں رکھتے ہیں تو یہ سب ان لوگوں کے دلوں میں خواہش
 پیدا کرتی ہیں۔ ۸۶ اور اترتھ روپ کو اترتھ میں اور شوکش روپ کو شوکش میں بھی
 بھنساتی ہیں یہ لڑکیاں بڑے کاموں میں مدد کر نیوالی ہیں اور جو کوئی ہمیشہ ناپاک رہتا
 ہو اسکو یہ سب نظر آتی ہیں۔ ۸۷ اور دوسہ کی آٹھون لڑکیاں بھی (جسکے نام اشلوک
 ۶۰ میں کہے آئے ہیں) آدمی کو نیک کاموں سے باز رکھتی ہیں ان سب کا دخل گھر میں اور
 سندھیا اور ریش اور گولہ میں ہوتا ہے۔ ۸۸ اور جس گھر میں دھاتا اور بدھاتا کو بل دے
 بغیر جو کوئی کھانا کھاتا ہے اس کھانے کے ساتھ اس کے جسم میں سما جاتی ہیں۔ ۸۹ اور
 ان جو ان عورتوں کے جسم میں جلد سما جاتی ہیں۔ اور بڑو دھنی کے تین پتر پیدا ہوئے پہلے
 لڑکے کا نام چودک اور دوسرے کا نام گرگمک۔ ۹۰ اور تیسرے کا نام ترم پرچھا دک ہے
 ان سب کے رہنے کے مقام ملتا ہوں سنو کہ جو جگہ چراغ کے تیل سے جھگی ہوئی ہو اس میں
 ناگ بھی ہوئی چیز دن میں ۹۱ اور جہان اوکھلی یا موسل یا کھڑاؤن یا سوپ یا دیتی یا پانون بھی نہیں ہوئی
 اور یہ ہر عورتیں بیٹھا کرتی ہیں۔ ۹۲ اور جہان گھر لیٹنے کے بعد بغیر پوجن کیے ہوئے
 پوتا وغیرہ کے آپ اس میں بہار کرتی ہیں اور جہان کر چیل سے چولھے کی آگ نکال کر کسی کو
 دیتے ہیں۔ ۹۳ ایسی ایسی جگہوں میں بڑو دھنی کے سب پتر رہتے ہیں پہلا پتر تو عورتوں

اور مردوں کی زبان پر پھٹکر ان سب سے جھوٹھی سچی باتیں کروا تا ہے۔ ۹۳ اسی کا نام
 چودک ہے اور وہی گھر والوں کے آپس میں کینہ و بغض پیدا کر دیتا ہے اور دوسرا جو بے عقل
 ہے وہ عورتوں اور مردوں کے کان میں رہتا ہے۔ ۹۵ اور ان لوگوں کی باتوں کو گہر میں لپی
 قبول کرتا ہے اس کا نام گراہک ہے۔ اور تیسرا ان کا آدمیوں کی طبیعت کو اپنے پس میں کر
 کے تو گہر میں بھنسا کر۔ ۹۶ انھوں کے آپس میں غصہ پیدا کرتا ہے اس کا نام تھر پھاد
 ہے یہ اور سوئیگ ہاری کو دوسرے کے لہختے میں پتھر پیدا ہوتے۔ ۹۷ ایک کا نام
 شرب ہاری دوسرے کا نام اردھ ہاری تیسرے کا نام جج ہاری ہے ان تینوں کے رہنے
 کے مقام سونہ کہ جو گھر لپیا اور پوتا نہیں جاتا اور اس گھر کا مالک اسکو پاک و صاف نہیں
 رکھتا۔ ۹۸ اور جہاں بغیر پانوں دھوئے ہوئے چو کا میں چلے جاتے ہیں اور کھلیا
 اور غیر گھوٹا اور اس گھر میں جہاں دروہ ہوتا ہے۔ ۹۹ ایسے ایسے مقاموں میں وہ
 مینوں اپنی اپنی خواہش کے مطابق رہا کرتے ہیں۔ اور پھر انہی کے ایک پتھر پیدا ہوا اس کا
 نام کاگ جگہ ہے۔ ۱۰۰ وہ جس آدمی کے جسم میں گستاہی اسکو کسی جگہ خوش رہی نہیں
 دیتا اور جو شخص کھانا کھانے وقت ہنستے یا گاتے ہیں۔ ۱۰۱ اور شام کو قوت جو لوگ عورت کے
 ساتھ جماع کرتے ہیں انھوں کے شریر میں وہ پریش کر تا ہے اور رت ہارنی کے میں لڑکیاں پیدا
 ہوتی ہیں۔ ۱۰۲ اسی لڑکی کا نام کچ ہر دوسری کا نام بجن ہار کا تیسری کا نام جات ہارنی ہے۔
 ۱۰۳ جس عورت کا بواہ بدھ کے خلاف یا بواہ کی ساعت گزر جائے پر موتا ہے اس عورت کے
 پستانوں کو وہ کچ ہر لیتی ہے۔ ۱۰۴ اور سب طرح کی بدھ سے شرادھ اور ماتر گنوں کا پوجن کی پتھر
 جو لڑکی بواہی جاتی ہے اس کے بجن کی بجن ہار کا ہر لیتی ہے۔ ۱۰۵ اور جس گھر میں پر سوتی یعنی
 جچا رہتی ہو اگر وہاں آگ و پانی روکھو پ و چراغ و کوئی ہتھیار لوہے کا و موسل نہ ہو اور سر سون
 اور بالو بھی نہ چھڑکی جاوے۔ ۱۰۶ تو اس گھر میں جات ہار کا گھس کر اس بچہ نوزائیدہ کو
 ہر لیتی ہے اسے برا نہیں وہ لڑکا ایک ست میں رہتا ہے۔ ۱۰۷ اور جات ہارنی کی صورت خوفناک
 ہے اور وہ ہمیشہ لڑکوں کا گوشت کھاتی ہے اسکی حفاظت کے واسطے پر سوتی یعنی جچا کے گھر میں سطح
 کی بنیاد میں کرنا چاہیے۔ ۱۰۸ اور جبکہ پر سوتی کا گھر خالی رہتا ہے تب اس پر اکا بیٹا پر چند
 نام اس گھر میں جا کر پر سوتی کی بدھ کو ہر لیتا ہے۔ ۱۰۹ اور اس پر چند کے بیٹے اور لڑکوں
 سے لاکھوں ایک پیدا ہوتے ان سب کی صورت خوفناک ہے اور انھوں میں ٹھنڈا اور پھانسی لپے

ہوئے ہیں ۱۱۰ جب وہ سب لیک چاندال جون بھوکھ سے بیتاب ہو کر آپس ہی میں
 ایک کو ایک کھانے کو دوڑے۔ ۱۱۱ تب پرچند نے ان سب کو اس حرکت سے باز رکھا
 اور انھوں کا وقت مقرر کیا۔ ۱۱۲ اور پرچند نے یہ بھی کہا کہ آج سے جو کوئی لیکون کو رہنے
 کی جگہ دیکھا اسکو میں بہت سزا دینگا کہ جس سے وہ شخص کسی جگہ قائم نہ ہو سکے۔ ۱۱۳ چنانچہ
 چاندال کے گھر میں جا کر جس عورت کے محل رہتا ہے تو لیکون کے دوش سے وہ بھی اور اوپر چلے
 گئے بھی سب ناش ہو جاتے ہیں۔ ۱۱۴ اور عورت و مرد کے بیچ کو ہر نیوالی جو بیج ہر اس کے
 درمیان پیدا ہو میں ایک کا نام بات روپا دوسری کا نام اروپا ہوا آدمیوں کے جسم میں ان
 دونوں کے پرولیش کر نیکا وقت اور ان کے چھڑانیکا آپا کے کتھامون سنو۔ ۱۱۵ کہ جو آدمی
 شخص الی عورت سے جماع کرتا ہے اس کے شریر میں بات روپا پرولیش کر کے اس کے بات شکر کا جوگ
 پیدا کر دیتی ہے اور اس عورت کے بھی۔ ۱۱۶ اس طرح جو شخص عورت سے بعد فراغت ہوئے
 نہیں کے اور پاک ہو جانے پر جماع نہیں کرتا اس مرد کے جسم میں اروپا پرولیش کر کے اس کا بیج
 بر لیتی ہے۔ ۱۱۷ اور بڑو کھنی جو ہر وقت مخصہ سے چین یہ جبین رہتی ہے اس کے د پتر ہوئے تو
 ایک کا نام اپکارک دوسرے کا نام برکاشک ہوا۔ ۱۱۸ جو عورت و مرد ہر وقت ناپاک رہے
 ان اور جو نامزد ہو گئے ہیں اور جو کسی کی پھلی کھاتے ہیں اور جو ناپاک پانی سے غسل کرتے ہیں
 اور جو پھلی چٹ (یعنی تگن طبع) ہیں۔ ۱۱۹ اور جو شخص دوسرے کی جاہ و حشمت کو دیکھ کر
 حسد کرتے ہیں ایسے لوگوں کے شریر میں وہ دونوں پرولیش کر کے ماما اور بھالی اور گرو اور
 زرو وغیرہ سے۔ ۱۲۰ لڑائی کر دیتے ہیں اور آدمیوں کے دھرم و لچھمی کو ناش کرتے ہیں آپا
 اس طرح اپنے گنوں کو دنیا میں ظاہر کرتا ہے۔ ۱۲۱ اور دوسرا آدمیوں کے گنوں کو کھینچ لیتا
 اور دوستی و محبت کو بھی چھڑا دیتا ہے۔ مارکنڈے جی کہتے ہیں کہ ہے کروٹشکی یہ سب
 سر کی سنتان جو مہا پانی اور وشت آتا ہے ان سب کا حال میں کہہ چکا یہ سنتان تمام دنیا
 میں مشہور اور پھیلی ہوئی ہے۔ فقط۔

मू. मार्कण्डेय उवाच ॥ इत्येषतामसःसर्गोऽत्र
ह्यणोऽव्यक्तजन्मनः । रुद्रसर्गं प्रवक्ष्यामि
तन्मेनिगदतः शृणु ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

टी. मार्कण्डेयजी कहते हैं कि हे ऋषि! ब्रह्माजी के ताससर्ग की तो मैं वर्णन कर चुका अब रुद्र सर्ग का वर्णन सुनो ॥ १ ॥

मू. तनयाश्चतथैवाष्टौपत्न्यःपुत्राश्चतैतया । क-
ल्पादावात्यनस्तुत्यंस्तुतं प्रध्यायतः प्रभोः ॥ २ ॥

टी. कि कल्प के आदि में ब्रह्माजी ने अपने तुल्य पुत्र होने के वास्ते ध्यान किया तो आठ कन्या और आठ पुत्रों को पैदा किया और वही आठों कन्या इन आठों कुमारों की स्त्री हुई ॥ २ ॥

मू. प्रादुरासीदधांकेऽस्यकुमारोनीललोहितः । रु-
द्रोदसुस्वरंसोऽथद्वयद्विजसत्तम ॥ ३ ॥

टी. उन आठों में से एक पुत्र नील लोहित अङ्ग जो ब्रह्माजी के हृदय से प्रगट हुआ वह दौड़ दौड़ कर बड़े ऊँचे स्वर से रोने लगा ॥ ३ ॥

मू. किंरोदिषीतितं ब्रह्मारुदन्तं प्रत्युवाच ह । नाम
देहीतितंसोऽथ प्रत्युवाच जगत्पति ॥ ४ ॥ ४ ॥

टी. तब ब्रह्माजी ने कहा कि तुम क्यों रोते हो तब उसने कहा कि मेरा नाम रुद्र दीजिये ॥ ४ ॥

मू. रुद्रस्त्वं देवनाम्ना सिमारो दीर्घैर्यमावह । एव
मुक्तस्तनः सोऽथ सप्तकृत्वो रुद्रोदह ॥ ५ ॥

टी. फिर ब्रह्माजी बोले कि हे देव तुम मन रोवो तुम्हारा नाम रुद्र है इनके इतना कहने पर वह सातों पुत्र भी रोने लगे ॥ ५ ॥

मू. ततोऽन्यानि ददौ तस्मै सप्तनामानि वै प्रभु । स्था-
नानि चैषामष्टानां पत्नीः पुत्रांश्च वै दिज ॥ ६ ॥

टी. तब ब्रह्माजी ने उन सातों के जो जो नाम रखे और हे ब्रह्मा

उन सभी के जो जो स्थान हैं और उन जागों के जो स्त्री और पुत्र हों
उन सब के भी नाम सुनौ ॥ ६ ॥

मू. भवं सर्वतयैशानं तथा पशुपतिं प्रभु । भीममु-
ग्रं महादेवमुवाच स पिता महः ॥ ७ ॥ ७ ॥

टी. उन सान कुमारों के नाम- भव. सर्व. ईशान. पशुपति. भी-
म. उग्र. महादेव ॥ ७ ॥

मू. चक्रेनामान्यथैतानि स्थानान्येपाञ्चकार ह । सु-
व्योजनं महीवन् हि र्व्यायुराकाशमेव च ॥ ८ ॥

टी. इस तरह नामकारी करके फिर उन सब के स्थान नियत किये भव
का स्थान सूर्य. सर्व का जल. ईशान का पृथ्वी. पशुपति का अग्नि.
भीम का वायु. उग्र का आकाश ॥ ८ ॥

मू. दीक्षितो ब्राह्मणः सोम इत्येतास्तनवः क्रमात् ।
सुवर्चना तथैवो मा विकेशी चापरास्वधा ॥ ९ ॥

टी. और महादेव का चन्द्रमा इसी क्रम से ये सब उन लोगों के स्थान
हैं और अब उन सब की स्त्रियों के नाम सुनौ - सुवर्चना. उमा.
विकेशी. स्वधा. ॥ ९ ॥

मू. स्वाहा दिश तथा दीक्षारोहिणी च यथाक्रमं । सु-
व्यादीनां दिजश्चेष्टरुद्राद्यैर्नामभिः सह ॥ १० ॥

टी. स्वाहा. दिश. दीक्षा. रोहिणी. ये सब उन सबों की स्त्रियाँ हैं हे दि-
जोत्तम अब रुद्रादि नाम सहित सूर्यादि के पुत्रों के नाम सुनौ ॥ १० ॥

मू. शनिश्चरस्तथा शुक्रो लोहिताङ्गो मनोजवः । स्क-
न्दः सर्गो य सन्तानो बुधश्चानुक्रमात्सुतः ॥ ११ ॥

टी. शनिश्चर. शुक्र. मङ्गल. मनोजव. स्कन्द. सर्ग. सन्तोष. बुध
इसी क्रम से ये सब उन लोगों के बेटे हैं ॥ ११ ॥

मू. एवं प्रकारो रुद्रोः सौ सती भार्या मविन्दत ।

दक्षकोपाच्चतत्याजसासतीसंकलेवरं ॥ १२ ॥

टी. इसी तरह रुद्र की स्त्री सती थी जिसने दक्ष के यज्ञ में अपने शरीर को त्याग दिया ॥ १२ ॥

मू. हिमवदुहितासामून्मेनायां द्विजसत्तम। तस्या
भातातुमैनाकः सरात्मो धिरनुत्तमः ॥ १३ ॥

टी. वही सती हिमवान की लड़की हुई मैना के गर्भ में उत्पन्न होकर पार्वती नाम कहलाई और पार्वती के भाई का नाम मैनाक है जो समुद्र का सरा है ॥ १३ ॥

मू. उपयेमे पुनश्चैनामनन्यां भगवान्भवः। देवो
धाता विधाता रौभृगोः ख्यातिरसूयत ॥ १४ ॥

टी. फिर पार्वतीजी का विवाह महादेवजी ही से हुआ और भृगु की स्त्री जो ख्याति नाम थी उसके दो पुत्र हुवे जिन का नाम धाता और विधाता हुआ ॥ १४ ॥

मू. श्रियञ्च देवदेवस्य पत्नी नारायणस्य या। ज्ञाय
ति नियतिश्चैव मेरोः कन्ये महात्मनः ॥ १५ ॥

टी. और सब देवों के देव जो नारायणजी हैं उनकी स्त्री लक्ष्मीजी हुई और ज्ञायति और नियति ये दोनों कन्या जो मेरु महात्मा की हैं ॥ १५ ॥

मू. धाता विधातो स्ते भार्येत योज्जातौ सुतावुभौ।
प्राणश्चैव मृकण्डुश्च पितामममहायशः ॥ १६ ॥

टी. वही दोनों कन्या धाता और विधाता की स्त्री हुई उन दोनों के एक एक पुत्र उत्पन्न हुआ ज्ञायति के पुत्र का नाम प्राण और नियति के पुत्र का नाम मृकण्डु हुआ जो मेरा (अर्थात् मार्कण्डेयजी का) पिता है ॥ १६ ॥

मू. मनस्विन्यामहन्तस्मात्पुत्रो वेदशिरामम। धू
प्रवत्यां समभवत्प्राणस्यापि निबोध मे ॥ १७ ॥

टी. मृकण्डु का विवाह मनस्विनी से हुआ जिससे मैं पैदा हूँ और मेरे

पुत्र का नाम वेदगिरा है और प्राण की स्त्री धूम्रवती नाम हुई उस
के लड़कों के नाम सुनो ॥ १७ ॥

मू. प्राणस्य द्युतिमान् पुन उत्पन्नस्तस्य वात्मनः ॥
जगश्च तयोः पुत्राः पौत्राश्च बहवोः भवन् ॥ १८ ॥

टी. एक का नाम द्युतिमान् दूसरे का नाम अजर है इन सब के
भी बहुत से बेटे और पोते होंगे ॥ १८ ॥

मू. पत्नी मरीचिः सन्मृतिः पौर्णमास नमूयत । विराजः
पर्वतश्चैव तस्य पुत्रौ महात्मनः ॥ १९ ॥ २० ॥

टी. और मरीचि की स्त्री सन्मृति नाम हुई जिसका बेटा पूर्णमास
हुआ और उसके बेटे विराज और पर्वत नाम होंगे ॥ १९ ॥

मू. तयोः पुत्रास्तुरक्षिष्ये वंशसंकीर्तने द्विज । स्मृति
श्चाङ्गिरसः पत्नी प्रसूता कन्यकास्तथा ॥ २० ॥

टी. हे द्विज इन दोनों के पुत्रों का वृत्तान्त वंशावली वर्णन में कहूँगा
और अङ्गिरा की स्त्री स्मृति नाम हुई उसकी लड़कियों के नाम सुनो ॥ २० ॥

मू. शिनीवाली कुरुश्चैव राका भानुमती तथा । ज्ञ
मुसूयानयै वाचेर्जज्ञे पुत्रान् कल्मषान् ॥ २१ ॥

टी. शिनीवाली, कुरु, राका, भानुमती, अनसूया, जो अत्रिमुनि
की स्त्री थी जिसके सब लड़के महानेजसी होंगे ॥ २१ ॥

मू. सोमं दुर्वा म सञ्चैव दत्तात्रेयश्च योगिनं । प्रीत्यां
पुलस्त्य भार्या याद नोलिस्तस्युतोः भवत् ॥ २२ ॥

टी. चन्द्रमा और दुर्वासा और दत्तात्रेय योगी और पुलस्त्य की स्त्री प्री
ति नाम हुई जिसका पुत्र दत्तोलिका नाम हुआ ॥ २२ ॥

मू. पूर्वजन्मनितोऽगस्त्यः स्मृतः स्वायम्भुवेः न्तरे ।
कर्मभार्या की वीरश्च सहिषुश्च सुतत्रयम् ॥ २३ ॥

टी. वही पहिले जन्म में स्वायम्भुव मन्वन्तर में अगस्त्य

कहलाने थे और कहेस और अर्चन और महिषा ये तीनों पुत्र ॥२३॥

मू. क्षमातु मुखेन भार्या पुलहस्य प्रजापतेः । क्रतो
स्तु सन्नति भार्या चालिखिल्या न सून ॥ २४ ॥

टी. पुलह प्रजापति के क्षमा नाम स्त्री से पैदा हुवे और क्रतु की स्त्री स-
न्नति नाम हुई जिस से चालिखिल्या लोग पैदा हैं ॥२४॥

मू. षष्टिर्या निमहस्वानि ऋषीणां मूर्द्धरेतसां । उज्जी-
यान्तु वशिष्टस्य सप्ताजाय नवैसृताः ॥ २५ ॥

टी. यही लोग सात हजार ऋषि ऊर्द्धरेतस् कहलाने हैं और व-
शिष्ट के उज्जी नाम स्त्री से सात पुत्र पैदा हुवे ॥२५॥

मू. रजोगा चोर्द्धवाहुश्च सवलश्चानघस्तथा । सुतपाः
शुक्र इत्येते सर्वे सप्तर्षयः स्मृताः ॥ २६ ॥ २६ ॥

टी. रजः १ गात्र २ ऊर्द्धवाहु ३ सवल ४ अनघ ५ सुतपा ६ शुक्र ७ यही
लोग सप्तर्षि कहलाने हैं ॥ २६ ॥

मू. योऽसावग्निरभीमानी ब्रह्माणस्तनयोऽयजः । त-
स्मात्स्वाहा सतानले भेत्री नुदारौषसद्विज ॥ २७ ॥

टी. और ब्रह्मा के प्रथम पुत्र जो अग्नि हैं उनका विवाह स्वाहा से हुआ
हि ब्रह्मन् उनके भी तीन पुत्र बड़े प्रतापी हुवे ॥ २७ ॥

मू. पावकं पवमानश्च शुचिञ्चापि जलाशिनं । तेषा-
न्मुसन्ततावन्ये च त्वारिंश्च पञ्चच ॥ २८ ॥

टी. पावक और पवमान और शुचि जो जल को भोजन करते हैं अ-
र्थात् सोखलते हैं उनके पैतालीस सन्तान पैदा हुई ॥ २८ ॥

मू. कथ्यन्ते बहुश्चैते पिता पुत्रत्रयञ्च यत् । एवमे-
कोनपञ्चाशदुज्जयाः परिकीर्तिताः ॥ २९ ॥

टी. तदनन्तर तीन पुत्र और हुवे जो पिता सहित सत्त्व मिलकर उ-
नचास कहाये और महा दुर्जय हुवे ॥ २९ ॥

मू. पितरो ब्रह्मणा सृष्टायै व्याख्याता मया तव । अग्नि
प्यातावर्हिषदोऽनग्नयः साग्नयश्च ये ॥ ३० ॥

टी. हे क्रौष्टिकि ब्रह्माके पैदा किये हुवे पितर लोगों का वर्णन जो मैं तुमसे सुना चुका हूँ अग्निष्वाता और वहिषद और जनमन और साग्नि इत्यादि ॥ ३० ॥

मू. तेभ्यः स्वधा सुते जज्ञे सेनां वैधायिणीं तथा । ते उ-
भे ब्रह्मवादिन्यौ योगिन्यौ चाप्युभे द्विज ॥ ३१ ॥

टी. उन पितरों से स्वधा के दो कन्या पैदा हुईं प्रथम सेना दूसरी धारिणी है हे हिज ये दोनों कन्या परम योगिनी जोर ब्रह्म की जाननेवाली हुईं ॥ ३१ ॥

इति श्री मार्कण्डेय पुराणे
सहस्रसर्ग विधानो नाम । ५२ ।

آؤھیائے ۵۲ بابون

۱۔ مارکنڈے جی کہتے ہیں کہ ہے کر و شکی بر مصحابی کے تانس ستر گل کا حال تو میں کہہ چکا
اب انکے رُؤر ستر گل کا حال کہتا ہوں سنو۔ ۲ کہ کلپ کے شروع میں بر مصحابی نے اپنے برابر
پتر بونیکا دھیان کیا تو آٹھ رُک کے اور آٹھ لڑکیاں پیدا ہوئیں اور وہی لڑکیاں اُن لڑکیوں
کی استری ہوئیں۔ ۳ اُن آٹھوں میں سے ایک لڑکا جو نیل ٹوہت انگ بر مصحابی کی چھاتی
سے پیدا ہوا وہ دوڑ دوڑ کر بڑی بلند آواز سے رُونے لگا۔ ۴ تب بر مصحابی نے پوچھا کہ
تم کیوں روتے ہو تب وہ بولا کہ میرا نام رکھ دیجیے۔ ۵ تب بر مصحابی نے اُس سے کہا کہ تیرا
نام گور می ستہ رُو یسن کر وہ ساتون لڑکے بھی رُونے لگے۔ ۶ تو بر مصحابی نے اُن ساتوں
کا نام رکھ دیا۔ اسے براہمن اب میں اُن لڑکوں کے استھان اور انکی استری اور ستر
کا نام بھی کہتا ہوں سنو۔ اُن ساتوں پترنوں کے نام یہ ہیں۔ ۷ بھو۔ سرب۔ و

ایشان - پیش پت - تجھیم - اگر - مہادیو - ۸ پھر ان سب کے رہنے کے مقامات بھی
 قائم کیے یعنی بھو کا استھان سورج اور سرب کا استھان جل ہے اور ایشان کا پر تھو
 اور پیش پت کا اگن اور بھیم کا بایو اور اگر کا آکاش اور مہادیو کا چندرمان اور رُدر
 کا استھان اگن ہے - ۹ یہی ان لوگوں کے استھان ہیں - اسے براہمن اب ان لوگوں
 کی استریوں کے نام سنو وہ یہ ہیں - سبر چلا - اُما - بکیشی - سودھا - ۱۰ حوا - رشا
 وکشا - روتھی - یہی سب ان سب کی استریاں ہیں - اسے براہمن اب ان کے لڑکوں کے
 نام سنو - ۱۱ شیر - شکر - لہستانک - منوج - اسکند - سرگ - سنوگو - بدھ - یہ سب
 بترتیب سلسلہ انھوں کے لڑکے ہیں - ۱۲ رُدر کی استری سستی نام تھی جسے دچھ کی جگہ
 میں اپنا شیر تیاگ کر دیا - ۱۳ پھر وہی سستی ہیران کی لڑکی مینا کے گرجہ سے پیدا ہوئی
 اسی کا نام پاربتی ہوا اور پاربتی کے بھائی کا نام میناک تھا جو سندر کا سکھا یعنی پار تھا -
 ۱۴ پاربتی جی کا بواہ پھر مہادیو جی سے ہوا بھرگ کی استری جو کھیتی نام ہوئی اس سے دو لڑکے
 دھاتا اور بدھاتا نام ہوئے - ۱۵ اور سب دیوتوں کے دیو جو نارین ہیں انکی استری
 پچھمی جی ہونین اور آیت اور نیت یہ دو لڑکیاں جو میر مہاتا کی ہیں - ۱۶ وہی دونوں
 دھاتا اور بدھاتا کی استری ہونین اور ان دونوں کے ایک ایک پتر ہوا یعنی آیت کے لڑکے
 کا نام پران اور نیت کے لڑکے کا نام مرکندھ ہوا مارکندھ جی کہتے ہیں کہ وہی مرکندھ میرے
 باپ ہیں - ۱۷ انکی شادی منسوتی سے ہوئی جس سے میں پیدا ہوں اور میرے پتر کا نام
 بنید پتر ہوا اور پران کی استری دھوم دتی ہوئی اسکے لڑکوں کے نام سنو - ۱۸ پہلے پتر کا
 نام دیوت مان اور دوسرے کا نام اجرا ہی ان کے بھی بہت سے بیٹے اور پوتے ہوئے -
 ۱۹ مریچ کی استری سمبھوتی نام ہوئی جسکے پتر کا نام پورناس ہوا اور اسکے بھی دو لڑکے
 ایک برجا اور دوسرا پربت نام ہوا - ۲۰ اسے براہمن ان دونوں کے پتر وں کا حال بتاوا
 یعنی پلت نامہ کے حال میں جان کرو گا اور اگر اکی استری اسمرت تھی اسکی لڑکیوں کے
 نام سنو - ۲۱ ششی - کھوڑ - راکا - بھان متی - ان سو یا جو اتر میں کی استری تھی
 جسکے سب لڑکے نہایت جتوسی ہوئے - ۲۲ چندریان اور دُر باسا اور دھاترے جوگی اور
 پلست کی استری پریت نام ہوئی جسکے لڑکے دوتول نام ہوئے - ۲۳ وہی پہلے جنم میں سو
 سنوتر میں اگست کہلاتے ہیں اور کرڈم اور اربری اور سنیش یہ تینوں لڑکے -

२३ पर जायत को च्या नाम अस्त्रی से प्ले नाम पितर पदामा और कृत की अस्त्रि संस्त
 नाम होनी जिस से बाल कलिया लोग पदामा होئے - २२ ये साक्षे नरार रिकर निनी बाल कलिया
 ओर देव रिक्ष कलते हैं - ओर ब्रह्म को अर नाम अस्त्रि से सात पितर पदामा होئے - निनी
 २४ रज - श्वार - ओर देव बाह - सल - अक्ष - श्वि - श्वर - ये लोग संस्त रिकर
 कलते हैं - २५ ओर ब्रह्म के पले पितर जो अक्ष हैं अक्षी शادی सोना से होनी -
 असे ब्रह्मन अक्षे भी तिन पितर ब्रह्म प्रतापी होئے - २६ निनी पावक - पोमान - स्रि
 जो पानी को सुको लिते हैं अक्षे भिना लिस ओला होई - २७ अक्षे तिन पितर ओर होئے
 जो कमे लोग मेघ बाप ओर लोकोन के लकर सब अक्षस होئے ओर देव होئے निनी कोनी
 अक्ष लोकोन से जित निनी सक्ता - २८ अक्षे को श्वि ब्रह्मजी के पदामा होئے निनी कोनी
 हाल जो मिन आप से कमे लोकोन अक्ष कमाता ओर ब्रह्म ओर अक्ष ओर श्वर -
 २९ अक्ष लोकोन से सुदेव के दो कक्षा पदामा होई निनी पदामा होई ओर देव
 नाम देवानी होई ब्रह्मन ओर दो लोकोन लोकोन परम जो कक्षी ओर ब्रह्म की जानने वाली होई

मू. कौष्ठिक उवाच ॥ स्वायम्भुवन्तयाख्यात
 मेतन्मन्वन्तरञ्जयत । तदहं भगवन् स
 म्यक्तुं श्रोतुमिच्छामि कथ्यतां ॥ १ ॥ १ ॥

श्री. कौष्ठिक ने कहा कि हे मुनि आपने जो स्वायम्भुव मन्वन्तर का
 वृत्तान्त कहा उसको मैं अच्छी तरह सुने की इच्छा रखता हूँ ॥ १ ॥

मू. मन्वन्तरप्रमाणञ्च देवादेवर्षयस्तथा । ये च क्षि
 तीया भगवन् देवेन्द्रश्चैव यस्तथा ॥ २ ॥ २ ॥

श्री. अर्थात् मन्वन्तर का प्रमाण और उस समय में जो देवता
 और ऋषि और देवेन्द्र और राजा हों वे उनका वृत्तान्त और
 ग अलग वर्णन कीजिये ॥ २ ॥

मू. मार्कण्डेय उवाच ॥ मन्वन्तराणां संख्या-

तासाधिकाद्येकसप्ततिः । मानुषेणप्रमा-
णनशृणुमन्वन्तरञ्चमे ॥ ३ ॥ ३ ॥

श्री. मार्कण्डेयजी कहते हैं कि इकहत्तर चौयुगी का एक मन्वन्तर होता है उसका प्रमाण मनुष्यों के वर्ष के प्रमाण से कहता हूँ सुनो ॥ ३ ॥

मू. त्रिंशत्कोट्यस्तु संख्याताः सहस्राणि च विंशतिः
सप्तषष्टिस्तथान्यानि नियुतानि च संख्याया ॥ ४ ॥

श्री. कि तीस कड़ोड़ सतसठलाख बीस हजार वर्ष मनुष्यों का एक मन्वन्तर में बीतता है ॥ ४ ॥

मू. मन्वन्तरप्रमाणञ्च इत्येतत्साधिकं विना । अ-
ष्टौशतसहस्राणि दिव्या संख्याया स्मृतं ॥ ५ ॥

श्री. यही मन्वन्तर का प्रमाण है दूसरा नहीं जोर आठलाख ॥ ५ ॥

मू. द्विपञ्चाशत्तथान्यानि सहस्राण्यधिकानि च ।
स्वायम्भुवोर्मनुः पूर्वमनुस्वरोचिस्तथा ॥ ६ ॥

श्री. बावन हजार वर्ष स्वायम्भुव मन्वन्तर का प्रमाण है इसके बाद इसीतरह का स्वरोचि मन्वन्तर का भी प्रमाण है ॥ ६ ॥

मू. ज्योत्स्नमस्मामसश्चैवैवतश्चाक्षुषस्तथा । षडेतेषां
नेवोऽतीतास्तथा वैवस्वतोऽधुना ॥ ७ ॥ ७ ॥

श्री. ज्योत्स्नम और तामस और वैवत और चाक्षुष इन चार मनु के जीत जाने पर वैवस्वत मन्वन्तर होता है जो अब बीत रहा है ॥ ७ ॥

मू. सावर्णिः पञ्चरौच्यश्च भौत्याश्चागमिनस्तमी ।
एतेषां विस्तरं भूयो मन्वन्तरपरिग्रहे ॥ ८ ॥

श्री. और सावर्णि और पञ्चरौच्य और भौत्या ये लोग अब आवेंगे इस सब की कथा मन्वन्तरों के वर्णन में विस्तर पूर्वक कहूँगा ॥ ८ ॥

मू. वक्ष्ये देवानृषींश्चैव यक्षेन्द्राः पितरश्च ये । उत्य-
न्तिसंग्रहं ब्रह्म न श्रूयतामस्य सन्ततिः ॥ ९ ॥

टी. देवता और ऋषि और इन्द्र और पितर जो मन्वन्तरों में होते हैं
उन सब की उत्पत्ति और संग्रह और सन्तान भी कहता है देवभक्त सुनो ॥

मू. यच्च तेषामभूत्क्षेत्रं तत्पुत्राणां महात्मनां । मनोः
स्वायम्भुवस्यासनदशपुत्रास्तु तत्समाः ॥ १९ ॥

टी. और उन महात्माओं के जो क्षेत्र और जो पुत्र हुवे वह भी कहेंगा
और स्वायम्भुव मनु के दश पुत्र अपने समान हुवे ॥ १९ ॥

मू. यैरियं पृथिवी सत्त्वात् प्रदीपा स पर्वता । सप्त-
मुद्राकरवती प्रतिवर्षं निवेशिता ॥ २० ॥

टी. जिन लोगों ने इस पृथ्वी के सानों दीप और समुद्र और पर्वत और
तंड को अपने वश में लाकर राज्य किया ॥ २० ॥

मू. स्वायम्भुकेन्तरे पूर्वमाद्ये त्रेतायुगे तथा । प्रिय-
व्रतस्य पुत्रैस्तैः पौत्रैः स्वायम्भुवस्य च ॥ २१ ॥

टी. पूर्व ही त्रेता युग के आदि स्वायम्भुव मन्वन्तर में प्रियव्रत के पु-
त्र स्वायम्भुव के पोतों ने सम्पूर्ण पृथ्वी का राज्य किया ॥ २१ ॥

मू. प्रियव्रतात् प्रजावत्यां वीरात् कन्याव्यजायत ।
कन्यासानुमहाभाग कर्दमस्य प्रजापतेः ॥ २२ ॥

टी. और उस राजा प्रियव्रत का विवाह काम्या स्त्री से हुआ जो क-
र्दम प्रजापति की कन्या थी ॥ २२ ॥

मू. कन्ये देवदशपुत्राश्च सत्त्वात् कुक्षी चने उभे । तयो-
र्वैभ्रातरः शूराः प्रजापति स मादश ॥ २३ ॥

टी. उससे प्रियव्रत के दो कन्या और दश पुत्र हुवे वे दशों लड़कों
महाशूर और प्रजापति के समान हुवे ॥ २३ ॥

मू. आग्नीन्ध्रो मेधातिथिश्च वपुष्मांश्च तथा परः ।
ज्योतिष्मान्भुतिमानभव्यः सवनः सप्त एव ते ॥ २४ ॥

उनके नाम ये हैं आग्नीन्ध्र १ और मेधातिथि २ और वपुष्मा

र ३ ज्योतिष्मान् ४ द्युतिमान् ५ भव्य ६ सवन ७ ॥ १५ ॥

मू. मेधाग्निबाहुमिश्रतपोयोगपरायणाः । जानि
स्मरामहाभागानराज्यायमनोदधुः ॥ १६ ॥

टी. इन सब में छोटे जो मेधा और अग्नि बाहु और मित्र इन तीनों
के राज्य में मन न लगाया योगी हुवे ॥ १६ ॥

मू. प्रियव्रतोऽभ्युपिञ्चैतान्सप्तसप्तसुपार्थिवान् । द्वी-
पेषु तेन धर्मेण द्वीपान्श्चैव निबोध मे ॥ १७ ॥

टी. तब राजा प्रियव्रत ने उन सातों पुत्रों को सातों द्वीप का राजा किया ध-
र्म पूर्वक वैलोक सातों द्वीप का राज्य करने लगे उन द्वीपों के नाम सुनो ॥ १७ ॥

मू. जम्बुद्वीपे तथाग्नीन्द्रराजानं कृतवान् पिता । स-
क्षद्वीपेश्वरश्चापि तेन मेधातिथिः कृतः ॥ १८ ॥

टी. कि जम्बु द्वीप का राजा अग्नीन्द्र को और सक्ष द्वीप का रा-
जा मेधातिथि को किया ॥ १८ ॥

मू. शाल्मलेस्तु वपुष्मान् ज्योतिष्मान् कुशह्वये । क्रौ-
ञ्चद्वीपे द्युतिमान् भव्यं शाकाह्वये श्वरं ॥ १९ ॥

टी. और शाल्मल द्वीप का राजा वपुष्मान् को और कुश द्वीप का राजा
ज्योतिष्मान् को और क्रौंच द्वीप का राजा द्युतिमान् को और शाक द्वी-
प का राजा भव्य को बनाया ॥ १९ ॥

मू. पुष्कराधिपतिश्चापि सवनं कृतवान् सुतं । मेधा-
वीधातकीश्चैव पुष्कराधिपतेः सुतौ ॥ २० ॥

टी. और पुष्कर द्वीप का राजा सवन को बनाया और सवन के
दो पुत्र हुवे मेधावी और धातकी ॥ २० ॥

मू. द्विधा कृत्वा तयोर्वर्ष पुष्करः सन्यवेशयत् । भव्य-
स्य पुत्राः सप्तासन्नाम तस्तान् निबोध मे ॥ २१ ॥

टी. सवन ने उस पुष्कर द्वीप के दो भाग करके दोनों को दे दिया और

भव्य जो शाक द्वीप का राजा था उसके सात पुत्र हुवे उन सब के नाम कहता हूँ सुनो ॥ २१ ॥

मू. जलदश्च कुमारश्च सुकुमारो मनीवकः । कुशो
त्तरोऽथ मोदा की सप्तमस्तु महादुमः ॥ २२ ॥

टी. जलद १ कुमार २ सुकुमार ३ मनीवक ४ कुशोत्तर ५ मो-
दा की ६ महादुम ७ ॥ २२ ॥

मू. तन्नामकानि वर्षाणि शाक द्वीपे चकार सः । त
द्याद्युतिमतः सप्तपुत्रास्तांश्च निबोध मे ॥ २३ ॥

टी. उस राजा ने उस शाक द्वीप के सात भाग करके सातों पु-
त्रों को दे दिया वह सातों भाग सात वर्ष इन्ही लोगों के नाम
से कहाने लगे और इसी तरह द्युतिमान के भी सात पुत्र हुवे
उन सब के नाम सुनो जो द्युतिमान कौंच द्वीप का राजा था ॥ २३ ॥

मू. कुशलो मनुगश्चोष्णः प्राकारश्चार्थकारकः । मु-
निश्च दुन्दुभिश्चैव सप्तभिः परिकीर्तिताः ॥ २४ ॥

टी. कुशल १ मनुग २ उष्ण ३ प्राकार ४ अर्थकारक ५ मुनि ६
और दुन्दुभि ७ ॥ २४ ॥

मू. तेषां स्वनामधेयानि कौञ्च द्वीपे तथा भवन् । ज्यो-
तिष्मन्तश्च कुश द्वीपे पुत्रानामाङ्कितानि वै ॥ २५ ॥

टी. इन लोगों के नामानुसार वर्षों का नाम कौंच द्वीप में मशहूर हु-
गा और ज्योतिष्मान् को कुश द्वीप में पुत्रों के नाम से ॥ २५ ॥

मू. तत्रापि सप्तवर्षाणि तेषां नामानि मे शृणु । उद्भि-
द्वैणवश्चैव सुरथं लम्बनन्तथा ॥ २६ ॥

टी. सात वर्ष हुये उन लड़कों के नाम सुनो उद्भिद १ वैणव २
सुरथ ३ लम्बन ४ ॥ २६ ॥

मू. धृतिमतः प्राकारश्चैव कापिलं चापि सप्तमं ।

वपुष्मत्तस्तुताः सप्तशाल्मलेशस्य चाभवन् ॥ २७ ॥

श्री. धृतिमत ५ प्राकार ६ कापिल ७ और वह वपुष्मान् जो शाल्मलि दीप का राजा था उसके भी सात पुत्र हुवे उन सब के भी नाम सुनौ ॥ २७ ॥

मू. श्वेतश्च हरितश्चैव जीमूतो रोहितस्तथा । वैद्यु-
तो मानसश्चैव केतुमानसप्रमस्तथा ॥ २८ ॥

श्री. श्वेत १ हरित २ जीमूत ३ रोहित ४ वैद्युत ५ मानस ६ और केतुमान ७ ॥ २८ ॥

मू. तथैव शाल्मलेस्तेषां समनामानि सप्त वै । सप्तमेधा
तिथेः पुत्राः सप्त दीपेश्वरस्य वै ॥ २९ ॥ २९ ॥

श्री. वह शाल्मलि दीप भी सात भाग होकर इन लोगों के नाम से वर्ष मशहूर हुआ और सप्त दीप का राजा जो मेधातिथि था उसके भी सात पुत्र हुवे ॥ २९ ॥

मू. एषां नामां किनैर्वर्षैः सप्त दीपस्तु सप्तधा । पूर्व-
शाकभवं वर्षं शिशिरन्तु सुखोदयं ॥ ३० ॥

श्री. उस सप्त दीप के भी सात भाग करके सातों पुत्रों को दे दिया और उन सभी के नाम से वर्ष मशहूर हुआ उन लोगों के भी नाम सुनौ शाकभव १ शिशिर २ सुखोदय ३ ॥ ३० ॥

मू. ज्ञानन्दश्च शिवश्चैव क्षेमकश्च ध्रुवं तथा । सप्त
दीपादिभूतेषु शाकदीपान्तिमेषु वै ॥ ३१ ॥

श्री. ज्ञानन्द ४ शिव ५ क्षेमक ६ ध्रुव ७ हे मुनि सप्त और शा-
ल्मलि और कुश और क्रौंच और शाक इन पाँचों दीपों में ॥ ३१ ॥

मू. जेयः पञ्चमुधम्स्यैव वर्णाश्रमविभागजः । नि-
त्याः स्वाभाविकश्चैव ग्राहसाविधिर्वर्जितः ॥ ३२ ॥

श्री. वर्णाश्रमों का धर्म सदा बना रहता है हिंसा नहीं होती है ॥ ३२ ॥

मू. पञ्चसेतेषु वर्षेषु सर्वसाधारणः स्मृतः । अग्नि-

प्रायपितापूर्वजम्बुदीपंददौदिज ॥ ३३ ॥

टी. और इन पाँचों दीप में सब धर्म साधारण हैं हे ब्रह्मण जम्बु
दीप को महाराज प्रियव्रत ने अग्निधर को दे दिया ॥ ३३ ॥

मू. तस्य पुत्रावभूवुर्हि प्रजापति समानव । ज्येष्ठे
नाभिरिति ख्यातस्तस्य किंपुरुषो नुज ॥ ३४ ॥

टी. उस महाराज अग्निधर के नव पुत्र हुवे प्रजापति के समान उनमें
बड़े का नाम नाभि हुआ और उनसे छोटे का नाम किंपुरुष हुआ ॥ ३४ ॥

मू. हरिवर्षस्तृतीस्तु चतुर्थोऽभूदिलाहृतः । रम्यश्च
पञ्चमः पुत्रो हिरण्यः षष्ठ उच्यते ॥ ३५ ॥

टी. तीसरे का हरिवर्ष चौथे का इलावर्त पाँचवें का रम्य छठे
का हिरण्य नाम हुआ ॥ ३५ ॥

मू. कुरुस्तु सप्तमस्तेषां भद्राश्वश्चाष्टमः स्मृतः । नव
मः केतुमालश्च तन्नाम्ना वर्ष संस्थितिः ॥ ३६ ॥

टी. सातवें का कुरु आठवें का भद्राश्व नवें का केतुमाल नाम हुआ
और इन्हीं सबके नामानुसार जम्बुदीप में नव वर्ष का घम हुआ ॥ ३६ ॥

मू. यानि किंपुरुषारव्यानि वर्जयित्वा हि माह्वयं ।
तेषां स्वभावतः सिद्धिः सुखप्राया ह्ययत्नतः ॥ ३७ ॥

टी. और किंपुरुषादि जो वर्ष हैं उनमें हिम नाम वर्ष छोड़कर
और सब वर्षों में स्वाभाविक सिद्धि बनी रहती है बिना यत्न
ही के सब जीव सुखी रहते हैं ॥ ३७ ॥

मू. विपर्ययो न ते षस्ति जरा मृत्युभयं न च । धर्मा
धर्मो न तेष्वास्तां नो न माधममध्यमाः ॥ ३८ ॥

टी. उन लोगों को किसी प्रकार की विपत्ति और जरा और
मृत्यु नहीं होती है और धर्म और अधर्म नहीं है
कोई उनमें है न मध्यम न अधम है ॥ ३८ ॥

मू. नवैचतुर्युगावस्थानार्त्तवाऋतवोनच । ऋ.
गनीध्रसूनोनाभेस्तुऋषभोऽभूत्सुतोविज ॥ ३६ ॥

टी. और इन सब में युग की भी अवस्था और ऋतुओं का धर्म भी नहीं होता है और हे ब्रह्मन् अग्नीध्र का बेटा महाराज नाम नाम हुवे और उनके बेटा ऋषभ देव हुवे ॥ ३६ ॥

मू. ऋषभाद्वरतोजज्ञेवीरःपुत्रशतादरः । सोऽ-
भिपिंच्यर्षभःपुत्रमहाप्राजाज्यमास्थितः ॥ ४० ॥

टी. और राजा ऋषभदेव के सौ पुत्र हुवे उन सब में ज्येष्ठ भरत नाम हुवे उनकी राजा ऋषभदेव ने राज्यगद्दी पर बैठा लकर ॥ ४० ॥

मू. तपस्तेपेमहाभागपुलहाश्रमसंश्रयः । हिमा-
ह्मदक्षिणवर्षभरतायपिताददौ ॥ ४१ ॥ ४१ ॥

टी. और हिमनाम दक्षिण वर्ष जो हिम से दक्षिण भाग में है उसको भरत के पिता ने भरत को देकर आप पुलहजी के आश्रम पर तप करने के वाले चले गये ॥ ४१ ॥

मू. तस्मात्तुभारतवर्षतस्यनाम्नामहात्मनः । भ-
रतस्याप्यभूत्पुत्रःसुमतिर्नामधार्मिकः ४२

टी. तब से यह भारतवर्ष कहलाने लगा और इसी को भारतखंड भी कहते हैं और उस राजा भरत के भी एक पुत्र हुआ जिसका नाम सुमति था वह बड़ा धर्मात्मा हुआ ॥ ४२ ॥

मू. तस्मिन् राज्यं समावेश्य भरतोऽपि वनं ययौ । ए-
तेषां पुत्रपौत्रैस्तु सप्त द्वीपावमुन्धरा ॥ ४३ ॥

टी. राजा भरत भी सुमति को राज्य देकर आप वन करने के वाले वन में चले गये राजा प्रियव्रत के इन्हीं बेटों और पौतों ने सातों द्वीप पृथ्वी का ॥ ४३ ॥

मू. प्रियव्रतस्य पुत्रैस्तु मुक्तासायम्भुवेऽन्तरे ।

एष स्वायम्भुवः सर्गः कथितस्ते द्विजोत्तम ॥ ४४ ॥

टी. स्वायम्भुव मन्वन्तर में राज्य किया और हे ब्रह्मन् यही स्वायम्भुव सर्ग कहलाता है जो हमने तुमसे कहा ॥ ४४ ॥

मू. पूर्वमन्वन्तरे सम्यक् किमन्यत् कथयामिते ॥ ४५ ॥ ४५ ॥ ४५ ॥ ४५ ॥ ४५ ॥ ४५ ॥

टी. और सब मन्वन्तरों में प्रथम यही मन्वन्तर है सो जानो अब कहौ और क्या सुनौगे सो मैं कहूँ ॥ ४५ ॥

इति श्री मार्कण्डेय पुराणे मन्वन्तर कथनं नाम ॥ ५३ ॥

اَوْھياے ترین

۱۔ کروشنکی نے کہا کہ ہے میں آپ نے جو سوئے ہوئے منوتر کا حال بیان کیا اسکو میں مفصل سنا چاہتا ہوں ۲۔ یعنی منوتر کی مدت اور اسوقت جو دیوتا اور دیورکھ اور راجا اور دیوتوں کے راجا ہوئے ان سب کا حال مفصل علیحدہ علیحدہ بیان کیجیے ۳۔ مارکنڈے جی کہتے ہیں کہ اکثر چوچکی کا ایک منوتر ہوتا ہے اسکا اندازہ آدمیوں کے برس کے حساب سے کہتا ہوں سنو۔ ۴۔ کہ تین کروڑ ستر لاکھ بیس ہزار برس آدمیوں کا جب گذرتا ہے تب ایک منوتر ہوتا ہے ۵۔ یہی منوتر کا پرمان یعنی اندازہ مدت ہے۔ ۶۔ اور آٹھ لاکھ باون ہزار برس سوئے ہوئے منوتر کی مدت ہے اسکے بعد اسطرح سو اور چھ منوتر کی مدت ہے ۷۔ اور تھم اور تاسس اور ریت اور چار لاکھ یہ چھ منوتر گزرنے کے بعد یوئوت منوتر ہوتا ہے جو اسوقت گذرتا ہے۔ ۸۔ اور ساہرن اور پنج روچہ اور بھوتیہ ان لوگوں کا زمانہ اب آویگا ان سب کی کتنا منوتر کے بیان میں آگے کہوگا۔ ۹۔ دیوتا اور ریکھ اور اندر اور پتر جو منوتر ون میں ہوئے ہیں ان سبکی پیدائش اور سنگرہ یعنی جو جو کام انھوں نے کیے اور ان لوگوں کی اولاد کا حال میں بیان کرتا ہوں اسی براہمن

१०. | और अन माताओं के चिह्न और चिह्न जो मुझे आगे भी कहे मों - सुविष्णु
 के दल लूके अखिन के समान भूने - ११ | जखन ने ताम रिन को मस सातु विष (अन्त ताम
 और सहर और पचार और रशुन के अपने विषे मिन लाकर रज किया - १२ | त्रिमाहक से मस
 सुविष्णु मनु मिन राजा प्रिये बरत के लूके नि सुविष्णु मिन के पुतुन ने भूने ताम रिन का
 राज किया - १३ | और प्रिये बरत का नवाह का मिया अस्त्रि से हो जाओ क्रम प्रजापति की लूकी तھی -
 १४ | अस से दल लूके और दुर्ग कियान भूने असे ब्राम्हन वे दस लूके भी प्रजापति की
 ब्रूने शूर नि भाद भूने - १५ | अखन के नाम ये भिन - अग्न देव - सदा हात - ब्रिहान -
 जो ब्रिहान - दत्त मान - ब्रिहति - सैन - १६ | इन सब से चूने सिद्धा और अग्न बाव
 मन्त्र ये तिन मभा बहाक भूने लेकिन राज कनि की चाहन न की जोगी भूने - १७ | ब राजा
 प्रिये बरत ने अखिन सातु लूको नु सात विष का राजा बनाया और अखन ब्रूने एदल वदा के
 राज किया अब अन दीपुन के नाम सुन - १८ | जम्बू दीप मिन अग्न देव - प्लक्ष दीप मिन सिद्धा
 १९ | शाल दीप मिन ब्रिहान - कश दीप मिन जो ब्रिहान - क्रोच दीप मिन दत्त
 और शक दीप मिन ब्रिहति को राजा बनाया - २० | और सैन को पशु दीप का राजा किया - असी
 सैन के दो बरत भूने एक का नाम सिद्धा हासी दूसरे का नाम दहातकी भूना - २१ | त
 सैन ने असी पशु दीप के दो वृक्ष के अखन दो नुन लूको नु विषम क्रोच और ब्रिहति
 शक दीप का राजा बनाया असे सात लूके भूने अने नाम सुन - २२ | क्ल - क्ल -
 क्ल - मिनोक - क्लोत्र - मोदा की - मदा डर्म - २३ | असी राजा ने शक दीप
 सात वृक्ष के सात लूको नु को दे दिया और वे सात वृक्ष अखिन के नाम से सात
 वृक्ष मशहूर भूने - और दत्त मान जो क्रोच दीप का राजा बनाया असे भी सात वृक्ष
 अने नाम सुन - २४ | क्ल - क्ल - क्ल - क्ल - क्ल - क्ल - क्ल - क्ल - क्ल - क्ल -
 २५ | अखिन लूको न के नाम के مطابق क्रोच दीप मिन भी वृक्षों का नाम मशहूर भूना - और
 जो ब्रिहान के वृक्षों के नाम से कश दीप मिन भी - २६ | सात वृक्ष मशहूर भूने
 अन लूको न के भी नाम सुन - अज - मिन - मिन - मिन - मिन - मिन - मिन - मिन -
 क्ल - क्ल - क्ल - क्ल - क्ल - क्ल - क्ल - क्ल - क्ल - क्ल -
 २७ | क्ल - क्ल - क्ल - क्ल - क्ल - क्ल - क्ल - क्ल - क्ल - क्ल -
 २८ | क्ल - क्ल - क्ल - क्ल - क्ल - क्ल - क्ल - क्ल - क्ल - क्ल -
 २९ | क्ल - क्ल - क्ल - क्ल - क्ल - क्ल - क्ल - क्ल - क्ल - क्ल -

وہ شامل دیپ بھی انھیں لوگوں کے نام سے مشہور ہوا اور پچھ دیپ کے راجا مہا تھ
 کے بھی سات لڑکے پیدا ہوئے۔ ۳۵۔ اُسے بھی پچھ دیپ کے سات حصے کر کے ساتوں
 لڑکوں کو تقسیم کر دیا ان سب کے نام سے جو ورش مشہور ہوئے وہ سنو - شاکھو - ششتر - سیکھو -
 ۳۶۔ آند - کشنو - چھیک - دھرو - ہرمن - پچھ و شامل و کش و کروخ و شاک
 ان پانچو دیپوں میں - ۳۷۔ برن اور اشتر منکا دھرم ہمیشہ ہمار ہتھی اور ہنسائی
 جان کشی تھیں ہوتی - ۳۸۔ اور ان پانچو دیپوں میں سب دھرم سادھارن ہیں -
 اسے براہمن جمود دیپ کو ہمارا جہ پر یہ برت نے اُن دھرم کو دے دیا - ۳۹۔ اس
 ہمارا جہ اُن دھرم کے گورنر کے پر جاپت کے برابر ہوئے انھیں سے بڑے لڑکے کا نام ناہج
 اور اُسے چھوٹے کا نام کم پرش ہوا - ۴۰۔ تیسرے کا نام ہر کر - چوتھے کا الابر
 پانچویں کا ریشہ - چھٹویں کا پریشہ - ۴۱۔ ساتویں کا کر - آٹھویں کا بھدراسو -
 نوں کا کیت مال نام ہوا انھیں سب کے ناموں کے مطابق جمود دیپ میں نو ورش (نئی کھنڈ)
 مشہور ہوئے - ۴۲۔ اور کم پرش وغیرہ جو ورش ہیں انھیں ہم نام ورش کو چھوڑ کر اور سب
 ارشوں میں آپ سے آپ سے جو رہتی رہتی ہی اور جتنے لوگ ہیں وہ سب بغیر حفاظت و تدبیر کے
 آرام سے رہتے ہیں - ۴۳۔ اُن لوگوں کو کسی طرح کی آفت یا بڑھاپا یا موت نہیں ہوتی ہر
 اور دھرم اور او دھرم اور اتم بدھیم او دھم کوئی نہیں ہے - ۴۴۔ اور نہ وہاں جگن کا خواں
 اور نہ رت اور رت کا دھرم ہوتا ہے اسے براہمن اُن دھرم کے پتر ناہج اور ناہج کے پتر بھج
 ہوئے - ۴۵۔ اور ریکھ دیو کے نواس پتر ہوئے سب میں بڑے بھرت نام ہوئے اُنکو ہمارا جہ
 ریکھ نے منہ حکومت پر بٹھایا - ۴۶۔ اور ہم نام ورش جو ہم کے دھن بھاگ میں ہے اُسکو
 ریکھ نے بھرت کو دیا اور آپ پلہ جی کے استھان پر پ کر نیلے واسطے چلے گئے - ۴۷۔ تب
 سے وہ بھرت ورش مشہور ہوا اور اُسکی بھرت کھنڈ بھی کہتے ہیں راجا بھرت کے بھی ایک پتر
 ہوا جسکا نام سمیت ہوا وہ بڑا دھرم تھا ہوا - ۴۸۔ راجا بھرت بھی سمیت کو راج دے کر آپ
 پ کر نیلے چلے گئے غرض کہ راجا پر یہ برت کے بیٹے اور پوتوں نے ساتو دیپ کا راج -
 ۴۹۔ سو بیجو منو نتر میں کیا اسے براہمن یہی سو بیجو سرگ ہی جو میں نے تم سے کہا -
 ۵۰۔ اور سب منو نتروں میں پہلے ہی منو نتر ہوتا ہے جسکو میں نے بیان کیا اب کہو کہ اور کیا
 سنو گے وہ میں کہوں - فقط -

मू. क्रौष्टुकिरुवाच ॥ कतिदीपाः समुद्रावा
पर्वतावाकतिद्विज । कियन्ति चैव वर्षा-
णितेषां नद्यश्च कामुने ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

टी. क्रौष्टुकि ने कहा कि हे मुनि कितना दीप और कितना समुद्र और कितने पर्वत और कितने वर्ष हैं और उनमें नदियों कौन कौन बढ़ती हैं ॥ १ ॥

मू. महाभूतप्रमाणश्चलोकालोकन्तयैवच । प-
र्याप्तरिमाणश्चगतिश्चन्द्रार्कयोरपि ॥ २ ॥

टी. और महाभूत यानी पृथ्वी का प्रमाण और लोकालोक और उन सबके चारोंतरफ का प्रमाण और चन्द्रमा और सूर्य की गति भी ॥ २ ॥

मू. एतत्प्रब्रूहि मे सर्वं विस्तरेण महामुने ॥ ३ ॥

टी. हे मुनि मुझसे विस्तार पूर्वक वर्णन कीजिये ॥ ३ ॥

मू. मार्कण्डेय उवाच ॥ शतार्द्धिकोदिविस्ता-
रा पृथिवी कृत्स्नोद्विज । तस्याहिस्थान
मखिलं कथयामि शृणुष्व तत ॥ ४ ॥ ४ ॥

टी. तब मार्कण्डेयजी कहने लगे कि हे द्विज सम्पूर्ण पृथ्वी का विस्तार पचास कड़ोड़ योजन है इसके सम्पूर्ण स्थानों का वृत्तान्त मैं कहता हूँ सुनौ ॥ ४ ॥

मू. सनेदीपामया प्रोक्ता जम्बूदीपादयोद्विज । पु-
ष्करान्ता महाभाग शृणुष्वेषां विस्तरं पुनः ॥ ५ ॥

टी. जो मैंने जम्बू दीपको पुष्कर पर्यन्त वर्णन किया है अब उसको विस्तार पूर्वक पृथक् पृथक् वर्णन करता हूँ सुनौ ॥ ५ ॥

मू. दीपान्तु द्विगुणो दीपो जम्बू प्रक्षोभ्य शाल्मलः ।
कुशः क्रौञ्चस्तथा शाकः पुष्करदीप एवच ॥ ६ ॥

टी. हे ब्राह्मण पहिले दीप से दुगुना दूसरा दीप और दूसरे से दुगुना तीसरा अर्थात् जम्बू दीप से दुगुना प्रक्ष और प्रक्ष से दुगुना

शात्मलि और शात्मलि से दुगुना कुश और कुश से दुगुना क्रौंच और क्रौंच से दुगुना शाक और शाक से दुगुना पुष्कर द्वीप है ॥ ६ ॥

मू. लवणोक्षुसुरसर्पिर्दधिदुग्धजलायिभिः । द्वि-
गुणैर्द्विगुणैर्द्विगुणैः सर्वतः परिवेष्टिताः ॥ ७ ॥

टी. इन द्वीपों में लवण और ऊखरस और दधि और दुग्ध और जल और जल के समुद्र एक से एक दुगुने होकर चारों तरफ घेरे हुए हैं ॥ ७ ॥

मू. जम्बूद्वीपस्य संस्थानं प्रवक्ष्ये हं निबोध मे । लक्ष
मेकं योजनानां वृत्तौ विस्तरदैर्घ्यतः ॥ ८ ॥ ८ ॥

टी. अब मैं पहिले जम्बू द्वीप का प्रमाण कहता हूँ सुनो कि एक लाख योजन लम्बा और चौड़ा है ॥ ८ ॥

मू. हिमवान् हेमकूटश्च ऋषभो मेरुश्च । नीलः
श्वेतस्तथाश्रुङ्गी सप्तास्मिन् वर्ष पर्वतः ॥ ९ ॥

टी. इस द्वीप में सात वर्ष हैं और सातों वर्षों में सात पर्वत हैं उन पर्वतों के ये नाम हैं - हिमवान् १ हेमकूट २ ऋषभ ३ मेरु ४ नील ५ श्वेत ६ अश्रुङ्गी ७ यही सातों इसमें वर्ष पर्वत हैं ॥ ९ ॥

मू. दौलक्ष्यो जनायामौ मध्ये तत्र महाचलोऽतथोद
क्षिणतो यौतु यौतथोत्तरतो गिरी ॥ १० ॥ १० ॥

टी. इसके बीच में और दो पर्वत हैं जिनका विस्तार लाख लाख योजन का है इन दोनों पर्वतों के उत्तर और दक्षिण दो दो पर्वत और हैं ॥ १० ॥

मू. दशभिर्दशभिर्न्यूनैः सहस्रैस्तैः परस्परं । द्विसह
सोच्छ्रयाः सर्वे तावद्विस्तारिणश्च ते ॥ ११ ॥

टी. और इन दोनों पर्वतों से उत्तर जो पर्वत हैं वे सब दशदश लम्बाई में कम होते गये हैं और दो दो हजार योजन क्रौंच और उतने ही सब चौड़े हैं ॥ ११ ॥

मू. समुद्रान्तःप्रविष्टाश्च षडस्मिन् वर्ष पर्वताः । दक्षिणोत्तरतो निम्ना मध्ये तुङ्गा यताक्षितिः ॥ १२ ॥

टी. और छः वर्ष पर्वत हैं वह पूर्व और पश्चिम समुद्र में मिले हुए हैं और ये सब पर्वत दक्षिण उत्तर नीचे और बीच में ऊँचे हैं ॥ १२ ॥

मू. चैद्यर्द्धे दक्षिणे त्रीणि त्रीणि वर्षाणि चोत्तरे । इलावर्ततयोर्मध्ये चन्द्रार्द्धाकारवत्स्थितं ॥ १३ ॥

टी. और तीन वर्ष उत्तर और तीन वर्ष दक्षिण हैं और इनके बीच में इलावर्त नाम वर्ष है उन दोनों पर्वतों के बीच में अर्द्धचन्द्राकार के समान विराजमान है ॥ १३ ॥

मू. ततः पूर्वेण भद्राश्वं केतुमालञ्च पश्चिमे । इलावर्तस्तु मध्ये तु मेरुः कनकपर्वतः ॥ १४ ॥

टी. और उसके पूर्व भद्राश्व और पश्चिम केतुमाल वर्ष है और इसी इलावर्त के बीच में सोने का पर्वत है जिसको मेरु कहते हैं ॥ १४ ॥

मू. चतुरशीति साहस्रस्तस्योच्छ्रायो महागिरिः । प्रविष्टः षोडशाधस्ता विस्तीर्णः षोडशैवतु ॥ १५ ॥

टी. वह चौरासी हजार योजन ऊँचा है और सोलह हजार योजन प्रविष्ट में धँसा हुआ है और सोलह हजार योजन चौड़ा है ॥ १५ ॥

मू. शरावसंस्थितत्वाच्च द्वाविंशन्मूर्ध्नि विस्तृतः । शुक्लः पीतोऽसितो रक्तः प्राच्यादिषु यथाक्रमं ॥ १६ ॥

टी. और शराव के नदश चौड़ी इसकी वर्तमान हजार योजन चौड़ी है उस पर्वत का रंग पूर्व की तरफ श्वेत और दक्षिण की तरफ पीत और पश्चिम की तरफ नीला और उत्तर की तरफ लाल है ॥ १६ ॥

मू. विप्रो वैश्यस्तथा शूद्रः क्षत्रियश्च सर्वगतः ॥ तस्योपरितश्चैवाष्टौ पूर्वादिषु यथाक्रमं ॥ १७ ॥

टी. वह पर्वत ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र चारों वर्णों हैं और उस पर्वत

कि ऊपर पूर्व इत्यादि चारों दिशा में क्रम से जायें ॥ १७ ॥

मू. इन्द्रादिलोकपालानांतमध्येत्रहसभा। यो-
जनानांतहस्राणिचतुर्दशसमुच्छिताः ॥ १८ ॥

टी. इन्द्रादि दिग्पाल का स्थान है इसके बीच में ब्रह्मसभा अर्थात् ब्रह्मलोक है और चौदह हजार योजन ऊँचा है ॥ १८ ॥

मू. अयुतोऽयुतस्याधस्तथाविष्कम्भपर्वताः।
प्राच्यादिषुकमेणैवमन्दरोगन्धमादनः ॥ १९ ॥

टी. उसके नीचे दश हजार योजन ऊँचे पूर्व इत्यादि चारों दिशा पर चार विष्कम्भ पर्वत हैं उनके नाम सुनो - मन्दार गन्धमादन ॥ १९ ॥

मू. विपुलश्चसुपार्श्वश्चकेतुपादकशोभिताः। क-
दम्बोमन्दरेकेतुर्जम्बूवैगन्धमादने ॥ २० ॥

टी. विपुल और सुपार्श्व इन चारों पर्वतों के ऊपर ध्वजा समान चार रुख हैं मन्दार पर कदम्ब का रुख है और गन्धमादन पर जामुन का

मू. विपुले चतथाश्वत्थः सुपार्श्वे च वरोमहान्। ए-
कादशप्रतायामा योजनानामिमेनगा ॥ २१ ॥

टी. और विपुल के ऊपर पीपल का और सुपार्श्व के ऊपर वरगदका रुख है उन पर्वतों का प्रमाण ग्यारह सौ योजन है ॥ २१ ॥

मू. जतरादेवकूटश्चपूर्वस्यादिशिपर्वतौ। आनी-
लनिषधौप्राप्तौपरस्परनिरन्तरौ ॥ २२ ॥

टी. और जतर और देवकूट नाम पर्वत इसकी पूर्व दिशा में हैं और उन्हीं के पास आनील और निषध नाम पर्वत हैं आनील जतर के पास और निषध देवकूट के पास है ॥ २२ ॥

मू. निषधः पारिपात्रश्चमेरोः पार्श्वेन पश्चिमे। यथा-
पूर्वोत्तथा चैतावानीलनिषधायतौ ॥ २३ ॥

टी. निषध और पारिपात्र ये दोनों पर्वत मेरु के पश्चिम तरफ

में हैं जितना विस्तार जठर और देवकूर का है उतना ही अ-
निल और निषध का भी है ॥२३॥

मू. कैलाशो हिमवान् यैव दक्षिणेन महाचलौ । पूर्व
पश्चात्तावेतावर्णवान् तव्यवस्थितौ ॥ २४ ॥

टी. और कैलाश और हिमवान् यह दोनों पर्वत मेरु के दक्षिण और हैं
और पूर्व और पश्चिम के पर्वत जितने चौड़े हैं उतने ही यह दोनों भी
चौड़े हैं और पूर्व और पश्चिम आधे समुद्र तक हैं ॥२४॥

मू. शृङ्गवान् जारुधि यैव तथैवोत्तरपर्वतौ । य
यैव दक्षिणेन ददन्तर्वान् तव्यवस्थितौ ॥ २५ ॥

टी. और शृङ्गवान् और जारुधि ये दोनों पर्वत मेरुपर्वत के उ-
त्तर तरफ हैं जिसतरह इनके दक्षिण के पर्वत समुद्र में मिले हुए हैं
उसीतरह ये भी आधे समुद्र तक मिले हैं ॥२५॥

मू. मर्यादपर्वताह्ये ते कथ्यन्ते द्विजोत्तम । हि
मवद्वेमकूरादिपर्वतानां परस्परं ॥ २६ ॥

टी. हे द्विजोत्तम यही आठौ मर्याद पर्वत कहलाते हैं हिमवान्
और हेमकूर इत्यादि पर्वतों का आपस में ॥२६॥

मू. नवयोजनसाहस्रं प्रागुदग्दक्षिणोत्तरं । मेरोरि-
ला वृतेन ददन्तर्वाचनुर्दिशं ॥ २७ ॥

टी. नव हजार योजन विस्तार है और मेरु के पूर्व दक्षिण इत्यादि
चारों तरफ इलावृत्त के मध्य में ये सब पर्वत हैं ॥२७॥

मू. फलानियानिवैजम्बागन्धमादनपर्वते । ग-
जदेहप्रमाणानि पतन्ति गिरि मूर्धनि ॥ २८ ॥

टी. और गन्धमादन पर्वत पर जो जामुन का वृक्ष है उसका फ-
ल महा हाथी से भी बड़ा है वह वृक्ष से टपक टपक कर उस प-
र्वत की चोटी पर गिरता है ॥२८॥

मू. तेषां सावान् प्रभवति ख्याता जम्बूनदीति वै । य
त्र जाम्बूनदं नाम कनकं सम्यजायते ॥ २८ ॥

टी. उस फल से जो रस बहता है वही जम्बूनदी कहलाती है कि
जिस में जाम्बूनद नाम करके सोना पैदा होता है ॥ २८ ॥

मू. सापरिक्रम्य वै मेरुं जम्बूमूलं पुनर्नदी । विश-
तिद्विजशार्दूलपीयमाना जनेश्वरैः ॥ ३० ॥

टी. और वह जम्बूनदी मेरु पर्वत के चारों तरफ घूमकर फिर
उसी जामुन के वृक्ष के नीचे होकर बहती है और वहाँ के रहने
वाले लोग उसी का जल पीते हैं ॥ ३० ॥

मू. भद्राश्वैः श्वशिरा विष्णुर्भारते कूर्मस्तस्थितिः
वाराहकेतुमाले च मत्स्यरूपस्तथोत्तरे ॥ ३१ ॥

टी. और भद्राश्व वर्ष में हयग्रीव नाम विष्णु रहते हैं और
भारत वर्ष में कूर्मरूप और केतुमाल वर्ष में वाराहजी और उ-
त्तर में मत्स्य भगवान् रहते हैं ॥ ३१ ॥

मू. तेषु नक्षत्रविन्यासाद्विषयास्तमवस्थिताः । चतु-
र्ध्वपिद्विजश्रेष्ठग्रहाभिभवपाठकाः ॥ ३२ ॥

टी. 'हे द्विजोत्तम इन चारों खाण्डों में विन्यास अर्थात् आवा-
गच्छ नक्षत्रों की रहती है और ग्रहों करके शुभाशुभ फल
भी हुआ करता है ॥ ३२ ॥

इति श्री मार्कण्डेय पुराणे भुवन
कोशे जम्बू द्वीप वर्ण-
नं नाम ॥

آدھیا پون

۱- کرشنکی نے کہا کہ ہے من کتنے دیت (اقلیم) اور کتنے سدر اور کتنے پہاڑ اور کتنے ویش بن اور ان ویشوں میں کون کون دریا ہیں - ۲ اور زمین کا اندازہ اور لوک لوگ پہاڑ اور ان سب کے چاروں طرف کا اندازہ اور چاند اور سورج کا حال - ۳ ہے من مجھے مفصل بیان کیجیے - ۴ بت مارکنڈے جی کہنے لگے کہ ہے براہمن کل زمین چچاس ہزار جوہن یعنی دو آرب کوٹس برابر اس کے کل مقامات کا حال میں بیان کرتا ہوں سنو - ۵ کہ جوہن دیت سے پشکر دیت تک کا حال جو میں نے بیان کیا اس کو اب مفصل بیان کرتا ہوں -

۶ ہے براہمن پہلے دیت سے دو چند دوشہ آدیت اور دوسرے سے دو چند تیسرا دیت ہے یعنی جوہن دیت سے دو چند چوتھ دیت ہے اور پچھ دیت سے دو چند شامل دیت ہے اور شامل دیت سے دو چند کیش دیت ہے اور کیش دیت سے دو چند کروش دیت ہے اور کروش دیت سے دو چند کشاکش دیت ہے اور کشاکش دیت سے دو چند پشکر دیت ہے - ۷ ان دیتوں میں جس قدر نک اور اوکھ اور دودھ اور دھبی اور گھی اور پانی وغیرہ کے سدر ہیں وہ ایک سے ایک دو چند ہو کر ان دیتوں کے چاروں طرف گھرے ہوئے اور موجود ہیں - ۸ اب میں پہلے جوہن دیت کا حال کہتا ہوں سنو کہ جوہن دیت چار لاکھ کوٹس لمبا اور اتنا ہی چوڑا ہے - ۹ اس دیت میں سات درش ہیں اور ساتوں ویشوں میں سات پہاڑ ہیں ان پہاڑوں کے نام ہیں یعنی ہیران ہیم کوٹ - رگھم - مہیر - مہیل - مہوئیت - سترنگی - ۱۰ ان کے درمیان اور دو پہاڑ ہیں جنکا عرض و طول چار چار لاکھ کوٹس ہے اور ان دونوں پہاڑوں کے دھن اور اتر اور دو دو پہاڑ ہیں - ۱۱ ان دونوں پہاڑوں سے اتر طرف جو پہاڑ ہیں وہ دسواں حصہ طول میں کم ہونے لگے ہیں اور آٹھ آٹھ ہزار کوٹس اونچے ہیں اور اتنے ہی چوڑے - ۱۲ یہ چھ درش پہاڑ ہیں اور وہ پورب اور پچھ طرف سے سدر میں گئے ہوئے ہیں اور پچھ پہاڑ دھن اور اتر کی طرف نیچے ہیں اور سج میں اونچے ہیں - ۱۳ اور تین درش اتر اور تین درش دھن میں حج میں الا برت درش آدھے چاند کی صورت پر اجماع ہے - ۱۴ اور اس کے پورب بخدر استوا اور پچھ کیت مال درش ہے اور الا برت کے درمیان میں سونے کا پہاڑ ہے

جسکو میٹر کہتے ہیں - ۱۵ | میٹر نام پہاڑ تین لاکھ چھتیس ہزار کوٹس اونچا ہے اور چونسٹھ
 ہزار کوٹس چوڑا ہے اور چونسٹھ ہزار کوٹس زمین کے اندر گڑا ہے - ۱۶ | اور مثل سرور کے
 پوتی اسکی ایک لاکھ اٹھائیس ہزار کوٹس چوڑی ہے اس پہاڑ کا پورب پرچ سفیدی اور پھن
 سرخ زرد اور پچھم سرخ نیلا اور اتر سرخ سرخ ہے - ۱۷ | یہ پہاڑ براہمن و بیس و شودر
 و چھتری چاروں برن ہے اور اس پہاڑ کے اوپر پورب وغیرہ آٹھوں اطراف میں کرتھ سے
 یعنی سلسلہ کے موافق آٹھوں - ۱۸ | اتر و غیرہ دکنیاں رہتے ہیں اور درمیان میں برتھ
 لوک ہے اور وہ چھپن ہزار کوٹس اونچا ہے - ۱۹ | اس کے نیچے پورب وغیرہ چاروں اطراف میں
 چار بگمٹ پہاڑ ہیں جو چالیس ہزار کوٹس بلند ہیں انکے نام سنو - شدار - گندھ ماؤن -
 ۲۰ | پیل - سیار شو - ان چاروں پہاڑوں پر جھنڈا کے طور پر چار درخت ہیں یعنی
 شدار پہاڑ پر کدھم کا درخت ہے اور گندھ ماؤن پہاڑ پر جاسن کا درخت ہے - ۲۱ | اور
 پیل پہاڑ پر پیل کا درخت اور سیار شو پہاڑ پر برگد کا درخت ہے اور چار ہزار چار سو
 کوٹس پہاڑوں کا بتا یعنی پھیلاوی - ۲۲ | اور جھم اور دیو کوٹ (۲۳) نام پہاڑ کے
 پورب طرف ہیں انہیں کے نزدیک انہیل اور نکھدھ نام پہاڑ ہیں انہیل پہاڑ تو جھم پہاڑ کے
 پاس ہے اور نکھدھ پہاڑ دیو کوٹ پہاڑ کے پاس ہے - ۲۴ | نکھدھ اور پار پاتر دو پہاڑ
 میٹر پہاڑ کے پچھم طرف ہیں جتنا عرض و طول جھم اور دیو کوٹ کا ہے اتنا ہی انہیل اور نکھدھ
 کا بھی ہے - ۲۵ | اور کیلاش اور ہموان یہ دونوں پہاڑ بھی میٹر پہاڑ کے دکن طرف
 ہیں اور پورب اور پچھم کے پہاڑ جتنے چوڑے ہیں اتنے ہی چوڑے یہ دونوں بھی ہیں اور
 پورب اور پچھم دونوں طرف آدھے سجدہ تک ہیں - ۲۵ | اور سرتگ وان اور جاردھ یہ
 دونوں پہاڑ میٹر کے اتر طرف ہیں جس طرح دکن کے پہاڑ دونوں طرف سجدہ سے ملے ہوئے
 ہیں اسی طرح یہ بھی نصف سجدہ سے ملے ہوئے ہیں - ۲۶ | ہے براہمن ہی آٹھو پہاڑ
 مر جادا پر بت کہلاتے ہیں ہموان اور سیم کوٹ (۲۷) وغیرہ پہاڑوں کا آپس میں -
 ۲۸ | نو ہزار جو بن بشار ہے اور چاروں طرف الابرت کے درمیان یہ سب پہاڑ ہیں -
 ۲۸ | گندھ ماؤن پہاڑ پر جو جاسن کا درخت ہے اسکا پیل بڑے ماتھی سے بھی بڑا ہے وہی
 پیل اس درخت سے ٹیک ٹیک کر اس پہاڑ کی چوٹی پر گرتا رہتا ہے - ۲۹ | ان پھلون
 سے جو رس ٹپکتا ہے وہی جمبو کا دریا ہو کر بہتا ہے اور اس میں جمبوند نام سونا پیدا ہوتا ہے -

२५०. और वह दर्या में बहाव के चारो طرف गहूम कर फिर इसी जामन के दरخت के निचे मोकर
 बैठता है सब अश्व ब्राम्हण वान के रहते वाले लोग इसी दर्या का पानी पीते हैं -
 २५१. बह्मराशु वरुण मिन हरि कुरु बल्लभ रहते हैं और बह्मराशु वरुण मिन कुरु मरु
 और कुरु मल वरुण मिन बाराह जी और अश्व मिन चमू रूपा बह्मराशु रहते हैं -
 २५२. सब ब्राम्हण इन चारो वरुण मिन कुरु मरु मिन सतारुन की ओर वरुण रहते हैं
 और कुरु मरु के مطابق निकुट बहल भी होकर ता है - फल

मू. मार्कण्डेय उवाच ॥ शैलेषु मन्दराद्ये
 पुचतुर्ध्वे वद्विजोत्तम । बनानियानि च
 त्वारिसरांसि च निबोध मे ॥ १ ॥ १ ॥

टी. फिर मार्कण्डेयजी कहते हैं कि हे द्विजोत्तम मन्दरादि चारों पर्वतों पर
 चार बन और चार सरोवर जो हैं उनके नाम कहता हूँ सुनो ॥ १ ॥

मू. पूर्वचैत्ररथनामदक्षिणेनन्दनवनं । वैश्रा
 जं पश्चिमे शैलेसावित्रं चोत्तराचले ॥ २ ॥

टी. कि पूर्व के पर्वत पर चैत्ररथ बन और दक्षिण के पर्वत पर नन्दन व
 न और पश्चिम पर वैश्राज बन और उत्तर के पर्वत पर सावित्र बन है ॥ २ ॥

मू. अरुणोदंसरः पूर्वमानसंदक्षिणेतथा । शी
 तोदं पश्चिमे मेरुमहाभद्रं तथोत्तरे ॥ ३ ॥

टी. और पूर्व पर अरुणोद सरोवर और दक्षिण पर मानस ना
 म सरोवर और मेरु के पश्चिम शीतोद सरोवर और उत्तर त
 रफ महाभद्र नाम सरोवर है ॥ ३ ॥

मू. शीतार्तश्च क्रमुञ्जश्च कुलोऽथ सुकंकनान् ।
 मणिशैलोऽथ वृषवान् महाशैलो भवाचलः ॥ ४ ॥

टी. और शीतार्त और क्रमुञ्ज और कुलो और सुकंकनान्

श्रीर मणिशैल श्रीर रत्नवान् श्रीर महाशील श्रीर भवाचल ॥ ४ ॥

मू. सुविन्दुर्मन्दरेवेणुस्तामसोनिषधस्तथा । देव
शैलश्चपूर्वगतमन्दरस्य महाचलः ॥ ५ ॥

श्री. श्रीर सुविन्दु श्रीर मन्दरेवेणु श्रीर तामस श्रीर निषध श्रीर
देवशैल इत्यादि पर्वत महाचल मन्दरके पूर्व दिशा में है ॥ ५ ॥

मू. विकूटशिखरादिश्चकलिङ्गोऽथपतङ्गकः । रु-
चकःमानुमाश्चादिताम्रकोऽथविशाखवान् ॥ ६ ॥

श्री. श्रीर विकूट श्रीर शिखरादि श्रीर कलिङ्ग श्रीर पतङ्गक श्रीर
रुचक श्रीर मानुमान् श्रीर ताम्रक श्रीर विशाखवान् ॥ ६ ॥

मू. श्वेतोदरः समूलश्चवसुधारश्चरत्नवान् । एक-
शृङ्गो महाशैलो राजशैलः पिपाठकः ॥ ७ ॥

श्री. श्रीर श्वेतोदर श्रीर समूल श्रीर वसुधार श्रीर रत्नवान् श्रीर ए-
कशृङ्ग श्रीर महाशैल श्रीर राजशैल श्रीर पिपाठक ॥ ७ ॥

मू. पञ्चशैलोऽथकैलाशो हिमवांश्चचलोत्तमः । इ-
त्येते दक्षिणोपार्श्वे मेरोः प्रोक्ता महाचलः ॥ ८ ॥

श्री. श्रीर पञ्चशैल श्रीर कैलाश श्रीर हिमवान् श्रीर अचलोत्तम ये
सब महाचल मेरु के दक्षिण भाग में हैं ॥ ८ ॥

मू. सुरक्षः शिशिराक्षश्चवैदूर्यः कपिलस्तथा । पि-
ञ्जरोऽथमहाभद्रः सुरसः कपिलो मधु ॥ ९ ॥

श्री. श्रीर सुरक्ष श्रीर शिशिराक्ष श्रीर वैदूर्य श्रीर कपिल श्रीर पि-
ञ्जर श्रीर महाभद्र श्रीर सुरस श्रीर कपिल श्रीर मधु ॥ ९ ॥

मू. अञ्जनः कुक्कुटः रुषाः पाण्डरश्चचलोत्तमः । स-
हस्रशिखराश्चादिः पारिपात्रः सशृङ्गवान् ॥ १० ॥

श्री. श्रीर अञ्जन श्रीर कुक्कुट श्रीर रुषा श्रीर पाण्डर श्रीर अचलो-
त्तम श्रीर सहस्रशिखर श्रीर पारिपात्र श्रीर शृङ्गवान् ॥ १० ॥

पश्चिमेन तथा मेरोर्विष्कम्भापि च मादहिः । ए
ते चलाः समाख्याताः शृणुष्वान्यांस्तथोत्तरान् ॥ ११ ॥

श्री. ये सब मेरु के पश्चिम पार्श्व में विष्कम्भ पर्वत के चारों ओर हैं अब
मेरु के उत्तर तरफ के पर्वत कहता हूँ सुनो ॥ ११ ॥

शृणु कुर्योऽथ वृषभो हंसनाभस्तथाचलः । कपि
लेन्दुस्तथाशैलः सानुमाननीलवच ॥ १२ ॥

श्री. शृणु कुर्यो और वृषभ और हंसनाभ और कपिलेन्दु और सा-
नुमान और नीलाचल ॥ १२ ॥

स्वर्णशृङ्गीश्चातशृङ्गीपुष्पकोमेघपर्वतः । वि-
रजाक्षोवराहादिर्मयूरो जारुधिस्तथा ॥ १३ ॥

श्री. और स्वर्णशृङ्गी और आतशृङ्गी और पुष्पक और मेघपर्व-
त और विरजाक्ष और वराहादि और मयूर और जारुधि ॥ १३ ॥

इत्येते कथिता ब्रह्मन् मेरोरुत्तरतो नगाः । एते
षां पर्वतानान्तुद्रोणोऽतीव मनोहराः ॥ १४ ॥

श्री. हे ब्रह्मन् ये सब पर्वत मेरु के उत्तर भाग में हैं इन पर्व-
तों की खोह अत्यन्त मनोहर हैं ॥ १४ ॥

वनैरमलपानीयैः सरोभिरुपशोभिनाः । तासु
पुण्यकृतां जन्ममनुष्याणां हि जौत्तम ॥ १५ ॥

श्री. ये सब पर्वत वन और निर्मल जल युक्त सरोवरों से परम शोभित हैं हे दि-
जौत्तम इस पुण्य भूमि में पुण्यात्मा लोग जन्म पाते हैं ॥ १५ ॥

एते भीमाद्विजश्रेष्ठसर्गाः स्वर्गगुणाधिकाः । न
तासु पुण्यपापानामपूर्वानामुपार्जनम् ॥ १६ ॥

श्री. यह सब भूमि स्वर्ग तुल्य है किन्तु इसमें स्वर्ग से भी अधि-
क गुण है इन स्थानों में जो लोग रहते हैं उनको पूर्व ज-
न्म का पाप और पुण्य नहीं व्याप्त है ॥ १६ ॥

मू. पुण्योपभोगा एवोक्ता देवानामपि नास्वपि । शी-
तान्ता वेष चैतेषु शैलेषु द्विजसत्तम ॥ १७ ॥

टी. देवनालोग भी अपने पुण्य को इसी भूमि में आकर भोग करते हैं हे द्विजोत्तम शीतान्त इत्यादि जो पर्वत हैं इन सभी में ॥ १७ ॥

मू. विद्याधराणां यक्षाणां किन्नरोरगरक्षसां । देवा-
नाञ्च महावासा गन्धर्वाणां च शोभनाः ॥ १८ ॥

टी. विद्याधर और यक्ष और किन्नर और उरग और रक्षोगण और देवता और गन्धर्वों का सुन्दर वासस्थान है ॥ १८ ॥

मू. महापुण्या मनोजैश्च सदैवोपवनैर्युताः । सरांसि
च मनोज्ञानि सर्व्वे नु सुखदाः । निलः ॥ १९ ॥

टी. यह भूमि महा पुण्या और मनोरम्य है और देवता और उपवन और सुन्दर सुन्दर मनोहर सरोवरों से शोभित है और यह की हवा सब ऋतुओं में सुखदायक है ॥ १९ ॥

मू. न चैतेषां मनुष्याणां वै मनस्यानिकुत्रचित् । तदे-
वंपार्ष्णि वंपसंचनुष्य वंमयोदितम् ॥ २० ॥

टी. और इन सब स्थानों में मनुष्यों को किसी समय उदर नहीं होती हे द्विजोत्तम यह पृथ्वीपद्म जिसको मैं चारफेक कह चुका हूँ ॥ २० ॥

मू. भद्राश्वभारताद्यानि पञ्चान्यस्य चतुर्दिशं । भा-
रतं नाम यद्वर्षदक्षिणेन मयोदितम् ॥ २१ ॥

टी. भद्राश्व और भारत इत्यादि जो वर्ष हैं वह इसके चारों ओर पञ्च समान हैं और भारत नाम वर्ष मेरु पर्वत से दक्षिण है जो मैं ने वर्णन किया है ॥ २१ ॥

मू. तत्कर्मभूमिर्नान्यत्र संप्राप्तिः पुण्यपापयोः । ए-
तत्प्रधानं विज्ञेयं सर्व्वप्रतिष्ठितम् ॥ २२ ॥

टी. वही कर्म भूमि है अर्थात् पाप या पुण्य भारत ही में काकि
या हुआ भोग करना होता है इसीवास्ते इसका नाम कर्मभूमि
है दूसरे वर्षों में पुण्य या पाप नहीं प्राप्त होता है इसलिये स-
ब वर्षों में भारत वर्ष को प्रधान जानना चाहिये क्योंकि इसमें क-
र्म मात्र प्राप्त होता है ॥ २२ ॥

मू. तस्मात्सर्गापवर्गौ च मानुष्यनारकावपि । ति-
र्यक्तामथवाप्यन्यत्नरः प्राप्नोति वैदिज । २३ ।

टी. इसवास्ते स्वर्ग अपवर्ग और तिर्यक्तादि नाना नार्किक योनि-
यों में इसी भारत वर्ष ही में कर्म करने से जन्म पाते हैं ॥ २३ ॥

इति श्री मार्कण्डेय पुराणे भुवन कोशे नाम पंचपंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५५ ॥

ओह्याये चिन

१- मार्कंडेय जी कहे हैं कि सब ब्रह्मन् मन्दार वृक्ष के चार प्रेत हैं और अनिन जो चार
और चार तालाब हैं अन्नी कथित और अन्के नाम सुनो - १- के पुरब के प्रेत पर चित्र तन्नाम
ही और दक्खे के प्रेत पर नन्दन नाम हैं और चित्र के प्रेत पर न्नी चहराज नाम हैं और अन्के प्रेत
पर सादत्त नाम हैं - २- और पुरब जानब और नन्द नाम तालाब और दक्खे जानब मान सूर्य
तालाब और न्नी के चित्र पर सितु नाम तालाब और अन्के प्रेत महा बद्ध नाम तालाब हैं - ३- और
शित्तारत और कर्मन्ज और क्लोर और सुक्कल दान और मन् शिल और ब्रह्म दान और मन् शिल और
ब्रह्म दान - ४- और सुक्कल और मन् शिल और नन्द नाम तालाब और दक्खे और न्नी के प्रेत
मन् शिल और नन्द नाम तालाब और दक्खे और न्नी के प्रेत मन् शिल और नन्द नाम तालाब और दक्खे और न्नी के प्रेत

ایک اور سانٹان اور نامک اور بشاکھ وان - ۷ اور شوٹودور اور سمول اور کسٹھا
 اور رتن وان اور ایک سرنگ اور مناشیل اور راج شیل اور سپاٹھک - ۸ اور چ
 نیل اور کیش اور ہوان اور اچلوٹم یہ سب پریت مہا پریت میر کے دکن اور آسکے
 نزدیک ہیں - ۹ اور سرکش اور شش راکش اور بندورج اور پچم اور مہا بھدر اور مہر
 اوکلی اور مہ - ۱۰ اور انجن اور گٹ - اور کرشن اور بانڈ اور اچلوٹم اور مہر شکر اور پارپار
 اور شنگ وان - ۱۱ یہ سب پریت میر پریت کے کچھ طرف بشکھ پہاڑ کے برابر ہیں
 اب میر کے اتر طرف کے پہاڑوں کا بیان کرتا ہوں سنو - ۱۲ شکر کوٹ اور بریکھ اور
 ہنس نامک اور کپلینڈر اور سانٹان اور نیلاجل - ۱۳ اور سورن سرنگی اور شات سرگی
 اور شنگ اور میگھ پریت اور بر جاکش اور راکور اور میور اور جاردو - ۱۴ یہ برہمن
 یہ سب پہاڑ میر پریت کے اتر طرف ہیں ان پہاڑوں کی کھوٹوں میں بڑی دلچسپ جگہ ہیں
 ۱۵ یہ سب پہاڑ سندربن اور نرمل جل والے تالابوں سے شو بھایان میں ہے اٹم فوج ایسی
 زمین میں چٹیا تالوگ جنم پاتے ہیں - ۱۶ یہ براہمن یہ سب زمین سوگ ہی یعنی بہت سے
 بھی زیادہ زمین گن ہیں اس زمین میں جو لوگ رہتے ہیں انکو پورب جنم کا پٹن اور پاپ نہیں
 ہوتا - ۱۷ دیوتا لوگ بھی اپنے پٹن کا پھل اسی زمین میں انکر بھوک کرتے ہیں -
 ۱۸ براہمن شیتانت وغیرہ جو پریت ہیں ان سبھوں میں - ۱۹ بد یادھر اور جھو اور
 نر اور ارگ اور رچوگن اور دیوتا اور گندھرت ان سبھوں کے سندربھتھان ہیں -
 ۲۰ یہ زمین مہا پوٹر اور بڑی دلچسپ ہے اور ہر طرح کے باغ اور دل فریب تالابوں سے
 سو بھایان ہے اور وان کی تہا ہر موٹھ میں آرام و فرحت دینے والی ہے - ۲۱ ان
 سب جگہوں میں آدمی کو کسی طرح کا رنج کبھی نہیں ہوتا - ۲۲ اٹم فوج یہ پر بھوی جس کے
 بار ہر شریعی چار کھری صورت گن کے ہیں - ۲۳ بھدر اسٹو اور بھارت وغیرہ جو ورش
 بنائے چارہ طرف پتھر کے ستان ہیں اور بھارت ورش جو میر پریت کے دکن طرف ہے حکومت میں ہے اور پریا
 ۲۴ وہی کرم جو ہم کو یعنی بھارت کھڑی میں کا کیا ہوا ہے یا پھر گناہ ہے اس سے اسکا نام کرم جو ہم
 کو اور شوٹن میں یا نہیں ہوتا ہے اور شوٹن میں بھارت ورش کو عہدہ جانا چاہیے کیونکہ اس میں
 س کرم حاصل ہوتے ہیں - ۲۵ یعنی سوگ اور آپ برگ اور شکر کا جنم اور پاپ جو بن
 اور وغیرہ اور اور جن میں بھی جنم پانا یہ سب ای براہمن اسی ورش میں کرم کرنے سے ہوتا ہے فقط
 یہاں سے

मू. मार्कण्डेय उवाच ॥ धराधारं जगद्योनिं
पदं नारायणस्य च । ततः प्रवृत्ताया देवी
गङ्गा त्रिपथगामिनी ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

टी. फिर मार्कण्डेयजी बोले कि हे कौटुकि पृथ्वी के आधार और जग-
त के कारण जो श्री नारायणजी हैं उनके चरण से त्रिपथगामिनी
श्री गङ्गादेवी उत्पन्न हुई हैं ॥ १५ ॥

मू. सा प्रविश्य सुधा योनिं सोममाधारमस्मत्सां ।
ततः सम्वध्यमाना कर्करस्मि सङ्गतिपावनी ॥ २ ॥

टी. वह गङ्गा सुधायोनि और जल के आधार जो चन्द्रमा हैं उनमें
यानी चन्द्रमाडल में प्रवेश करके सूर्य की किरण की सङ्गति से पवि-
त्र होकर लोक की पवित्र करनेवाली बहने लगी ॥ २ ॥

मू. पपात मेरु पृष्ठे च सा चतुर्धा ततो ययौ । मेरुकू-
टतटान्तेभ्यो निपतन्ती विवर्जिता ॥ ३ ॥

टी. और वहाँ से बह कर मेरु पर्वत पर जाकर वहाँ चार धारा होकर ब-
हने लगी और मेरुकूट के तटान्त पर पहुँचकर उधर गई ॥ ३ ॥

मू. विकीर्यमाण सलिलानि सलम्बापपातसा ।
मन्दराद्येषु पादैषु प्रविभक्तोद्का समं ॥ ४ ॥

टी. और वहाँ पर गङ्गाजी का जल बहुत फैल गया फिर वहाँ
से बगैर सहारे होकर मन्दार इत्यादि चारों पर्वतों पर होकर प्र-
थक् पृथक् जल बह चला ॥ ४ ॥

मू. चतुर्धापि पानाम्बुविभिन्ना हि शिलोच्चया । पू-
र्वाशीतेऽतिविख्याता ययौ चैत्रथवनं ॥ ५ ॥

टी. और उन चारों पर्वतों पर जो गङ्गाजी का जल बड़े जोर-शोर
से गिरा तो उन पहाड़ों के दुकड़े दुकड़े होकर बह गये और
पूर्वतर्फ जो धारा बह कर गई है उसका नाम सीता है वह चैत्रथवन में जाकर ॥ ५ ॥

मू. तस्मावयित्वाचययौवरुणोदंसरोवरं। शीता-
नञ्चगिरितस्मान्तस्यान्यान्गिरीन्क्रमात्॥ ६॥

टी. उस वन को जलामयी करके बरुणोद सरोवर में गिरी और वहाँ से
शीतान्त सर्वत पर होकर क्रम से और पर्वतों पर बहती हुई ॥ ६ ॥

मू. गत्वाभुवंसमासाद्यभद्राश्वज्जलधिगता। न-
चैवालकनन्दारव्यंदक्षिणोगन्धमादने॥ ७॥

टी. पृथ्वी में आकर भद्राश्व खण्ड होकर समुद्र में मिल गई उ-
त्तीतरह दूसरी धारा जलकनन्दा नाम दक्षिण और गन्धमाद
न पर्वत पर आकर फिर वहाँ से ॥ ७ ॥

मू. मेरुपादवनंगत्वानन्दनं देवनन्दनम्। मान-
संचमहावेगात्प्रवयित्वासरोवरं॥ ८॥ ८॥

टी. मेरुपाद पर्वत पर जाकर नन्दन वन में जलैजल करती हुई
बड़े वेग से मानसरोवर में पहुँची ॥ ८ ॥

मू. आसाद्यशैलराजानंरम्यंहिशिखरन्तथा। त-
स्माच्चपर्वतान्सर्वानदक्षिणोपक्रमोदितान्॥ ९॥

टी. फिर वहाँ से शैलराज पर्वत पर आकर विशिखर पर्वत पर
गई फिर वहाँ से चलकर दक्षिण के सब पर्वतों को ॥ ९ ॥

मू. तान्सावयित्वासंप्राप्ताहिमवन्तंमहागिरिं। द-
धारतत्रतांशम्भुनंमुमोचवृषध्वजः॥ १०॥

टी. डुबोती हुई हिमवान् महापर्वत पर आई वहाँ महादेव जी ने उ-
न को अपनी जटा में धारण कर लिया और फिर न छोड़ा ॥ १० ॥

मू. भगीरथेनोपवासैस्तुत्याचाराधितोविभुः। तत्र
मुक्ताचशर्बेनसप्तधादक्षिणोदधिं॥ ११॥

टी. फिर जब राजा भगीरथ ने शिवजी का व्रत और उपचार से पूजन कु-
ति किया तब महादेवजी ने प्रसन्न होकर उनको अपनी जटा से छोड़ दिया तब फिर

वहाँ से सात धारा होकर गङ्गाजी चली उसमें चार धारा नो दक्षिण के समुद्र में मिल गई ॥ ११ ॥

मू. प्रविवेशत्रिधा प्राच्यां लावयन्ती महानदी । भा
गीरथरथस्यानुसृतैः केन दक्षिणां ॥ १२ ॥

टी. और तीन धारा महानदी गङ्गाजी की सम्पूर्ण आवृत करती हुई पूर्व दिशा को गई तिसमें एक धारा रत्ना भागीरथ के पीछे पीछे दक्षिण ओर को चली हैं ॥ १२ ॥

मू. तथैव पश्चिमे पादे विपुलेशा महानदी । स्वरक्षु
रिति विख्याता वैभ्राजंसा चलं ययौ ॥ १३ ॥

टी. उसी तरह पश्चिम ओर श्री गङ्गाजी महानदी विपुलेशा होकर वैभ्राज नाम बन में गई जिनका नाम स्वरक्षु विख्यात हुआ ॥ १३ ॥

मू. शीतोदञ्च सरस्तस्मात् लावयन्ती महानदी ।
स्वरक्षुः पर्वतं प्राप्ता ततश्च त्रिशिरं गता ॥ १४ ॥

टी. वहाँ से सब पानी पानी करती हुई शीतोद नाम सरोवर में आई फिर वहाँ से बहकर त्रिशिर पर्वत पर पहुँची ॥ १४ ॥

मू. तस्मान्क्रमेण चांद्रीणां शिखरेषु निपत्य सा । के
तुमालं समासाद्य प्रविष्टा लवणोदधिं ॥ १५ ॥

टी. वहाँ से क्रम से सब पर्वतों के शिखर पर होकर केतुमाल बर्ष में जाकर क्षार समुद्र में मिल गई ॥ १५ ॥

मू. सुपार्श्वन्तु तथैवाद्रिमेरुपादं हि सा गता । तत्र सो
मेति विख्याता सा ययौ सविर्बुवनं ॥ १६ ॥

टी. और चौथी धारा सुपार्श्व पर्वत और मेरु पर्वत पर होकर सविता बन में गई वहाँ उनका नाम सोमा हुआ ॥ १६ ॥

मू. तत् लावयन्ती संप्राप्ता महाभद्रमरोवरं । तत
श्च शंखकूटं प्राप्ता वै महानदी ॥ १७ ॥

टी. उस बन को जलामयी करती हुई महाभद्र नाम सरोवर में गई

वहाँ से चलकर फिर शंखकूट पर्वत पर पहुँचीं ॥ १७ ॥

मू. तस्माच्च वृषभादीन् सा क्रमात् प्राप्य शिलोच्चयान् ।
महार्णवमनु प्राप्ताः प्रावयित्वा तत्रानकुर्वन् ॥ १८ ॥

टी. वहाँ से वृषभादि पर्वतों को जलैजल करती हुई उत्तर दिशा में
महा समुद्र में मिल गईं ॥ १८ ॥

मू. एवमेषामया गङ्गा कथिता ते द्विजर्षभ । जम्बू-
द्वीपनिवेश च वर्षाणि च यथा तथं ॥ १९ ॥

टी. हे द्विजोत्तम यह जो श्री गङ्गाजी का निर्णय है सो तो मैंने तु-
म से वर्णित किया और जम्बूद्वीप और वर्षा की कथा भी जि-
स तरह पर थी वह सब भी मैंने कही ॥ १९ ॥

मू. वसन्ति तेषु सर्वे पुप्रजाः किम्पुरुषादिषु । सुख-
प्रायानिरातङ्गान्यूनतो कर्षवर्जिताः ॥ २० ॥

टी. और हे कौण्डिक किम्पुरुषादि वर्षों में प्रजालोग निर्भय और सबको
ई एकही तरह सुखी हो निवास करते हैं ॥ २० ॥

मू. नवस्वपि च वर्षेषु सप्त सप्त कुलाचलाः । एकैक-
स्मिन्तदादेशेन सञ्चरन्ति विनिःसृताः ॥ २१ ॥

टी. और नवौ वर्षों में सात सात कुलाचल पर्वत हैं और उन पर्वतों
से बहुत सी नदियाँ बहती हैं ॥ २१ ॥

मू. यानि किंपुरुषाद्यानि वर्षाण्यष्टौ द्विजोत्तम । ते
षूद्भिरानितो यानि मेघवार्य च भारते ॥ २२ ॥

टी. हे द्विजोत्तम किम्पुरुष इत्यादि वर्षों में सम्पूर्ण ऐश्वर्य म-
नुष्यों को केवल पृथ्वी ही से बिना किसी यत्ने के प्राप्त होते हैं और
भारत वर्ष में मेघ के जल वर्षने से सब कुछ होता है ॥ २२ ॥

मू. वार्षी स्वाभाविकी देश्यातो यो त्यामानसी तथा ।
कर्मजा च नृणां सिद्धिर्वर्षेष्वेतेषु चाष्टषु ॥ २३ ॥

टी. और इन आठों वर्षों में चार्दी और स्वाभाविकी और दे
श्या और तोयोत्या और मानसी और कर्मजा नाम सिद्धियां
मनुष्यों को प्राप्त होती हैं ॥ २३ ॥

मू. कामप्रदेभ्यो हस्तेभ्यो वार्दीसिद्धिः स्वभावजा ।

स्वाभाविकी सभाख्याता वृष्टिदेश्या च देशिकी ॥ २४ ॥

टी. जहाँ पर सब कामना वृक्ष से प्राप्त होती हैं वह वार्दी सि
द्धि कहलाती है और जहाँ सब कामना स्वभाव ही से सिद्ध होता
है वह स्वाभाविकी सिद्धि कहलाती है और जहाँ पर केवल देश
ही से सब कामना पूरी होती है वह देश्या सिद्धि कहलाती है ॥ २४ ॥

मू. अपांसौ ह्माचतोयोत्या ध्यानोपेता च मानसी ।

उपासनादिकार्यानुधर्मजा सा षुदाहता ॥ २५ ॥

टी. और जहाँ पर थोड़े ही जल से सब कामना पूर्ण होती है वह तो
योत्या सिद्धि कहलाती है और जहाँ ध्यान करके सब कामना सिद्ध
होती है वह मानसी सिद्धि कहलाती है और जहाँ उपासना इत्या
दि से कामना पूरी होती है वह कर्मजा सिद्धि कहलाती है ॥ २५ ॥

मू. नचैतेषु युगावस्थानाधयो व्याधयोनच । पुण्या

पुण्यसमारम्भो नैव तेषु द्विजोत्तम ॥ २६ ॥

टी. और हे द्विजोत्तम इन वर्षों में युगों का धर्म और आधि अर्था
त् मानसी पीड़ा और व्याधि अर्थात् गेगइत्यादि देही पीड़ा और पा
प और पुण्य कुछ नहीं होता है ॥ २६ ॥

इति श्री मार्कण्डेयपुराणे

गङ्गावतारो नाम

॥ ५६ ॥

اَدھیاے چھین

۱۔ مارکنڈے جی کہتے ہیں کہ ہے کروٹشکی پر تھوی کے ادھار اور جگت کے کارن جو
 شری ناراین جی ہین اُنھین کے چرن سے تر پتھ گامنی شری گنگا دیوی پیدا ہوئیں۔
 ۲۔ وہ گنگا جی سدا ہا جوں اور جل کے ادھار جو چند رمان ہین اُنکے منڈل مین ہو کر سوچ
 کی کرن سے پو تر ہو کر بڑھنے لگیں۔ ۳۔ اور دمان سے بڑھ کر میو پر بت کی پشت پر آکر
 دمان سے چار دھارا ہو کر بنے لگیں۔ اور تیر کوٹ کی حد تک پہنچ کر ٹھہر گئیں۔ ۴۔ لیکن وہ
 پرانی گنگا جی کا بہت پھیل گیا پھر دمان سے بلا کسی ذریعہ کے مندار وغیرہ چاروں پہاڑوں
 پر الگ الگ ہو کر پانی منسے لگا۔ ۵۔ اُن چاروں پہاڑوں پر جو گنگا جی کا پانی بڑے
 زور و شور سے گرا تو اُس سے اُن پہاڑوں کے ٹکڑے ہو ہو کر بہہ بہہ گئے اور پورب طرف
 جو دھارا گنگا جی کی گئی ہو اُسکا نام سبتاسی وہ چھتر تر پتھ بن مین گری ہو۔ ۶۔ اور
 بن کو پُرا آب کرتی ہوئی پُر نو د نام تالاب مین مل گئی اور دمان سے شیتا نٹ پر بت پر
 ہو کر پھر اور اور پر پتھوں پر بھی بہتی ہوئی۔ ۷۔ زمین پر آکر بھڑا سٹو کھنڈ مین ہو کر سدا
 مین مل گئی۔ اس طرح دوسری دھارا الگ مندا نام دکھن مین کندھ مادن پر بت پر آکر۔
 ۸۔ دمان سے میو یاد پر بت پر جا کر نندن بن کو پُرا آب کرتی ہوئی بڑے زور و شور سے
 مان سرور نام تالاب مین پہنچی۔ ۹۔ پھر دمان سے شیل راج پر بت پر آکر تر شکر پت
 پر جا کر پھر دمان سے رفتہ رفتہ دکھن کے سب پہاڑوں کو۔ ۱۰۔ پُرا آب کرتی ہوئی ہوان مہا
 پر بت پر آئی و مان مہا دیو جی نے اُنکو اپنی جہا مین رکھ لیا اور پھر پُرا ۱۱۔ جب راجا بھاگیرتھ نے شری
 مہا دیو جی کی پوجا اور است اور پر بت بری شر دھاسے کیا تب مہا دیو جی نے پرست ہو کر
 دھارا کو اپنی جٹا سے چھوڑ دیا ت و مان سے گنگا جی سات دھارا ہو کر نکلیں اُسین سے چار
 دھارا تو دکھن کے سدا مین مل گئیں۔ ۱۲۔ اور تین دھارا مہاندی گنگا جی پُرا آب کرتی ہوں
 پر ب طرف کو گئیں اور ایک دھارا راجا بھاگیرتھ کے رتھ کے پیچھے پیچھے دکھن طرف چلی۔
 ۱۳۔ اس طرح پھر طرف مہاندی گنگا جی پلینا ہو کر بے پھرج نام بن مین گئیں و مان جا کر
 اُنکا نام سورکش مشہور ہوا۔ ۱۴۔ پھر دمان سے تمام پُرا آب کرتی ہوئی شیتا نٹ نام تالاب

آئین پھر وہاں سے بہہ کر ترشکھ پہاڑ پر آئیں - ۱۵ | وہاں سے چلتے چلتے سب پہاڑوں کی
 چوٹیوں پر ہو کر کیٹ مال ورش میں آکر کھاری سدر میں مل گئیں - ۱۶ | اور چوٹی دھارا
 سہاڑو پر بت اور نیر پاد پر بت پر ہو کر سبنا نام بن میں گئی وہاں اسکا نام جیدر سونا
 ہوا - ۱۷ | اس بن کو پراب کرتے ہوئے مہا جیدر اسونا نام تالاب میں جا ملین پھر وہاں سے
 چل کر شکھ کوٹ پہاڑ پہنچیں - ۱۸ | پھر وہاں سے چل کر رکھوہ وغیرہ پہاڑوں کو پراب
 کرتی ہوئی اتر طرف مہاسدر میں مل گئیں - ۱۹ | اسے اتر مروج یہ کتھا شری گنگا جی کی توین
 نے تسبیہ بیان کئی اور جو کچھ حال جمود دپ اور ورشون کا تھا وہ بھی کہہ چکا - ۲۰ | ہے کرشنگی
 کم پریش وغیرہ ورشون میں سب لوگ بیخوف اور ایک ہی طرح خوش ہو کر رہتے ہیں -
 ۲۱ | اور نوو ورشون میں سات سات کلا چل پہاڑ ہیں اور ان پہاڑوں سے بہت ندیاں
 بہتی ہیں - ۲۲ | ہے براہمن کم پریش وغیرہ آٹھ ورشون میں سب طرح کی دولت آدینگو
 صرف زمین سے بغیر کوشش اور تدبیر کرنے کے ملتی ہے اور بھارت ورش میں مینہ کا پانی
 برسنے سے سب کچھ حاصل ہوتا ہے - ۲۳ | اور ان آٹھ ورشون میں بار چھی اور سو اچھا
 اور دلشیا اور تووٹھٹھا اور مانسی اور کر جیا نام سدرھیان آویونکو حاصل ہوتی ہیں -
 ۲۴ | جان پر سب مقصد درخت سے حاصل ہوتے ہیں اسکو بار چھی سدرہ کہتے ہیں اور
 جان عادت و خاصیت سے سب مقصد حاصل ہوتے ہیں اسکو سوا بچھاو کی سدرہ کہتے
 ہیں اور جان دلش ہی سے سب مرادیں برآتی ہیں اسکو دلشیا سدرہ کہتے ہیں -
 ۲۵ | اور جان تھوڑے ہی پانی سے سب مطالب پورے ہوتے ہیں اسکو تووٹھٹھا سدرہ
 کہتے ہیں اور جان دھیان کرنے سے سب مرادیں حاصل ہوتی ہیں اسکو مانسی سدرہ کہتے
 ہیں اور جان آپاسنا وغیرہ گرم کرنے سے سب مقصد حاصل ہوتے ہیں اسکو گرم جا
 سدرہ کہتے ہیں - ۲۶ | اور اسے براہمن ان ورشون میں جگن کا دھرم اور آدھ
 یعنی تکلیف روحانی اور بنیادہ یعنی بیماری وغیرہ تکلیف جسمانی اور پین کچھ نہیں
 ہوتا ہے سب لوگ شگھی رہتے ہیں - فقط

मू. कौण्डिक उवाच ॥ भगवन् कथितं न्येतन्न
मृदीपं समासतः । यदेतद्भवता प्रोक्तं क-
र्म नान्यत्र पुण्यदं ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

श्री. कौण्डिक ने कहा कि हे भगवन् जम्बूदीप का वृत्तान्त तो आपने
यथार्थ वर्णन किया पर यह बात जो कही कि पुण्य देनेवाला कर्म ॥१॥

सू. पापाय वा महाभाग वर्जयित्वा नुभारतं । इ-
तः स्वर्गश्च मोक्षश्च मध्यज्जान्तश्च गम्यते ॥ २ ॥

श्री. वा पाप देनेवाला कर्म सिवाय भारतवर्ष के और दूसरे वर्षों में
नहीं है केवल भारतखण्ड ही में कर्म करने से स्वर्ग और मोक्ष
और जन्म और मरण मनुष्यों को होता है ॥२॥

मू. नरवल्लभ्य नमस्त्यानां भूमौ कर्मविधीयते । त-
स्माद्विस्तारतो ब्रह्म नमैतद्भारतं वद ॥ ३ ॥

श्री. जिस कारण से और वर्षों में मनुष्यों के लिये कुछ कर्म नहीं
हैं हे ब्रह्मन् उसको और इस भारतखण्ड को जो कर्मभूमि कह-
लाता है विस्तार पूर्वक वर्णन कीजिये ॥३॥

मू. ये चास्य भेदा यावन्तो यथावत् स्थितिरेव च । व-
र्षा यदि जशार्दुल ये चास्मिन् देशे पर्वताः ॥ ४ ॥

श्री. और इसमें जो जो भेद हैं और जिस प्रकार यह स्थित है और इसमें
जितने देश और जितने पर्वत हैं वह भी वर्णन कीजिये ॥४॥

मू. मार्कण्डेय उवाच ॥ भारतस्यास्य वर्षस्य न-
वभेदान्निबोधसे । समुद्रान्तरितानेयास्ते
त्वगम्याः परस्परं ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥

श्री. तब मार्कण्डेयजी बोले कि हे कौण्डिक इस भारतवर्ष के नवभेद
हैं वह सुमसे सुनो कि यह नवो भेद समुद्र तक हैं और सब वर्ष आ-
पस में एक से एक अलग हैं ॥५॥

मू. इन्द्रदीपः केशरूमांस्ताम्रवर्णागभस्तिमान्।
नागदीपस्तथासौम्योगान्धर्वो वारुणस्तथा ॥ ६ ॥

श्री. इन्द्रदीप १ केशरूमान् २ ताम्रवर्णा ३ गभस्तिमान् ४ नागदीप ५ सौम्य ६ गान्धर्व ७ वारुण ८ ॥ ६ ॥

मू. अयन्तु नवमं तेषां दीपः सागरसंवृतः । योजना
नां सहस्रं वै दीपोऽयं दक्षिणेन तरान् ॥ ७ ॥

श्री. इन सब से यह भारत नवम दीप अत्यन्त उत्तम है जो सागर से
आच्छादित है और उत्तर से दक्षिण तक यह दीप हजार योजना चौड़ा है ॥ ७ ॥

मू. पूर्वकिराता यस्यान्ते पश्चिमे ववनास्तथा । ब्राह्म-
णाः क्षत्रिया वैश्याः शूद्राश्चान्तःस्थिता हि ज ॥ ८ ॥

श्री. और इसके पूर्व तरफ के अखीर में किरात लोग बसते हैं और पश्चिम दिशा के अन्त में यमन लोग बसते हैं और हे ब्राह्मन् ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र इस वर्ग के बीच में बसते हैं ॥ ८ ॥

मू. इज्याध्यायवणिज्याद्यैः कर्मभिः कृतपावनाः ।
तेषां संव्यवहारश्च कर्मभिरिष्यते ॥ ९ ॥

श्री. और यज्ञ और बेदपाठ और वाणिज्य इत्यादि कर्मों से ब्राह्मणादि चारों वर्ण पवित्र हैं और इन्हीं कर्मों से इन लोगों का व्यवहार भी चलता है ॥ ९ ॥

मू. स्वर्गपवर्गप्राप्तिश्च पुण्यं पापञ्च वै तदा । महेन्द्रो
मलयः सह्यः शुक्तिमान् क्षपर्वनः ॥ १० ॥

श्री. और स्वर्ग और अपवर्ग की प्राप्ति और पुण्य और पाप भी इन्हीं कर्मों से इन लोगों को होता है अब इस वर्ष में जो पर्वत हैं उनके नाम सुनो-महेन्द्र १ मलय २ सह्य ३ शुक्तिमान् ४ क्षपर्व ५ ॥ १० ॥

मू. विन्ध्यश्च पारिपात्रश्च सप्तैवात्र कुलाचलाः ।

तेषांसहस्रशश्चान्येभूधरायेनमीपगाः

टी. विंध्य ६ और पारिपात्र ७ ये सात इसमें कुलाचल हैं और इन सब के पास और और भी हजारों पहाड़ हैं ॥ ११ ॥

मू. विस्तारोच्छ्रियणोरम्याविपुलाश्चात्रसानवः। को
लाहलःसवैभ्राजोमन्दरोर्दुराचलः ॥ १२ ॥

टी. उनमें भी बड़े बड़े चौड़े बहुतेरे रमणीय सानुव अर्थात् किनारे हैं उनके नाम कहता हूँ सुनौ- कोलाहल और सवैभ्राज और मन्दर और दुर्दराचल ॥ १२ ॥

मू. वातस्वनोवैद्युतश्चमैनाकःस्वरसस्तथा। तुंग
प्रस्थोमागगिरीरोचनःपाण्डुराचलः ॥ १३ ॥

टी. और वातस्वन और वैद्युत और मैनाक और स्वरस और तुङ्गप्रस्थ और नागगिरी और रोचन और पाण्डुराचल ॥ १३ ॥

मू. पुष्पोगिरिर्दुर्जयन्तोरैवतोर्वुदएवच। ऋष्य
मूकःसगोमन्तःकूटशैलःकृतस्मरः ॥ १४ ॥

टी. और पुष्पगिरि और दुर्जयन्त और रैवत और अर्बुद और ऋष्यमूक और सगोमन्त और कूटशैल और कृतस्मर ॥ १४ ॥

मू. श्रीपर्वतश्चकोरश्चशतशोऽन्येषपर्वताः। तै
र्विमिश्राजनपदाम्लेच्छाचार्याश्चभागशः ॥ १५ ॥

टी. और श्रीपर्वत और चकोर इत्यादि पर्वत हैं और शिवाय इनके और भी सैकड़ों पर्वत इस भारतवर्ष में हैं इन पर्वतों और श्लेष्म और आर्या भाग सहित यह वर्ष है ॥ १५ ॥

मू. तैःपीयन्नेसरितश्चेष्ठायास्ताःसम्यङ्गिनोधमे।
राङ्गसरस्वतीसिन्धुश्चन्द्रभागातथापरा ॥ १६ ॥

टी. और इस वर्ष में जो जो श्रेष्ठ नदियाँ बहती हैं वह सुनौ गङ्गा और सरस्वती और सिन्धु और चन्द्रभागा ॥ १६ ॥

मू. यमुना च शतदुश्च वितस्ता ऐरावती कुङ्कुः । गोम-
ती धृतपापा च बाहुदा स दृषद्वती ॥ १७ ॥

टी. और यमुना और शतदु और वितस्ता और ऐरावती और कुङ्कु
और गोमती और धृतपापा और बाहुदा और दृषद्वती ॥ १७ ॥

मू. विपासा देविकी रंक्षु निश्चीरा गाडकी तथा । कौ-
शिकी चापगाविप्र हिमवत्पादनिःसृता ॥ १८ ॥

टी. और विपासा देविकी रंक्षु निश्चीरा गाडकी कौशिकी इत्यादि नदि-
याँ सब हिमवान पर्वत से निकली हैं ॥ १८ ॥

मू. वेदस्मृतिर्वेदवती वृत्रघ्नी सिन्धुरेव च । वेणवासा
नन्दनी चैव सदा नीरामही तथा ॥ १९ ॥ १९ ॥

टी. और वेदस्मृति और वेदवती और वृत्रघ्नी और सिन्धु और वे-
णवासा और नन्दनी और सदा नीरामही ॥ १९ ॥

मू. पारा च र्मण्वती नूपी विदिशा वेत्रवत्यपि । शिप्रा
ह्यवर्णी च तथा पारिपात्रा श्रयाः स्मृताः ॥ २० ॥

टी. और पारा और चर्मण्वती और नूपी और विदिशा और वेत्रवती और
शिप्रा और अवर्णी ये सब नदियाँ पारिपात्र पर्वत से निकली हैं ॥ २० ॥

मू. शोणो महानदश्चैव नर्मदा सुरथा द्विजा । मन्दा-
किनी दशार्णा च चित्रकूटा तथा परा ॥ २१ ॥ २१ ॥

टी. और शोण और महानद और नर्मदा और सुरथा और अवद्विजा
और मन्दाकिनी और दशार्णा और चित्रकूटा ॥ २१ ॥

मू. चित्रोत्पला सतमषा कर्मोदा पिशाचिका । तथा-
न्या पिप्पलि श्रोणिर्विपाशा वञ्जुला नदी ॥ २२ ॥

टी. और चित्रोत्पला और सतमषा और कर्मोदा और पिशाचिका
और पिप्पलि श्रोणी और विपाशा और वञ्जुला ॥ २२ ॥

मू. सुमेरुजा शुक्तिमती सकुली त्रिदिवा क्रमुः ।

स्कन्धपादप्रसूतावैतथान्योवेगबाहिनी । २३ ।

टी. और सुमेरुजा और शुक्तिमती और सकुली और त्रिविधा और क्रम और स्कन्धपादप्रसूता और वेगबाहिनी ॥ २३ ॥

मृ. शिप्रापयोषाणिनिर्विन्ध्यातापीसनिषधावती । वे
ण्यावैतरणीचवसिनीवालीकुमुद्वती ॥ २४ ॥

टी. और शिप्रा और पयोषाणि और निर्विन्ध्या और तापी और निष
धावती और वेण्या और वैतरणी और सिनीवाली और कुमुद्वती ॥ २४ ॥

मृ. कारतोयामहागौरीदुर्गाचान्तःशिरातथा । वि-
न्ध्यापादप्रसूतास्तानद्यःप्रायजलाःशुभाः ॥ २५ ॥

टी. और कारतोया और महागौरी और दुर्गा और अन्तःशिरा ये सब नदियों
विन्ध्य पर्वत से निकली हैं इन सब का जल अत्यन्त पवित्र है ॥ २५ ॥

मृ. गोदावरीभीमरथारुषावैावातथापरा । नुङ्ग
भद्रासुप्रयोगावाद्याकावेर्य्यापगा ॥ २६ ॥

टी. और गोदावरी और भीमरथा और रुषा और वैावा और नु-
ङ्गभद्रा और सुप्रयोगा और वाद्या और कावेरी ॥ २६ ॥

मृ. लिह्यपादविनिष्क्रान्ताइत्येताःसरिदुत्तमाः । कू-
तमालाताम्रपर्णीपुष्पजासूतलावती ॥ २७ ॥

टी. ये सब नदियों में ये उत्तम नदियां लिह्यपादनाम पर्वत से निकली हैं
और कूतमाला और ताम्रपर्णी और पुष्पजा और उत्पलावती ॥ २७ ॥

मृ. मलयाद्रिसमुद्भूतानद्यःशीतजलास्त्रिमाः । पि-
नृसोमर्षिकुल्याचइक्षुकात्रिदिवाभया ॥ २८ ॥

टी. ये सब नदियां मलयाचल पर्वत से निकली हैं इन सब का ज
ल अत्यन्त शीतल है और पिनृसोमा और ऋषिकुल्या और
इक्षुका और त्रिदिवा और अभया ॥ २८ ॥

मृ. लाङ्गलिनीवंशकरामहेन्द्रप्रभवाःस्मृताः ।

ऋषिकुल्या कुमारी च मन्दगामन्दवाहिनी ॥ २६ ॥

टी. और लाङ्गुलिनी और बंशकरा ये सब महेन्द्र पर्वत से निकली हैं और ऋषिकुल्या और कुमारी और मन्दगा और मन्दवाहिनी ॥ २६ ॥

मू. कृपा पलाशिनी चैव शुक्ति मत्प्रभवाः स्मृताः । सर्वाः पुण्याः सरस्वत्याः सर्वा गङ्गाः समुद्रगाः ॥ २७ ॥

टी. और कृपा और पलाशिनी इन सब नदियों की उत्पत्ति शुक्ति मान नाम पर्वत से है ये सब नदियाँ अनि पुण्या हैं और सरस्वती और गङ्गा और समुद्र में मिली हैं ॥ २७ ॥

मू. विश्वस्य मातरः सर्वाः सर्वपापहराः स्मृताः । अन्याः सहस्रशश्चोक्ताः सुदुर्नद्यो द्विजोत्तमाः ॥ २८ ॥

टी. और ये सब संसार की माता हैं और सम्पूर्ण पापों को हरण करने वाली हैं और हे द्विजोत्तम इस भारतवर्ष में और भी हजारों छोटी नदियाँ बहती हैं ॥ २८ ॥

मू. प्राविट्कालवहाः सन्ति सदा कालवहाश्च याः । मत्स्याश्च कूटाः कुल्याश्च कुन्तलाः काशिकोशलाः ॥ २९ ॥

टी. और इन नदियों में कितनी तो केवल वर्षा ऋतु में बहती हैं और कितनी सदा काल बहती हैं और मत्स्य देश और कूटा और कुल्या और कुन्तल और काशी और कोशला ॥ २९ ॥

मू. अथर्वार्कलिङ्गाश्च मलकाश्च वृकैः सह । मध्यदेशा जनपदाः प्रायशोः मीप्रकीर्तिताः ॥ ३० ॥

टी. और अथर्व और अर्कलिङ्ग और मलक और वृक ये सब देश मध्य देश कहलाने हैं ॥ ३० ॥

मू. सहास्य चोत्तरे यास्तु यत्र गोदावरी नदी । पृथिव्या मपि कृत्स्ना यां स प्रदेशो मनोरमः ॥ ३१ ॥

टी. और सहास्य पर्वत के उत्तर तरफ जहाँ गोदावरी नदी बहती है वह देश बहुत

देशों से अत्यन्त पवित्र और मनोरम्य है ॥ ३४ ॥

मू. गोवर्द्धनपुरंभार्गवस्यमहात्मनः । वाह्नी-
कावारधानाश्चआभीरःकालतोयकाः ॥ ३५ ॥

टी. और शुक्राचार्य महात्मा का जो गोवर्द्धन नाम पुर है वही
अतिशय रमणीय है और वाह्नीक और वारधान और आभीर
और कालतोयक ॥ ३५ ॥

मू. अपरान्ताश्चशूद्राश्चपल्लवाश्चर्मखण्डिकाः ।
गान्धारागवलाश्चैवसिन्धुसौवीरभद्रकाः ॥ ३६ ॥

टी. और अपरान्त और शूद्र और पल्लव और चर्मखण्डिक और गा-
न्धार और गवल और सिन्धु और सौवीर और भद्रक ॥ ३६ ॥

मू. शतद्रुजाःकलिङ्गाश्चपारदाहारभूषिकाः । माठ
रावूहभद्राश्चकैकेयादशमालिकाः ॥ ३७ ॥

टी. और शतद्रुज और कलिङ्ग और पारद और हारभूषिक और मा-
ठ और वूहभद्र और कैकेय और दशमालिक ॥ ३७ ॥

मू. क्षत्रियोपनिवेशाश्चैश्यशूद्रकुलानिच । का
म्बोजदरदाश्चैववर्चराहर्षवर्द्धनाः ॥ ३८ ॥

टी. इनसब देशों में क्षत्री और वैश्य और शूद्र लोग बसते हैं और
कम्बोज और दरद और वर्चर और हर्षवर्द्धन ॥ ३८ ॥

मू. चीनाश्चैवतुषाराश्चबहुलावाह्यतोनराः । अत्रे
यश्चभरद्वाजाःपुष्कलाश्चकुशेरुकाः ॥ ३९ ॥

टी. और चीन और तुषार और बहुल और वाह्यतोनर और अत्रे
और भरद्वाज और पुष्कल और कुशेरुक ॥ ३९ ॥

मू. लम्पाकाःशूलकाराश्चचुलिकाजागुडैःसह । औ-
षधाश्चानिभद्राश्चकिरातानाञ्चजातयः ॥ ४० ॥

टी. और लम्पाक और शूलकार और चुलिक और जागुड और औषध

और निभट्ट इन देशों में किरात लोग रहते हैं ॥ ४० ॥

मू. तामसाहंसमार्गश्च काश्मीरास्तुङ्गनास्तथा। शूलिकाः कुहकाश्चैव ऊर्णादूर्वास्तथैव च ॥ ४१ ॥

टी. और तामस और हंसमार्ग और काश्मीर और तुङ्गना और शूलिका और कुहका और ऊर्णा और दूर्वा ॥ ४१ ॥

मू. एतैरेषां हि दीच्यास्तु प्राच्यान्देशान्निबोध मे। अथ धारका मुदकरा अन्नगिर्या वहिर्गिराः ॥ ४२ ॥

टी. इतने देश भारतवर्ष के उत्तर दक्षिण में कहलाते हैं और पूर्व दिशा में जो जो देश हैं वह कहता हूँ सुनो- अ धारका और मुदकरा और अन्नगिरि और वहिर्गिरि ॥ ४२ ॥

मू. तथा प्रवङ्गरङ्गेयामानदामानवर्तिकाः। प्रहोत्तराः प्रविजया भार्गवा ज्ञेयमल्लकाः ॥ ४३ ॥

टी. इसी तरह प्रवङ्ग और ज्ञेय और मानद और मानवर्तिका और वाहोत्तर और प्रविजय और भार्गव और ज्ञेयमल्लक ॥ ४३ ॥

मू. प्रागज्योतिषाश्च मद्राश्च विदेहास्ताम्रलिप्तकाः। मल्लामगधगोमन्ताभ्याम्याजनपदाः स्मृताः ॥ ४४ ॥

टी. और प्रागज्योतिष और मद्र और विदेह और ताम्रलिप्तक और मल्ल और मगध और गोमन्त ये सब देश पूर्व दिशा में हैं ॥ ४४ ॥

मू. अथापरे जनपदा दक्षिणापथवासिनः। पुराडाश्च केरलाश्चैव गोलाङ्गुलास्तथैव च ॥ ४५ ॥

टी. अब इसके दक्षिण दिशा के देश कहता हूँ सुनो अर्थात् पुराडा और केरल और गोलाङ्गुल ॥ ४५ ॥

मू. शैलूषामूषिकाश्चैव कुसुमानामवासकाः। महा राष्ट्रामाहिषका कलिङ्गाश्चैव सर्वशः ॥ ४६ ॥

टी. और शैलूष और मूषिक और कुसुम और नामवासक और

महाराष्ट्र और माहिषक और कलिङ्ग ॥ ४६ ॥

मू. आभीराः सहवैशिक्या आढक्याः शवराश्च ये । पु-
लिन्दा विन्ध्यमौलेया वैदर्भा दाडकैः सह ॥ ४७ ॥

टी. और आभीर और वैशिक और आढकी जहाँपर शवर लोग बस-
ते हैं और पुलिन्द और विन्ध्यमौलेय और वैदर्भ और दाडक ॥ ४७ ॥

मू. पौरिका मौलिकाश्चैव अश्रमका भोगवर्द्धनाः । नै-
षिका कुन्तलाग्रन्था उद्दिदा वनदारकाः ॥ ४८ ॥

टी. और पौरिक और मौलिक और अश्रमक और भोगवर्द्धन और नै-
षिक और कुन्तल और अग्रन्थ और उद्दिद और वनदारक ॥ ४८ ॥

मू. दक्षिणात्यास्त्वमी देशा अपरान्तान्निबोधमे । सू-
र्यारकाः कालिवलादुर्गाश्चानीकटैः सह ॥ ४९ ॥

टी. इतने देश दक्षिण दिशा में हैं अब अपरान्तों के नाम कहता हूँ
सुनो- सूर्यारक और कालिवल और दुर्गा और आनीकट ॥ ४९ ॥

मू. पुलिन्दाश्च सुमीनाश्च रूपपाः स्वापदैः सह । तथा
कुरुमिनश्चैव सर्वे चैव कटाक्षराः ॥ ५० ॥

टी. और पुलिन्द और सुमीन और रूपप और स्वापद और कुरुमि-
न इन देशों में कटाक्षर लोग बहुत बसते हैं ॥ ५० ॥

मू. नासिक्यावाश्च ये चान्ये ये चैवोत्तरनर्मदाः । भी-
रुकच्छाः समाहेयाः सह सारस्वतैरपि ॥ ५१ ॥

टी. नासिक्य और नर्मदा के उत्तर तरफ जो देश हैं वह सुनो-
भीरुक और कच्छ और समाहेय और सारस्वत ॥ ५१ ॥

मू. काश्मीराश्च सुराष्ट्राश्च अवन्त्याश्चार्बुदैः सह । इ-
त्येते ह्यपरान्ताश्च शृणु विन्ध्यनिवासिनः ॥ ५२ ॥

टी. और काश्मीर और सुराष्ट्र और अवन्ति और अर्बुद ये सब अ-
परान्त देश कहलाते हैं अब विन्ध्यनिवासियों के नाम सुनो ॥ ५२ ॥

मू. सरजाश्च कुरूषाश्च केरलाश्चोत्कलैः सह । उ
त्तमार्गादशाणांश्च भोज्याः किष्किन्धकैः सह ॥ ५३ ॥

टी. सरज और कुरूष और केरल और उत्कल और उत्तमार्ग और
दशाणा और भोज्य और किष्किन्धक ॥ ५३ ॥

मू. तोशलाः कोशलाश्चैव त्रैपुरावैदिशस्तथा । तु
म्बुरास्तुम्बुलाश्चैव पटवो नैषधैः सह ॥ ५४ ॥

टी. और तोशल और कोशल और त्रैपुर और वैदिश और तुम्बुर
और तुम्बुल और पटव और नैषध ॥ ५४ ॥

मू. अन्नजातुष्टिकाराश्च वीरहोत्राह्यवन्तयः । एते
जनपदाः सर्वे विन्ध्यपर्वतनिवासिनः ॥ ५५ ॥

टी. और अन्नज और तुष्टिकार और वीरहोत्र और अहवन्त्य ये
सब देश विन्ध्यपर्वत की पीठ पर हैं ॥ ५५ ॥

मू. अतो देशान् प्रवक्ष्यामि पर्वताश्रयिणश्च ये ।
नीहारा हंसमार्गाश्च कुरुगुर्गणाः खसाः ॥ ५६ ॥

टी. अब उन देशों को जो पर्वत के आश्रयी हैं कहता हूँ सुनो नी
हार और हंसमार्ग और कुरु और गुर्गणा और खस ॥ ५६ ॥

मू. कुन्तप्रावरणाश्चैव ऊर्णादार्वाः तक्षकाः । त्रि
गर्ता गालवाश्चैव किरातास्तामसैः सह ॥ ५७ ॥

टी. और कुन्त और प्रावरणा और ऊर्णा और दार्वा और तक्षक
और त्रिगर्त और गालव और किरात और तामस ॥ ५७ ॥

मू. कृतत्रेतादिकश्चात्र चतुर्युगकृतो विधिः । एत
च्च भारतवर्षे चतुःसंस्थान संस्थितं ॥ ५८ ॥

टी. और सतयुग और त्रेता इत्यारि चारों युगों की विधि इसी मा
रत वर्ष में रहती है और यह भारतवर्ष चार संस्थान करके संस्थि
त है अर्थात् स्थित है ॥ ५८ ॥

मू. दक्षिणापूरतो ह्यस्य पूर्वोऽप्यवमहोदधिः । हि-
मवानुत्तरेणास्य कर्मस्य यथागुणः ॥ ५६ ॥

टी. जिसके दक्षिण और पश्चिम और पूर्व भी समुद्र हैं और उत्तर तरफ हिमवान् पर्वत है जिसतरह धनुष होता है ॥ ५६ ॥

मू. तदेतद्भारतं वर्षं सर्ववीजं द्विजोत्तम । ब्रह्मत्व
ममैश्वर्यं देवत्वं मरुतस्तथा ॥ ६० ॥

टी. हे द्विजोत्तम इसलिये भारतवर्ष सब का बीज है क्योंकि इसी में कर्म करने के सबब से ब्रह्मत्व और इन्द्रत्व और देवत्व और पवनत्व ॥ ६० ॥

मू. मृगपश्वप्सरयोनिस्तदत्सर्वे सरीसृपाः । स्या
वराणाञ्च सर्वेषामितो ब्रह्मन् शुभाशुभैः ॥ ६१ ॥

टी. और मृग और पशु और अप्सरा इत्यादि की योनि और सरीसृप और स्थावरों की योनि में मनुष्य पुण्य पाप करके ॥ ६१ ॥

मू. प्रयातिकर्मभूम्न नान्यालोकेषु विद्यते । दे-
वानामपि विप्रैर्वेत्तदा एष मनोरथः ॥ ६२ ॥

टी. प्राप्त होता है हे द्विजोत्तम इसी सबब से यह भारतवर्ष कर्मभूमि कहलाता है और अन्य वर्ष जो हैं वह सब कर्मभूमि नहीं हैं हे विप्रैः देवतों को सदा यह अभिलाषा रहती है ॥ ६२ ॥

मू. अपिमानुष्यमाप्स्यामो देवत्वान्प्रच्युताः क्षितौ
मनुष्यः कुरुते तत्तु यन्न शक्यं सुरासुरैः ॥ ६३ ॥

टी. कि हमलोग भी किसी तरह देवलोक से गिर कर भारतवर्ष में जाकर मनुष्य होने तो अच्छा था क्योंकि भारतवर्ष में मनुष्य के शर से जो कर्म हो सके हैं वह कर्म देवता या असुर इत्यादि में नहीं हो सके हैं ॥

मू. तत्कर्म निगडग्रस्तैः स्वकर्म स्थापनोत्सुकैः

नकिञ्चित्कियते कर्मसुखलेशोपवहिनैः ॥ ६४ ॥

ही- और यह जीव आपने ही किये हुये कर्म सूखी बेड़ी में बंध कर दुःख और सुख भोग करता है बिना कर्म किये हुये किसी को दुःख या सुख का लेश नहीं हो सक्ता है ॥ ६४ ॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणेनद्या-
दिवर्णनो नाम सप्तपञ्चाश-
त्तमोऽध्यायः ॥ ५७ ॥

آدھیائے سٹاون

۱۔ کروٹنگی نے کہا کہ ہے جگہوں جب وہیپ کا حال تو آپ نے مفصل بیان کیا لیکن یہ بات جو آپ نے کہی کہ رُکن کا دینے والا کُرم - ۲ یا پاپ کا دینے والا کُرم سوائے بھارت کھنڈ کے اور کھنڈوں میں نہیں ہے صرف بھارت کھنڈ ہی میں کُرم کرنے سے آدمی کو سورگ اور نرک اور جنم اور مرن ہوتا ہے - ۳ دیگر ورشوں میں یعنی کھنڈوں میں آدمیوں کو کوئی کُرم کا بندھن نہیں ہے اس لیے یہ برہمن اس بھارت کھنڈ کا مفصل حال مجھے کہیے - ۴ اور اسکے جو جو بھید یعنی کھنڈ ہیں اور صریح یہ قائم ہے اور اس میں جتنے دیش اور جتنے پرنت ہیں وہ بھی اسے اُتم دُج بیان کیجیے - ۵ تب مارکندے نے جی کہنے لگے کہ ہے کروٹنگی اس بھارت ورش کے نو بھید یعنی نو کھنڈ ہیں اور اس میں ایک سے ایک بڑے ہیں اور سب کھنڈ سچھڑ تک ہیں ان کے نام کتا - ۶ - اند - دین - کیش - رومان - تاقت - بزن - گچھست - مان - ناگ - دیپ - سوئیہ - گاڑھرب - باہرن - ۷ اور ان سب میں یہ نو ان بھارت کھنڈ سب سے بڑا ہے جو کہ اُت سے وکھن تک چار ہزار کوٹس چڑا ہے - ۸ اور اسکے پورب طرف کے اخیر میں کرات لوگ یعنی بیچ ذات رہتے ہیں اور پچھم کے اخیر میں جمن لوگ یعنی مسلمان لوگ رہتے ہیں - ۹ اور جگٹ اور بنید پانڈ اور پنج یعنی تجارت کرنے سے براہمن وغیرہ چارہ و برن پوتر ہیں اور انھیں کانہون

ان سب کا گذارہ چلتا ہے۔ ۱۰ اور سورگ اور اپ برگ اور پٹن اور پاپ انھیں کاموں سے
 ان لوگوں کو حاصل ہوتا ہے۔ اب اس کھنڈ میں جو چوہاڑ میں ان کے نام سنو۔ مہیندر۔ مہندر۔
 شکت مان۔ رکش۔ ۱۱ بندھید۔ پارپتر۔ امین ہی ستا پہاڑ بڑے ہیں اور ان سب کے
 نزدیک اور اور بھی ہزاروں پہاڑ ہیں۔ ۱۲ اور ان میں بھی بڑے بڑے چوٹے اور اونچے
 یہ فضائیت کناری میں ان کے نام سنو۔ گولائی۔ ستر بھراج۔ مندر۔ دُر در اچل۔
 ۱۳ بات متون۔ بیدت۔ میناک۔ سورس۔ تینگ پرستہ۔ نال گہ۔ روجن۔ اور
 پانڈرا چل۔ ۱۴ پشپ گہ۔ دُر جینت۔ ریوت۔ اربد۔ ریکھ موک۔ سکوننت۔
 کوٹ شیل۔ کرت اشمر۔ ۱۵ شری پریت۔ چکو۔ وغیرہ اور بھی سیکڑوں پہاڑ ہیں ان
 سب پہاڑوں اور بھی کچھ اور آریا بھاگ بہت یہ ورش ہے۔ ۱۶ اب اس ورش میں بڑے
 بڑے جو دریا ہیں ان کے نام سنو۔ گنگا۔ سر سوتی۔ سندھ۔ چندر بھاگا۔ ۱۷ اجننا
 شندر۔ وشت۔ ایراوتی۔ کھہ۔ گوتمی۔ دھوت پاپا۔ پاندرا۔ درکھوتی۔
 ۱۸ پیاسا۔ دیوکی۔ رکش۔ نیشچرا۔ گندکی۔ کوشکی وغیرہ سب ندیاں (دریا) ہنومان پہاڑ
 سے نکلی ہیں۔ ۱۹ اور بید اسمرت اور بندوتی اور برتر گھنی اور سندھ اور بے نواسا اور
 مندنی اور سند انیر اور مہی۔ ۲۰ اور پارا اور چرم ونی اور کویا اور پدیشا۔ اور بھرتوتی
 اور شیر اور ابرنی یہ سب ندیاں پارپتر نام پریت سے نکلی ہیں۔ ۲۱ اور سون اور مہمان
 اور نرما اور مہرہ اور ادرجا۔ اور مند اکنی اور دشارنا اور چتر کوٹا۔ ۲۲ اور چتر دت
 اور شکت مکھا اور کر موڈا اور پشپا چکا اور پشپل شرونی اور پشپا اور پنچلا۔ ۲۳ اور سمیٹ
 اور شکت متی اور شکی اور تر دوا اور کر م اور اسکندھ پاد پرستوتا اور بنگ باہنی۔
 ۲۴ اور شیر اور پشپتشی اور زبندھیا اور تابی اور کھہ ہاوتی اور پشپا اور بھرتنی
 اور پشپتشی والی اور کھہوتی۔ ۲۵ اور کر توپا اور مہا گوری اور دُرگا اور اتمہ شبرا
 سب ندیاں بندھیا چل پریت سے نکلی ہیں اور انھوں کا جل بہت پوٹری یعنی پاپ کا دور
 اور لاسی۔ ۲۶ اور گوڈاوری اور بھیم رتھا اور کرشنا اور بے نوا اور تینگ بھدرا اور
 پوجکا اور باہی اور کا دیری۔ ۲۷ یہ سب ندیوں سے اتم اور لہج پاد پریت سے
 نکلی ہیں۔ اور کرت مالا اور تاقہ پرنی اور پشپ جا اور اٹپلاوتی۔ ۲۸ یہ سب ندیاں
 پرت سے نکلی ہیں اور انھوں کا پانی نہایت سرد ہے اور پتر سوما اور پوجکھلیا اور ایشکا اور

تر دوا اور اجھیا - ۲۹ اور لانگو لنی اور بنش کر آ یہ سب ندیان مینڈر پر بت سے نکلی
 ہن اور رکھ گلیا اور کمار سی اور مند گا اور مند باہنی - ۳۰ اور کرپا اور پلاشتی یہ سب
 تریان شکت مان پر بت سے نکلی ہن اور یہ بھی بہت پوتر ہن اور سر سوتی اور گنگا اور گنگا
 میں جا کر ملی ہن ۳۱ اور یہ سب ندیان جگت کی ماتا ہن اور سب پا پونگی ناش کرنوالی
 ہن اسے اتر برا مین سواسے انکے اور چھوٹی چھوٹی ندیان اس ورش میں ہزاروں ہن -
 ۳۲ انہیں تو کتنی ندیان صرف موسم برسات میں بہتی ہن اور کتنی ندیان ہمیشہ بہتی ہن اور
 متسہ دیش اور گونا اور گلیا اور گتلی اور کاشی اور کوشلا - ۳۳ اور اٹھرب اور
 آرک لنگ اور ملک اور پرک یہ سب دیش مدھیہ دیش کہلاتے ہن - ۳۴ اور ستھج
 پر بت کے اتر طرف جان گوداوری ندی بہتی ہے وہ زمین سب دیشوں سے بہت پوتر ہے اور
 نہایت پر بہاری - ۳۵ اور شکر اچارج مہاتما کا جو گوہر دھن نام پر یعنی پور وہ ہے وہ
 بہت دلچسپ پرفضا ہے اور بالیک اور باٹ دھان اور ابھیر اور کال ٹوٹک -
 ۳۶ اور اپرانت اور شودر اور پلو اور چرم کھڈک اور گاندھار اور گول اور سندھ
 اور سوہیر اور بھدرک - ۳۷ اور شت درج اور کلنگ اور پار داور مار بھو کھک اور
 ماٹھر اور توتہ بھدر اور لیکر اور دیش مالک - ۳۸ ان دیشوں میں چھتری اور بیش
 اور شودر بستے ہن اور گنج اور درد اور بربر اور ہر کھ بر دھن - ۳۹ اور چین او
 تشار اور بھل اور باہجوتز اور اترے اور بھر دواج اور پشکل اور کشورک -
 ۴۰ اور لمپاک اور شول کار اور چلیک اور جاگر اور اوکھدا اور بھدر ان دیشوں
 میں کرات لوگ رہتے ہن - ۴۱ اور تانس اور سنس مارگ اور کاشمیر اور تنگ اور
 شولکا اور گنگا اور اوتا اور دربا - ۴۲ یہ سب دیش اتر طرف ہن اور یوب طرف جو
 دیش ہن انکے نام کہتا ہوں سنو - ادھارک - مدکارا - اتر گر - بہر گر - ۴۳ اور
 پرنگ اور رنگ اور ماند اور مان برنگ اور باجوڑ اور پینے اور بھارگو اور گنی ملک -
 ۴۴ اور براگ جوتش اور بھدر اور پینہ اور تاتر لپٹک اور تل اور ماگدھ اور گونسٹ
 یہ سب دیش پرب طرف ہن - ۴۵ اب جو دیش دکھن طرف ہن انکے نام کہتا ہوں
 سنو - پندر - کیرل - گولانگول - ۴۶ شیلو کم - موکھک گسم - نامہ باسک -
 حمار اشتر - ماہ کھک - کلنگ - ۴۷ آبھیر - بیشک - آدھکی - جان کہ سورک

بستے ہیں اور پلندہ اور بندھیہ مولے اور مید رتھ اور دنگ - ۴۸ اور چورنگ اور موک
 اور اشک اور جھوک بر دھن اور ٹیکھک اور گنٹل - اور اندھ اور اوڈ بھدا اور بن دارک
 ۴۹ یہ سب دلش دکھن طرف ہیں اب ایرانت دلشون کے نام کہتا ہوں سنو۔
 سور جاک - کال بل - دُر گانہ آن کوٹ - ۵۰ پلندہ - سہین - روپ
 سواند - کرمین - ایسے ملکوں میں کتا چھ لوگ بہت بستے ہیں ۵۱ ناسکیہ اور نرمد
 اتر طرف جو دلش ہیں وہ سنو - بھیرک - کچھ - سما ہے - سار سوت -
 ۵۲ کاشیر - سرائسٹر - اونٹ اور اربدے سب ایرانت دلش کہلاتے ہیں۔
 اب بندھیہ نواسیوں کے نام سنو - ۵۳ سرج اور کر دپ اور کیرل اور اٹکل
 اور اتھرن اور دشارنا اور جھجیہ اور کسکندھک - ۵۴ اور ٹوشل اور کوٹش
 اور ترسے پر اور بیدش اور ٹمٹر اور ٹمبل اور میو اور نیکھدھ - ۵۵ اور آج
 اور ٹشٹ کار اور میٹر موتر - اور اونٹ - یہ سب دلش بندھیہ پر بت کی پیٹھ پر ہیں۔
 ۵۶ اب ان دلشون کے نام کہتا ہوں جو پر بت کے آسے ہیں - ہمار - ہنسل
 گر - گرگن - کھس - ۵۷ گنٹ - پراڈنیہ - اوزنا - داربا - کرترک - ترگرت
 گانو - کرات - تانس - ۵۸ ست جگ اور تریتا وغیرہ چارو ملکوں کا اثر ہا
 بھارت کھنڈ ہی میں رہتا ہی اور یہ بھارت کھنڈ چار مقامات سے قائم ہے - ۵۹ جک
 دھن اور چیم اور پورب طرف بھی سمدری اور اتر طرف ہموان پر بت کی جھڑک کمان میں جلد
 ۶۰ اسے براہمن بھارت کھنڈ سب کرموں کا جگ ہی کیونکہ اس میں کرم کرنے سے برتھ اور اندر
 اور دیوتا اور یون - ۶۱ اور مرگ اور نیش اور اپسر اور سانپ اور نباتات وغیرہ
 ہیں اور پاپ کرنے سے آدمی جھم پاتا ہے - ۶۲ اسے براہمن اسی سبب سے یہ بھارت کھنڈ
 کرم جوم کہلاتا ہے اور اور کھنڈ کرم جوم (یعنی نتیجہ اعمال) نہیں ہیں اور اسے براہمن دیوتا کو
 یہ بتا رہی ہے - ۶۳ کہ ہم لوگ بھی کس طرح دیولوک سے نکلکر بھارت کھنڈ میں آدمی کا جھم
 پائے تو بہت اچھا تھا کیونکہ بھارت کھنڈ میں آدمی لوگ جو کرم کر سکتے ہیں وہ کرم دیوتا یا
 اشر وغیرہ نہیں کر سکتے ہیں - ۶۴ اور یہ جو اپنے ہی کیے ہوئے کرم روپی بیڑی میں بندھکر
 اکھ اور سکھ جھوک کرتا ہے بغیر کرم کیے ہوئے کسی کو دکھ یا سکھ نہیں ہوتا - فقط

मू. कौटुकिरुवाच ॥ भगवन्कथितं सम्यक् भ-
वता भारतं मम । सरितः पर्वतादेशा ये च
तत्र वसन्ति वै ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

श्री. कौटुकि ने कहा कि हे भगवन् भारतवर्ष को तो आपने मुझसे स-
म्यक् प्रकार से वर्णन किया और भारतवर्ष में जितनी नदियाँ और प-
र्वत और देश हैं उनको भी वर्णन किया ॥ १ ॥

मू. किन्तु कूर्मस्त्वया पूर्वभारते भगवान् द्रष्टुः । क-
थितस्तस्य संस्थानं श्रोतुमिच्छाम्यशेषतः ॥ २ ॥

श्री. पान्तु इस भारतवर्ष में जो कूर्म भगवान् को आपने कहा उनका
संस्थान अर्थात् वास सम्यक् प्रकार सुना चाहता हूँ कहिये ॥ २ ॥

मू. कथं स संस्थितो देवः कूर्मरूपी जनार्दनः । शुभा
शुभमनुष्णाण्यंजते च ततः कथम् ॥ यथा
मुखं यथा पादं तस्य तद्ब्रह्म शेषतः ॥ ३ ॥

श्री. कूर्मरूपी जो जनार्दन हैं वह किस तरह इसमें वास करते हैं
और उनसे मनुष्यों का शुभाशुभ किस तरह होता है और जैसा उ-
नका मुख और पाँव है वह सब कहिये ॥ ३ ॥

मू. मार्कण्डेय उवाच ॥ प्राङ्मुखो भगवान् देवः
कूर्मरूपी व्यवस्थितः । आक्रम्य भारतं व-
र्षं नव भेदं भिदं दिज ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥

श्री. मार्कण्डेय जी कहते हैं कि हे ब्राह्मण कूर्मरूपी भगवान् देव इसमें
पूर्व मुख विराजमान हैं और इस भारतवर्ष में नव भेद हैं ॥ ४ ॥

मू. नवधा संस्थितान्यस्य नक्षत्राणि समन्ततः । वि-
षयाश्च दिजश्चेष्टये सम्यक्तानि बोधये ॥ ५ ॥

श्री. और उन कूर्म भगवान् के चारों ओर सब नक्षत्र नव प्रकार
से स्थित हैं और हे दिजश्चेष्ट उनके चारों तरफ जो विषय सब

हैं उनकी भी सम्पूर्ण प्रकार से सुनीं ॥५॥

मू. वेदमन्त्राविभाण्डव्याःशाल्वनीयास्तथाशकाः।
उज्जिहानास्तथावत्तघोषसंख्यास्तथावशाः॥६॥

टी. वेदमन्त्र और विभाण्डव्य और शाल्वनीय और शक और हे वत्स
उज्जिहान और घोष संख्या और उसीतरह वत्स ॥६॥

मू. मध्वसारस्वतामत्स्याःसूरसेनाःसमायुराःधर्मा
रायान्योनिषिकागौरग्रीवागुडाश्मकाः॥७॥

टी. और उसके मध्य में सारस्वत और सूरसेन और मत्स्य और मायुर
और धर्मारण्य और ज्योतिषिक और गौरग्रीव और गुडाश्मक ॥ ७ ॥

मू. वैदेहकाःसपाञ्चालाःसंकेताःकंकमारुताः।का
लकौटिसपाषाण्डाःपारिपात्रनिवासिनः॥८॥

टी. और वैदेहक और पाञ्चाल और संकेत और कंकमारुत और
कालकौटि और पाषाण्ड ये सब देश पारिपात्र पर्वत के अभिवासी
जुर्घात जाधयी हैं ॥८॥

मू. कापिङ्गलाकुरुवाह्मस्तथैवोडुम्बराजनाः।गजा
ह्वयाश्चकूर्मस्यजलमध्यनिवासिनः॥९॥

टी. और कापिङ्गल और कुरु और ब्राह्म और उडुम्बरवासी और हस्तिना ये
सब जल निवासी कूर्म भगवान की पीठ के मध्य में हैं ॥९॥

मू. कृत्तिकारोहिणीसौम्याग्नेषांमध्यवासिनां।न
क्षत्रत्रिनयंविप्रशुभाशुभविपारकं॥१०॥

टी. और कृत्तिका और रोहिणी और युगशिरा ये तीनों नक्षत्र उन
मध्य निवासियों का शुभाशुभ बतलाते रहते हैं ॥१०॥

मू. वृषध्वजोऽन्नश्चैवपद्मारव्योमानवाचलः।
गूर्यकार्णोव्याघ्रमुखःखर्मकःकर्चदाशनः॥११॥

टी. और वृषध्वज अन्न और पद्मारव्य और मानवाचल और गूर्यकार्ण
और खर्मक और कर्चदाशन ॥११॥

और व्याघ्रमुख और खर्मक और कर्चदाशन ॥ ११ ॥

मू. तथान्वन्दे श्वराश्चैवरवशाश्चमगधास्तथा । शि-
वयोमैथिलाः शुभ्रातथावदनदन्तुराः ॥ १२ ॥

टी. इसी तरह चन्देश्वर और श्वर और मगध और शिवी और मै-
थिल और शुभ्र और वदनदन्तुर ॥ १२ ॥

मू. प्राग्ज्योतिषाः सलौहित्याः सामुद्राः पुरुषादकाः ।
पूर्णात्कटोभद्गौरस्तथोदयगिरिर्दिज ॥ १३ ॥

टी. और प्राग्ज्योतिष और लौहित्य और सामुद्र और पुरुषादक और
पूर्णात्कट और भद्गौर और हे दिज इसी तरह उदयगिरि ॥ १३ ॥

मू. काशाया मेखलामुष्टास्ताम्रलिपैकपादपाः । व-
र्द्धमानाः कौशलश्च मुखे कूर्मस्य संस्थिताः ॥ १४ ॥

टी. और काशाय और मेखला और मुष्ट और ताम्रलिपि और एक-
पादप और वर्द्धमान और कौशल ये सब देश कूर्म भगवान् के
मुख पर स्थित हैं ॥ १४ ॥

मू. रोदः पुनर्वसुः पुष्योनक्षत्रत्रितयं मुखे । पदे नुद-
क्षिणो देशाः क्रौष्टुके वदतः शृणु ॥ १५ ॥

टी. और आर्द्रा और पुनर्वसु और पुष्य ये तीनों नक्षत्र वहाँ रहकर
उन मुखवासियों का मुख और दुःख बतलाते हैं अब कूर्म भ-
गवान् के दक्षिण चरण पर जो देश हैं वह सुनो ॥ १५ ॥

मू. कलिङ्गवङ्गजठराः कौशलामूषिकास्तथा । चेद-
यश्चोर्दकर्णाश्चमत्स्याद्याविन्ध्यवासिनः ॥ १६ ॥

टी. कलिंग और वङ्ग और जठर और कौशल और मूषिक और चेदय और ऊ-
र्दकर्णा और मत्स्यादि सम्पूर्ण विन्ध्य निवासी देश हैं ॥ १६ ॥

मू. विदर्भानारिकेलाश्च धर्मदीपास्तथैलिकाः । व्या-
घ्रग्रीवामहाग्रीवाश्चैपुराः श्मश्रुधारिणः ॥ १७ ॥

टी. और विदर्भ और नारिकेल और चर्म दीप उसीतरह ऐलिक और चा-
प्र ग्रीव और महाग्रीव और चैपुर और श्मश्रुधारी ॥ १७ ॥

मू. कैष्किन्ध्या है मकूटाश्च निषधाः कटकस्थलाः । द-
शार्णाहारिकानग्नो निषादाः काकुलालकाः ॥ १८ ॥

टी. और किष्किन्ध्या और हेमकूट और निषध और कटकस्थल और
दशार्ण और हारिक और नग्न और निषाद और काकुलालक ॥ १८ ॥

मू. तथैव पर्णाश्वराः पादेवै पूर्वदक्षिणे । अश्लेष-
क्षंतथा पैत्र्यं फाल्गुण्यः प्रथमास्तथा ॥ १९ ॥

टी. उसीतरह पार्ण और श्वर ये सब देश कूर्म भगवान् के दक्षिण
पाँव के पूर्व भाग पर विराजमान हैं और श्लेष और मघा
और पूर्वाफाल्गुणी ॥ १९ ॥

मू. नक्षत्रवितयम्यादमाश्रितं पूर्वदक्षिणं । लङ्का
कालाजिनाश्चैव शैलिकानिकटास्तथा ॥ २० ॥

टी. ये तीनों नक्षत्र पूर्व और दक्षिण पाँव पर स्थित रहकर उ-
न देशवासियों को शुभाशुभ बतलाते रहते हैं और लङ्का
और कालाजिन और शैलिक और निकट ॥ २० ॥

मू. महेन्द्रमलयादौ च र्दुरचवसन्तिये । कर्कोटक
वने ये च भृगुकच्छाः सकोङ्कनाः ॥ २१ ॥

टी. और महेन्द्र और मलयादि और र्दुर पर्वत पर जो देश हैं और
कर्कोटक वन में जो देश हैं और भृगुकच्छा और कोङ्कन ॥ २१ ॥

मू. सर्वाश्चैव तथा भीरवेण्यस्तीरनिवासिनः । अ-
वन्तयो दासपुरास्तथैवाकणिनोजनाः ॥ २२ ॥

टी. ये सब देश और भीर और वेण्यस्तीर निवासी जो देश हैं
और अवन्ती और दासपुर उसीतरह अकणिन जन जिस देश में
रहते हैं ॥ २२ ॥

मू. महाराष्ट्रःकर्णारागोनर्दश्चिचकूरकाः । चो-
लाःकोलगिरश्चैवक्रौञ्चदीपजटाधराः॥२३॥

टी. और महाराष्ट्र और कर्णार और गोनर्द और चिचकूर और चो-
ल और कोलगिर और क्रौञ्च दीप और जटाधर ॥२३॥

मू. कावेरीऋष्यमूकस्थानासिक्याश्चैवयेजनाः । शङ्ख-
शूक्त्यादिबैडूर्यशैलप्रान्तचराश्चये ॥ २४ ॥

टी. और कावेरी और ऋष्यमूक के निकटवासी जो लोग हैं और जो
लोग नासिक्य हैं और जो लोग शंख और मुक्ता और वै-
डूर्य इत्यादि पर्वतों के समीप रहनेवाले हैं ॥२४॥

मू. तथावारिचराःकोलाःचर्मपट्टनिवासिनः । ग-
णावाह्याःपराःरुषादीपवासिनिवासिनः॥२५॥

टी. इसीतरङ्ग वारिचर और कोल और चर्मपट्ट और गणावाह्य और
रुषा दीप और वालि के रहनेवाले लोग ॥२५॥

मू. सूर्यादौकुमुदादौचतेवसन्तितयाजनाः । औरवा-
चनाःसपिशिकास्तथायेकर्मनायकाः॥२६॥

टी. और सूर्यादि और कुमुदादि पर जो लोग बसते हैं वह सब दे-
श और औरवावन और पिशिक और कर्मनायक ॥२६॥

मू. दक्षिणाःकौरुषायेचऋषिकास्तापसाश्रमाः ।
ऋषभाःसिंहलाश्चैवतयाकाञ्चीनिवासिनः॥२७॥

टी. और दक्षिणा और कौरुष और ऋषिक और तापसाश्रम
और ऋषभ और सिंहल और काञ्ची निवासी सब ॥ २७ ॥

मू. निलङ्गाकुञ्जरदरीकच्छवासाश्चयेजनाः । ना-
म्बपार्णिनयाकुक्षिरनिकूर्मस्यदक्षिणाः॥२८॥

टी. और निलङ्ग और कुञ्जरदरी और कच्छवासी जो लोग
हैं और नाम्बपार्णि ये सब देश कूर्म भगवान के दक्षिणा कुक्षि

में वसते हैं ॥ २८ ॥

मृ. फाल्गुणायश्चोत्तराहस्तःचित्राचक्षत्रयंद्विज। कू-
र्मस्यदक्षिणेकुक्षौवाह्यपादस्तथापरम् ॥ २९ ॥

टी. और उत्तराफाल्गुणी और हस्त और चित्रा ये तीनों नक्षत्र भी कूर्म
भगवान् के दक्षिण कुक्षि में स्थित हैं और उन सब लोगों के फलाफल
नाते रहते हैं अब उन कूर्म भगवान् के बाह्य पाँव पर जो स्थित हैं वह सुनौ ॥ २९ ॥

मृ. काम्बोजाःप्रह्ववाश्चैवतथैवबडवामुखाः। तथा
चसिन्धुसौवीरज्ञानर्त्तवनितामुखाः ॥ ३० ॥

टी. काम्बोज और प्रह्वव और बडवामुखसिन्धु और सौवीर और
ज्ञानर्त्त और वनितामुख ॥ ३० ॥

मृ. द्रावणाःमार्गिगाःशूद्राःकर्णप्राधेयवर्चराः। कि-
राताःपारदाःपाण्ड्यास्तथापारशवाःकलाः ३१

टी. और द्रावण और मार्गिगाशूद्रा और कर्णप्राधेय और वर्चरा
और किरात और पारद और पाण्ड्य और पारश और वाःकल ॥ ३१ ॥

मृ. धूर्तकाहैमगिरिकाःसिन्धुकालकवैरताः। सौ-
राष्ट्रादरदाश्चैवद्राविडाश्चमहार्णवाः ॥ ३२ ॥

टी. और धूर्तका और हैमगिरिका और सिन्धुकाल और सौरा-
ष्ट्र और दरद और द्राविड और महार्णव ॥ ३२ ॥

मृ. एतेजनपदाःपादेस्थितावैदाक्षिणोऽपेर। स्वा-
त्योविशारवामैवञ्चनक्षत्रत्रयमेवच ॥ ३३ ॥

टी. इतने देशवासी लोग कूर्म भगवान् के बाह्य के दक्षिण पाँव
पर स्थित हैं और स्वाती और विशारवा और अश्लेषा
राधा ये तीनों नक्षत्र भी वहाँ रहते हैं ॥ ३३ ॥

मृ. मणिमेघःक्षुरादिश्चखञ्जनोऽस्तगिरिस्तथा।
अपरान्तिकाहैहयाश्चशान्तिकाविप्रशस्तकाः ३४

टी. और मणिमेघ और क्षुद्रादि और खञ्जन और अस्तगिरि और
अपरांतिका और हैहय और शान्तिक और प्रशस्तक ॥ ३४ ॥

मू. कोकङ्कणः पञ्चनदका वमनाह्वरास्तथा ।

नारक्षुराहंगतकाः शर्कराः शाल्मवेश्मकाः ॥ ३५ ॥

टी. और कोकङ्कण और पञ्चनदक और वमन और स्वर और ना
रक्षुरा और अङ्गनक और शर्करा और शाल्मवेश्मक ॥ ३५ ॥

मू. गुरुस्वराः फाल्गुणाकावेणुमत्याञ्चयेजनाः । त

थाफाल्गुलुकाघोरागुरुहाश्चकलास्तथा ॥ ३६ ॥

टी. और गुरुस्वर और फाल्गुणाक और जो लोग वेणुमती के बासी हैं
और फाल्गुलुक और घोर और गुरुहा और चकल ॥ ३६ ॥

मू. एकेक्षणाव्याघ्रकेशादीर्घग्रीवाः सचूलिकाः । अ

श्वकेशास्तथापुच्छेजनाः कूर्मस्यसंस्थिताः ॥ ३७ ॥

टी. और एकैक्षणा और व्याघ्रकेश और दीर्घग्रीव और चू
लिक और अश्वकेश ये सब देश कूर्म भगवान् के पुच्छ भाग
में स्थित हैं ॥ ३७ ॥

मू. ऐन्दूमूलनथाषाढानक्षत्रत्रयमेव च । माण्ड

व्याश्र्वाण्डखाराश्च अश्वकालनतास्तथा ॥ ३८ ॥

टी. और ज्येष्ठा और मूल और पूर्वाषाढ ये तीनों नक्षत्र भी उस
पुच्छ भाग में रहकर उन सब का फलाफल बताते रहते हैं और
माण्डव्य और चण्डखार और अश्वकाल और नत ॥ ३८ ॥

मू. कुन्यतालडहाश्चैव स्त्रीवाह्यावालिका स्तथा

नृसिंहावेणुमत्यांचवालावस्थास्तथापरे ॥ ३९ ॥

टी. और कुन्यतालडहा और स्त्रीवाह्य और वालिका और नृ
सिंह और वेणुमती और वालावस्था ॥ ३९ ॥

मू. धर्मवद्वास्तथालूकाउरुकूर्चस्थिताजनाः ।

वामपादे जनाः पार्श्वे स्थिताः कूर्मस्य भागुरे ॥ ४० ॥

टी. और धर्मवद्धा और उल्लूक और उरुकुर्चवासी लोग कूर्म भगवान के बायें पाँव में स्थित हैं ॥ ४० ॥

मू. आपादाश्रवाणैव धनिष्ठा यत्र संस्थिता । कैला-
शो हिमवांश्चैव धनुष्मान्वसुमांस्तथा ॥ ४१ ॥

टी. और उत्तरपाद और श्रवण और धनिष्ठा ये तीनों नक्षत्र भी वहाँ रहते हैं और कैलाश और हिमवान और धनुषमान और वसुमान् ॥ ४१ ॥

मू. क्रौञ्चः कुरुवकाश्चैव क्षुद्रवीणाश्च ये जनाः । रसाल-
यासकैकेया भोगप्रस्थाः सयामुनाः ॥ ४२ ॥

टी. और क्रौञ्च और कुरुवक और क्षुद्रवीणा जो लोग हैं और रसालय और कैकेय और भोगप्रस्थ और यामुन ॥ ४२ ॥

मू. अन्नद्वीपास्त्रिगर्ताश्च अग्नीज्याः सार्द्धं जनाः ।
तथैवाश्वमुखः प्राप्ताश्चि विडः केशधारिणः ॥ ४३ ॥

टी. और अन्नद्वीप और त्रिगर्त और अग्निज्य और अर्द्धन और अश्वमुख और चिचिड और केशधारी ॥ ४३ ॥

मू. दासेरसावारधानाः शवधानास्तथैव च । पुष्क-
लाधमकैरातास्तथा तक्षशिलाश्रया ॥ ४४ ॥

टी. और दासेरक और वारधान और शवधान और पुष्कल और अधम और कैरात और तक्ष और शिलाश्रय ॥ ४४ ॥

मू. अम्बालामालवामद्रावेणुका सबदन्तिकाः । पि-
ङ्गलामानकलहाहूणाः कोहलकास्तथा ॥ ४५ ॥

टी. और अम्बाला और मालवा और मद्र और वेणुक और सबदन्तिक और पिङ्गल और मानकलह और हूण और कोहलक ॥ ४५ ॥

मू. माण्डव्याभूतियुवकाः शातकाहिमतारकाः । य-
मो मत्स्यावगाधाराः खरसागराश्च यः ॥ ४६ ॥

टी. और माण्डव्य और भूतिबुचक और शातक और हेमता-
क और यशोमन्य और गान्धार और खरसागरराश ॥ ४६ ॥

मू. यौधेयादासमेयाश्च राजन्याः श्यामकास्तथा ।
क्षेमधूर्नाश्च कूर्मस्य वामकुक्षिमुपाश्रिताः ॥ ४७ ॥

टी. और यौधेय और दासमेय और राजन्या और श्यामक और क्षेमधूर्न
ये सब देश कूर्म भगवान के वाम कुक्षि में स्थित हैं ॥ ४७ ॥

मू. वारुणञ्च त्रिनक्षत्रं तत्र प्रौष्टपदादयं । येन किञ्च
रराज्यञ्च पशुपालं स कीचकं ॥ ४८ ॥ ४८ ॥

टी. और सतभिख और पूर्वाभाद और ऊनराभाद ये तीनों नक्षत्र वहाँ र-
हते हैं और नैमि और नवराज्य और पशुपाल और कीचक ॥ ४८ ॥

मू. काश्मीरकं तथा राष्ट्रञ्च अभिसारजनस्तथा । दव
दास्त्वङ्गनाश्चैव कुलटा वनराष्ट्रकाः ॥ ४९ ॥

टी. और काश्मीरक और राष्ट्र और अभिसारजन और दव और
कुलटागणा और वनराष्ट्रक ॥ ४९ ॥

मू. सौरिष्ठाब्रह्मपुरकास्तथैव वनवाहकाः । कि-
रातकौशिकान् नन्दाजनापह्लवलीलनाः ॥ ५० ॥

टी. और सौरिष्ठ और ब्रह्मपुरक और वनवाहक और किरात और
कौशिक और नन्द और पह्लवलीलन ॥ ५० ॥

मू. दार्वादामरकाश्चैव कुरदाश्चानन्दारकाः । एक
पादाः खशाधोषाः स्वर्गभौमानवद्यकाः ॥ ५१ ॥

टी. और दार्वाद और मरक और कुरद और अनन्दारक और
एक पाद और खश और धोष और स्वर्गभौम और अनवद्यक ॥ ५१ ॥

मू. तथाः सयवनाहिङ्गाचीरप्रावराणाश्च ये । त्रिने-
त्राः पौरवाश्चैव गन्धर्वाश्च दिजोत्तमः ॥ ५२ ॥

टी. और सयवन और हिङ्ग और चीरप्रावरण और त्रिनेत्र और

पौरव ज्यौ गन्धर्व इत्यादि हे द्विजोत्तम ॥ ५२ ॥

मू. पूर्वोत्तरान्तुकूर्मस्यपादमेतेसमाश्रिताः रेवत्या
श्वश्विदैवत्यंयाम्यं चक्षुर्मितिचयं ॥ ५३ ॥

टी. ये सबलोग कूर्म भगवान् के पूर्व ज्यौर उत्तर के चरण पर स्थित हैं
ज्यौर रेवती ज्यौर शश्विनी ज्यौर भारणी ये तीनों नक्ष भी वहाँ रहकर
उन प्रभों के शुभाशुभ बतलाते रहते हैं ॥ ५३ ॥

मू. तत्रपादेसमाख्यातंमाकायमुनिसत्तम। देशे
क्षेत्रेषुचैतानिनक्षत्राण्यपिवैद्विज ॥ ५४ ॥

टी. हे मुनि सत्तम इतने ही देशों में इतने ही नक्षत्र ज्यौर इतने ही
लोग ज्यौर इतने ही पर्वत हैं जो मैं ने तुमसे कहा ॥ ५४ ॥

मू. एतत्पीडाग्रमीदेशःपीड्यन्तेयेक्रमोदिताः।
यानिचान्युदयविप्रग्रहेःसम्यगवस्थितैः ॥ ५५ ॥

टी. ज्यौर इन्हीं देशों में इन्हीं नक्षत्रों के बिगड़ने से मनुष्यों
को दुःख प्राप्त होता है ज्यौर वही नक्षत्र जब अच्छे ग्रह के सा-
थ होते हैं तब लोगों को सुख प्राप्त होता है ॥ ५५ ॥

मू. यस्यक्षस्यपतियैवैग्रहस्तद्भावितोभयं। तदे-
शस्यमुनिश्रेष्ठतदुत्कर्षेशुभागमः ॥ ५६ ॥

टी. ज्यौर जिस नक्षत्र का जो ग्रह सामी है उसके बिगड़ने से उस
देश में हे मुनिश्रेष्ठ लोगों को दुःख या भय प्राप्त होता है ज्यौर उसीके
उत्कर्ष यानी उत्तमस्थान पर होने से लोगों का कल्याण होता है ॥ ५६ ॥

मू. प्रत्येकदेशसामान्यंनक्षत्रग्रहसम्भवं। भयंलो-
कस्यभवतिशोभनंवादिजोत्तम ॥ ५७ ॥

टी. हे द्विजोत्तम सब देशों में प्रत्येक प्रत्येक नक्षत्र ज्यौर ग्रह
करके भय या कल्याण होता है ॥ ५७ ॥

मू. स्वर्गैरशोभनैर्जन्योः सामान्यमभिधीतिदं।

ग्रहेर्भवतिपीडोत्थमत्पायासमशोभनं ॥ ५८ ॥

श्री. और सब देशों में जपने जपने नक्षत्रों के बिगड़ने से सब लोग
अत्यन्त भय और दुःख उत्पन्न होता है ॥ ५८ ॥

मू. तवैशोभनःपाकोदुःस्थितैश्चतयाग्रहैः। जल्यो
पकारायनृणांदेशज्ञैश्चात्मनोबुधैः ॥ ५९ ॥

श्री. और हे ब्रह्मन् ग्रहों के बिगड़ने पर जो भय होता है उस
भय के दूर होने के वास्ते ज्ञेय ज्योतिषी लोग मनुष्यों को जप
और दान करने का उपदेश करते हैं ॥ ५९ ॥

मू. इत्येगोष्टेऽथभृत्येषुसुहृत्सुतनयेषुवा। भार्या
याञ्चग्रहेदुःस्थेभयंपुण्यवतानृणां ॥ ६० ॥

श्री. ग्रह के बिगड़ने से इत्य और गोष्ट और भृत्य और हित और पुत्र
और स्त्री इत्यादिकरके पीड़ा पुण्यवानलोगों को भी होती है ॥ ६० ॥

मू. आत्मन्यथात्पुण्यानांसर्वत्रैवातिपापिनां।
नैकत्रापिह्यपापानांभयमजिकदाचन ॥ ६१ ॥

श्री. और जिसको थोड़ा पुण्य हो या जो कोई अत्यन्त पापी
हो या जो कोई निष्पाप हो पर ग्रह के स्वस्त होने से कभी उस
को दुःख नहीं होसक्ता ॥ ६१ ॥

मू. दिग्देशजनसामान्यंनृपसामान्यमात्मजं। न
क्षत्रग्रहसामान्यंनरोभुङ्क्ते शुभाशुभं ॥ ६२ ॥

श्री. दिग्देश और देश और लोग और राजा और पुत्र और सुख
और दुःख इत्यादि नक्षत्र और ग्रह के शानुकूल और प्रतिकूल
के अनुसार मनुष्यों को शुभाशुभ फल प्राप्त होता है ॥ ६२ ॥

मू. परस्पराभिरक्षाचग्रहदौस्थेनजायते। एतेभ्य
एवविप्रेन्द्रशुभहानिस्तथाशुभैः ॥ ६३ ॥

श्री. और ग्रहों के स्वस्त रहने से मनुष्यों का शुभ होता है और

ग्रह ही के दुःस्थ रहने से अशुभ होता है ॥ ६३ ॥

मू. यदेतत्कूर्मसंस्थानं नक्षत्रेषु मयोदितं । एतच्च
देशसामान्यं शुभं शुभमेव च ॥ ६४ ॥

टी. हे मुनि नक्षत्र सहित कूर्म का संस्थान जो मैं कह आया हूँ
ह सब देशों में शुभाशुभ का देने वाला है ॥ ६४ ॥

मू. तस्मादिज्ञायदेशर्क्षं ग्रहपीडान् तथात्मनः । कु-
र्वीत शान्तिं मेधावी लोकवादांश्च सत्तम ॥ ६५ ॥

टी. हे ब्रह्मन् इसवास्ते देश और नक्षत्र और ग्रह की पीड़ा
अपनी ज्योतिषियों से पूछकर बुद्धिमानों को चाहिये कि उस
की शान्ति और पूजा करें ॥ ६५ ॥

मू. आकाशादेवतानाञ्च दैत्यादीनाञ्च दौर्हदाः ।
पृथ्व्यापतन्नि तेलोके लोकवादा इति श्रुताः ॥ ६६ ॥

टी. और आकाश से देवतों और दैत्यों इत्यादि का जो शत्रु है
वह भी स्वर्ग से जब गिरता है यानी जिसको लूक कहते हैं उसी
को लोकवाद भी कहते हैं ॥ ६६ ॥

मू. तानथैव बुधः कुर्यात् लोकवादान्न हापयेत् । ते-
षां तत्करणां चूणां युक्तो दुष्टागमक्षयः ॥ ६७ ॥

टी. इसवास्ते ग्रह और लोकवाद दोनों की शान्ति करना चाहिये क्यों-
कि मनुष्यों को उन्हीं सब के गिरने से यहाँ शुभाशुभ होता है ॥ ६७ ॥

मू. शुभोदयं प्रहानिञ्च पापानां हि जसत्तम । प्रजा-
हानि प्रकुर्युस्ते दैत्यादीनाञ्च कुर्वते ॥ ६८ ॥

टी. और हे द्विजसत्तम वही ग्रहादि शालुकल रहने पर शुभ का
उदय और पाप की हानि करते हैं और वही ग्रहादिक जब बिग-
ड़ने हैं तब बुद्धि और दैत्यादि की हानि करते हैं ॥ ६८ ॥

मू. तस्माच्छान्तिपरः प्राज्ञो लोकवादरतस्तथा ।

लोकवादांश्च शान्तिं ग्रहपीडापुकारयेत् ॥ ६६ ॥

टी. इस वास्ते बुद्धिमान् लोगों को चाहिये कि लोकवाद और ग्रह की शान्ति पीडा के समय अवश्य करावें ॥ ६६ ॥

मू. अद्रोहानुपवासंश्च शस्तं चैत्यादिवन्दनं । जपं
होमं तथा दानं स्नानं क्रोधादिवर्जनं ॥ ७० ॥

टी. और आप अद्रोह रहें यानी किसी से द्रोह न करें और उपवास अर्थात् व्रतादिक करें और शान्ति तोत्र पढ़ें और जप और होम और स्नान और दान करें और क्रोधादिक से दूर रहें ॥ ७० ॥

मू. अद्रोहसर्वभूतेषु मैत्रीं कुर्याच्च पाण्डितः । वर्ज्यं
येदसती वाचमतिवादांस्तथैव च ॥ ७१ ॥

टी. और किसी प्राणी से द्रोह न करके पाण्डित होकर सबसे प्रीति करें और झूठ न बोलें और अत्यन्त विवाद न करें ॥ ७१ ॥

मू. ग्रहपूजाञ्च कुर्वीत सर्वपीडासु मानवः । एवं
शाम्यन्त्यशेषाणि घोरानि द्विजसत्तम ॥ ७२ ॥

टी. और ग्रह की पूजा मनुष्यों को सब दुःखों में कामना चाहिये क्योंकि इस तरह पूजा और शान्ति करने से बड़ी पीडा भी सब मिट जाती है ॥ ७२ ॥

मू. प्रयतानां मनुष्याणां ग्रहक्षौत्थान्यशेषतः । एष
कूर्मो मया ख्यातो भारते भगवान् विभुः ॥ ७३ ॥

टी. और जो मनुष्य पवित्र है उसको भी ग्रहों के सब से शुभाशुभ प्राप्त होता है हे द्विजसत्तम यह कूर्म भगवान् का उत्तान्त जो भारतखण्ड में विद्यमान रहते हैं मैंने तुमसे कहा ॥ ७३ ॥

मू. नारायणो ह्यचिन्तात्मा यत्र सर्वं प्रतिष्ठितं । तत्र
देवाः स्थिताः सर्वे प्रतिनक्षत्रसंश्रयाः ॥ ७४ ॥

टी. यह कूर्म भगवान् अचिन्तात्मा हैं और इन्हीं में सम्पूर्ण जगत् प्रतिष्ठित है और इन्हीं में सम्पूर्ण देव नक्षत्रों के स्वामी स्थित

रहते हैं ॥ ७४ ॥

मू. तथामध्येतुतवहृपृथ्वीलोमश्चनैदिज । मेषा
दयस्त्रयोमध्येमुखेद्वौमिथुनारिकौ ॥ ७५ ॥

टी. हे द्विजोत्तम इसी तरह अग्नि और पृथ्वी और चन्द्रमा जो कूर्म
के मध्य में हैं और वृष और मेष ये दोनों राशि भी कूर्म के मध्य
में हैं और कर्क और मिथुन दोनों राशि मुख में रहते हैं ॥ ७५ ॥

मू. मारदक्षिणेतथापादेकर्कसिंहोव्यवस्थितौ । सिं
हकन्यातुलाश्चैवकुक्षौराशिचयंस्थितं ॥ ७६ ॥

टी. और कर्क और सिंह दक्षिण पाद में रहते हैं और सिंह
और कन्या और तुला ये तीनों राशि कुक्षि में रहते हैं

मू. तुलायवृश्चिकश्चोभौपादौदक्षिणपश्चिमे । पृ
ष्ठेचवृश्चिकेनैवसहधन्वीव्यवस्थितः ॥ ७७ ॥

टी. और तुला और वृश्चिक दक्षिण पश्चिम पाँव में रहते हैं और
मीन में वृश्चिक धनु रहते हैं ॥ ७७ ॥

मू. वायवेचास्यवैपादेधनुग्राहादिकंचयं । कुम्भ
मीनौतथैवास्त्यउत्तरांकुक्षिमाश्रितौ ॥ ७८ ॥

टी. और धन मकर कुम्भ तीन राशि वायव्य कोण के पाँव में रहते हैं
और कुम्भ मीन उत्तर कुक्षि में रहते हैं ॥ ७८ ॥

मू. मीनमेषौदिजश्रेष्ठपादेपूर्वोत्तरेस्थितौ । कूर्म
देशास्तवाक्षाणिदेशेष्वेतेषुवैदिज ॥ ७९ ॥

टी. और हे द्विज मीन मेष पूर्वोत्तर पाँव में स्थित रहते हैं और हे
द्विज श्रेष्ठ इस कूर्म में देश और देश में रिक्त ॥ ७९ ॥

मू. राशयश्चतयर्क्षेषुग्रहराशिष्ववस्थिताः । तस्मा
द्ग्रहर्क्षपीडासुदेशपीडांविनिर्दिशेत् ॥ ८० ॥

टी. और रिक्त में राशि और ग्रह में राशि स्थित हैं इस वास्ते

ऋक्ष की पीड़ा में देश पीड़ा समनना चाहिये ॥ ८० ॥

मू. तनूनावाप्रकुर्वीत दानहोमादिकं विधिं । सप्त
षवैषावः पादो ब्रह्मा मध्ये ग्रहस्य यः ॥ ८१ ॥

टी. ऐसी दशा में स्नान करके दान और होम इत्यादि विधिवत्
करना चाहिये इसी को वैषाव पाद कहते हैं जिसको ब्रह्मा ने
मध्य में ग्रहण किया है ॥ ८१ ॥

इति श्री मार्कण्डेय पुराणे कू-
र्मनिवेशो नाम ॥ ५८ ॥

اَوْھیاتے اٹھاؤں

۱۔ پھر کرشمہ کی شکل میں کہا کہ ہر جگہ بھارت ورش کا حال تو آپ نے مفصل بیان کیا اور
دریا اور پہاڑ زمین میں وہ بھی بیان کیا۔ ۲۔ مگر اس بھارت کھنڈ میں جو گورم بھگوان میں ان
کے کل مقامات کا حال مفصل سنا چاہتا ہوں بیان کیجیے۔ ۳۔ اور گورم رومی (کھنڈ اوست)
بھگوان کس طرح اس میں رہتے ہیں اور ان کے آدمیوں کا بھلا یا برا کس طرح ہوتا ہے اور کس طرح
انکا منہ اور پیر یہ سب مفصل بیان فرمائیے۔ ۴۔ تب مارکندے نے جواب دیا کہ گورم رومی
جو بھگوان ہیں اس میں پورب طرف انکا منہ ہے اور اس بھارت ورش میں تو بھید ہیں
۵۔ اور ان گورم بھگوان کے چاروں طرف تو طرح کے چھتر رہتے ہیں اور بے اتم دُج ان کے
چاروں طرف جو کچھ ہیں وہ سنو۔ ۶۔ کہ بید غنہ اور بھانڈیہ اور شالونی اور شک اور آجہان
اور گھوٹھ شکھ اور کش۔ ۷۔ اور ان کے درمیان میں سارگوت اور سورستین اور ستیہ اور
ستھرا اور دھرماریہ اور جو تشک اور گورگرو اور گد اشک۔ ۸۔ اور بید بیک اور پانچل
اور شکیت اور کنگ مارت اور کال کوٹ اور پاشند یہ سب دیش پاپتر نام پر بت کے ہیں
ہیں۔ ۹۔ اور کاپنگل اور کر اور برامہ اور اودکمر یا بھی اور ستھنا یہ سب دیش گورم بھگوان

جو جل کے باسی ہیں انکی بیج پیٹھ پر ہیں - ۱۰ اور کرکھیا اور رُوسنی اور مرگشرا یہ تینوں
 پختہ اس پیٹھ پر رہنے والے لوگوں کا بھلا اور بُرا بتلاتے رہتے ہیں - ۱۱ اور برکھہ ووج
 اور اجن اور پدیا کھیر اور مانوا چل اور سوپ کرک اور بیا گھ مکھ اور گھنگ اور کرکھیا شن -
 ۱۲ اور چندریشور اور کھش اور مکھ اور شوی اور میتھل اور شیشہ اور بدن وختہ -
 ۱۳ اور پراگ جو قش اور کوہت اور سائدر اور پرکھا دک اور یوژوت کٹ اور بھدر گور
 اور بے رُج اسطرح اُدے گر - ۱۴ اور کاشکے اور میکھلا اور مٹھ اور تاملر لپت
 اور ایک پاؤپ اور برودھان اور کوٹیل یہ سب دیش کو رُم بھگوان کے مکھ پر بستے ہیں -
 ۱۵ اور آڈورا اور پٹنر نیں اور پکھ یہ تینوں پختہ وہان رکھ ان مکھ ماسیون کی بھلی اور
 بری باتوں کو بتلاتے رہتے ہیں اب کو رُم بھگوان کے واسے پانون پر جو جو ملک بستے ہیں ان
 نام سنو - ۱۶ کلنگ اور پنگ اور چٹھ اور کوٹش اور موٹشک اور چیدے اور اوردھ کرنا
 اور متشہ وغیرہ سب دیش بندھ یہ نواسی ہیں - ۱۷ اور بدربھ اور نارپیل اور دھرم پ
 اور ایک اور بیا گھ گرگور اور مہا گرگور اور تری پر اور اشٹمشر دھاری - ۱۸ اور
 کشکندھا اور چٹھ کوٹ اور نکھدھ اور شک اسھل اور دشارن اور مارک اور نگن اور
 کھاوا اور کاٹالک - ۱۹ اور پرن اور شورے سب دیش کو رُم بھگوان کے واسے
 پانون کے اگلے حصہ پر بستے ہیں - اور اشلیکھا اور نکھا اور گور با بھالگنی - ۲۰ یہ تینوں
 پختہ یورپ اور دکن کے پانون پر رکھ ان ملکوں کے رہنے والوں کا بھلا اور بُرا بتلاتے رہتے
 ہیں اور لنگا اور کالاجن اور شیک اور نکٹ - ۲۱ اور مہیندر اور لیا در اور جو دیش کہ
 در پر بت پر ہیں اور جو دیش کہ کوٹک بن میں ہیں اور بھگ کچھا اور گوٹن - ۲۲ اور
 آخیر اور پٹیا تیر نواسی جو دیش ہیں اور اومتی اور داس پور اور آکنن لوگ جس دیش میں رہتے
 ہیں - ۲۳ اور مہاراشٹر اور کرناٹ اور گونر دھا اور چٹھ کوٹ اور چول اور گول گر اور
 کوخ دیپ اور جبادھر - ۲۴ اور کاویری اور رکھہ محوک کے پاس رہنے والے لوگ
 مینا اور جو لوگ ناسک میں اور جو لوگ سنگھ اور ٹکٹا اور جید قورج پہاڑ وغیرہ کے قریب رہنے والے ہیں
 ۲۵ اور بارچر اور گول اور چرم پٹ اور گن باجج اور کرشن دیپ اور بال کے رہنے والے
 لوگ - ۲۶ اور سورجادر اور گد اور برجو لوگ رہتے ہیں وہ سب دیش اور اوکھان
 اور پشاک اور کرُم نایک - ۲۷ اور دچھنا اور کوٹش اور شک اور تاپس اشٹم اور کچھ

اور سنگھل اور کاجی کے رہنے والے - ۲۸ اور تلنگ اور کجھوری اور کچھ کے رہنے والے
 اور تانتر پرانی یہ سب دیش کورم بھگوان کی داسی کوکھ پر بستے - ۲۹ اور اتر ایشا لگنی
 اور مہت اور چترایہ تینون چھتر بھی کورم بھگوان کی داسی کوکھ پر بستے ہیں جو ان ملکوں
 کے رہنے والوں کا بھلا اور برا بتلایا کرتے ہیں اب اسکے بعد ان ملکوں کے نام سنو جو کہ
 کورم بھگوان کے پیر آباد ہیں - ۳۰ کامبوج اور پرکوا اور پروا گھ سندھ اور سوئیر
 اور آکرت اور بنٹا گھ - ۳۱ اور دراؤن اور مارگکا شورا اور کرن پراسے اور برز
 اور کرات اور پارو اور پانڈیہ اور پارس اور باہکل - ۳۲ اور دھرتکا اور سیاگر اور
 سندھ کال اور سوراشٹر اور وڑو اور دراوڑ اور مہارنو - ۳۳ اتنے ملک اور لوگ
 کورم بھگوان کے داسے پانون پر بستے ہیں اور سواتی اور شاکا اور انزا دھایہ تینون
 چھتر بھی وہاں رہتے ہیں - ۳۴ اور من سیکھ اور چھترادر اور کھنجن اور است گبر
 اور اپراکھا اور ہی ہی اور شاتیک اور پرشنگ - ۳۵ اور کانکن اور پنچ نک اور
 بمن اور سور اور تارکچھ اور انگ تک اور شرکر اور شامویشک - ۳۶ اور گرسور
 اور پھال گنگ اور بین متی کے رہنے والے لوگ اور پھال گنگ اور گھور اور گمر کا اور چکل -
 ۳۷ اور ایکے چھن اور بایکھ گوش اور دیرکھ گریو اور جوبک اور اشو کیش یے سب ملک
 کورم بھگوان کے بچھے حصہ پر بستے ہیں - ۳۸ اور جیشٹھا اور مول اور ٹور باکھا ڈھ
 یہ تینون چھتر بھی اسی مقام پر قائم ہیں اور وہاں کے باشندوں کا بھلا اور برا بتلاتے
 رہتے ہیں اور مانڈیہ اور چند کھار اور اشو کال اور نت - ۳۹ اور کنتال ڈھ اور تری
 باج اور بالکا اور نرسنگھ اور بین متی اور بالا وسٹھا - ۴۰ اور دھرم بدھا اور لوک اور
 اور کرج باسی لوگ کورم بھگوان کے بائیں پانون پر بستے ہیں - ۴۱ اور اتر کھا ڈھ
 اور مہرون اور دھنٹھا یہ تینون چھتر بھی وہاں رہ کر ان سبکی اچھی اور بری باتوں کو
 بتلایا کرتے ہیں اور کیلاش اور مہوان اور دھنٹش مان اور بس مان - ۴۲ اور
 کدوچ اور کروک اور چھتر بین جولوگ ہیں اور رسالے اور لیکر اور بھوک پرستہ اور
 جائن - ۴۳ اور انتر دیپ اور تر گرت اور گنج اور ارون اور اشو کھ اور برشت اور
 اور کیش دھاری - ۴۴ اور داسیرک اور بات دھان اور شو دھان اور پشکل اور ادھم
 اور کیرات اور نکش اور شلا شر - ۴۵ اور انبالا اور مالوا اور مڈر اور بینک اور

سب ویشک اور شیگل اور مان کلہ اور مہون اور کوہلک - ۴۷ اور مانڈیشہ اور بھوت
 جوک اور شکاک اور مہیم تارک اور شیو مٹیہ اور گاندھار اور کھس ساگر راش - ۴۸ اور
 جودھ اور داس مے اور راجنیا اور شامک اور چیم دھورت یہ سب دیش کو روم بھلا
 کی بائیں کوکھ پر بستے ہیں - ۴۹ اور ست بھکھا اور پور با بھادرید اور اتر بھادرید یہ
 تینون چھتر وٹان رستے ہیں اور نیم اور نو راج اور پش پال اور کچک - ۵۰ اور کاشمیر
 اور راشٹر اور ابھ ساجن اور دود اور کلنگا اور بن راشٹرک - ۵۱ اور سوراشٹر
 اور برہم پڑک - اور بن باسک اور کرات اور کو شک اور مند اور پیلو کون - ۵۲ اور واپ
 اور مرک اور گڑ اور ان دارک اور ایک پاد اور کھش اور کھش اور سورگ بھوم اور ان
 بڑیک - ۵۳ اور جوں اور ہنگ اور چیر پابر اور تریشتر اور پور و اور گندھرب وغرہ
 ہے براہمن - ۵۴ کو روم بھکوان کے پورب اور اتر پانون پرہن اور ریوتی اور استوتی
 اور بھرنی یہ تینون چھتر بھی وٹان رہ کر ان لوگون کا بھلا اور برا بھلا رستے ہیں -
 ۵۵ ہے براہمن اتنے ملکون میں اتنے چھتر اور اتنے لوگ رستے ہیں اور اتنے ہی بیمار
 ہیں جو میں نے متے کیے - ۵۶ اور انھیں ملکون میں انھیں چھتر وٹان کے بگڑنے سے لوگو کو
 دکھ ملتا ہے اور وہی چھتر جب آچھے گرہ کے ساتھ ہوتے ہیں تو آدمیوں کو سکھ ہوتا ہے -
 ۵۷ جس چھتر کا جو گرہ مالک ہی اسکے بگڑنے سے اس ملک میں لوگوں کو ہے من سریشٹھ
 ڈر ہوتا ہے اور اسی کے اٹھ استھان پر ہونے سے لوگوں کو سکھ ہوتا ہے - ۵۸ اور سب ملکون
 میں علمدہ علمدہ چھتر وٹان کے بگڑنے سے دکھ اور سکھ ہے براہمن ہوتا ہے - ۵۹ سب
 ملکون میں اپنے اپنے چھتر وٹان کے بگڑنے سے سکونایت ڈر اور دکھ پیدا ہوتا ہے -
 ۶۰ ہے براہمن گرہوں کے بگڑنے سے جو ڈر ہوتا ہے اس ڈر کے مٹانے کے واسطے اچھے جوتشی
 لوگ آدمیوں کو چپ اور دان کرنے کا اپدیش کرتے ہیں - ۶۱ دولت اور مکان اور سیوک
 اور فائدہ اور ریشتر اور استری وغیرہ سے رنج پٹیا تا لوگوں کو بھی گرہوں کے بگڑنے سے ہوتا ہے
 ۶۲ اگرچہ آدمی کم بین والا ہو یا بڑا پاپی ہو یا نہ پاپ ہو مگر گرہ کے موافق رہنے سے اسکو
 کبھی دکھ نہیں ہوتا ہے - ۶۳ دشا اور دیش اور لوگ اور راجا اور ریشتر سے سکھ اور دکھ
 چھتر اور گرہ کے موافق اور ناموافق کے مطابق آدمیوں کو ہوتا ہے - ۶۴ اور گرہ ہی کے
 موافق رہنے سے آدمیوں کا بھلا ہوتا ہے اور گرہ ہی کے ناموافق رہنے سے برا ہوتا ہے -

۶۴۔ ہے من پختہ اور کورم جگوان کا استھان جو میں بیان کر آیا ہوں وہ سب ملگون میں
 شمشہ اور آشیہ کا دینے والا ہے۔ ۶۵۔ ہے برہمن اسواسطے دلش اور پختہ اور گرہ کے
 سب سے جو دکھ پنچر اسکی شانت کیواسطے جو تیشوں سے جو چکر عقلمند ونگو پوجا وغیرہ
 کرنا چاہیے۔ ۶۶۔ اور دیوتوں اور راجپسوں کے جو دشمن ہیں وہ آسمان سے زمین پر
 گرتے ہیں تو لوکیاد کہلاتے ہیں یعنی جسکو لوگ کہتے ہیں۔ ۶۷۔ اسواسطے گرہ اور لوکیاد
 دونوں کا دھیمہ و تدبیر کرنا چاہیے کیونکہ انھیں کے گرنے سے آدمیوں کا بھلا یا بُرا ہوتا ہے۔
 ۶۸۔ اے براہمن انھیں گرہ وغیرہ کے موافق رہنے پر بھلائی کا میرا ہونا اور پاپ کا نابود
 ہو جانا ہوتا ہے اور یہی گرہ وغیرہ جب بگڑتے ہیں تو دولت وغیرہ کا نقصان کرتے ہیں۔ ۶۹۔
 اسواسطے عقلمند ونگو چاہیے کہ لوکیاد اور گرہ کی شانت کو دکھ ہونے کے وقت ضرور کرے
 اور کسی سے جھگڑا نہ کرے اور برت آپاس کرے اور شانت کا استوت تر پڑھ کر
 جب اور ہوم اور اسنان اور دان کرے اور عرصہ کرے۔ ۷۰۔ اور کسی سے جھگڑا
 کر کے پندت ہو کر سب سے محبت رکھیں اور جھوٹ نہ بولیں اور بہت بواؤ نہ کریں۔
 ۷۱۔ اے براہمن گرہ کی پوجا سب آدمیوں کو سب دکھوں میں کرنا چاہیے اے براہمن
 پوجا اور شانت کرنے سے دکھ بالکل دور ہو جاتا ہے۔ ۷۲۔ اور جو آدمی پوتر یعنی پاک
 رہتے ہیں انکو بھی گریہوں اور پختہ دن سے بھلائی اور بُرائی حاصل ہوتی ہے اے براہمن
 کورم جگوان جو بھارت کھنڈ میں راجاں رہتے ہیں انکا حال میں نے تم سے کہا۔
 ۷۳۔ یہ کورم نارائن جو بے فکر اور بے عیب ہیں انھیں پر تمام دنیا قائم ہے اور انھیں میں
 سب دیو اور پختہ دن کے سوامی رہتے ہیں۔ ۷۴۔ اسطرح اے براہمن اگن اور پرتیوی
 اور چندرمان بھی کورم جگوان کے بیچ میں ہیں اور سیکھ اور برکہ دور اس بھی رہتے ہیں
 اور مٹھن اور کرک دونوں راس گھم رہتے ہیں۔ ۷۵۔ اور کرک اور سنگھ داہنے
 پانوں پر رہتے ہیں اور سنگھ اور گنیا یہ تینوں راس کو گھم رہتے ہیں۔ ۷۶۔ اور تگلا
 اور برشتیک دکھن پچھم پانوں پر رہتے ہیں اور پیٹھ پر برشتیک اور دھن رہتے ہیں۔
 ۷۷۔ اور باہمیہ کو نامینی گوشہ کے پانوں پر دھن مگر کبھ تین راس رہتے ہیں اور کبھ اور
 مین اتر پانچ پر رہتے ہیں۔ ۷۸۔ اور ہے براہمن سیکھ اور مین پورب کے پانوں پر رہتے
 ہیں اے براہمن اس کورم میں دلش اور رکش۔ ۷۹۔ اور رکش میں راس اور گرہ

रस में रास रस में सज्जन से क्रोध के बगुन में दिलिश मिरा समझना चाहिये -
 १॥ इसी हालत में सनान करके दान और भोग और धर्म से क्रोध चाहिये इसीको ब्रह्मपाद
 कहते हैं जबको ब्रह्मपादने भोजन में ग्रहण किया है - फल

मू. मार्कण्डेय उवाच ॥ एवन्तु भारतं वर्षं य-
 थावत्कथितं मुने । कृतं त्रेता द्वापरञ्च त-
 थातिष्ठ चतुष्टयं ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

टी. मार्कण्डेयजी कहते हैं कि हे मुनि इस तरह जो भारत वर्ष है
 उसको हम यथार्थ वर्णन कर चुके और सतयुग और त्रेता और
 द्वापर और कलियुग को भी कह चुके ॥ १ ॥

मू. अत्रैवैतद्युगानानुचातुर्वार्योऽत्रैवैदिज । च-
 त्वारित्रीणि देवैव तथैकञ्च शरच्छतं ॥ २ ॥

टी. और हे ब्राह्मण इन युगों में मनुष्यों की आयुर्वल चार
 सौ और तीन सौ और दो सौ और एक सौ वर्ष चारों वर्णों की है अ-
 र्थात् सतयुग में चार सौ वर्ष और त्रेता में तीन सौ वर्ष और द्वापर में
 दो सौ वर्ष और कलियुग में सौ वर्ष है और ये चारों युग चार वर्ण हैं ॥ २ ॥

मू. जीवन्त्यवनरात्रहान् दत्त त्रेतादिके क्रमात् । दे-
 वकूटस्य पूर्वस्य शैलेन्द्रस्य महात्मनः ॥ ३ ॥

टी. इसी क्रम से सतयुगादि चारों युगों में मनुष्यलोग जीने थे और हे ब्रह्म-
 न् देवकूट नाम शैलराज जो सब पर्वतों में उत्तम है ॥ ३ ॥

मू. पूर्वण्यतस्थितं वर्षं भद्राश्वं तन्निबोध मे । श्वे-
 तपर्णाश्वनीलश्च शैवालश्चाचलोत्तमः ॥ ४ ॥

टी. उसके पूर्व दिशा में जो भद्राश्व वर्ष है उसको कहता हूँ मुनो कि श्वे-
 तपर्ण और नील और शैवाल नाम पहाड़ों में उत्तम ॥ ४ ॥

मू. कौरजः पर्णाशालाग्रः पञ्चैते तु कुलाचलाः ।

तेषां प्रसूतिरन्ये येव हवः शुद्ध पर्वता ॥ ५ ॥

टी. और और और और पराशालाग ये पर्वत पर्वत उसमें कुलान्त है
अर्थात् किनारे के पर्वत हैं और इन्हीं पर्वतों से और और भी कि
तने छोटे छोटे पर्वत उत्पन्न हुये हैं ॥ ५ ॥

मू. तैर्विशिष्टा जनपदानां नारूपाः सहस्रशः । ततः
कुमुदसंकाशाः शुद्धसानुसमङ्गलाः ॥ ६ ॥

टी. इन पर्वतों सहित हर एक तरह के हजारों देश उस वर्ष में हैं
और शिवाय इसके उस वर्ष में कुमुद की तरह श्वेत और शुद्ध और
सुङ्गल युक्त जिनके किनारे हैं ॥ ६ ॥

मू. इत्येवमादयोऽन्येऽपि शतशोऽयं सहस्रशः । शी-
तसंखावती भद्रा चक्रावर्त्तादिकास्तथा ॥ ७ ॥

टी. ऐसे ऐसे और और भी हजारों पर्वत हैं और शीता और
शंखावती और भद्रा और चक्रावर्त्ता इत्यादि ॥ ७ ॥

मू. नद्योऽथ वहो विस्तीर्णाः शीततोयौघवाहिकाः ।
अत्र वर्षेनराः शङ्खः शुद्धहेमसमप्रभाः ॥ ८ ॥

टी. बहुत विस्तार और शीतल जल की समूह नदियाँ बहती
हैं और उस वर्ष में सब मनुष्य शंख और शुद्ध सुवर्ण के
समान कान्तिमान हैं ॥ ८ ॥

मू. दिव्यसङ्गमिनः पुण्यादशवर्षशतायुषः । अथ-
मोक्षमौनतेषुस्तः सर्वे ते समदर्शनाः ॥ ९ ॥

टी. और उन सबों की गति देवतुल्य है और पुण्यात्मा हैं और एकसौ
दश वर्ष की उन लोगों की आयुर्वल है और उनमें न कोई उन्नत है
न अधम है सब एक तरह के हैं ॥ ९ ॥

मू. तितिक्षादिभिरष्टाभिः प्रकृत्या ते गुणैर्युताः । त-
त्राप्यश्वशिरो देवश्चतुर्बाहुर्जनादेनः ॥ १० ॥

टी. और स्वभाव ही करके तितिक्षा आदि आर्यों गुणों से तेनोग सदा युक्त रहते हैं और उस वर्ष में अश्वशिरा चतुर्वर्षाहु जनार्दन भगवान् रहते हैं ॥ ११॥

मू. शिरोहृदयपेद्राङ्घ्रि-हस्तैश्चाक्षित्रयान्वितः। तस्याप्यथैव विषया विज्ञेया जगतः प्रभोः ॥ ११॥

टी. और शिर और हृदय और मेढू अर्थात् सिङ्ग और अङ्घ्रि यानी चेखा और हाथ और तीन नेत्र उनके हैं और उन्हीं जगतपतिको वह सब विषय है यानी उन्हीं के प्रभावसे उस वर्ष में वह सब विषय है ॥ १२॥

मू. केतुमालमतो वर्षनिबोधमपश्चिमं । विशालः कम्बलः कृष्णो जयन्तो हरिपर्वतः ॥ १२॥

टी. अब केतुमाल नाम वर्ष जो पश्चिम तरफ है उसका वृत्तान्त कहता हूँ सुनो कि विशाल और कम्बल और कृष्ण और जयन्त और हरिपर्वत ॥ १२॥

मू. विशोको वर्द्धमानश्च सप्तैते कुलपर्वताः । अन्ये सहस्रशः शैला ये पुलोकगणाः स्थिताः ॥ १३॥

टी. और विशोक और वर्द्धमान ये सात पर्वत उस वर्ष में कुलाचल हैं और और भी हजारों छोटे छोटे पर्वत हैं कि जिसके ऊपर कितने ही लोग बसते हैं ॥ १३॥

मू. मौलयस्ते महाकायाः शाकपोतकरम्भकाः । अङ्गुलप्रमुखाश्चापिवसन्ति शतशो जनाः ॥ १४॥

टी. और उन सबों के बड़े बड़े डील और बड़े बड़े शिर हैं और शाक और पोतक और रम्भक और अङ्गुल इत्यादि मुख्य मुख्य मनुष्य असंख्य वहाँ बसते हैं ॥ १४॥

मू. येषि वन्ति महानद्यो वक्षुश्यामांसकम्बलाः । अमोघां कामिनीं श्यामां तथैवान्याः सहस्रशः ॥ १५॥

टी. ये लोग जिन नद्या नदियों का जल पते हैं उन नदियों के नाम सु-
नौ- चक्षु और श्यामा और कम्बला और अमोघा और कमिनी और
सुमेधा इसी तरह और और भी हजारों नदियाँ रहती हैं ॥१५॥

मू. अत्राप्यायुःसमंपूर्वैरत्राप्रिमगवानहरिः। वरा-
हस्योपादास्यहृत्पृष्ठाश्वतस्तथा ॥ १६ ॥

टी. वहाँ भी नदियों की आयुर्वल एकसौ दश वर्ष की है और उ-
स देश में वाराह रूप भगवान रहते हैं उनके चरण और हृदय
और मुख और पीठ और पंखों पर ॥ १६॥

मू. त्रिनक्षत्रयुतेदेशेनक्षत्राणिशुभानिच। इत्येत-
त्केतुमालन्तेकथितंमुनिसत्तम ॥ १७ ॥

टी. तीन तीन नक्षत्रों के साथ सब देश स्थित हैं और वहाँ भी नक्षत्रों
से शुभाशुभ जाना जाता है हे मुनि उत्तम इस तरह का जो केतुमा-
ल नाम वर्ष है वह भी मैं ने आप से वर्णन किया ॥ १७॥

मू. अतःपरंकुरुनवक्ष्येनिबोधेहममोत्तरान्।
तत्रवृक्षामधुफलानित्यपुष्पफलोपगः ॥ १८ ॥

टी. अब उत्तर तरफ जो कुरु नाम वर्ष है उसका हाल भी कहता हूँ
मुनौ कि वहाँ के वृक्ष सब फूल और मीठे फलों से सदा फले रहते हैं ॥ १८॥

मू. वस्त्राणिचप्रसूयन्तेफलेष्वाभरणानिच। सर्व-
कामप्रदास्तेहिसर्वकामफलप्रदाः ॥ १९ ॥

टी. और वृक्ष ही में सब तरह के वस्त्र और भूषण फलते हैं और वहाँ के
लोगों की सब कामना भी वृक्ष ही से पूरा होती है ॥ १९॥

मू. भूमिर्मणिमयीवायुःसुगन्धीसर्वदासुखः। जा-
यन्तेमानवास्तत्रदेवलोकपरिच्युताः ॥ २० ॥

टी. और वहाँ की पृथ्वी सम्पूर्ण मणिमयी है और वहाँ पर शीतल और
मन्द सुगन्ध सहित वायु सदा सुखदायक बहती है और जो लोग देव

लोक से गिरते हैं वही लोग उस वर्ष में पैदा होते हैं ॥२०॥

मू. मिथुनानिप्रसूयन्तेसमकालस्थितानिवै।अ-
न्योन्यमनुरक्तानिचक्रवाकोपमानिच॥२१॥

टी. स्त्री और पुरुष उस वर्ष में साथही पैदा होते हैं और चक्रवा-
चकई कीतरह आपस में सदा प्रीति रखते हैं और कभी उनमें
वियोग यानी जुदाई नहीं होती है ॥२१॥

मू. चतुर्दशसहस्राणितेषांसार्धानिवैस्थितिः।च-
न्द्रकान्तश्चशैलेन्द्रःसूर्यकान्तस्तथापरः॥२२॥

टी. और साढ़े चौदह हजार वर्ष वहाँ के लोग जीते हैं और च-
न्द्र कान्त और सूर्य कान्त नाम पर्वत ॥२२॥

मू. तस्मिन्कुलाचलौवर्षतन्मध्येचमहानदी।भ-
द्रसोमाप्रयात्युर्ध्वंपुण्यामलजलौघिनी॥२३॥

टी. उस वर्ष में दो कुलाचल हैं और उस वर्ष में महानदी भद्रसोमा
नाम पवित्र जल बहनेवाली अन्यन्त पुण्या है ॥२३॥

मू. सहस्रशस्तथैवान्यानद्योवर्षेऽपिचोत्तरे।तथा
न्याःक्षीरवाहिन्यो घृतवाहिन्य एवच॥२४॥

टी. और और भी हजारों नदियाँ वहाँ बहती हैं और उस वर्ष में क्षी-
रवाहिनी और घृतवाहिनी नदियाँ भी बहती हैं ॥२४॥

मू. दध्नीरुदास्तथातत्रतथान्येचानुपर्वताः।अमृ-
तास्वादकल्पानिफलानिविविधानिच॥२५॥

टी. और इसीतरह कितने कुण्ड दही के भी वहाँ हैं और कितने स-
मीप पहाड़ भी हैं और तरह तरह के सब फल भी सदा बनेरहे
हैं कि जिनका स्वाद अमृत के समान है ॥२५॥

मू. बनेपुतेषुवर्षेषुशतशोऽयसहस्रशः।तत्रापि
भगवान्विष्णुःशक्रशिरामन्त्यरूपवान्॥२६॥

टी. ऐसे दस उस वर्ष के बनों में हजारों ही हैं और वहाँ मत्स्य रूप भगवान् हैं कि जिनका शिर पूर्व तरफ है ॥ २६ ॥

मू. विभक्तो नवधा विप्र नक्षत्राणां त्रयं त्रयं । दिश-
स्तथापि नवधा विभक्ता मुनि सत्तम ॥ २७ ॥

टी. और हे मुनि सत्तम उस वर्ष में भी तीन नक्षत्रों के नव विभाग हैं और वहाँ की दिशाओं के भी नव विभाग हैं ॥ २७ ॥

मू. चन्द्र द्वीपाः समुद्र च भद्र द्वीपस्तथापरः । तत्रा-
पि पुण्यो विख्यातः समुद्रान्तर्महामुने ॥ २८ ॥

टी. और इन चारों द्वीपों में भद्र द्वीप भी बहुत पवित्र है जिसके चारों तरफ समुद्र है ॥ २८ ॥

मू. इत्येतत्कथितं ब्रह्मन् कुरु वर्षं मयोत्तरं । शृणु
किं मुरुषादीनि वर्षाणि गदतो मम ॥ २९ ॥

टी. हे ब्रह्मन् इस तरह का जो उत्तर तरफ कुरु वर्ष है उसको जो मैंने कहा अब किं मुरुषादि वर्षों का वृत्तान्त वर्णन करता हूँ सुनो ॥ २९ ॥

इति श्री मार्कण्डेय पुराणे
उत्तर कुरु कथनं ना
मैकोनषष्टि त्त-
मोऽध्यायः
५८

اَوَہایے اَنسٹھ

۱۔ مارکنڈے جی کہتے ہیں کہ سب براہمن بھارت ورش کا حال میں نے سنے کما اور ست جگہ اور تریما اور دو اپر اور کلجک کا بھی حال بیان کیا۔ ۲۔ اسے براہمن ان جگہ میں جنکا حال میں نے کہا انھیں آدنیوں کی زندگی چار طرح کی ہے یعنی ست جگہ میں چار سو برس اور تریما میں تین سو برس اور دو اپر میں دو سو برس اور کلجک میں اکیسویں ہزار برس اور یہ چار جگہ چار برہمن ہیں۔ ۳۔ اور دیو کوٹ نام پہاڑ جو سب پہاڑوں میں شیل راج ہے۔ ۴۔ اس کے پورے طرف جو بھدراشو کہتے ہیں اسکا حال بیان کرتا ہوں سنو کہ سینٹ پران اور شیل اور شیوا ال سب پہاڑوں سے اترے اور کو سنج اور پران شالاکر اس ورش میں کھنڈ میں یہ پانچوں کلا چل چکے یعنی کنار سے کے پہاڑ ہیں اور ان پہاڑوں سے اور ابھی بہت سے چھوٹے چھوٹے پہاڑ پیدا ہیں۔ ۵۔ اور ان پہاڑوں کے ساتھ ہر ایک طرح کے ہزاروں ملک اس ورش میں ہیں اور سوائے ان کے مکہ (شوکلایلی) کی طرح سفید اور صاف کہ جگہ دیکھنے سے طبیعت خوش ہو جاتی ہے۔ ۶۔ اس طرح سے اور ابھی ہزاروں پہاڑ ہیں اور شیتا اور سنگھاروی اور بھدرا اور چکر اور تا وغیرہ۔ ۷۔ بہت بڑے بڑے دریا سرد پانی کے بہتے ہیں اور اس ورش میں آدنیوں کا بدن شل سنگھ اور خالص سونیکہ پکٹا ہوا ہے۔ ۸۔ اور ان لوگوں کا چال اور چل دیوتوں کی طرح ہے اور بڑے پختا تہا ہیں اور اکیسویں ہزار برس تک جیتے ہیں اور انھوں میں نہ کوئی اونچا ہے نہ نیچا ہے سب برابر ہیں۔ ۹۔ اور عادت ہے ان لوگوں کے مزاج میں پیچھا وغیرہ اٹھو گن (اوصاف نیک) ہمیشہ سے رہتے ہیں اور وہ ان اشو ہرا بھگوان جتنز بھی موت پر اچانک رہتے ہیں۔ ۱۰۔ اور سر اور پر و ہڈی اور چھاتی اور لنگ اور پانوں اور ہاتھ اور تین انھیں ان کے ہیں اور وہ ان کے وہی ملک ہیں۔ ۱۱۔ اب کہتے ہیں نام ورش جو کچھ طرف اسکا حال کہتا ہوں سنو کہ بشال اور کبل اور کرشن اور چیت اور ہر بریت۔ ۱۲۔ اور بشوک اور برودھ مان اس ورش میں یہی ساتوں پہاڑ کلا چل یعنی کنار سے کے ہیں اور اور چھوٹے چھوٹے ہزاروں پہاڑ ہیں کہ جن پر آدمی بستے ہیں۔ ۱۳۔ ان لوگوں کے اسے بڑے قد اور بڑے بڑے سر ہیں اور شاک اور پوتک اور رنجک اور انگل وغیرہ

جیسے چنے لوگ وہاں بے شمار رہتے ہیں۔ ۱۵۔ یہ لوگ جن بڑے دریاؤں کا پانی پیستے ہیں
 ان دریاؤں کے نام سنو۔ چکیش اور شیایا اور کنبلا اور اموگھا اور کامنی اور سمیدھا۔
 ایسے ہزاروں دریا ہیں۔ ۱۶۔ یہاں بھی آدمیوں کی عمر اکیسویں برس کی ہے اور وہاں
 بارہ روپ بھگوان رہتے ہیں انکے چرن اور چھاتی اور منہ اور پیٹھ اور پاؤں پر۔ ۱۷۔
 تین چھتر وں کے ساتھ سب ملک آباد ہیں وہاں بھی چھتر وں کی تاثیر سے بھلائی ہوئی
 ہیں اس طرح کاکیت مال مرش بھی اے براہمن میں نے بتے کیا۔ ۱۸۔ اب اتر طرف جو گرو رش
 ہی اسکا حال کتا ہو گا وہاں کے سب درخت پھول اور میٹھے میٹھے پھولوں سے ہمیشہ پھل
 ہوتے رہتے ہیں۔ ۱۹۔ اور درخت ہی میں سب طرح کے پکڑے اور زیور پھلتے ہیں اور وہاں کے
 سب آدمیوں کی سب مہرائیں انھیں رضوں سے حاصل ہوتی ہیں۔ ۲۰۔ اور وہاں کی زمین میں
 مٹی یعنی جواہرات کی ہے اور وہاں ہوا ٹھنڈی اور ملائم اور خوشبودار ہر وقت آرام دینے والی
 بہتی رہتی ہے اور جو لوگ بہشت سے نیچے گرتے ہیں وہی لوگ اس سرزمین میں پیدا ہوتے ہیں
 ۲۱۔ اور وہاں عورت و مرد ایک ہی ساتھ پیدا ہوتے اور مرتے ہیں اور جیواں کی طرح باہم
 محبت رکھتے ہیں اور کوئی کسی سے جھگڑا فساد نہیں کرتا ہے۔ ۲۲۔ اور ان لوگوں کی عمر
 ساڑھے چودہ ہزار برس کی ہوتی ہے اور چند رکانت اور سورج کانت نام پہاڑ۔ ۲۳۔ اس
 درش میں کھل چل پرست ہیں اور اس درش میں مہاندی بھدر سومان نام پاک و صاف پانی
 بننے والی بڑی پوتر ہے۔ ۲۴۔ اور اور بھی ہزاروں دریا وہاں بہتے ہیں اور اس درش
 میں دودھ بننے والے اور گھی بننے والے دریا بھی بہتے ہیں۔ ۲۵۔ اور اس طرح کتنے کنت
 وہاں کے بھی وہاں ہیں اور کتنے ہی پربہار پہاڑ بھی ہیں اور طرح طرح کے سب پھل بھی ہمیشہ
 وہاں بنے رہتے ہیں کہ جنگا مزہ اُمرت (آبجیات) کی طرح ہے۔ ۲۶۔ ایسے درخت اس درش
 کے جنگلوں میں ہزاروں ہیں اور وہاں منشیہ روپ بھگوان رہتے ہیں کہ جنگا مہر طرف
 ہے۔ ۲۷۔ اے براہمن اس درش میں بھی تین تین چھتر وں کے ٹوٹے ہیں اور وہاں کی بہشت
 یعنی اطراف کو بھی نوچھتے ہیں۔ ۲۸۔ اور ان چاروں دیوؤں میں بھدر دیو بھی بہت پوتر
 ہے جسکے چاروں طرف سمدر ہے۔ ۲۹۔ اے براہمن اس طرح کا گرو رش جو اتر طرف ہے
 اسکو میں بیان کر چکا اب کچھ دیگرہ ورشوں کا حال کتا ہوں سنو۔ فقط

मू. मार्कण्डेय उवाच ॥

यत्तु किम्पुरुषं वर्षं तत्प्रवक्ष्याम्यहं द्विज । य-
त्रायुर्दशसाहस्रं पुरुषाणां वपुष्मतां ॥ १ ॥

टी. मार्कण्डेयजी कहते हैं कि हे ब्रह्मन् किम्पुरुष नाम जो वर्ष है उसका वृत्तान्त मैं कहता हूँ सुनौ कि उस वर्ष में मनुष्यों की आयुर्वल दश हजार वर्ष की होती है ॥ १ ॥

मू. अनामया ह्यशोकाश्च नराय ततश्चास्त्रियः । स-
क्षः षाडशतत्रोक्तः सुमहानन्दनो यमः ॥ २ ॥

टी. और वहाँ के स्त्री और पुरुष सब अनामय हैं अर्थात् किसी को कोई बीमारी नहीं होती है और उस वर्ष में सक्ष नाम एक बड़ा भारी वन है जो कि नन्दनवन के सदृश है ॥ २ ॥

मू. तस्य ते वै फलरसं पिवन्तः पुरुषाः सदा । स्थि-
रयौवननिष्पन्नास्त्रियश्चोत्पलगन्धिकाः ॥ ३ ॥

टी. उसी वन के फलों का रस पान करके वे लोग सदा युवा व-
ने रहते हैं और उसी रस के पान करने से वहाँ की स्त्रियों के
शरीर से कमल की ऐसी गन्ध निकलती है ॥ ३ ॥

मू. अतः परं किम्पुरुषाद्द्विर्वर्षं प्रचक्ष्यते । महार-
ज तसंकाशं जायन्ते तत्र मानवाः ॥ ४ ॥

टी. अब इसके उपरान्त हरि नाम वर्ष का वृत्तान्त सुनौ कि जहाँ
के मनुष्यों की कान्ति चाँदी के समान है ॥ ४ ॥

मू. देवलोकच्युताः सर्वे देवरूपश्च सर्वशः । हरि-
वर्षे नराः सर्वे पिवन्ती सुरसं शुभम् ॥ ५ ॥

टी. वहाँ के लोग देवलोक से च्युत होकर अर्थात् गिरकर दे-
वों के समान रूपमान होकर उस वर्ष में आते हैं और वे लोग
सुन्दर ऊख का रस सदा पिया करते हैं ॥ ५ ॥

मू. नजराबाधनेतत्रनजीर्यन्तेचकहिचित् । ता-
यन्तमेवतेकालंजीवन्त्ययनिरामया ॥ ६ ॥

टी. कि जिसके पीने से वहाँ किसी की जरा जघात बुढ़ापा नहीं
आता जब तक जीते हैं सदा युवा और आरोग्य रहते हैं ॥ ६ ॥

मू. मेरुवर्षमयाप्रोक्तंमध्यमंयदिलावृतं । तत्र
त्रसूर्यस्तपतिनतेजीर्यन्तिमानवाः ॥ ७ ॥

टी. अब मेरुवर्ष जो इलावृत खाड़ है उसका वृत्तान्त सुनौ कि व-
हाँ सूर्य की गरमी बहुत नहीं होती है और वहाँ के मनुष्य को
ई वृद्ध नहीं होते हैं ॥ ७ ॥

मू. लभन्तेनात्मलामश्वरश्मयश्चन्द्रसूर्ययोः । न
क्षत्राणांग्रहाणाञ्चमेरोस्तत्रपराद्युतिः ॥ ८ ॥

टी. और वहाँ सूर्य और चन्द्रमा की किरणें मनुष्यों की इ-
च्छानुसार होती हैं और नक्षत्र और ग्रहों की द्युति यानी प्र-
काश मेरु पर्वत के बाहर होता है ॥ ८ ॥

मू. पद्मप्रभाःपद्मगन्धजम्बूफलरसाशिनः । पद्म
पत्रायताक्षास्तुजायन्तेतत्रमानवाः ॥ ९ ॥

टी. और वहाँ के मनुष्यों की कान्ति कमल के समान है और क-
मल ही की ऐसी सुगन्धि उन लोगों के अङ्ग से आती है और वे लो-
ग जम्बू फलों का रस पीते हैं और सबलोग कमल नेत्र हैं ॥ ९ ॥

मू. वर्षाणान्तुसहस्राणितत्राप्यायुस्त्रयोदश । स-
रावाकारसंस्तारोमेरुमध्येद्वलावृते ॥ १० ॥

टी. और उनलोगों की आयुर्वल तेरह हजार वर्ष की होती है
और उस इलावृत के बीच में मेरु नाम जो पर्वत है उसका
आकार ढकने के समान है ॥ १० ॥

मू. मेरुस्तत्रमहाशैलस्तदस्यातमिलावृतं ।

रम्यकं वर्षमस्माच्चकथयिष्ये निबोधतं ॥ ११ ॥

टी. उस वर्ष में महा पर्वत मेरु ही है जो इलाहृत भी कहलाता है जब रम्यक वर्ष का हाल कहता हूँ सुनो ॥ ११ ॥

मू. वृक्षस्तत्रापि चोत्तुङ्गो न्यग्रोधो हरितच्छदः । न
स्यापिते फलसंपिवन्तो वर्तयन्ति वै ॥ १२ ॥

टी. कि उस वर्ष में बहुत ही ऊँचा एक वृक्ष बरगद का है कि जिसके फले सरा हरित बने रहते हैं वहाँ के लोग उसी वृक्ष के फल का रस पीते हैं और उसी से जीते हैं ॥ १२ ॥

मू. वर्षायुतायुषस्तत्र नरास्तत्फलभोगिनः । र
तिप्रधानविमलाजरादौर्गन्ध्यवर्जिताः ॥ १३ ॥

टी. और दश हजार वर्ष उन सबों की आयुर्वल है और वे लोग रति में बड़े प्रवीण हैं और जरा और दुर्गन्धि से वर्जित हैं ॥ १३ ॥

मू. तस्मादथोत्तरं वर्षनाम्नाख्यातं हिरण्मयं । हि
रावती नदी यत्र प्रभूतकमलोज्ज्वला ॥ १४ ॥

टी. इसके उत्तर तरफ हिरण्मय नाम वर्ष है वहाँ हिरण्वती नाम नदी बहती है जो स्वच्छ अर्थात् निर्मल जल और अच्छे कमलों से शोभित रहती है ॥ १४ ॥

मू. महाबलासतेजस्का जायन्ते तत्र मानवाः । म
हाकायामहासत्वाधनिनः प्रियदर्शनाः ॥ १५ ॥

टी. और वहाँ के सब मनुष्य महाबलवान् और तेजस्वी होते हैं और बड़े डीलवाले और धनवान् और प्रियदर्शन हैं अर्थात् सब कोई आपस में प्रीति रखते हैं ॥ १५ ॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे मु
वनकोशस्तमाप्तः ॥ ६० ॥

ادھیائے ساٹھ

۱۔ مارکنڈے جی کہتے ہیں کہ ہے اٹھ دُج کم پُیش نام جو ورش یعنی کھنڈ ہی اسکا حال بیان کرتا ہوں سنو کہ جس کھنڈ میں آدمیوں کی عمر ورش ہزار برس کی ہوتی ہے۔ ۲ اور وہاں کے مرد اور عورتوں کو کبھی کوئی بیماری نہیں ہوتی اور وہاں پلنگش کھنڈ نام ایک بڑا بن ہو جو مثال نندن بن کے ہے۔ ۳ اسی بن کا پھل وہاں کے باشندے لوگ کھا کر ہمیشہ جوان بنے رہتے ہیں اور اسی پھل کے کھانے سے وہاں کی عورتوں کے بدن سے مکمل کے پھول کی ایسی خوشبو آتی ہے۔ ۴ اب پُر نام ورش کا حال سنو کہ وہاں کے آدمیوں کا بدن مثل طائی کے چمکتا ہے۔ ۵ جو لوگ پُتن کم ہو جانے پر دیو لوگ سے گرتے ہیں وہی لوگ دیوتا کے مانند خوبصورت ہو کر اس سرزمین میں (یعنی پُر ورش میں) پیدا ہوتے ہیں اور ہمیشہ اُوکھ کارس پیا کرتے ہیں۔ ۶ کہ جس سبب سے اُن لوگوں کو کبھی بڑھا یا نہیں آتا اور جب تک زندہ رہتے ہیں تب تک کوئی بیماری نہیں ہوتی۔ ۷ اب الا بڑت کھنڈ کا حال سنو کہ وہاں سورج کی گرمی بہت نہیں ہوتی ہو اور وہاں کے رہنے والے کبھی بڑھے نہیں ہوتے۔ ۸ اور سورج اور چاند کی روشنی اُن لوگوں کی خواہش کے موافق ہوتی ہے اور پچھترہ دن اور گریہوں کا پرکاش میٹر پریت سے علوہ ہوتا ہے۔ ۹ اور وہاں کے آدمیوں کی آنکھیں اور بدن مثل مکمل کے پھول کے ہیں اور مکمل کے پھول ہی کی ایسی خوشبو اُن لوگوں کے بدن سے آتی ہے اور وہ لوگ جاتن کے پھل کارس پیا کرتے ہیں۔ ۱۰ اور اُن لوگوں کی عمر تیرہ ہزار برس کی ہوتی ہے اور اس الا بڑت کے بیچ میں میر پیا مثل ڈھکنے کے ہے۔ ۱۱ وہاں مہا پریت میٹر رہی ہے اور وہی الا بڑت بھی کہلاتا ہے یہ تو کہہ چکے اب ریشک ورش کا حال کہتے ہیں سنو ۱۲ کہ اس ورش میں ایک بہت اُونچا درخت برگہ کا ہے کہ جسکا پتہ ہمیشہ سبز ہی ہوتا ہے اور اسی درخت کا پھل وہاں کے لوگ کھاتے ہیں اور اسی سے جیتے ہیں۔ ۱۳ اور ورش ہزار برس تک زندہ رہتے ہیں اور وہ لوگ عورتوں کے ساتھ جماع کر نہیں بڑے ہوشیار ہیں اور اُن لوگوں کو کبھی بڑھا یا نہیں آتا اور نہ اُنکے بدن سے کسی طرح کی بدبو آتی ہے۔ ۱۴ اب اس کے بعد مران نام ورش جو اُتر طرف اسکا حال کہتے ہیں سنو کہ وہاں ہر نئی نئی

दरिया جاری ہے جو عمدہ عمدہ مکمل کے پتھروں اور صاف پانی سے خوشنما معلوم ہوتا ہے۔
 ۱۵ اور وہاں کے آدمی بڑے بلوان اور تیج دان اور بڑے قد آور اور دولت مند
 ہوتے ہیں اور آپس میں بڑی محبت رکھتے ہیں۔ فقط

मू. क्रीष्टुकिरुवाच ॥ कथितं भवता सम्यक्
 यत्पृष्टो सि महामुने । भू समुद्रादिसंस्था-
 नं प्रमाणानि तथा ग्रहाः ॥ १॥ १॥ १॥ १॥

श्री. फिर क्रीष्टुकि ने कहा कि हे मुनि जो जो बातें मैं ने पूछीं उन
 को आपने विस्तार पूर्वक वर्णन किया जब पृथ्वी और समुद्र इ-
 त्यादि की स्थिति और प्रमाण और ग्रह ॥ १॥

मू. तेषाञ्चैव प्रमाणान् च नक्षत्राणाञ्च संस्थितिः । भू-
 रादयस्तथा लोकाः पातालान्यखिलान्यपि ॥ २॥

श्री. और ग्रहों का प्रमाण और नक्षत्रों के स्थान और भूमिवादि
 लोक और सब पाताल ॥ २॥

मू. स्वायम्भुवन्नधारव्यातं मुनेर्मन्वन्तरं मम । त-
 दन्तराण्यहं श्रोतुमिच्छेमन्वन्तराणि वै ॥ म-
 न्वन्तराधिपान् देवानृषींस्तनयाश्च पान् ॥ ३॥

श्री. और स्वायम्भुवमन्वन्तर का भी वृत्तान्त कह चुके जब इसके
 उपरान्त मन्वन्तर और मन्वन्तरों के राजा और ऋषभ और देव
 ता इत्यादिकों का हाल सुना चाहता हूँ सो वर्णन कीजिये ॥ ३॥

मू. मार्कण्डेय उवाच ॥ मन्वन्तरं मयाख्यातं
 तत्र स्वायम्भुवञ्च यत् । स्वरोचिषारव्यम-
 न्यन्तुष्टु तस्मादनन्तरं ॥ ४ ॥ ४ ॥

श्री. तब मार्कण्डेयजी कहने लगे कि स्वायम्भुव मन्वन्तर का हाल मैं
 ने कहा है उसके बाद स्वरोचिष मन्वन्तर है ॥ ४॥

मू. कश्चिद्विजातिप्रवरः पुरेभूद रुणास्पदे । वरु
णायास्तदेविप्रो रूपेणात्यश्विनावपि ॥ ५ ॥

श्री. उसी मन्वन्तर में वरुण नाम नदी के किनारे पर एक नगर
अरुणास्पद नाम था उस नगर में एक ब्राह्मण अत्यन्त रूप-
वान् अश्विनी कुमार के समान रहता था ॥ ५ ॥

मू. मृदुस्वभावः सह तो वेद वेदाङ्ग पारगः । सदा-
तिथिप्रियो रात्रिवागतानां समाश्रयः ॥ ६ ॥

श्री. और वह बड़ा कोमल स्वभाव और सहन और वेद और
वेदाङ्ग में प्रवीण और अतिथिप्रिय था और जो अतिथि-
वि के समय आता था वह उसी के यहाँ रहता था ॥ ६ ॥

मू. तस्य बुद्धिरियंत्वासीदहंपश्येव सुन्दराम् । अ-
तिरम्यवनोद्यानानां नाना नगरां शोभिताम् ॥ ७ ॥

श्री. एकदिन उस ब्राह्मण के चित्त में यह आया कि मैं सम्पूर्ण पृ-
थ्वी की सैर करता और देखता कि इस पृथ्वी पर कैसे कैसे नगर और
वन और फूलवाड़ी रमणीक हैं ॥ ७ ॥

मू. अथागतोऽतिथिः कश्चित् कदाचित् स्यवेश्मनि ।
नानौषधिप्रभावजो मन्त्रविद्याविशारदः ॥ ८ ॥

श्री. इसी चिन्ता में था कि इतने में एक अतिथि आया जो तरह-
रह की औषधि और मन्त्र विद्या में निपुण था ॥ ८ ॥

मू. अथ्यर्थितस्तु तेनासौ श्रद्धा पूतेन चेतसा । तस्या
चरन्त्यौ मुदेशाश्चरम्याणि नगराणि च ॥ ९ ॥

श्री. उस अतिथि ने ब्राह्मण से भोजन माँगा तो ब्राह्मण ने बड़े आ-
दर भाव से उसको भोजन कराया और तदपश्चात् यह पूछा कि
आप कहाँ से आते हैं और किस देश के रहने वाले हैं ॥ ९ ॥

मू. बनानि नद्यः शैलान्श्च पुण्यान्यायतनानि च ।

सततोविस्मयाविष्टः प्राह तं दिजसत्तमं ॥ १० ॥

श्री. तब अतिथि ने अपने देश का नाम बतलाया और बहुत नदियाँ और वन और पहाड़ और नगर और तीर्थ और ऐसे स्थान कि जहाँ पर कोई जानसकै सब का हाल जहाँ तक वह फिर या वर्णन किया तब ब्राह्मण ने आश्चर्य करके पूछा ॥ १० ॥

मू. अनेकदेशदर्शित्वेनातिश्रमसमन्वितः । त्वं
नातिवृद्धो वयसानातिवृत्तश्च यौवनात् ॥ कथं
मल्पेन कालेन पृथिवीमटसिद्धिज ॥ ११ ॥

श्री. कि हे ब्राह्मण (अतिथि) आपने तो बहुत देशों की सैर की है पर आप के शरीर में उस का कुछ परिश्रम नहीं मालूम होता और आप बूढ़े भी नहीं हैं और न बहुत जवान हैं उमर आपकी थोड़ी ही देख पड़ती है फिर थोड़े ही दिनों में सम्पूर्ण पृथ्वी को किस तरह आपने भ्रमण किया है यह कहिये ॥ ११ ॥

मू. ब्राह्मण उवाच ॥ मन्त्रौषधिप्रभावेन विप्रा
प्रतिहता गतिः । योजनानां सहस्रं हि दिना
र्द्धेन व्रजाम्यहं ॥ १२ ॥ १२ ॥ १२ ॥ १२ ॥ १२ ॥ १२ ॥

श्री. यह सुनकर वह ब्राह्मण अर्थात् अतिथि बोला कि हे विप्र औषधि और मन्त्रों के प्रभाव से मेरी गति अप्रतिहता है अर्थात् रुक नहीं है आधे दिन में चार हजार कोस मैं चलता हूँ ॥ १२ ॥

मू. मार्कण्डेय उवाच ॥ ततः सविप्रस्तं भूयात्प्रसु
वाचेदमादरात् । अदधानो वचस्तस्य ब्राह्म-
णस्य विपश्चितः ॥ १३ ॥ १३ ॥ १३ ॥ १३ ॥

श्री. मार्कण्डेयजी कहते हैं कि वह ब्राह्मण उन महात्मा की बातें सुनकर और उनमें विश्वास और आदर करके फिर बोला ॥ १३ ॥

मू. मम प्रसादं भगवन् कुरु मन्त्रप्रभावजं । इष्टं

मेतामममहीमनीवेच्छाप्रवर्त्तने ॥ १४ ॥ १५ ॥

री. कि हे भगवन् रूपा करके और प्रसन्न होकर मुझे भी वह मन्त्र बता दी-
जिये कि जिस से मैं भी अपनी इच्छानुसार पृथ्वी की सैर करूं ॥ १४ ॥

मू. प्रादात्सब्राह्मणाश्चास्मैपादलेपमुदारधीः। अभि
मन्त्रयामासदिशन्तेनास्यानाव्ययत्नतः ॥ १५ ॥

री. तब उस अनिधि ने प्रसन्न होकर पादलेप दे दिया कि जिसको
पाँव में लगालेने से मनुष्य हजारों योजन जा सकता है और दिशाओं
को भी अभिमन्त्रित करके वह अनिधि चला गया ॥ १५ ॥

मू. तेनानुलिप्तपादोऽयसदिजोद्विजसत्तम। हिम
वन्तमगाद्दृष्टुंनानाप्रस्रवणान्वितम् ॥ १६ ॥

री. हे द्विजोत्तम एक दिन वह ब्राह्मण उस पादलेप को अपने पाँ-
वों के तलवों में लगा के हिमवन्त पहाड़ के देखने को चला ॥ १६ ॥

मू. सहस्रंयोजनानांदिदिनाद्द्वेनव्रजामियत्। आ-
यास्यामीतिसच्चिन्त्यतर्द्धेनापरेणहि ॥ १७ ॥

री. और अपने दिल में कहता था कि मैं एक दिन में चार हजार
कोस जाऊँगा और फिरकर चला आऊँगा ॥ १७ ॥

मू. सम्प्राप्तौहिमवत्पृष्ठनातिश्रान्ततनुर्द्विज। वि-
चचारततस्तत्रतुहिनाचलभूतले ॥ १८ ॥

री. इतने ही में वह ब्राह्मण हिमवान् पर्वत पर बिना परिश्रम
पहुँच गया और वहाँ टहलने लगा ॥ १८ ॥

मू. पादाक्रान्तेनतस्याथतुहिनेनविलीयता। प्र-
क्षालितःपादलेपःपरमौषधिसम्भवः ॥ १९ ॥

री. उस पहाड़ पर चलने और फिरने और बरफ के सबब से वह
ह चरणलेप सब धो गया ॥ १९ ॥

मू. ततोऽजडगतिःसोऽथइतश्चेतश्चपर्यटन् ।

रदृशति मनोज्ञानि सानूनि हिमभूभृतः ॥ २० ॥

श्री. उस औषधि के धो जाने से वह ब्राह्मण जड़गति होकर जप-
नी पहिली चाल से दूधर उधर घूमने लगा तो उस हिमवान् के
एक बड़े मनोरम्य स्थान को देखा ॥ २० ॥

मू. सिद्धगन्धर्वनुशानिकिन्नरगिरितानि च । क्रीडा
विहारम्याणि देवादीनामिति स्ततः ॥ २१ ॥

श्री. कि जहाँपर सिद्ध और गन्धर्व और किन्नर गण विहार कर
रहे हैं और उस पर्वत के किनारे देवनों के क्रीड़ा और वि-
हार के वास्ते रमणीय रमणीय स्थान बने हैं ॥ २१ ॥

मू. दिव्याप्सरोगणाश्चैतरेकीर्णान्यवलोकयत् ।
नानृष्यत द्विजश्रेष्ठः प्रोद्धूतपुलको मुने ॥ २२ ॥

श्री. हे मुनि वह ब्राह्मण दिव्य दिव्य अप्सराओं के सैकड़ों
विमानों से उस स्थान को घिरा हुआ देखता था कि जिसके दे-
खने से उसके मन को रुचि नहीं होती थी ॥ २२ ॥

मू. क्वचित्प्रस्रवणाद्भृष्टजलपातं मनोरमं । प्रनृ-
त्यच्छिविकेकाभिरन्यतश्च निजादितं ॥ २३ ॥

श्री. कहीं तो मरनों से पानी बहर रहा है और कहीं मोर नाच रहे हैं और क-
हीं अच्छे अच्छे पक्षी सुहावनी बोलियाँ सब बोल रहे हैं ॥ २३ ॥

मू. शत्यूहको यषि काष्ठैः क्वचिच्चातिमनोहरैः । पुं-
स्को किल कलालापैः श्रुतिहारिभिरन्वितं ॥ २४ ॥

श्री. और कोकिला इत्यादि के मधुर अलाप से वह वन अत्यन्त
रमणीय और मनोहर हो रहा है ॥ २४ ॥

मू. प्रफुल्लतरुगन्धेन वासितानिलवीजितं । मु-
शयुक्तः सदृशे हिमवन्तं महागिरिम् ॥ २५ ॥

श्री. और फूले हुए वृक्षों की सुगन्धि के साथ मन्द मन्द पवन चल रही है

शोभा हिमवान् महापर्वत की देखकर वह ब्राह्मण बहुत आनन्द हुआ ॥ २४ ॥

मू. दृष्ट्वा चैतं दिजसुतो हिमवन्तं महाचलं । श्वो-
द्रुह्यामीति सञ्चिन्त्य मतिञ्चक्रे गृहं प्रति ॥ २६ ॥

टी. और हिमवान् महाचल की देखकर वह ब्राह्मण कुमार अपने जी में कहने लगा कि कल फिर सुबह के वक्त आकर देखूंगा यह बात अपने चित्त में बहारा कर घर चलने की इच्छा की ॥ २६ ॥

मू. विप्रपदादलेपोऽथ चिरेण जडितक्रमः । चिन्त-
यामास किमिदं मया ज्ञानादनुष्ठितं ॥ २७ ॥

टी. जब चलने पर मुत्तैर हुआ तो जड़गति होगया यानी थक गया क्यों कि चरण में जो चरण लेप था वह चलने फिरने से छिड़ गया था इससे चिन्ता करने लगा कि मैंने अनजान होकर ऐसा काम क्यों किया ॥ २७ ॥

मू. यदि प्रलेपो नष्टं मे विलीनो हिमवारिणा । शैलो-
ऽतिदुर्गमश्चायं दूरश्चाह मिहागतः ॥ २८ ॥

टी. जब जो इस हिम के जल से मेरा चरणलेप नष्ट होगया तो जब यहाँ से जाना बहुत कठिन है क्योंकि यह पर्वत दुर्गम है और मेरा घर भी बहुत दूर है ॥ २८ ॥

मू. प्रयास्यामि क्रियाहानि मग्निशुश्रूषणादिकं ।
कथमत्र करिष्यामि सङ्कटं महदागतं ॥ २९ ॥

टी. और यहाँ के जाने से मेरा नेम इत्यादि भी छूटा क्योंकि यहाँ पर मैं अग्नि की पूजा किस तरह करूँगा बड़ा संकट तो मुझको एक यही आपड़ा है ॥ २९ ॥

मू. इदं रम्यमिदं रम्यमित्यस्मिन् रम्यपर्वते । स-
क्तदृष्टिरहंतृप्तिनयास्येऽब्धशतैरपि ॥ ३० ॥

टी. और इस पहाड़ पर जो अच्छे अच्छे पदार्थ और रम्य रम्य स्थान हैं उनको यदि सैकड़ों वर्ष तक देखता रहूँ तो भी

मेरा जी उचार नहोगा ॥ ३० ॥

मू. किन्नराणांकलालापाः समन्ताच्चोत्तहारिणः ।
प्रफुल्लतरुगन्धाश्च घ्राणमत्यन्तमृच्छति ॥ ३१ ॥

श्री. क्योंकि किन्नर गणों का आलाप जो चारों तरफ से आता है उसको सुनकर मेरा कर्ण और दृष्टों के फूलों से जो सुगन्धि आती है उसके सूँघने से मेरी नाक भी आसक्त हो रही है ॥ ३१ ॥

मू. सुखस्पर्शस्तथावायुः फलानिरसवन्ति च । हर-
न्ति प्रसभंचेतो मनोज्ञानिसरांसि च ॥ ३२ ॥

श्री. इसी तरह यह शीतल मन्द सुगन्ध संयुक्त सुखद वायु का स्पर्श और यहाँ के फूलों का रस और मनोरम्य सरोवरों ने भी मेरे मन को हर लिया है ॥ ३२ ॥

मू. एवं गते तु पश्येयं यदि कंचित्तपोनिधिं । सम-
मोपदिशेन्मार्गं गमनाय गृहम्प्रति ॥ ३३ ॥

श्री. अब जो मुझे वैसाही कोई तपस्वी महात्मा मिल जावे तब तो अवल-
ता मैं यहाँ से जा सकता हूँ नहीं तो जाना बहुत कठिन है ॥ ३३ ॥

मू. मार्कण्डेय उवाच ॥ स एवं चिन्तयन् विप्रो
वभ्रामच हिमाचले । भ्रष्टपादौषधिवलो वै
क्लृपं परमंगतः ॥ ३४ ॥ ३४ ॥ ३४ ॥ ३४ ॥

श्री. मार्कण्डेयजी कहते हैं कि हे औषुकि इसी चिन्ता में वह ब्रा-
ह्मण उस हिमवान् पर्वत पर भ्रमण करता था और चरण की
औषधि के धो जाने से बड़े शोच में था ॥ ३४ ॥

मू. तंददर्शभ्रमन्तञ्च मुनिश्रेष्ठं वरूथिनी । वर-
प्सरामहाभागा मौलिया रूपशालिनी ॥ ३५ ॥

श्री. कि इतने में एक अप्सरा वरूथिनी नाम महा भागवती
और रूपवती जो अत्यन्त अपूर्व थी उसने उस श्रेष्ठ ब्राह्मण

कुमार को उस पर्वत पर फिरते हुये देखा ॥ ३५ ॥

मू. तस्मिन् दृष्टे ततः सा भूहि जवर्ये वस्तु धिनी । म
दनाकृष्ट हृदया सानुरागाहितत्साणात् ॥ ३६ ॥

टी. और उस ब्राह्मण के रूप को देखकर वह अप्सरा जिसके मन को कामदेव ने खींच लिया था उसका हो गई ॥ ३६ ॥

मू. चिन्तयामास को न्वे परमणीयतमा कृतिः । सफ
लमे भवेज्जन्म यदि मानावमन्यते ॥ ३७ ॥

टी. और अपने मन में कहने लगी कि ऐसा रूपवान् पुरुष यह कौ
न है जो यह पुरुष सुन पर प्रसन्न होता तो मेरा जीवन सफ-
ल होजाता ॥ ३७ ॥

मू. अहोऽस्य रूपमाधुर्य्यमहोऽस्य ललिता गतिः
अहो गम्भीरता दृष्टेः कुतोऽस्य सदृशो भुवि ॥ ३८ ॥

टी. क्योंकि इसके रूप की माधुर्य्यता और इसकी ललित गति
अर्थात् चाल और चितवन और गम्भीरता अनन्य मनोहर है
किन्तु इस पृथ्वी में इसके सदृश दूसरा रूपवान् नहीं है ॥ ३८ ॥

मू. दृष्ट्वा देवास्तथा दैत्याः सिद्धगन्धर्वपन्नगाः । कथ
मेकोऽपि नास्त्यस्य तुल्यरूपो महात्मनः ॥ ३९ ॥

टी. क्योंकि मैंने कितने देवता और दानव और सिद्ध और गन्धर्व और
नागों को देखा है पर इस महात्मा के समान सुन्दर कोई नहीं है ॥ ३९ ॥

मू. यथाहमस्मिन्मयेषानुरागस्तथा यदि । भवे
दत्र मया कार्यस्तत्कृतः पुण्यसञ्चयः ॥ ४० ॥

टी. जिस तरह मेरा मन इसपर लोभित हुआ है इसी तरह इ-
सका मन भी मेरे ऊपर मेरे पूर्व जन्म के संचित पुण्यों से जो मो-
हित होजाय तो यहाँ पर मेरा कार्य सिद्ध होजाय ॥ ४० ॥

मू. यद्येषमयि सुस्निग्धा दृष्टि मद्यनिपातयेत ।

कृतपुण्यानमत्तोऽन्यात्रैलोक्येवनितांततः॥४१॥

श्री. जो यह महात्मा प्रसन्न होकर मेरी तरफ देख दे तो मैं जानूँ कि मेरी बराबर पुण्यवाली स्त्री त्रैलोक्य में नहीं है ॥४१॥

मू. मार्कण्डेय उवाच॥ एवं सञ्चिन्तयन्ती सा दि-
व्योषितस्मरानुरा । आत्मानंदं शयामास
कमनीयतरा कृतिम् ॥४२॥ ४२ ॥ ४२॥

श्री. मार्कण्डेयजी कहते हैं कि इस तरह वह सुन्दरी कामानुरा अपने मन में चिन्ता करती हुई नख सिख से शृङ्गार कर उस ब्राह्मण कुमार के सामने आई ॥४२॥

मू. तांतुदृष्ट्वा दिज्जुनश्चारु रूपां वरूथिनीं । सोप-
चारं समागम्य वाक्यमेतदुवाच ह ॥ ४३ ॥

श्री. तब वह ब्राह्मण कुमार भी उस वरूथिनी का सुन्दर रूप देख कर उस से कहने लगा ॥४३॥

मू. कात्वं कमलगर्भा भेकस्य किं वानुतिष्ठसि । ब्रा-
ह्मणोऽहमिहायातो नगरादरुणास्पदान् ॥४४॥

श्री. कि हे सुन्दरी कमल के गर्भ की कान्ति वाली तू किसकी स्त्री है और क्या तेरा नाम है और कहाँ तू रहती है और मैं तो ब्राह्मण हूँ मेरा घर जरुणास्पद नगर में है ॥४४॥

मू. पादलेपोऽत्र मे ध्वस्तो विलीनो हिमवारिणा । यस्या-
नुभावाद्वाहमागतो मदिरैक्षतो ॥ ४५ ॥

श्री. यहाँ पर जाने से मेरे चरण की औषधि इस हिम के जल से धो गई जिसके प्रभाव से हे सुन्दरी मैं इस स्थान पर आया और अब फिर जाना मुश्किल हो गया ॥४५॥

मू. मौलेयाहं महाभागानाम्नाख्याता वरूथिनी ।
विचरामि सदैवात्र रमणीये महाचले ॥ ४६ ॥

टी. यह सुनकर वह बरुथिनी बोली कि हे ब्राह्मण मैं बड़ी अनमोल और महाभागवती हूँ मेरा नाम बरुथिनी विख्यात है इस समशीय पर्वत पर सदा विद्यमान हूँ ॥ ४६ ॥

मू. साहंत्वदर्शनादिप्रकामवक्तव्यताङ्गता
प्रशाधियन्मयाकार्यत्वदधीनास्मि सा-
म्यतं ॥ ४७ ॥ ४७ ॥ ४७ ॥ ४७ ॥ ४७ ॥ ४७ ॥

टी. हे ब्राह्मण मैं तुम्हें देखकर अत्यन्त कामासक्त हो रही हूँ आप जो कुछ मुझे आज्ञा दो वह मैं करूँ क्योंकि इस समय मैं तुम्हारे आधीन हो रही हूँ ॥ ४७ ॥

मू. ब्राह्मण उवाच ॥ येनो पायेनगच्छेयं निज
गेहं शुचिस्मिते । तन्ममाचक्ष्व कल्याणि-
हानिर्नोऽखिल कर्मणां ॥ ४८ ॥ ४८ ॥ ४८ ॥

टी. यह सुनकर वह ब्राह्मण कुमार बोला कि हे कल्याणी जिस में मैं अपने घर जाऊँ वह तदवीर कोई मुझे बता दे क्योंकि मेरी सम्पूर्ण क्रियाओं की हानि होती है ॥ ४८ ॥

मू. नित्यनैमित्तिकानान्तु महाहानिर्दिजन्मनः भ-
वत्यतस्त्वं हे भद्रे मामुद्धर हिमालयात् ॥ ४९ ॥

टी. और नित्य और नैमित्त्यादि क्रियाओं का छूट जाना ब्राह्मण के वास्ते बड़ी हानि है इसलिये हे कल्याणी इस हिमालय से मेरा उद्धार कर ॥ ४९ ॥

मू. प्रशस्यतेन प्रवासी ब्राह्मणानां कदाचन । अप-
राधं न मे भीरु देश दर्शन कौतुकं ॥ ५० ॥

टी. क्योंकि ब्राह्मण के वास्ते परवास यानी गैर जगह रहना और देश घूमकर कौतुक देखना हे भीरु अच्छा नहीं है ॥ ५० ॥

मू. सतो गृहे हि जाग्रस्य निष्पतिः सर्व कर्मणां नि-
त्यनैमित्तिकानाञ्च हानिरेवं प्रवासिनः ॥ ५१ ॥

टी. अच्छे ब्राह्मणों की सम्पूर्ण क्रिया घर ही में सिद्ध होती है और परवासी ब्राह्मणों की नित्य और नैमित्तिक क्रियाओं की हानि इसी तरह से होती है ॥ ५१ ॥

मू. सात्त्वं किं बहुनोक्तेन तथा कुरुयशस्विनि । य
थानास्तं गते सूर्ये पश्यामि निजमालयम् ॥ ५२ ॥

टी. हे यशस्विनी बहुत कहाँ तक कहूँ ऐसी तरह कर कि जिससे मैं सूर्यास्त होने से पहिले अपने घर पहुँच जाऊँ ॥ ५२ ॥

मू. वरूथिन्युवाच ॥ मैवं ब्रूहि महाभाग माभू
त्सदिवसो मम । मां परित्यज्य यत्र त्वं नि
जगेहमुपैष्यसि ॥ ५३ ॥ ५३ ॥ ५३ ॥ ५३ ॥

टी. वरूथिनी बोली कि हे महाभाग ऐसा मत कहो और वह दिन कभी न हो कि जिसमें तुम मुझे छोड़कर अपने घर जाव ॥ ५३ ॥

मू. अहो रम्यतरः स्वर्गो न यतो हि जनन्दन । अतो
वयं परित्यज्य तिष्ठामोऽत्र सुरालयं ॥ ५४ ॥

टी. और हे दिजनन्दन इस स्थान के बराबर रमणीय स्वर्ग भी नहीं है इसलिये इन्द्रलोक को छोड़कर मैं यहाँ रहती हूँ ॥ ५४ ॥

मू. सत्त्वं सहमया कान्ते कान्तेऽत्र तु हि नाचले । रम
माणो न मर्त्यानां बान्धवानां स्मरिष्यसि ॥ ५५ ॥

टी. इस वास्ते इस रमणीक और एकान्त स्थान में तुम मेरे साथ रमण करौ जब उस रमण का सुख तुमको मिलेगा तब तुम अपने चित्त से घर और बन्धुमित्र सब भूल जावोगे ॥ ५५ ॥

मू. सजो वस्त्रान्यलङ्कारान् भोक्षभोज्यानुलेपनं । दास्या
म्यत्र तथा हन्ते स्मरेण वशगाहता ॥ ५६ ॥ ५६ ॥ ५६ ॥

टी. और माला वस्त्र भूषण भोजन चन्दनादि जो कुछ चाहो वह मैं तुम्हें दूँ क्योंकि मैं कामाशक्त हो रही हूँ ॥ ५६ ॥

मू. वीणावेणुस्वनंगीतं किन्नराणां मनोरमं । अङ्ग-
ह्लादकरो वायुस्पर्शान्नमुदकं शुचि ॥ ५७ ॥

श्री. और वीणा और वेणु शब्द और किन्नर गणों के मनोरम्य गीत सुनौ और देखो कि अङ्ग को आनन्द देने वाली वायु और ताज़ा अन्न और पवित्र जल यहाँ सदा वर्तमान रहता है ॥ ५७ ॥

मू. मनोभिलाषिताशय्यासुगन्धमनुलेपनं द्वा सतो
महाभाग गृहे किन्ने निजेऽधिकं ॥ ५८ ॥

श्री. और मन की अभिलाषानुसार शय्या और सुगन्ध और चन्दन प्राप्त रहता है हे महा भाग इससे अधिक तुम्हारे घर में क्या है ॥ ५८ ॥

मू. द्वा सतो मैव जरा कदाचित्ते भविष्यति । वि-
दशानामियं भूमिर्यौवनोपचयप्रदा ॥ ५९ ॥

श्री. और यहाँ रहने से तुमको बुढ़ापा कभी न होगा क्योंकि तरुण ही अवस्था सदा बनी रहने के वास्ते यह स्थान देवों का निर्माण किया हुआ है ॥ ५९ ॥

मू. इत्युक्त्वा सानुरागा सा सहसा कमलेक्षणा । आ-
लिलिङ्ग प्रसीदेति वदन्ती कलमुन्मनाः ॥ ६० ॥

श्री. इस प्रकार वह वस्तुस्थिती कमल नयनी कहकर अनुराग संयुक्त प्रसीद अर्थात् रक्ष रक्ष कहती हुई उन्मत्त समान उस ब्राह्मण कुमार के सङ्ग में लिपटने के वास्ते लुकी ॥ ६० ॥

मू. ब्राह्मण उवाच ॥ मामास्त्राक्षी ब्रजान्यत्र दु-
ष्टेयः सदृशस्तव । मयान्यथायाचिता त्वमन्य-
थैवाप्युपैषि मां ॥ ६१ ॥ ६१ ॥ ६१ ॥ ६१ ॥

श्री. तब उस ब्राह्मण कुमार ने कहा कि हे दुष्टे तू मुझे मत खूजो तौरे योग्य हो वहाँ जा मैंने अनजान होकर वृथा तुमसे पूछा और तू भी मुझसे वृथा मिलने को चाहती है ॥ ६१ ॥

मू. सायंप्रातर्दृतं हव्यं लोकान्यच्छति शाश्वतान् ।
त्रैलोक्यमेतदखिलं मूढे हव्ये प्रतिष्ठितं ॥ ६२ ॥

श्री. और सायंकाल और प्रातःकाल होम करने से शाश्वत लोक में मनुष्य प्राप्त होता है और हे मूढ़े होम ही के प्रताप से तीनों लोक प्रतिष्ठित यानी ज्ञायम हैं ॥ ६२ ॥

मू. वरूथिन्युवाच ॥ किन्तेनाहं प्रिया विप्ररम्-
णीयोन किं गिरिः । गन्धर्वान् किन्नरादींश्च
त्यक्त्वा भीष्टो हि कस्तव ॥ ६३ ॥ ६३ ॥ ६३ ॥

श्री. यह सुनकर वरूथिनी बोली कि हे विप्र मैं सुन्दरी क्या तुम्हारी प्रिया नहीं हूँ या यह पर्वत रमणीक नहीं है जो इन किन्नरों और गन्धर्वों को छोड़कर दूसरी इच्छा करते हो ॥ ६३ ॥

मू. निजमालयमप्यस्माद्भवान्थास्यत्यसंशयं । स्व-
ल्पकालं मया साहं भुङ्क्ष्व भोगान् सुदुर्लभान् ६४

श्री. कुछ दिन मेरे साथ दुर्लभ भोग कर लेव तब फिर निस्सन्देह अपने घर को भी चले जाना ॥ ६४ ॥

मू. ब्राह्मण उवाच ॥ अभीष्टा गार्हपत्याद्याः स-
ततं मे त्रयोऽग्नेयः । रम्यं ममाग्निशरणं दे-
वी विस्तरणी प्रिया ॥ ६५ ॥ ६५ ॥ ६५ ॥

श्री. तब ब्राह्मण ने कहा कि गार्हपत्य इत्यादि तीनों अग्नि मेरे अभीष्ट हैं और अग्नि ही की शरण मुझको रम्य है और वेद युक्त सधा और स्वाहा ही की वाणी मुझको प्रिया है ॥ ६५ ॥

मू. वरूथिन्युवाच ॥ अष्टावात्मा गुणा ये हि
तेषां मादौ दया विज । तां करोषि कथं न त्वं
मयि सद्धर्मपालक ॥ ६६ ॥ ६६ ॥ ६६ ॥

श्री. तब वरूथिनी बोली कि हे ब्राह्मण आत्मा के आठ गुण हैं उसमें

मुख्य दया है हे धर्मपालक वह मुझपर क्यों नहीं करते हो ॥ ६६ ॥

मू. त्वद्विमुक्तानजीवामितयाप्रीतिमतीत्वयि।
नैतददाम्यहंमिध्याप्रसीदकुलनन्दन ॥ ६७ ॥

टी. और हे कुलनन्दन अब तुम मेरे ऊपर प्रसन्न हो नहीं तो मैं तुम्हारे जुदा होने से मेरे प्रेम के अपना प्राण अवश्य त्याग दूँगी यह बात मैं नहीं कहती हूँ ॥ ६७ ॥

मू. ब्राह्मण उवाच ॥ यदिप्रीतिमतीतत्त्वंनो-
पचाराद्वीपिमां । तदुपायंसमाचक्ष्वयेन
यामिस्वमालयं ॥ ६८ ॥ ६८ ॥ ६८ ॥ ६८ ॥

टी. तब ब्राह्मण कुमार ने कहा कि जो मेरे ऊपर तेरी ऐसी ही प्रीति है तो मुझको कोई ऐसी तडीर बतला कि जिसमें मैं अपने घर पहुँच जाऊँ ॥ ६८ ॥

मू. वरूथिन्युवाच ॥ निजमालयमप्यस्माङ्ग-
वान्यास्यत्यसंशयं । स्वल्पकालमयासा-
द्वंभुङ्क्ष्वभोगान्सुदुर्लभान् ॥ ६९ ॥ ६९ ॥ ६९ ॥

टी. वरूथिनी बोली कि तुम अपने घर निस्सन्देह जावगे परन्तु कुछ दिन मेरे साथ दुर्लभ भोग करलो ॥ ६९ ॥

मू. ब्राह्मण उवाच ॥ नभोगार्थायविप्राणांश-
स्यंतेहिवरूथिनि । इहलेशायविप्राणां
चेष्टाप्रेत्याफलप्रदा ॥ ७० ॥ ७० ॥ ७० ॥

टी. तब ब्राह्मण ने कहा कि हे वरूथिनी ब्राह्मणों के वास्ते भोग करना शास्त्र में नहीं आया है ब्राह्मणों की क्रिया यद्यपि इस लोक में लेश दायक जानपड़ती है परन्तु परलोक में बहुत सुखदाई है ॥ ७० ॥

मू. वरूथिन्युवाच ॥ सन्त्राणमियमाणाया
ममकृत्वापरत्रते । पुण्यस्यैवफलंभावि

भोगश्चान्यत्रजन्मनि ॥ ७१ ॥ ७१ ॥ ७१ ॥

श्री. फिर ब्रह्मिनी बोली कि हे ब्राह्मण मेरे साथ इस समय भोग करके मेरे प्राण की रक्षा करौ तुमको सम्पूर्ण धर्मों का फल होगा ॥ ७१ ॥

मू. एवञ्चद्वयमप्यत्रतपोपचयकारणम् । प्रत्याख्यानादर्हमृत्युंत्वञ्चपापमवाप्स्यसि ॥ ७२ ॥

श्री. और मेरे साथ भोग करने से तुमको दोनों बातें प्राप्त होंगी अर्थात् जो तुम मुझको निराश करौ गे तो मैं मर जाऊँगी और तुमको पाप होगा ॥ ७२ ॥

मू. ब्राह्मण उवाच ॥ परस्त्रियं नाभिलषेदित्यूचुर्गुरवो मम । तेन त्वां नाभिवाञ्छामिका मं विलपशुष्य वा ॥ ७३ ॥ ७३ ॥ ७३ ॥ ७३ ॥

श्री. ब्राह्मण बोला कि मुझको गुरु की आज्ञा है कि परस्त्री की अभिलाषा न करना इसवास्ते मैं तुम्हको नहीं चाहता हूँ तू अपना जी मार चहै रख ॥ ७३ ॥

मू. मार्कण्डेय उवाच ॥ इत्युक्त्वासुमहाभागः सृष्ट्वापः प्रयतः शुचिः । प्राहेदं प्रणिपत्याग्निं गार्हपत्यमुपांशुना ॥ ७४ ॥ ७४ ॥

श्री. मार्कण्डेयजी कहते हैं कि इतना कहकर वह ब्राह्मण कुमार महाभाग जल से स्पर्श कर पवित्र होकर गृह का देवता जो अग्नि है उसको प्रणाम करके बोला ॥ ७४ ॥

मू. भगवन् गार्हपत्याग्ने योनिस्त्वं सर्वकर्मणां । त्वत्तद्ग्राहवनीयोऽग्निर्दक्षिणाग्निश्च नान्यत् ॥ ७५ ॥

श्री. कि हे गृहके देवताग्नि तुम सम्पूर्ण कर्मों के पैदा करनेवाले हो और तुम में होम करने से सब अग्नि प्रसन्न रहते हैं ॥ ७५ ॥

मू. युष्मदाप्यायना देवा दृष्टि सस्यादि हेतवः ।

भवन्ति सस्यादखिलं जगद्भवति नान्यतः ॥ ७६ ॥

श्री. और तुम्हारे ही वृक्ष होने से सब देवता भी वृक्ष होकर जल
बरसाने हैं उससे पृथ्वी में जन्म पैदा होता है कि जिस से स
मूर्त्ति प्राणियों का जीवन होता है ॥ ७६ ॥

मू. एवं त्वतो भवत्येतद्येन सत्येन वै जगत् । तथा ह
मत्संयोगं पश्येयं सति भास्करे ॥ ७७ ॥

श्री. यह बात जो सत्य हो तो हे गर्हपत्याग्नि इसी सत्य से जबत
क सूर्योत्पत्ति न हो तब तक मैं अपने घर पहुँच जाऊँ ॥ ७७ ॥

मू. यथा वै वैदिकं कर्म स्वकालेनो ज्जितं मया । ते
न सत्येन पश्येयं गृहस्थो यदि वा करं ॥ ७८ ॥

श्री. और जो क्रिया के समय में मैंने वैदिक कर्मों का त्याग न किया
हो तो उस सत्य से मैं आज अपने घर पहुँचकर सूर्य को देखूँ ॥ ७८ ॥

मू. यथा च न परद्रव्ये परदारो च मे मतिः । कदाचि
त्साभिलाषा भूतयै तत्सिद्धिमेतु मे ॥ ७९ ॥

श्री. और जो पराई स्त्री और पराई द्रव्य में मेरी इच्छा कभी न हुई
हो तो उस सत्य से यह बात मेरी सिद्ध हो ॥ ७९ ॥

इति श्री मार्कण्डेय पुराणे स्वा
रोचिषे मन्वन्तरे ब्राह्मण
वाक्यं नाम ॥ ६१ ॥

ادھیا ۶۱ اکسٹھ

۱ - کرشن کی نے کہا کہ ہر من جو باتیں میں نے آپ سے پوچھیں ان سب کو آپ نے مفصل بیان کیا اور پرہتوی اور شہد وغیرہ کا قیام اور اندازہ اور گروہ - ۲ اور گروہوں کا پرمان اور پختہ ہون کی جگہ اور پھور پھو وغیرہ لوگ اور سب پاتال - ۳ اور سوئے پختہ ہون کا حال بھی آپ کہ چکے اب اس کے بعد اور منو منتر اور ان منوترون کے راجا اور پختہ اور دیوتوں کا حال سنا چاہتا ہوں کیسے - ۴ تب مارکڈے جی کہنے لگے کہ سوئے پختہ منو منتر کا بیان جو میں کر چکا ہوں اس کے بعد سوارو جگہ منو منتر ہوتا ہے اس منو منتر میں - ۵ پرنان نام ندی کے کنارے ایک نگر ارناسید نام تھا اس نگر میں ایک براہمن نہایت خوبصورت مثل اسٹونی بگا کے رہتا تھا اور بہت نرم مزاج اور نیک اعمال اور نیک اور نیک کے انکون کا جاننے والا اور مکان نواز اور اچھے بریا یعنی فقیر دوست تھا اور جو اچھے (مسا فر) شام کو آتا اسی کے مکان پر آتا تھا - ۶ ایک دن اس براہمن کے دل میں یہ خیال آیا کہ میں تمام دنیا کی سیر کرتا اور دریافت کرتا کہ دنیا میں کیسے کیسے شہر اور جنگل اور پہاڑ اور مقامات پر فضائیں - ۷ اسی فکر میں تھا کہ اتنے میں ایک اچھے (یعنی مسافر فقیر) سامنے آیا جو سب طرح کی بڑی بوٹی اور ہر قسم کے منتروں سے بخوبی واقف تھا - ۸ اسے براہمن سے کھانے کا سوال کیا تب براہمن خوشی سے عمدہ عمدہ کھانا اُس کو کھلایا اور اُس کے پوچھا کہ آپ کہاں سے آتے ہیں اور کس ملک کے رہنے والے ہیں - ۹ تب اچھے نے اپنے ملک کا نام بتلایا اور بہت سے دریا اور جنگل اور پہاڑ اور شہر اور تیرتھ اور ایسے ایسے مقامات کہ جہاں کوئی نہ جاسکے سب کا حال جانتا کہ وہ پھر اچھا بیان کیا تب براہمن نے بہت تعجب میں آکر پوچھا - ۱۰ کہ اے اچھے آپ نے تو بہت سے مقاموں کی سیر کی مگر آپ کے چہرہ و بسترہ سے مانگی وغیرہ آثار ستیا جی کے معلوم نہیں ہوتے اور آپ بہت بوڑھے بھی نہیں ہیں بلکہ نوجوان ہیں تو آپ نے تھوڑے ہی دنوں میں اتنی جگہوں کی سیر کس طرح سے کر لی - ۱۱ یہ سنکر وہ اچھے - ۱۲ بلکہ اسے براہمن میں منتر اور بڑی بوٹی کی تاثیر کے سبب سے ماندہ نہیں ہو سکتا جہاں باہر ویاں بخوف و خطر چلا جاؤں میں دوپہر میں چار ہزار گوس چلتا ہوں -

۱۳ مارکندے جی کہتے ہیں کہ ہر کوئی شکی وہ برا مھنٹا اس اتھ کی باتیں سنکر اور اسکو سمجھ کر
 بڑی خواہش اور عاجزی کے ساتھ بولا۔ ۱۴ کہ اسے بھگون مجھے بھی بڑی آرزو تھی
 کہ سب ملکوں کی سیر کروں آپ مہربانی کر کے خوشی سے بھگو بھی وہ منتر بتلا دیجیے کہ جس کے
 سبب سے میں بھی سب ملکوں کی سیر کر سکوں۔ ۱۵ اتب اس اتھ نے خوش ہو کر چرن لپٹا
 اسکو دیا کہ جس لپٹ کے لگانے سے آدمی ہزاروں جو جن تک جاسکتا ہو اور شاؤن پر بھی
 منتر پڑھ دیا اور چلا گیا۔ ۱۶ مارکندے جی کہتے ہیں کہ اسے اتر دج ایک دن وہ برا مھنٹا وہ
 چرن لپٹ اپنے سیر کے تلوؤں میں لگا کر ہاچل ہاچل کی سیر کر نکلا چلا۔ ۱۷ اور اپنے دل
 میں سوچتا جاتا تھا کہ میں ایک دن میں چار ہزار کوس چلا جاؤں گا اور پھر چلا آؤں گا۔ ۱۸ اتنے
 میں وہ برا مھنٹا ہاچل ہاچل پر بے محنت و مشقت پہنچ گیا اور وہاں پہنچ کر ادھر ادھر ٹھہرنے لگا
 ۱۹ بسبب چلنے پھرنے اور برف کی نمی سے وہ چرن لپٹ دھو گیا۔ ۲۰ اس لپٹ کے
 دھو جانے سے پرستور سابق چلنے پھرنے لگا اور وہاں پر ایک مقام دلچسپ و خوشنما و پُر فضا دیکھا
 ۲۱ کہ جہاں پر بہت سے سدرم اور کسٹر اور گندھرب (بہشت کے گانے والے) رہتے ہیں
 اور اس پہاڑ کے کنارے دیوتوں کی سیر کے واسطے عمدہ عمدہ خوشنما جگہیں بنی ہیں۔
 ۲۲ ہر من وہ برا مھنٹا بہت خوشی سے نہایت خوبصورت ائیر اڈن (یعنی بہشت کی دیوتوں)
 کے ہاتھوں سے اس مقام کو گھرا ہوا دیکھتا تھا کہ جبکہ دیکھنے سے اس کے دل کو آسودگی نہوتی تھی
 ۲۳ کہیں جھرنوں سے پانی جاری تھا اور کہیں مورچا رہتے تھے اور کہیں اچھے اچھے پرند
 خوش آوازوں سے چہک رہے تھے۔ ۲۴ کہیں کوکلا وغیرہ کی میٹھی میٹھی بولیاں سے وہ
 مرغزار رنگ گلزار معلوم ہوتا تھا۔ ۲۵ اور پھولے ہوئے درختوں کی خوشبو سے بھری
 بوئی نرم نرم ٹھنڈھی ٹھنڈھی ہوا چل رہی تھی یہ کیفیت اس ہاچل ہاچل کی دیکھ کر وہ برا
 بہت خوش ہوا۔ ۲۶ آخر میں ہاچل کی کیفیت دیکھ کر اس برا مھنٹے نے اپنے دل میں
 یہ کہا کہ کل پھر صبح کے وقت اگر بیان کی سیر کروں گا اب گھر چلوں اور گھر چلنے کا ارادہ کیا۔
 ۲۷ جب چلا تو تھک گیا کیونکہ چرن میں جو چرن لپٹ تھا وہ چلنے پھرنے سے چھوٹ گیا تھا
 تب تو وہ افسوس کرنے لگا کہ میں نے یہ کیا نادانی کی۔ ۲۸ کہ اس پہاڑ پر آیا جسکی بنی
 سے سیرا چرن لپٹ بھی مٹ گیا اب اول تو اس پہاڑ سے اترنا مشکل ہی دوسرے میرا گھر
 بھی بہت دور ہے۔ ۲۹ اور بیان نے سے میرا نٹ نیم بھی چھوٹ گیا کیونکہ اس جگہ ان

کی بوجا کی طرح نہیں ہو سکتی یہ مجھ کو اور بھی زیادہ مشکل ہوئی۔ ۳۰ اور اس پہاڑ پر جو
عہدہ چھوڑا اور تمہیں بہن انگو اگر صد تار بس تک دیکھتا رہوں تو بھی ان سے آسودگی
نہوگی۔ ۳۱ اور کتر لوگوں کے راگ خوش الحان تھے اور بھولوں کی خوشبو سونگھنے سے میرے
کان اور ناک بھر رہے ہیں۔ ۳۲ اور کھنڈھی کھنڈھی ملائم فرحت بخش ہوا اور اچھے اچھے
بھل اور دلفریب تالابوں نے بھی میرے دل کو فریفتہ کر لیا۔ ۳۳ اب جو کوئی دلیا ہی
نہیں ہو مہا تاج مجھ کو بھر لے جائے تو البتہ میں یہاں سے جاسکتا ہوں نہیں اب گھر پہنچنا بہت
مشکل ہے۔ ۳۴ مارکنڈے جی کہتے ہیں کہ ہے کر و شکی وہ براہمن اسی سوچ میں اس جاہل
پہاڑ پر پھرتا تھا اور چرن لپ کے چھوٹ جانے سے بڑے افسوس اور نہایت رنج میں تھا۔
۳۵ اسی طرح گھومتے پھرتے ہوئے اس اٹھم براہمن کو ایک ایسرا برو تھتی نام نے دیکھا۔
۳۶ اور اس براہمن کی خوبصورتی کو دیکھ کر وہ ایسرا مست ہو کر ہزار جان سے عاشق ہو گیا
۳۷ اور اپنے دل میں کہنے لگی کہ اس صورت کا جوان میں نے کبھی نہیں دیکھا اگر یہ جوان مجھے میرا
تو میری زندگی سہل ہو جائے۔ ۳۸ کیونکہ اس کے حسن کی شیرینی اور پیاری چال اور بانگی چتون
اور بھولاپن بہت ہی دلفریب ہے بلکہ اسکے برابر خوبصورت کوئی دوسرا شخص اس پردہ زمین
پر نہیں ہے۔ ۳۹ میں نے بہت سے دیوتا اور دانوا اور گنڈھرب اور سدھ لوگوں کو دیکھا ہے
پر اس مہاتما کے برابر خوبصورت کسی کو نہ پایا۔ ۴۰ جس طرح میرا دل اسپر فریفتہ ہے اسی طرح
اسکا دل بھی اگر میرے اوپر میرے اگلے جنم کے پُتن سے مایل ہو جائے تو میری مراد پوری ہو جائے
الہم اگر یہ مہاتما خوش ہو کر میری طرف دیکھ دے تو میں یہ سمجھوں کہ میرے برابر دوسری خوش
نصیب عورت تینوں لوگوں میں نہیں ہے۔ ۴۱ مارکنڈے جی کہتے ہیں کہ اسی طرح وہ سُندی
اپنے دل سوچ کر میرے پانوں تک ہنسا کر کہے کہ اس براہمن کے سامنے آئی۔ ۴۲ تب
وہ براہمن اسکی حسین صورت دیکھ کر اس سے کہنے لگا۔ ۴۳ کہ اے نازنین نازک بدن تو کسی
عورت ہے اور کیا تیرا نام ہے اور کہاں رہتی ہے اور کیا چاہتی ہے اور میں براہمن ہوں اگر تیرا
نام نگر کار بننے والا ہوں۔ ۴۴ یہاں پر آنے سے میرے پیر کی دوا برف کے پانی سے
دھو گئی جبکہ سب سے اے نازنین اب میں یہاں سے جانا نہیں سکتا۔ ۴۵ یہ سن کر برو تھتی
بولی کہ اے براہمن میں بڑی اقبال مند ہوں میرا نام برو تھتی ہے بہت دنوں سے اس پہاڑ پر
رہتی ہوں۔ ۴۶ اے براہمن میں آپ کو دیکھ کر مست ہو گئی ہوں مجھ کو اپنی لونڈی سمجھ کر

لگن کا ساتھ چھوڑ کر کہاں جاو گے - ۶۴ تھوڑے دن میرے ساتھ رہ کر جو عیش کہ کبھی
 کیسکو تیسرے ہو گا کر لو پھر بیٹھ کر سو کر اپنے گھر بھی جے جانا - ۶۵ براہمن نے کہا کہ اگر مستحق
 کے دیو تاجو تیون لگن ہن وہی مجھکو پیاری ہن اور انھین کی خدمت میں رہنا مجھکو پسند
 ہن اور بید کے ساتھ سو دھا اور سونا کی آواز سی مجھکو پیاری معلوم ہوتی ہ -
 ۶۶ برودھنی نے کہا کہ اے براہمن آتا کے آٹھ لگن ہن انھین مقدم دیا مینی رخم سر
 پس تم مجھ پر رخم کیون نہیں کرتے - ۶۷ اور اے گل نندن آپ میرے اوپر دیاں ہون
 نہیں تو میں آپ کے عشق میں بحالت ناامیدی ضرور اپنی جان دے دوں گی اسہین چھوٹھ ذرا
 بھی نہیں ہ - ۶۸ براہمن نے کہا کہ اگر میری محبت تیرے دل میں ایسی ہی ہو اور تو مجھکو
 بدل مجھ پر قربان نہی تو تو کوئی تیرے ایسی مجھکو بتلا دے کہ جس سے میں اپنے گھر پہنچ جاؤں -
 ۶۹ برودھنی نے کہا کہ آپ اپنے گھر بیشک جائیے گا پر کچھ دن میرے ساتھ عیش کر لیجے
 ۷۰ براہمن نے کہا کہ اے برودھنی براہمن کے واسطے شاستر میں عیش کرنا نہیں لکھا
 ہے براہمن کی کر یا پر ہیز گاری کے ساتھ ہی اگرچہ اس دنیا میں بھارت تکلیف دینے
 والی معلوم ہوتی ہ مگر بڑوگ یعنی عاقبت میں بڑا سکھ دینے والی ہے - ۷۱ برودھنی نے
 کہا کہ اے براہمن اگر اسوقت تم میرے ساتھ صحبت کر کے میری جان بچاؤ تو تمکو سب
 دھرمون کا پھل حاصل ہوگا - ۷۲ اور میرے ساتھ صحبت کرنے سے دو باتون کا فائدہ
 ہر ایک تو جان بچانے کا اور دوسرے خون ناحق سے بچنے کا کیونکہ اگر میری مراد پوری
 ہوتی تو میں ضرور مر جاؤں گی اور خون ناحق تمھاری گردن پر ہوگا - ۷۳ براہمن نے
 کہا کہ مجھکو گرو کی آگیا ہ کہ برائی عورت سے پرہیز رکھنا اور میں گرو کے حکم کے خلاف نہیں
 کر سکتا خواہ تو مرے یا جیتی رہی - ۷۴ مارکنڈے جی کہتے ہن کہ وہ براہمن یہ باتیں بیکر
 اور ماتھ منہ دھو کر پوٹر ہو کر گھر کے دیوتا لگن جو ہن انکا دھیان کر کے کہنے لگا - ۷۵ کہ اے گھر دیوتا لگن
 اپنے اچھے کرم میں وہ سب آپ ہی سے پیدا ہن اور آپکو ہوم دینے سے سب لگن آسودہ
 ہوتی ہن - ۷۶ آپ ہی کے آسودہ ہونے سے سب دیوتا لوگ آسودہ ہو کر اس زمین
 پرانی سے سیراب کرتے ہن کہ جس سے اُن پیدا ہوتا ہن اور اُس اُن سے سب لوگ جیتے
 ہن - ۷۷ اے گھر کے دیوتا لگن اگر یہ بات میری سچ ہو تو میں سورج ڈوبنے سے
 پہلے اپنے گھر پہنچ جاؤں - ۷۸ اور جو وقت بید کے موافق کرم کرنے کے ہن اُن

श्री. बरूथिनी देखते ही रही और ब्राह्मण कुमार बड़ी शीघ्रगति से वहाँ से चल दिया तब बरूथिनी उसके विरह के शोक में कामदेव के बेग से निश्वास होकर काँपने लगी ॥ ५ ॥

मू. ततः क्षणेनैव तदानिजगेहमवाप्यतः । यथा
प्रोक्तं हि जश्रेष्ठश्चकार सकलाः क्रियाः ॥ ६ ॥

श्री. और ब्राह्मण तो उसी क्षण अपने घर पहुँचकर अपनी सम्पूर्ण क्रिया जो वेद में कही है उसको किया ॥ ६ ॥

मू. अथ साचारुसर्वाङ्गी तत्रासत्तात्म मानसा ।
निश्वासपरमानिन्येदिनशेषं तथा निशां ॥ ७ ॥

श्री. और वह सर्वाङ्ग सुन्दरी बरूथिनी उस ब्राह्मण कुमार के प्रेम में विह्वल हो लम्बी लम्बी सासें लेने लगी इसी तरह दिन का अन्त हो गया और रात्रि हुई ॥ ७ ॥

मू. निश्वासन्त्यनवद्याङ्गी हाहेति स दती मुहुः । म
न्दभाग्येति चात्मानं निनिन्दमदिरक्षणा ॥ ८ ॥

श्री. और वह सुन्दरी ऊँचा सास लेले कर हा हा कह कह कर बारम्बार रोती थी और अपनी कमनसीबी और अपनी पुरावा अवस्था को धिक्कार करती थी ॥ ८ ॥

मू. नविहारेन चाहारि रमणीयेन वा वने । न कन्दरे
पुरम्येषु साववन्धतदारतिं ॥ ९ ॥ ९ ॥

श्री. और अहार और विहार और वह रमणीय वन और कन्दर और इत्यादि उसकी आँखों में काँदा के समान मालूम हो जाता था ॥ ९ ॥

मू. चकार रममाणो च चक्रवाक युगे स्पृहां । मुक्ता
तेन वशरोहानि निन्द निज यौवनं ॥ १० ॥

श्री. जैसे चक्रवाक के विरह में चकई दुखी होती है उसी तरह वह सुन्दरी दुखी हो अपनी जवानी पर अफसोस करती थी ॥ १० ॥

मू. कागताहमिमंशैलंदुष्टदैववलात्कृता । कच
प्राप्तः समेदृष्टेर्गोचरं तादृशो नरः ॥ ११ ॥

श्री. और यह कहती थी कि मैं बड़ी अभागिनी हूँ कि इस पर्वत
पर आई और ऐसे निर्दयी मनुष्य से भेंट हुई ॥ ११ ॥

मू. यद्यद्यसमहाभागेन मे सङ्गमुपैष्यति । तत्
कामाग्निरवश्यं मांसययिष्यति दुःसहः ॥ १२ ॥

श्री. कि जिसने मेरी आज्ञा पूरी न की अब मैं जानती हूँ कि काम
की दुःसह अग्नि मुझको अवश्य जलादेगी ॥ १२ ॥

मू. रमणीयममूद्यत्तत्सुकोकिलनिनादितं । ते
नहीनंतदेवैर्नदहतीवाद्यमामलं ॥ १३ ॥

श्री. और अब इस रमणीय वन में कोकिला इत्यादि की सुहावनी
बोलियाँ उस महाभाग बिना मुझको जलाती हैं ॥ १३ ॥

मू. मार्कण्डेय उवाच ॥ इत्थं सामदनाविष्टा
जगाम मुनिसत्तम । बद्धधेचतदारागस्त
स्यास्तस्मिन् प्रतिक्षां ॥ १४ ॥ १४ ॥

श्री. मार्कण्डेयजी कहते हैं कि हे मुनि इस तरह वह कामाक्षी वस्तु-
धिनी उस ब्राह्मण के रूपको ध्यान करके सारे प्रेम के बाकुल हुई ॥ १४ ॥

मू. कलिर्नाम्ना तु गन्धर्वः सानुरागे निराकृतः । त
या पूर्वमभूत्सोऽथ तदवस्थं दर्शितां ॥ १५ ॥

श्री. कि इतने में कलि नाम गन्धर्व जो पहिले वस्तुधिनी पर आ-
शक्त था और वस्तुधिनी ने उसका अन्याय किया था उस जगह
पर आया और वस्तुधिनी को देखा ॥ १५ ॥

मू. सचिन्तयामास तदा किन्वेषां गजगामिनी । नि
श्वासपवनस्नानागिरावत्र वस्तुधिनी ॥ १६ ॥

श्री. और अपने जीमें सोचने लगा कि यह गजगामिनी क्यों ऊषा

सास लेलेकर अपने सुन्दर बदन को गलाती है ॥ १६ ॥

मू. मुनिशापक्षनाकिंनुकेनचितकिंविमानिता ।

वाष्पवारिपरिक्लिन्नामियन्धनेयतोमुखं ॥ १७ ॥

श्री. या तो किसी मुनि ने इसको शाप दिया है या किसी मनुष्य ने इसका अपमान किया है जो इस तरह बिलिख कर रोती है ॥ १७ ॥

मू. ततःसदध्योसुचिरंतमर्थकौतुकात्कलिः। ज्ञा-
तवाश्वप्रभावेन समाधेसयथातथं ॥ १८ ॥

श्री. तब तो इस समाचार को जानते के वास्ते कलि ने ध्यान किया ध्यान करते ही सब हाल उसका जो कुछ था जान लिया ॥ १८ ॥

मू. पुनःसचिन्तया मासतद्विज्ञायमुनेःकलिः। म-
मोपपादितंसाधुभाग्यैरेतत्पुराकृतैः ॥ १९ ॥

श्री. तब प्रसन्न हुआ और कहने लगा कि यह बात जो ब्राह्मण ने की मेरे हक में बहुत अच्छी की और मेरे पूर्व जन्म का सुकृत उदय हुआ ॥

मू. मयैषासानुरागेन बहुसः प्रार्थितासती । निरा-
कृतवती सेयमद्यप्राप्या भविष्यति ॥ २० ॥

श्री. क्योंकि मैं ने पहिले बड़े अनुराग से इसके मिलने की इच्छा की थी और इसने मेरा अनादर किया था पर अब मैं जानता हूँ कि यह मुझको प्राप्त होगी ॥ २० ॥

मू. मानुषेसानुरागेयंत तत्र तदुपधारिणि । रंस्यते
मप्यसंदिग्धं किं कालेन करैमिनत् ॥ २१ ॥

श्री. क्योंकि अब इसका मन मनुष्य के रूप पर लोभित हुआ है तो मैं भी वैसा ही रूप मनुष्यका बनाऊँ तो यह मुझको प्यार करेगी ॥ २१ ॥

मू. मार्कण्डेय उवाच ॥ आत्मप्रभावेन तत्-
स्तत्स्वरूपं द्विजन्मनः । कृत्वा च चारयवास्ते
निषणा सावरूथिनी ॥ २२ ॥ २२ ॥ २२ ॥

श्री. मार्कण्डेयजी कहते हैं कि हे कौष्टुकि वह गन्धर्व अपने मन्त्र के जोर से उसी ब्राह्मण का रूप धारण करके जहाँ वह ब-
रूथिनी थी वहाँ जाकर घूमने फिरने लगा ॥२२॥

मू. सातदृष्ट्या वरारोहा किञ्चिदुत्फुल्ललोचना । स-
मेत्य प्राह तन्वर्द्धी प्रसीदेति पुनः पुनः ॥ २३ ॥

श्री. तब वह अप्सरा उसे देख कर बड़े हर्ष से उसके पास गई और
उसको वही ब्राह्मण समझ कर कहने लगी कि मुझपर प्रसन्न हो ॥२३॥

मू. त्वया त्यक्तान सन्देहः परित्यज्या मिजीवितं ।
तत्राधर्मः कष्टतरः क्रियालोपो भविष्यति ॥ २४ ॥

श्री. नहीं तो तुम्हारे बिरह में अपना प्राण त्याग करूंगी तब तुमको बड़ा
शेष होगा और सम्पूर्णा क्रिया किई हुई व्यर्थ हो जायगी ॥२४॥

मू. मया समेत्य रम्येऽस्मिन् महाकन्दरकन्दरे । मत्स-
रित्राण जन्धर्मे मवश्यं प्रतिपत्स्यसे ॥ २५ ॥

श्री. इस वास्ते मैं कहती हूँ कि मुझसे इस सुहावन स्थान और कन्दरामें
रमाण करके मेरे प्राण की रक्षा करौ तो तुमको बड़ा धर्म होगा ॥ २५॥

मू. आयुषः सावशेषं मे नूनमस्ति महामते । नि-
वृत्तत्तेन नूनं त्वं हृदया ह्लादकारक ॥ २६ ॥

श्री. और हे महामति मैं निश्चय जानती हूँ कि मेरी आयुर्वल जब पू-
री हो आई क्योंकि मेरे मन को आनन्द देने वाले तुम मुझसे छूटने हो ॥२६॥

मू. कलिरुवाच ॥ किं करोमि क्रियाहानिभ-
वत्यत्र सतो मम । त्वमप्येवं विधं वाक्यं व्र-
वीषितं नु मध्यमे ॥ २७ ॥ २७ ॥ २७ ॥

श्री. ये बातें सुनकर कलि नाम गन्धर्व बोला कि हे सस्माङ्गी मेरी कि-
स क्रिया की हानि होती है जो तू यह बात कहती है ॥ २७॥

मू. तदहं संकटं प्राप्नोयद्वीमि करोषितत् । यदि

स्यात्सङ्गमोमेद्यभासा सहनान्यथा ॥ २८ ॥

श्री. इस बात से मैं संकर में प्राप्त हूँ जो बात मैं तुमसे कहता हूँ वह का
तो अवश्य मेरा तेरा सङ्गम होगा इसमें सन्देह नहीं है ॥ २८ ॥

मू. बरुथिन्यु वाच ॥ प्रसीदय ब्रवीषित्वं त-
त्करोमि न ते मृषा । ब्रवीम्येतदनाशङ्क्य
ते कार्यं मया धुना ॥ २९ ॥ २९ ॥ २९ ॥

श्री. तब बरुथिनी बोली कि हे महाराज आप प्रसन्न हजिये और
जो कुछ कहिये मैं वही करूँ इसमें कुछ मूढ़ नहीं है यदि कोई
असाध्य बात भी कहियेगा तो उसको भी मैं कर सक्ती हूँ ॥ २९ ॥

मू. नाद्यसम्भोगसमयेदृष्टव्योऽहं त्वया बने । नि-
मीलिताक्ष्याः संसर्गस्तव सुभूमया सह ॥ ३० ॥

श्री. फिर गन्धर्व ने कहा कि हे सुभू जब मैं तुमसे रति करूँ उस
समय जो तू अपनी आँखें बन्द कर ले और मुझे देखे नहीं तब मैं
तुमसे गमन कर सक्ता हूँ नहीं तो नहीं ॥ ३० ॥

मू. बरुथिन्यु वाच ॥ एवं भवतु भद्रं ते यथे-
च्छसितयास्तु तत् । मया सर्वप्रकारं हि व-
शे स्थेयं तवाधुना ॥ ३१ ॥ ३१ ॥ ३१ ॥

श्री. यह सुनकर बरुथिनी बोली कि जो आप कहते हैं वही मैं
करूँगी क्योंकि इस समय हर तरह से मैं आपके वश हूँ ॥ ३१ ॥

इति श्रीमार्कण्डेय पुराणे स्वारी-
विषे मन्वन्तरे नाम ॥

॥ ६२ ॥

اَوَہیاے باسٹھ

۱۔ مارکنڈے جی کہتے ہیں کہ براہمن کمار کی یہ بات سنتے ہی گھر کے دیوتا اگن اس کے جسم میں آہنچے۔ ۲۔ براہمن کے جسم میں اگن دیوتا کے آنے سے وہ ایسا نظر آتا تھا کہ گویا ہم تن شعلہ پر اور اس شعلہ کے اندر آگ کی ایک خوبصورت سی تصویر ہو کہ جسکی روشنی سے وہ تمام جگہ روشن ہو رہی ہو۔ ۳۔ جب ایسا تاج وان روپ (نورانی شکل) اس براہمن کا ہو گیا تو بروہتھی دیکھ کر اور بھی مست و مدہوش ہو گئی۔ ۴۔ پر براہمن تو اگن دیوتا کے بیجا پتہ ہونے سے اپنے گھر جانے کو مستعد ہوا۔ ۵۔ اور فوراً بروہتھی کی نظر سے غائب ہو گیا تب اسکی جدائی سے بروہتھی کا بدن غلبہ کا دیو سے کاٹنے لگا۔ ۶۔ اور پر براہمن کچھ دن باقی رہے یعنی قبل غروب آفتاب اپنے مکان پر پہنچ کر اپنی نیم و کریم میں مشغول ہوا۔ ۷۔ اور اس سندی نے براہمن کمار کے تصور میں آہ سرد کھینچ کر اس دن کو وہیں رات کر دیا۔ ۸۔ اور لمبی سانسین لے کر اور مائے مائے کمار روتی رہی اور اپنی بد نصیبی اور اپنی جوانی پر افسوس اور لعنت کرتی رہی۔ ۹۔ کھانا پینا سب چھوٹ گیا اور وہ باغ پر بہار اور پہاڑوں کی پرفضا گھاٹیاں اسکی آنکھوں میں مثل خار معلوم ہونے لگیں۔ ۱۰۔ جس طرح جھکاکے جدا ہو جانے سے جھکی بیقرار ہوتی ہو اسی طرح وہ بیقرار ہو کر اپنی جوانی پر افسوس کرنے لگی۔ ۱۱۔ اور کہنے لگی کہ میں بڑی بد نصیب ہوں کہ اس پہاڑ پر آئی اور ایسے ہیبت و بے درد سے ملاقات ہوئی۔ ۱۲۔ کہ جس نے میری ٹراد کو ٹوڑی نہ کی اب میں جانتی ہوں کہ کام دیو کی آگ مجھ کو جلا دیگی۔ ۱۳۔ اور اس بن میں کو کھلا وغیرہ کی سہاوائی بولیاں بغیر اس براہمن کے طبیعت کو رنج دینے والی ہوئیں۔ ۱۴۔ مارکنڈے جی کہتے ہیں کہ ہے من اس طرح بروہتھی غلبہ کا دیو سے بیقرار ہو کر اس براہمن کی صورت کا دھیان کر کے بہت بے چین ہوئی۔ ۱۵۔ کہ اتنے میں کل نام ایک گندھرب جو پہلے بروہتھی پر عاشق تھا اور بروہتھی کو اس سے انکار تھا اتفاقاً وہاں آیا اور بروہتھی کو دیکھ کر۔ ۱۶۔ اپنے جی میں کہنے لگا کہ یہ نازک بدن کیوں آہ گرم کھینچ کھینچ کر اپنے بدن کو گھلاتی ہے۔ ۱۷۔ یا تو کسی مہاتمانے اسکو بد عادی ہو کر یا کسی شخص نے اسکی بیقراری کی ہو یا اس طرح زار زار روتی ہو۔

۱۸۔ اب اُسے اس حال کے دریافت کرنے کے واسطے دھیان کیا دھیان کرنے سے سب
 حال بروقتی کا معلوم ہو گیا۔ ۱۹۔ تب خوش ہو کر اپنے دل میں کہنے لگا کہ یہ بات جو برا
 نے کی میرے حق میں بہت اچھی کی اور میرا لگ جہنم کا پُراں اُدی ہوا۔ ۲۰۔ کیونکہ میں نے پہلے بڑے شوق سے اس کی خوشی کی تھی
 اور اسے مجھے انکار کیا تھا اب مجھ کو یقین ہے کہ یہ میرے ہاتھ لگ جاوے گی۔ ۲۱۔ کیونکہ اب اس کا دل
 آدمی کی صورت پر فریفتہ ہوا ہے اور میں ویسی ہی صورت آدمی کی بدل کر اس کو اپنی محبت میں پھنسا
 لوں گا۔ ۲۲۔ چنانچہ وہ گندھرب اپنے منہ کے زور سے اُس پر اچھن کی صورت بن گیا اور
 جس جگہ بروقتی تھی اُس کے پاس گھونٹے پھرنے لگا۔ ۲۳۔ تب وہ اُس پر اس کو دیکھ کر
 اور وہی برا اچھن سمجھ کر بڑی خوشی سے اُس کے پاس آئی اور کہنے لگی کہ مجھے مہربانی کیجئے۔
 ۲۴۔ انہیں تو میں آپ کی جدائی میں اپنی جان دے دوں گی تب آپ کو بڑا عذاب ہوگا اور ب
 نیم دھرم آپ کا کیا ہوا مٹ جاوے گا۔ ۲۵۔ اس واسطے میں کہتی ہوں کہ آپ مجھ سے اُس پر بار
 و خوشنما کھائیوں میں صحبت کر کے میری جان بچا لیتے اس کا آپ کو بڑا ثواب ہوگا۔
 ۲۶۔ اور اے مہا بڑھ مان میں یقین جانتی ہوں کہ اب میری عمر ختم ہو آئی کیونکہ میرا
 دل خوش کر نیا لے آپ مجھے مہربان نہیں ہوتے۔ ۲۷۔ یہ سُکر وہ گندھرب جو برا
 کی صورت بنا ہوا تھا بولا کہ اے نازنین میرا نیم دھرم کس طرح مٹ جاوے گا جو تو کہتی ہو۔
 ۲۸۔ پر اس بات میں کچھ شک نہیں کہ اگر تو میرا کہنا کر گی تو البتہ مجھ کو میری صحبت
 ہوگی۔ ۲۹۔ بروقتی نے کہا کہ اے مہاراج آپ مہربان ہو کر جو کچھ حکم دیجئے وہ میں بجالاؤں
 اگر کوئی کام مشکل بھی کیسے گا تو میں اس کو ضرور کر سکتی ہوں اس میں کچھ شک نہیں ہے۔
 ۳۰۔ یہ سُکر برا اچھن صورت گندھرب نے کہا کہ اے نازنین جو وقت میں تجھ سے صحبت
 کروں اس وقت اگر تو اپنی آنکھیں بند کر لے اور مجھ کو نہ دیکھے تو البتہ میری صحبت مجھ کو
 نصیب ہو سکتی ہے نہیں تو نہیں۔ ۳۱۔ یہ سُکر بروقتی بولی کہ جس طرح آپ کہیں گے اسی
 طرح میں کروں گی کیونکہ میں تو آپ کے بس میں ہوں۔ فقط

मू. मार्कण्डेय उवाच ॥ ततः सह तया सोऽथ
रामगिरिसानुष । फुल्लकाननहृद्येषु म
नोजेषु सरः सुच ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

टी. मार्कण्डेयजी कहते हैं कि हे क्रीडुकि इसके उपरान्त वह गन्धर्व
उस बरूथिनी के साथ विश्राम स्थानों और पर्वतों और सानु यानी
कंगूरा और फूलेहुवे काननों और रमणीय सरोवरों में ॥ १ ॥

मू. कन्दरेषु चरम्येषु निम्नगा पुलिनेषु च । मनो
जेषु तथा न्येषु देशेषु मुदितो द्विज ॥ २ ॥ २ ॥

टी. और रमणीय कन्दरों और नदियों के किनारों और रमणीय देश
इत्यादि में बड़े आनन्द से विहार करने लगा ॥ २ ॥

मू. वह्निना धिष्ठितस्यासीद्यदुपन्तस्य तेजसा । अ
चिन्तयद्भोगकाले निमीलितविलोचना ॥ ३ ॥

टी. और हे मुनि वह बरूथिनी गन्धर्व के कहने से रति के स-
मय अपनी आँखें बन्द कर लेती थी परन्तु ध्यान उसी ब्राह्मण
कुमार की सूरत का रखती थी ॥ ३ ॥

मू. ततः कालेन सा गर्भमवाप मुनिस्ततम । गन्ध-
र्ववीर्य तो रूपं चिन्तनाञ्च द्विजन्मनः ॥ ४ ॥

टी. आखिर को उस गन्धर्व ब्राह्मण रूपी के वीर्य से कुछ दिन
बाद बरूथिनी गर्भवती हुई ॥ ४ ॥

मू. तां गर्भधारिणीं सोऽयं शान्तयित्वा बरूथिनीं ।
विप्ररूपधरो यातसाया प्रीत्या विसर्जितः ॥ ५ ॥

टी. तब वह ब्राह्मण रूपी गन्धर्व बरूथिनी की खातिर दारी और तस-
ली करके और प्रीति संयुक्त उससे आजा ले कर अपने घर गया ॥ ५ ॥

मू. यजेत बालोद्युतिमान्ज्वलन्निव विभावसुः । स्व-
रोचिर्भिर्यया सूर्यो भासयन् सकला दिशः ॥ ६ ॥

टी. गर्भ की अवधि बीतने उपरान्त बह्विनी के एक पुत्र का
निर्माण पैदा हुआ जिस तरह सूर्य अपने प्रकाश से द्यौ दि-
शा को प्रकाशित कर देते हैं ॥ ६ ॥

मू. सरोचिर्भिर्यथोभातिभास्वानिवसवालकः । त-
तः सरोचिरित्येवंनासास्यातोवभूवसः ॥ ७ ॥

टी. उसी तरह वह लड़का अपने तेज से सूर्य समान प्रकाशवान हु-
आ इससे उसका नाय सरोचि प्रसिद्ध हुआ ॥ ७ ॥

मू. ववृद्धे च महाभागे वयसानुदिनं तथा । गुणो धे-
श्च यथा बालः कलाभिश्च शलाच्छना ॥ ८ ॥

टी. और वह लड़का महाभाग युक्त पक्ष के चन्द्रमा के समान दिन
दिन बढ़ने लगा और बड़ा गुणवान् हुआ ॥ ८ ॥

मू. सजग्राह धनुर्वेदं वेदांश्चैव यथाक्रमं । विद्या-
श्चैव महाभागस्तदा यौवनगोचरः ॥ ९ ॥

टी. अर्थात् वह लड़का महाभाग धनुर्वेद और चारों वेद और
सम्पूर्ण विद्याओं को सीख कर जवान हुआ ॥ ९ ॥

मू. मन्दरादौ कदाचित्सवित्रं श्चारुचेष्टितः । ददर्श-
कान्तदा कन्या गिरिप्रस्थे भयानुरागं ॥ १० ॥

टी. एक दिन वह लड़का मन्दराचल पर्वत पर खेल कर रहा था वहाँ पर
एक कन्या को देखकर कि भय से आतुर हो रही है ॥ १० ॥

मू. त्रायस्वेति निरीक्ष्य न सा तदा वाक्यमब्रवीत् । मा-
भैषीरिति संप्राह भयविलुप्तलोचनां ॥ ११ ॥

टी. और उस कन्या ने इस लड़के को देखकर कहा कि हे महाराज
ज मेरी रक्षा करौ लड़का बोला कि तू मत डर ॥ ११ ॥

मू. किमेतदिति तेनोक्ते वीरवाक्ये महात्मना । त-
तः सा कथयामास श्वासाक्षेपसुताक्षरं ॥ १२ ॥

श्री. और वह लड़का बीर के समान उस कन्या के पास पहुँचा और कहने लगा कि तुम जिस बात का डर हो वह मुझ से कहो तब वह कन्या उसा स्वास लेकर बोली ॥ १२ ॥

मू. कन्योवाच ॥ अहमिन्दीवराव्यस्य सु-
ताविद्याधरस्य वै । नाम्नामनोरमाजा-
तासुतायां मरुधन्वनः ॥ १३ ॥ १३ ॥

श्री. कि मैं इन्दीवर नाम विद्याधर की लड़की हूँ मनोरमा मेरा नाम है और मेरी माता मरु धन्वा की बेटी है ॥ १३ ॥

मू. मन्दारविद्याधरासखीममविभावरी । कला-
वतीचाप्यपरासुतापारस्यवै मुनेः ॥ १४ ॥ १४ ॥

श्री. और मन्दार नाम विद्याधर की बेटी विभावरी नाम मेरी सखी है और दूसरी मेरी सखी का नाम कलावती है जो पारमु-
नि की कन्या है ॥ १४ ॥

मू. ताभ्यांसहमद्यायातं कैलाशतटमुत्तमं । तत्र
दृष्टो मुनिः कश्चित्तपसातिष्ठशकृतिः ॥ १५ ॥

श्री. एक दिन मैं उन दोनों सखियों के साथ कैलाश पर्वत के निकट गई तो वहाँ पर एक बड़े तपस्वी मुनि को देखा ॥ १५ ॥

मू. क्षुत्क्षामकाण्डे निस्तेजादूपाताक्षितारकः ।
मयावहसितः कुदः सतदामांशशापह ॥ १६ ॥

श्री. कि काण्ड उन का मारे व्यास के सूख रहा है और मारे भूख के अति निर्वल और आँखों में गड़हे पड़ रहे हैं मैं ने उनकी ऐसी सूरत दे-
ख कर हँस दिया तब उन्होंने ने क्रोध कर के शाप देते भये ॥ १६ ॥

मू. क्षामः क्षामस्वरः किञ्चित्कम्पिताथरपल्लवः ।
त्वयावहसितो यस्मादनार्यदुष्टतापसि ॥ १७ ॥

श्री. उसी निर्वल अवस्था में कि मारे नाताकृती के आवाज़ और और

कांपने से बोले कि हे दुष्टे जो तू मुझको इस दशा में देखकर हँसती है ॥ १७ ॥

मू. तस्मान्त्वामचिरेणैव राक्षसोऽभिभवष्यति । द-
त्तेशापे मत्सरवीभ्यांस्तु निर्भर्त्सितो मुनिः ॥ १८ ॥

टी. तो मैं शाप देता हूँ कि छोड़े दिन में तुम्हें राक्षस भोग करेगा यह शाप सुनकर मेरी दोनों सखियाँ उस मुनि की निन्दा करने लगीं ॥ १८ ॥

मू. धिक्ते ब्राह्मण्यमक्षान्त्या कृतन्ते निखिलं तपः ।
अमर्षणैर्धर्षितोऽसितपसानाति कर्षितः ॥ १९ ॥

टी. कि हे मुनि तुम्हारे ब्राह्मणत्व को धिक्कार है कि तुम में क्षमा नहीं है इस से तुम्हारा तप रूखा है और मालूम होता है कि तुम क्रोध से दुबले हो रहे हो कुछ तप से नहीं ॥ १९ ॥

मू. क्षान्त्या स्पृष्टवै ब्राह्मण्यं क्रोधसंयमनं तपः । एत-
त्तुत्वाददौ शपंत योरप्यमितद्युतिः ॥ २० ॥

टी. जिसके मन में क्षमा रहनी है वही ब्राह्मण है और क्रोध से दूर रहना यही तप है यह नसीहत भरी हुई बातें सुनकर उस तपस्वी ने मेरी दोनों सखियों को भी शाप दिया ॥ २० ॥

मू. एकस्याः कुष्टमद्भ्यः पुमाव्यन्यस्यास्तथाक्षयः । त-
योस्तथैव तज्जानं यथोक्तं तेन तत्क्षणात् ॥ २१ ॥

टी. कि तुम में से एक को तो कुष्ट और दूसरी को क्षय का रोग होगा इस शाप के देने ही एक को तो कुष्ट और दूसरी को क्षय का रोग उत्पन्न हो गया ॥ २१ ॥

मू. समाप्येनं महद्दक्षः समुपैति पदानुगं । न श्रु-
णोमि महानादं तस्यादूरेऽपि गर्जतः ॥ २२ ॥

टी. और मुझको भी एक राक्षस पकड़ने को चला जाता है समीप ही तो गज रहा है क्या आप उसकी आवाज़ नहीं सुनते हैं ॥ २२ ॥

मू. तृतीयमद्यदिवसंयन्मेष्टनमुच्चति। अस्त्र
ग्रामस्यसर्वस्यहृदयग्राहमस्तिमे ॥ २३ ॥

श्री. आज तीन दिन हुवे कि वह मेरे पीछे पड़ा हुआ है किसी
तरह मेरा पिण्ड नहीं छोड़ता और मेरे पास सम्पूर्ण अस्त्रों का
हृदय मौजूद है ॥ २३ ॥

मू. तं प्रयच्छामि मां रक्षरक्षसोऽस्मान्महामते। प्रा-
दात् स्वायम्भुवायादौ स्वयं रुद्रः पिनाकधृक् ॥ २४ ॥

श्री. हे महामति उस हृदय को मैं आप के हवाले करती हूँ उस
त इस राक्षस को मारकर मुझे बचाइये यह अस्त्र हृदय स्वायम्भुव
मनु को पहिले पिनाकधारी महादेवजी ने दिया था ॥ २४ ॥

मू. स्वायम्भुवो वशिष्ठाय सिद्धवर्य्याय दत्तवान्। तेना-
पिदन्तं मन्मानुः पित्रे चित्रायुधाय वै ॥ २५ ॥

श्री. और उन्होंने ने सिद्ध वशिष्ठ को दिया और वशिष्ठ ने मेरे ना-
ना चित्रायुध को दिया ॥ २५ ॥

मू. प्रादादौ ब्राह्मिकं सोऽपि मत्पित्रेश्वशुरः स्वयं। म-
यापिशिक्षितं वीरसकाशादालयः पिनुः ॥ २६ ॥

श्री. और यही हृदय मेरी माता के विवाह में चित्रायुध ने मे-
रे पिता को दिया है वीर उसी हृदय को वालावस्थामें मैं ने
अपने पिता से पाया ॥ २६ ॥

मू. हृदयं सकलास्त्राणामशेषरिपुनाशनम्। तदि-
दं गृह्यतां शीघ्रमशेषास्त्रपरायणां ॥ २७ ॥

श्री. और यह सम्पूर्ण अस्त्रों का हृदय जो सब शत्रुओं का नाश करनेवाला
है इसको आप लीजिये यह सब हथियारों का काम देता है ॥ २७ ॥

मू. ततो जहि दुरात्मानमेनं ब्रह्मसमागत
म् ॥ २८ ॥ २८ ॥ २८ ॥ २८ ॥

श्री. इसी से इस दुष्टात्मा राक्षस को जल्द मारिये कि जो ब्राह्मणों के शाप से मेरे पीछे पड़ा है ॥ २८ ॥

मू. मार्कण्डेय उवाच ॥ तथोत्पुक्ते ततस्तेन
वार्युस्पृश्य तस्य तत् । अस्त्राणां हृदयं प्रा-
दात्सरहस्य निवर्तनं ॥ २९ ॥ २९ ॥ २९ ॥

श्री. मार्कण्डेय जी कहते हैं कि हे क्रौंष्टुकि तब वह लड़का बोला कि वह अस्त्रहृदय मुझे दो तब मनोरमा ने हाथ में जल लेकर वह हृदय रहस्य निवर्तन समेत दे दिया ॥ २९ ॥

मू. एतस्मिन्नन्तरे राक्षस तदा भीषणाकृतिः । नर्द
मानो महानादमाजगाम त्वरान्वितः ॥ ३० ॥

श्री. कि इतने में वह राक्षस भयावनी सूरत गज्जता हुआ आपहुँचा ३०

मू. मया भिभूता किं नारा मुपैषिदुत मे हि मे । भक्ष्या
य किञ्चिरेणेति बुवाणं तं ददर्श सः ॥ ३१ ॥

श्री. और कहने लगा कि मेरे डर से कोई नेरी रक्षा नहीं कर सकता है तू जल्द मेरे पास आव नही तो मैं तुम्हें खा जाऊँगा इस तरह कहते हुवे उस राक्षस को जब स्वरोचि ब्राह्मण ने देखा ॥ ३१ ॥

मू. स्वरोचिश्चिन्तया मासदृष्टा तं समुपागतं । गृह्णा
त्वेव चः सत्यं तस्यास्त्विति महा मुनेः ॥ ३२ ॥

श्री. तो अपने मन में सोचने लगा कि जो इसको राक्षस पकड़ ले जाय तो उस महामुनि का वचन सत्य हो ॥ ३२ ॥

मू. जग्राह समुपेत्यैनां त्वरया सोऽपि राक्षसः । त्राहि
त्राहीति करुणं विलपन्ती सुमध्यमां ॥ ३३ ॥

श्री. तात्पर्य यह है कि उसी समय उस राक्षस ने मनोरमा को पकड़ लिया तब वह त्राहि त्राहि कर रोने लगी ॥ ३३ ॥

मू. ततः स्वरोचीः संक्रुद्धश्चाडास्त्रमति भैरवं ।

दृष्टानिवेश्यतद्रक्षोददर्शनिमिषेक्षणः ॥ ३४ ॥

टी. तब तो मनोरमा का बिलाप सुनकर स्वरोचि ने क्रोध करके मनोरमा का दिया हुआ अति प्रचाड हृदय उस राक्षस की तरफ चलाया ॥ ३४ ॥

मू. नदाभिभूतः सतदातामुत्सृज्य निशाचरः । प्रसी-
दशाम्यतामस्त्रयतांचेत्यमाषत ॥ ३५ ॥

टी. तब उस राक्षस ने डर कर मनोरमा को छोड़ दिया और हाथ जोड़कर कहने लगा कि हे महाराज अपने अस्त्र को समेट लीजिये और मुझ पर प्रसन्न होकर जो मैं कहता हूँ वह सुन लीजिये ॥ ३५ ॥

मू. मोक्षितोऽहं त्वया शापादतिघोरान्महाद्युते । प्र-
दत्तादतितीव्रेण ब्रह्ममित्रेण धीमता ॥ ३६ ॥

टी. हे महातेजस्वी आपने मुझको ब्रह्ममित्र नाम ब्राह्मण के शा-
प से बचा लिया ॥ ३६ ॥

मू. उपकारेन मे त्वतो महाभागाधिकोऽपरः । येना-
हं सुमहाकष्टान्महाशापादिमोक्षितः ॥ ३७ ॥

टी. और हे महाभाग आपकी तरह मेरा उपकार किसीने नहीं
किया क्योंकि आपने मुझे इस कष्ट से बचा लिया ॥ ३७ ॥

मू. स्वरोचिरुवाच ॥ ब्रह्ममित्रेण मुनिना किं नि-
मित्तं महात्मनां । शत्रुत्वं कीदृशश्चैव शापो
दत्तोऽभवत्पुरा ॥ ३८ ॥ ३८ ॥ ३८ ॥ ३८ ॥

टी. इतनी बात राक्षस की सुनकर स्वरोचि बोले कि हे राक्षस ब्रह्म-
मित्र मुनि ने किस वास्ते तुझको क्या शाप दिया था सो कहो ॥ ३८ ॥

मू. राक्षस उवाच ॥ ब्रह्ममित्रोऽष्टधा छिन्नमा-
युर्वेदमधीतवान् । त्रयोदशाधिकारञ्च प्रगृ-
ह्याथर्वणो दिजः ॥ ३९ ॥ ३९ ॥ ३९ ॥ ३९ ॥

टी. राक्षस ने कहा कि वह ब्रह्ममित्र ब्राह्मण अष्टाङ्ग सहित

आयुर्वेद और तेरह अधिकार संयुक्त अथर्वण वेद को पढ़े हुये हैं ॥ ३६ ॥

मू. अहञ्चेन्दीवराख्येतिख्यातोऽस्याजनकोऽभवां
विद्याधरपतेः पुत्रो नलनाभस्य खड्गिनः ॥ ४० ॥

टी. और मेरा नाम इन्दीवरहै मैं इस मनोरमा का पिता हूँ और मैं नलनाभ नाम विद्याधरपति का पुत्र हूँ ॥ ४० ॥

मू. मया च याचितः पूर्व ब्रह्ममित्रोऽभवन्मुनिः। आ-
युर्वेदमंशेषं मे भगवान् दानुमर्हसि ॥ ४१ ॥

टी. एक समय मैंने ब्रह्ममित्र मुनि के पास जाकर बड़े अभिलाष से कहा कि मुझे आयुर्वेद पढ़ा दीजिये ॥ ४१ ॥

मू. यदा तु बहुशो वीरप्रसयावनतस्य मे। न प्रादा-
द्याचितो विद्यामायुर्वेदात्मिकां मम ॥ ४२ ॥

टी. यद्यपि मैंने बहुत तरह से उस वेद के पढ़ने के वास्ते उनसे विनय किया परन्तु उन्होंने ने न पढ़ाया ॥ ४२ ॥

मू. शिष्येभ्यो रदतस्तस्य मयान्तर्द्वानगेन हि। आ-
युर्वेदात्मिका विद्या गृहीता भूत दानघ ॥ ४३ ॥

टी. हे स्वरोचि तब वह मुनि जिस समय अपने शिष्यों को पढ़ाते थे उस समय मैं भी अन्तर्द्वान होकर आयुर्वेद पढ़ लिखा करता था ॥ ४३ ॥

मू. गृहीता यान्तु विद्यायां मासैरष्टाभिरन्तरात्।
ममातिहर्षादभवद्दातोऽतीव पुनः पुनः ॥ ४४ ॥

टी. इसी तरह छिपे छिपे आठ महीने में मैंने पढ़ लिया पढ़ने पर मुझे उस बात की बड़ी खुशी हुई तब मैं प्रत्यक्ष होकर बार बार हँसने लगा ॥ ४४ ॥

मू. प्रत्यभिज्ञाय मां हासान्मुनिः कोप समन्वितः।

विकम्पिकन्धराप्राहमामिदं परुषाक्षरं ॥ ४५ ॥

श्री. मेरे हंसने से मुनिजी पहिचान गये कि इसने इस तरह से वेद को पढ़ लिया है तब तो मुनि को ऐसा क्रोध आया कि मोरे क्रोध के उनका शरीर कांपने लगा और अत्यन्त कठोर वचन से कहने लगे ॥ ४५ ॥

मू. राक्षसेनैव यस्मान्मेत्वया दृश्येन दुर्मते । ह-
ताविद्यावहासश्च मामवज्ञाय वै कृतः ॥ ४६ ॥

श्री. कि हे दुर्बुद्धी राक्षस की तरह छिप कर तूने मेरी विद्या सीख लिया है और मेरा अनादर करके हंसता है ॥ ४६ ॥

मू. तस्मात्त्वं राक्षसः पापमच्छापेन निराकृतः । भ-
विष्यसि न सन्देहः सप्त रात्रेण दारुणः ॥ ४७ ॥

श्री. इसवासे मैं तुमको शाप देता हूँ कि निस्तन्देह तू सात रात के अन्दर राक्षस हो जायगा ॥ ४७ ॥

मू. इत्युक्ते प्रणिपाताद्यैरुपचारैः प्रसादितः । स-
मामाह पुनर्विप्रस्तत्क्षणान्मुदुमानसः ॥ ४८ ॥

श्री. जब इस तरह का शाप देना मुनि से मैंने सुना तो बहुत प्रणाम और श्रुष्टी करके उनको प्रसन्न किया तब वह मुनि प्रसन्न होकर मुझसे कहने लगे ॥ ४८ ॥

मू. यन्मयोक्तमवश्यन्तद्वा विगन्धर्वनान्यथा ।
किंतु त्वं राक्षसो भूत्वा पुनः संप्राप्यसे वपुः ॥ ४९ ॥

श्री. कि हे गन्धर्व जो कुछ मेरे मुख से निकल गया वह तो झूठ नही हो सक्ता अवश्य होगा परन्तु जब मैं तुमको यह वरदान देता हूँ कि तू राक्षस होकर फिर अपने शरीर को पावैगा ॥ ४९ ॥

मू. नष्टस्मृतिर्यदा क्रुद्धः स्वमपत्यञ्चिखादिषु । नि-
शाचरत्वं गन्तासि तदस्त्रानलतापितः ॥ ५० ॥

टी. यानी जब तू राक्षस और नष्टबुद्धी होकर क्रोध से अपनी लड़की को खाना चाहैगा उस समय किसी के आस की अग्नि से दग्ध हो जायगा ॥ ५० ॥

मू. पुनः संज्ञामवाप्य स्वामवाप्यसिनिजं वपुः । त-
यैव स्वमधिष्ठानं लोके गन्धर्व्यं संज्ञिते ॥ ५१ ॥

टी. तब फिर तू अपना शरीर और बुद्धि को पाकर गन्धर्व्य लोक में जावेगा ॥ ५१ ॥

मू. सो हं त्वया महाभाग मोक्षितोऽस्मान्महाभयात् ।
निशाचरत्वाद्यदीरतेन मे प्रार्थनां कुरु ॥ ५२ ॥

टी. नात्पर्य यह है कि हे महाराज मैं वही गन्धर्व्य हूँ जो इस समय तक राक्षस के शरीर को प्राप्त हो रहा था और अब आप ने मुझको इस महा भय से बचा लिया और राक्षसी भाव छुड़ा दिया मैं आपपर बहुत प्रसन्न हूँ मुझसे कुछ माँगिये ॥ ५२ ॥

मू. इमान्ते तनयां भार्यां प्रयच्छामि प्रतीच्छतां ।
आयुर्वेदश्च सकलस्त्वष्टाङ्गो यो मया धृतः ॥ मुनेः
स काशासंप्राप्तस्तंगृहीष्वमहामते ॥ ५३ ॥

टी. और मनोरमा अपनी लड़की को मैं आप को देना हूँ इसको ब्राह्मण कीजिये और आठौं तरह से सम्पूर्ण जो आयुर्वेद मैंने पढ़ा है उसको भी आप ग्रहण कीजिये ॥ ५३ ॥

मू. मार्कण्डेय उवाच ॥ इत्युक्त्वा प्रददौ विद्यां
सच दिव्याम्बरोज्ज्वलः । त्वग्भूषणधरो दि-
व्यं पुराणं व पुरास्थितः ॥ ५४ ॥ ५४ ॥ ५४ ॥

टी. मार्कण्डेयजी कहते हैं कि हे कौषुकि उस गन्धर्व्य ने इतनी बातें कहकर आयुर्वेद की विद्या सरोचि ब्राह्मण को दे दिया और आप सुन्दर माला और वस्त्र पहिनकर अपने पूर्वरूप में प्राप्त हुआ ॥

मू. दत्त्वा विद्यां ततः कन्यां सदा तु मुपचक्रमे । त-
माहं सान्ता कन्या जनिता रंस्वरूपिणी ॥ ५५ ॥

टी. जब कन्या को वेदोक्त विधि से दान करने का उपाय किया तब वह कन्या अपने बाप से कहने लगी ॥ ५५ ॥

मू. अनुरागो ममाप्यनता तातीव महात्मनि । दर्श-
ना देवसंजातो विशेषेणोपकारिणि ॥ ५६ ॥

टी. कि हे नात इनको देखने ही से इनकी प्रीति मेरे हृदय में समा गई है और जोकि ये महात्मा मेरे उपकारी हैं इस सबब से और भी मेरी आँखों में प्यारे हैं ॥ ५६ ॥

मू. किन्त्वेते मम सख्यो सौमत्सु ते दुःखपीडिते । अ-
तो नाभिलषे भोगान् भोक्तुमेते न वै समं ॥ ५७ ॥

टी. परन्तु जोकि ये दोनों सखियाँ मेरी दुःख से पीड़ित हो रही हैं इस कससा से मुझको भोग विलास कुछ नहीं भाता और न मैं करूँगी ॥ ५७ ॥

मू. पुरुषैरपि नो शक्य कर्तुमिदं नृशंसता । स्वभा-
वरुचिरैर्मादृक् कथं योषित्कारिष्यति ॥ ५८ ॥

टी. क्योंकि सखियों को जो मेरे ही सबब से इस दुःख में पड़ी हैं उनको दुःख में छोड़कर आप भोग विलास करना यह तो कोई क्रूर पुरुष भी न करेगा मैं स्त्री होकर किस तरह करूँ ॥ ५८ ॥

मू. साहं यथा ते दुःखार्त्ते मत्सु ते कन्यके पितः । तथा
स्थास्यामि तद्दुःखेन च्छोकानलतापिता ॥ ५९ ॥

टी. हे पिता जिस तरह ये दोनों सखियाँ मेरी दुःख में फँसी हैं उसी तरह मैं भी पछताव की अग्नि में जलती रहूँगी ॥ ५९ ॥

मू. स्वरोचि रुवाच ॥ आयुर्वेदप्रसादेन ते कारि-
ष्ये पुनर्नवे । सख्यो तव महाशोकं समुत्सृज्य
सुमध्यमे ॥ ६० ॥ ६० ॥ ६० ॥ ६० ॥

टी. यह बातें सुनकर स्वरोचि बोले कि हे कन्याली तू शीघ्र मत कर मैं ज्ञा-
युर्वेद के प्रसाद से तुम्हारी दोनों सखियों का नया रूप बना दूँगा ॥ ६० ॥

मू. मार्कण्डेय उवाच ॥ ततः पित्रास्य दत्तां
तां कन्यां सविधानतः । उपये मे गिरौ तस्मि-
न स्वरोचिश्चाह लोचनां ॥ ६१ ॥ ६१ ॥ ६१ ॥

टी. मार्कण्डेयजी कहते हैं कि हे कौटुकि जब उस गन्धर्व ने ज्ञा-
पनी कन्या मनोरमा को स्वरोचि ब्राह्मण को दे दिया तब स्वरोचि ने
उसी पर्वत पर विधि के अनुसार उस से विवाह किया ॥ ६१ ॥

मू. दत्तां नुतां तदा कन्यामभिधान्य च भाविनीं । ज-
गाम दिव्ययागत्यागन्धर्वः स्वपुरन्ततः ॥ ६२ ॥

टी. बाद इसके मनोरमा के पिता ने उन दोनों की खानिरदारी और
तसल्ली की और ज्ञाप विमान पर चढ़ कर गन्धर्व लोक को चले गये ॥ ६२ ॥

मू. सचापि सहितस्तन्या तदुद्यानन्तदाययौ । क-
न्यकायुगलं यत्र तच्छापाच्च गदातुरं ॥ ६३ ॥

टी. इसके बाद स्वरोचि महात्मा भी मनोरमा को साथ लेकर उ-
स उद्यान में गये जहाँ जहाँ पर वह दोनों सखियाँ शाप से रोगमु-
क्त आतुर पड़ी थीं ॥ ६३ ॥

मू. ततस्तयोः सतत्त्वज्जोरोगघ्नैरौषधैरसैः । चकार
नीरुजे देहे स्वरोचिर पराजितः ॥ ६४ ॥

टी. आखिर को उन दोनों सखियों के पास पहुँचे और रोग ना-
श करने वाली औषधियों के रस से स्वरोचि महात्मा ने उन दो-
नों को निरोग कर दिया ॥ ६४ ॥

मू. ततोऽतिशोभने कन्ये विमुक्ते व्याधितः शुभे । स्व-
कान्त्यो ज्योतिर्दिग्भागं चक्रान्ते तन्महीधरा ॥ ६५ ॥

टी. तब तो वह दोनों सखियाँ पहिले रूप से भी अत्यन्त सुन्दर

होगई और अपनी सुन्दरताई की ज्योति से उस पर्वत की द-
सौ दिशा को प्रकाशित कर दिया ॥ ६५ ॥

इति श्री मार्कण्डेय पुराणे स्वरोचिषे मन्वन्तरे नाम

॥ ६३ ॥

अध्याय ६३

१ - मार्कण्डेय जी کہتے ہیں کہ اے کروشنکی آخر کو وہ گندھرب اس بُروہتھی کے ساتھ رہا
اس پہاڑ کے اوپر خوشنماتالابون - ۲ اور پر بہار گھاٹیوں اور ندیوں کے کناروں اور
اچھی اچھی جگہوں میں عیش کرنے لگا - ۳ اور بُروہتھی اس گندھرب براہمن ہوتے کے کہنے
کے مطابق جماعت کے وقت اپنی آنکھیں بند کر لیتی تھی مگر وہ بیان اسی براہمن کی صورت کا
رکھتی تھی - ۴ آخر کو جب اس گندھرب براہمن صورت سے بُروہتھی حاطہ ہوئی - ۵ تب
وہ براہمن صورت گندھرب بُروہتھی کی ہر طرح سے تشفی کر کے محبت کے ساتھ اس سے خدمت ہو کر
اپنے گھر چلا گیا - ۶ بعد گزرنے ایام حمل کے بُروہتھی کے ایک لڑکا ذرا فی صورت پیدا ہوا
جس طرح آفتاب اپنی روشنی سے سب اطراف کو روشن کرتا ہوا نکلتا ہے - ۷ اسی طرح وہ لڑکا
اپنے سر پر کے بیج سے سورج کی طرح پرکاش و ان ہوا اس وجہ سے اس کا نام سورج مشہور
ہوا - ۸ اور وہ لڑکا مکمل سچے کے چندرمان کی طرح روز بروز بڑھنے لگا اور بڑا کتن و ان
ہوا - ۹ یعنی وہ بلند اقبال تیر اندازی کے فن اور سمیورن بنید بڈیا کو حاصل کر کے جوان
ہوا - ۱۰ ایک دن یہ جوان سندر اچل پہاڑ پر سیر کرنے گیا وہاں پر ایک کنیا کو دیکھا کہ چلی آتی ہے
اور اس کے چہرہ سے خوف و ہراس ظاہر ہے - ۱۱ چنانچہ وہ کنیا اس جوان کو دیکھ کر کہنے لگی کہ آ
مہاراج میری جان بچاؤ جو ان نے بہت دلاسا دے کر کہا کہ تو مت ڈر - ۱۲ اور وہ جوان
جوانمزدوں کی طرح اس کے پاس جا کر پوچھنے لگا کہ تجھے کس کا خوف ہے مجھ سے بیان کر تب

وہ کتیا (یعنی دختر) آہ سر دیکھ کر بولی کہ - ۱۳ میں ابھی بڑا دھڑکی لڑکی ہوں مگر
 میرا نام ہی اور میری ماما مڑھٹو کی بیٹی ہے - ۱۴ اور مندار نام بڑا دھڑکی بیٹی مسماہ
 بھاور سی میری سگھی بیٹی ہے اور میری دوسری سگھی کا نام کلاوتی ہے جو پارٹن کی لڑکی ہے -
 ۱۵ ایک دن ان دونوں سگھیوں کے ساتھ میں کیلاش پہاڑ کے کنارے گئی تو وہاں پر ایک
 بڑے تپستوی من کو دیکھا - ۱۶ کہ طلق انکی شدت پیاس سے سوکھ رہی ہے اور اسے جھوک
 کے بالکل بے طاقت اور آنکھوں میں حلقے پڑے ہیں میں نے اس صورت سے آنکھ دیکھ کر
 ہنس دیا تب انھوں نے غصہ کر لے - ۱۷ اسی حالت نا طاقتی میں کہ آواز اور اونٹھ آنکھ
 بسبب ضعف کے تھر تھراتے اور کانپتے تھے بول کر کہی ناؤ اگر تو مجھ کو اس مقام میں دیکھ کر ہنستی ہے -
 ۱۸ تو میں مجھ کو یہ سراپ دیتا ہوں کہ تھوڑے دن میں مجھ کو کوئی راجپس لے جائیگا میرا
 شکر وہ دونوں سگھیاں میری اس من کو شرمانے اور کہنے لگیں - ۱۹ کہ اے من بھار
 براہمن بنے پر دھکار ہے کہ تم میں ذرا بھی تحمل برداشت نہیں تمھاری یہ تپسیا سب بے
 فائدہ ہے کیونکہ تمھارے غصے نے دل بے ہوش ہو کر تپسیا سے نہیں - ۲۰ جس کے جی
 میں چھاپی ہو برداشت رہتی ہے وہی براہمن ہے اور غصے سے دور رہنا ہی عبادت ہے یہ نصیحت
 کی باتیں شکر اس تپستوی نے میری دونوں سگھیوں کو بھی سراپ دیا کہ - ۲۱ تم میں سے ایک
 تو کوڑھ کی بیماری میں اور دوسری چھٹی روگ میں مبتلا ہوگی اس سراپ کے دیتے ہی
 ایک کو تو کوڑھ (برص) اور دوسری کو چھٹی کا روگ پیدا ہو گیا - ۲۲ اور اسی میں
 کے سراپ سے میری چھٹی ایک مہاراجپس دھڑا اور میں اس کے در سے بھاگی چنانچہ بھاگے جھا
 بیان تک پہنچی ہوں اب وہ راجپس بھی گر جاتا ہوا چلا آتا ہے کیا آپ اسکی آواز نہیں سنتے
 میں - ۲۳ تین دن ہو گئے کہ وہ میرے چھپے پڑا ہوا کسی طرح نڈ نہیں چھوڑتا سب
 ہتھیاروں کا ہر دی میرے پاس موجود ہے - ۲۴ وہ ہر دی میں آپ کو دیتی ہوں اس
 سے اس راجپس کو مار کر میری جان بچائیے یہ ہتھیار پہلے سو بھوس کو دھکے دھاری تھے
 ہمارے دیو جی نے دیا تھا - ۲۵ اور انھوں نے سیدہ بشیشہ کو دیا اور بشیشہ جی نے میرے
 ماما مسمی جیتر ایدھ کو دیا - ۲۶ اور انھوں نے میری ماں کے بواہ میں میرے باپ کو
 دیا اور پھر اس ہتھیار کو میں نے لے لیا میں اپنے باپ سے پایا - ۲۷ اور یہ ہتھیار
 سب ہتھیاروں کی جان ہے اور سب دشمنوں کا نشان کرنا والا ہے اور سب ہتھیاروں کا کام دیتا ہے اسکو آپ لے لیں

۲۸۔ اس ہتھیار سے اس دُشت آتما را چھس کو جلد مار پیسے کہ جو برا مھن کے سر اُپ
 کی وجہ سے میرے پیچھے پڑا ہی۔ ۲۹۔ مار کڈے جی کہتے ہیں کہ اسے کمر و تشکی اس چو
 یعنی سر و ج نے جب اس ہتھیار کو اس کٹیا سے ماگاتب اس کٹیا نے ماتھ میں پانی لیکر
 کے ساتھ اس ہتھیار کو جان کے حوالہ کر دیا۔ ۳۰۔ کہ اتنے میں وہ را چھس غرناک
 صورت بھی گر قبا ہوا اپنی۔ ۳۱۔ اور کہنے لگا کہ کسی طاقت ہو کہ جو میرے خوف سے
 تیری حفاظت کر سکے تو جلد میرے پاس چلی آ نہیں تو تجھ کو کھا جاؤنگا جب اس طرح کہتے ہوئے
 اس را چھس کو سر و ج برا مھن نے دیکھا۔ ۳۲۔ تو دل میں سوچنے لگا کہ اگر اسکو چھس
 بکڑے تو اس تپتوی من کا سر اُپ دینا سح ہو جائے بعد اسکے دیکھا جایگا۔
 ۳۳۔ الغرض اسوقت اس را چھس نے اس کٹیا کو یعنی سر و ج کو بکڑ لیا تب وہ زار زار
 رونے لگی۔ ۳۴۔ اس کے رونے کی آواز سکر سر و ج برا مھن بڑے غصہ سے اس ہتھیار
 کو ماتھ میں لیکر را چھس کی طرف چلا۔ ۳۵۔ تب تو وہ را چھس سر و ج کو ہتھیار ماتھ میں
 لیے ہوئے دیکھ کر ڈرا اور سر و ج کو چھڑو دیا اور کہنے لگا کہ اے مہاراج اپنے ہتھیار کو روک
 لیجے اور مجھ پر ہر بان ہو کر جو میں کہتا ہوں وہ سن لیجے۔ ۳۶۔ کہ اب میں آپکا بہت شکریہ ادا
 ہوا کہ آپ نے مجھ کو برقمہ مہر نام برا مھن کے سر اُپ سے چھڑا لیا۔ ۳۷۔ اے بلند اقبال آپ
 کی طرح میرا آپکار کسی نے نہیں کیا کیونکہ آپ نے مجھے اس بڑے دکھ سے بچا لیا۔
 ۳۸۔ سر و ج برا مھن نے پوچھا کہ برقمہ مہر برا مھن نے مجھ کو کس واسطے سر اُپ دیا تھا اور کیا
 سر اُپ دیا تھا بیان کر۔ ۳۹۔ را چھس نے کہا کہ برقمہ مہر برا مھن یجر بید کو آٹھ انگشت
 پڑھے ہوئے تھا اور تیرہ طرح کے ادھکار کے ساتھ آٹھ بن بید کو پڑھے ہوئے تھا۔
 ۴۰۔ اور میرا نام ابھی برقمہ مہر میں اس سر و ج کا باپ ہوں اور نل نا بھ نام بڑا دھڑکاٹا ہوں
 ۴۱۔ ایک دن میں نے اسی برقمہ مہر میں کے پاس جا کر بہت عاجزی سے کہا کہ مجھ کو بھی یجر بید پڑھا دیجیے
 ۴۲۔ ہر چند میں نے بہت طرح سے اس بید کے پڑھانے کے واسطے کئے کہا مگر انھوں نے
 مجھ کو نہ پڑھایا۔ ۴۳۔ تب میں نے یہ ترکیب کی کہ جسوقت وہ من اپنے شاگردوں کو
 یجر بید پڑھانے سے اسوقت میں کسی جگہ چھپ کر سن لیا کرتا۔ ۴۴۔ ہم اس طرح میں نے
 آٹھ مہینے میں یجر بید کو پڑھ لیا اور اس بات کی خوشی مجھ کو ایسی ہوئی کہ ضبط نہ کر سکتا تب میں
 من کے سامنے جا کر بار بار کہنے لگا۔ ۴۵۔ میرے کہنے سے وہ من جان گئے کہ اسے بید

پڑھ لیا اور اس بات سے اُنکو ایسا غصہ آیا کہ مارے غصہ کے تمام بدن اُنکا کانپنے لگا اور
 نہایت سخت زبانی کے ساتھ مجھے کہنے لگے کہ - ۴۶ اسے بد عقل تو نے راجپس کی طرح
 چپ کر میری بدیا کو سیکھ لیا ہے اور میری حقارت کر کے ہنستا ہے۔ ۴۷ اس واسطے میں
 تجھکو سراپ دیتا ہوں کہ تو سات رات کے اندر بیشک راجپس ہو جاوے گا۔ ۴۸ جب
 اس طرح کا سراپ دنیا میں سے میں نے سنا تب میں نے بہت عاجزی و منت کر کے اُنکو خوش
 کیا جب وہ خوش ہوئے تو کہنے لگے کہ - ۴۹ اسے گندھرب جو کچھ میری زبان سے نکل
 گیا وہ تو بدل نہیں سکتا ضرور ہی ہوگا پر اب میں تجھے یہ بردان دیتا ہوں کہ تو راجپس ہو کر
 پھر اپنے اصلی جسم میں آوے گا۔ ۵۰ یعنی جب تو راجپس ہو کر بے عقلی اور غصہ سے اپنی لڑکی کو
 کھا جانا چاہیگا اسوقت کوئی شخص اپنے ہتھیار کی آگ سے تجھکو جلا دے گا۔ ۵۱ تب تو
 اپنے اصلی جسم اور اصلی عقل کو یا کر گندھرب لوگ میں جاوے گا۔ ۵۲ الغرض اسے بلند اقبال
 میں وہی گندھرب ہوں جو اب تک راجپس کے جسم میں تھا آپ نے مجھکو اس سخت عذاب
 سے چھڑا لیا اور راجپس بدھ بھی جو مجھ میں ہو گئی تھی وہ بھی جاتی رہی میں آپ سے بہت خوش
 ہوں آپ مجھے کچھ مانگیے۔ ۵۳ اور اس منور ما اپنی لڑکی کو آپ کے حوالہ کرتا ہوں اسکو
 اپنی زوجیت میں قبول کیجیے اور سمپورن بکر جید جو میں نے آٹھ طرح سے اس میں سے پڑھا
 ہے وہ بھی آپ کو دیتا ہوں کیجیے۔ ۵۴ مارکندے جی کہتے ہیں کہ ہر کس کو بھی اس گندھرب نے
 اتنی بات کہ کر بکر جید کی بدیا کو سرخ برائے کو دے دیا اور آپ عمدہ لباس اور زیور پہن کر
 اور اپنی اصلی صورت و سیرت میں آکر۔ ۵۵ اس کتیا یعنی منور نا کو بید کی بدھ کے موافق
 دان کرنا چاہا تب وہ کتیا بولی۔ ۵۶ کہ ہر پتا میں نے جسوقت سے اُنکو دیکھا ہے اسوقت
 سے انکی محبت میرے دل میں سما گئی ہے اور جو کہ یہ مہاتما میرے آپکار ہی ہوئے ہیں اس سے
 اور بھی میری آنکھوں میں پیار ہے ہیں۔ ۵۷ لیکن چونکہ یہ دونوں سکھیاں شہیلیاں
 میری بیماری کی تکلیف سے عاجز ہو رہی ہیں اس سبب سے مجھکو عیش و آرام کچھ نہیں بھاتا ہے
 ۵۸ کیونکہ سکھیوں کو جو کہ میرے ہی سبب سے اس مصیبت میں گرفتار ہوئی ہیں اُنکو دکھ میں
 بہت کر آپ عیش و عشرت کرنا یہ کام تو کسی بد آدمی سے بھی نہوگا میں کیونکر کروں۔
 ۵۹ اسے پتا جس طرح یہ دونوں سکھیاں میری اس مصیبت میں بیقرار رہیں گی اسی طرح
 میں بھی اپنے افسوس کی آگ میں جلا کر وں گی۔ ۶۰ یہ بات شکر سرخ برائے نے کہا کہ اسے

मू. मार्कण्डेय उवाच ॥ एवमस्त्विनितेनोक्ते
धर्मज्ञेन स्वरोचिषा । द्वितीया तु तदा कन्या
द्वंद्वचनमब्रवीत् ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥

श्री. मार्कण्डेयजी कहते हैं कि हे कौण्डिक स्वरोचि ने ये बातें सुन-
कर उस कन्या से अपना विवाह कर लिया और वह विद्याभीक्षी
ख ली तब दूसरी सखी भी स्वरोचि से बोली ॥ ४ ॥

मू. कुमारब्रह्मचार्यसितपारोनामपितामम । ब्र-
ह्मर्षिः सुमहाभागो वेदवेदाङ्गपारगः ॥ ५ ॥

श्री. कि हे कुमार मेरे पिता ब्रह्मचारी और ब्रह्मर्षि और वेद और
वेदाङ्ग के ज्ञानेवाले हैं नाम उनका पार है ॥ ५ ॥

मू. तस्य पुंस्को किला लापरमणीये मधौपुरा । अ-
जगामाप्सरोभ्यासं प्रख्याता पुञ्जिकस्तना ॥ ६ ॥

श्री. एक समय पर्वत के ऊपर कोकिलों की आवाज से रमणीय व-
सन्त ऋतु में पुञ्जिकस्त नाम अप्सरा उनके पास आई ॥ ६ ॥

मू. कामवक्तव्यतां नीतः स तदा मुनिपुङ्गवः । त-
त्संयोगेऽहमुत्पन्ना तस्यामत्र महावले ॥ ७ ॥

श्री. तब पारमुनि ने उसको देखकर कामाशक्त होकर उस अप्सरा
से भोग किया कि जिससे वह गर्भवती हुई और उसी पर्वत
पर मैं उससे पैदा हुई ॥ ७ ॥

मू. विहाय मांगता सा च मातास्मि निर्जने बने । बा-
ला मेकां मही पृष्ठे व्यालश्चापदसंकुले ॥ ८ ॥

श्री. तब वह अप्सरा मेरी माता उस निर्जन बने में कि जहाँ पर
पृष्ठ और व्याघ्र और सिंह बहुत थे मुझे अकेले छोड़ कर चली गई

मू. ततः कलाभिः सोमस्य वदन्ती भिरवक्ष्यं । आ-
प्यायमाना हरहो वदित्यानास्मि स नमः ॥ ९ ॥

टी. हे महाराज फिर तो मैं जिस तरह चन्दू मा कला कला करके दिन दिन बढ़ता है उसी तरह मैं दिन दिन बढ़ने लगी ॥ १६ ॥

सू. ततः कलावती ते तन्ममना समहात्मना । गृहीतायाः कृतं पित्रा गन्धर्वेण सुभानना ॥ १७ ॥

टी. और उसी अन्तर में एक गन्धर्व अचानक वहाँ आकर और मुझ को अपने घर लेजाकर पालने लगा और कला कला बढ़ने के सबब से मेरा नाम कलावती रक्खा ॥ १७ ॥

सू. नदत्ताहं तदा तेन याचितेन महात्मना । देवारिणालिना सुपुत्रस्ततो मे घातितः पिता ॥ १८ ॥

टी. तत्पश्चात् एक राक्षस ने मेरे पिता से मुझको माँगा पर उन्होंने ने न दिया तब उसने क्रोध करके जिस समय मेरे पिता नींद से सो गये उस समय शूल से मार डाला ॥ १८ ॥

सू. ततोऽहं मतिनिर्वेदादात्मन्या पादनोद्यता । निवारिता शम्भुपत्न्या सत्या सत्यप्रतिश्रवा ॥ १९ ॥

टी. उनके मर जाने से मेरा मन इकचारगी ऐसा उदास हुआ कि मैं अपने जी को आप मारने पर तैयार हुई उस समय शिव जी की स्त्री सतीजी ने आकर मुझको रोका ॥ १९ ॥

माशुक्मुमुभर्ता ते महाभागो भविष्यति । स्वरोचिर्नामपुत्रश्च मनुस्तस्य भविष्यति ॥ २० ॥

टी. और कहने लगी कि तू श्रेष्ठ मत कर स्वरोचि महाभाग तौ सा भी होंगे और उनके पुत्र मनु होंगे ॥ २० ॥

सू. आज्ञाञ्च निधयः सर्वे करिष्यन्ति तवावृताः । यथाभिलषितं वित्तं प्रदास्यन्ति च ते शुभे ॥ २१ ॥

टी. और हे सुन्दरी सम्पूर्ण निधि सब तरह से तेरी आज्ञा में रहेंगी और जो कुछ तू चाहैगी वह तुझको दूँगी ॥ २१ ॥

मू. यस्यावत्सेप्रभावेनविद्यायास्तां गृहाण मे । पद्मि
नीनामविद्येयं महापद्माभिपूजिता ॥ १५ ॥

टी. महापद्म से पूजित पद्मिनी नाम विद्या मैं तुमको देती हूँ
इस विद्या के प्रभाव से नवौ निधि नेरी आज्ञा में रहिकर जोकु
छ तू चाहैगी वह सब तुमको देगी ॥ १५ ॥

मू. इत्याहमांदक्षसुतासतीसत्यपरायणा । स्वरो-
चिस्त्वंध्रुवंदेवीनान्यथासावदिष्यति ॥ १६ ॥

टी. हे स्वरोचि इसतरह सतीजी ने मुझ से कहा है उनकी बात कि-
सी तरह मूढ़ नहीं हो सकती जोकि मुझको अब निश्चय होता
है कि वह स्वरोचि तुम्ही हो ॥ १६ ॥

मू. साहंप्राणप्रदायाद्यतांविद्यांस्वतथावपुः । प्रय-
च्छामिप्रतीच्छत्वंप्रसादिसुमुखोमम ॥ १७ ॥

टी. और वही कलावती मैं हूँ तुम मेरे स्वामी हो पद्मिनी ना-
म विद्या और अपना शरीर मैं आप को देती हूँ अङ्गीकार की-
जिये और मुझपर प्रसन्न हजिये ॥ १७ ॥

मू. मार्काण्डेय उवाच ॥ एवमस्त्वितितामाहस
तुकन्यांकलावतीं । विभावर्ग्यः कलाव-
त्याः स्निग्धदृष्ट्यानुमोदितः ॥ १८ ॥ १८ ॥ १८ ॥

टी. मार्काण्डेयजी कहते हैं कि इस बात के सुनने से स्वरोचि ने
विद्या और कलावती को ले लिया और विभावर्ग्य और कलाव-
ती की प्रीति में स्वरोचि ने बहुत सुख पाया ॥ १८ ॥

मू. जग्राहचततःपाणीसतयोरमरद्युतिः । नदत्सु
देवतूर्य्येषु नृत्यन्तीष्वप्सरः सुच ॥ १९ ॥

टी. और स्वरोचि ने देवताओं की तरह विधिपूर्वक उन दोनों के नृत्य-
अर्थात् विभावरी और कलावती से विवाह किया और उस विवा-

بھکھو و مان سے اپنے کھ لیجا کر پرورش کرنے لگا اور کلا کلا بڑھنے سے کلا و تی میرا نام
 کھا - ۱۱ - ایک دن ایک راجپس نے بھکھو میرے باپ سے مانگا پر انھوں نے نہ دیا تب
 اس نے غصہ میں اکر میرے باپ کو جسوقت وہ سو گئے تھے اسوقت کٹول یعنی برچی سے
 مار ڈالا - ۱۲ - انکے مرنے سے میرا جی پکا یک ایسا گھبرا یا کہ میں اپنی جان دینے پر مستعد ہوئی
 اسوقت شیوجی کی استری ستی جی نے اکر بھکھو خود کشتی سے باز رکھا - ۱۳ اور بھکھو سمجھنے
 لگین کہ تو سروج مت کر سروج مہا بھاگ تیرے سوامی ہونگے اور انکے پتر جو ہونگے
 وہ منج ہون گئے - ۱۴ اس طرح کی بڑھ تیرے حکم میں رہی اور جو دھن تو ان سے چاہی
 وہ بھکھو دیگی - ۱۵ مہا پدم سے پوجی ہوئی پد منی نام بڑیا میں بھکھو دتی ہون اس پر دیا کے
 بدلت نوو بڑھ تیرے حکم میں رہ کر جو کچھ تو چاہی وہ سب بھکھو دیگی - ۱۶ اسے سروج
 اس طرح ستی جی نے مجھ سے کہا ہوا انکا کننا کی طرح چھوٹھ نہیں ہو سکتا اب بھکھو یقین ہو کر وہ
 سروج نکھین ہو - ۱۷ اور میں بھی وہی کلا و تی ہون تم میرے پران ناتھ ہوا اس سے میں
 پد منی بڑیا کو اور اپنے کو تمھارے حوالہ کرتی ہون قبول کرو - ۱۸ یہ سنکر سروج نے اس
 بڑیا کو اور اس کلا و تی کو قبول کر لیا اور بیجا وری اور کلا و تی کی محبت میں سروج نے بہت
 سکھایا - ۱۹ اور دیوتاؤں کی طرح بدرھ کے موافق ان دونوں کننا یعنی بیجا وری اور
 کلا و تی سے بواہ کیا اس بواہ کی خوشی میں دیوتاؤں کوں نے باجا بجایا اور آتیسراؤں نے نچ
 کیا - فقہ -

१. और वहां पर पद्मिनी विद्या के प्रभाव से सब निधि बश में होकर
सम्पूर्ण भोग के रत्न और मधु और मधुर रस इत्यादि उनके
वास्ते प्राप्त रहते थे ॥ २ ॥

मू. स्वजोवस्त्राण्यलङ्कारान्गन्धाढ्यमनुलेपनं ।

आसनान्यनिशुभ्राणिकाञ्चनानियथेच्छया ॥ ३ ॥

टी. और वस्त्र-माला-भूषण-गन्ध-चन्दन-सुन्दर काञ्चन का आसन
और जिस वस्तु की स्वरोचि इच्छा करते थे ॥ ३ ॥

मू. सौवर्णानिमहाभागकरकानमाजनानिचान्त
याशय्याश्चविविधादिव्यैरास्तैर्नैर्युताः ॥ ४ ॥

टी. वह सब वस्तु और सोने के वर्तन और नाना प्रकार की शय्या
आदि सब वस्तु स्वरोचि के वास्ते वह निधि पहुँचाती थी ॥ ४ ॥

मू. एवं सताभिः सहितो दिव्यगन्धारिवासिते । रा-
मम्वरुचिर्भाषिर्भासिते वरपर्वते ॥ ५ ॥ ५ ॥

टी. इस तरह से उन तीनों स्त्रियों के साथ उस पर्वत पर जो फूलों की सुगन्धि में महक रहा था और अत्यन्त प्रकाशवान् था
स्वरोचि भोग विलास में रहा करते थे ॥ ५ ॥

मू. ताश्चापि सहते नानिलभिरमुदमुत्तमा । रम-
माणो यथा स्वर्गे तथा तत्र शिलोच्चये ॥ ६ ॥

टी. और वे स्त्रियाँ भी स्वरोचि के साथ आनन्द से प्रीति संयुक्त
रहती थीं जिस तरह स्वर्गलोक में इन्द्र क्रीड़ा करते हैं उसी तरह
उस पर्वत पर स्वरोचि क्रीड़ा करते थे ॥ ६ ॥

मू. कलहंसी जगदिकांचक्रवाती जलै सती । तस्य
तासाञ्चललिते समन्धे च स्पृहावती ॥ ७ ॥

टी. यह आपुस की प्रीति और क्रीड़ा करना स्वरोचि का उन स्त्रियों के
साथ देव कर एक हंसनी ने वैसी ही इच्छा अपने मन में रख कर एक

समय किसी जलचर चक्रवाक से कहने लगी ॥ ७ ॥

मू. धन्योऽयमतिपुण्योऽयं योऽयं यौवनगोचरः । द
यिताभिः सहैताभिर्भुक्ते भोगानभीप्सितान् । य

टी. कि यह स्वरोचि पुण्यवान् धन्य है जो इस जवानी में इन प्यारी
यों के साथ मनमाना भोग करता है ॥ ८ ॥

मू. सन्तियौवनिनः श्लाघ्यास्तत्पत्न्यो नानि शोभना
जगत्यामत्यकाः पत्यः पतयश्चातिशोभना ॥ ९ ॥

टी. क्योंकि इस संसार में बहुधा देखने में आया है कि अगर मर्द
जवान और खूबसूरत है तो औरत उसकी बदसूरत है और अ
गर औरत अच्छी है तो मर्द अच्छा नहीं ॥ ९ ॥

मू. आभीष्टकस्य चित्कान्ताकान्ताकस्याश्चिदीप्सि
तः । परस्परानुरागाद्व्यदाम्पत्यमतिदुर्लभं ॥ १० ॥

टी. और अगर स्त्री को पुरुष चाहता है तो पुरुष को स्त्री नहीं
चाहती है और अगर स्त्री चाहती है तो पुरुष नहीं चाहता दो
नों में समान प्रीति होना अति दुर्लभ है ॥ १० ॥

मू. धन्योऽयं दयिताभीष्टो ह्येताश्चास्यातिवल्लभाः ।
परस्परानुरागो हि धन्यानामेव जायते ॥ ११ ॥

टी. इसवास्ते यह स्वरोचि बड़ा भाग्यवान् है कि इसकी प्यारी
स्त्रियाँ इसको बहुत चाहती हैं और इसको भी वह स्त्रियाँ बहुत
प्यारी हैं और मैं कहती हूँ कि जिस स्त्री और पुरुष में पर
स्पर प्रीति है वह धन्य है ॥ ११ ॥

मू. एतन्निशम्य वचनं कलहंसी समीरितं । उवा
च चक्रवाकी तां नानि विस्मितमानसा ॥ १२ ॥

टी. यह बात हंसनी से सुनकर चक्रवाकी निर्भय होकर बोली ॥ १२ ॥

मू. नायं धन्यो यतो लज्जानास्य स्त्री सन्निकर्षतः ।

अन्यांस्त्रियमयंभुंक्तेनसर्वास्वस्यमानसं ॥ १३ ॥

टी. कि हे सिंहनी नृ कया तारीफ करती है इनको स्त्रियों में कुछ नज्जा नहीं क्योंकि ये कई स्त्रियों से भोग करते हैं और जब कई हैं तो इनकी प्रीति सब के साथ बराबर कभी न रहती होगी ॥ १३ ॥

मू. चित्तानुराग एकस्मिन्नधिष्ठानेयतःसखि । त-
तोहिप्रीतिमानेषुभार्यासुभविताकयं ॥ १४ ॥

टी. यानी जबकि चित्त इनका एक जगह नहीं रहता है तो हर एक स्त्रियों के साथ बराबर प्रीति क्यों कर रह सकती है ॥ १४ ॥

मू. एतानदयिताःपत्युर्नैतासांदयितःपवि । विनो-
दमात्रमेवैतायथापरिजनोऽपरः ॥ १५ ॥

टी. इससे मैं जानती हूँ कि ये स्त्रियाँ इनको प्यारी नहीं हैं और न स्त्रियों के ये प्रेमी हैं यह सब तुम्हारा रब्बाल ही रब्बाल है नहीं तो जिस तरह सब लोग हैं वैसे ही ये भी हैं ॥ १५ ॥

मू. एतासाञ्चयदीष्टोऽयंतत्किंप्राणानमुञ्चति । आ-
लिङ्गत्यपरांकान्तांध्यातोवैकान्तयान्यया ॥ १६ ॥

टी. यदि स्वर्गचि की सच्ची प्रीति एक स्त्री के साथ होती तो दूसरी स्त्री के साथ भोग विलास कभी न करते ॥ १६ ॥

मू. विद्याप्रदानमूल्येनविक्रीतोहोषभृत्यवत् । प्रव-
र्त्ततो नहिप्रेमसमंवह्नीषुतिष्ठति ॥ १७ ॥

टी. ये स्त्रियाँ इनको विद्यादान रूपी दाम देकर सेवक के तौर पर रखी दे हुवे हैं एक पुरुष की प्रीति कई स्त्रियों के साथ बराबर नहीं रह सकती ॥ १७ ॥

मू. कलहंशिपतिर्धन्योममधन्याहमेवच । यस्यै-
कस्याञ्चिरंचित्तयस्याश्चैकत्रसंस्थितं ॥ १८ ॥

टी. किन्तु हे हंसिनी मेरा पुरुष और मैं धन्य हूँ क्योंकि मैं एक हूँ और

मेरा पति भी एक है एक के साथ एक की प्रीति मदावनी रहती है ॥ १८ ॥

मू. मार्कण्डेय उवाच ॥ सर्वसत्त्वरुतज्ञोऽसौ
स्वरोचीरपराजितः । निशम्य लज्जितोऽध्यो
सत्यमेव हि नानृतं ॥ १८ ॥ १८ ॥ १८ ॥ १८ ॥

टी. मार्कण्डेयजी कहते हैं कि हे कौष्टुकि जोकि स्वरोचि सब जानव-
रों की बोलियाँ समझता था इस सब से उस हंसनी और चकई
की बातचीत सुनकर अपने मन में बहुत लज्जित होकर शोचने
लगा कि यह सब कहना इनका सच है ॥ १८ ॥

मू. ततो वर्षशते याते रममाणो महागिरौ । रममा-
णः समन्ताभिर्दृष्टो पुरतो मृगं ॥ २० ॥

टी. तात्पर्य यह है कि उन स्त्रियों के साथ उस पर्वत पर क्री-
ड़ा विहार करने हुये स्वरोचि को सौ वर्ष बीत गये एक दिन ए-
क मृग को स्वरोचि ने देखा ॥ २० ॥

मू. सुस्निग्धपीनावयवं मृगीयूथविहारिणं । वा-
सितोभिः स्वरूपाभिर्मृगीभिः परिकारितं ॥ २१ ॥

टी. कि अत्यन्त सुन्दर और दृष्ट पुष्ट है और सुन्दर सुन्दर मृ-
गियों के बीच में रहकर उन सब के साथ विहार करता है ॥ २१ ॥

मू. आकृष्टाणामुपद्रका जिघ्रन्तीस्ताप्तातो मृगीः ।
उवाच समृगो रामालज्जात्यागेन गम्यतां ॥ २२ ॥

टी. कि इतने में मृगियाँ उस मृग के शरीर में लिपट कर उसका
मुँह सूँघने लगीं तब उस हरिणाने हरणियों से कहा कि तुमलो-
ग मुझको निर्लज्ज बनाती हो तुम सब यहाँ से चली जाव ॥ २२ ॥

मू. नाहं स्वरोचीस्तच्छीलोनचैवाहं सुलोचनाः । नि-
र्लज्जा वदवः सन्ति तादृशास्तव गच्छत ॥ २३ ॥

टी. मैं स्वरोचि नहीं हूँ न स्वरोचि का ऐसा स्वभाव रखता हूँ स्वरोचि

की तरह निर्लज्य बहुत से मृग तुम लोगों को मिलेंगे वहाँ जाव ॥ २३ ॥

मृ. एकात्मने कानुगता यथा द्वाशास्पदं जने । अन्यै-
कामिस्तथैवैकभोगदृष्ट्या निरीक्षितः ॥ २४ ॥

री. एक स्त्री बहुत पुरुषों के साथ रहती है तो यह बड़ी हँसी की बात है और जो एक पुरुष बहुत स्त्रियों के साथ भोग करता है तो वह भी बड़ी निन्दा की बात है ॥ २४ ॥

मृ. तस्य धर्मक्रिया हानिरहन्यहनि जायते । स-
त्तोऽन्यभार्याचान्यकामाशक्तः सदैव सः २५

री. और उस पुरुष की क्रिया और धर्म प्रतिदिन नाश होता है जो परस्त्री के साथ सर्वदा आशक्त रहता है ॥ २५ ॥

मृ. यस्तादृशोऽन्यस्तच्छीलः परलोकपरादुःखः । तं
कामयत भद्रं बोनाहं तुल्यः स्वरोचिषा ॥ २६ ॥

री. इससे जो पुरुष ऐसा हो और ऐसा स्वभाव रखता हो और अपने परलोक से विमुख हो ऐसा पुरुष तुम लोग दूँड लेउ क्यों कि मैं स्वरोचि की तरह निर्लज्य नहीं हूँ ॥ २६ ॥

इति श्री मार्कण्डेय पुराणे स्वरो-
चिपेमन्वन्तरे नाम ॥
॥ ६५ ॥

اَوھیا کے پیسنہ

۱۔ مارکندے جی کہتے ہیں کہ سہر کر وشکی وہ سُرُوج دیوتاؤں کی طرح اُن تینوں
 استریوں کے ساتھ اُس پہاڑ پر جہاں کا صحرا پر فضا اور چشمہ رُوح افزا تھا عیش و عشرت
 میں بسر کرنے لگا۔ ۲۔ اور وہاں پر پڑھنی پڑیا کی وجہ سے سب ندھیاں اُسکے اختیار میں
 ہو کر سب طرح کی نعمتیں موجود کر دیتی تھیں۔ ۳۔ اور کپڑا اور مال اور زیور اور خوشبو اور
 اچھے اچھے سونے کے آسن اور جس چیز کی خواہش سُرُوج کرتے تھے۔ ۴۔ مثل طروف یا
 طلائی و طرح طرح کے فرش وغیرہ سب چیزیں سُرُوج کے واسطے ندھیاں موجود کر دیتی تھیں
 ۵۔ اس طرح سُرُوج اُن تینوں استریوں کے ساتھ اُس پہاڑ پر جو پھولوں کی خوشبو سے
 بسا ہوا اور بہت روشن تھا عیش و عشرت میں بسر کرتا تھا۔ ۶۔ اور وہ عورتیں بھی
 سُرُوج کے ساتھ بہت خوشی سے رہا کرتی تھیں جس طرح سورگ لوگ مین راجا اندر دن
 رات عیش و عشرت میں بسر کرتے ہیں اسی طرح اُس پہاڑ پر سُرُوج کا دن اور رات
 بسر کرتا تھا۔ ۷۔ سُرُوج کی یہ محبت اور عیش و عشرت اُن عورتوں کے ساتھ دیکھ کر ایک
 ہنسنی بینی مادہ ہنس ویسی ہی تھا اپنے دل میں کر کے ایک چکی مَرُغ آبی سے سے کہنے
 لگی۔ ۸۔ کہ یہ سُرُوج بڑا خوش نصیب ہے کہ اس جوانی میں ان پیاری عورتوں کے ساتھ
 اپنی مرضی کے موافق عیش کرتا ہے۔ ۹۔ کیونکہ اکثر دیکھنے میں آیا ہے کہ اگر مرد جوان اور خوبصورت
 ہو تو عورت اُسکی بد شکل اور بد باطن ہے اور اگر عورت اچھی ہے تو مرد اُسکا اچھا نہیں۔
 ۱۰۔ اور کمین عورت کو مرد پیار کرتا ہے اور عورت مرد کو نہیں چاہتی ہے اور اگر عورت چاہتی
 ہے تو مرد نہیں چاہتا دونوں طرف سے یکساں محبت ہونا بہت مشکل ہے۔ ۱۱۔ پس
 یہ سُرُوج بڑا خوش نصیب ہے کہ اسکی پیاری عورتیں اسکو بہت چاہتی ہیں اور اسکو بھی
 اسے عورتیں بہت پیاری ہیں میرا قول ہے کہ جس عورت و مرد میں باہم محبت ہو وہی خوش
 نصیب ہے۔ ۱۲۔ یہ باتیں ہنسنی سے سن کر چکی بولی۔ ۱۳۔ کہ اے ہنسنی تو سُرُوج کی
 بات تریف کرتی ہے اسکو عورتوں سے کچھ شرم نہیں کیونکہ یہ کئی عورتوں سے سابقہ رکھتا ہے
 اور جب کئی عورتیں میں تو سب کے ساتھ اسکی محبت بھی یکساں نہیں رہ سکتی۔

۱۴ یعنی جبکہ انکا دل ایک جگہ نہیں رہتا تو ہر ایک استری کے ساتھ کیساں محبت کیونکہ
 رہ سکتی ہے۔ ۱۵ اس واسطے میں جانتی ہوں کہ یہ استریاں انکو پیاری نہیں ہیں اور نہ یہ
 ان استریوں کے پیارے ہیں جبکہ سب لوگ ہیں ویسے ہی بے بھی ہیں تمہارا کہنا
 صحیح نہیں ہے۔ ۱۶ اگر سُرُوج کی سچی محبت ایک کے ساتھ ہوتی تو دوسری کی طرف بھی
 رخ نہ کرتے۔ ۱۷ یہ استریاں انکو بڑا دے کہ غلام زرخیز کی طرح رکھے ہوئے ہیں
 ایک مرد کی محبت کئی عورتوں کے ساتھ برابر نہیں رہ سکتی۔ ۱۸ بلکہ اسے تنہائی میں
 دھن ہوں اور میرا مرد دھن ہی کیونکہ وہ ایک ہی اور میں بھی ایک ہی ہوں ایک کی محبت
 ایک کے ساتھ ہمیشہ قائم رہتی ہے۔ ۱۹ مارکنڈے جی کہتے ہیں کہ ہر کوشش کی جو کہ سُرُوج
 سب جانوروں کی زبان سمجھتا تھا اسوجہ سے چنگی اور تنہائی کی بات چیت سنکراؤ
 سمجھکر اور بہت شرمندہ ہو کر اپنے دل میں کہنے لگا کہ انکا کہنا سب سچ ہے۔ ۲۰ طرح
 ان استریوں کے ساتھ بھوک بھاس کرتے ہوئے سُرُوج کو اس پر بہت پر شوہر س گزرتے
 ایک دن ایک ہرن کو دیکھا۔ ۲۱ کہ بہت خوبصورت اور موٹا تازہ ہے اور کئی خوبصورت سُرُوج
 کے بیچ میں رہ کر سب کے ساتھ بہا کر رہا ہے۔ ۲۲ کہ اتنے میں سب ہرنیاں اس ہرن
 کے جسم میں لپٹ کر اسکا بدن سونگھنے لگی ہیں ہرن نے لیا کہ تم سب مجھکو بے شرم بنایا جا رہی
 ہو تم سب اس جگہ سے چلی جاؤ۔ ۲۳ میں سُرُوج نہیں ہوں اور نہ سُرُوج کی ایسی
 عادت رکھتا ہوں سُرُوج کی طرح بے شرم بہت سے ہرن کھول جائیگے وہاں جاؤ۔
 ۲۴ اگر ایک عورت بہت سے مردوں کے ساتھ صحبت کرے تو بڑے شرم کی بات ہے اور اگر
 ایک مرد بہت سی عورتوں کے ساتھ صحبت کرے تو بھی شکایت کی بات ہے۔ ۲۵ اور
 اس مرد کا سب دھرم اور کرم روز بروز ناپ ہو جاتا ہے جو پرانی عورت پر ہمیشہ فریفتہ رہتا ہے
 ۲۶ پس جو مرد ایسا ہو اور ایسی عادت رکھتا ہو اور اپنی عاقبت سے پیچھے ہو ایسا مرد ہم
 تلاش کر لیں میں سُرُوج نہیں ہوں۔ فقط۔

मू. मार्काण्डेय उवाच ॥ एवं निरस्य मानास्ता
हरिणो नमृगाङ्गनाः । श्रुत्वा स्वरोची रात्मा-
नं मेने सपतितं यथा ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

टी. मार्काण्डेयजी कहते हैं कि हे क्रौञ्चकि हरिणियाँ और हरिसाकी इ-
न बातों को सुनकर स्वरोचि ने अपने को अत्यन्त निर्लज्य समझा ॥ १ ॥

मू. त्यागे चकार चमनः सतांसां मुनिसत्तम । च-
क्रवाकी मृग प्रोक्तो मृग चर्या जुगुप्सितः ॥ २ ॥

टी. और अपनी स्त्रियों से अलग हो जाने की इच्छा किया क्योंकि उस
हरिणा के बचन से एक तरह का उपदेश पाया जाता था ॥ २ ॥

मू. समेत्य ताभिर्भूयश्च वर्द्धमानं मनो भवः । आ-
क्षिप्तनिर्वेदकथो रमे वर्षशतानि षट् ॥ ३ ॥

टी. परन्तु उन स्त्रियों के साथ कामाशक्त हो फिर रति बिहार में स्वरो-
चि ने अपने मन को लगाया और वह ज्ञान कथा सब भूल गया और
उन सब के साथ छः सौ वर्ष तक उस पर्वत पर बिहार किया ॥ ३ ॥

मू. किन्नु धर्मा विरोधेन कुर्वन् धर्माश्रिताः क्रि-
याः । भुंक्ते स्वरोचीर्विषयांस्तदहताभिरुद्धारधीः ॥ ४ ॥

टी. परन्तु उस बिहार में भी धर्म पूर्वक अपनी सब क्रियाओं
को करता रहा ॥ ४ ॥

मू. ततश्च यत्तिरेतस्य त्रयः पुत्राः स्वरोचिषः । विज-
यो मेरुनन्दश्च प्रभावश्च महाबलः ॥ ५ ॥

टी. इसके बाद स्वरोचि के तीन पुत्र पैदा हुवे पहिले का नाम वि-
जय दूसरे का नाम मेरुनन्दन तीसरे का नाम प्रभाव जो महाबली हुवे ॥ ५ ॥

मू. मनोरमा च विजयं प्रासुते न्दीवरात्मजा । वि-
भावरी मेरुनन्दं प्रभावञ्च कलावती ॥ ६ ॥

टी. मनोरमा के गर्भ से विजय और विभावरी के गर्भ से मेरु

नन्दन और कलावती के गर्व से प्रभाव पैदा हुवे ॥ ६ ॥

मू. पद्मिनी नामया विद्या सर्वभोगोपपादिका।

सतेषां तत्प्रभावेन पिता चक्रे पुरत्रयं ॥ ७ ॥

श्री. तब स्वरोचि ने पद्मिनी विद्या के प्रभाव से उन तीनों के नाम ले तीन पुर बसाये ॥ ७ ॥

मू. प्राच्यान्तु विजयं नाम काशिरूपेन गोपरि। वि
जयाय सुताया दौ सददौ पुरमुत्तमं ॥ ८ ॥

श्री. उस पर्वत पर पूर्व दिशा में कामरूप विजय नाम उत्तम पुर बना कर पहिले पुत्र को दिया ॥ ८ ॥

मू. उदच्यामिरु नन्दस्य पुरीं नन्दवतीमिति। रव्या
तांचकार प्रोतुङ्गवप्रप्रकारमालिनीं ॥ ९ ॥

श्री. और उत्तर तरफ नन्दवती पुर जिस में बड़ी बड़ी इमारतें हैं दूसरे पुत्र को दिया ॥ ९ ॥

मू. कलावतीसुतस्यापि प्रभावस्य निवेशितं। पु
रन्तालमिति रव्या तं दक्षिणापथमाश्रितं ॥ १० ॥

श्री. और दक्षिण तरफ ताल नाम पुर बना कर तीसरे पुत्र अर्थात् प्रभाव को दिया ॥ १० ॥

मू. एवं निवेश्य पुत्रान् स्वपुरेषु पुरुषर्षभः। रे मे
ताभिः समविप्रमनोजेष्वतिभूमिषु ॥ ११ ॥

श्री. हे ब्राह्मण तात्पर्य यह है कि स्वरोचि अपने तीनों पुत्रों को अलग अलग पुर में बसा कर उन स्त्रियों के साथ पूर्ववत् अर्थात् बरस्तूरसाविक विहार करने लगे ॥ ११ ॥

मू. एकदानुगतोऽरण्ये विहरन् स धनुर्धरः। चक
र्षः धनुरालोक्य बराहमतिदूरगं ॥ १२ ॥

श्री. हे क्रीष्टु कि एक समय स्वरोचि धनु लेकर शिकार खेलने

के वास्ते एक बन में गये तो दूर से एक सुन्नर दिखाई दिया उसके मारने को धन्वा चढ़ाया ॥ १२ ॥

मू. अधाहकच्चिदभ्येत्यनंतदाहरिणाङ्गना । म-
येवपात्यतांवाणाप्रसीदेतिपुनःपुनः ॥ १३ ॥

टी. उसी समय उनके समीप आकर एक हरिणी बोली कि हे महा राज मुझ पर प्रसन्न होकर इस वाण से मुझको मारिये यही बात बार बार कहती थी ॥ १३ ॥

मू. किमनेनहतेनाद्यमामाशुविनिपातयत्व-
यानिपातितोवाणोदुःखान्मांमोक्षयिष्यति ॥ १४ ॥

टी. और सुन्नर के मारने से आपको क्या मिलेगा अगर मुझको मारिये तो मैं अपने दुःख से छूट जाऊँ ॥ १४ ॥

मू. स्वरोचिरुवाच ॥ नतेशरीरं सरुजमस्माभिं
रुपलस्यते । किन्नुतत्कारणं येन त्वं प्राणा-
नहानुमिच्छसि ॥ १५ ॥ १५ ॥ १५ ॥ १५ ॥

टी. हरिणी की यह बात सुनकर स्वरोचिने कहा कि तेरे शरीर में तो कोई रोग भी नहीं मालूम होता है फिर तू किस वास्ते अपनी जान देने पर मुस्तैद है ॥ १५ ॥

मू. मृग्युवाच ॥ अन्यास्वाशक्तहृदयेयस्मिंश्चे-
तः कृतास्पदं । ममतेन बिनामृत्युरौषधं
किमिहा परम् ॥ १६ ॥ १६ ॥ १६ ॥ १६ ॥

टी. हरिणीने कहा कि जिस पुरुष को मैं चाहती हूँ वह पुरुष मेरी दूसरी स्त्री के ऊपर आशक्त है और मेरा मन उसी पति में आशक्त है ऐसी बीमारी की दवा सिवाय मरने के दूसरी नहीं है ॥ १६ ॥

मू. स्वरोचिरुवाच ॥ कस्त्वानाभिलेषेद्भीरुसा-
नुरागासिकुत्रवा । यदिप्राप्तौ निजानप्राणान्

परित्यक्तुं व्यवस्यति ॥ १७ ॥ १७ ॥ १७ ॥

टी. स्वरोचि ने कहा कि हे हरिणी वह कौन पति तेरा है जो तुमको न ही चाहता और वह कौन पुरुष है जिसकी प्रीति तेरे चित्त में समा गई है कि जिसके सब से तू अपनी जिन्दगी से बेज़ार है ॥ १७ ॥

मू. मृग्युवाच ॥ त्वामेवेच्छामि भद्रं ते त्वयामे
ऽपहृतं मनः । वृणोम्यहमतो मृत्युं मयि वाणो
निपात्यतां ॥ १८ ॥ १८ ॥ १८ ॥ १८ ॥

टी. हरिणी ने कहा कि मैं तुम्हीं को चाहती हूँ तुम्ही ने मेरा मन हर लिया है और तुमको ज़ोरों से प्रीति है इस वास्ते मैं आपकी जिन्दगी से बेज़ार हूँ आप मुझको बाण से मार डालिये ॥ १८ ॥

मू. स्वरोचिरुवाच ॥ त्वं मृगी चञ्चला पाङ्गुनि-
ररूप धरावयं । कथं त्वया संयोगो मद्बिध-
स्य भविष्यति ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥

टी. यह सुनकर स्वरोचि ने कहा कि तू हरिणी चञ्चल नयनी है और मैं मनुष्य हूँ मेरा तेरा संयोग क्यों कर हो सक्ता है ॥ १९ ॥

मू. मृग्युवाच ॥ यदिसापेक्षितञ्चित्तं मयिते मां परि-
ष्वज । यदिवामाधुचित्तं ते करिष्यामि यथेप्सितम् ।
एतावता हं भवता भविष्याम्यतिमानिता ॥ २० ॥

टी. हरिणी ने कहा कि जो आप मुझपर प्रसन्न हो तो मुझ से भोग कर सक्ते हैं और जो आप मुझ से भोग करेंगे तो फिर जो कुछ आप चाहेंगे वह सब आप को प्राप्त होगा ॥ २० ॥

मू. मार्कण्डेय उवाच ॥ आलिलिङ्गततस्तां स-
स्वरोची हरिणाङ्गनां । तेन चालिङ्गिता सद्यः
सामूहिव्यवपुर्धरा ॥ २१ ॥ २१ ॥ २१ ॥ २१ ॥

टी. मार्कण्डेयजी कहते हैं कि हे जो मुझी स्वरोचि ने हरिणी के साथ

भोग करना स्वीकार करके उसके साथ जिस समय भोग किया उस समय वह हरिणी एक सुन्दरी स्त्री होगई ॥ २१ ॥

मू. ततः सविस्मया विष्टः कात्त्वमित्यभ्यभाषत। सा
चास्मै कथयामास प्रेमलज्जाजडाक्षरम् ॥ २२ ॥

री. तब स्त्रोचि बहुत प्रसन्न होकर उससे कहने लगा कि तू कैसी है तब वह स्त्री प्रीति सहित शरमाकर बोली कि ॥ २२ ॥

मू. उपहमध्यर्थिता देवैः काननास्यास्य देवता। उ-
त्पादनीयो हि मनुस्त्वया मयि महामते ॥ २३ ॥

री. मैं बन की देवता हूँ देवता लोगों ने मुझसे विनय करके कहा कि तुम मनु को पैदा करौ इस सबबसे मैंने आपसे विनय किया अब आप मेरे साथ भोग करके मनु को पैदा कीजिये ॥ २३ ॥

मू. प्रीतिमत्यां मयि सुतं भूलोकपरिपालकं । तमु-
त्पादय देवानां त्वामहं वचनाद्वदे ॥ २४ ॥

री. देवता लोगों के कहने से मैं आपसे कहती हूँ कि भूल्लोक का पालन करनेवाला पुत्र मुझसे आप पैदा कीजिये ॥ २४ ॥

मू. मार्कण्डेय उवाच ॥ ततः सतस्यांतनयं सर्व-
लक्षणलक्षितं । तेजस्विनमिवात्मानं जन-
यामास तत्क्षणात् ॥ २५ ॥ २५ ॥ २५ ॥

री. मार्कण्डेयजी कहते हैं कि हे क्रीष्टुकि उसी साइत स्त्रोचि ने उस हरिणी से भोग करके एक बहुत अच्छा पुत्र अपने समान तेजवान पैदा किया ॥ २५ ॥

मू. जातमात्रस्य तस्याथ देववाद्यानि सस्वनुः । ज-
गुर्गन्धर्वपतयो न नृतुश्चाप्सरोगणाः ॥ २६ ॥

री. उस पुत्र के पैदा होने के समय देवता लोग स्वर्ग में बाजा बजाने लगे और गन्धर्व लोग गान करने लगे और अ-

सा नृत्य काने लगीं ॥ २६ ॥

शु. शिपिचुः श्रीकरैर्नागाक्षयश्चतपोधना । देवा
श्च पुष्पवर्षश्च मुमुक्षुश्च समन्ततः ॥ २७ ॥

४. और नाग गए और तपस्वी ऋषिलोग उस लड़के के ऊपर जल छिड़कने लगे और सब देवता फूल वर्षाने लगे ॥ २७ ॥

तस्य तेजःसमालोक्य नाम चक्रे पिता स्वयं । द्यु-
निमानि नित्येनास्य तेजसाभासितादिशः ॥ २८ ॥

श्री. स्वरोचि ने उस पुत्र का नेत्र देख कर उसका नाम द्युतिमान
 रखा कि जिसके नेत्र से सब दिशा प्रकाशित हो रही थीं ॥ २८ ॥

सबालोद्युतिमान्नाममहाबलपराक्रमः । स्वरो-
चिषः सुतोयस्मात्तस्मात्स्वारोचिषोः भवत् ॥ २८ ॥

टी. वह धुतिमान नाम लड़का महा बली और अत्यन्त पराक्रमी
हुआ और जोकि वह लड़का स्वरोचि से पैदा हुआ था इस सब
व से उसका नाम स्वरोचि मशहूर हुआ ॥ २६ ॥

सू. सचापिविचरनरम्येकदाचिद्विरनिर्मरे। स्वरो
चीदृशेहंसंनिजपत्नीसमन्वितं ॥ ३० ॥

कि इस के बाद एक दिन स्वरोचि रमणीय पर्वत पर विचरते थे
वहाँ एक हंस और हंसिनी को देखा ॥ ३० ॥

उवाच सतदाहंसीं साभिलाषांपुनः पुनः । उप
संहीयतामात्माचिरं ते क्रीडितं मया ॥ ३१ ॥

और उसी समय हंसनी ने हंस से रति की चाहना की तो हंस ने कहा कि तू मुझे छोड़ दे तूरे साथ मैं बहुत दिन तक क्रीड़ा कर चुका । ३१।

किं सर्वकालं भोगैस्तेऽप्यसन् चरमं वयः । परि
त्यागस्य कालो मेतवचापि जले चरि ॥ ३२ ॥

स. सदा भोग करना न चाहिये जब वैक्रम भी बुढापे को पहुँचा इस

वासे हे जलचर अक मेरे और तेरे वियोग का समय आया ॥ ३२ ॥

मू. हंसुवाच ॥ अकालः कोहिभोगानां सर्व-
भोगात्मकं जगत् । यज्ञाः क्रियन्ते भोगार्थं
ब्राह्मणैः संयतात्मभिः ॥ ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥

री. यह बात सुनकर हंसनी बोली कि भोग किस काल में न करना चाहिये क्योंकि सम्पूर्ण संसार भोग मई है और ब्राह्मण लोग भोग ही के वास्ते अपने मन को खस्ति करके यज्ञ करते हैं ॥ ३३ ॥

मू. दृष्टादृष्टांस्तथाभोगान्वाञ्छमानाविवेकिनः ।
दानानिचप्रयच्छन्ति पूर्णाधर्माश्च कुर्वन्ते ॥ ३४ ॥

री. और इस लोक और परलोक में भोग ही की इच्छा करके ना ना प्रकार के दान और धर्मादिक करते हैं ॥ ३४ ॥

मू. सत्त्वंनेच्छसि किं भोगान् भोगश्चेष्टा फलं नृणां । वि-
वेकिनान्ति रश्चाच्च किं पुनः संयतात्मनां ॥ ३५ ॥

री. हे हंस तुम भोग की इच्छा क्यों छोड़ते हो बड़े बड़े विवेक और समाधिवाले मनुष्यों के कर्म का फल भोग ही है तुम्हारी कौन प्रतिष्ठा है तुम तो तिर्यक योनि हो ॥ ३५ ॥

मू. हंस उवाच ॥ भोगेष्वसक्तचित्तानां परमात्मा
न्वितामतिः । भविष्यतिकदा सङ्गमुपेताना-
ञ्च वन्धुषु ॥ ३६ ॥ ३६ ॥ ३६ ॥ ३६ ॥

री. हंस बोला कि हे हंसनी जिसका मन भोग और परिवार इत्यादि में आशक्त है उसकी बुद्धि परमात्मा में किस्तरह स्थिर रहसक्ती है ॥ ३६ ॥

मू. पुत्रमित्रकलत्रेषु सक्ताः सीदन्ति जन्तवः । सर-
पङ्काण्ये मग्ना जीर्णा बन्धवो गजा इव ॥ ३७ ॥

री. क्योंकि जो प्राणी पुत्र और मित्र और स्त्री में आशक्त हैं वह अवश्य दुःख पाते हैं जिसतरह जंगली बूढ़ा हाथी पानी पीने के वास्ते जब

जाता है तो सरोवर या नदी की दलदल में फँस जाता है ॥३७॥

मू. किंनपश्यसिवाभेजानसङ्गः स्वरोचिर्ष । आवा-
ल्यात्का मसंसक्तं मग्नस्नेहाम्युर्कहेमे ॥३८॥

श्री. हे कल्याणी क्या तू स्वरोच को नहीं देखती है कि सङ्ग ही
के सबब से बालावस्था से कामासक्त होकर स्नेह रूपी जल के
दलदल में फँस रहे हैं ॥३८॥

मू. यौवनेऽतीवभार्यामुताम्रतंपुत्रनपृषु । स्वरो
चिषोमनोमग्नमुद्गारंप्राप्यतेकुतः ॥३९॥

श्री. जब तक युवा अवस्था रही तब तक तो स्त्रियों के प्रेम में
फँसे रहे जब जो पुत्रादि हुवे तो उनके प्रेम में स्वरोचि का म-
न फँसा है इस दलदल से इनका निकलना बहुत कठिन है ॥३९॥

मू. नाहंस्वरोचिस्तुल्यः स्त्रीवाध्योवाजलेचरि । वि-
चेकबांश्चभोगानानि वृत्तोऽस्मि च साम्प्रतं ॥४०॥

श्री. हे जलचरि मैं स्वरोचि के समान स्त्री वश्य नहीं हूँ मुझको वि-
चार है इसवास्ते जब मैं भोग से निवृत्त होता हूँ ॥४०॥

मू. मार्कण्डेय उवाच ॥ स्वरोचिरेतदाकार्यजा-
तोद्देगः स्वगेरितं । अदाय भार्यास्तपत्तेयया
वन्यत्तपोवनं ॥ ४१ ॥ ४१ ॥ ४१ ॥ ४१ ॥

श्री. मार्कण्डेयजी कहते हैं कि हे कौटुकि इतना कहना उस
हंस का सुनकर स्वरोचि उद्विग्नमानस होकर और अपनी उन
स्त्रियों सहित विरक्त होकर दूसरे तपोवन में तप करने के
वास्ते चले गये ॥४१॥

मू. तत्रतप्तातपोघोरं सहताभिउरुदारधीः । ज-

श्री. गमलोकानमलानिवृत्ताखिलकल्मषः ॥४२॥

श्री. और वहाँ जाकर स्त्रियों समेत घोर तपस्या करके सम्पूर्णा

۱۳ | تو اسوقت یکایک ایک ہر نی مروج کے پاس آکر کھنے لگی کہ اے مہاراج اس تیر سے
مجھی کو ماریے یہ بات بار بار مروج سے کہتی تھی۔ ۱۴ | اور یہ بھی کہتی تھی کہ سور کے مارنے
سے اکیو کیا فائدہ ہے مجھے ماریے تو میں دگھ سے جھوٹ جاؤں۔ ۱۵ | ہرنی کی یہ بات سنکر
مروج نے کہا کہ تیرے بدن میں تو کسی طرح کا آزار بھی نہیں معلوم ہوتا پھر تو اپنی جان پر
کو کیوں متددی۔ ۱۶ | ہرنی نے کہا کہ جس مزد کو میں اپنا شوہر بنایا چاہتی ہوں وہ دوسری
عورت پر فریفتہ ہے اور میرا دل اسی پر فدا ہے پس ایسے مرض کی دوا سوا سے موت کے
اور کچھ نہیں ہے۔ ۱۷ | مروج نے کہا کہ اے نیکوئی وہ کون شخص ہے جسکی محبت تیرے
دل میں سمائی ہوئی ہے اور وہ تجھ کو نہیں چاہتا کہ جسکے سبب سے تو اپنی زندگی سے ہیزاری
۱۸ | ہرنی نے کہا کہ میں تمھیں کو چاہتی ہوں تمھیں نے میرا من ہر لیا ہے جو کہ تمکو اور وہ سے
محبت ہے اس واسطے میں اپنی زندگی سے ہیزاری ہو کر کہتی ہوں کہ اب تم مجھ کو مار ڈالو۔
۱۹ | مروج نے کہا کہ تو حیوان ہے اور میں انسان مجھے تجھے کون مناسبت ہے۔ ۲۰ | ہرنی نے
کہا کہ اگر آپ مجھے مہربان ہوں تو آپ مجھے صحبت کر سکتے ہیں اور جب آپ مجھے صحبت کر سکتے تو پھر جو کچھ
آپ چاہیں گے وہ سب اکیو حاصل ہو جائیگا۔ ۲۱ | مارکنڈے جی کہتے ہیں کہ اے کرشنکی مروج
ہرنی کی یہ بات منظور کر کے جسوقت اسکے ساتھ صحبت کرنے لگے اسوقت وہ ہرنی ایک نہایت
خوبصورت عورت ہو گئی۔ ۲۲ | تب مروج بہت خوش ہوا اور اس سے کہنے لگا کہ تو کون ہے
تب وہ عورت محبت کی بھری ہوئی شرما کر بولی کہ۔ ۲۳ | میں جنگل کا دیوتا ہوں اور جب
دیوتاؤں نے بہت عافری و منت کر کے کہا کہ تم من کو پیدا کرو اسوجہ سے مجھ کو آئیے ساتھ
محبت ہوئی اب آپ میرے ساتھ صحبت کر کے من کو پیدا کیجیے۔ ۲۴ | دیوتاؤں کے کہنے سے
میں آپ سے التجا کرتی ہوں کہ برتھوی کا پالنے والا میرے مجھے آپ پیدا کیجیے۔ ۲۵ | مارکنڈے
جی کہتے ہیں کہ اے کرشنکی مروج نے اسوقت اس ہرنی سے صحبت کیا کہ جس سے ایک لڑکا بہت
ہینچوئی پیدا ہوا۔ ۲۶ | جسوقت وہ لڑکا پیدا ہوا اسوقت سورگ میں دیوتا لوگ باجا بجا
لگے اور گندھرب لوگ گانے اور اپسرانہاں گین۔ ۲۷ | اور ناگوں اور ریشمیوں نے گانے
اور پر جل چھڑکا اور دیوتا لوگ چاروں طرف سے پھول برسائے گئے۔ ۲۸ | اس لڑکے کا تاج
یہی جلال دیکھ کر مروج نے اسکا نام دت مان رکھا کہ جسکے نور جس سے سب اطراف روشن
ہو گئے۔ ۲۹ | اور وہ لڑکا یعنی دت مان مہابلی اور بڑا پر اکر می ہوا اور چونکہ وہ لڑکا مروج

سے پیدا ہوا تھا اس واسطے اسکا نام سروچک مشہور ہوا۔ ۳۰ کتنے دنوں کے بعد ایک دن
 سروچ ایک اچھے پہاڑ پر سیر کر رہے تھے کہ اتنے میں ایک مہنس اور ایک مہنسی کو دیکھا۔
 ۳۱ مہنسی مہنس سے طالب جامع ہی مہنس نے کہا کہ اب مجھ کو اس بات سے سوان رکھ کسو واسطے
 کہ بہت دن تک تیرے ساتھ عیش و عشرت کر چکا۔ ۳۲ دنیا کی عیش و عشرت میں ہمیشہ برا
 رہنا اچھا نہیں اور اب عمر بھی آخر کو پہنچیں ایسی حالت میں مجھ کو تجھے علیحدہ ہی رہنا اچھا
 ہے۔ ۳۳ اتنی بات سنکر مہنسی کہنے لگی کہ عیش تو ہمیشہ کرنا چاہیے کیونکہ تمام دنیا عیش
 کرتی ہے اور برا مہن لوگ عیش ہی کی واسطے جگت وغیرہ کرتے ہیں۔ ۳۴ اور دنیا و عاقبت
 میں عیش حاصل ہونے کے واسطے دان دیتے ہیں اور دھرم کرتے ہیں۔ ۳۵ اے مہنس
 تم دنیا کی عیش و عشرت کو کیوں چھوڑ دیتے ہو بڑے بڑے بیبکی (زادہ) اور سادھو و
 (مرقبہ نشین) لوگوں کے نیک اعمالوں کا نتیجہ عیش ہی ہے تم تو پرند جانور ہو تمہاری کون گنتی۔
 ۳۶ مہنس نے کہا کہ جن لوگوں کا دل عیش و عشرت و کٹم پروار وغیرہ کی محبت میں پھنسا رہا
 ہے انکا خیال یہ تھا میں کس طرح قائم رہ سکتا ہوں۔ ۳۷ جو کوئی زن و قرند و دوست و عزیز
 کی محبت میں فرافیتہ رہتا ہے وہ ضرور دکھ پاتا ہے جیسے جنگلی تھو دریا و تالاب وغیرہ میں پانی کی
 محبت سے جاتا ہے اور دلدل میں پھنکر وہاں ہی مر جاتا ہے۔ ۳۸ اسی طرح سروچ اپنے
 لرپن ہی سے محبت کے دلدل میں پھنسے ہیں کیا تم نہیں دیکھتی ہو۔ ۳۹ کہ جوانی میں آنکھوں
 نے عورتوں کے ساتھ عیش کیا اور اب بڑے پوتوں میں دل لگا یا بھلا انکا اُدھار کس طرح ہوگا
 ۴۰ میں سروچ کی طرح نہیں ہوں اور انکی طرح عورت کے قابو میں ہوں بلکہ میں بیک اور
 بکار والا ہوں اس واسطے اب میں سب لہتوں سے علیحدہ ہوتا ہوں۔ ۴۱ مارکنڈہیہ جی
 کہتے ہیں کہ ہر کر و شکی یہ سب باتیں مہنس کی سنکر سروچ بہت شرمندہ ہو کر اپنے عورتوں کو
 ساتھ لے کر تپسیا کر نیکی واسطے دوسرے دیوبن میں چلے گئے۔ ۴۲ وہاں جا کر مع سب
 عورتوں کے تپسیا کر کے اور سب پاپوں کو ناس کر کے سورگ لوگ میں پہنچ گئے۔ فقط

मू. मार्कण्डेय उवाच ॥ ततः सारोचिषं ना-
म्नाद्युतिमन्तं प्रजापतिं । मनुञ्चकार
भगवांस्तस्य मन्वन्तरं शृणु ॥ १ ॥ १ ॥

टी. मार्कण्डेयजी कहते हैं कि हे कौष्टुकि उस सारोचिष युतिमा-
न को भगवान् प्रजापति ने प्रजापालन करने के बारे में मनु की
पदवी दी अब तुम उनके मन्वन्तर का हाल सुनो ॥ १ ॥

मू. तत्रान्तरे तु ये देवा मुनयस्तत्पुत्राश्च ये । भूपा-
लाः क्रौष्टिके ये तान् गदतस्त्वं निशामय ॥ २ ॥

टी. अर्थात् उस समय जो देवता और ऋषि और राजा लोग म-
नु के बेटे हुये उन सब का हाल कहता हूँ सुनो ॥ २ ॥

मू. देवाः पारावतास्तत्र तथैव दुषिता द्विजाः स्त-
रोचिषेऽन्तरे चेद्भो विपश्चिदिति विश्रुतः ॥ ३ ॥

टी. कि उस सारोचिष मन्वन्तर में पारावत और दुषित नाम
देवता और विपश्चित नाम इन्द्र हुये ॥ ३ ॥

मू. ऊर्जस्तम्बस्तथा प्राणो दन्तो लिङ्ग ऋषभस्तथा ।
निश्वरश्चावर्चवीरश्च तत्र सप्तर्षयो भवन् ॥ ४ ॥

टी. और ऊर्ज १ स्तम्ब २ प्राण ३ दन्तोलिङ्ग ४ ऋषभ ५ निश्वर ६ अ-
वर्चवीर ७ यही लोग सप्तर्षि कहलाते थे ॥ ४ ॥

मू. चैत्रकिं पुरुषाद्याश्च सुतास्तस्य महात्मनः । स-
प्तासनसुमहावीर्याः पृथिवीपरिपालकाः ॥ ५ ॥

टी. और उस सारोचिष महात्मा के सात पुत्र चैत्र किं पुरु इत्या-
दि सब पृथ्वीपालक और महाबली और पराक्रमी हुये ॥ ५ ॥

मू. तस्य मन्वन्तरं यावन्नावत्तद्वंशविस्तरे । भुं-
क्ते यमवनिः सर्वा द्वितीयं वैतदन्तरं ॥ ६ ॥

टी. जब तक वह मन्वन्तर बना रहा तब तक उन्हीं के वंश ने सब

पृथ्वी को भोग किया यानी राज्य किया ॥ ६ ॥

मू. स्वरोचिषस्तु चरितं जन्म स्वरोचिषस्य च । नि-
शम्यमुच्यते पापैः श्रद्धधानो हि मानवः ॥ ७ ॥

टी. और हे कौटुकि जो मनुष्य श्रद्धा संयुक्त इस स्वरोचिष मन्वन्तर की कथा और स्वरोचिष का जन्म सुनता है वह सम्पूर्ण पापों से छूट जाता है ॥ ७ ॥

इति श्री मार्कण्डेय पुराणे स्वरोचिष मन्वन्तरे नाम

॥ ६७ ॥

अध्याय ६७

१ - पھر مارکنڈے جی کہتے ہیں کہ ہے کر و شکی اُس سوار وچکھ دست مان کو پریشور نے پرچکھ
پالنے کے واسطے من کا عمدہ دیا اب اُنکے منو منتر کا حال سنو - ۲ یعنی اُس منو منتر میں جو
دیوتا اور من اور اُنکے پتر جو راجا ہوئے اُنکا حال کہتا ہوں سنو - ۳ وہ یہ ہو کہ اُس وقت
میں بار اوت اور شکت دیوتا تھے اور پیشیت نام اندر تھے - ۴ اور اورج - ۵ استی
بران - ۶ تول - ۷ رجبہ - ۸ نشتر - ۹ ارب بیہر - ۱۰ یوں اُس وقت میں سپت رکھ کہلاتے تھے
۱۱ اور اُس سوار وچکھ مہاتما کے چتر کم پرکھ وغیرہ سات لڑکے ہوئے جو مہا بلوان اور
پریشوری پالنے والے ہوئے - ۱۲ جب تک وہ منو منتر رات تک اُنھیں کے بخش نے
نام پریشوری کا راج کیا - ۱۳ مارکنڈے جی کہتے ہیں کہ ہے کر و شکی جو کوئی حوصلہ کے
ساتھ سوار وچکھ مہاتما کا چرتر اور اُنکے جنم کا حال سننا ہی وہ سب پاپوں سے چھوٹ
جاتا ہے - فقط

श्रीः कौष्टुकि उवाच ॥ भगवन्कथितं सर्वं वि-
स्तरेण त्वया मम । स्वरोचिषस्तु चरितं ज-
न्म स्वरोचिषस्य तु ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

श्रीः फिर कौष्टुकि ने कहा कि हे भगवन् स्वरोचिष का जन्म और
उनके चरित्र भी विस्तार पूर्वक आप मुझ से वर्णन कीजिये ॥ १ ॥

मूः यानुसापदिनीनामविद्याभोगोपपादिका
तत्संश्रयायेनिधयस्तानमेविस्तरतो वद ॥ २ ॥

श्रीः पर जब भोगदायिनी पदिनी नाम विद्या के आधीन जो जो नि-
धि हैं उन सब को विस्तार पूर्वक वर्णन कीजिये ॥ २ ॥

मूः अष्टौ ये निधयस्तेषां स्वरूपं द्रव्यसंस्थितिः ।
भवताभिहितं सम्यक् श्रोतुमिच्छाम्यहंगुरो ॥ ३ ॥

श्रीः और हे गुरु आठों निधि के स्वरूप और द्रव्य संस्थान
यानी किस निधि के सबब से कौन द्रव्य प्राप्त होती है वह स-
ब सम्यक् प्रकार से कहिये ॥ ३ ॥

मूः मार्कण्डेय उवाच ॥ पदिनीनामया वि-
द्या लक्ष्मीस्तस्याश्च देवता । तदा धाराश्च
निधयस्तन्मे निगदतः शृणु ॥ ४ ॥ ४ ॥

श्रीः मार्कण्डेयजी कहते हैं कि पदिनी नाम विद्या के देवता श्री ल-
क्ष्मीजी हैं और आठों निधि जो उन्हीं के आधीन हैं वह मुझसे ॥ ४ ॥

मूः यत्र पद्म महापद्मौ तथा मकरकच्छपौ । मु-
कुन्दो नन्दकश्चैव नीलः शङ्खोऽष्टमो निधिः ॥ ५ ॥

श्रीः यानी लक्ष्मीजी के पास पद्म १ महापद्म २ मकर ३ कच्छप ४ मु-
कुन्द ५ नन्द ६ नील ७ शंख ८ ये आठों निधि रहती हैं ॥ ५ ॥

मूः सत्यामृदो भवन्त्येते सिद्धिस्तेषां हि जायते । एते
ह्यष्टौ समाख्याता निधयस्तव कौष्टुके ॥ ६ ॥

टी- हे कौशिकि सतोगुण संयुक्त जिस को ऋद्धि प्राप्त होती हैं उसके यहाँ ये जागें निधि सम्पन्न हो रहती हैं और यही जागें निधि सम्पूर्ण प्रसिद्ध हैं सो मैंने तुम से वर्णन किया ॥६॥

मू- देवतानांप्रसादेनसाधुसंसेवनेनच । एवेश
लोकितंविजंमानुषस्ययदामुने ॥७॥

टी- हे मुनि जो मनुष्य देवता को प्रसन्न करता है या साधुसेवा किया करता है उसके धन पर ये सब निधि सदा दया दृष्टि रखती हैं ॥७॥

मू- यादृक्स्वरूपंभवतितृन्मेनिगदतःशृणु । प
विनीनामनिधिःपूर्वमयस्यभवतिविज ८

टी- और हे विज निधियों के जो स्वरूप हैं वह मुमसे सुनो कि पद्म नाम निधि प्रथम मय नाम राक्षस के घर में रहती थी ॥८॥

मू- सुतस्यनत्सुतानाञ्चनत्पौत्राणाञ्चनित्यशः ।
दाक्षिण्यसारंपुरुषस्तेनचाधिष्ठितोभवेत् ॥९॥

टी- और उस मय के बेटे और नाती और पनाती इत्यादि के ऊपर बहुत प्रसन्न रह कर सदा उसके घर में रहती थी ॥ ९ ॥

मू- सत्त्वाधारोमहाभोगोयतोऽसौसात्विकोनिधिः
सुवर्णरौप्यताम्रादिधानूनाञ्चपरिश्रहं ॥१०॥

टी- और यह निधि सतोगुण का आधार है महाभाग है इस लिये इसको सात्विक निधि कहते हैं और यह निधि सोना चाँदी ताँबा इत्यादि धानुओं की देने वाली है ॥ १० ॥

मू- करोत्यनितरांसोऽयतेषाञ्चक्रयविक्रयं । करो-
तिचतयायज्ञानदक्षिणाञ्चप्रयच्छति ॥११॥

टी- और जिस मनुष्य पर इस निधि की दयादृष्टि होती है वह मनुष्य धानुओं की खरीद और बिक्री बहुत करता

हैं और यज्ञ भी बहुत करता है और दक्षिणा भी देता है ॥ ११ ॥

मू. सभां देवनिकेतांश्च सकारयति तन्मनाः । सत्वा
धारो निधिश्चान्यो महापद्म इति श्रुतः ॥ १२ ॥

टी. और उस मनुष्य से देवालय और देवसभा इत्यादि बनवाती है और दूसरी निधि सत्वाधार महापद्म नाम है ॥ १२ ॥

मू. सत्यप्रधानो भवति तेन चाधिष्ठितो नरः । क-
रोति पद्मरागादिरत्नानाञ्च परिग्रहं ॥ १३ ॥

टी. वह सत्य प्रधान महापद्म निधि जिसके ऊपर प्रसन्न होता है
उसके घर में महापद्मरागादि रत्न इकट्ठे होते हैं ॥ १३ ॥

मू. मौक्तिकानां प्रवालानां तेषां च क्रयविक्रयान् ।
ददाति योगशीलेभ्यस्तेषामावसथा तथा ॥ १४ ॥

टी. और मोती मृगा आदि की खरीद और विक्री करती है और उस
योगयुक्त पुरुष को इन सम्पूर्ण द्रव्यों का स्थान दे देती है ॥ १४ ॥

मू. सकारयति तच्छीलः स्वयमेव च जायते । तत्प्र-
सूतास्तथा शीलाः पुत्रपौत्रक्रमेण च ॥ १५ ॥

टी. और इसी तरह उस मनुष्य के बेटा और पोता इत्यादि को
भी बनाये रखती है ॥ १५ ॥

मू. पूर्वार्द्धमात्रः सप्तासौ पुरुषाश्च न मुञ्चति । त-
मसो मकरो नाम निधिस्तेनावलोकितः ॥ १६ ॥

टी. और सात पुरुष तक उस पुरुष को नहीं छोड़ती है इसके
बाद तीसरी निधि मकर नाम है वह जिसके यहाँ रहती है ॥ १६ ॥

मू. पुरुषो ज्यतमः प्रायः सुशीलोऽपि हि जायते । वा-
णखड्गर्षिधनुषां चर्मणाञ्च परिग्रहं ॥ १७ ॥

टी. वह पुरुष यदि सुशील भी हो तो भी अवश्य तामसी हो जाता
है और धनुष बाण दाल तलवार आदि अस्त्र धारण करता है ॥ १७ ॥

मू. रसनानाच्च कुरुते याति मैत्री च राजभिः । दश-
तिशौर्यरत्नीनां भूर्भुजा ये च तत्प्रियाः ॥ १८ ॥

टी. और उसकी राजालोगों के साथ अत्यन्त प्रीति होती है और वह शूरवीर क्षत्री की वृत्ति रखता है और इन्हीं लोगों का वह प्यारा होता है ॥ १८ ॥

मू. कयु विक्रये च शस्त्राणां नान्यत्र प्रीतिमेति च । ए-
कस्यैव भवत्येष न च तस्यानुजानुगः ॥ १९ ॥

टी. और सिवाय खरीद और विक्री हथियारों के और कहीं उसका प्रीति नहीं लगता और यह निधि एक ही पुरुष तक रहती है ॥ १९ ॥

मू. इयार्थं दस्युतो नाशं संग्रामे चापि संब्रजेत् । क-
च्छपश्च निधिर्योऽसौ न रस्तेनाभि वीक्षितः ॥ २० ॥

टी. और चौथी निधि कच्छप नाम है उसकी दृष्टि जिस पुरुष पर होती है वह पुरुष दस्यु के वास्ते चोर के हाथ से या किसी संग्राम में नाश को प्राप्त होता है ॥ २० ॥

मू. तमः प्रधानो भवति यतोऽसौ नामसो निधिः । व्य-
वहारान् शेषांस्तु पुण्यजातैः करोति च ॥ २१ ॥

टी. और इस कच्छप निधि का स्वभाव नामसी है इसलिये वह मनुष्य भी नामसी हो जाता है परन्तु पुण्यात्मा मनुष्य के साथ समान व्यवहार करती है यानी उसका चित्त नहीं बिगाड़ती है ॥ २१ ॥

मू. कर्मस्थानं खिलांश्चैव न विश्वसितिकस्य चित्-
समस्तानि यथाङ्गानि संहारयेव कच्छपः ॥ २२ ॥

टी. और सम्पूर्ण कर्मों का करने वाला वह मनुष्य होता है और किसी का विश्वास उसको नहीं होता है और जिस तरह कछुआ अपने सब अंग समेट लेता है ॥ २२ ॥

मू. तथारिष्टस्वचित्तानि तिष्ठत्यायतमानसः ।

नददातिनवाभुंक्तेतद्विनाशमयाकुलः॥२३॥

टी. उसी तरह वह मनुष्य भी सब चीजों से अपने मन को रींचकर धन में लगाये रहता है न किसी को देता है न आप खाता है और स्वर्च होजाने के डर से व्याकुल रहता है ॥२३॥

मू. निधानमुर्व्याकुरुतेनिधिःसोऽप्येकपुरुषः ।
रजोगुणमयश्चायामुकुन्दोनामयनिधिः॥२४॥

टी. और यह कच्छपनाम निधि उस पुरुष के लिये पृथ्वी में दौलत का खजाना बना देती है और यह निधि एक ही पुस्तक तक रहती है और पाँचवीं निधि जो रजोगुण संयुक्त मुकुन्द नाम है ॥२४॥

मू. नरोऽलोकितस्तेनतद्गुणीभवतिद्विज । बीणा
बेणुमृदङ्गानामातोद्यस्यपरिग्रहं ॥२५॥

टी. वह जिसके ऊपर दृष्टि करती है वह मनुष्य गुणी होता है और बीणा बेणु मृदङ्गादि बाजों का संग्रह करता है ॥२५॥

मू. करोतिगायतां वित्तं नृत्यताञ्जप्रयच्छति । व
न्दिनामयसूतानां विद्यानालस्यपाठिनां ॥२६॥

टी. और गाने बजाने नाचने वालों को बहुत धन देता है और भाद नद भांड तमाशा वालों को ॥२६॥

मू. ददात्यहर्निशं भोगान्भुंक्तेतैश्च समं द्विज । कु
लदासुरतिश्चास्यभवत्यन्यैश्च तद्विधैः ॥२७॥

टी. हमेशा खाना पीना दिया करता है और उन्ही लोगों के साथ आप भी खाता पीता है और उसको वेष्ट्या और वेष्ट्या गामी पुरुषों से बहुत प्रीति रहती है ॥२७॥

मू. प्रयातिसङ्गमेकञ्चयं निधिर्भजतेनरं । रजस्त
मोमयश्चायोनन्दोनाममहानिधिः ॥२८॥

टी. यह निधि भी एक ही पुस्तक तक रहती है और छठवीं निधि -

नाम निधि जो राजस और तामस दोनों गुणों से संयुक्त है ॥ २८ ॥

मू. उपैतिसम्भमधिकं नरस्तेनावलोकितः । सम-
स्तधातुरत्नानां पुण्यधानादिकस्य च ॥ २९ ॥

टी. वह मुकुन्द नाम निधि से एक दर्जा अधिक है वह निधि जिस मनुष्य पर दृष्टि करती है वह सम्पूर्ण धातु और रत्न और पवित्र धन इत्यादि का ॥ २९ ॥

मू. परिग्रहं करोत्येष तथैव क्रयविक्रयं । आधा-
रः स्वजनानाञ्च आगताभ्यागतस्य च ॥ ३० ॥

टी. संग्रह और उसीका क्रय विक्रय करता है और अपने कुल परिवार और अभ्यागतादि का पालन करता है ॥ ३० ॥

मू. सहतेनापमानोक्तिं स्वल्पामपि महामुने । स्तू-
यमानश्च महतीं प्रीतिं वधाति यच्छति ॥ ३१ ॥

टी. हे मुनि वह मनुष्य अपमान की बात किसी से थोड़ी भी नहीं बोलता और सब के साथ प्रीति रखता है ॥ ३१ ॥

मू. यं यमिच्छति वै कामं मृदुत्वमुपमाति च । बहो-
भार्या भवन्त्यस्य सृतिमत्योऽतिशोभना ॥ ३२ ॥

टी. और वह जो जो इच्छा करता है वह सब पूरी होती हैं और उस कमल समान पुरुष को अतिसुन्दरी स्त्रियाँ बहुत प्राप्त होती हैं ॥ ३२ ॥

मू. रतये सप्तचरान्निधिर्नन्दोऽनुवर्त्तते । प्रव-
र्द्धमानोऽथ नरमष्टभागेन सत्तम ॥ ३३ ॥

टी. और हे मुनि सत्तम यह नन्द नाम निधि सात पुत्रों तक प्रीति पूर्वक आठों अङ्ग से एक घर में रहती है ॥ ३३ ॥

मू. दीर्घायुष्वसर्वेषां पुरुषाणां प्रयच्छति । ब-
न्धूनामेव भरणं ये च दूरादुपागताः ॥ ३४ ॥

टी. और सब को दीर्घायु कर देती है और उसकी सातों पुत्रों

की ऐसी बुद्धि करदेती है कि जो उसके घर में कोई भाई वन्धु
या परदेशी आवै तो उनका पोषण वह करता है ॥३५॥

मू. तेषां करोति वै नन्दः परलोके न चादृतः । भव-
त्यस्य न च स्नेहः सह बासिषु जायते ॥३५॥

टी. और उस मनुष्य का मन परलोक में नहीं लगता है और पु-
रवासी लोगों से उसको प्रीति नहीं होती है ॥३५॥

मू. पूर्वमित्रेषु शैथिल्यं प्रीतिमन्यैः करोति च । त-
थैव सत्वरजसी यो विभर्ति महानिधिः ॥३६॥

टी. और पहिले के मित्रों से उसको मुहब्बत कम हो जाती है
और नये नये लोगों से मुहब्बत पैदा होती है हे कौष्ठिक इसी
तरह सातवीं निधि नील नाम जो सतोगुण और रजोगुण संयुक्त है ॥३६॥

मू. सलीलसंज्ञस्तत्सङ्गी नरस्तच्छीलवान् भवेत् ।
वस्त्रकार्पासधान्यादिफलपुष्पपरिग्रहः ॥३७॥

टी. वह नीलनिधि सतसङ्गी है उसकी दृष्टि जिस मनुष्य पर होती है
वह मनुष्य भी बड़ा सतसङ्गी होता है और वस्त्र और कपास और
धान्यादि और फल और पुष्प का संग्रह करता है ॥३७॥

मू. मुक्ता विद्रुमशङ्खनां शुक्त्यादीनां तथा मुनेना-
ष्टादीनां करोत्येष यच्चान्यज्जलसंभवं ॥३८॥

टी. और हे मुनि मोती. मृग. शंख. सीपी. काष्ठ इत्यादि और जो
वस्तु जल से उत्पन्न होती हैं इन सब को वह संग्रह करता है ॥३८॥

मू. क्रयविक्रयमन्येषां नान्यत्र मते मनः । तडा-
गान् पुष्करिण्योऽथ तथा रामान् करोति च ॥३९॥

टी. और और पदार्थों को भी क्रय विक्रय करता है और तालाब
पुष्कर आदि खुदवाता है और बाग इत्यादि भी लगाता है ॥३९॥

मू. वन्धज्वसरितां वृक्षास्तथा रोपयते नरः ।

अनुलेपनपुष्पादिभोगंभुक्ताभिजायते। ४०।

टी. और नदियों में बाँध बँधवाता है और वृक्षों में घाले बनवाता है और वह मनुष्य चन्दन फूल इत्यादि के भोग से अतिप्रसन्न रहता है। ४०॥

मू. त्रिपौरुषश्चापिनिधिर्नीलोनामैषजायते। र
जसमोमयश्चान्यःशंखसंज्ञोहियोनिधिः। ४१॥

टी. और यह नील नाम निधि तीन पुस्त तक रहती है और जावची निधि शंख नाम जो रजोगुण और तमोगुण दोनों से संयुक्त है ॥ ४१॥

मू. तेनापिनीयतोविप्रतद्गुणित्वंनिधीश्वरः। ए
कस्यैवभवत्येषनरानान्यमुपैतिच॥ ४२॥

टी. हे दिज उसकी दृष्टि जिस मनुष्य पर होती है वह भी बहुत गुणी होता है और एक ही के आश्रित हो रहता है दूसरे के यहाँ नहीं जाता है ॥ ४२॥

मू. यस्यशंखोनिधिसस्यस्वरूपंक्रौष्टुकेष्टृणु।
एकएवात्मनासृष्टमन्नंभुंक्तेतथाम्बरं॥ ४३॥

टी. हे क्रौष्टुकि जिसके यहाँ शंख नाम निधि रहती है उस का लक्षण सुनो कि वह मनुष्य केवल अपना ही पैदा किया हुआ अन्न खाता है और अपना ही उपार्जन वस्त्र पहिनता है ॥ ४३॥

मू. कदन्नभुक्परिजनो न च शोभन वस्त्र धृक्। न
ददाति सुहृद्भार्याभ्रातृपुत्रस्तृपादिषु॥ ४४॥

टी. और बुरा अन्न और बुरा वस्त्र वह खाता पहिनता है और मित्र भार्या-भाई-पुत्र-पतोह को अन्न वस्त्र नहीं देता है ॥ ४४॥

मू. स्वपोषणपरःशङ्कानरोभवतिसर्वदा। इत्ये
तेनिधयःख्यातानराणामर्थदेवताः॥ ४५॥

टी. और वह शंख निधि वाला मनुष्य अपने ही पालन में सदा नत्न रहता है हे क्रौष्टुकि ये आदौ निधि सम्पूर्ण मनुष्यों के अर्थ

سادھون کی سیوا کرتا ہے اسکے دھن پر نذر لوگ دیایا درشت رکھتی ہیں - ۸ نذرھینوں
 کا حال یہ ہے کہ پہلے پدم نام نذرہ راجپس کے گھر میں رہتی تھی - ۹ اور اس راجپس کے
 بیٹے اور پانی اور پانی پر بہت خوش ہو کر اسکے گھر میں بنی رہتی تھی - ۱۰ چونکہ یہ نذرہ
 ستون کا استھان اور مہا بھاگ ہی اس سے یہ ساتوں نذرہ کھلاتی ہے اور یہ نذرہ سونا اور
 چاندی اور تانبہ وغیرہ دھاتوں کی دینے والی ہے - ۱۱ جس کسی پر اسکی نظر پڑتی ہے وہ
 ان دھاتوں کی خرید و فروخت کیا کرتا ہے اور جگت بھی بہت کیا کرتا ہے اور دچھنا بھی دیا کرتا
 ہے - ۱۲ اور وہ شخص دیو استھان اور دیو سبھا وغیرہ بنواتا ہے - دوسری نذرہ مہا پدم نام
 ہے - ۱۳ وہ جیسے متوجہ ہوتی ہے اسکے گھر مہا پدم راگ وغیرہ جو امرات جمع ہوتے ہیں -
 ۱۴ اور اس شخص سے موتی اور موتی کا وغیرہ کا خرید و فروخت کرواتی ہے اور اس شخص کو سطح
 کی دولتوں کا خزانہ دے دیتی ہے - ۱۵ اور اس طرح اس شخص کے بیٹے اور پوتے وغیرہ کا
 کاخانہ بنا رکھتی ہے - ۱۶ بلکہ اسکو سات نشت تک نہیں چھوڑتی ہے - تیسری نذرہ کا نام مکر
 ہے یہ نذرہ جگے گھر رہتی ہے - ۱۷ وہ گھر والا اگر چند بائروت بھی ہو تو بھی اسکی
 وجہ سے غصہ اور بے ثروت ہو جاتا ہے اور تیر کمان دھال تلوار وغیرہ ہتھیار باندھتا ہے
 ۱۸ اور اسکو راجاؤں کے ساتھ بہت دوستی ہوتی ہے اور سورسیر چھتری کا خواص رکھتا ہے
 اور انھیں لوگوں کی آنکھوں میں وہ پیارا ہوتا ہے - ۱۹ اور اسکا دل سوا سے خرید و فروخت
 ہتھیاروں کے اور کسی کام میں نہیں لگتا اور یہ نذرہ ایک ہی نشت تک رہتی ہے -
 ۲۰ جو تھی نذرہ چھپ نام ہے یہ نذرہ جس کسی پر نظر کرتی ہے وہ شخص دولت کے واسطے
 چوروں کے ساتھ سے یا لڑائی کے میدان میں مارا جاتا ہے - ۲۱ اور جو کہ اس چھپ نذرہ
 کا خواص تاملی ہے اس سے وہ شخص بھی تاملی (بد مزاج و غصہ ور) ہو جاتا ہے لیکن
 پناہ دہر ماتا آدمی کی طبیعت کو نہیں بگاڑتی ہے - ۲۲ اور سب کمون کا کر نوالا وہ شخص
 ہو جاتا ہے اور کسی پر اعتبار اسکو نہیں ہوتا اور جسطرح کچھوا اپنے سب اعضا کو سمیٹ لیتا
 ہے - ۲۳ اس طرح وہ شخص بھی سب جگہ سے اپنے دل کو کھینچ کر دولت میں لگتا ہے نہ کسیکو
 دیتا ہے نہ آپ کھاتا ہے بلکہ خرچ ہو جانے کے ڈر سے بیقرار رہتا ہے - ۲۴ اور زمین میں
 ترانہ جاتا ہے اور یہ چھپ نذرہ ایک نشت تک رہتی ہے - اور پانچویں نذرہ کا نام گنڈ ہے
 ۲۵ یہ نذرہ جس کے گھر آتی ہے وہ گنڈی ہوتا ہے اور بین اور بانسری

॥ १५ ॥ ब्रह्मचरिन्धुक् के गुरु में सन्धि नाम नंदरुष्टी ही वह गुरु वाला मरुत अपना ही पद किया हुआ
 कहा जाता है और अपने ही शक्ति बल से उसे प्राप्त किया हुआ है और पिछले काल में पश्चात्त
 ॥ १६ ॥ और अष्टाक्षर नाम का पश्चात्त नाम और दोस्त और मित्र और भ्राता और भ्राता
 और भ्राता को कहा जाता है अर्थात् - ॥ १७ ॥ ब्रह्मचरिन्धुक् ही तन प्रवृत्ति में स्थूल रश्मि
 से कुरुशुक्ली ही अष्ट नंदरुष्टी जो सब लोकों का मूल प्रवृत्ति किया करती है -
 ॥ १८ ॥ मार्कण्डेय जी कहते हैं कि अष्ट नंदरुष्टी एक नंदरुष्टी के आने से आदि को एक ही नंदरुष्टी का
 प्रवृत्ति होता है और दो नंदरुष्टी के आने से दो का प्रवृत्ति होता है और तिन से तिन का - अष्ट नंदरुष्टी सब
 को समझ लीना और जिसके पास सब नंदरुष्टी ही अस्को पद निश्चिन्ता भी प्राप्त होती है - नष्ट

मृ. क्रौष्टिक उवाच ॥ विस्तरात्कथितं ब्र-
 ह्मन्ममस्वारेचिपंत्यया । मन्वन्तरं त-
 यैवाद्यैष पृथगनिधयो मया ॥ १ ॥ १ ॥

श्री. फिर क्रौष्टिक ने कहा कि हे ब्रह्मन् स्वारेचिप मन्वन्तर और
 आद्यों निधि का हाल तो आप ने मेरे पूछने के मवाफिक वि-
 स्तार पूर्वक वर्णन किया ॥ १ ॥

मृ. स्वायम्भुवंपूर्वमेवमन्वन्तरमुदाहृतं । म-
 न्वन्तरं तृतीयमेकथयोत्तमसंज्ञितं ॥ २ ॥

श्री. और स्वायम्भुव मन्वन्तर को भी आप पहिले कह चुके अब तीस-
 रा उत्तम नाम मन्वन्तर का हाल भी मुझसे वर्णन कीजिये ॥ २ ॥

मृ. मार्कण्डेय उवाच ॥ उत्तानपादपुत्रो-
 भूदुत्तमो नामनामनः । सुरुच्यास्तन-
 यः ख्यातो महाबलपराक्रमः ॥ ३ ॥ ३ ॥

श्री. मार्कण्डेयजी कहते हैं कि राजा उत्तानपाद के सुरिचि नाम स्त्री से
 डा बलवान् और पराक्रमी पुत्र उत्तम नाम पैदा हुआ ॥ ३ ॥

मू. धर्मात्मा च महात्मा च पराक्रमधनो नृपः ।
अतीत्य सर्वभूतानि वभौ भानुपराक्रमः ॥ ४ ॥

टी. और वह उत्तम बड़ा महात्मा और धर्मात्मा और पराक्रमी और धनवान् राजा सम्पूर्ण प्राणियों में सूर्य समान प्रतापी हुआ ॥ ४ ॥

मू. समः शत्रौ च मित्रे च पुरे पुत्रे च धर्मवित् । दु-
ष्टे च यमवत्साधौ सोमवच्च महामते ॥ ५ ॥

टी. और हे महामति वह उत्तम राजा शत्रु और मित्र और प्रजा और पुत्र सब को समान जानता था और दुष्टों के वास्ते यम और साधुलोगों के वास्ते चन्द्रमा के समान सुखदायक था ॥ ५ ॥

मू. वाग्रव्याधुलानाम उपये मे स धर्मवित् । उ-
त्तानपादतनयः शचीमिन्द्रवोत्तमः ॥ ६ ॥

टी. और उत्त उत्तानपाद के धर्मात्मा पुत्र ने बहुला नामक न्या से अपना विवाह किया जिस तरह सची से इन्द्र ने विवाह किया ॥ ६ ॥

मू. ख्याता मती च तस्या सीद्विजवर्यः मनः सदा ।
स्नेहवच्छिनो यद्दोहिण्यानि हितास्पदं ॥ ७ ॥

टी. और हे द्विजवर्य जिस तरह रोहिणी से चन्द्रमा प्रीति रखते हैं उसी तरह उत्तम महाराज प्रीति युक्त उस बहुला स्त्री में अपने मन को लगाये रहते थे ॥ ७ ॥

मू. अन्यप्रयोजना सक्तिमुपैति न हितन्मनाः । स्व-
प्ने चैव तदालम्बिमनोः भूतस्य भूभूतः ॥ ८ ॥

टी. सिवाय बहुला के और किसी काम में उत्तम का मन ब लगता था और मन के लगाव से स्वप्न में भी उसी को देखा करता था ॥ ८ ॥

मू. सचतस्या मुचा र्वक्कादर्शना देवपार्थिवः । द-
दाति सार्शने गत्रे गत्रस्य शोचतन्मयः ॥ ९ ॥

टी. जिस समय बहुला को देखता था उस समय कामासक्त होकर उस

के अङ्ग में ऐसा लिपट जाता था कि मानों दोनों एक शरीर हैं ॥ ६ ॥

मू. श्रोत्रोद्देगकरं वाक्यं प्रियमप्यवनीपतेः । तस्या-
पि भूरि सम्मानं मेने परिभवंततः ॥ १० ॥

टी. और बहुला का शब्द सुनने से उत्तम को मन व्याकुल हो जाता था और सुनने से बहुत हर्ष मानता था ॥ १० ॥

मू. अवमेने स्वजंदत्तां शुभान्याभरणानि च । उत्त-
स्थावङ्गपीडेवपिवतोऽस्य वरासवं ॥ ११ ॥

टी. और बहुला के अधराश्रित पान करने के समय उत्तम को माला इत्यादि भूषण अङ्गपीड़ा के समान मालूम होते थे इसवासे सब को निकाल कर अलग रख देता था ॥ ११ ॥

मू. भुञ्जताचनरेन्द्रेण क्षणमात्रं करेद्यता । वुभुजे
स्वल्पकं मह्यं हि जनातिमुदावती ॥ १२ ॥

टी. और हे हिज वह उत्तम एक साइत भी बहुला से जुदा नहीं रहता था और उसकी जुदाई के डर से भोजन करने के समय भी हाथ पकड़े हुवे कुछ खा लेता था परन्तु वह बहुला उत्तम से प्रसन्न नहीं रहती थी ॥ १२ ॥

मू. एवं तस्यानुकूलस्य नानुकूलामहात्मनः । प्र-
भूततरमत्यर्थं चक्रे रागं महीपतिः ॥ १३ ॥

टी. इसी तरह वह महात्मा उसको अपने प्राण से भी अधिक प्यारा समझता था और वह बहुला उत्तम को नुच्छ कर जानती थी ॥ १३ ॥

मू. अथ पानगतो भूपः कदाचित्तां मनस्विनीं ।
सुरापूतं पानपात्रं ग्राहयामास सादरः ॥ १४ ॥

टी. एक दिन राजा उत्तम मद्य पान कर रहा था और उस शराब में से बहुत आदर और प्रेम के साथ एक पियाला बहुला को भी पीने के वास्ते देने लगा ॥ १४ ॥

मू. पश्यतांभूमियालानांवारमुखैःसमन्वितः।प्र
गीयमानमधुरेर्गेयगायनतत्परैः ॥ १५ ॥

टी. हरचन्द उस समयमें उस समा में बहुत राजालोग इकट्ठा थे
और नाच हो रहा था और गानेवाले लोग बहुत सुश्रुत आवा-
जी से गा रहे थे ॥ १५ ॥

मू. सातुनेच्छतितत्सावमादातुं तत्पराङ्मुखी।स-
मक्षमवनीशानांततःक्रुद्धःसपार्यिवः ॥ १६ ॥

टी. परन्तु बहुला से उन खवाड़ों के सामने उस शराव के पीने
से इसकार करके अपना मुँह फेर लिया यह हाल देखकर रा-
जा जिसे बहुत लज्जित होकर क्रोध में आया ॥ १६ ॥

मू. उवाच हाःस्यमाहूयनिश्वसन्नुरगोयथा।नि-
रकृतस्तयादेव्याप्रिययापतिरप्रियः ॥ १७ ॥

टी. और उस क्रोध की दशा में साँप की तरह लम्बी लम्बी
साँस लेकर चौपदारों को बुलाकर कहा कि इस बहुला ने मेरा
अनादर किया और मुझको शत्रु समान जानती है ॥ १७ ॥

मू. हाःस्यैनांदुष्टहृदयामादायविजनेवने।परि-
त्यजाशुनैतत्तेविचार्यवचनंमम ॥ १८ ॥

टी. इसवाले हे हारपालकों इस दुष्ट हृदयाको पकड़कर निर्जनवन
में लेजाकर छोड़ आओ इसमें किसी तरह का आगापीछा न करो ॥ १८ ॥

मू. मार्कण्डेय उवाच ॥ ततो नृपस्य वचनमपि
चार्यमवेक्ष्य सः। हाःस्थस्तथा जतां सुभूमा
रोष्यस्यन्दने वने ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥

टी. मार्कण्डेयजी कहते हैं कि हे कौटुकि यह आज्ञा राजा की पा-
कर हारपाल से इस बहुला को राय पर चढ़ा कर ले गये और बि-
ना विचार निर्जनवन में छोड़ कर चले जायें ॥ १९ ॥

मू. साचतं विपने त्यागं नीता तेन महीभृता । अ-
दृश्यमाना तं मेने परं कृतमनुग्रहं ॥ २० ॥ २० ॥

श्री. बहुला ने अपने को उस वन में हार पालकों का छोड़ जाना अ-
नुग्रह समझा कि राजा मुझे न देखे यही अच्छा है ॥ २० ॥

मू. सोऽपितत्रानुरागार्तिदह्यमानात्ममानसः । औ-
त्तानपादिर्भूपालो नान्यां भार्यामविन्दत ॥ २१ ॥

श्री. और यहाँ राजा उत्तम बहुला के जुदा हो जाने से अत्यन्त दु-
खी और जलता था इस सबब से उस दिन से उसका मन कि-
सी स्त्री पर रुजू न होता था ॥ २१ ॥

मू. तस्मात्तां सुचार्वङ्गी महर्निशमनिर्वृतः । च-
कारचनिजं राज्यं प्रजाधर्माणालयन् ॥ २२ ॥

श्री. किन्तु दिनरात उसी सुन्दरी के ध्यान में रहता था और धर्म पू-
र्वक अपनी राज्य का कार्य करके प्रजा का पालन करता था ॥ २२ ॥

मू. प्रजापालयतस्तस्य पितुः पुत्रानिवोरसान् । आ-
गत्य ब्राह्मणः कश्चिदिदमाहार्त्तमानसः ॥ २३ ॥

श्री. जिस तरह पिता अपने पुत्र का पालन करता है उसी तरह राजा भी अपनी प्रजा का पालन करता था एक दिन एक ब्राह्मण दु-
ख से पीड़ित होकर राजा के पास आकर कहने लगा ॥ २३ ॥

मू. ब्राह्मण उवाच ॥ महाराज भिशानोऽस्मि
श्रूयतां गदतो मम । नृणामार्त्तिपरित्राणम-
न्यतो न नराधिपात् ॥ २४ ॥ २४ ॥ २४ ॥ २४ ॥

श्री. किहे महाराज मैं बारबार दुखी हो का जो कुछ आपसे कहता हूँ वह सु-
निये क्योंकि सेवाय राजा के दूसरा कोई मेरा दुःख नहीं छुड़ा सकता है ॥ २४ ॥

मू. मम भार्या प्रसुप्तस्य केनाप्यपहतानि शि । गृ-
हद्वारमनुद्घाटयतां समानेतुमर्हसि ॥ २५ ॥

टी. हाल यह है कि रात को मैं अपने घर में सोता था नहीं था
लूम कि कौन मेरे घर का दरवाजा खोल कर चला आया और
मेरी स्त्री को चुराकर ले गया उसको आप ढूँढ़ कर ला दीजिये ॥२५॥

मू. राजो वाच ॥ नवेत्सिकेनापहृताक
नीतातुसादिज। यतामि विग्रहेकस्यकु
तोवाप्यानयामितां ॥२६॥ २६ ॥ २६ ॥

टी. राजा ने कहा कि हे विज जबकि आप ही नहीं जानते हैं कि किस व-
क्त कौन आदमी ले गया तो मैं अनजान किस को पकड़ूँ कहों से ला दूँ ॥२६॥

मू. ब्राह्मण उवाच ॥ तथैवस्थगिते द्वारिप्रसु
प्रस्य महीपते । हताहिभार्याकिंकेनत्ये
तदिज्ञायतेभवान् ॥२७॥ २७ ॥ २७ ॥

टी. ब्राह्मण ने कहा कि हे महाराज मेरे सोने के वक्त मेरे मकान का
दरवाजा खुला था उसी रास्ते से मेरी स्त्री को कौन किस रास्ते से ले ग-
या यह कोई नहीं जानता पर आप जानते होंगे ॥२७॥

मू. त्वंरक्षितानो नृपनेषडागादानवेतनः । ध-
र्म्मस्यदेवनिश्चिन्ताः स्वपत्तिमनुजानिषि ॥२८॥

टी. क्योंकि आप हम लोगों के पालक हैं और धन इत्यादि का ह-
व्वाँ भाग लेते हैं और आप ही को रक्षक समझकर सब प्रजा
अपने घर में रात को बे खरके सोती है ॥२८॥

मू. राजो वाच ॥ नतेदृष्टामयाभार्यायादृग्रूपा
चदेहतः । वयश्चैवसमाख्याहि किंशीला
ब्राह्मणीचते ॥२९॥ २९ ॥ २९ ॥ २९ ॥

टी. यह बात सुनकर राजा ने कहा कि तुम्हारी ब्राह्मणी को मैंने नहीं
देखा है कि कैसी उसकी मरत है और कैसा सभाव है तो सब नही ॥२९॥

मू. ब्राह्मण उवाच ॥ कदोरनेवासात्युचाहस

बाहुः कृशानना । विरूपरूपाभूपालननि-
न्दामितथेवतां ॥ ३० ॥ ३० ॥ ३० ॥ ३० ॥

टी. ब्राह्मण ने कहा कि हे राजन् नेत्र तो उसके कठोर हैं और डील
उसका बहुत जंचा है और बांह उसकी छोटी और मुंह पतला और
कुरूप है पर मैं उसकी निन्दा नहीं करता हूँ ॥ ३० ॥

मू. वाचिभूपातिपुरुषानसौम्यासाचशीलतः । इत्या-
ख्यातामयाभार्यासाकारादुर्निरीक्षणा ॥ ३१ ॥

टी. हे महाराज बोली उसकी बहुत कड़ी और स्वभाव भी अच्छा
नहीं है और रूप भी देखने योग्य नहीं है ॥ ३१ ॥

मू. मनागतीतंभूपालतस्याथप्रथमंवयः । तादृगू-
पाहि मे भार्यासत्यमेतन्मयोदितं ॥ ३२ ॥

टी. और उसकी पहिली अवस्था भी कुछ चीत गई है ऐसी मेरी
स्त्री है मैं सच सच कहता हूँ ॥ ३२ ॥

मू. राजो वाच ॥ जलन्तेब्राह्मणतयाभार्याम-
न्याददामिते । सुखायभार्याकल्याणीदुःख-
हेतुर्हितादृशी ॥ ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥

टी. इतनी बात ब्राह्मण की सुनकर राजा बोला कि हे ब्राह्मण जो स्त्री कल्या-
णी होती है वह सुख देती है और तुम्हारी भी स्त्री सब दिन दुःख देती
है तो तुम ऐसी स्त्री को क्या चाहते हो मैं तुमको दूसरी स्त्री देता हूँ ॥ ३३ ॥

मू. कल्पेस्वरूपताविप्रकाराणशीलमुत्तमं । रूप-
शीलविहीनायात्याज्यासातेनहेतुना ॥ ३४ ॥

टी. और स्त्री करने में स्थ और शील मुख्य है जिस स्त्री के रूप और
शील नहीं है उसको त्याग ही करना अच्छा है ॥ ३४ ॥

मू. ब्राह्मण उवाच ॥ रक्ष्याभार्यामहीपालइ-
तिनःश्रुतिरुत्तमा । भार्यायारक्षमाणायां

प्रजा भवतिरक्षिता ॥ ३५ ॥ ३५ ॥ ३५ ॥

टी. इतनी बात सुनकर ब्राह्मण बोला कि हे महिपाल स्त्री को अवश्य रखना चाहिये क्योंकि स्त्री ही से पुत्र होता है ॥ ३५ ॥

मू. आत्मा हि जायते तस्यां सारख्यातो नरेश्वर । प्रजायां रक्षमाणाया मात्मा भवतिरक्षितः ॥ ३६ ॥

टी. हे नरेश्वर स्त्री की रक्षा आवश्यक करना चाहिये क्योंकि उससे आत्मा रूप पुत्र पैदा होता है और उसी से फिर अपनी आत्मा की रक्षा होती है ३६

मू. तस्यां रक्षमाणायां भविता वर्णसंकरः । स पातयेन्महीपालपूर्वान् स्वर्गादधः पितृन् ॥ ३७ ॥

टी. और हे पृथ्वीनाथ जो स्त्री की रक्षा न करे तो वह स्त्री स्वतंत्र होकर व्यभिचारिणी हो जाय तब उससे वर्णसंकर पुत्र पैदा हो वह वर्णसंकर पुत्र उन पितरों को जो स्वर्ग में भी हों खींचकर नरक में गिरा देता है ॥ ३७ ॥

मू. धर्महानिश्चानुदिनमभार्यस्य भवेन्मम । नित्यक्रियाणां विभ्रंशानसचापि पतनाय मे ॥ ३८ ॥

टी. इस सबव से जब तक मेरी स्त्री न मिलेगी तब तक दिन दिन मेरे धर्म की हानि होगी यानी मेरी नित्य क्रिया छूट जायगी और जब नित्य क्रिया छूट गई तो नरक में जाना पड़ेगा ॥ ३८ ॥

मू. तस्याञ्च पृथिवीपाल भवित्री मम सन्नतिः । तव षड्भागदात्री सा भवित्री धर्महेतुकी ॥ ३९ ॥

टी. और हे महिपाल उस स्त्री से जो पुत्र पैदा होगा वह आप को छठवां भाग देगा और मेरा धर्म भी बना रहेगा ॥ ३९ ॥

मू. तदेतत्तेन याख्याता पत्नीयामेह नाप्रभो । तां समानय रक्षामां भवानधिकृतो यतः ॥ ४० ॥

टी. इसवाले मैंने उस स्त्री की बात आपको बतसादी अब आप उसको लाकर मेरी रक्षा कीजिये क्योंकि आप को अधिकार है ॥ ४० ॥

मू. मार्कण्डेय उवाच ॥ सतस्यैवं वचः श्रुत्वा
विमृष्य च नरेश्वरः । सर्वोपकरणैर्युक्त
मार्करोहमहारथम् ॥ ४१ ॥ ४१ ॥ ४१ ॥

टी. मार्कण्डेयजी कहते हैं कि हे क्रीष्टुकि इस तरह ब्राह्मण की
वानें बुनकर और अपने जी में विचार कर और अपने लोगों को
साथ लेकर रथ पर सवार होकर ॥ ४१ ॥

मू. इतश्चेतश्च तेनासौ परिवभ्राम मेदिनीम् । दद-
श च महाराण्येतापसाश्रममुत्तमम् ॥ ४२ ॥

टी. वह राजा उस ब्राह्मण के साथ ब्राह्मणी को खोजता हुआ पृथ्वी पर
घूमता फिरता हुआ एक महावन में एक तपस्वी के आश्रम पर पहुँचा ॥ ४२ ॥

मू. अवतीर्य च तत्रासौ प्रविश्य दृश्ये मुनिं ।
कौश्यां दृष्ट्वा समासीनं ज्वलन्तमिव तेजसा ४३

टी. और रथ से उतर कर उस आश्रम के अन्दर गया तो देखा कि वह
मुनि सूर्य समान तेजमान शरीर एक कुश के आसन पर बैठे है ॥ ४३ ॥

सहृद्वानृपतिं प्राप्तं समुत्थाय त्वरान्वितः । स-
म्मान्य स्वागते नैव शिष्यमाहार्यमानय ४४

टी. और उस मुनि ने भी राजा को अपने आश्रम में प्राप्त देखकर जल्द
उठकर आगत स्वागत से उनका आदर किया और अपने शिष्य से क
हा कि इनके अर्घ्य के वास्ते जल लाओ ॥ ४४ ॥

मू. तमाह शिष्यः शनकैर्दातव्योऽर्घ्येऽस्य किं मुने ।
तदाज्ञापय सच्चिन्त्यतवाज्ञाहिकरोम्यहं ॥ ४५ ॥

टी. तब शिष्य ने कहा कि हे गुरु विचार कर आज्ञा दीजिये जो राजा अ
र्घ्य देने योग्य हो तो हम अर्घ्य दें नहीं तो नहीं सो कहिये ॥ ४५ ॥

मू. ततोऽवगतवृत्तान्तो भूपतेस्तस्य सद्विजः । संभा-
षास न दानेन च क्रेतुः सम्मानमात्मवान् ॥ ४६ ॥

टी. तब ऋषि ने ध्यान करके राजा का सब वृत्तान्त समझकर अर्घ्य के वास्ते आज्ञा नहीं दी परन्तु राजा से कुशल सेम पूछ कथा वार्ता कहकर आसन देकर बहुत आदर किया ॥ ४६ ॥

मू. ऋषिरुवाच ॥ किंनिमित्तमिहायातोमवा-
नकिन्तेचिकीर्षितं । उत्तानपादतनयंवे-
त्तिन्वामुत्तमंनृप ॥ ४७ ॥ ४७ ॥ ४७ ॥

टी. फिर ऋषि ने कहा कि हे राजन् मैं जानता हूँ कि आप महा-
राज उत्तानपाद के पुत्र हैं नाम आपका उत्तम है परन्तु यह बत-
लाइये कि किस प्रयोजन के वास्ते आप यहाँ आये हैं ॥ ४७ ॥

मू. राजोवाच ॥ ब्राह्मणस्यगृहाद्वाय्याकेना-
प्यपहृतामुने । अविज्ञातस्वरूपेण ताम-
न्येषुमिहागतः ॥ ४८ ॥ ४८ ॥ ४८ ॥ ४८ ॥

टी. यह बात सुनकर राजा बोला कि हे मुनि इस ब्राह्मण की
खीको घरही में से कोई दुष्ट हरण करले गया है मैं उसको नहीं
जानता हूँ उसी ब्राह्मणी के दूँदने के वास्ते मैं यहाँ आया हूँ ॥ ४८ ॥

मू. पृच्छामियन्तेतन्मेत्वंप्रणतस्यानुकम्पया । अ-
भ्यागतस्यायगृहंभगवन्वक्तुमर्हसि ॥ ४९ ॥

टी. और बहुत विनय के साथ आप से एक बात की प्रार्थना करता हूँ
कि उसका वृत्तान्त मुझसे कहिये क्योंकि इस समय मैं आपका अभ्यागत हूँ ॥ ४९ ॥

मू. ऋषिरुवाच ॥ पृच्छमामवनीपालयत्पृष्ट-
व्यमशङ्कितः । वक्तव्यञ्चेत्तवमयाकथ-
यिष्यामितत्वतः ॥ ५० ॥ ५० ॥ ५० ॥ ५० ॥

टी. फिर ऋषि ने कहा कि हे पृथ्वीपालक जो आपको पूछना हो
निशंक होकर पूछिये मैं तत्त्व पूर्वक कहूँगा ॥ ५० ॥

मू. राजोवाच ॥ गृहागताययोमह्यं प्रथमेद-

शने मुने । त्वया समुद्यतो दानुं कथं सोऽ-
र्घ्यो निवर्त्तितः ॥ ५१ ॥ ५१ ॥ ५१ ॥ ५१ ॥

टी. राजा ने कहा कि हे मुनि पहिले जब मैं ने आपका दर्शन कि-
या तब तो आपने अर्घ्य लाने के वास्ते शिष्य को आज्ञा दिया ज-
ब शिष्य मुरु को अर्घ्य देने के वास्ते मुस्तैद हुआ तब फिर आप
से पूछकर चुप हो रहा आपने आज्ञा न दिया सो मुरुसे कहिये ॥ ५१ ॥

मू. ऋषिरुवाच ॥ त्वद्दर्शनेन रभसा दाज्ञप्तो
ऽयं मयानृप । यदा तदा ह मे तेन शिष्येन प्र-
तिबोधितः ॥ ५२ ॥ ५२ ॥ ५२ ॥ ५२ ॥

टी. ऋषि ने कहा कि हे राजन् अपने आश्रम में आपको प्राप्त दे-
खकर जल्दी में मैंने अर्घ्य के वास्ते आज्ञा दे दिया परन्तु इस
शिष्य ने मुरु को समझाया ॥ ५२ ॥

मू. एष वेति जगत्पत्रमत्प्रसादादनागतं । यथा
हंसमतीतञ्च वर्त्तमानञ्च सर्वतः ॥ ५३ ॥

टी. और जिसतरह मैं भूत भविष्य वर्त्तमान का हाल जानता हूँ उसी
तरह यह शिष्य भी इस संसार के भूत भविष्यारि का हाल मेरे प्रसाद से जानता है

मू. आलोच्याज्ञापयेत्युक्तेन तो ज्ञातं मया पितृ-
ततो न दत्तवानर्घ्यमहंतुभ्यं विधानतः ॥ ५४ ॥

टी. तो जब इस शिष्य ने मुझसे कहा कि गुरुजी विचार कर आज्ञा
दीजिये तब मैं ध्यान करके आपका सम्पूर्ण वृत्तान्त समझ गया इस-
से मैं ने आप को अर्घ्य न दिया ॥ ५४ ॥

मू. सत्यं राजन् त्वमर्घ्यार्हः कुले स्वायम्भुवस्य च ।
तथापि नार्घ्ययोग्यत्वां मन्यामो वयमुत्तमं ॥ ५५ ॥

टी. यद्यपि आप स्वायम्भुव मनु के कुल में पैदा हैं और अर्घ्य लेने योग्य
हैं परन्तु मैं आपको अर्घ्य योग्य नहीं समझता हूँ ॥ ५५ ॥

मू. राजोवाच ॥ किं कृतं हि मया ब्रह्मन् ज्ञाना
दज्ञानतोऽपि वा । येन त्वतोऽर्घ्यं मर्हो मिना
हमभ्यागतश्चिरात् ॥ ५६ ॥ ५६ ॥ ५६ ॥ ५६ ॥

टी. इनकी बातें ऋषि की सुनकर राजा बोला कि हे ब्रह्मन् मैं ने
ज्ञान से या अज्ञान से कौन ऐसा कुकर्म किया है कि जिसके सबब से
इतने दिनों पर आप का अभ्यागत होने पर भी आपने मुझे अर्घ्य न दिया ५६

मू. ऋषिरुवाच ॥ किं विस्मृतन्ते यत्पत्नी त्व-
या त्यक्ता च कानने । परित्यक्तस्तया सा-
द्वै त्वया धर्मो नृपाखिलः ॥ ५७ ॥ ५७ ॥

टी. जब ऋषि बोले कि हे राजन् आप ने जो अपनी स्त्री को निर्जनवनमें
छोड़कर उसके सबब से सम्पूर्ण धर्म भी अपने खो दिये क्या वह वृ-
त्तान्त आप को भूल गया जो मुझ से आप पूछते हैं ॥ ५७ ॥

मू. पक्षेण कर्मणो हान्या प्रयात्यस्पर्शनान्नरः किं
मूचैर्वार्षिकीयस्य हानिस्तेनित्यकर्मणः ॥ ५८ ॥

टी. एक पक्ष तक जिस मनुष्य का कर्म खूट जाता है उस मनुष्य
का शरीर खूना न चाहिये और जिसका कर्म वर्ष दिन तक खूट
गया हो उसकी दुर्गति का हाल कहाँ तक कहेंगा ॥ ५८ ॥

मू. पत्न्यानुकूलया भाव्यं यथाशीलेऽपि भर्त्तरि । दु-
शीलापि तथा भार्या पोषणीयानरेश्वर ॥ ५९ ॥

टी. और हे भर्त्तरि जिस तरह प्रीतिवती और शीलवती स्त्री का पो-
षण भरण मनुष्य करता है उसी तरह दुःशीला स्त्री का भी पोषण
करना मनुष्य को उचित है ॥ ५९ ॥

मू. प्रतिकूलहि सापत्नी तस्य विप्रसयाहता । त-
यापि धर्मकानीः सौत्वामुद्याति नरानृप ॥ ६० ॥

टी. देखिये इस ब्राह्मण की स्त्री जो हरी गई है वह स्त्री उस ब्राह्मण

के अनुकूल न थी यानी प्रीतिवती न थी परन्तु अपने धर्म और कर्म के लिये यह ब्राह्मण आपसे स्त्री लाने के वास्ते याचना करता है ॥ ६० ॥

मू. चलतः स्थापयस्य न्यान् स्वधर्मे तु मही पते । त्वां
स्वधर्मादिचलितं कोऽपरः स्थापयिष्यति ॥ ६१ ॥

टी. हे राजन् जो पुरुष अपना धर्म छोड़कर अधर्म करता है उसको आप दाढ़ करके फिर अपने धर्म में स्थापित करने है और जब आप ही धर्म को छोड़े देते हैं तो आपको कौन दूसरा धर्म में स्थापित करेगा ॥ ६१ ॥

मू. मार्कण्डेयो वाच ॥ विलक्ष्य समहीपालं
त्युक्तस्तेन धीमता । तथेत्युक्त्वा च पप्रच्छ ह-
तां पत्नीं द्विजन्मनः ॥ ६२ ॥ ६२ ॥ ६२ ॥ ६२ ॥

टी. मार्कण्डेयजी कहते हैं कि हे कौष्ठिक यह बात मुनि की सुन कर राजा बहुत लज्जित होकर कहने लगा कि आपका कहना सब सत्य है यह कह कर फिर ब्राह्मण की स्त्री का हाल पूछने लगा ॥ ६२ ॥

मू. भगवन् केन नीता सा पत्नी विप्रस्य कुत्र वा । अ-
तीतानागतं वेत्ति जगत्पतितथं भवान् ॥ ६३ ॥

टी. कि हे भगवन् उस ब्राह्मणी को कौन ले गया है और कहाँ रक्खा है और कहाँ है सो मैं नहीं जानता हूँ आप बतला दीजिये क्योंकि आप भूत भविष्य वर्तमान तीनों काल को देखते हैं ॥ ६३ ॥

मू. ऋषिरुवाच ॥ तां जहाराद्रितनयो वला-
को नाम राक्षसः । दृश्यते चाद्यतां भूप-
त्पलावर्त्तके मुने ॥ ६४ ॥ ६४ ॥ ६४ ॥ ६४ ॥

टी. ऋषि ने कहा कि उस ब्राह्मणी को आदिका बेरा वलाक नाम राक्षस हर ले गया है उसला वर्त्तक नाम बंन में रक्खा है हे राजन् आप जल्द जाइये इसी वर्त्तक आप उसको देखियेगा ॥ ६४ ॥

मू. मच्छसंयोजयाशुत्वभार्यायाहिदिनोत्तमं। मा
पापासदतांयानुत्वमिवाप्तौदिनेदिने। ६५।

टी. जल्द जाइये उस ब्राह्मणी को ले आकर इस ब्राह्मण के साथ
कर दीजिये कि जिसमें आप की तरह यह ब्राह्मण भी दिन
दिन पापी न हो ॥ ६५ ॥

इति श्री मार्कण्डेय पुराणे श्रौतानमन्वन्तरे नाम। ६६।

आध्याय ५९ अष्ट

१- पھر کر و شکی نے مارکندے جی سے کہا کہ اے ہمارا ج سوار و چھ منوتر اور آٹھون مذہ
کا حال تو آپ نے مفصل بیان فرمایا۔ ۲- اور سوامیہ منوتر کا حال بھی آپ میری طرح
کے موافق پہلے کہہ چکے اب تیسرے ائم نام منوتر کا بھی حال کیے ۳- مارکندے جی کہتے ہیں کہ
اتان پاد نام راجا کے سرج نام استری سے ایک لڑکا پیدا ہوا جس کا نام ائم رکھا گیا اور وہ
براطقت مر اور صاحب قدرت ہوا۔ ۴- اور بڑا دھرم اتا اور مہاتا اور سب آدمیوں میں
سورج کی طرح تیج وان ہوا۔ ۵- اور دوست اور دشمن اور رعایا اور اپنے لڑکے کے ساتھ
یکساں محبت رکھتا تھا اور دشمنوں کی واسطے جہاز اور سادھون کی واسطے چندرمان کی طرح
تھا۔ ۶- اُس اتان پاد کے لڑکے یعنی ائم نے بھلا نام ایک لڑکی سے اپنی شادی کی جسے
سچی نام استری سے راجا اندرن نے اپنی شادی کی تھی ۷- اور جی طرح رومیہ کے ساتھ چندرمان
محبت رکھتے ہیں اسی طرح بھلا کے ساتھ ائم کو کمال محبت تھی۔ ۸- بھلا کے سوا
اور کسی کام میں ائم کی طبیعت نہ لگتی تھی اور طبیعت کے لگا دے خواب میں بھی اُسی کو
دیکھ کر رہتا تھا۔ ۹- جو وقت بھلا کو دیکھتا تھا اس وقت غلبہ کا دیو سے ایسا اس کے بدن میں
پٹ جاتا تھا کہ گویا دونوں ایک ہی قالب ہیں۔ ۱۰- اگر دم بھر بھلا کی آواز نہ سنتا

تو اسکو بھیراری ہوئی اور جب سنتا تو خوش ہو جاتا۔ ۱۱ صحبت کے وقت بھلا کے
 جسم میں زیورات کے رہنے سے لپٹ جھپٹ میں تکلیف پانے کے خیال سے ان زیورات
 کو نکلاؤات۔ ۱۲ اور ایک ساعت بھی بھلا سے جدا ہوتا بلکہ اسکی جدائی کے خوف سے
 کھانا کھانے کے وقت بھی اسکا ہاتھ پکڑے ہوئے کچھ تھوڑا سا کھالیتا۔ باوجود اس
 محبت کے بھلا اقم سے خوش نہ رہتی تھی۔ ۱۳ راجا اقم کو اگرچہ بھلا بہت پیاری تھی مگر
 اقم کو بھلا کچھ خاطر میں نہ لاتی تھی۔ ۱۴ ایک دن راجا اقم شراب پی رہا تھا اور اس
 شراب میں سے ایک پیالہ بہت پیار کے ساتھ بھلا کو پینے کے واسطے دینے لگا۔ ۱۵ بہت
 اُس محفل میں اُسوقت بہت راجا لوگ جمع تھے اور راجہ پور ناتھا اور گانے والے خوش
 الحانی کے ساتھ گارہے تھے۔ ۱۶ تاہم ان سب راجوں کے سامنے بھلا نے بھیراری
 حقارت کے نظر سے اقم کی دی ہوئی شراب کی طرف سے اپنا منہ پھیر لیا تب راجا اقم شہ
 ہو کر غصہ میں آیا۔ ۱۷ اور سانپ کی طرح لمبی سانس لیکر جو بدار کو بلا کر حکم دیا کہ بھلا
 نے میری حقارت کی سی اور مجھکو دشمن جانتی ہو۔ ۱۸ اسلئے اسکو بیان سے پکڑ کر کسی
 سنسان ویران بیابان میں چھوڑ آوا میں کسی طرح کا پس و پیش نہ کرو۔
 ۱۹ مارکنڈے جی کہتے ہیں کہ راجا کا یہ حکم پا کر جو بدار نے بلا پس و پیش بھلا کو ایک جنگل
 قی وودق میں لے جا کر چھوڑ دیا۔ ۲۰ بھلا اپنے کو اُس جنگل میں دیکھ کر اُس جگہ کی بہت
 شکر گزار ہوئی اسوجہ سے کہ راجا کی نگاہ مجھ پر پڑے گی۔ ۲۱ اور بیان بھلا کے فراق
 میں راجا کے دل پر سخت حد نہ تھا کہ جسے سبب سے اسکی طبیعت کسی عورت پر مائل نہوتی
 تھی۔ ۲۲ بلکہ رات دن اُسی مازنین کا خیال رہتا لیکن باوجود اس تردد کے
 رعایا کو دھرم کے ساتھ پرورش کرتا اور اپنی راج کا کام بخوبی انجام دیتا تھا۔
 ۲۳ جس طرح باپ اپنے بیٹے کی پرورش کرتا وہی اسی طرح راجا اقم اپنی رعایا کی پرورش
 کرتا تھا ایک دن ایک براہمن راجا کے پاس آکر ہاتھ جوڑ کر کہنے لگا کہ ہم ۲۴ اسے
 ہمارے میں بہت دکھی ہوں اور یہ میرا دکھ سوا ہے راجا کے اور کسی سے دور نہیں ہے
 ۲۵ حال یہ ہے کہ رات کو میں اپنے مکان میں سوتا تھا نہ معلوم کون شخص آیا اور میرے
 مکان میں دروازہ کی راہ سے گئیں کہ میری عورت کو مجھ الگ کیا۔ اسکو آپ تلاش کر کے
 منگوادیجیے۔ ۲۶ راجا نے کہا کہ اے براہمن جب تم یہ نہیں کہہ سکتے کہ کون آدمی کیسوقت

۳۲۸ چرا لیکیا تو پھر میں سکوکرتا کروں اور کہاں سے منگوادوں - ۲۷ براہمن نے کہا کہ
 اسے ہمارا ج میرے سوتے وقت میرے مکان کا دروازہ کھلا رہ گیا تھا اسوجہ سے اس
 عورت کو کوئی چرا کر لیکیا مگر آپ راجا ہیں البتہ جانتے ہوں گے - ۲۸ آپ ہم لوگوں کے اپنے
 والے ہیں اور ہم لوگوں سے دولت کا چھٹا حصہ لیتے ہیں آپ ہی کو اپنا محافظ سمجھ کر ہم لوگ
 بیٹھ کر سو رہے ہیں - ۲۹ یہ بات سنکر راجا نے کہا کہ تمھاری عورت کو میں نے کبھی نہیں
 دیکھا ہے کہ بھرت و سیرت کی ہر س اسکی صورت و سیرت کا حال بیان کرو -
 ۳۰ براہمن نے کہا کہ آنکھیں اسکی بہت سخت ہیں اور قد اسکا نہایت دراز اور بازو چھوٹے
 اور نہ بلبا ہر غرض کہ صورت اسکی بہ صورت ہی یہ میں اسکی بدگوئی نہیں کرتا ہوں -
 ۳۱ اور اے ہمارا ج بولی بھی اسکی بہت سخت ہے اور عادتیں بھی اسکی اچھی نہیں ہیں اور صورت
 ایسی بہ صورت ہے کہ دیکھنے کے لائق نہیں - ۳۲ اور جوانی بھی اسکی گزر گئی ہے ایسی میری
 عورت ہی میں سمجھتا ہوں - ۳۳ یہ باتیں براہمن کی سنکر راجا بولا کہ جو عورت نیک
 ہوتی ہے وہ ہر طرح سے سکھ دیتی ہے اور تمھاری عورت تو ہمیشہ دکھ دیا کرتی ہوگی پھر تم بنیادہ
 ایسی عورت کو کیوں چاہتے ہو میں تمکو دوسری عورت منگوائے دیتا ہوں - ۳۴ عورت
 رکھنے میں اچھی صورت اور اچھی سیرت کا ہونا مقدم ہے اور جس عورت کی صورت یا خصلت اچھی
 نہ تو ایسی عورت کو ترک کر دینا ہی اچھا ہے - ۳۵ براہمن نے کہا کہ اے راجا عورت کو تو
 ضرور ہی رکھنا چاہیے کیونکہ میں لکھا ہے کہ عورت ضرور کرو عورت کرنے سے بدیا پیدا ہوتا ہے -
 ۳۶ اے راجا عورت کی حفاظت ضرور کرنا چاہیے کیونکہ اس سے آماروپ پھر پیدا ہو کر آتما
 کی حفاظت کرتا ہے - ۳۷ اے راجا اگر عورت کی حفاظت نہ کرے تو وہ عورت دوسرے مرد کے
 پاس چلی جائے اور اس مرد سے جو لڑکا پیدا ہو وہ لڑکا برن سنکر (یعنی دوغلا) کہلاتا ہے اور
 وہ دوغلا لڑکا ان بزرگوں کو جو بہشت میں بن و بان سے چھینکر دوزخ میں لاکر ڈال دیتا ہے -
 ۳۸ پس جب تک میری عورت نہ لگی تب تک روز بروز میرے دھرم کا نقصان ہوگا اور
 جب میری بٹھ کر یا (عل روزمرہ) چھوٹ گئی تو مجھکو ضرور نرک میں جانا پڑیگا - ۳۹ اے
 راجا اس عورت سے اگر کوئی لڑکا پیدا ہوا تو آپکا چھٹا حصہ دینے والا قائم ہوگا اور میرا دھرم بھی
 بنارہیگا - ۴۰ اسی نظر سے اسکی عورت اور سیرت کا حال بھی ابھی ایک بتلادیا اب آپ اسکو منگوادو
 میرے دھرم کی رچا کیجیے - ۴۱ راجا یہ باتیں سنکر اور دل میں کچھ سوچ بچار کر اس براہمن کو

اپنے ساتھ رتھ پر بیٹھا کر ۳۴ اُس برامہنی کی تلاش میں ادھر ادھر گھومتے پھرتے ہوئے
ایک مہا بن میں ایک تپستوی (عابد) کے استھان پر پہنچے۔ ۳۵ اور رتھ سے اتر کر اُس
گٹھی کے اندر گئے تو دیکھا کہ ایک مَن سورج کے سَنان پر کاش وان ایک کُش کے آسن پر بیٹھے
ہیں۔ ۳۶ اور مَن نے راجا کو اپنے بیان آیا سمجھ کر اٹھ کر بہت خاطر داری کی اور اپنے چیلون
میں ایک چلیا سے کہا کہ راجا کے ارگھ کے واسطے پانی لاؤ۔ ۳۷ تب چلیا نے کہا کہ اے مہاراج
سمجھ کر حکم دیجیے کہ راجا کو ارگھ ہم دین یا نہیں۔ ۳۸ تب مَن نے دھیان کر کے راجا کی سب
کیفیت معلوم کر کے اُس چلیا کو ارگھ دینے سے باز رکھا اور راجا سے خیر و عافیت مزاج کی پوچھ کر
آر آسن وے کر بہت خاطر داری کی۔ ۳۹ اور کہا کہ اے راجا میں جانتا ہوں کہ آپ مہاراج
اتان پاد کے لڑکے ہیں نام اچکا اُتھر ہی پر آپ بیان کس مطلب سے آئے ہیں وہ کیسے۔
۴۰ مَن کی یہ بات سن کر راجا نے کہا کہ اے مَن اس برامہن کی عورت کو کوئی خیرا کر لگایا ہو
میں اسکو نہیں جانتا ہوں اُسکی تلاش میں بیان تک پہنچا ہوں اچکا مہان ہوں۔ ۴۱ بہت
عاجزی کے ساتھ آپ سے ایک بات پوچھتا ہوں بیان فرمائیے۔ ۴۲ ارگھ نے کہا کہ اے راجا
جو کچھ آپکی خواہش ہو بے تکلف پوچھیے میں مفصل بیان کرونگا۔ ۴۳ راجا نے کہا کہ اے مَن
جبوقت میں آپ کے پاس آیا تھا اسوقت آپ نے اپنے چیلے سے ارگھ لانے کے واسطے کہا تھا
اور وہ ارگھ دینے پر مستعد بھی ہوا تھا مگر جب اُس نے دوبارہ آپ سے اجازت چاہی تو آپ نے
اجازت نہ دی کہ جس سبب سے اُس نے مجھ کو ارگھ نہ دیا۔ ۴۴ مَن نے کہا کہ اے راجا فی حقیقت
اچکا مَن نے اپنے مکان پر آیا دیکھ کر ارگھ دینے کی واسطے سکھ کو حکم دیا تھا۔ ۴۵ مگر یہ سکھ
میرا میرے پر ساد سے مثل میرے ماضی مستقبل و حال کا احوال جانتا ہے۔ ۴۶ چنانچہ
جبوقت اُس سکھ نے چار کر کہا کہ ہے گرو سمجھو مجھ کو سمجھ کر آگیا دیجیے تب میں بھی سمجھ گیا اور اچکا
ارگھ نہ دیا۔ ۴۷ اگرچہ آپ سوا مسمو مَن کے خاندان میں پیدا ہیں اور ارگھ لینے کے لائق
ہیں پر میں آپ کو ارگھ دینے کے لائق نہیں سمجھتا ہوں۔ ۴۸ یہ سن کر راجا نے کہا کہ ہے مَن
میں نے جان کر یا انجان کر کون ایسا لگزم کیا ہے کہ جس سبب سے میں آئے پر بھی آپ نے مجھ کو
ارگھ دینے کے لائق نہ سمجھا۔ ۴۹ مَن نے کہا کہ اے راجا آپ نے اپنی عورت کو زجن بن
میں (یعنی جس جگہ میں کوئی آدمی نہ ہو) چھوڑ کر اپنا سب دھرم کھو دیا کیا آپ اس بات کو
بھول گئے جو مجھ سے پوچھتے ہیں۔ ۵۰ جس آدمی کا کرم پندرہ دن تک چھوٹ گیا ہو اسکا

جسم چھو ناسخ ہی اور جبکہ گرم برس دن تک چھوٹا رہا ہوا سکی درگت کا حال میں کمانک
 کون - ۵۹ جطر ح محبت اور مروت والی عورت کا پیار اسکا مرد کرتا ہی اسکی یہ عورت
 دے ہر عورت کی بھی پرورش کر نامہ دے واسطے لازم ہی - ۶۰ دیکھو اس برا مھن کی
 عورت جو چوری کئی ہی وہ عورت اس برا مھن کے موافق مزاج نہیں ہی مگر تاسم یہ برا مھن
 اپنے دھرم اور گرم تمام رہنے کے لیے اس عورت کی تلاش کرنے کے واسطے آپ سے التجا
 کرتا ہی - ۶۱ اسے راجا جو کوئی آدمی اپنا دھرم چھوڑ کر دھرم کرتا ہی اسکو تو آپ سزا
 دے کر پھر اسکو اس کے دھرم پر قائم کرتے ہیں اور جب آپ ہی دھرم کو چھوڑے دیتے ہیں تو
 ایک کون دھرم پر قائم کریگا - ۶۲ مارکٹے جی کہتے ہیں کہ اسے کر و شکی راجا یہ بات سنکر
 بہت شرمندہ ہوا اور کہنے لگا کہ اسے مہاراج آپکا کہنا سب سچ ہی اتنا کہہ کر پھر اس مھن
 کی عورت کا حال پر چھنے لگا - ۶۳ کہ اسے مہاراج اس برا مھن کی عورت کو کون شخص کمان
 لیکیا اور کمان چپا کر رکھا ہی چھکو بتا دیجیے کیونکہ آپ ماضی مستقبل و حال تینوں زمانوں کا
 احوال جانتے ہیں - ۶۴ میں نے کہا کہ اس برا مھن کو آدر نام راجھس کا بیٹا بلان نام راجھس
 جہاں کر لیکیا ہی اور اتپا بڑیک نام بنین چپا کر رکھا ہی آپ جلد جاسیے اسی بنین اسکو پانگکا
 ۶۵ جاتے ہیں دیر کیجیے جلد اسکو لا کر اس برا مھن کے حوالہ کر دیجیے تاکہ یہ برا مھن بھی آپ کی
 طرح روز بروز پاپی ہو - فقط -

मू. मार्कण्डेय उवाच ॥ अथारुहस्वरथं प्रणि
 पत्य महामुनिः । तेनारख्यातं वनन्तश्च प्र-
 ययावुत्पलावतं ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

श्री. मार्कण्डेयजी कहते हैं कि हे औष्ठिक फिर तो राजा मुनि को प्रणा-
 म कर रथ पर चढ़ उत्पलावर्तक वन में जिसको मुनि ने वनाया था गया ॥ १ ॥

मू. यथारख्यातस्वरूपाञ्च भार्या भगनादिजस्य तां
 भक्षयन्ती ददर्श यश्री फलानि नरेश्वरः ॥ २ ॥

श्री. वहाँ पहुँचकर जैसा रूपशील स्वभाव उस ब्राह्मणी का ब्राह्मण ने राजा से व-

ताया था उसी सूरत से उस ब्राह्मणी को बेल खाते हुये पाया ॥२॥

मू. पप्रच्छ च कथं भद्रे त्वमेतद्वनमागता । स्फुरं
ब्रवीहि वैशालेरपि भार्या सुशर्मणाः ॥ ३ ॥

टी. यह देखकर राजा ने ब्राह्मणी से पूछा कि तू इस वन में किस तरह
जाई है सच कह तू तो विशाल के पुत्र की स्त्री है ॥३॥

मू. ब्राह्मण्युवाच ॥ सुताहमतिरात्रस्य द्विज
स्य वनवासिनः । पत्नी विशालपुत्रस्य यस्य
नाम त्वयोदितं ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥

टी. यह सुनकर ब्राह्मणी ने कहा कि सच है मैं अतिरात्र ब्राह्मण की बेटी हूँ
और विशालपुत्र ब्राह्मण की स्त्री हूँ जिसका नाम आप ने लिया है ॥४॥

मू. साहं हतावलोकेन राक्षसेन दुरात्मना । प्रसु-
प्ता भवनस्यान्ते भ्रातृमातृवियोजितां ॥ ५ ॥

टी. मुझको बलाक नाम राक्षस दुरात्मा ने रात को सोने में चुराकर इस वन में
लाकर रक्ता है मुझको माता और भ्राता और पति से वियोग होगया ॥५॥

मू. भस्मीभवतु तद्रक्षो येनास्म्येवं वियोजिता । मा-
ता भ्रातृभिरन्यैश्च निष्पाम्य त्रसुदुःखिता ॥ ६ ॥

टी. जो राक्षस मुझको माता बाप और पड़ोसियों से छुड़ाकर इस वन में लाया है और
जिसके सबब से मैं दुखी हूँ वह राक्षस जलकर राख हो जाय ॥६॥

मू. अस्मिन् वनेऽतिगहने तेनानीयाहमुज्झिता ।
न वेदिकारणं किं तन्नोपभुंक्ते न खादति ॥ ७ ॥

टी. पर मैं यह नहीं जानती कि किस वास्ते मुझको लाया है न तो वह
मुझे खाता है और न किसी बुरी बात की इच्छा करता है ॥७॥

मू. राजोवाच ॥ अपि तदज्ञायते रक्षस्त्वा मु-
त्सृज्य कवैगतं । अहं भर्ता तवैवात्र प्रेषितो
द्विजनन्दिनि ॥ ८ ॥ ८ ॥ ८ ॥ ८ ॥

री. राजा ने कहा कि यह वृजानती है कि वह राक्षस कहाँ गया मैंने
पति का भेजा हुआ आया है ॥२८॥

मू. ब्राह्मण्युवाच ॥ अस्यैव काननस्यान्ते
सतिष्ठति निशाचरः । प्रविश्य पश्यतु म-
वाननविभेति ततो यदि ॥२९॥ २९ ॥ २९ ॥

री. यह सुनकर ब्राह्मणी ने कहा कि हे महाराज वह राक्षस इसी वन
में रहता है जो आप को भय नही तो वन में जाकर देखिये ॥२९॥

मू. मार्कण्डेय उवाच ॥ प्रविवेशततः सोऽथ
तया वर्त्मनि दर्शिते । दृष्ट्वा परिवोरास-
मवेतञ्च राक्षसं ॥३०॥ ३० ॥ ३० ॥ ३० ॥

री. मार्कण्डेय कहते हैं कि हे कौशिक जब उस ब्राह्मणी ने राजा
को पता बतला दिया तब राजा उसी रास्ते से वहाँ गया जहाँ वह रा-
क्षस अपने भाई बन्धु के साथ रहता था ॥३०॥

मू. दृष्ट्वा तत्र तस्मिन् त्वरमाणाः सराक्षसः । दृ-
ष्ट्वा देवमहीमूर्त्तां स्पृशन् पादनि कंययौ ॥३१॥

री. जब राक्षस ने राजा को देखा तो दूर ही से पृथ्वी पर झुक झुक कर
प्रणाम करता हुआ पास आया और राजा से कहने लगा ॥३१॥

मू. राक्षस उवाच ॥ समात्रागच्छतागेहं प्र-
सादस्ते महान कृतः । प्रशाधिकिं करोम्येष
वसामि विषये तव ॥३२॥ ३२ ॥ ३२ ॥ ३२ ॥

री. कि आप जो यहाँ मेरे स्थान पर आये वही रूपा की अब जो आप आ-
जायें मैं करूँ क्योंकि मैं आप का आज्ञावर्ती हूँ ॥३२॥

मू. अर्घ्यञ्चेमं प्रतीच्छत्वं स्थीयतञ्चेदमासनं । व-
यं भृत्या भवान् स्वामी दृढमाज्ञापयस्व मां ॥३३॥

री. यह अर्घ्य लीजिये और आसन पर बैठिये हम सब आप के दास हैं और

आप हमारे स्वामी हैं जो आज्ञा दीजिये हम सब करें ॥२३॥

मू. राजो वाच ॥ कृतमेवत्वया सर्व्वं सर्व्वामेवा
तिथिक्रियां । किमर्थं ब्राह्मणवधूस्त्वया
नीता निशाचर ॥२४॥ २४ ॥ २४ ॥ २४ ॥

श्री. राजाने कहा कि तुमने सब कुछ किया और मेरी स्वानिरदारी हो चुकी पर
यह कहो कि तुमने ब्राह्मण की स्त्री को किस वास्ते इस बन में लाकर रखा है ॥२४॥

मू. नेयं सुरूपासन्त्यन्याभार्य्यार्थञ्चेत्तद्वतात्वया । भ
क्ष्यार्थं चेत्कथं नीता त्वयैतत्कथ्यतां भम ॥२५॥

श्री. यह तो कुछ खूबसूरत नहीं है बल्कि बदसूरत है इसको भोगक
रने के वास्ते तो लाये न होगे जलबन्ता राक्षस ही खाने के वास्ते लाये
होगे तो फिर क्यों नहीं खाते ॥२५॥

मू. राक्षस उवाच ॥ न वयं मानुषा हारा अन्ये
ते नृपराक्षसाः । सुकृतस्य फलं यत्तु तदृष्णी
मो वयं नृप ॥२६॥ २६ ॥ २६ ॥ २६ ॥

श्री. राक्षस ने कहा कि हे महाराज जो राक्षस मनुष्यों को खाते हैं वह
दूसरे हैं मैं तो अपने बन के उत्तम उत्तम पदार्थ खाता हूँ ॥२६॥

मू. स्वभावञ्च मनुष्याणां योषिताञ्च विमानिताः ।
मानिताश्च समक्षी मो न वयं जन्तुखादकाः ॥२७॥

श्री. और मेरा स्वभाव मनुष्यों का ऐसा है और मेरी स्त्रियों का स्वभाव
भी वैसा ही है वह सब मेरा मान करती हैं और उन सभी का मान मैं
करता हूँ जो कोई अच्छे मन से मुझको भोजन देता है वही मैं खाता हूँ
मैं जीव खाने वाला राक्षस नहीं हूँ ॥२७॥

मू. यदस्माभिर्नृणां क्षान्तिर्भुक्ता क्रुध्यति तेन दा । भु
क्ते दुष्टे स्वभावे च गुणवन्तो भवन्ति च ॥२८॥

श्री. मैं मनुष्यों के ऊपर दया रखता हूँ इसी कारण से दूसरे राक्षस

लोम मुझसे विरोध रखते हैं जो मैं कुमन रहता तो वे राक्षसलोम
मेरे मित्र होते ॥ १८ ॥

मू. सन्निनः प्रमदाभूपस्वरूपेणाप्सरसासमाः रा
क्षस्यस्तामुनिष्ठत्सुमानुपीपुरतिः कथं ॥ १९ ॥

श्री. हे महाराज मेरे घर में बहुत सी राक्षसी स्त्रियाँ अप्सरा समान सुन्दर
हैं मनुष्यों की कृत्स्न स्त्रियों से मुझको क्या प्रीति होगी ॥ १९ ॥

मू. राजा वाच ॥ यद्येषानोपभोगायनाहाराय
निशाचर । गृहप्रविश्यविप्रस्यतत्किमेपा
हतात्वया ॥ २० ॥ २० ॥ २० ॥ २० ॥ २० ॥

श्री. इतनी बात राक्षस की सुनकर राजा ने कहा कि हे निशाचर जब तुम
इस ब्राह्मणी से भोग करने और खाने की नीयत नहीं रखते तो फिर कि
सवास्ते इसको ब्राह्मण के घर से रात के वक्त चुरालाये ॥ २० ॥

मू. राक्षस उवाच ॥ मन्त्रवित्सद्विजश्चेष्टोय-
ज्ञेयज्ञेगतस्य मे । रक्षोघ्नमन्त्रपठनात्क-
रोत्युच्चादनं नृप ॥ २१ ॥ २१ ॥ २१ ॥ २१ ॥

श्री. राक्षस ने कहा कि हे महाराज वह ब्राह्मण रक्षोघ्न मन्त्र जानता है
और यज्ञों में जाकर उस मन्त्र को पढ़ कर मेरा उच्चादन करता है ॥ २१ ॥

मू. वयं बुभुक्षितास्तस्य मन्त्रोच्चादनकर्मणा । क-
यामः सर्वयज्ञेषु स ऋत्विग्भवति द्विज ॥ २२ ॥

श्री. उसी मन्त्र के प्रभाव से उच्चादन होने के कारण मैं भूखा रह जा-
ता हूँ मैं कहाँ जाऊँ हर एक यज्ञ में तो यही ब्राह्मण मन्त्र पढ़ पढ़
कर उच्चादन कर देता है ॥ २२ ॥

मू. ततोऽस्माभिरिदन्तस्य वैकल्यमुपपादितं । पत्न्या
विना पुमानि ज्याकर्मयोग्यो न जायते ॥ २३ ॥

श्री. यही विचार करके यह सच्चा इसको मैंने ठहराई है कि विना स्त्री के यज्ञकर्म

योग्य न रहैगा इसवास्ते मैं उसकी स्त्री को चुरा लाया हूँ ॥२३॥

मू. मार्कण्डेय उवाच ॥ वैकल्योच्चारणात्तस्य
ब्राह्मणस्य महामतेः । ततः सराजातिभृशं
विषणः समजायत ॥ २४ ॥ २४ ॥ २४ ॥

टी. मार्कण्डेयजी कहते हैं कि हे कौष्ठिक उस ब्राह्मण की विकलता राक्षस
के कहने से मुनकर राजा उदास होकर शोचने लगा ॥२४॥

मू. वैकल्यमेव विप्रस्य वदन्मामेव निन्दति । अन-
र्हमर्घ्यस्य च मांसोऽप्याह मुनि सत्तम ॥२५॥

टी. कि यह राक्षस ब्राह्मण का हाल कहने में मेरी भी निन्दा करता
है और अर्घ्य देने के समय उस मुनि ने भी मेरी निन्दा की थी कि
तुम अर्घ्य के योग्य नहीं हो ॥२५॥

मू. वैकल्यं तस्य विप्रस्य राक्षसोऽप्याह मे यथा । अ-
पत्नीकतया सोऽहं संकटं महदास्थितः ॥ २६ ॥

टी. इस राक्षस ने उस ब्राह्मण का हाल कहकर मुझे व्याकुल कर
दिया क्योंकि मैं भी स्त्री के नहोने से बड़े संकट में पड़ा हूँ ॥२६॥

मू. मार्कण्डेय उवाच ॥ एवं चिन्तयतस्तस्य पु-
नरप्याह राक्षसः । प्रणामनमो राजानं वद्मानं
लिपुटो मुने ॥ २७ ॥ २७ ॥ २७ ॥ २७ ॥

टी. मार्कण्डेयजी कहते हैं कि जब राजा इस तरह चिन्ता करने लगा
तब राक्षस प्रणाम कर हाथ जोड़ बोला ॥२७॥

मू. नरेन्द्राज्ञाप्रदानेन प्रसादः क्रियतां मम । भृत्य
स्य प्रणतस्य त्वं युष्मद्विषयवासिनः ॥ २८ ॥

टी. कि हे महाराज मैं आपकी राज्य में बसता हूँ और आपकी शरण में
रहकर आपका दास हूँ आप मुझ पर प्रसन्न होकर आज्ञा दीजिये ॥२८॥

मू. राजो वाच ॥ स्वभावं वयमश्रीमस्त्वयो

क्तं यन्निशाचर । तदर्थिनो वयं येन कार्ये
गात्राणु तन्मम ॥ २८ ॥ २८ ॥ २८ ॥ २८ ॥

टी. राजा ने कहा कि हे निशाचर जिस स्वभाव में ब्राह्मण को तू ने बतलाया है
उसी स्वभाव में मैं भी पड़ा हूँ इस वास्ते मैं तुमसे कहता हूँ ॥ २८ ॥

मू. अस्यास्त्वयाद्यब्राह्मणादौःशील्यमुपभुज्यतां ये-
नत्वयात्तदौःशील्यातद्विनीता भवेदियं ॥ ३० ॥

टी. कि अब तू इस ब्राह्मणी की दुःशीलता को भोग कर ले जब तू दुःशील
ता इसकी ले लेगा तब यह ब्राह्मणी सुशील होजायगी ॥ ३० ॥

मू. नीयतांयस्वभार्य्यंतस्यवेश्मनिशाचर । अस्मि-
नृकृते कृतं सर्वं गृहमभ्यागतस्य मे ॥ ३१ ॥

टी. और इस ब्राह्मणी को उसी ब्राह्मण के घर जिसकी यह स्त्री है प-
हुँचा दे जो तू ऐसा करेगा तो तेरे घर पर आने से मेरा सब काम पूरा हो
जायगा और कुछ मैं तुमसे नहीं कहता हूँ ॥ ३१ ॥

मू. मार्कण्डेय उवाच ॥ ततः सराक्षसस्तस्याः
प्रविश्यान्तः स्वमायया । भक्षयामास दौः-
शील्यं निजशक्त्या मृपाजया ॥ ३२ ॥ ३२ ॥

टी. तब उस राक्षस ने राजा की आज्ञानुसार अपनी माया से उस ब्रा-
ह्मणी के शरीर में प्रवेश करके अपनी शक्ति के बल से उसकी दुःशी-
लता को भोग कर लिया ॥ ३२ ॥

मू. दौःशील्येनातिरौद्रेण पत्नी तस्य द्विजन्मनः । ते-
न सा सम्परित्यक्ता तमाहज गती पति ॥ ३३ ॥

टी. जब उस ब्राह्मणी की दुःशीलता जाती रही तब वह सुशील
हो कर राजा से कहने लगी ॥ ३३ ॥

मू. स्वकर्मफलपाकेन भर्तुस्तस्य महात्मनः । वि-
योजिता हंत देवैः सुरयमासीन्निशाचरः ॥ ३४ ॥

टी. कि हे महाराज प्रारब्ध के बंध होकर उस महात्मा ब्राह्मण से मुक्त को वियोग हो गया और निशाचर से संसर्ग हुआ ॥ ३४ ॥

मू. नास्यदोषो न वा तस्य मम भर्तुर्महात्मनः । म
मैव दोषो नान्यस्य कृतं ह्युपभुज्यते ॥ ३५ ॥

टी. इस राक्षस का कुछ दोष नहीं है और न मेरे महात्मा स्वामी का और न किसी दूसरे का कुछ दोष है किन्तु मैं अपना कर्मफल भोग करती हूँ ॥ ३५ ॥

मू. अन्यजन्मनिकस्यापि विप्रयोगः कृतो मया । सो
ऽयं मया प्युपगतः को दोषोऽस्य महात्मनः ॥ ३६ ॥

टी. पूर्वजन्म में मैंने किसी स्त्री पुरुष का वियोग किया था इसी से स्वामी से मुक्त मैं भी वियोग हुआ उस महात्मा का कुछ दोष नहीं है ॥ ३६ ॥

मू. राक्षस उवाच ॥ प्रापयामितवादेशादिमां
भर्तृगृहं प्रभो । यदन्यत्करणीयन्ते तदाज्ञा
पय पार्थिव ॥ ३७ ॥ ३७ ॥ ३७ ॥ ३७ ॥

टी. तब राक्षस कहने लगा कि हे प्रभु आप की आज्ञा से मैं इस ब्राह्मणी को उसके घर पहुँचा दूँगा सिवाय इसके और जो कुछ आप आज्ञा दी जिये वह भी मैं करूँ ॥ ३७ ॥

मू. राजा उवाच ॥ अस्मिन् कृते कृतं सर्वं त्वया
मे रजनीचर । आगन्तव्यञ्च ते वीरका-
र्यं काले स्मृते न मे ॥ ३८ ॥ ३८ ॥ ३८ ॥ ३८ ॥

टी. राजा ने कहा कि हे निशाचर इस ब्राह्मणी को उसके घर पहुँचा देने से मेरा सब काम पूरा हो जायगा सिवाय इसके मैं यह भी चाहता हूँ कि जब कभी मैं तेरा सुमिरण करूँ तब तू वहाँ पहुँच जाया करे ॥ ३८ ॥

मू. मार्कण्डेय उवाच ॥ तथेत्युक्त्वा तु तद्वक्ष-
स्तामादाय द्विजाङ्गनां । निन्ये भर्तृगृहं शु-
द्धां दौःशील्यापगमात्तदा ॥ ३९ ॥ ३९ ॥ ३९ ॥

۱۱۔ راجا کو دُور سے دیکھتے ہی راجپس زمین پر جھک جھک کر پرنام کرتا ہوا نزدیک آیا اور راجا سے کہنے لگا۔ ۱۲ کہ آپ جو میرے مکان پر تشریف لائے بڑی مہربانی فرمائی اب جو آپ حکم دیں وہ میں بجالاؤں آپکا تاج فرمان ہوں۔ ۱۳ یہ ارگھ لہجے اور آسن پر بیٹھیں ہم لوگ آپ کے غلام ہیں اور آپ ہمارے مالک ہیں جو حکم دیجیے وہ بجالاؤں۔ ۱۴ راجا نے کہا کہ تھے سب کچھ کیا اور سب طرح میری خاطر داری ہو چکی لیکن مگر یہ بتلاؤ کہ تھے براہمن کی اتنی کو کس واسطے اس جنگل میں لاکر چھپا رکھا ہے۔ ۱۵ وہ عورت تو کچھ خوبصورت نہیں ہی بلکہ محض بدصورت ہی اسکو صحبت کے واسطے تو لائے تھے گے ان مگر راجپس ہو کھانے کیواسطے البتہ چرا لائے ہو گے تو پھر اسکو کیوں نہیں کھاتے ہو۔ ۱۶ راجپس نے کہا کہ اے ہمارا ج میں مُردم خوار راجپس نہیں ہوں وہ دوسرے ہیں میں اس جنگل کی عمدہ نمٹیں کھاتا ہوں۔ ۱۷ خصلت میری آدمیوں کی ایسی ہی اور میری عورتوں کی بھی خصلت آدمیوں کی ایسی ہی اور وہ سب میری عورتیں میری قدر کرتی ہیں اور میں بھی ان کی قدر کرتا ہوں اور کوئی خوشی دل سے مجھکو کھانا دیتا ہے وہ میں کھاتا ہوں میں جو کھانا والا راجپس نہیں ہوں ۱۸ میں آدمیوں پر رحم کرتا ہوں اسیوجہ سے اور راجپس لوگ مجھے رنجیدہ خاطر رہتے ہیں اگر میں بد مزاج رہتا تو راجپس لوگ مجھے خوش رہتے۔ ۱۹ اے ہمارا ج میری عورتیں اگرچہ راجپسی ہیں مگر مثل اُتسر اوں کے خوبصورت ہیں تو مجھکو اس آدمی کی عورت سے جو محض بدصورت ہی کیونکر محبت ہوگی۔ ۲۰ یہ باتیں راجپس کی سنکر راجا نے کہا کہ اے راجپس جبکہ اس برا معنی سے نہ تو صحبت کرتا ہے اور نہ کھاتا ہے تو پھر کسواسطے اسکو اس برا کلمہ سے رات کے وقت چرا کر لے آیا ہے۔ ۲۱ راجپس نے کہا کہ اے ہمارا ج وہ براہمن راجپس نہیں منتہر جاتا ہے اور جگٹیوں میں جا کر اُس منتہر کو پڑھکر میرا چاٹن کرتا ہے۔ ۲۲ اسی منتہر اور اچاٹن کی وجہ سے میں بھوکھا رہ جاتا ہوں پھر میں کہاں جاؤں ہر ایک جگہ میں وہ براہمن جا کر منتہر سے میرا چاٹن کر دیتا ہے۔ ۲۳ یہ سوچ کر یہ سزا میں نے اُسکی تجویزی کی کہ بغیر عورت کے آدمی جات کرم کر نیکی لاتی نہیں پوتا اسیلئے میں اُسکی عورت کو چیرا لایا ہوں۔ ۲۴ مارکنڈے جی کہتے ہیں کہ اے کر و شکی راجا اُس براہمن کی ہتھاری اُس راجپس کے کہنے سے سنکر غمگین و ملول ہو کر اپنے دل میں کہنے لگا۔ ۲۵ کہ یہ راجپس براہمن کی کیفیت بیان کرنے میں میری بھی حقارت کرتا ہے اور ارگھ دینے کے وقت اُس میں نے بھی میری حقارت

کی تھی کہ تم ارگھ کے لائق نہیں ہو۔ ۲۶ غرضکہ راجپس نے اُس برامھن کی بیقراری
 بیان کر کے مجھکو بھی بیقرار کر دیا کیونکہ میں بھی عورت کے ہونے سے سخت مصیبت میں
 گرفتار ہوں۔ ۲۷ مارکنڈے جی کہتے ہیں کہ اس طرح سے جب راجا فکر کرنے لگا تب
 راجپس پر نام کر کے ماتھ جوڑ کر بولا۔ ۲۸ کہ اے مہاراج میں آپ کی راج میں نسبتا ہوں اور
 آپ کی پناہ میں رہ کر اچھا غلام ہوں آپ مجھ پر مہربان ہو جیے۔ ۲۹ راجا نے کہا کہ اے راجپس
 جس حال میں برامھن ہو اسی حال میں میں بھی گرفتار ہوں اس واسطے میں تم سے یہ کہتا ہوں۔
 ۳۰ کہ تم اس برامھن کی بد مزاجی کو کھینچ لو جب اسکی بد مزاجی کو تم کھینچ لو گے تب یہ خوش
 مزاج ہو جائیگی۔ ۳۱ پھر اس برامھنی کو اُس برامھن کے گھر حبلی یہ عورت ہو پہنچا دو اگر تم
 ایسا کرو گے تو تم میرے حق مہمانی سے ادا ہو جاؤ گے اور میں تم سے کچھ نہیں کہتا ہوں۔
 ۳۲ یہ سنا کر راجپس نے راجا کے حکم کے مطابق اپنی راجپسی کا یا کے زور سے اُس برامھنی کے
 جسم میں سما کر اسکی بد مزاجی کو کھینچ لیا۔ ۳۳ جب اُسکی بد مزاجی جاتی رہی تب وہ نیک
 مزاج ہو گئی اور راجا سے کہنے لگی۔ ۳۴ کہ اے مہاراج پر البد کی بات ہو کہ اُس مہاتا
 برامھن سے مجھکو جدائی اور اس راجپس سے سابقہ ہوا۔ ۳۵ اس راجپس کا کچھ قصو
 نہیں ہو اور نہ میرے سوامی کا اور نہ کسی دوسرے کا قصو ہی بلکہ میں اپنے کرم کا پھل بھوک
 کرتی ہوں۔ ۳۶ میں نے پہلے جنم میں کسی مرد و عورت میں جدائی نہ کرائی تھی اسی وجہ سے مجھکو اپنے
 سوامی سے جدائی نصیب ہوئی اُس مہاتا برامھن کا کچھ قصو نہیں ہے۔ ۳۷ قصہ مختصر راجپس
 نے کہا کہ اے راجا آپ کے حکم کے موافق میں اس برامھنی کو اسکے گھر پہنچا دو گا سواے اسکے
 اور جو کچھ حکم ہو جائے گا۔ ۳۸ راجا نے کہا کہ اے راجپس اس برامھنی کو اسکے گھر پہنچا دو
 سے میرا سب کام پورا ہو جائیگا سواے اسکے اور میں یہ بھی چاہتا ہوں کہ جب کبھی میں تنکو
 کسی کام میں یاد کروں تب تم وہاں فوراً پہنچ جایا کرو۔ ۳۹ مارکنڈے جی کہتے ہیں کہ راجا
 کے حکم کے موافق اُس راجپس نے اُس برامھنی کو نیک مزاج بنا کر اسکے شوہر کے گھر پہنچا دیا
 فقط۔

मू. मार्कण्डेय उवाच ॥ तां प्रेषयित्वा राजापि
स्वमर्तृगृहमङ्गनां । चिन्तयामास निःस्व-
स्य किमत्र सुकृतं भवेत् ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

टी. फिर मार्कण्डेयजी कहते हैं कि हे क्रौंष्टुकि उस ब्राह्मणी को ब्राह्म-
ण के घर भेजवाकर राजा लम्बी स्वास लेकर चिन्ता करने लगा और क-
हने लगा कि मेरी सुकृत कैसी है ॥ १ ॥

मू. अनर्घयोग्यताकष्टं समा माह महामनाः । वै
कल्यं विप्रमुद्दिश्य नया हाय निशाचरः ॥ २ ॥

टी. कि उस मुनि ने कहा कि तुम अनर्घयोग्य नहीं हो और फिर उस
निश्चर ने ब्राह्मण के बहाने से मेरी निन्दा की ॥ २ ॥

मू. सोऽहं कथं करिष्यामि त्यक्त्वा पत्नीं मया हिता ।
अथ वा ज्ञानदृष्टिं तं पृच्छामि मुनिसत्तमं ॥ ३ ॥

टी. अब मैं क्या कहूँ और क्या करूँ मैं ने तो अपनी स्त्री को त्याग दि-
या और मैं उसी मुनि महात्मा से जाकर पूछता हूँ जो कहेंगा वह कर्षण ॥ ३ ॥

मू. संचिन्त्येष्टं स भूपालः समा रुह्य च तं रथं । ययौ
यत्र स धर्मात्मा त्रिकालज्ञो महामुनिः ॥ ४ ॥

टी. यह बात मन में बिचारकर चिन्ता करता हुआ रथ पर चढ़कर जहाँ
वह महामुनि धर्मात्मा त्रिकाल दर्शी रहते थे गया ॥ ४ ॥

मू. अव रुह्य रथात् सोऽथ तं समेत्य प्राणम्य च । यथा
वृत्तं समाचरन् यौ राक्षसेन समागमं ॥ ५ ॥

टी. और उनके आश्रम पर पहुँचकर रथ से उतर मुनि को प्राणाम कर
जो वासी राक्षस से हुई थी वह सब वर्णन किया ॥ ५ ॥

मू. ब्राह्मणाय दर्शनञ्चैव दौःशौल्यापगमन्तथा ।
प्रेषणं भर्तृगैहे च कार्यमागमने च यत् ॥ ६ ॥

टी. और ब्राह्मण का दर्शन और उसकी दुःशीलता हरण और उस

ब्राह्मणी को उसके ब्राह्मण के घर पहुँचा देना और फिर अपना उस जगह पर आने का प्रयोजन सब मुकस्सिल कह सुनाया ॥६॥

मू. ऋषिरवाच ॥ ज्ञानमेतन्मया पूर्व्यं यत्कृत-
न्तेन राधिप । कार्यमागमने चैव मत्समी-
पेत वाखिलं ॥७॥ ७॥ ७॥ ७॥ ७॥ ७॥

टी. राजा की यह बात सुनकर मुनिने कहा कि हे राजा जो कुछ वहाँ का हाल है और जिस वास्ते तुम वहाँ जाये हो वह सब मुझ पर जाहिर है ॥७॥

मू. पृच्छ मामिह किं कार्यं मयेत्युद्दिग्धमानसः । त्व-
य्यागं ते महीपालः शृणु कार्यञ्च यत्त्वया ॥८॥

टी. तुम जो उदास हो इसका भी कारण जो तुम पूछो तो मैं कह दूँ और जो काम तुम चाहते हो उसको भी मैं कहता हूँ सुनो ॥८॥

मू. पत्नी धर्म्मार्थकामानां कारणं प्रवलं नृणां । विशेष-
तश्च धर्म्मश्च संत्यक्तस्त्यजताहिता ॥९॥ ९॥

टी. कि मनुष्यों के धर्म्म और अर्थ और काम का प्रवल कारण स्त्री है जो कोई स्त्री को त्याग देता है उसका विशेष धर्म्म छूट जाता है ॥९॥

मू. अपत्नी को नरो भूपनयोग्यो निज कर्म्मणां । ब्रा-
ह्मणः क्षत्रियो वापि वैश्यः शूद्रोऽपि वानृप ॥१०॥

टी. हे राजन् बिना स्त्री के मनुष्य ब्राह्मण हो या क्षत्री या वैश्य या शूद्र अपने कर्म्म के योग्य नहीं रहता ॥१०॥

मू. त्यजता भवता पत्नीं न शोभनमनुष्ठितं । अत्या-
ज्यो हियथा भर्त्ता स्त्रीणां भार्या तथा नृणां ॥११॥

टी. आपने जो अपनी स्त्री को त्याग दिया यह कुछ अच्छा न किया क्योंकि जिस तरह स्त्री को पति का त्याग करना निषेध है उसी तरह पुरुष को भी स्त्री का त्याग कर देना निषेध है ॥११॥

मू. राजो वाच ॥ भगवन् किं करोम्येव विपाको

ममकर्मणां । नानुकूलानुकूलस्ययस्मा-
त्यत्कान्तो मया ॥ १२ ॥ १२ ॥ १२ ॥ १२ ॥

श्री. राजा ने कहा कि हे भगवन् मैं क्या करूँ यह मेरे कर्म का फल है मेरी स्त्री मुझसे प्रीति नहीं रखती थी इसवास्ते मैंने उसको त्याग दिया ॥ १२ ॥

मू. यद्यत्करोति तत्क्षान्तं दह्यमानेन चेतसा । भग-
वस्तद्वियोगान्निविभीतेनान्तरात्मना ॥ १३ ॥

श्री. हे भगवन् जो कुछ अपराध वह करती थी वह सब मैं क्षमा करता था उसके वियोग की अग्नि में अब तक मैं जलता हूँ ॥ १३ ॥

मू. राम्रतन्तुवनेत्यत्कान्तवद्विकनुसागता । भस्मि-
तावापि विपिने सिंह व्याघ्रनिशाचरैः ॥ १४ ॥

श्री. मैंने उसको बन में भेजवा दिया तबसे नहीं मालूम कि वह कहाँ है उसको किसी व्याघ्र या सिंह या निशाचर ने खा लिया या क्या हुई ॥ १४ ॥

मू. ऋषिरुवाच ॥ नाभस्मितासामूपालसिंह
व्याघ्रनिशाचरैः । सात्वविप्रुतचारित्रासा
म्रतन्तुरसातले ॥ १५ ॥ १५ ॥ १५ ॥ १५ ॥

श्री. ऋषि ने कहा कि हे महाराज आपकी स्त्री को किसी व्याघ्र या सिंह या निशाचर ने नहीं खाया है इस समय वह अपने धर्म पूर्वक सातल लोक में विराजती है ॥ १५ ॥

मू. राजो वाच ॥ सानीता केन पातालमास्ते
साऽदूषिता कथं । अत्यद्भुतमिदं ब्रह्मनय-
थावदनुमर्हसि ॥ १६ ॥ १६ ॥ १६ ॥ १६ ॥

श्री. राजा ने कहा कि हे ब्रह्मन् इसको पाताल में कौन ले गया और किस तरह वह रोष से बची हुई है यह बात बड़े आश्चर्य की है इसका उत्तान्त कइ सुनाविये ॥ १६ ॥

मू. ऋषिरुवाच ॥ पातालेनागराजोऽस्ति प्र-

ख्यातश्च कपोतकः । तेन दृष्टा त्वया त्यक्ता
भ्रममाणमहावने ॥ १७ ॥ १७ ॥ १७ ॥

श्री. ऋषि ने कहा कि पाताल में नागों के राजा कपोतक नाम विख्यात हैं जब आपने अपनी स्त्री को वन में त्याग दिया तब वह उस जंगल में मटकती फिरती थी उस समय उस नागराज ने उसको देखा ॥ १७ ॥

मू. सारूपशालिनी तेन सानुरागेन पार्थिव । वेदि
तार्थेन पातालं नीता सा युवती तदा ॥ १८ ॥

श्री. और उसका रूप और शील देखकर बहुत प्रसन्न हुआ और उसका हाल पूछकर उसी समय उसको पाताल में ले गया ॥ १८ ॥

मू. ततस्तस्य सतासु भूर्नन्दा नाम महीपते । भार्या
मनोरमा चास्य नागराजस्य धीमतः ॥ १९ ॥

श्री. हे महाराज उस नागराज की कन्या नन्दा नाम अत्यन्त रूपवान् है और मनोरमा नाम उसकी स्त्री है ॥ १९ ॥

मू. तथामातुः सपत्नी यंतामवित्रीति शोभना । दृष्ट्वा
स्वगेहं सानीता गुप्ता चान्तःपुरे शुभा ॥ २० ॥

श्री. जब नागराज आपकी स्त्री को पाताल में ले गया तब नन्दा नाम आपकी कन्या से कहने लगा कि यह स्त्री तेरी माता की सौतहो गी यह बहुत अच्छी है इसको घर के भीतर ले जा ॥ २० ॥

मू. यदानुयाचिता नन्दानन्दानि नृपोत्तरं । मूकाम्ब
विष्य सा त्याह तदा तां तनयां पिता ॥ २१ ॥

श्री. नन्दा ने इस बात का कुछ जवाब न दिया तब नागराज ने क्रोध करके कहा कि तू गुंभी हो जा ॥ २१ ॥

मू. एवं शप्तासु तां तेन सा चास्तेन वभूवते । नीता ते
नोरगेन्द्रेण धृता तत्सु तथा सती ॥ २२ ॥ २२ ॥

श्री. इस तरह नागराज ने जब अपनी लड़की को शाप दिया तो उसी

क्षण वह लड़की गूंगी हो गई और उस स्त्री को नागराज ने अपनी कन्या के साथ घर में रक्खा ॥ २२ ॥

मू. मार्कण्डेय उवाच ॥ ततो राजा परं हर्षमवा-
प्यतम एच्छत । दिजवर्ज्यस्वदौर्भाग्यकार-
णंदयितां प्रति ॥ २३ ॥ २३ ॥ २३ ॥ २३ ॥

टी. मार्कण्डेय जी कहते हैं कि हे क्रौष्टुकि यह बातें सुनकर राजा बहुत प्रसन्न होकर ऋषि से कहने लगा कि हे मुनिसत्तम कैसा मेरा अभाग्य है कि वह स्त्री मुझ से छूट गई ॥ २३ ॥

मू. राजो वाच ॥ भगवन् सर्वलोकस्य मयि प्री-
तिरनुत्तमा । किन्तु तत्कारणं येन स्वपत्नी
नातिवत्सला ॥ २४ ॥ २४ ॥ २४ ॥ २४ ॥

टी. हे भगवन् सब मनुष्य तो मुझ से प्रीति रखते हैं पर मेरी स्त्री मुझ से प्रीति क्यों नहीं रखती इसका क्या कारण है ॥ २४ ॥

मू. ममुचासावती वेषा प्राणोभ्योऽपि महामुने । सा
चमां प्रति दुःशीला ब्रूहियत्कारणं हि ज ॥ २५ ॥

टी. हे महामुनि उस स्त्री को मैं अपने प्राण से भी अधिक प्रिय रखता था पर वह मुझ से सदा दुःशीलता रखती थी इसका कारण कह सुनाइये ॥ २५ ॥

मू. ऋषिरुवाच ॥ पाणिग्रहणकाले तु सूर्यभौम
शनैश्चरैः । शुक्रवाचस्पतिभ्यां च तव भार्या
ऽवलोकिता ॥ २६ ॥ २६ ॥ २६ ॥ २६ ॥

टी. ऋषि ने कहा कि जब उस स्त्री से तुम्हारा विवाह हुआ था उस समय सूर्य और मङ्गल और शनिश्चर और शुक्र और बृहस्पति तुम्हारी स्त्री के गृहगोचर में बलवान् न थे ॥ २६ ॥

मू. तन्मुहूर्तेऽभवच्चन्द्रलस्याः सोमसुतस्तथा । पर-
स्परविपक्षौ तौ ततः पार्थिवतेभृशम् ॥ २७ ॥

अपनी

श्री. और उस मुहूर्त में चन्द्रमा और बुध आपके अरिष्टकारक थे ॥ २७ ॥

मू. तद्वत्त्वं स्वधर्मेण परिपालय मे दिनी । पत्नी
सहायाः सर्वाश्च कुरु धर्मवतीः क्रियाः ॥ २८ ॥

एजाव

मेरा

श्री. इस लिये अब मैं आप से कहना हूँ कि अपनी स्त्री के साथ धर्म और क्रिया कीजिये और अपने घर जाकर धर्मपूर्वक प्रजाका पालन कीजिये ॥ २८ ॥

मू. मार्कण्डेय उवाच ॥ इत्युक्ते प्रणिपत्यैनमा-
रुह्य स्यन्दनं ततः । उत्तमः पृथिवीपालः आ-
जगाम निजं पुरं ॥ २९ ॥ २९ ॥ २९ ॥ २९ ॥

मुझे

श्री. मार्कण्डेयजी कहते हैं कि हे कौष्टुकि इस तरह से जब उस ऋषि ने राजा से कहा तब वह महाराज उत्तम ऋषि को प्रणाम करके और रथ पर चढ़कर वहाँ से अपने नगर में आया ॥ २९ ॥

इति श्री मार्कण्डेय पुराणे श्री उत्तम मन्वन्तरे नाम ७१ ।

اَدھیا کے اکثر

ماركندے جی کہتے ہیں کہ ہے ہرگز و شکی اس براہمنی کو براہمن کے گھر بھیجوا کر راجا آہ
سردھنیکر فکر کے ساتھ کہنے لگا کہ میری کیسی قسمت ہو - ۴ کہ وہاں تو اس من نے مجھ کو
کہا کہ تم ارگھ کے لائق نہیں ہو اور یہاں براہمن کے بہانہ سے اس راجپس نے بھی میری نیند
یعنی تو نہیں کی - ۵ اب میں کیا کمون اور کیا کروں میں نے تو آپ اپنی استری کو تیاگ دیا
خیر اب میں اس من سے جا کر پوچھتا ہوں جو کچھ وہ کہنے لگا - ۶ یہ سنو چکر راجا پھر

سوار موکر جہان وہ دھرم تا مہر کال دشری (یعنی تینوں زمانوں کا حال جاننے والے) مَن جی
 رہتے تھے گیا۔ ۵ اور اُن کے استھان پر پہنچ کر تھوڑے اُتر کر مَن جی کو برنامہ کر کے راجپس سے
 کمالات ہونے کی سب کیفیت بیان کی۔ اُنکا اور برامہنی کا ملنا اور اسکی بدخلتوں کا چھوٹ
 جانا اور پھر اس برامہنی کو اُسکے برامہنی گھر پہنچا دینا اور اپنا پھر اُس جگہ پر آنے کا سبب یہ
 سب حال مفصل کہنایا۔ ۶ راجا کی یہ بات سُن کر مَن نے کہا کہ اب مہاراج وہاں کا اسپتال
 اور جس واسطے تم پھر یہاں آئے ہو وہ سب مجھ ظاہر ہے۔ ۷ اور جو تم اُداس ہو اسکا بھی سبب
 اگر تم پوچھو تو میں کہہ دوں اور جو بات تم چاہتے ہو اُسکو بھی میں کہتا ہوں سُنو۔ ۸ کہ اُدین
 کے دھرم اور رتھ اور کام کا بڑا کارن استری ہی ہیں جو کوئی استری کوتیاگ کر دیتا ہے
 اسکا دھرم چھوٹ جاتا ہے۔ ۹ اُسے مہاراج نیز استری کے آدمی برا مَن ہو یا چھتری یا
 بیس یا سُودر اپنے کرم کے لائق نہیں ہوتا۔ ۱۰ آپ نے جو اپنی استری کوتیاگ کر دی ہے
 اچھا نکلیا کیونکہ جس طرح عورت کو شوہر کا ترک کر دینا منع ہے اسی طرح مرد کو بھی عورت کا ترک
 کر دینا منع ہے۔ ۱۱ راجا نے کہا کہ اے مہاراج میں کیا کروں یہ سب میرے کرم کا پھل ہے
 کہ میری عورت مجھے محبت نہیں رکھتی اور اسی واسطے میں نے اُسکو ترک کر دیا۔ ۱۲ اور
 جو کچھ تصویر بھی وہ کرتی تھی وہ بھی میں بھاف کر دیتا تھا اُسکی جدائی کی آگ میں اب تک میں
 جلتا ہوں۔ ۱۳ جب سے میں نے اُسکو جنگل میں بھجوا دیا اب سے نہیں معلوم کہ وہ کیا ہوئی آیا
 غیر وغیرہ نے اُسکو کھالیا یا کسی راجپس نے مار ڈالا یا کیا ہوئی۔ ۱۴ مَن نے کہا کہ اے مہاراج
 اپنی استری کو سنگھ یا باگھ یا راجپس وغیرہ کسی نے نہیں کھایا بلکہ اسوقت تک وہ پاتاں میں ہے
 دھرم سے موجود ہے۔ ۱۵ راجا نے کہا کہ اے مَن اُسکو کون شخص پاتاں میں لیکھا اور کس طرح
 وہ اب تک اُدھرم سے بچی ہوئی ہے یہ بات بڑے تعجب کی ہے اسکا حال مفصل بیان دیجیے۔
 ۱۶ مَن نے کہا کہ جب تم نے اپنی استری کو بن میں چھوڑ دیا تب وہ اُس بن میں بھٹکتی پھرتی
 تھی کہ اتنے میں ناگون کا راجا پاتاں کا رہنے والا اُس جگہ آ پڑا اور اُس استری کو دیکھا۔
 ۱۷ تو اُسکا رُوب اور شیل دیکھ کر بہت خوش ہو کر اُسکا حال دریافت کر کے اُسکو پاتاں میں
 لیکھا۔ ۱۸ وہاں پر اُس ناگ راج کی لڑکی غذا نام بہت خوبصورت اور سُور نام اُسکی سہری
 تھی۔ ۱۹ جب ناگ راج تمھاری استری کو پاتاں میں لیکھا تب غذا سے کہنے لگا کہ یہ استری بہت
 اچھی ہے اور تیری ماں کی سوئی ہوگی اُسکو گھر کے اندر لیجا۔ ۲۰ غذا نے یہ بات سُن کر کچھ جواب

धर्म के जानने वाले हैं क्योंकि आपने मुझको मेरी स्त्री से मिलाकर मेरे धर्म की रक्षा किया ॥ २ ॥

मू. राजो वाच ॥ कृतार्थस्त्वं द्विजश्रेष्ठ निज
धर्मानुपालनात् । वयं सङ्गृह्यते विप्रयेषां
पत्नीनवेश्मनि ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥

टी. राजाने कहा कि हे द्विजोत्तम आपतो अपने धर्म की रक्षा से प्रसन्न हुए पर मैं संकट में पड़ा हूँ क्योंकि मेरी स्त्री मेरे घर में नहीं है ॥ ३ ॥

मू. ब्राह्मण उवाच ॥ नरेन्द्र साहिविपिने भ-
क्षिताश्वापदैर्यदि । अलन्तया किमन्य
स्यानपाणिर्गृह्यते त्वया ॥ क्रोधस्य वश
मागम्य धर्म्मो न रक्षितस्त्वया ॥ ४ ॥ ४ ॥

टी. ब्राह्मणने कहा कि हे महाराज जबकि आपकी स्त्री को जंगल में कोड़े जानवर खा गया हो तो अब उसका शोच करना वृथा है आप दूसरा विवाह करके स्त्री ले आइये और अपने धर्म की रक्षा कीजिये आपने तो क्रोध के वश होकर अपने धर्म को बिगाड़ा है ॥ ४ ॥

मू. राजो वाच ॥ नभक्षिता मेदयिताश्वापदैः
साहिजीवति । अविदूषितचारित्राकथ-
मेतत्करोम्यहं ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥

टी. राजा ने कहा कि हे ब्राह्मण मेरी स्त्री को किसी जानवर ने नहीं खाया है वह जीती है और अभी तक उसका धर्म भी बचा हुआ है तो फिर किस तरह मैं दूसरा विवाह करूँ ॥ ५ ॥

मू. ब्राह्मण उवाच ॥ यदि जीवति ते भार्य्या न चै-
व व्यभिचारिणी । तदपत्नीकताजन्म किं
पापं क्रियते त्वया ॥ ६ ॥ ६ ॥ ६ ॥ ६ ॥

टी. ब्राह्मणने कहा कि जबकि आपकी स्त्री जीती है और धर्म भी

उसका बना है तो आप बिना स्त्री के अपना जन्म क्यों बिगाड़ते हैं ॥ ६ ॥

मू. राजो वाच ॥ आनीतापिहिसाविप्रप्रतिकू-
लासदैवमे । दुःखायनसुरवायालंतस्यामै-
जीनवैमयि ॥ तथात्वंकुरुयत्नंमेयथासा-
वशगामिनी ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥

टी. राजा ने कहा कि वह स्त्री मुझ से सदा बिगाड़ रखती है उसके जाने पर भी मुझे सुख न होगा और कारण उसका यही है कि वह मुझ से प्रसन्न नहीं रहती है तुम ऐसी कोई यत्न करो कि जिससे वह स्त्री मेरे वश में रहे ॥ ७ ॥

मू. ब्राह्मण उवाच ॥ तवसंप्रीतियेतस्यावरेष्टि-
रूपकारिणी । क्रियतेमित्रकामैर्यामित्र-
विन्दां करोमितां ॥ ८ ॥ ८ ॥ ८ ॥ ८ ॥

टी. ब्राह्मण ने कहा कि हे राजन् जो आप उस स्त्री के साथ प्रीति करना चाहते हैं तो मित्रविन्दा की यज्ञ कीजिये जो लोग आपुस का मिलाप चाहते हैं वह यही यज्ञ करते हैं इसकी विधि मैं जानता हूँ करा दूँगा ॥ ८ ॥

मू. अप्रीतयोः प्रीतिकरी साहिसंजननी परं । भा-
र्यापत्योर्मनुष्येन्द्रतान्तवेषिकरोम्यहं ॥ ९ ॥

टी. हे महाराज जिस स्त्री पुरुष के आपुस में विरोध होता है उसको मित्रविन्दा की यज्ञ करने से आपुस में प्रीति होजाती है मैं उससे प्रीति करा दूँगा ॥ ९ ॥

मू. यज्ञतिष्ठतिसासुभूस्तवभार्यामहीपते । तस्मा-
दानीयतां साने परं प्रीतिमुपैष्यति ॥ १० ॥

टी. जहाँ वह आपकी सुन्दरी भार्या हो वहाँ से आप ले आइये अब वह आपसे प्रीति रखेगी ॥ १० ॥

मू. मार्कण्डेय उवाच ॥ इत्युक्तः स तु सम्भा-
रानशेषानवनीपतिः । आनिनायचकारे-
ष्टिसचतां दिजसत्तमः ॥ ११ ॥ ११ ॥ ११ ॥

टी. मार्कण्डेयजी कहते हैं कि जब ब्राह्मण ने इस तरह से कहा तब राजा ने यज्ञ की सब सामग्री मँगवाई और उस ब्राह्मण ने राजा से मित्र विन्दा यज्ञ कराया ॥ ११ ॥

मू. सप्तकृत्वः सनुतदाचकारेष्टिपुनः पुनः । तस्य
राज्ञो द्विजश्रेष्ठो भार्या सम्पादनाय वै ॥ १२ ॥

टी. और उस ब्राह्मण ने उस राजा और उसकी स्त्री में प्रीति होने के नास्ते सात बार वह यज्ञ कराया ॥ १२ ॥

मू. यदारे पितमैत्रान्ताममन्यत महामुनिः । स्वम-
र्त्तरितदा विप्रस्तमुवाच नराधिपं ॥ १३ ॥

टी. जब यज्ञ सम्पूर्ण हो गया तब ब्राह्मण ने राजा से कहा ॥ १३ ॥

मू. आनीयतां नरश्रेष्ठ या तवेष्टात्मनोऽन्तिकं । भुं-
क्ष्वभोगांस्तया सार्द्धं यजयन्तांस्तथा दत्तः ॥ १४ ॥

टी. किहे नरोत्तम अब आप अपनी स्त्री को अपने पास रखिये और उस के साथ आदर युक्त नाना प्रकार का यज्ञादि करिये और भोग कीजिये ॥ १४ ॥

मू. मार्कण्डेय उवाच ॥ इत्युक्तस्तेन विप्रेणाभू-
पालो विस्मितस्तदा । विस्मारतं महावीर्यं
सत्यसन्धं निशाचरं ॥ १५ ॥ १५ ॥ १५ ॥ १५ ॥

टी. मार्कण्डेयजी कहते हैं कि हे क्रौष्टुकि इस तरह ब्राह्मण के कहने से राजा ने विस्मित होकर उस पराक्रमी निश्वर को स्मरण किया ॥ १५ ॥

मू. स्मृतस्तेन तदा सद्यः समुपेत्य नराधिपं । किंक-
रोमीतिसोऽप्याह प्रणिपत्य महामुने ॥ १६ ॥

टी. स्मरण करते ही वह राक्षस राजा के पास जा पहुँचा और प्रणाम करके कहने लगा कि जो आज्ञा हो वह मैं करूँ ॥ १६ ॥

मू. ततस्तेन नरेन्द्रेण विस्तरेण निवेदिता । गत्वा पा-
तालमादाय राजपत्नीमुपाययौ ॥ १७ ॥

श्री. राजा ने कहा कि मेरी स्त्री पाताल में है उसको ला दो यह सुन कर वह राक्षस पाताल में गया और वहाँ से उस स्त्री को नाका राजा के सामने कर दिया ॥ १७ ॥

मू. आनीताचातिहार्देनसाददर्शतदापतिं। उवाच
चचप्रसीदेतिभूयोभूयोमुदान्विता ॥ १८ ॥

श्री. और वह स्त्री उस समय प्रीति संयुक्त होकर राजा को देखने लगी और बार बार प्रसन्नता के साथ राजा से कहने लगी कि हे महाराज मुझपर प्रसन्न हूजिये ॥ १८ ॥

मू. ततःसराजारमसापरिष्वज्याहमानिनीं। प्रियेप्रसन्नएवाहंभूयोप्येवंप्रवीषिकिं ॥ १९ ॥

श्री. तब राजा ने अपनी उस मानिनीय स्त्री से कहा कि हे प्यारी यह तू क्या कहती है मैं तो तुझपर सदा प्रसन्न रहता हूँ ॥ १९ ॥

मू. पत्युवाच ॥ यदिप्रसादप्रवाणंनरेन्द्रमयिते मनः। तदेतदभियाचेत्त्वांततकुरुष्वममार्हणं ॥ २० ॥ २० ॥ २० ॥ २० ॥

श्री. फिर रानी ने कहा कि हे महाराज जो आप मुझपर प्रसन्न हैं और मेरे साथ आपकी प्रीति है तो मैं यही चाहती हूँ कि मेरे वास्ते आप इतनी बात कर दीजिये ॥ २० ॥

मू. राजोवाच ॥ निःशंकं ब्रूहि मत्तोयद्वयत्वा किञ्चिदीप्सितं। तदलभ्यं न तेभीरू न वा यत्तोऽस्मि नान्यथा ॥ २१ ॥ २१ ॥ २१ ॥

श्री. राजा ने कहा कि जो तेरी इच्छा हो वह कुछ जिस बात का पूर्ण करना कठिन हो वह भी मैं पूरा कर सकता हूँ ॥ २१ ॥

मू. पत्युवाच ॥ मर्दर्थं तेन नागेन सुताशप्तासखी मम। मूकाभविष्यतीत्याह

साच मूकत्वमागता ॥ २२ ॥ २२ ॥ २२ ॥

टी. रानी ने कहा कि मेरे ही सबब से नागराज ने अपनी लड़की को शाप दिया कि जिससे वह गूंगी हो गई और वह लड़की मेरी सरसी है २२

मू. तस्याःप्रतिक्रियांप्रीत्याममशक्नोतिचेद्भवान्
वाग्विभागप्रशांत्यर्थंततःकिंनक्तंमम । २३ ।

टी. इस से उसका उपकार मुझको हर तरह से मंजूर है जो आपकी शक्ति से बाहर न हो तो ऐसा कोई यत्न कीजिये कि जिस से वह बोले यह अभिलाषा मेरी पूर्ण हो जाने से मैं जानूँगी कि मुझको सब परार्थ मिले ॥ २३ ॥

मू. मार्कण्डेय उवाच ॥ ततःसराजानंविप्रमा
हास्मिन्कीदृशीक्रिया । तन्मूकतापनोदाय
सचतंप्राहपार्थिवं ॥ २४ ॥ २४ ॥ २४ ॥

टी. मार्कण्डेयजी कहते हैं कि यह बातें रानी की सुनकर राजा ने ब्राह्मण से पूछा कि जो कोई गूंगा हो जाय तो उसके बोलने का कौनसा यत्न करना चाहिये ब्राह्मण ने कहा ॥ २४ ॥

मू. ब्राह्मण उवाच ॥ भूपसारस्वतीमिष्टंकरे
मिवचनान्तव । पत्नीतवेयमानृण्ययातुत
वाक्प्रवर्त्तनात् ॥ २५ ॥ २५ ॥ २५ ॥ २५ ॥

टी. कि हे महाराज आप आज्ञा दीजिये तो मैं सरस्वती का इष्ट करूँ इस से आपकी स्त्री की सरसी की वाक् शुद्ध होजायगी ॥ २५ ॥

मू. मार्कण्डेय उवाच ॥ इष्टंसारस्वतींचक्रेतद-
र्थंसदिजोत्तमः । सरस्वतानिसूक्तानिजजा
पचसमाहितः ॥ २६ ॥ २६ ॥ २६ ॥ २६ ॥

टी. मार्कण्डेयजी कहते हैं कि हे कौण्डिन् राजा की आज्ञानुसार उस ब्राह्मण ने उस सरसी के बोलने के वास्ते सरस्वती का इष्ट किया और एक चित्त होकर सरस्वती सूक्त का जप किया ॥ २६ ॥

मू. ततः प्रवृत्तवाक्यान्तांगर्गः प्राहरता तले । उ-
पकारः सखी भर्त्रा कृतो यः मतिदुःकरः ॥ २७ ॥

री. तब वह सखी बोलने लगी यह बात देख कर रसातल में सब
लोगों ने गर्ग मुनि से पूछा कि इस गूणी की जवान किस तरह खु-
ल गई मुनि ने कहा कि यह उपकार इसकी सखी के स्वामी उ-
त्तम महाराज ने किया है ॥ २७ ॥

मू. इत्थं ज्ञानं समासाद्य नन्दा ग्रीध्रगतिः पुरं । ततो
राज्ञीं परिष्वज्य स्वसखीं मुरगात्मजा ॥ २८ ॥

री. इस तरह नन्दा नाग कन्या ज्ञान पाकर उसी समय महाराज उत्तम
के नगर में आकर उनकी रानी यानी अपनी सखी से मिली ॥ २८ ॥

मू. तंच संस्तूय भूपालं कल्याणोत्था पुनः पुनः । उवा-
च मधुरं नागीकृतासनपरिग्रहा ॥ २९ ॥

री. और बहुत आशीर्वाद देकर महाराज उत्तम की स्तुति करने लगी और
आसन पर बैठकर मीठी २ बोली में राजा से कहने लगी ॥ २९ ॥

मू. उपकारः कृतो वीर भवता यो ममाधुना । तेना
स्या कृष्टहृदया यद्वीमिश्रणुष्व तत् ॥ ३० ॥

री. कि हे वीर इस समय जो आप ने मेरा उपकार किया है इस सबब से
मैं आप की तन मन से दासी हूँ अब जो मैं कहती हूँ वह सुनिये ॥ ३० ॥

मू. तव पुत्रो महावीर्यो भविष्यति नराधिप । तस्या
प्रतिहतं चक्रमस्यां भुवि भविष्यति ॥ ३१ ॥

री. कि हे नराधिप आप के पुत्र महापराक्रमी उत्पन्न होगा और
पृथ्वी में वह चक्रवर्ती होगा ॥ ३१ ॥

मू. सर्वार्थशास्त्रतत्त्वज्ञो धर्मानुष्ठानतत्परः । म-
न्वन्तरे श्वरोधीमान् भविष्यति स वै मनुः ॥ ३२ ॥

री. और शास्त्रों का अर्थ और तत्व का जानने वाला और धर्मात्मा

और मन्वन्तर का ईश्वर और बुद्धिमान मनु होगा ॥ ३२ ॥

मू. मार्कण्डेय उवाच ॥ इति रत्नावरतस्मै ना-
गराजसुताननः । सखीतां संपरिष्वज्य पा-
तालमगमन्मुने ॥ ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥

टी. इसतरह वह नागकन्या महाराज उत्तम को बर देकर और अपनी
सखी से गले मिलकर पाताल की चली गई ॥ ३३ ॥

मू. तत्र तस्य तथा सार्द्धं मतः पृथिवीपतेः । जगाम
कालः सुमहान् प्रजापालयतस्तथा ॥ ३४ ॥

टी. और यहाँ महाराज उत्तम अपनी स्त्री के साथ क्रीड़ा करना और
जा को पालन करता था इसीतरह बहुत दिन बीत गये ॥ ३४ ॥

मू. ततः स तस्यान्तनयो यजे राजो महात्मनः । पौ-
र्णमास्यां यथा कान्तश्चन्द्रः सम्पूर्णमाडलः ॥ ३५ ॥

टी. बाद इसके उस महात्मा उत्तम के उसी स्त्री से एक पुत्र ऐसा सुन
उत्पन्न हुआ कि जिसतरह अपने सम्पूर्ण माडल के साथ पूर्णमास
का चन्द्रमा उदय होता है ॥ ३५ ॥

मू. तस्मिन् जाने मुदं प्रापुः प्रजाः सर्वा महात्मनि ।
देवदुन्दुभयो नेदुःपुष्पवृष्टिपपातच ॥ ३६ ॥

टी. उस पुत्र के उत्पन्न होने से राजा की सम्पूर्ण प्रजा हर्षित हुई और
देवता लोग स्वर्ग में दुन्दुभी बजा कर दुमन वर्धन करने लगे ॥ ३६ ॥

मू. तस्य दृष्ट्वा वपुः कान्तं भविष्यं शीलमेव च । ज्योत-
मश्चेति मुनयो नाम चक्रुः समागताः ॥ ३७ ॥

टी. और उस लड़के का प्रकाशवान् शरीर और शील और स्वभाव
सुख कर सब मुनिलोगों ने आकर उसका नाम ज्योत्तम रक्खा ॥ ३७ ॥

मू. जातो यमुत्तमे वंशे तत्र काले तथोत्तमे । उत्तमा
वयवस्तेन ज्योत्तमोऽयं भविष्यति ॥ ३८ ॥

श्री. और कहा कि यह लड़का उत्तम शरीर और उत्तम वंश और उत्तम समय में पैदा हुआ है इस सब से हम लोगों ने इस का नाम औत्तम रखा है ॥ ३८ ॥

मू. मार्कण्डेय उवाच ॥ उत्तमस्य सुतः सोऽथ नाम्ना ख्यातस्तथोत्तमः । मनुरासीत्तत्प्रभावो भागुरेश्रूयतां मम ॥ ३९ ॥ ३९ ॥ ३९ ॥

टी. मार्कण्डेयजी कहते हैं कि हे कौटुकि उस उत्तम महाराज का पुत्र औत्तम जब मनु हुआ उस समय का प्रभाव मुझ से सुनौ ॥ ३९ ॥

मू. उत्तमाख्यानमखिलं जन्मचैवोत्तमस्य चानित्यं शृणोति विदेषं कदाचिन्न गच्छति ॥ ४० ॥

टी. कि इस उत्तम महाराज का सम्पूर्ण चरित्र और औत्तम का जन्म जो मनुष्य नित्य श्रवण करेगा उसको कभी किसी के साथ वैर विरोध न होगा ॥ ४० ॥

मू. इष्टे दारेस्तथा पुत्रैर्वन्धुभिर्ज्वा कदाचन । वियोगो नास्य भविता श्रावतः परितोऽपि वा ॥ ४१ ॥

टी. क्योंकि इस चरित्र के पढ़ने और सुनने वाले की अपने मित्र और स्त्री और पुत्र और भाई बन्धु से कभी वियोग न होगा ॥ ४१ ॥

मू. तस्य मन्वन्तरं ब्रह्मन्वन्तरे मे निशामय । श्रूयतां तत्र यश्चेन्द्रियं देवास्तथर्षयः ॥ ४२ ॥

टी. हे ब्राह्मण उस औत्तम के मन्वन्तर में जो जो देवता और चन्द्रमा और ऋषि कहलाते थे उनके नाम सुनौ ॥ ४२ ॥

इति श्री मार्कण्डेय पुराणे
औत्तम मन्वन्तरे नाम ७२

آدمیایے بہتر

۱۔ مارکنڈے جی کہتے ہیں کہ جب کوشلی جب راجا ائم اپنے شہر میں آیا تو اُس برہمنی نیک مزاج کو جبکو راجپس خیرا کر لے گیا تھا اُسکے شوہر یعنی برہمن کے ساتھ دیکھ کر بہت خوش ہوا۔ ۲ اور برہمن نے راجا سے کہا کہ اے مہاراج میں آپ سے بہت خوش ہوں اور آپ بڑے دھرم مانتا ہیں کہ آپ نے میری استری کو مجھے ملا کر میرے دھرم کی رچھا کی۔ ۳ راجا نے کہا کہ اے مہاراج آپ تو اپنے دھرم کی رچھا ہونے سے خوش ہیں مگر میں سخت تر دو میں ہوں کہ میری عورت میرے پاس نہیں ہے۔ ۴ برہمن نے کہا کہ جبکہ آپ کی عورت کو جنگل میں کوئی جانور کھا گیا تو پھر اُسکا سوچ کرنا بیفایہ ہے آپ دوسری عورت سے شادی کر لیجیے اور اپنے دھرم کی رچھا کیجیے آپ نے تو کروڑوں کے بس ہو کر اپنے دھرم کو آپ بگاڑا ہے۔ ۵ راجا نے کہا کہ میری عورت کو کسی جانور نے نہیں کھایا ہے وہ ابھی جیتی ہے اور دھرم بھی اُسکا ابھی تک قائم ہے تو پھر کس طرح دوسرا بواہ کر دوں۔ ۶ برہمن نے کہا کہ جبکہ آپکی استری جیتی ہو اور دھرم بھی اُسکا اب تک قائم ہے تو بغیر استری کے آپ اپنا جہنم کیوں بگاڑتے ہیں۔ ۷ راجا نے کہا کہ اے برہمن وہ عورت میری مجھے ہمیشہ ناراض رہتی ہے اُسکے آنے پر بھی مجھے کچھ شک نہ ہو گا کیونکہ وہ مجھے خوش نہیں رہتی تم کوئی تدبیر ایسی کو دو کہ جہنم وہ مجھے موافق رہے۔ ۸ برہمن نے کہا کہ اے مہاراج اگر آپ اس استری کا موافق ہو جانا چاہتے ہیں تو آپ متر بند کی جگہ کیجیے جو لوگ آپس میں موافقت مزاج چاہتے ہیں وہ یہی جگہ کرتے ہیں اور اس جگہ کی بدھ بھی مجھکو معلوم ہے میں کر اوڑنگا۔ ۹ اے مہاراج جب مرد و عورت کے درمیان میں نا موافقت ہو جاتی ہے تو متر بند کی جگہ کرنے سے موافقت و محبت باہمی ہو جاتی ہے میں اُس عورت کے ساتھ آپ کی موافقت کر اوڑنگا۔ ۱۰ جان وہ عورت ہو اُسکو دمان سے آپ لے آئیے اب وہ آپ سے محبت رکھیں گی۔ ۱۱ مارکنڈے جی کہتے ہیں کہ جب برہمن نے اس طرح سے کہا تب راجا نے جگہ کا سب سامان موجود کر دیا اور برہمن نے راجا سے متر بند کی جگہ کرادی۔ ۱۲ یعنی راجا اور رانی میں محبت ہو نیکی واسطے برہمن نے سات بار متر بند کی جگہ کرائی۔

۱۴۔ جب جگت پورن ہو گئی تب راجا سے براہمن نے کہا کہ ۱۴۔ ہے مہاراج اپنی پیاری سہری
کو بلو ایسے اور اب اس کے ساتھ آندے رہ کر جگت اور بھوک کیجیے۔ ۱۵۔ مارکتہ پیران جی کہتے ہیں
کہ یہ کر و شکی اس طرح براہمن کے کہنے سے راجا نے خوش ہو کر اس پر اگرمی راجپس کو یاد کیا۔
۱۶۔ یاد کرتے ہی وہ راجپس فوراً راجا کے پاس آکر پرنام کر کے کہنے لگا کہ اسے مہاراج جو حکم
سروہ بجالاؤں۔ ۱۷۔ راجا نے کہا کہ میری استری پاتال میں ہو اسکو لادو یہ سنکر وہ راجپس
پاتال میں گیا اور وہاں سے اس استری کو ناکر راجا کے سامنے کر دیا۔ ۱۸۔ اس وقت وہ
استری بڑی محبت سے راجا کو دیکھ کر اور بہت خوش ہو کر کہنے لگی کہ ہے مہاراج مجھ پر بہت رحم ہے
۱۹۔ یہ سنکر راجا نے کہا کہ ہے پیاری یہ تو کیا کہتی ہو میں تو تجھے سدا پرست رہتا ہوں۔
۲۰۔ رانی نے کہا کہ ہے مہاراج جو آپ مجھ پر بہت رحم تو ایک بات میری پوری کر دیجیے۔
۲۱۔ راجا نے کہا کہ جو تمہاری اچھا ہو وہ کہو جس بات کا پورا کرنا مشکل بھی ہو اسکو بھی میں
پورا کر دوں گا۔ ۲۲۔ رانی نے کہا کہ میرے ہی سبب سے ناگ راج نے اپنی لڑکی کو سزا پڑا
ہے کہ جس سزا پر سے وہ گونگی ہو گئی اور وہ لڑکی میری سکھی سی۔ ۲۳۔ اس سے اس سکھی
کا اچکار کرنا مجھ کو ضرور ہے اگر آپ کے امکان سے باہر نہ تو ایسی کوئی تدبیر کیجیے کہ جس سے
وہ بولنے لگے ایسا کرنے سے میری سب آرزو پوری ہو جاگی۔ ۲۴۔ مارکتہ پیران جی کہتے ہیں
کہ یہ بات رانی سے سنکر راجا نے اس براہمن سے پوچھا کہ جو کوئی گونگا ہو جائے اسکی زبان
کھل جانے کی کون سی تدبیر ہے براہمن نے کہا کہ۔ ۲۵۔ ہے مہاراج آپ آگیا دیجیے تو میں
سرسوتی دیوی کا اشٹ کروں اسے کرنے سے اس ناگ کھیا کی زبان کھل جاگی۔
۲۶۔ غرض کہ اس سکھی کی زبان کھلنے کے واسطے براہمن نے سرسوتی جی کا اشٹ کیا اور ایک
چت ہو کر سرسوتی سکھت کا جاپ کیا۔ ۲۷۔ تب اس ناگ کھیا کی زبان جو گونگی ہو گئی تھی
کھل گئی مینی بولنے لگی یہ بات دیکھ کر پاتال کے لوگوں نے گرگ من سے پوچھا کہ اس گونگی
کی زبان کس طرح کھل گئی گرگ من نے کہا کہ اسکی سکھی کے سوامی راجا اتم نے سرسوتی دیوی کا
اشٹ کر کے اسکا اچکار کیا ہے۔ ۲۸۔ اس طرح ناگ کھیا گیان پاکر اس وقت راجا اتم کے شہر
میں آکر رانی مینی اپنی سکھی سے ملی۔ ۲۹۔ اور بہت آشیر باد دے کر راجا اتم کی استھت کرنے
لگی اور اس پر بیٹھ کر میٹھی میٹھی بولی سے کہنے لگی۔ ۳۰۔ کہ ہے پیرا اس وقت جو آپ نے میرا اچکار
کیا ہے اس سبب سے میں جان و دل سے آپکی احسان مند ہو کر آشیر باد دیتی ہوں۔ ۳۱۔ کہ آپ کے ایک

स्य नाम हुवे ये और जितने देवता लोग हुवे उन सबके जैसे नाम वैसी ही क्रिया भी थी ॥ २ ॥

मू. तृतीयेनुगणे देवाः शिवाख्यामुनिसत्तम । शिवाः स्वरूपतस्तेतुश्रुताः पापप्रणाशनाः ॥ ३ ॥

टी. और हे मुनि सत्तम तीसरे गणदेवता शिव नाम हुवे उसमें जितने देवता थे वे मंगलरूप और पाप के नाश करने वाले थे ॥ ३ ॥

मू. प्रतर्द्दनाख्यश्च गणो देवानां मुनिसत्तम । चतुर्थस्तत्र कथितं श्रौतमस्यान्तरे मनोः ॥ ४ ॥

टी. और उस श्रौतम मन्वन्तर में देवता लोगों का चौथा गण प्रवर्त्तन नाम हुआ जिसमें सब लोग प्रवर्त्तन ही नाम कहलाते थे ॥ ४ ॥

मू. वशवर्त्तिनः पञ्चमेऽपि देवास्तत्र गणे हि ज । यथाख्यातस्वरूपास्तु सर्वे एव महामुने ॥ ५ ॥

टी. और पाँचवें वशवर्त्ती नाम गण में जो देवता लोग हुवे उन्हीं के भी जैसे नाम वैसे ही उनके रूप और गुण थे ॥ ५ ॥

मू. एते देवगणाः पञ्च स्मृता यज्ञभुजस्तथा । मन्वन्तरे मनुश्रेष्ठे सर्वे द्वादशका गणाः ॥ ६ ॥

टी. यही पाँच गण यज्ञों में भाग लेने वाले थे और इसी तरह उस श्रेष्ठ मनु के मन्वन्तर में सब मिलकर बारह गण कहलाते थे ॥ ६ ॥

मू. तेषामिन्द्रो महाभाग त्रैलोक्ये स गुरुर्भवेत् । शतं क्रतूनामाहृत्य सुशान्तिर्नामनामतः ॥ ७ ॥

टी. और इन सब के मालिक त्रैलोक्य के ईश्वर महाभाग सुशान्ति नाम थे जो सौ यज्ञ करके इन्द्र हुवे ॥ ७ ॥

मू. यस्योपसर्गनाशाय नामाक्षरविभूषिता ।

अद्यापिमानवैर्गाथागीय तेनुमहीतले ॥ ८ ॥

टी. जिनके नाम को मनुष्य लोग इस पृथ्वी में उपसर्ग अर्थात् अमङ्गलके नाश करने के वास्ते अब तक गान करते हैं ॥ ८ ॥

मू. सुशान्तिर्देवराटकान्तःसुशान्तिसप्रयच्छतु ।
सहिताशिवसत्याद्यैस्तथैववशवर्त्तिभिः ॥ ९ ॥

टी. और कहते हैं कि सुशान्ति जो देवराज हैं वह और शिव और सत्यादि और वशवर्त्ती ये सब लोग हम लोगों को सुशान्ति दें अर्थात् कल्याण करें ॥ ९ ॥

मू. अजःपरशुचिर्दिव्योमहाबलपराक्रमाः । पुनः
स्तस्यमनोरासनविर्यातास्त्रिदशोपमाः ॥ १० ॥

टी. और उस औत्तम मनु के तीन पुत्र महाबली और पराक्रमी देवतो के समान हुवे जिनका नाम अज और परशुचि और दिव्य हुआ ॥ १० ॥

मू. तत्सूतिसम्भवैर्भूमिःपालिताभून्नेश्वरैः । याव-
न्मन्वन्तरंतस्यमनोरुत्तमतेजसः ॥ ११ ॥

टी. जब तक उस उत्तम मनु का मन्वन्तर रहा तब तक उसी मनुके वंश के लोग सब पृथ्वी का राज करते और प्रजा पालन करते रहे ॥

मू. चतुर्युगानांसंख्यातासाधिकाह्येकसप्ततिः । क-
तचेतादिसंज्ञानांयान्युक्तानियुगेमया ॥ १२ ॥

टी. और सतयुग त्रेता इत्यादि इकहत्तर चौयुगी तक एक मन्वन्तर रहता है सो मैं पहिले कह चुका हूँ ॥ १२ ॥

मू. स्वतेजसाहितपसोवशिष्टस्यमहात्मनः । तन-
याश्चान्तरेतस्मिन्तत्प्रसप्रर्षयोऽभवन् ॥ १३ ॥

टी. और उक्त औत्तम के मन्वन्तरमें बशिष्ठजी महात्मा के पुत्रों ग जो सुन्दर और तेज और तपस्यावाले सात भाई थे वही सप्त ऋषि कहलाते थे ॥ १३ ॥

मू. तृतीयमेतत्कथितं तत्र मन्वन्तरं मया । ताम
सस्य चतुर्थन्तु मनोरन्तरमुच्यते ॥ १४ ॥

टी. मार्कण्डेयजी कहते हैं कि हे क्रीष्टुकि यह तीसरा मन्वन्तर
औत्तम नाम तो मैं वर्णन कर चुका अब चौथे मन्वन्तर तामस
नाम को वर्णन करता हूँ तुनौ ॥ १४ ॥

मू. वियोनिजन्मनो यस्य यशसाद्योतितं जगत् । ज-
न्मतस्य मनो ब्रह्मन् श्रूयतां गदतो मम ॥ १५ ॥

टी. कि उस तामस मनु का जन्म वियोनि से हुआ है जिसके तेज
से सम्पूर्ण पृथ्वी प्रकाशित हुई ॥ १५ ॥

मू. अतीन्द्रियमशेषाणां ममूनाञ्चरितं तथा । त-
था जन्मापि विज्ञेयं प्रभावश्च महात्मनां ॥ १६ ॥

टी. और सब मन्वन्तरो में उस तामस मनु का जन्म और चरित्र और
प्रभाव अत्यन्त उत्तम और अकथ है ॥ १६ ॥

इति श्री मार्कण्डेय पुराणे
औत्तममन्वन्तरं नाम ॥

॥ ७३ ॥

अध्याय २३

१ - मार्कण्डेय जी कहे हैं कि हे क्रोशुंकी ये तिसरा मनुमंत्र जो अतम नाम हो इस मनुमंत्र में जो द्योता और रक्छ और अन्द्र और राजालोक होئے अन्के नाम में कतामोन सुनो - २ - कि हे सुदधानाम नाम द्योताग्न होئے और दूसरे सत नाम द्योताग्न होئے और दूसरे द्योताग्न होئے अन् सब के जैसे नाम विसी ही क्रिया होती - ३ - और तिसरे द्योताग्न सुनो नाम होئے अन्के साथे जितने द्योताग्न हैं वे सब मन्त्र रूप और पाप के नाश करने वाले हैं - ४ - लम और चोखे प्रब्रतन नाम द्योताग्न होئے जिन सब द्योताग्न प्रब्रतन ही नाम से मशहूर होئے - ५ - पांचौन ब्रतन नाम द्योताग्न होئے और अन् द्योताग्न का भी जैसा नाम विसासी ग्न और रूप हो - ६ - ये पांचौन द्योताग्न जगुन में हस्त लीने वाले हैं अष्टावक्र अस मनुमंत्र में बारह ग्न होئے - ७ - और अन् सब के मालक सशान्त नाम तिन लोक के अश्विन महामहाग्न होئے जो मनु जात कर के अन्द्र होئے हैं - ८ - कि जेना नाम अमी लोक इस दुनिया में अश्विन मनुमंत्र के दत्त होئے के واسطे अब तक जिया करते हैं - ९ - और कहे हैं कि सशान्त द्योताग्न और राज और सुता और सत और ब्रतन मम सब का क्लियन करे - १० - और अतम मन्त्र के तिन लूके अज और प्रशुच और दधि नाम ब्रत बलवान और प्रक्रम द्योताग्न होئے - ११ - जब तक अस तिसरी अतम मन्त्र का मनुमंत्र रतन तक अश्विन के खानदान के लोक राजा होئے गئے और प्रभु होयी का पालन करते रहे - १२ - और सत जग और त्रिता और अश्विन मनुमंत्र रतन तक एक मनुमंत्र रतन जका हाल में रहे कि जका होन - १३ - और अस मनुमंत्र में ब्रह्म मन्त्र के सत लूके सत रक्छ कलाने हैं - १४ - मार्कण्डेय जी कहे हैं कि हे क्रोशुंकी ये तिसरा अतम मनुमंत्र तमि कि जका अब चोखे मनुमंत्र तमि नाम का हाल بیان करे तमोन सुनो - १५ - कि तमि का जन्म बिजुन से हो जन्म तेज से सब सनसार प्रकाशवान हो - १६ - और सब मनुमंत्रों में तमि मनुमंत्र का जन्म और प्रभु और प्रभु बहुत अतम ही कि कमानि जा सका - फल

मू. मार्कण्डेय उवाच ॥ राजाभूद्विविख्या-
तः स्वराष्ट्रो नाम वीर्यवान् । अनेकयज्ञकृ-
त्याः संश्रामे चापराजितः ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

टी. मार्कण्डेयजी कहते हैं कि हे कौटुकि स्वराष्ट्र नाम एक राजा बड़ा नामी और पराक्रमी और बुद्धिमान था जिसने अपने वक्त में तरह तरह की यज्ञ की और बड़े बड़े संश्रामों में विजय पाई ॥ १ ॥

मू. तस्यायुः सुमहत्प्रादात्मन्विण्णराधितोरविः ।
पत्नीनाञ्च शतं तस्य धन्यानामभवद्विज ॥ २ ॥

टी. उस राजा ने मन्त्रों के साथ सूर्य का आराधन किया तब सूर्य भगवान् ने प्रसन्न होकर बहुत आयुर्वल उसको दी और उस राजा के सौ स्त्रियों पतिव्रता थीं ॥ २ ॥

मू. तस्य दीर्घायुषः पत्न्यो नाति दीर्घायुषो मुने । का-
लेन जग्मुर्निधनं भृत्यमन्विजनास्तथा ॥ ३ ॥

टी. हे मुनि राजा की आयुर्वल तो बहुत थी परन्तु उसकी स्त्रियों की आयुर्वल बहुत थोड़ी थी काल पाकर वह सब स्त्रियाँ मर गईं और राजा के मन्त्री और नौकर चाकर भी काल पाकर मर गये ॥ ३ ॥

मू. सभार्याभिस्तथा त्यक्तो भृत्यैश्च सहजन्मभिः ।
उदिग्मचेताः संप्राप वीर्यहानि महर्निश ॥ ४ ॥

टी. इन सब के मरने से राजा बहुत उदास हो गया और दिन बदिन उसका पराक्रम भी घटता गया ॥ ४ ॥

मू. तं वीर्यहीनं निभृतैर्भृत्यैस्तत्तदुःखितम् । अ-
नन्तरो विमर्द्धार्यो राजा चावितवांस्तदा ॥ ५ ॥

टी. जब पराक्रम उसका घट गया और नौकर चाकर के मरने से बहुत दुखी हुआ तब एक दिन एक मनुष्य विमर्द्द नाम आया और राजा को राज्यगद्दी पर से उतार दिया ॥ ५ ॥

मू. राज्याच्युतंसोऽपि वनंगत्वा निर्विण्णमानसः । त-
पस्तेपे महाभागे वितस्ता पुलिने स्थितः ॥ ६ ॥

टी. तब राजा अपनी राज्य से अलग होकर वन में जाकर वितस्ता नाम नदी के किनारे तपस्या करने लगा ॥ ६ ॥

मू. ग्रीष्मे पञ्चतपामूत्वा वर्षा सम्यक् ऋषादिकः । ज-
लशायी च शिशिरे निराहारे यतव्रतः ॥ ७ ॥

टी. ग्रीष्म काल में पञ्चाग्नि तापता था और वर्षा काल में भी गता और जाड़े में निराहार व्रत सहित जल में शयन करता था ॥ ७ ॥

मू. ततस्तपस्यतस्तस्य प्राविट्काले महास्रवः । व-
भूवानुदिनं मेघैर्वर्षं निरनुसन्ततं ॥ ८ ॥

टी. एक समय वर्षा काल में तप करता था कि एक दिन ऐसा पानी वर्षा कि सब जलार्णव होगया ॥ ८ ॥

मू. नदिग्विज्ञायते पूर्वोदक्षिणाचनपश्चिमा । नो-
त्तरा तमसा सर्वमनुलिप्तमिवाभवत् ॥ ९ ॥

टी. उस जलार्णव में पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण कुछ न मालूम होता था तमाम अंधेरा छा गया ॥ ९ ॥

मू. ततोऽतिस्रवन्मेघः स नद्याः प्रेरितस्तटं । प्रार्थ-
यन्नपि नावापह्रियमाणोऽतिवेगिना ॥ १० ॥

टी. यद्यपि राजा ने उस जलार्णव में व्याकुल होकर बहुत कुछ प्रार्थना की तो भी सिवाय पानी के कहीं सूखा स्थान न पाया कि जहाँ बैठकर निश्चिन्ताई से तपस्या करता ॥ १० ॥

मू. अथ दूरे जलौघेन ह्रियमाणो महीपतिः । आ-
ससाद जले गौही सपुच्छे जगृहे चत्तां ॥ ११ ॥

टी. यहाँ तक कि उस पानी की लहर में बहकर बहुत दूर निकल गया कि व्रतने में एक हरिण मिल गई तो राजा ने उसकी पूछ पकड़ लिया ॥ ११ ॥

मू. तेनं प्रवेन स यया बुह्यमानो महीतले । इत-
श्चेतश्चान्धकाराभाससादतदन्ततः ॥ १२ ॥

श्री. तब उस हरिणी की पूछ के सहारे से उस जलार्णव में डूबते उछलते हुये
फिर उसी नदी के किनारे पहुँचा जहाँ से बह गया था ॥ १२ ॥

मू. विस्तारिपङ्क्तुः सत्यर्घ्यदुस्तारं स नृपस्तारन् । तथै-
व कृष्यमाणोऽन्यद्रम्यं वननवापसः ॥ १३ ॥

श्री. फिर वह हरिणी बड़े बड़े दलदल को नाँधती फाँदती हुई दूसरी एक
वन में राजा को ले गई ॥ १३ ॥

मू. तत्रान्धकारे सारौही च कर्षवमुधाधिपं । पुच्छे-
लग्नं महाभागं कृशंधमनि सन्ततौ ॥ १४ ॥

श्री. उस अँधेरे में उस हरिणी के खींचने से राजा बहुत ही
थक गया था ॥ १४ ॥

मू. तस्याश्च स्पर्शसम्भूता मवापमुदमुत्तमां । सो-
ऽन्धकारेभ्रमन्भूयो मदना कृष्टमानसः ॥ १५ ॥

श्री. परन्तु उस हरिणी के अङ्ग के स्पर्श से राजा को बड़ा आनन्द था
सो उस अँधेरे में राजा कामासक्त हुआ ॥ १५ ॥

मू. विज्ञाय सानुरागं तं पृष्ठस्पर्शनतत्परं । नीरेन्दुं-
तद्वनस्यान्तः सामृगीतमुवाच ह ॥ १६ ॥

श्री. और यहाँ तक कामासक्त हुआ कि उस हरिणी की पीठ सह-
लाने लगा तब हरिणी राजा को कामासक्त देखकर कहने लगी ॥ १६ ॥

मू. किं पृष्ठं वेपथुमना करेण स्पृशसे मम । अन्य-
थैवास्य कार्यस्य संयातानृपते गतिः ॥ १७ ॥

श्री. कि हे महाराज तुम मेरी पीठ क्यों सहारते हो इस काम के करने से
तुम्हारा सब सत कर्म बर्था हो जायगा ॥ १७ ॥

मू. नास्थाने वो मनोयान्तं नागम्याहंत वैश्वर ।

किन्तु त्वत्सङ्गमे विघ्नमेष लोलः करोति मे ॥ १८ ॥

श्री. और हे राजन् तुम कुछ वे जगह कामासक्त नहीं हुवे हो तुम्हारा मुँह पर हक है परन्तु तुम्हारे साथ संगम करने में लोल विघ्न डालते हैं ॥ १८ ॥

मू. मार्कण्डेय उवाच ॥ इति श्रुत्वा वचसा मृग्याश्च जगती पतिः । जातकौतूहलो रोहीमि दं वचनमब्रवीत् ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥

श्री. यह बात सुनकर राजा को आश्चर्य हुआ और हरिणी से कहने लगा ॥ १९ ॥

मू. का त्वं ब्रूहि मृगी वाक्य कथं मानुष वद । कश्चै वलोलो यो विघ्नं त्वत्सङ्गे कुरुते मम ॥ २० ॥

श्री. कि तू कौन है जो मनुष्यों की तरह बोलती है और वह लोल कौन है जो मुझको तेरे साथ सङ्गम करने में विघ्न डालता है ॥ २० ॥

मू. मृग्युवाच ॥ अहं ते दयिता भूप प्रागा समुत्पलावती । भार्या शताग्रमहिषी दुहिता दृढधन्वनः ॥ २१ ॥ २१ ॥ २१ ॥ २१ ॥

श्री. हरिणी ने कहा कि हे राजन् पूर्व जन्म में मैं आप ही की स्त्री थी नाम मेरा उत्पलावती था और आपकी सौ रानियों में मैं श्रेष्ठ थी और दृढधन्वा मेरे पिता का नाथ था ॥ २१ ॥

मू.

राजो वाच ॥

किन्तु यावत्कृतं कर्म येनेमां योनिमागता ।

पतिव्रता धर्मपरासाचेत्यं कथमीदृशी ॥ २२ ॥

श्री. राजा ने कहा कि जब तू पतिव्रता धर्मपरायण थी तो फिर कौन ऐसा कर्म किया कि जिस से इस योनि में प्राप्त हुई और उस पूर्व जन्म का रत्नान्न जो तुम्हें याद है इसका क्या सबब है ॥ २२ ॥

मू. मृग्यु वाच ॥ अहंपितृगृहेवालासखीभिः
सहितावनं । रन्तुंगतादर्शैकंमृगमृग्या
समागतं ॥ २३ ॥ २३ ॥ २३ ॥ २३ ॥

गी. हरिणीने कहा कि मैं लड़कपन में अपने पिता के घर सखियों के साथ खेलने को एक वन में गई तो वहाँ हरिणीके साथ एक हरिण को देखा ॥ २३ ॥

मू. ततःसमीपवर्त्तिन्यामयासानाडितामृगी।म
यात्रस्तागतान्यचक्रुःप्राहततोमृगः॥२४॥

गी. फिर वह हरिणी मेरे पास आई उसको मैं ने मारा तब वह डरकर दूसरी जगह चली गई यह देखकर उसका हरिण क्रोध करके मुँह से कहने लगा ॥ २४ ॥

मू. मूढेकिमेवंमत्तासिधितेदौःशील्यमृदृशं।आ-
धानुकालोयेनायंत्वयामेविफलीकृतः॥२५॥

गी. कि हे मूढ़े नेरी कैसी मति है ऐसी दुःशीलता को तेरे धिक्कार है कि तुने मेरे गर्भाधान काल को निष्फल कर दिया ॥ २५ ॥

मू. वाचंश्रुत्वाततस्तस्यमानुषस्येवभाषतः।भी-
तानब्रुवंकोःसीत्येतांयोनिमुपागतः॥२६॥

गी. मनुष्य की बोली में हरिण को बोलते हुवे सुनकर उस मृग से डरकर मैं बोली कि हे मृग तू किस तरह इस योनि में प्राप्त हुआ ॥ २६ ॥

मू. ततःसप्राहपुत्रोऽहमिषेर्निर्वृत्तिचक्षुषः।सु-
तपानाममृग्यानुसामिलाषोमृगोऽभवं॥२७॥

गी. मृगा बोला कि मैं निर्वृत्तचक्षुष नाम ऋषि का पुत्र हूँ सुतपा मेरा नाम है मृगी को देखकर कामासक्त होकर मैं मृग होगया ॥ २७ ॥

मू. इमांचानुगतःप्रेम्नावाञ्छितस्थानयावने।त-
यावियोजितादुष्टतस्माच्छापंददामिते॥२८॥

श्री. मैं इस हरिणी के साथ बहुत प्रीति रखता हूँ और यह हरिणी भी मुझ से बहुत प्रीति रखती है हे दुष्टे तू ने इस हरिणी को जो मुझ से जुड़ा कर दिया इस वास्ते मैं तुझे शाप देता हूँ ॥ २८ ॥

मू. मया चोक्तं तवाज्ञानादपराधः कृतो मुने । प्रसादं कुरु शापं मे न भवान् दातुमर्हसि ॥ २९ ॥

श्री. यह सुनकर मैं ने कहा कि हे मुनि अनजान मुझ से यह अपराध हुआ क्षमा कीजिये शाप न दीजिये ॥ २९ ॥

मू. इत्युक्ता प्राह मां सोऽपि मुनिरित्यमहीपते । न प्रयच्छामि शापं ते यद्यात्मानं ददामि ते ॥ ३० ॥

श्री. यह बात जब मैं ने उस मृग से कही तब उस मृग मुनि ने मुझ से कहा कि अच्छा मैं शाप न दूंगा पर मैं अपना आपत्ता तुझ को देता हूँ तू मुझ से प्रीति कर ॥ ३० ॥

मू. मया चोक्तं मृगीनाहं मृगरूपधरावने । लप्स्यसेऽन्यां मृगीन्तावन्मयि भावो निवर्त्यतां ॥ ३१ ॥

श्री. तब मैं ने उस मृगरूपधारी मुनि से कहा कि मैं मृगरूप धारण करने वाली जंगल की मृगी नहीं हूँ तू दूसरी हरिणी पर अपना मन न बँडाव मुझ से ऐसा भाव मत रख ॥ ३१ ॥

मू. इत्युक्तः कोपरक्ता सः स प्राह स्फुरिताधरः । नाहं मृगी त्वयेत्युक्तं मृगी मूढे भविष्यसि ॥ ३२ ॥

श्री. यह बात मेरी सुनकर वह मृग क्रोध से लाल लाल आँखें करके कहने लगा कि हे मूढे तू जो कहती है कि मैं मृगी नहीं हूँ तो मैं कहता हूँ कि तू अवश्य मृगी होगी ॥ ३२ ॥

मू. ततो भृशं प्रव्यथिता प्रणाम्य मुनिमब्रुवन् । स्वस्थमतिक्रुद्धं प्रसीदेति पुनः पुनः ॥ ३३ ॥

श्री. यह बात सुनकर मैं बहुत दुखी होकर उस मुनि को प्रणाम कर

के कहने लगी कि हे मुनि क्षमा कीजिये ॥३३॥

मू. बालानभिजावाक्यानांततः प्रोक्तं मिदं मया ।
पितर्यसतिनारीभिर्व्रियते हियति स्वयम् ॥३४॥

श्री. मैं स्त्री हूँ आपकी बात अच्छी तरह नहीं समझी इस सबब से यह बात मेरे मुख से निकल गई किन्तु जिस स्त्री के पिता नहीं होता है वह अलवत्ता अपने मन से पति कर लेती है ॥३४॥

मू. सतिताते कथंचाहं चणोमि मुनि सत्तम । साप-
राधाथवापादौ प्रसीदेशनमा म्यहं ॥ ३५ ॥

श्री. हे मुनि मेरे तो पिता वर्तमान हैं मैं अपने अधिकार से आप को क्यों कर पति बनाऊँ मैं आप के आधीन हूँ और आपके चरणों पर गिरती हूँ मेरा अपराध क्षमा कीजिये ॥३५॥

मू. प्रसीदेति प्रसीदेति प्रणनायामहामते । इत्थं
लालप्यमानायाः सप्राह मुनिपुङ्गवः ॥ ३६ ॥

श्री. हे महामुनि मरुपर प्रसन्न हुआ जिये जब मैं ने इस तरह प्रणत होकर बार-बार कहा तब वह मुनि बोले ॥३६॥

मू. न भवत्यन्यथा प्रोक्तं मम वाक्यं कदाचन । मृगी-
भविष्यसि मृतावनेऽस्मिन्नेव जन्मनि ॥ ३७ ॥

श्री. कि जो बात मैं ने कह दिया वह किसी तरह मिथ्या नहीं हो सकती मरने पर तू अवश्य वन की मृगी होगी ॥३७॥

मू. मृगत्वे च महाबाहुस्तव गर्भमुपैष्यति । लो-
लोनाममुनेः पुत्रः सिद्धवीर्यस्य भाविनि ॥ ३८ ॥

श्री. और जब तू हरिणी होगी तब सिद्धवीर्य मुनि के पुत्र लोल नाम महाबाहु तेरे गर्भ से उत्पन्न होगा ॥३८॥

मू. जातीस्मरा भवित्री त्वं तस्मिन् गर्भमुपागते । स्मृ-
तिम्राप्य तथा वाचं मानुषीमीरपिष्यसि ॥ ३९ ॥

री. और जब वह तेरे गर्भ में आवेंगे उस समय तुम को इस जन्म की सब बातें याद रहेंगी और उन बातों के याद रहनेसे मनुष्य की तरह तू बोलैगी ॥ ३६ ॥

मू. तस्मिन्जातेमृगीत्वान्त्वंविमुक्तापतिनार्चिता।
लोकानवाप्यसिषायायेन्दुक्षतकर्मभिः ॥ ४० ॥

री. और जब उसका जन्म होगा तब तू हरिणी के शरीर से छूटकर और अपने पति से पूजित होकर उच्चमलोक को प्राप्त होगी जिस लोक को मुनिलोक बहुत तपस्या करके पाते हैं ॥ ४० ॥

मू. सोऽपिलोलोमहावीर्यः पितृशत्रून्निपात्य वै ।
जित्वावसुन्धरां कृत्वा भविष्यति ततो मनुः ॥ ४१ ॥

री. और वह लोल महावीर्य अपने पिता के सब शत्रुओं को मार कर सम्पूर्ण पृथ्वी को जीत कर मनु होंगे ॥ ४१ ॥

मू. एवं शपमहं लब्ध्वा मृतातिर्यक्तमागता । त्वत्
संस्पर्शाच्च गर्भोऽसौ सम्भूतो जठरे मम ॥ ४२ ॥

री. इस शप से मेरा जन्म तिर्यक्त योनि में हरिणी का हुआ है म-
हाराज जब मैं आप के स्पर्श से गर्भवती होगई ॥ ४२ ॥

मू. एवं ब्रवीमि नास्थानेन वयानं मनो मयि । न चा-
प्यगम्या गर्भस्थो लोलो विघ्नं करोत्यसौ ॥ ४३ ॥

री. इसी से मैं कहती हूँ कि आपका मन अनुचित स्थान में नहीं
प्राप्त हुआ है और न मैं आपकी अपगम्या हूँ परन्तु मेरे गर्भ में जो
लोल है वह मेरे और आप के संगम में विघ्न करते हैं ॥ ४३ ॥

मू. मार्कण्डेय उवाच ॥ एवमुक्तस्ततः सोऽपि
राजा प्राप्य परां मुदं । पुत्रो ममारीं जित्वेति
पृथिव्यां भवता मनुः ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥

री. मार्कण्डेयजी कहते हैं कि इस तरह हरिणी की बातें सुन

कर राजा बहुत प्रसन्न हुआ और कहने लगा कि मेरा पुत्र शत्रुओं की जीत कर मनु होगा ॥ ४४ ॥

मू. ततस्तं सुषु वेपुत्रं सामृगीलक्षणा न्वितं । तस्मिन्
न जाते च भूतानि सर्वाणि प्रययुर्मुदं ॥ ४५ ॥

टी. फिर वह हरिणी लड़का जनी जिस में सब लक्षण भलाई के थे उस लड़के के पैदा होने से सब जीवों को आनन्द हुआ ॥ ४५ ॥

मू. विशेषतश्च राजा तौ पुत्रे जाते महाबले । सावि-
मुक्ता मृगी शपात्प्राप लोकाननुत्तमान् ॥ ४६ ॥

टी. विशेष उस प्राकृमी लड़के के पैदा होने से राजा को बहुत आनन्द प्राप्त हुआ और वह हरिणी अपने शप के कष्ट से छूटकर उत्तम लोक को चली गई ॥ ४६ ॥

मू. ततस्तस्यैव यः सर्वैरुत्तमैर्यमुनिसत्तम । अवे-
क्ष्य भाविनी मृद्धिं नाम चक्रुर्महात्मनः ॥ ४७ ॥

टी. बाद इसके उस पुत्र महात्मा को ऋद्धि देने वाले सम्पूर्ण लक्षणों संयुक्त देखकर उस लड़के का नाम रखने के वास्ते मुनि लोग इकट्ठा होकर कहने लगे ॥ ४७ ॥

मू. तामसी भजमानायां योनिं मातर्यं जायत । तम-
साचावृते लोके तामसोऽयं भविष्यति ॥ ४८ ॥

टी. कि इनकी साता तामसी योनि में प्राप्त थी जिस से ये पैदा हुवे और इनके जन्म काल में तमाम अंधेरा छा गया था इस सब व से इनका नाम तामस विख्यात होगा ॥ ४८ ॥

मू. ततः सतामसस्तेन पित्रा संवर्द्धितो बने । जात-
बुद्धिरुवाचे दंपितरं मुनिसत्तम ॥ ४९ ॥ ४९ ॥

टी. मार्कण्डेय जी कहते हैं कि हे मुनि सत्तम बाद इसके उन तामस को उनके पिता ने उसी वन में पालन किया जब तामस को

मुद्दि हुई तब अपने पिता से बोले ॥ ४६ ॥

मू. कस्त्यं तात कथं वाहं पुत्रीमाता च कामस । कि-
मर्थमागतश्च त्वमेतत्सत्यं वीहि मे ॥ ४७ ॥

टी. कि हे तात तुम कौन हो और मैं किस तरह आप का पुत्र हो
और मेरी माता कौन है और आप इस वन में किस तरह होते
आये सो तत्व सत्य कहिये ॥ ४७ ॥

मू. मार्कण्डेय उवाच ॥ ततः पिता यथा वृत्तं
स्वराज्य व्यावनादिकं । तस्या च हे महाबा-
हुः पुत्रस्य जगती पतिः ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥

टी. तब राजा ने अपने राज से अलग होने और अन्य वृत्ता-
न्त जो बीता था सब अपने बेटे से कह सुनाया ॥ ४८ ॥

मू. श्रुत्वा तत्समलं सोऽपि समा राध्य च भास्करां स-
दाप दिव्या न्यस्त्राणि संहाराय शेषतः ॥ ५१ ॥

टी. उस लड़के ने भी अपने पिता से सब हाल सुनकर हरतर-
ह से सूर्य का आराधन किया तब सूर्य भगवान् ने उसको ज्ञा-
ति दिव्य अस्त्र और उसके चलाने की विद्या भी दी ॥ ५१ ॥

मू. कृतास्वस्तानरीनजित्वा पितुरानीय चान्तिकं ।
अनुतातान् भुमो चायते न सर्वधर्ममास्थितः ॥ ५२ ॥

टी. उसी अस्त्र से वह तामस सब दुष्टों को जीत कर और उन सब को
कैद करके अपने पिता के सामने ले आया और फिर अपने पिता की आज्ञा
नुसार उन सब को छोड़ कर अपने धर्म कार्य में प्रवृत्त हुआ ॥ ५२ ॥

मू. पितापितृस्य स्वान्लोकां तपो यज्ञसमार्जितान्
विसृष्टदेहः संप्राप्तो दृष्ट्वा पुत्रमुखं सुखम् ॥ ५३ ॥

टी. फिर वह राजा तपस्या और यज्ञ इत्यादि करके और अ-
पने पुत्र का मुख देख कर बड़े सुख के साथ अपना शरीर त्याग

कर परलोक को प्राप्त हुआ ॥ ५४ ॥

मू. जित्वा समस्तां पृथिवीं तामसारव्यः स पार्थिवः तत्
मसारव्यो मनु रभूत्तस्य मन्वन्तरं शृणु ॥ ५५ ॥

टी. और वह नामस महाराज सम्पूर्ण पृथ्वी को जीत कर अपने
वंश में कर लिया और सम्पूर्ण पृथ्वी में मनु विख्यात हुआ अ-
ब उनके मन्वन्तर का हाल कहता हूँ सुनो ॥ ५५ ॥

मू. ये देवा यत्पतिर्यथ देवेन्द्रो ये तथर्षयः । ये पुत्रा
श्च मनोस्तस्य पृथिवी परिपालकाः ॥ ५६ ॥

टी. और उस मन्वन्तर में जो देवता और उनके पति अर्थात्
इन्द्र और ऋषि लोग और उस मनु के बेटे लोग जो राजा हुवे उ-
न सब का वृत्तान्त भी कहता हूँ सुनो ॥ ५६ ॥

मू. तस्यास्तथान्ये सुधियः सुरूपा हरयस्तथा । एते
देवगणास्तत्र सप्तविंशतिका मुने ॥ ५७ ॥

टी. कि सत्य और सुधि और सुरूप और हर यही लोग सत्तर्विंश-
देवता गण थे ॥ ५७ ॥

मू. महाबलो महावीर्याः शतयज्ञोपलक्षितः । शि-
खिरिन्दुस्तथा तेषां देवानां स भवद्विभुः ॥ ५८ ॥

टी. और शिखि नाम राजा महाबली और पराक्रमी तौ यज्ञ क-
र के देवताओं का स्वामी अर्थात् इन्द्र हुआ था ॥ ५८ ॥

मू. ज्योतिर्धामा पृथुः काव्यश्चैवोऽग्निर्वलकस्तथा ।
पीवरश्च तथा ब्रह्मन् सप्त सप्तर्षयोऽभवत् ॥ ५९ ॥

टी. और ज्योति धर्मा और पृथु और काव्य और चैव और अ-
ग्नि और बलक और पीवर यही सातों सप्तर्षि कहलाते थे ॥ ५९ ॥

मू. नरः क्षान्तिः शान्तदान्तजानुजङ्घादयस्तथा । पु-
त्रास्तु तामसस्या स न राजानः सुमहाबलाः ॥ ६० ॥

री- हे मुनि सत्तम उस तामस मनु के पुत्र नर और शान्ति
और शान्त और शान्त और जानुजङ्ग इत्यादि बड़े बड़े पराक्रमी हुवे॥६०॥

इति श्री मार्कण्डेय पुराणे तामस मन्वन्तरे नाम ॥७४॥

आध्यात्म्ये चोपनिषत्

१- मार्कण्डेय जी कहते हैं कि हे क्रोशंशु सौराष्ट्र नाम एक राजा ब्राह्मण और गृही
और पराक्रमी तथा अपने सम्राट्त्व में तरह तरह की जात की और बड़ी बड़ी लड़ाई
में فتح حاصل की - २- अस राजा ने मन्त्र के साथ सूर्य और तारा आराधन किया तब सूर्य
बह्मण ने خوش होकर उसकी उम्र द्वायकी और अस राजा के तनू और तनू पितृ ब्रतान्वित -
३- राजा की उम्र तो बहुत थी पर उसकी रानियों की उम्र बहुत कम थी इस सبب से वे सब
रानियाँ अपने अपने وقت पर मर गئیں - ४- अतः सब के मरने से राजा बहुत रنجित
हो گیا और زور و طاقت بھی उसकी कटती گئی - ५- जब زور उसका कट گیا اور نوکر و جاگر
के मرنے سے بہت دکھی ہوا تب ایک دن ایک شخص پھر وہاں آیا اور राजा کی راج چھین لیا
६- تب وہ राजا اپنی راج سے الگ ہو کر ایک جنگل میں رہتا تھا نام ندی کے کنارے جا کر تپسیا
کرنے لگا - ७- گرمی کے موسم میں پانی نہ ملتا اور برسات میں برسے ہوئے پانی میں بھی
کڑا اور چارے میں نہ ملتا برسات کرنے پانی میں نہ ملتا - ८- ایک دن موسم برسات میں آیا
پانی برساکہ تمام پانی ہی پانی نظر آئے لگا - ९- اس سیلاب میں پورے پچھم اتر دکھن کچھ
نہ معلوم ہوتا تھا اور تمام اندھیرا چھا گیا - ۱۰- राजا نے بہت پریشان ہو کر ارنو کی تو بھی
سوا سے پانی کے کہیں خشکی نہ نظر آئی کہ جان بیٹھ کر لمبی سے تپسیا کرتا - ۱۱- بلکہ राजا
سौराष्ट्र پانی کی لہر میں بہتے بہتے ڈوب کر گیا کہ اتنے میں ایک ہرنی ملی تو اسکی دم بکڑ لی
۱۲- اس دم کے سہارے سے ڈوبتا اچھلتا ہوا پھر اسی ندی کے کنارے پہنچا جہاں سے

بہہ گیا تھا۔ ۱۳ | پھر وہاں سے وہ ہرنی بڑے بڑے دلدل کوٹے کرتی ہوئی راجا کو
 دوسرے جنگل میں کھینچ کر لگئی۔ ۱۴ | اگرچہ اُس اندھیرے میں جگہ جگہ اُس ہرنی کے
 کھینچنے سے راجا بہت تھک گیا تھا۔ ۱۵ | مگر اُس ہرنی کے جسم پر اسکا ماتھ پڑنے سے
 اُسکو بہت خوشی حاصل تھی چنانچہ اُس اندھیرے میں راجا کو شہوت نے مغلوب کیا۔
 ۱۶ | اور راجا ہرنی کی پیٹھ سہلانے لگا تب وہ ہرنی راجا کو مست شہوت دیکھ کر کہنے لگی۔
 ۱۷ | کہ اے مہاراج تم میری پیٹھ کیوں سہلاتے ہو اس کام کے کرنے سے تمھاری سبب تپسیا
 جاتی رہیگی۔ ۱۸ | اور اے مہاراج آپکا دل بیچارے نہیں ہوا ہے اور میں بھی آپ کے
 لائق ہوں مگر آپ کے ساتھ صحبت ہونے میں ٹول تحمل ہوتے ہیں۔ ۱۹ | یہ بات ہرنی کی سنکر
 راجا کو تعجب ہوا اور اُس ہرنی سے کہنے لگا۔ ۲۰ | کہ تو کون سی جو آدمی کی طرح بولتی ہے اور وہ
 ٹول کون سی جو میری صحبت ہونے میں خلل ڈالتا ہے۔ ۲۱ | ہرنی نے کہا کہ امی راجا
 میں لگے جنم میں آپکی رانی تھی میرا نام اُتپلاوتی تھا اور سب رانیوں میں ممتاز و سرفراز
 تھی اور ڈرہ دھنوا میرے باپ کا نام تھا۔ ۲۲ | راجا نے کہا کہ تو تو پت برتا اور دھرم
 تھی پھر کس سبب سے تجھکو ہرنی کا جسم ملا اور اگلے جنم کی بات تجھکو کیوں یاد رہی۔
 ۲۳ | ہرنی نے کہا کہ میں لڑکپن میں اپنے باپ کے گھر اپنی سگیں کے ساتھ کھیلنے کو ایک جنگل
 میں گئی تو وہاں ہرنی کے ساتھ ایک ہرن کو دیکھا۔ ۲۴ | پھر وہ ہرنی میرے قریب آئی
 تو اُسکو میں نے مارا جس سے وہ خوف کھا کر دوسری جگہ بھاگ گئی تب وہ ہرن غصہ کر کے
 مجھے کہنے لگا۔ ۲۵ | کہ اے نادان کیسی تیری سمجھ ہے کہ تو نے میرے محل رہنے کے وقت
 کو ضائع کر دیا تیری اس بے مروتی پر لعنت ہے۔ ۲۶ | تب میں اُس ہرن کو آدمی کی طرح
 بولنے ہوئے دیکھ کر اور ڈر کر بولی کہ تم کس طرح ہرن کے جسم میں آئے۔ ۲۷ | ہرن نے کہا کہ
 میں نہ برت چکا نام رکھ کا پتر ہوں اور شتیا میرا نام ہے جو کہ میں ہرنی کو دیکھ کر مست ہوا
 اس سبب سے میں بھی ہرن بن گیا۔ ۲۸ | میں اس ہرنی کے ساتھ بہت ہی محبت رکھتا
 ہوں اور یہ ہرنی بھی مجھکو بہت چاہتی ہے تو نے جو اس ہرنی کو مجھ سے جدا کر دیا اسوا سوا میں
 تجھکو سراپ دیتا ہوں۔ ۲۹ | یہ بات سنکر میں نے کہا کہ ہے میں یہ تصور مجھ سے نااہل نہ
 ہوا معاف کیجیے بددعا نہ دیجیے۔ ۳۰ | تب وہ میں بصورت ہرن کہنے لگا کہ خیر تجھکو بددعا
 نہ دوں گا مگر اپنی اتنا تجھکو دیتا ہوں تو مجھ سے محبت کر۔ ۳۱ | میں نے کہا کہ میں جنگل کا

ہر نی رُوپ بنانے والی نہیں ہوں تم دوسری ہر نی سے دل لگاؤ مجھ سے ایسی امید نہ کرو۔
 ۳۲۲ یہ بات میری سُکر وہ ہرن صورت میں لال پیلی آنکھیں کر کے بولا کہ اے بے تمیز
 تو جو یہ کہتی ہو کہ میں ہر نی نہیں ہوں تو میں کہتا ہوں کہ تو ضرور ہر نی ہوگی۔ ۳۲۳ یہاں
 سُکر بہت میں پریشان ہوئی اور بار بار اُس میں کو دُڑوت کر کے کہنے لگی کہ میرا قصور صرف
 کیجیے۔ ۳۲۴ میں عورت ذات ہوں اس سے آپکی بات بخوبی نہ سمجھ سکی اسی وجہ سے وہ
 بات میرے منہ سے نکل گئی اور بات اصل یہ ہو کہ جس عورت کے باپ نہیں ہوتا وہ اپنے
 اختیار سے اپنا شوہر کر لیتی ہو۔ ۳۲۵ اور میرا باپ تو ابھی موجود ہی میں اپنے اختیار سے
 آپ کو اپنا شوہر کر لیا کرتا تھا مگر بنا سکتی ہوں میں آپ کی لونڈی ہوں اور آپ کے قدموں پر گر کر ہی
 میرا قصور معاف کیجیے۔ ۳۲۶ جب اس طرح میں نے کہا تب وہ میں بولا۔ ۳۲۷ کہ جو تباہی میں نے
 کہہ دی وہ کسی طرح مٹ نہیں سکتی مرنے کے بعد تو ضرور جنگل کی ہر نی ہوگی۔ ۳۲۸ اور
 جب تو ہر نی ہوگی تب سدا چمیرج نام میں کے پُتر کول نام مہا بلوان تیرے محل سے
 پیدا ہونگے۔ ۳۲۹ اور جب وہ تیرے محل میں آویں گی اسوقت تجھ کو اس جہم کی سب باتیں
 یاد رہیں گی اور ان باتوں کے یاد رہنے سے تو آدمیوں کی طرح بول کر گی۔ ۳۳۰ اور جب
 وہ تیرے پیٹ سے پیدا ہوں گے تب تو ہر نی کے جسم سے چھوٹ کر اور اپنے شوہر سے
 عزت پا کر اُس اُتم لوگ میں جاگی جس لوگ کو میں لوگ بہت ٹیپتا کرنے سے پاتے ہیں۔
 اہم اور وہ لوگ اپنے باپ کے سب دشمنوں کو مار کر اور تمام زمین کو قبضہ میں لا کر میں
 ہو جاؤں گا۔ ۳۳۱ ہر نی کہتی ہو کہ اے راجا اس طرح کے سراپ ہونے سے میرا جہم ہر نی کا
 ہوا اور اب آپ کے چھوٹنے سے میرے محل قائم ہو گیا۔ ۳۳۲ اسی وجہ سے میں کہتی ہوں کہ
 آپ کا دل جو میری طرف راغب ہوا وہ حق بجانب ہو رہا ہے کیونکہ میں نے اپنے محل میں جو لوگ
 ہیج میری اور آپکی صحبت میں غفل ڈالے ہیں۔ ۳۳۳ مارکنڈے جی کہتے ہیں کہ ہے کوشکی
 اس طرح ہر نی کے کہنے سے راجا بہت خوش ہوا کہ میرا بیٹا دشمنوں پر فتح پا کر میں کا دھرم
 حاصل کر گیا۔ ۳۳۴ انرض وہ ہر نی لڑکا جنی خیم سب علامات بہتری کے تھے۔ اُس
 لڑکے کے پیدا ہونے سے تمام رعایا کو خوشی حاصل ہوئی۔ ۳۳۵ خصوصاً اُس صاحبِ قدرت
 لڑکے کے پیدا ہونے سے راجا کو بہت ہی خوشی ہوئی اور وہ ہر نی اُس میں کے سراپ کے
 لڑکے سے چھوٹ کر بڑے اُتم لوگ کو پہنچ گئی۔ ۳۳۶ بعد اسکے اُس مہاتما پُتر کے اچھے

پچھون کو سمجھ کر من لوگ اسکا نام رکھنے کے لیے جمع ہو کر کہنے لگے کہ - ۸۸ ہم جو کہ ماما اسکا
 نامسی جون میں تھی اور اسکی پیدائش کے وقت تمام اندھیالاجھا گیا تھا اس سے اسکا نام
 نامس مشہور ہوگا - ۸۹ مارکنڈے جی کہتے ہیں کہ ہر من پھر نامس کو اسکے باپ نے اس
 جنگل میں پرورش کیا جب وہ ہوشیار ہوا تب اپنے باپ سے کہنے لگا - ۹۰ کہ اے باپ
 تم کون ہو اور میں کس طرح تمھارا پوتہ ہوا اور میری ماما کون ہے اور کیوں کر تم اس جنگل میں
 آئے سچ سچ کہو - ۹۱ تب راجا نے اپنے راج کے چھوٹ جانے کا حال اور جو کچھ لگا
 تھا سب مفصل اپنے بیٹے کو کہہ سنایا - ۹۲ تب اس لڑکے نے اپنے باپ سے
 سب حال سنکر سورج دیوتا کا آرا دھن ہر طرح سے کیا اور سورج بھگوان کو پرست کر کے
 ان سے ہتھیار اور اسکے چلانے کا علم بھی حاصل کیا - ۹۳ چنانچہ اسی ہتھیار کے ذریعہ
 سے وہ لڑکا سب دشمنوں سے لڑ گیا اور ان پر فتح یاب ہو کر سبکو گرفتار کر کے اپنے باپ
 کے سامنے لے آیا اور پھر اپنے باپ کے حکم کے مطابق ان سبکو چھوڑ بھی دیا اور اپنے دم
 کے کام میں مصروف ہوا - ۹۴ اور وہ راجا تپتیا اور جاگ وغیرہ کر کے اور اپنے لڑکے کا
 منہ دیکھ کر آرام کے ساتھ اپنے جسم کو چھوڑ کر بر لوک کو مدھارا - ۹۵ اور نامس
 نے تمام زمین کو فتح کر کے اور اپنے اختیار میں کر کے راج کیا کہ جس سبب سے من مشہور
 اب اسکے منوتر کا حال کتا ہوں سنو - ۹۶ یعنی اس منوتر میں جو دیوتا اور پت
 اور دیوتوں میں اندر اور رکھ اور پت رکھ ہوئے اور نامس مہاراج کے لڑکے جو راج
 ہوئے ان کے نام کتا ہوں سنو - ۹۷ کہ ست اور سہو اور شرپ اور سہو
 اس منوتر میں شائیس دیوتا گن ہوئے - ۹۸ اور شکر نام راجا تھا بلوان شو جاگ
 کر کے دیوتوں کا مالک یعنی اندر ہوا تھا - ۹۹ اور جوت دھرم اور پوتھ اور کاتب
 اور چتر اور گن اور ملک اور یو یہ ساتوں اس منوتر میں پت رکھ ہوئے -
 ۱۰۰ اور نامس من کے لڑکے نر اور چھانت اور شانت اور دانت اور جان
 وغیرہ بڑے صاحب قدرت ہوئے - فقط

मू. मार्कण्डेय उवाच ॥ पञ्चमोऽपि मनुर्ब्रह्म
हन्तरेव तो नाम विश्रुतः । तस्योत्पत्तिं वि
स्तरशः शृणुष्व कथयामिते ॥ १ ॥ १ ॥

टी. मार्कण्डेयजी कहते हैं कि हे कौशिक अब पाँचवें मनु जो रैवत नाम से प्रसिद्ध हैं उनका हाल बिलार पूर्वक कहता हूँ सुनो ॥१॥

मू. ऋषिरासीन्महाभाग ऋतवागिति विश्रुतः ।
तस्यापुत्रस्य पुत्रोऽभूदेवत्यन्ते महात्मनः ॥ २ ॥

टी. कि ऋतवाक नाम एक ऋषि थे जिनके पहिले कोई वन्तान नहीं बहुत दिनों के बाद रेवती नक्षत्र के अन्त में उनके पास एक पुत्र उत्पन्न हुआ ॥२॥

मू. सतस्यविधिवच्चक्रे जातकर्मदिकाः क्रियाः ।
तथोपनयनादींश्च सचाशीलोऽभवन्मुने ॥ ३ ॥

टी. तब ऋषिने उरु लड़के का विधि पूर्वक जातकर्म इत्यादि क्रिया की और सयाना होने पर उसका उपनयन आदि किया परन्तु वह लड़का अत्यन्त दुःशील हुआ ॥३॥

मू. यतः प्रभृतिजातोऽसौ ततः प्रभृतिसोऽसृषिः । री
र्धरोगपरामर्षमवाप मुनिपुङ्गवः ॥ ४ ॥

टी. जिस दिन से वह लड़का पैदा हुआ उस दिन से ऋषि की उम्र बढ़े दुःख और रोग ने घेर लिया ॥४॥

मू. माता तस्य परामर्शिकुष्ठरोगादिपीडिता । ज
गामसपिताचास्य चिन्तयामास दुःखितः ॥ ५ ॥

टी. और उस लड़के की माता भी कुष्ठ के रोग होने से अत्यन्त पीड़ित होगई तब ऋषि बहुत दुखी होकर इन्हीं सब बातों का शोच करते हुये घर से निकले ॥५॥

मू. किमेतदिति सोऽप्यस्य पुत्रोऽप्यत्यन्तदुर्मतिः

जग्राहभार्यामन्यस्यमुनिपुत्रस्यसम्मुखी ॥ ६ ॥

श्री. कि कितने दिनों पर एक पुत्र उत्पन्न भू हुआ तो मेरा ऐसा अभाग्य है कि वह लड़का दुर्मेति होगया जब दूसरे ऋषि के लड़के की स्त्री सम्मुखी को लेलिया ॥ ६ ॥

मू. ततो विषममनसान्नतवागिदमुक्तवान्। अ
पुत्रतामनुष्याणां श्रेयसेन कुपुत्रता ॥ ७ ॥

श्री. और यह भी कहने लगे कि मनुष्यों को ऐसे पुत्र के होने से बिना पुत्र के रहना अच्छा है ॥ ७ ॥

मू. कुपुत्रो हृदयाया संसर्वदा कुरुते पितुः। मातु
श्च स्वर्ग संस्थांश्च सपितृन्यातयत्यधः ॥ ८ ॥

श्री. क्योंकि कपूत लड़का मा बाप के जी को सदा दुःख देता रहता है और स्वर्ग वासी पितरों को नरक में लाकर डाल देता है ॥ ८ ॥

मू. सुहृदो नोपकाराय पितृणां च न तृप्ये। पित्रोर्दुः-
स्वायधिजन्मतस्य दुष्कृतकर्मणाः ॥ ९ ॥

श्री. ऐसे कुकर्म पुत्र को धिक्कार है कि जिससे पित्रों का उपकार न हो और पितर लोग तृप्त नहीं जिस पुत्र से माता पिता को दुःख हो उस पुत्र का जन्म बुरा है ॥ ९ ॥

मू. धन्यास्ते तनया येषां सर्वलोका भिसम्मताः। प-
रोपकारिणः शान्ता साधुकर्मण्यनुव्रताः ॥ १० ॥

श्री. और वही लड़का धन्य है जिस की प्रशंसा सब लोग करें और परोपकारी हो और अच्छा स्वभाव रखे और अच्छे कामों में तत्पर रहे ॥ १० ॥

मू. अनिर्वृतं तथा मन्दं परलोकपराङ्मुखं। नर-
कायनसद्वत्यै कुपुत्रालम्बिजन्मनः ॥ ११ ॥

श्री. कपूत और मूर्ख से परलोक के वास्ते कोई कर्म नहीं होता और

कपूत के जन्म से माता पिता को नरक होता है गति नहीं होती ॥ ११ ॥

मू. करोति सौहृदं दैन्यमहितानां तथा मुदं । अ-
काले च जरां पित्रोः कुपुत्रः कुरुते भुव ॥ १२ ॥

टी. किन्तु वह पुत्र पित्रों को दुःख और शत्रुओं को सुख देता है और वह पुत्र माता पिता को जवानी ही में बूढ़ा बना देता है ॥ १२ ॥

मू. मार्कण्डेय उवाच ॥ एवं सोऽत्यन्तदुष्टस्य
पुत्रस्य चरितैर्मुनिः । दह्यमानमनो हतिर्हे
तंगर्गमपृच्छत ॥ १३ ॥ १३ ॥ १३ ॥ १३ ॥

टी. मार्कण्डेयजी कहते हैं कि हे कौण्डिक इस तरह उस पुत्र का चरित्र देख कर उस मुनि का सब हौशिला दूढ़ गया आखिर को गर्ग मुनि के पास जाकर कहने लगे ॥ १३ ॥

मू. ऋतवागुवाच ॥ सुयतेन पुरा वेदा गृही-
ता विधिवन्मया । समाप्य वेदान् विधिव-
त्कृतो दारपरिग्रहः ॥ १४ ॥ १४ ॥ १४ ॥

टी. कि हे गर्गजी मैंने सुन्दर ऋत धारणा करके पहिले वेद पढ़ाये द समाप्त होने पर विधि पूर्वक अपना विवाह किया ॥ १४ ॥

मू. सदारेण क्रियाः कार्याः श्रौताः स्मार्तवपर क्रियाः
न मे न्यूनाः कृताः काश्चिदावदद्य महामुने ॥ १५ ॥

टी. और हे महामुनि जन्म से आज तक मैंने स्त्री संयुक्त वैदिक क्रिया और स्मार्त क्रिया और षट् क्रिया इत्यादि सब किया किन्तु विना समाप्त किये किसी क्रिया को अधूरी न छोड़ा ॥ १५ ॥

मू. गर्भाधानविधानेन न काममनुरन्धता । पुन-
र्थे जन्ति श्चायं पुन्नाम्नो विभ्यता मुने ॥ १६ ॥

टी. और पुन्नाम नरक के डर से विधि पूर्वक अच्छे सुहृत् में पुनर्व्रत की इच्छा करके स्त्री गमन किया कामाश्रय होकर मैंने स्त्री

गमन कभी नहीं किया ॥ १६ ॥

मू. सोऽयं किमात्मदोषेण मम दोषेण वा मुने । अ-
स्मदुःखावहो जातो दौःशील्यादन्धुशोकदः ॥ १७ ॥

श्री. फिर यह लड़का दुःशील क्यों पैदा हुआ जो मुझको और मा-
ई बन्धु और दोस्त आश्रना को दुःख और शोक देता है इसका
कारण क्या है बिस्तार पूर्वक वर्णन कीजिये ॥ १७ ॥

मू. गर्ग उवाच ॥ रेवत्यन्ते मुनि श्रेष्ठ जातोऽयं
जनयास्तव । तेन दुःखायते दुष्टे काले यस्मा-
दजायत ॥ १८ ॥ १८ ॥ १८ ॥ १८ ॥

श्री. गर्गजी कहने लगे कि हे मुनि तुम्हारा यह लड़का रेवती न-
क्षत्र के अन्त में पैदा हुआ है और वह काल अच्छा नहीं था इ-
सी कारण से आपको दुःख देता है ॥ १८ ॥

मू. नतेऽपचारो नैवास्य मातुर्नोयंकुलस्यते । तस्य
दौःशील्यहेतुस्तुरेवत्यन्तमुपागतं ॥ १९ ॥

श्री. इसमें तुम्हारा या उस लड़के का या उसकी माता का या तु-
म्हारे कुल का कुछ दोष नहीं है उसके दुःशील्य होने का कार-
ण वही रेवती नक्षत्र है ॥ १९ ॥

मू. ऋतवागु वाच ॥ यस्मान्ममैकपुत्रस्य रे-
वत्यन्तसमुद्भवं । दौःशील्यमेतत्सातस्मा-
त्पतता माशुरेवती ॥ २० ॥ २० ॥ २० ॥

श्री. यह सुनकर ऋतवाक मुनि बोले कि जो एक लड़का भी मेरे
घर में उत्पन्न हुआ तो वह रेवती नक्षत्र के दोष से दुःशील हो-
गा इस वास्ते मैं कहता हूँ कि इस रेवती नक्षत्र का पतन हो जाय ॥ २० ॥

मू. मार्कण्डेय उवाच ॥ तेनैव व्याहृते शोपे-
वत्पक्षपातह । पश्यतः सर्वलोकस्य वि-

सयाविष्टचेतसः ॥ २१ ॥ २१ ॥ २१ ॥

टी. इस तरह चतुर्गुण चतुषि के शाप देने से रेवती नक्षत्र स्वर्ग से नीचे गिर पड़ी यह देखकर सब लोग आश्चर्य करने लगे ॥ २१ ॥

मू. रेवत्युदयपतितकुमुदादौ तमन्ततः । भास-
यामास सहस्रवनकन्दरनिर्मरं ॥ २२ ॥

टी. और वह रेवती नक्षत्र कुमुदादि नाम पर्वत पर गिरी तो उस के गिरने से वह सम्पूर्ण पर्वत और उसकी सब कन्दरा प्रकाश मान हो गई ॥ २२ ॥

मू. कुमुदादिश्च तस्मात्तात्स्व्यात्तोरैव तकोऽभवत् ।
अतीवरमः सर्वत्वां प्रथिव्यां प्रथिवीधरः ॥ २३ ॥

टी. और उस पर्वत का नाम उसी दिन से रेवत मगधहर हुआ और सम्पूर्ण पृथ्वी में वह पर्वत अत्यन्त रमणीय हुआ ॥ २३ ॥

मू. तस्मै सत्तुयाकानिर्जनापङ्कजनीसरः । ततो
यज्ञे तदा कन्यारूपेणातीव शोभना ॥ २४ ॥

टी. और उस नक्षत्र की ज्योति से वहाँ पर एक सरोवर पंकजि-
नी नामक हुआ और उस सरोवर से एक कन्या अत्यन्त
रूपवती उत्पन्न हुई ॥ २४ ॥

मू. रेवतीकान्तिसम्भूतां तां दृष्ट्वा प्रमुचो मुनिः । त-
स्यानाम चकारित्यं रेवती नाम भागुरे ॥ २५ ॥

टी. जोकि वह कन्या रेवती नक्षत्र की ज्योति से उत्पन्न हुई इस वस्ति
प्रमुचि मुनि ने उस कन्या का नाम रेवती रक्खा ॥ २५ ॥

मू. शोषयामास चैव तां स्वाश्रमाभ्याससम्भवां । प्रमु-
चः समहा भगवत्स्मिन्नेव महीतले ॥ २६ ॥

टी. और अपने आश्रम पर लाकर उसको पालने लगे क्योंकि वह
प्रमुचि मुनि बड़े ब्रह्मज्ञा और दयावान थे ॥ २६ ॥

मू. तांतुयौवननीदंष्ट्राकन्यकांस्वशालिनीं। समु-
निश्चिन्तया मासकोऽस्यामर्त्ता भवेदिति ॥ २७ ॥

टी. जब वह कन्या जवान हुई तब उसको देखकर मुनि को शोच-
ता कि इस कन्या का स्वामी कौन होगा ॥ २७ ॥

मू. एवंचिन्तयतस्तस्ययौकालीमहान्मुने। नचा-
ससादसदृशं वान्तस्यामहामुनिः ॥ २८ ॥

टी. इस बात को शोचते हुवे बहुत दिन बीत गये पर उस कन्या के
योग्य किसी मनुष्य को न पाया ॥ २८ ॥

मू. ततस्तस्यावरं प्रष्टुमग्निं स प्रमुचो मुनिः। विवे-
श्वन्निशालाम्प्रैष्ठारं प्राह हव्यभुक् ॥ २९ ॥

टी. तब उस मुनि ने अग्निशाला में जाकर अग्नि से पूछा कि
इसके पति होने के योग्य कौन पुरुष है तब अग्नि ने कहा कि ॥ २९ ॥

मू. महाबलो महावीर्यः प्रियवाग्धर्मवत्सलः। दु-
र्गमो नाम भविता मर्त्ता ह्यस्यामही पतिः ॥ ३० ॥

टी. इस कन्या के स्वामी दुर्गम नाम राजा होंगे जो बड़े बली और परा-
क्रमी और प्रियवाक् और धर्मवत्सल हैं ॥ ३० ॥

मू. मार्कण्डेय उवाच ॥ अनन्तरञ्च मृगया प्र-
सङ्गे नागतो मुने। तस्याश्रमपदं धीमान्
दुर्गमः स नराधिपः ॥ ३१ ॥ ३१ ॥ ३१ ॥

टी. मार्कण्डेयजी कहते हैं कि हे कौटुकि बाद इसके उसी वत्ता
दुर्गम महाराज शिकार खेलकर प्रमुचि मुनि के आश्रम के
पास आये ॥ ३१ ॥

मू. प्रियव्रतान्वयभवो महाबलपराक्रमः। पुत्रो-
विक्रमशीलस्य कालिन्दीजठरोद्भवः ॥ ३२ ॥

टी. और यह राजा दुर्गम प्रियव्रत राजा के वंश में महाराज विक्रम

माल का पुत्र कालिन्दी के पेट से पैदा हुआ था ॥ ३२ ॥

मू. सप्रविश्याश्च मपदंतांतन्वीजंगतीपतिः । अ
पश्यमानस्तमृषिंप्रियेत्यामन्त्रपृष्टवान् ॥ ३३ ॥

टी. तात्पर्य यह है कि जब राजा दुर्गम प्रसुचि मुनि के आश्रम पर गया और वहाँ मुनि को न देखा तब उस सुन्दरी को देख कर हे प्रिये कहकर पूछने लगा ॥ ३३ ॥

मू. राजोवाच ॥ कगतो भगवानस्मादाश्च
मान्मुनिपुङ्गवः । तस्म्येते तु मिहेच्छामि
तत्त्वं प्रवृहिशोभने ॥ ३४ ॥ ३४ ॥ ३४ ॥

टी. कि इस आश्रम से मुनिराज कहाँ गये मैं उनको प्रणाम करने के वास्ते आया हूँ ॥ ३४ ॥

मू. मार्कण्डेय उवाच ॥ अग्निशालांगतो वि
प्रतच्छत्वा तस्य भाषितं । प्रियेत्यामन्त्रा
ञ्चैव निश्चैकामत्वरान्वितः ॥ ३५ ॥ ३५ ॥

टी. मार्कण्डेयजी कहते हैं कि वह मुनि अग्निशाला से राजा के हे प्रिये कहने की आवाज सुनकर निकले ॥ ३५ ॥

मू. सददर्श महात्मानं राजानं दुर्गमं मुनिः । नरे
न्दुचिन्ह सहितं प्रश्रया वनतं पुरः ॥ ३६ ॥

टी. तब राजा ने मुनि को देखकर और बहुत नम्र हो कर प्रणाम किया और उस मुनि महात्मा ने राजा को राजसी लक्षणों से पहचान कर ॥ ३६ ॥

मू. तस्मिन् दृष्टे ततः शिष्यमुवाच सतु गौतमं । गौ
तमानीयतां शीघ्रमर्घ्याः स्य जगतीपतेः ॥ ३७ ॥

टी. अपने गौतम नाम शिष्य से कहा कि इनके वास्ते शीघ्र अर्घ्य लाओ ॥ ३७ ॥

मू. एकस्तावदयंभूपश्चिरकालादुपागतः। जा-
माताचविशेषेणयोग्योऽर्घ्यस्यमतोममाश्च।

टी. एक तो ये महाराज बहुत दिन पर आये हैं दूसरे मेरे दामाद हैं
इस लिये मुझको अर्घ्य देना उचित है ॥३८॥

मू. मार्कण्डेय उवाच ॥ ततःसचिन्तयामा-
सराजायामातृकारणं। विवेदचनतन्मौनी
जगृहेऽर्घ्यंचतनृपः॥ ३८ ॥ ३८ ॥ ३८ ॥

टी. दामाद का शब्द सुनकर राजा आश्चर्य में आया कि मुनि ने मुझ
को अपना दामाद किस तरह कहा इसका मतलब कुछ समझ में
न आया चुप हो रहा और अर्घ्य को ग्रहण किया ॥३८॥

मू. तमासनगतंविप्रोगृहीतार्घ्यंमहामुनिः। स्वा-
गतंप्राहराजेन्दुमपितेकुशलं गृहे ॥ ४० ॥

टी. जब राजा आसन पर बैठे तब मुनि ने कहा कि हे राजन् आप
जो मेरे आश्रम पर आये तो बहुत अच्छा किया अब अपने घर
की कुशलानन्द कहिये ॥४०॥

मू. कोशेवलेऽयमित्रेषुभृत्यामात्येनरेश्वर। त-
यात्मनिमहाबाहोयत्रसर्वप्रतिष्ठितं॥ ४१ ॥

टी. और हे राजन् अपने खजाना और सोना और मित्र और मन्त्री
और नौकर चाकर लोगों की कुशल कहिये ॥४१॥

मू. पत्नीचनेकुशलिनीयतएवानुतिष्ठति। पृच्छा-
म्यस्यास्ततोवाहंकुशलिन्योऽपरास्तव॥ ४२ ॥

टी. और अपनी पतिव्रता स्त्री की भी कुशल कहिये जो आप ही
का अनुष्ठान करती है और यों तो आपके अनेक स्त्री हैं उनको
मैं नहीं पूछता हूँ ॥४२॥

मू. राजोवाच ॥ त्वत्प्रसादादकुशलंनकचि-

नमसुव्रत । जातकौतूहलश्चासि मम
भार्या तु कामुने ॥ ४३ ॥ ४३ ॥ ४३ ॥

टी. मुनि की यह बात सुनकर राजा वुर्गमबोले कि हे सुव्रत आप के प्रसाद से मुझको अब तरह से सम्पूर्ण कुशल है परन्तु मुझको यह बड़ा आश्चर्य है कि यहाँ मेरी भार्या कौन है ॥ ४३ ॥

मू. ऋषिरुवाच ॥ रेवतीसु महाभागावैली-
कस्यापि सुन्दरी । तव भार्या वरारोहातां
त्वं राजन् न वेत्सि किं ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥

टी. ऋषि ने कहा कि हे राजन् रेवती महा भागवती जो तीनों लोक में सुन्दरी है वही आप की भार्या यहाँ है क्या आप नहीं जानते हैं ॥ ४४ ॥

मू. राजीवाच ॥ सुभद्रां शान्त तनयां कावेरी
तनयां विभो । सुराष्ट्रजां सुजाताञ्च कद-
म्बाञ्च वस्तुत्यजां ॥ ४५ ॥ ४५ ॥ ४५ ॥

टी. राजा ने कहा कि हे भगवन् सुभद्रा और शान्त तनया और कावेरी तनया सुराष्ट्रजा सुजाता कदम्बा वस्तुत्यजा ॥ ४५ ॥

मू. विपाठां नन्दिनीञ्चैव वैष्णभार्या गृहे द्विज ।
तिष्ठन्ति मे न भगवन् रेवती वैष्णिका न्वियं ॥ ४६ ॥

टी. और विपाठा और नन्दिनी यही सब मेरे घर में मेरी भार्या हैं रेवती को मैं नहीं जानता कि कौन है ॥ ४६ ॥

मू. ऋषिरुवाच ॥ प्रियेति साम्प्रतं ये यं त्वयो
त्ता वरवर्णिनी । किं विस्मृतन्ने भूपाल श्ला-
घ्येयं गृहिणी तव ॥ ४७ ॥ ४७ ॥ ४७ ॥ ४७ ॥

टी. ऋषि बोले कि हे राजन् इसी वक्त तो आपने सुन्दरी रेवती को अपनी प्रिया कहकर पुकारा है और उससे मेरा हाल भी पूछा है

यह बात क्या आप भूल गये वही रेवती आपके योग्य स्त्री है ॥ ४३ ॥

मू. राजा वाच ॥ सत्यमुक्तमया किन्तु भावोदु-
ष्टो न मे मुने । नात्र कोपं भवान्कर्तुमर्ह-
त्यस्मा सुयाचितः ॥ ४८ ॥ ४८ ॥ ४८ ॥ ४८ ॥

टी. राजा ने कहा कि हे मुनि सत्य है मैं ने उसको प्रिया कहे
आप का हाल पूछा है परन्तु मैं ने किसी और भाव से प्रिया
नहीं कहा मैं आप से बहुत विनय करके प्रार्थना करता हूँ कि
मुझ पर कोप न कीजिये ॥ ४८ ॥

मू. ऋषिरुवाच ॥ तत्त्वं ब्रवीषि भूपाल न भाव-
स्तव दूषितः । व्याजहार भवानेतद्वह्निना
नृपचोदितः ॥ ४९ ॥ ४९ ॥ ४९ ॥ ४९ ॥

टी. ऋषि ने कहा कि हे भूपाल आप सच कहते हैं कि आपने दुष्ट भाव
से प्रिया नहीं कहा किन्तु अग्नि की प्रेरणा से आपने प्रिया कहा है ॥ ४९ ॥

मू. मया पृष्टो हुतवहः कोऽस्या भर्तृति पार्थिव । भा-
विता तेन चाप्युक्तो भवानेवाद्य वैवरः ॥ ५० ॥

टी. इस बात को मैं ने पहिले ही अग्नि से पूछ लिया था कि इस सुन्दरी
का स्वामी कौन होगा तब अग्नि ने मुझ से कहा कि इसके स्वामी महा-
राज दुर्गम होंगे इसलिये आप ही इस कन्या के स्वामी हैं ॥ ५० ॥

मू. तद्गृह्यतां मया दत्ता तुभ्यं कन्या नराधिप । प्रि-
येत्यामन्त्रिता चैयं विचारं कुरुते कथं ॥ ५१ ॥

टी. हे नराधिप यह कन्या मैं आपको देता हूँ अहण कीजिये इसको
आप प्रिया भी कह चुके हैं इसमें अब कुछ विचार न कीजिये ॥ ५१ ॥

मू. मार्कण्डेय उवाच ॥ ततोऽसावभूवन्मौनी
तेनोक्तः पृथिवीपतिः । ऋषिस्तथा दत्तः
कर्तुं तस्या वैवाहिकं विधिं ॥ ५२ ॥ ५२ ॥ ५२ ॥

टी. यह बात सुनकर राजा चुप होगये और प्रमुचि मुनि उसके विवाह की विधि में प्रवृत्त हुवे ॥ ५२ ॥

मू. तमुद्यतं सापितरं विवाहाय महामुने । उवा-
च कन्यायत्किञ्चित्प्रश्रयावनतानना ॥ ५३ ॥

टी. हे महा मुनि जब प्रमुचि मुनि ने उस कन्या के विवाह का यत्न करना आरम्भ किया तब वह कन्या मुनि की बहुत विनय के साथ प्रणाम करके कहने लगी ॥ ५३ ॥

मू. यदि मे प्रीति मांस्ता तप्रसादं कर्तुमर्हसि । रेव-
त्यक्षे विवाहं मे तत्करोतु प्रसादितः ॥ ५४ ॥

टी. किहे तान जो आपकी दया मरुपर है तो प्रसन्न होकर रेवती नक्षत्र में मेरा विवाह कर दीजिये ॥ ५४ ॥

मू. ऋषिरुवाच ॥ रेवत्यक्षं न वै भद्रे चन्द्रयोगि
व्यवस्थितं । अन्यानि सन्ति ऋक्षानि सु-
भुवैवाहिकानि ते ॥ ५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥

टी. ऋषि ने कहा किहे कल्याणी रेवती नक्षत्र में चन्द्रयोग बहुत अच्छा होता है सो अभी नहीं है क्योंकि ऋतवाक मुनि के शाप से रेवती कुमुदाद्रि पर्वत पर गिर पड़ी ॥ ५५ ॥

मू. कन्योवाच ॥ तान तेन बिना कालो विफ-
लः प्रतिभाति मे । विवाहो विफले काले
महिधायाः कथं भवेत् ॥ ५६ ॥ ५६ ॥

टी. फिर कन्या ने कहा कि हे तान बिना रेवती नक्षत्र के काल मरुको विफल मालूम होता है और विफल काल में मरु ऐसी कन्या का विवाह किस तरह होगा ॥ ५६ ॥

मू. ऋषिरुवाच ॥ ऋतवागिति विख्यात-
स्तपस्वी रेवतीं प्रति । चकार कोपं कुहेन

तेनक्षं विनिपातितं ॥ ५७ ॥ ५७ ॥ ५७ ॥

ऋषि ने कहा कि ऋतवाक नाम तपस्वी ने रेवती पर क्रोध कर
श्राप देकर स्वर्ग से नीचे गिरा दिया है ॥ ५७ ॥

मया चास्मै प्रतिज्ञाता भार्य्येति मदिरेक्षणा । न
चेच्छसि विवाहं त्वंसंकटं नस्तमागतं ॥ ५८ ॥

श्री. और मैं महाराज दुर्गेम से प्रतिज्ञा कर चुका हूँ कि यह सुन्दरी
आप की भार्य्या होगी जब जो तू इस समय विवाह होने में विघ्न क-
रेगी तो यह सुनपर बड़ा संकट होगा ॥ ५८ ॥

मू. कन्योवाच ॥ ऋतवाक समुनिस्तात कि
मेव तप्तवांस्तपः । न त्वयाममतातेन ब्रह्म
वन्धोः सुतास्मि किं ॥ ५८ ॥ ५८ ॥ ५८ ॥

श्री. वह सुनकर कन्या ने कहा कि हे तात क्या ऋतवाक ही मु-
नि ने तपस्या की है और आपने वैसी तपस्या नहीं की है और मैं
क्या ब्राह्मण की लड़की नहीं हूँ ॥ ५८ ॥

मू. ऋषिरुवाच ॥ ब्रह्मवन्धोः सुतान त्वं बाले
नैव तपस्विनः । सुता त्वं मम यो देवान्कर्तुं
मन्यान् समुत्सहे ॥ ६० ॥ ६० ॥ ६० ॥ ६० ॥

श्री. ऋषि ने कहा कि हे बाले तू ब्राह्मण की कन्या नहीं है किन्तु
सुत तपस्वी की कन्या है और मैं देवताओं को भी अपने तप के
प्रभाव से तुच्छ कर सकता हूँ ॥ ६० ॥

मू. कन्योवाच ॥ तपस्वी यदि मे तातस्तत्किं
मृक्षमिदं दिवि । समारोप्य विवाहो मे तद्
क्षेत्रियतेन तु ॥ ६१ ॥ ६१ ॥ ६१ ॥ ६१ ॥

श्री. कन्या बोली कि हे तात जबकि आप तपस्वी हैं तो फिर रेवती नक्षत्र को स्वर्ग
में स्थापित करके उस काल में मेरा विवाह क्यों नहीं कर देते ॥ ६१ ॥

मू. ऋषिरुवाच ॥ एवंभवतुभद्रन्तेभद्रप्री-
तिमतीभव । आरोपयामीन्दुमार्गे-
रेवत्यृक्षं कृतेनव ॥ ६२ ॥ ६२ ॥ ६२ ॥

टी. ऋषि ने कहा कि हे भद्र तेरा कल्याण हो धीर्य धर ऐसा ही होगा
तेरे वास्ते रेवती नक्षत्र को मैं चन्द्रमा की राह पर स्थापित करता हूँ ॥ ६२ ॥

मू. मार्काण्डेय उवाच ॥ ततस्तपःप्रभावेनरे-
वत्यृक्षं महामुनिः । यथापूर्वतथाचक्रे
सोमयोगिदिजोत्तम ॥ ६३ ॥ ६३ ॥ ६३ ॥

टी. मार्काण्डेयजी कहते हैं कि हे दिजोत्तम प्रमुचि मुनि ने उस कन्या
को धीर्य देकर अपने तप के प्रभाव से जिस तरह पहिले रेवतीको
चन्द्रमा से योग था वैसा ही स्थापित कर दिया ॥ ६३ ॥

मू. विवाहञ्चैवदुहितुर्विधिवतमन्त्रयोगिनं । नि-
ष्पाद्यप्रीतिमानभूयोजामातारमथाव्रवीत् ॥ ६४ ॥

टी. और उस कन्या का विवाह भी विधि पूर्वक मन्त्र संयुक्त कर
के प्रीति पूर्वक फिर दामाद से कहने लगे ॥ ६४ ॥

टी. औवाहिकन्तेभूपालकथ्यतांकिंदाम्यहं । दु-
र्लभ्यमपिदास्यामिममाप्रतिहतन्तपः ॥ ६५ ॥

टी. कि हे राजन् विवाह का दक्षिणा कहौ मैं तुमको क्या दूँ जो बात
दुर्लभ भी हो उसको भी मैं कर सका हूँ क्योंकि मेरी तपस्या में कभी
भङ्ग नहीं हुआ अपने तप के प्रभाव से सब कुछ कर सका हूँ ॥ ६५ ॥

मू. राजोवाच ॥ मनोःस्वायम्भुवस्याहमुत्पन्न-
स्तन्तौमुने । मन्वन्तराधिपंपुत्रं त्वत्प्रसा-
दात्तृणोम्यहं ॥ ६६ ॥ ६६ ॥ ६६ ॥ ६६ ॥

टी. राजा ने कहा कि हे मुनि स्वायम्भुव मनु के वंश में मेरा
जन्म है मैं भी मनु होना चाहता हूँ आप दया करके वह

पदवी मुनको दिला दीजिये ॥ ६६ ॥

मू. ऋषिरुवाच ॥ मविष्यत्येषते कामो मनु
स्त्वत्तनयो महीं । सकलां भोक्ष्यते भूपथ-
र्मविचमविष्यति ॥ ६७ ॥ ६७ ॥ ६७ ॥

टी. ऋषि ने कहा कि हे राजन् तुम्हारी यह कामना दूसतरह सिद्ध होगी
कि तुम्हारा पुत्र मनु होकर धर्म पूर्वक सम्पूर्ण पृथ्वी को भोग करेगा ॥ ६७ ॥

मू. मार्कण्डेय उवाच ॥ तामादायततो भूपः
समेवनगरं ययौ । तस्मादजायत सुतो रे-
वत्यां रैवतो मनुः ॥ ६८ ॥ ६८ ॥ ६८ ॥ ६८ ॥

टी. मार्कण्डेयजी कहते हैं कि हे क्रीष्ण कि बाद इसके राजा उस मुनि से
यह वरदान पाकर रेवती सहित अपने नगर में आया और उसी रेवती
के गर्भ से महाराजा दुर्गम के पुत्र रैवत नाम मनु हुवे ॥ ६८ ॥

मू. समेतः सकलैर्धर्मैर्मानवैरपराजितः । विज्ञा-
ताखिलशास्त्रार्थो वेदविद्यार्थशास्त्रवित् ॥ ६९ ॥

टी. वह रैवत मनु सब धर्मों और शास्त्रों के अर्थ और वेद विद्या के अर्थ के
जानने वाले हुवे और उनको समझ में कोई जीत न सका ॥ ६९ ॥

मू. तस्य मन्वन्तरे देवान् मुनिदेवेन्द्रपार्थिवान् । क-
थ्यमानान्मया ब्रह्मन्निबोधसुतमाहितः ॥ ७० ॥

टी. और हे ब्रह्मन् उस रैवत मनु के मन्वन्तर में जो जो देवता और मुनि
और इन्द्र और राजा हुवे उन सब को कहता हूँ मन लगा कर सुनो ॥ ७० ॥

मू. सुमेधस्तत्र देवास्तथा भूपतयो द्विज । वैकु-
ण्ठाश्चामिताभाश्च चतुर्दश चतुर्दश ॥ ७१ ॥

टी. अर्थात् उस समय में देवता लोग सुमेधा नाम से विख्यात हुवे और
वैकुण्ठ और अमिताभ नाम से चौदह चौदह राजा हुवे ॥ ७१ ॥

मू. तेषां देवगणानान्तु चतुर्णामपि चेश्वरः ।

नाम्नाविभुर्भूदिन्द्रः शतयज्ञोपलक्षणाः ॥ ७२ ॥

टी. और उन लोगों के मालिक विभु नाम जिन्होंने सौ यज्ञ किया था इन्द्र हुवे ॥ ७२ ॥

मू. हिरण्यलोमावेदश्रीरुर्द्धबाहुस्तथापरः। वेद
बाहुः सुधामाचपर्जन्यश्च महामुनिः ॥ ७३ ॥

टी. और हिरण्यलोमा और वेदश्री और ऊर्द्धबाहु और वेदबाहु और सुधामा और पर्जन्य ॥ ७३ ॥

मू. वशिष्ठश्च महाभागो वेदवेदाङ्गः पारगः। एते
सप्तर्षयश्चासन्नरैव तस्यान्तरे मनोः ॥ ७४ ॥

टी. और वशिष्ठ महाभाग वेद वेदाङ्ग के जानने वाले यही लोग सप्तर्षि हुवे ॥ ७४ ॥

मू. बलबन्धुर्महावीर्यः सुयष्ट्यस्तथापरः। सत्य
काद्यस्तथैवासन्नरैव तस्य मनोः सुताः ॥ ७५ ॥

टी. और बलबन्धु नाम महावीर्य और सुयष्ट्य और सत्यक इत्यादि रैवत मनु के पुत्र हुवे ॥ ७५ ॥

मू. रैवतान्तास्तु मनवः कथिता ये मया तव। स्वा-
यम्भुवाश्च याह्ये ते स्वारोचिषमृते मनुं ॥ ७६ ॥

टी. हे कौष्टुकि यह रैवत पर्यन्त जितने मनु के हाल हम तुम से कह आये हैं वह सब स्वायम्भुव मनु के वंश से हैं परन्तु स्वारोचिष मनु इस वंश से अलग हैं ॥ ७६ ॥

इति श्री मार्कण्डेय पुराणे
रैवत मन्वन्तरे नाम ७५

اَوھیا پے پچھتر

۱۔ مارکنڈے جی کہتے ہیں کہ ہے کروشنکی پانچویں من ریت نام ہوئے آنکی پیدائش کا حال مفصل کتابوں میں ہے۔ ۲۔ کہ رت باں نام ایک رکھ تھے جنکے کوئی لڑکا نہ تھا بہت دنوں کے بعد ریوئی پچھتر کے اخیر میں اُنکے گھر ایک لڑکا پیدا ہوا۔ ۳۔ بت اُس رکھ نے بدھ کے موافق حیات کریم وغیرہ کیا اور سیانا ہونے پر اُس لڑکے کا جینیو وغیرہ بھی کیا لیکن وہ لڑکا نہایت بد چلن ہوا۔ ۴۔ اور جلد سے وہ لڑکا پیدا ہوا اسدن سے رت باں رکھ نہایت تردد و تکلیف میں رہتے۔ ۵۔ اور اُس لڑکے کی ماں بھی کوڑھ وغیرہ کی بیماریوں میں مبتلا رہنے لگی تب وہ رکھ بہت دکھی ہو کر گھر اگر گھر سے نکل گئے ۶۔ اور اپنے جی میں کہتے تھے کہ کتنے دنوں کے بعد ایک لڑکا بھی ہوا تو ہماری بد نصیبی سے وہ لڑکا بد چلن ہو گیا اور دوسرے من کے لڑکے کی استری مسماہ سمبھوتی کو لے لیا۔ ۷۔ آدمی کو ایسی نالائقی اولاد سے بنیہ اولاد کے رہنا اچھا ہی۔ ۸۔ کیونکہ نالائقی لڑکا ماں باپ کے دل کو ہمیشہ رنج میں رکھتا ہی اور جو پتر لوگ سوگ میں ہوتے ہیں انکو وہاں سے کھینچ کر نکال کر ڈال دیتا ہی۔ ۹۔ ایسے نالائقی لڑکے پر لعنت ہی جس سے اچھے لوگوں کا بھلا ہوا اور پتر لوگوں کو سکھ سکھ یعنی جس لڑکے سے ماں باپ کو دکھ ہو اُس لڑکے کا پیدا ہونا بے فائدہ ہی۔ ۱۰۔ جس لڑکے کی سب لوگ تعریف کریں اور لوگوں کا اُس سے بھلا ہوا اور اچھی خصلت رکھو اور اچھے کاموں میں مصروف رہی وہی لڑکا دھن ہی۔ ۱۱۔ نالائقی اور جاہل لڑکا پر لوگ کے واسطے کچھ کام نہیں کرتا اور اُسکے جنم سے ماں باپ کو نرک ہوتا ہی۔ ۱۲۔ یعنی نجات نہیں ہوتی۔ ۱۳۔ بلکہ نالائقی لڑکا دوستوں کو رنج اور دشمنوں کو آرام پہنچاتا ہی اور ماں باپ کو عین جوانی میں بدھا بنا دیتا ہی۔ ۱۴۔ مارکنڈے جی کہتے ہیں کہ ہے کروشنکی اُس لڑکے کے ایسے ڈھنگ دیکھو اُس من کا سب حوصلہ ٹوٹ گیا آخر کار گرگ من کے پاس جا کر کہنے لگے کہ۔ ۱۵۔ اے گرگ جی میں نے بہت اچھی طرح برت کر کے پہلے جید کو پڑھا اور بید ختم ہونے پر بدھ کے موافق اپنا بواہ کیا۔ ۱۶۔ اور جنم سے لیکر آج تک میں نے استری کے ساتھ بید اور شاستری کی کرایا اور بکھٹ کر یا وغیرہ سب کیا اور بغیر پورا کیے ہوئے کسی کرایہ کو نہیں

اُدھوری نہ چھوڑی ۱۱ اور پٹام نرک کے ڈر سے پردہ کو موافق اچھی ساعت میں لڑکے کی
 خواہش سے استری کے ساتھ بھوک کیا کام میں آسکت ہو کر کبھی استری کے ساتھ بھوک
 نہیں کیا۔ ۱۲ پھر ایسا بد چلن لڑکا میرے گھر کیوں پیدا ہوا جو بھوک اور دوست و آشنا
 و بھائی بندہ کو دکھ دیتا ہو اسکا سبب بفضل بیان کیجیے۔ ۱۳ اگر گرجی نے کہا کہ اے میں
 تمہارے لڑکے کی پیدائش ریوتی نچھتر کے اخیر وقت میں ہوئی تھی اور وہ وقت بہت خوش
 تھا اس واسطے یہ لڑکا کبھی ہمیشہ دکھ دیا کرتا ہے۔ ۱۴ اس میں تمہارا یا اس لڑکے کا یا اس کی
 مان یا تمہارے خاندان کا کچھ قصور نہیں ہے اس کے بد چلن ہونے کا سبب وہی ریوتی نچھتر ہی
 اور یہ سب قصور اسی ریوتی نچھتر کا ہے۔ ۱۵ یہ سن کر رت پاک رکھ بولے کہ اگر ایک لڑکا
 بھی میرے ہوا تو وہ ریوتی نچھتر کے سبب بد چلن ہو گیا اس واسطے میں سوچتا ہوں کہ وہ ریوتی
 نچھتر سوگ سے نیچے گر جائے۔ ۱۶ چنانچہ رکھ کے سر اپ دینے سے ریوتی نچھتر سوگ
 سے نیچے زمین پر گر پڑا یہ دیکھ کر سب لوگ تعجب میں آئے۔ ۱۷ اور وہ ریوتی نچھتر کھار
 نام بہار پر گرا اس کے گرنے سے تمام بہار اور اس کی کھوہ اور بھرنے سب روشن ہو گئے۔
 ۱۸ اس دن سے اس بہار کا نام ریوتک مشہور ہوا اور دنیا کے سب بہاروں سے وہ
 بہار اور وہاں کی جگہ بہت خوشنما اور پر فضا ہے۔ ۱۹ اور اس نچھتر کی جوت سے وہاں پر
 ایک تالاب نمودار ہوا جس کا نام بیکجی ہوا اور اس بیکجی تالاب سے ایک لڑکی بہت خوبصورت
 پیدا ہوئی۔ ۲۰ چونکہ اس لڑکی کی پیدائش ریوتی نچھتر کی جوت سے تھی اس واسطے پرچ
 میں نے اس کو دیکھ کر اس کا بھی نام ریوتی رکھا۔ ۲۱ اور اس کو اپنے استھان پر لاکر پالنے
 لگا کیونکہ پرچ میں مہاتا اور بڑے ویاواں تھے۔ ۲۲ جب وہ لڑکی جوان ہوئی تو پرچ
 میں سوچنے لگے کہ اس کا پتہ یعنی شوہر کون ہوگا۔ ۲۳ اس طرح سوچتے سوچتے بہت
 دن گزر گئے مگر اس کے لائق کوئی آدمی نہ نظر آیا۔ ۲۴ تب اس میں نے اگن شالا (آتش)
 میں جا کر اگن سے پوچھا کہ اس کتیا کا بر کون ہوگا اگن نے جواب دیا۔ ۲۵ کہ اس کتیا
 کے پتہ مہاراج درگم مہون کے جوڑے بلوان اور پر اکرمی اور دھرماتما اور شیرین زبان
 ہیں۔ ۲۶ مارکندے جی کہتے ہیں کہ ہے کر و شکی اسی درمیان میں مہاراج درگم شکار کیلئے
 ہوئے پرچ میں کے آشرم پر آئے۔ ۲۷ یہ مہاراج درگم مہاراج پر یا رت کے خاندان سے
 مہاراج بکرتم شیل کے بیٹے کا لندی کے پیٹ سے پیدا تھے۔ ۲۸ آخر مہاراج درگم پرچ

مُن کے آخرم پر گئے اور وہاں اُس مَن کو تو نہ پایا مگر اُس سُندری کو دیکھ کر کہنے لگے کہ -

۳۴ اے پیاری مَن مبارج کہاں ہیں بتلاؤ میں اُنکو پر نام کرنے کے واسطے آیا ہوں -

۳۵ مارکھانڈے جی کہتے ہیں کہ ہے کہوشنگی راجا نے "اے پیاری" کہو جو اُس لڑکی سے

پوچھا تھا وہ آواز سُکر پُرج مَن اکن شالا سے باہر نکل آئے - ۳۶ تب راجا نے مَن کو

دیکھ کر بہت جھک کر پر نام کیا ت مَن مہا تمانے راجا کو راجسی علامت سے پہچان کر -

۳۷ گوتم نام اپنے سیکھ سے کہا کہ ان کے واسطے جلد ارگھ لاؤ - ۳۸ ایک ٹوہ راجا

اور بہت دنوں پر آئے ہیں دوسرے میرے داماد ہیں اسلئے مجھکو ارگھ دینا لازم ہے -

۳۹ لفظ داماد کی سُکر راجا بڑے تعجب میں آیا کہ مَن نے مجھکو اپنا داماد کی طرح کہا یہ بات

کچھ میرے سمجھ میں نہ آئی پر اس بات کو اپنے دل ہی میں کھکر خاموش رہا اور ارگھ کو قبول کر لیا -

۴۰ جب راجا آسن پر بیٹھا تب مَن نے کہا کہ اے راجا آپ نے بہت اچھا کیا جو میرے آخرم

پر آئے اب آپ اپنے گھر کی خیر و عافیت کیے - ۴۱ اور اپنی فوج اور خزانہ اور وزیر اور دوا

اور دوست آشنا کو کر جا کر سب کی خیریت کیے - ۴۲ اور اپنی بہت بڑا استری کی بھی خیریت

کیے جو کہ اپنی سیوا کیا کرتی ہے اور یوں تو آپ کے بہت سی استریاں ہیں ان سبکو میں نہیں پوچھتا

ہوں - ۴۳ یہ بات مَن کی سُکر مہاراجہ دُرگم بولے کہ ہے مبارج آپ کے پر ساد - ۴۴

مجھکو سب طرح کا اَمَن چین ہے مگر اسوقت مجھکو ایک بات کا بُرا تعجب ہے کہ یہاں پر میری

استری کون ہے - ۴۵ مَن نے کہا کہ ہے راجا ریوتی مہا بھاگوتی جو تینوں لوگ میں سُندر

ہو وہ ہی آپ کی استری ہو گیا آپ اُسکو نہیں جانتے - ۴۶ راجا نے کہا کہ ہے مبارج مسئلہ

سُجھدہ را اور شناخت تینا اور سُراشتر جا اور کاویری تینا اور سُجھانا اور کدھیا اور پُرو تھجا -

۴۷ اور جہاٹھا اور منڈنی یہی سب میری استریاں ہیں سو میرے گھر میں موجود ہیں لیکن

میں ریوتی کو نہیں جانتا کہ کون ہیں - ۴۸ مَن نے کہا کہ اے راجا ابھی تو تھے سُندری

ریوتی کو اے پیاری کہہ پکارا سی اور اسی سے میرا حال بھی پوچھا ہو گیا آپ ابھی قبول گئے

وہی ریوتی آپ کی استری ہے - ۴۹ راجا نے کہا کہ ہے مَن سچ ہو میں نے اے پیاری کہہ

اُسکو پکارا سی مگر کسی اور نیت سے اُسکو پیاری نہیں کہا ہو اسلئے بھت تمام ایسے عرض

کر تا ہوں کہ آپ اس بات سے خفا ہو کر مجھکو سزا پ نہ دیجیے گا - ۵۰ مَن نے کہا کہ اے راجا

آپ سچ کہتے ہیں آپ نے کسی اور نیت سے اُسکو پیاری نہیں کہا بلکہ اکن کے کہلانے سے کہا ہے

टी. कि पहिले जन्म में चाक्षुष परमेशी से उत्पन्न थे इस वास्ते दूसरे जन्म में चाक्षुष कहलाये ॥ २ ॥

मू. जातमातानिजोत्सङ्गे स्थितमुल्लाप्यतंपुनः ।
परिष्वजतिहार्देनपुनरुल्लापयत्यथ ॥ ३ ॥

टी. जब वह पैदा हुवे तब उनकी माता उनको गोद में लिये हुवे गले से लगाकर प्यार करती थी ॥ ३ ॥

मू. जातिस्मरः सजातो वै मातुरुत्सङ्गमास्थितः । ज-
हासतंतदा माता संकुट्टा वाक्यमब्रवीत् ॥ ४ ॥

टी. एकदिन चाक्षुष अपनी माता की गोद में थे कि इतने में अपने पूर्वजन्म का वृत्तान्त स्मरण करके हँसने लगे यह देखकर माता उनकी कोधित होकर कहने लगी ॥ ४ ॥

मू. भीतास्मि किमिदं वत्सहासो यद्वदने तव । अ-
काल बोधः संजातः कश्चित्पश्यसि शोभनं ॥ ५ ॥

टी. किहे बालक यह तेरा हँसना कैसा है कहु मैं तेरे इस तरह हँसने से उर-
ती हूँ क्योंकि अभी तेरी उमर इस तरह हँसने की नहीं है ॥ ५ ॥

मू. पुत्र उवाच ॥ मामत्तुमिच्छति पुरो मार्जा-
री किं न पश्यसि । अन्तर्द्वानगता चेयं द्वि-
तीया जातहारिणी ॥ ६ ॥ ६ ॥ ६ ॥ ६ ॥

टी. यह सुनकर बालक ने कहा कि एक तो मेरे सामने मार्जारी भ-
यावनी सूरत की खड़ी है और मुझको खाने की इच्छा रखती है
क्या तू नहीं देखती है और दूसरे जातहारिणी जिसको तू नहीं
देखती है वह भी मुझको मारना चाहती है ॥ ६ ॥

मू. पुत्र प्रीत्याचभवती सहार्द्रा मामवेक्षती । उल्ला-
प्योल्लाप्य बहुशः परिष्वजति मां यतः ॥ ७ ॥

टी. और तू अपना पुत्र समझकर प्रीति करके गले लगाकर मुझे प्यार करती है

۳۳۲ آنند بولا کہ دنیا کے یہی کارخانے ہیں اس میں تعجب کی کون بات ہے اسے برا نہیں
 کسکا کون بیٹا اور کسکا کون بھائی ہے کوئی کیسی کانہیں ہے۔ ۳۳۳ آدمی پیدا ہوتے ہی
 ماتے رشتے میں پھنس جاتا ہے مگر مرنے پر وہ سب ناتارشتا مرنے والے کے ساتھ
 چلا جاتا ہے۔ ۳۳۴ تو پھر بیان بھی یہی بات ہے کہ جن لوگوں کے ساتھ ناتارشتا ہو اسی
 وہ مرنے کے بعد چھوٹ جایگا۔ ۳۳۵ اس واسطے میں کہتا ہوں کہ دنیا کا ناتارشتہ کیا۔
 موت کے سلسلے سب برابر ہی آپ کیون حیران ہیں۔ ۳۳۶ دیکھیے اسی جنم میں مجھ کو دو مان
 اور دو باپ ملے پھر اس میں تعجب کی کون سی بات ہے۔ ۳۳۷ اے گرو میں چچکھ مہاراج
 کا بیٹا ہوں تپتیا کرنے جاؤ گا آپ ہمارا مکت کی لڑکی کو جو بڑا دھرم کا لڑکا کھاتا ہے بشال نگر
 سے بلوایجی۔ ۳۳۸ مارکندے جی کہتے ہیں کہ ہے کر و شکی یہ سب باتیں آنند سے سنکر
 مہاراج بکرا نت اور انکی استری مع عزیز واقربا کے حیرت میں آئے اور چار ناچار اُس لڑکے
 کی محبت دل سے اٹھا دی اور اُسکو اُسکی خواہش کے مطابق تپتیا کرنے کے واسطے جنگل
 میں جانے کی اجازت دی۔ ۳۳۹ اور بشال نگر سے اپنے لڑکے کو منگو کر اپنا ولیعہد کیا
 اور اُس براہمن اور براہمنی کی پرورش جکا وہ لڑکا کھاتا تھا اپنے ذمہ کر لیا۔ ۳۴۰ اور
 آنند جنگل میں جا کر لڑکپن ہی سے اُن کرموں کے ناش ہونے کے واسطے تپتیا کرنے لگا جو
 کرم کہ مکت کی راہ کے خلل انداز ہیں۔ ۳۴۱ انرم اُس لڑکے کی تپتیا دیکھ کر برعھا
 جی وہاں آئے اور کہنے لگے کہ اے لڑکے تو نے کس واسطے ایسی سخت عبادت کی تکلیف اپنے
 اوپر گوارا کی ہے بیان کر۔ ۳۴۲ آنند بولا کہ اے بھگوان آتما شہ ہونے اور دنیا میں بھت
 والے کرموں کے ناش ہونے کے واسطے یہ تپتیا کرتا ہوں۔ ۳۴۳ برعھا جی نے کہا کہ
 جس کا کرم چھے ہو جاتا ہے وہی مکت پاتا ہے کرم والے کو مکت نہیں ملتی تم کرم کو چھو کر کے
 سب جیون کے مالک ہو جاؤ گے پھر مکت پاؤ گے۔ ۳۴۴ پس میں کہتا ہوں کہ تم بیان
 سے جا کر چھٹھویں میں ہو جاؤ من ہونے پر کو بلا منت مکت ملیگی۔ ۳۴۵ مارکندے جی
 کہتے ہیں کہ ہے کر و شکی برعھا جی کے سمجھانے سے وہ مہانت آنند بولا کہ بہت اچھا ایسا
 ہی کروں گا۔ مگر تپتیا جو کر کر برعھا جی کے کہنے سے من کا کام کرنے لگا۔ ۳۴۶ تب برعھا
 جی نے اُس کا نام چاچکھ رکھ دیا اسی سے وہ چاچکھ من مشہور ہوا۔ ۳۴۷ اور اگر نام راجا
 کی کنیا مسماہ بدرعھا سے چاچکھ نے اپنا پواہ کیا جس سے بڑے بڑے پر اکر ہی پتر پیدا ہوئے

श्री. वे पुत्र अनेक प्रकार के ज्ञान में प्रवीण हुवे उनमें वैवस्वत स
हृत् विख्यात हुवे और मनु हुवे जो वैवस्वत विवस्वान के पुत्र थे
इस सन्ध से उनका नाम वैवस्वत मनु हुआ ॥२॥

मू. संज्ञाचरविणादृष्टानिमीलयतिलोचने । य-
तस्ततःसरोषोःकैःसंज्ञानिष्ठुरमब्रवीत् ॥३॥

श्री. जब सूर्य भगवान् संज्ञा के पास जाते थे तब संज्ञा इनके नेत्र को दे
खकर अपनी आँखें बन्द कर लेती थी एक दिन यह देखकर सूर्य भ
गवान् बड़े क्रोध से निद्रु बाणी संयुक्त संज्ञा से कहने लगे ॥३॥

मू. मयिदृष्टे सदा यस्मात्कुरुषेनेव स यमं । तस्मा
ज्जनिष्यसेमूढे प्रजास यमनं यमं ॥४॥४॥

श्री. कि हे मूढे जो कि तू मुझको देखकर अपनी आँखें बन्द कर लेती
हे इस से प्रजाओं को दाँड देने वाला यम नाम पुत्र तेरे पैदा होगा ॥४॥

मू. मार्कण्डेय उवाच ॥ ततः सा च पलां दृष्टिं
देवी चक्रे भयाकुला । विलोलितदृशदृष्टा
पुनराह च तारविः ॥५॥५॥५॥५॥

श्री. इतनी बात सूर्य भगवान् की सुनकर मोरे उर के संज्ञा के नेत्र
चञ्चल होगये तब सूर्य भगवान् संज्ञा के चञ्चल नेत्र देखकर फिर बोले ॥५॥

मू. यस्माद्विलोलितादृष्टिर्मयिदृष्टे त्वया धुना । त
स्माद्विलोलां तनयां नदी त्वं प्रसविष्यसि । ६ ।

श्री. जो कि तू इस समय मुझको देखकर अपने नेत्र चञ्चल
कर के ताकती है इसलिये मैं कहता हूँ कि तेरे एक कन्या च
ञ्चला अर्थात् हर समय चञ्चल नेत्रवाली नदी रूप होकर पैदा होगी ॥६॥

मू. मार्कण्डेय उवाच ॥ ततस्तस्यानुसंज्ञ
श्चेमर्तृशापेन तेन वै । यमश्च यमुना च यं
प्रख्याता सुमहानदी ॥७॥७॥७॥७॥

श्री. मार्कण्डेयजी कहते हैं कि हे कौटुकि कुछ काल बीतने पर स्वामी के शाप देने से संज्ञा के यम नाम पुत्र पैदा हुआ और यमुना नाम कन्या हुई जो महा नदी कहलाती है ॥ ७ ॥

मू. सापिसंज्ञारवेस्तेजःसेहेदुःखेनभाविनी।असहन्तीसंज्ञातेजश्चिन्तयामासवैतदा ॥ ८ ॥

श्री. वह संज्ञा सूर्य का तेज बड़े दुःख से सहती थी आखिर को जब तेज का दुःख न सह सकी तब चिन्ता करने लगी ॥ ८ ॥

मू. किंकरोमिक्कगच्छामिक्कगतायाश्चनिर्वृतिः।भवेन्ममकथंभर्ताकोयमर्कश्चनेष्यति ॥ ९ ॥

श्री. कि क्या कहूँ कहाँ जाऊँ कि जहाँ मुझे सुख हो और किस तरह मेरे स्वामी सूर्य भगवान् मुझपर प्रसन्न हों ॥ ९ ॥

मू. इतिसञ्चिन्त्यबहुधाप्रजापतितुतातदा।बहुमेनेमहाभागापितृसंश्रयमेवसा ॥ १० ॥

श्री. इसी तरह वह संज्ञा बहुत चिन्ता करके अपने बाप की शरण में जाना अच्छा समझ कर ॥ १० ॥

मू. ततःपितृगृहेगन्तुंक्षतबुद्धिर्यशस्विनी।छायामयीमात्मतनुंनिर्ममदयितारवेः ॥ ११ ॥

श्री. अपने शरीर की छाया को अपने शरीर के समान बनाकर सूर्य भगवान् की सन्तोष के वास्ते अपनी जगह पर स्थापित किया ॥ ११ ॥

मू. ताञ्चोवाचत्वयावेश्मन्यत्रभानौर्यधामया।तथासम्यगपत्येषुवर्तितव्यंयथारवौ ॥ १२ ॥

श्री. और उस छाया से कह दिया कि जिस तरह मैं यहाँ रहती हूँ उसी तरह तुम भी यहाँ रह कर इस मेरे पुत्र और कन्या की पालना करना ॥ १२ ॥

मू. पृष्टयापिनवाच्यन्तेतथैतद्वमनंमम।सैवास्मिनामसंज्ञेतिवाच्यमेतत्सदावचः ॥ १३ ॥

पा
यमु

श्री. और जब तुम से सूर्य भगवान किसी तरह पूछें तो मेरा जाना कदाचित् न बताना किन्तु हर तरह से यही बात उनके चित्त में बैठा देना कि जिसमें वह यही जानें कि मैं ही हूँ ॥ १३ ॥

तो ज

मृ. छाया संज्ञो वाच ॥ आकेशग्रहणादेवि
आशायाच्चवचस्तव । करिष्ये कथयिष्या-
मिदृत्तन्तुशपकर्षणात् ॥ १४ ॥ १४ ॥

मरह

श्री. यह सब बातें उस संज्ञा से सुनकर वह छाया रूपी संज्ञा बोली कि हे देवी जब तक सूर्य भगवान मेरे केश न पकड़ेंगे और शाप न देंगे तब तक मैं तुम्हारे ही कहने पर चलूंगी और जब कभी मेरी चोटी पकड़कर मुझे मारें या शाप देने पर प्रवृत्त होंगे तब मैं सब हाल कह दूंगी ॥ १४ ॥

मृ. इत्युक्त्वा सा तदा देवी जगाम भवन्नपितुः । रद-
शतवत्त्वष्टारंतपसा धूतकल्मषं ॥ १५ ॥

ए

श्री. तात्पर्य यह है कि संज्ञा अपनी छाया को सब बात समझा बुझा के चली गई और वहाँ जाकर अपने तपस्वी पिता को देखा ॥ १५ ॥

मृ. बहुमानाच्च तेनापि पूजिता विश्वकर्मणा ।
तस्थो पितृगृहे सा तु किञ्चित्कालमनिन्दिता ॥ १६ ॥

श्री. और संज्ञा के पिता विश्वकर्मा ने भी उसको देखकर बड़े आ-
रा भाव से अपने घर में रक्खा और वह संज्ञा भी आनन्दपूर्वक
अपने पिता के घर रहने लगी ॥ १६ ॥

मृ. ततस्तां प्राह चार्चङ्गीं पितानातिचिरोषितां । सु-
त्वा च तनयां प्रेमबहुमानपुरःसरम् ॥ १७ ॥

श्री. कुछ दिनों के बाद संज्ञा से विश्वकर्मा बड़े प्रेम से स्तुति क-
रके कहने लगे ॥ १७ ॥

मृ. त्वान्तु नेपथ्यसो वत्से दिनानि सुबहुन्यपि । मु-
हूर्ता ईदृशमानि स्युः किन्तु धर्म्मो विलुप्यते ॥ १८ ॥

टी. कि हे पुत्री तुम देखने से मुझको ऐसा आनन्द होता है कि बहुत दिन एक क्षण के समान जान पड़ते हैं परन्तु धर्म छूटा जाता है ॥१८॥

मू. बान्धवेषु चिरं वासो नारीणां न यशस्करः । मनो-
रथो बान्धवानां नार्या भर्तृगृहे स्थितिः ॥१९॥

टी. क्योंकि स्त्रियों को बहुत दिन तक पिता के घर रहने से यश नहीं मिलता है किन्तु गिल्ला गुजारी होती है और माता पिता भाई बन्धुको यही कांक्षा रखना चाहिये कि स्त्री अपने पति के घर रहे ॥१९॥

मू. सात्वं त्रैलोक्य नाथेन भर्त्रा सूर्येण सङ्गता । पि-
तृगेहे चिरं कालं वस्तुनार्हसि पुत्रिके ॥२०॥

टी. हे पुत्री तूरे पति श्री सूर्य भगवान् तीनों लोक के स्वामी हैं इससे तुम जाकर उन्हीं के साथ रहो मेरे घर तुमको बहुत दिनों तक रहना उचित नहीं है ॥२०॥

मू. सात्वं भर्तृगृहे गच्छ तुष्टोऽहं पूजिता सिमे । पुन-
रागमनं कार्य दर्शनाय शुभे मम ॥२१॥२१॥

टी. जब तुम अपने स्वामी के घर जाव मैंने प्रसन्न होकर तुमको भूषण वसन दिया है फिर जब कभी तुम्हारा चित्त उदास हो तब निस्सन्देह यहाँ आकर मुझको दर्शन देजाना ॥२१॥

मू. इत्युक्त्वा सा तदा पित्रा तथैत्युक्त्वा च सामुने । सं-
पूजयित्वा पितरं जगामाद्योत्तरान् कुरुन ॥२२॥

टी. मार्कण्डेयजी कहते हैं कि हे मुनि इस तरह पिता के कहने से संज्ञा ने बहुत अच्छा कहकर पिता का पूजन किया और वहाँ से चलकर उत्तर दिशा कुरुदेश में चली गई ॥२२॥

मू. सूर्यतापमनिच्छन्ती तेजसस्तस्य विभ्यती । त-
पश्च चारतत्रापि वडवारूपधारिणी ॥२३॥

टी. कि जिसमें वहाँ सूर्य की ज्योति से बची रहै तात्पर्य यह है

किं संज्ञा यही बात शेष कर सूर्य के तेज के उर से बडना अर्थात्
त घोड़ी का रूप धारण करके तप करने लगी ॥२३॥

मू. संज्ञेयमिति सन्वानो द्वितीयायामहस्पतिः । ज
नयामास तनयौ कन्यांचैकां मनोरमां ॥२४॥

टी. और वहाँ सूर्य भगवान् उस छाया को संज्ञा अर्थात् अप
पनी स्त्री जानकर बिहार करते रहे आखिर को उसी छाया से सूर्य
भगवान् के दो लड़के और एक मनोरमा नाम लड़की पैदा हुई ॥२४॥

मू. छाया संज्ञा त्वपत्येषु यथा स्वेष्टति वत्सला । तथा
न संज्ञा कन्यायां पुत्रयोश्चान्ववर्त्ततः ॥ २५ ॥

टी. परन्तु वह छाया रूपी संज्ञा जैसा प्रेम अपने लड़कों के साथ
रखती थी वैसा प्रेम असली संज्ञा के लड़कों के साथ नहीं रख
ती थी ॥२५॥

मू. नलिनाद्युपभोगेषु विशेषमनुवासुरं । मनुस्त
तक्षान्तवानस्यायमस्तस्यानचक्षमे ॥ २६ ॥

टी. नित्य नित्य खाने पीने और भूषण वस्त्र से जितना अपने लड़
कों को मानती थी वैसा संज्ञा के लड़कों को नहीं मानती थी यह बात
देखकर बैवस्वत मनु ने तो क्षमा किया परन्तु यम से न रहा गया ॥२६॥

मू. ताडनाय च वै कोपात्पादस्तेन समुद्यतः । तस्याः
पुनः क्षान्तिमताननुदेहे निपातितः ॥ २७ ॥

टी. तब मोरे क्रोध के संज्ञा को लात मारने के वास्ते उठाया पर
न्तु मारा नहीं रुक गये ॥ २७ ॥

मू. ततः शशापतं कोपाच्छाया संज्ञाय मंदिज । किञ्चि
त्प्रस्फुरमाणोऽपि विचलत्यागि पल्लवा ॥ २८ ॥

टी. हे ब्रह्मन् तब वह छाया रूपी संज्ञा कोप करके यम को शाप देने
के वास्ते जोड़ कपाकर और दोनों हाथ पटक कर बोली ॥२८॥

मू. पितुःपत्नीममर्घ्यादयन्मातर्जयसे पदा। भुवि
तस्मादयं पादस्तवाद्यैवपतिष्यति ॥ २६ ॥

श्री. कि मैं तुम्हारे पिता की स्त्री हूँ जो तुमने बेमर्घ्याद करके
मुझे लात मारना चाहा तो मैं शाप देती हूँ कि यह तुम्हारा पाँव
इसी वक्त ज़मीन पर गिर पड़े ॥ २६ ॥

मू. मार्कण्डेय उवाच ॥ इत्याकार्ययमः शापं
मात्रादत्तं भयातुरः। अभ्येत्यपितरं प्राह
प्रणिपातपुरःसरं ॥ ३० ॥ ३० ॥ ३० ॥ ३० ॥

श्री. मार्कण्डेयजी कहते हैं कि हे क्रीष्टुकि इस तरह मा का शाप देना सुनकर
यम डर से घबराकर पिता के आगे जाकर प्रणाम करके बोले ॥ ३० ॥

मू. यम उवाच ॥ तातैतन्महदाश्चर्य्यं न दृष्ट
मितिकेनचित्। मातावात्सल्यमुत्सु-
ज्यशापं पुत्रे प्रयच्छति ॥ ३१ ॥ ३१ ॥

श्री. कि हे तात यह आश्चर्य्य कभी किसी ने न देखा होगा कि मा
ता निर्दयी होकर अपने अवोध बालक को शाप दे ॥ ३१ ॥

मू. यथामनुर्ममाचष्टेनेयं माता तथा मम। वि-
गुणेष्वपि पुत्रेषु न माता विगुणा भवेत् ॥ ३२ ॥

श्री. मनु ने मुझ से पहिले कहा था कि यह मा नहीं है सो यह बात
मुझे सच मालूम होती है क्योंकि लड़का अगर नालायक भी
हो तो मा अपनी लायकी बेटे के साथ नहीं छोड़ती है ॥ ३२ ॥

मू. मार्कण्डेय उवाच ॥ यमस्यैतद्वचः श्रु-
त्वा भगवास्तिमिरापहः। छायासंज्ञां समा-
हूय पप्रच्छ क गते तिसा ॥ ३३ ॥ ३३ ॥

श्री. मार्कण्डेयजी कहते हैं कि यह बात यम की सुनकर सूर्य्य भगवान् ने
छाया संज्ञा को बुला कर पूछा कि संज्ञा कहाँ गई सच कह ॥ ३३ ॥

मू. साचाह तनया त्वष्टुरहं संज्ञाविभावसो । पत्नी
तव त्वयापत्या न्येतो निजनिनानि मे ॥ ३४ ॥

टी. तब वह बोली कि हे विभावसु मैं विश्वकर्मा की कन्या हूँ संज्ञा मेरा ही नाम है आपकी स्त्री हूँ और ये सब लड़के मुझी से पैदा हैं ॥ ३४ ॥

मू. इत्यं विवस्वतः सा तु बहुशः पृच्छतो यदा । नाच
चक्षेततः क्रुद्धो भास्वास्तां शप्नुमुद्यतः ॥ ३५ ॥

टी. यद्यपि सूर्य भगवान् ने बहुत तरह से उस से पूछा परन्तु उस ने संज्ञा का कुछ भेद न बतलाया जब सूर्य भगवान् क्रोधित हो कर उसको शाप देने पर उपस्थित हुवे ॥ ३५ ॥ -

मू. ततः सा कथयामास यथावत्तं विवस्वतः । वि
दितार्थश्च भगवान् जगाम त्वष्टुरालयं ॥ ३६ ॥

टी. तब छाया ने संज्ञा के विश्वकर्मा के घर जाने का हाल सब कह सुनावा यह सुनकर सूर्य भगवान् विश्वकर्मा के घर गये ॥ ३६ ॥

मू. ततः स पूजयामास तदा त्रैलोक्यपूजितं । भा
स्वन्तं परयाभक्त्या निजगेहमुपागतं ॥ ३७ ॥

टी. इनके वहाँ जाने पर विश्वकर्मा ने बड़ी भक्ति से सूर्य भगवान् का पूजन किया ॥ ३७ ॥

मू. संज्ञा पृष्टुस्तदा तस्मै कथयामास विश्वकर्मा ।
आगतैवेह मे वैश्मभवतः प्रेषितेति वै ॥ ३८ ॥

टी. फिर सूर्य भगवान् ने विश्वकर्मा से पूछा कि यहाँ संज्ञा आई है विश्वकर्मा ने कहा कि हाँ आई थी परन्तु मैं ने उसके लिए आप के घर भेज दिया ॥ ३८ ॥

मू. दिवाकरः समाधिस्थो वडवारूपधारिणी । त
पश्चरन्ती ददृशे उत्तरेषु कुरुष्वथ ॥ ३९ ॥

टी. यह बात सुनकर सूर्य भगवान् ने ध्यान करके देखा तो संज्ञा

को षोड़ी की सूरत में उत्तरदिशा कुरु देश में तप करते पाया ॥ ३६ ॥

मू. सौम्यमूर्तिः शुभाकारेण मम भक्तो भवेदिति ।

अभिसंधिञ्च तपसो बबुधेऽस्यादिवाकरः ॥ ४० ॥

श्री. और उस तपस्या में उनको यह अभिलाषा भी देख पड़ी कि मेरे शरीर सुन्दर शरीर और शान्त मूर्ति हो जावे ॥ ४० ॥

मू. शातनं तेजसो मेऽद्य क्रियतामिति भास्करः । त

आह विश्वकर्मा एणं संजायाः पितरं हि ज । ४१ ॥

श्री. यह सब बात ध्यान से समझकर सूर्य ने विश्वकर्मा से कहा कि हे ब्रह्मन् मेरे शरीर का तेज घटा दीजिये ॥ ४१ ॥

मू. सञ्चत्सरभ्रमेत्तस्य विश्वकर्मारवेत्ततः । ते

जसः शातनं चक्रेस्तूयमानश्च देवतैः ॥ ४२ ॥

श्री. यह सुनकर विश्वकर्मा ने सञ्चत्सर चक्रवाले सूर्य के तेज को अपनी तपस्या के बल से घटा दिया उस समय देवता लोग स्तुति करने लगे ॥ ४२ ॥

इति श्री मार्कण्डेय पुरा-
णे वैवस्वत मन्वन्तरे ना

म ॥ ७७ ॥

اوهياے ستره

۱۔ مارکنڈے جی کہتے ہیں کہ ہر کرشمگی بشتو کرما کی لڑکی سنگنا نام مہا بھگوتی تارہ نام سورج سے بواہی گئی تھی اس سے جو لڑکے پیدا ہوئے - ۲۔ انہیں بہت گہانی اور نامور بیوتوت میں ہوئے اور چونکہ وہ بیستوان کے بیٹے تھے اسوجہ سے انکا نام بیوتوت ہوا

۳۴ جب سورج بھگوان اپنی استری سہاۃ سنگیا کے پاس جاتے تب وہ استری انکی جوت
 دیکھ کر اپنی آنکھیں بند کر لیتی ایک دن سورج بھگوان خفا ہو کر کہنے لگے - ۳۵ کہ اے موڑھ جو تو
 مجھ کو دیکھ کر اپنی آنکھیں بند کر لیتی ہے اس واسطے میں سراپ دیتا ہوں کہ رعایا کو منرا دینے والا
 جہنم نام لڑکا تیرے پیدا ہوگا - ۳۶ یہ بات سن کر سنگیا کی آنکھیں پھیل ہو گئیں یعنی شہ رخ چشمی
 دیکھنے لگی تب پھر سورج بھگوان نے کہا کہ - ۳۷ چونکہ تو مجھ کو پھیل ہو کر دیکھتی ہے اس واسطے میں
 کتھاموں کہ تیرے ایک کتیا چنیل یعنی ہر ساعت چلنے والی ندی روپ ہو کر پیدا ہوگی -
 ۳۸ مارکنڈے جی کہتے ہیں کہ ہے کر و شکی اسی سراپ کی وجہ سے سنگیا کے جہنم نام لڑکا اور
 جہنم نام لڑکی پیدا ہوئی جو مہاندی کہلاتی ہے - ۳۹ غرض کہ سنگیا کو سورج بھگوان کی جوت
 سے بہت تکلیف ہوتی تھی آخر کار جب انکی جوت کا دکھ اس سے سہا نہ گیا تو جی میں کہنے لگی
 ۴۰ کہ کیا کروں کہاں جاؤں جہاں مجھے سکھ بٹے اور کس طرح میرے سوامی سورج بھگوان مجھ پر
 پرسن ہوں - ۴۱ آخر کو اپنے باپ کی پناہ میں جانا اچھا سمجھ کر - ۴۲ اپنے سایہ کو اپنے
 ہی طرح کر کے سورج بھگوان کی دھیمی کے واسطے اپنی جگہ پر قائم کیا - ۴۳ اور اس سے کہدا
 کہ جسطرح میں بیان رہتی تھی اسی طرح تو بھی بیان رہ کر میرے لڑکوں کی پرورش کرنا -
 ۴۴ اور جب تجھ سے سورج بھگوان کس طرح پوچھیں تو میرا جانا ہرگز نہ بتانا بلکہ ہر طرح سے
 ان کے دل میں یہی بات قائم رکھنا کہ جس میں وہ مجھی کو جانیں - ۴۵ یہ بات سن کر سایہ کی
 سنگیا بولی کہ اے دیوی جب تک سورج بھگوان خفا ہو کر میرا بال نہ پکڑیں گے اور سراپ نہ لگے
 تب تک البتہ تمھارے ہی کہنے پر عمل کروں گی اور جب کبھی میرے بال پکڑ کر مجھے مارنا چاہیں گے
 یا سراپ دینے پر مستعد ہوں گے تب کوئی بات اُن سے چھپانہ سکونگی - ۴۶ ان فرض سنگیا اپنے
 سایہ کو یہ سب باتیں سمجھا چکا کر وہاں سے چل کر اپنے گھر آئی - ۴۷ باپ نے بیٹی کو دیکھ کر
 بہت عزت و آبرو کے ساتھ اپنے گھر میں رکھا تب سنگیا خوشی خوشی اپنے باپ کے گھر
 پہنچ گئی - ۴۸ کچھ دنوں کے بعد بھو کر باڑے پیار سے تفریف وغیرہ کر کے سنگیا سے کہنے
 لگے کہ - ۴۹ اے بیٹی مجھ کو دیکھنے سے مجھ کو اس قدر خوشی ہوتی ہے کہ بہت دنوں تک بھی
 رہنا مجھ کو ایک ساعت کے برابر معلوم ہوتا ہے لیکن کیا کروں دھرم بگڑ جانے کا خیال ہے
 ۵۰ عورتوں کو باپ کے گھر بہت دن تک رہنے سے نیکی نامی نہیں ملتی ہے بلکہ مذامی و شکار
 ہوتی ہے اور مان باپ بھائی عزیز کو یہی حوصلہ رکھنا چاہیے کہ لڑکی اپنے پت کے گھر رہے

۲۰ اور اے بیٹی تمھارے سوامی سورج بھگوان تینوں لوک کے مالک ہیں تم ان کے ساتھ
 جا کر ہو میرے گھر میں مکو بہت دنوں تک رہنا چاہیے - ۲۱ تمکو میں اپنی خوشی سے کپڑا اور
 دیتا ہوں اب تم اپنے سوامی کے گھر جاؤ اور پھر جب کبھی تمھارا جی گھبراے تب بے تکلف یہاں
 آکر بھگو دشمن دینا - ۲۲ مارکنڈے جی کہتے ہیں کہ ہے کروشنکی سنگیا اپنے باپ کی یہ بات
 سنکر اور بہت اچھا کمکر اور اپنے باپ کا پوجن کر کے اتر طرف کر دیش میں اسواسطے چلی گئی -
 ۲۳ کہ جسمین سورج کی جوت سے محفوظ رہی غرضکہ وہاں جا کر سورج کی جوت کے ڈر سے گھوڑی
 کی صورت بنکر تپسیا کرنے لگی - ۲۴ اور وہاں سورج بھگوان اس سنگیاروپی سایہ کو اپنی
 استری جانتے تھے بلکہ اس سے دو لڑکے اور ایک لڑکی منورمانام پیدا ہوئی - ۲۵ لیکن وہ
 سنگیاروپی سایہ جیسا کہ اپنے لڑکوں کو پیار کرتی تھی ویسا اصلی سنگیا کے لڑکوں کو پیار نہیں
 کرتی تھی - ۲۶ کھانے پینے پکڑے زیور سے جتنا اپنے لڑکوں کی خبر گیری کرتی تھی ویسی خبر گیری
 سنگیا کے لڑکوں کی نہ کرتی تھی یہ بات دیکھ کر بوشوت من نے تو کچھ نہ کہا لیکن جسم سے نہ ہلایا -
 ۲۷ ایک دن مارے غصہ کے اسکو لات مارنے کے واسطے اٹھایا مگر مارا نہیں - ۲۸ تب وہ
 سایہ کی سنگیا خفا ہو کر جسم کو سراپ دینے کے واسطے اٹھ کر تھڑھڑا کر اور ہاتھ پٹک کر بولی -
 ۲۹ کہ میں تمھارے باپ کی استری ہوں جو کہ تم نے میری بیعتی کیلے لات مارنا چاہا اس سے
 میں سراپ دیتی ہوں کہ یہ پیر تمھارا اسبوت زمین پر گر پڑے - ۳۰ مارکنڈے جی کہتے ہیں
 کہ اے کروشنکی اسطرح مان کا سراپ دینا سنکر جسم ڈر سے گھبرا کر باپ کے پاس جا کر یہ نام
 کر کے کہنے لگے - ۳۱ کہ اے باپ ایسے تعجب کی بات کبھی کسی نے نہ دیکھی ہوگی کہ مان بیدر
 ہو کر اپنے لڑکے کو سراپ دے - ۳۲ من نے مجھے پہلے ہی کہا تھا کہ یہ مان نہیں ہی چنانچہ
 وہ بات سچ معلوم ہوتی ہے کیونکہ لڑکا اگر نالائق بھی ہو تو مان اپنی لالچی بیٹے کے ساتھ نہیں چھوڑ
 دیتی ہے - ۳۳ مارکنڈے جی کہتے ہیں کہ ہے کروشنکی یہ بات جسم کی سنکر سورج بھگوان نے
 سنگیاروپی سایہ کو بلا کر پوچھا کہ سنگیا کہاں گئی سچ کہہ - ۳۴ اسنے جواب دیا کہ
 ہمارا ج میں ہی بستو کرنا مٹی بیٹی ہوں سنگیا میرا نام ہے اور آپ کی استری ہوں یہ سب لڑکے
 مجھے پیدا ہیں - ۳۵ ہر خد سورج بھگوان نے بہت طرح سے اس سے پوچھا لیکن اسنے
 سنگیا کا کچھ بتانا نہ بتلایا تب سورج بھگوان خفا ہو کر اسکو سراپ دینے پر مستعد ہوئے -
 ۳۶ تب تو سنگیاروپی سایہ نے اصلی سنگیا کے بستو کرنا کے گھر جانے کا حال سورج بھگوان

۸۸۶
فصل کہ دیات سورج ناراین بٹو کر اگے گئے ۴۸ بٹو کر مانے سورج ناراین کو بڑے آدر
بھاؤ سے لیکر بھکت کے ساتھ پوجن کیا۔ ۴۸ تب سورج بھگوان نے بٹو کر مانے پوچھا کہ یہاں
سنگیا آئی جو بٹو کر مانے کہا کہ ہاں آئی تھی لیکن میں نے پھر اسکو آپ کے گھر بھیج دیا۔
۴۹ یہ بات سنکر سورج بھگوان نے دھیان کر کے دیکھا تو معلوم ہوا کہ سنگیا گھوڑی کا
روپ رکھ کر اتر جانے لگا دیش میں تپتیا کر رہی ہے۔ ۵۰ ارم اس تپتیا سے اسکا یہ
مطلب بھی معلوم ہوا کہ میرے سوامی سندھو شریر اور شانت مورت ہو جاویں۔
۵۱ یہ سب بات سورج بھگوان نے دھیان سے معلوم کر کے بٹو کر مانے کہا کہ اے برہمن
میری جوت کی تیز سی ٹٹا دیجیے۔ ۵۲ یہ سنکر بٹو کر مانے سمیت سر جھکروالے سورج
کی جوت کو اپنی تپتیا کے بل سے ٹٹا دیا تب تو سب دیوتا لوگ استت کرنے لگے۔

मृ. मार्काण्डेय उवाच ॥ ततस्तनुष्टुबुद्ध्या
स्तथादेवर्षयो रविं । वाग्मिरीज्यैर्नृपस्य
त्रैलोक्यस्य समागताः ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

टी. मार्काण्डेयजी कहते हैं कि हे क्रौष्टुकि सम्पूर्ण देवता और सभी लोग मिलकर त्रयलोक के प्रशंसित श्री सूर्य भगवान की स्तुति करने लगे ॥१॥

मू. देवा ऊचुः ॥ नमस्ते ऋक्स्वरूपाय सा-
 मरूपाय ते नमः । यजुःस्वरूपरूपाय साम्रा-
 धामवते नमः ॥ २ ॥ २ ॥ २ ॥ २ ॥

टी. कि हे भगवन् ऋग्वेद और सामवेद और यजुर्वेद के साथ
प जो आप हैं तिनको मैं प्रणाम करता हूँ ॥२॥

मृ. ज्ञानैकधामभूतायनिर्धूततमसेननः। शुद्ध
ज्योतिस्वरूपायविशुद्धायामलात्मने॥३॥

टी. और आप के ज्ञान और गुरु ज्योति और पवित्र निर्मलात्मा और अन्य

कार नाशक स्वरूप को प्रणाम करता हूँ ॥३॥

मू. वरिष्ठाय वरेण्याय परस्मै परमात्मने । नमो
ऽखिलजगद्ध्यापि स्वरूपाय आत्ममूर्तये ॥४॥

टी. और वरिष्ठ और वरेण्य और पर और परमात्मा और सम्पूर्ण जगत् व्यापी स्वरूप और आत्मा मूर्ति को आप के प्रणाम करता हूँ ॥४॥

मू. इदं स्तोत्रं वरं रम्यं श्रोतव्यं श्रद्धयानुरैः । शि-
ष्यो भूत्वा समाधिस्थो दत्त्वा देयं गुरोरपि ॥५॥

टी. और आप का यह उत्तम स्तोत्र श्रद्धा संयुक्त मनुष्यों को सुनना चाहिये और गुरु के पास जाकर और उनको दक्षिणा देकर इस स्तोत्र को पढ़ना चाहिये ॥५॥

मू. न शून्यभूतैः श्रोतव्यमेतत्तु सफलं भवेत् । स-
र्वकारणभूताय निष्ठायै ज्ञानचेतसाम् ॥६॥

टी. अथवा कोई वस्तु इस स्तुति पढ़नेवाले को देकर सुनै तो भी बहुत फल होय और आप सब पदार्थों के कारण और ज्ञानियों के चित्त में स्थित हैं ॥६॥

मू. नमः सूर्यस्वरूपाय प्रकाशात्मस्वरूपिणे ।
भास्कराय नमस्तुभ्यं तथा दिनकृते नमः ॥७॥

टी. और आपके सूर्य स्वरूप और प्रकाशात्मा स्वरूपी को और भास्कर और दिवाकर को नमस्कार है ॥७॥

मू. सर्वरीहेतवे चैव सन्ध्याज्योत्स्नाकृते नमः । त्वं
सर्वमेतं भगवान् जगदुद्भूता त्वया ॥८॥

टी. और तब आप ही से है और सन्ध्याकाल के ज्योत्स्ना यानी उजियाला करनेवाले भी आप ही हैं मैं आप को नमस्कार करता हूँ और सम्पूर्ण जगत् आप ही है और आप ही के भ्रमण करने से ॥८॥

मू. भ्रमत्यापि ह मरिचलं ब्रह्माण्डं सचराचरं । त्वदं
शुभिरिदं स्पृष्टं सर्वं तज्जायते शुचि ॥ ६ ॥

टी. सम्पूर्ण चराचर के साथ ब्रह्माण्ड भी घूमता है और आपही की ज्योति लगने से सब को पवित्रता होती है ॥ ६ ॥

मू. क्रियते त्वत्करैस्पर्शाज्जलादीनां पवित्रता । हो-
मदानादिको धर्मो नोपकाराय जायते ॥ १० ॥

टी. और आपही की किरण पड़ने से जलादि पवित्र होते हैं जब तक आप की किरण का स्पर्श न हो तब तक होम और दानादिक धर्म फलदायक नहीं होते ॥ १० ॥

मू. तावद्वावन्न संयोगिजगदेतत्त्वदंशुभिः । ऋच-
स्ते सकला ह्येता यजुंष्येता निचान्यतः ॥ ११ ॥

टी. और यह सब ऋचा और यजुर्वेद के मन्त्र ॥ ११ ॥

मू. सकलानि च सामानि निपतन्ति त्वदङ्गतः । ऋ-
गमयस्त्वं जगन्नाथ त्वमेव च यजुर्मयः ॥ १२ ॥

टी. और सम्पूर्ण सामवेद के मन्त्र आपके अङ्ग से निकलते हैं और हे जगन्नाथ आपही ऋगमय और यजुर्मय हैं ॥ १२ ॥

मू. यतः साममयश्चैव ततो नाथ त्रयीमयः । त्वमे-
व ब्रह्माणोरूपं परं चापरमेव च ॥ १३ ॥ १३ ॥

टी. और जो कि आप साम मय हैं इसवास्ते त्रायी त्रयीमय भी हैं और आप पर और अपर और ब्रह्म के स्वरूप हैं ॥ १३ ॥

मू. मूर्त्तामूर्त्तस्तथा सूक्ष्मः स्थूलरूपस्तथा स्थितः ।
निमेषकाष्ठादिमयः कालरूपः क्षयात्मकः । प्र-
सीदस्वेच्छया रूपं स्वतेजः शमनं कुरु ॥ १४ ॥

टी. और मूर्त्त और अमूर्त्त और सूक्ष्म और स्थूल रूप होकर आप ही सम्पूर्ण स्थित हैं और निमेष और काष्ठादि काल रूप

ज्यात्मक आपही हैं जब आप प्रसन्न हजिये और अपनी ही इच्छा से आपने तेज को शमन करलीजिये ॥१३॥

मू. मार्कण्डेय उवाच ॥ सर्वसंस्तूयमानस्तु
देवैर्देवर्षिभिस्तथा । नुमोचस्व तदा तेज
स्तेजसां राशिरव्ययः ॥१४॥ १५॥ १६॥

टी. मार्कण्डेयजी कहते हैं कि हे कौशिक इस तरह देवता और ऋषियों के स्तुति करने पर वह तेजोराशि अव्यय भगवान् सूर्यने आपने तेज का शमन कर लिया ॥१५॥

मू. यत्तस्य च हृदयं तेजो भविता तेन मेदिनी । य-
जुर्मयेनापि दिवं स्वर्गः साममयं रवेः ॥१६॥

टी. जो तेज सूर्य भगवान् का अग्रमय था उससे पृथ्वी और यजुर्मय तेज से आकाश और साममय तेज से स्वर्ग उत्पन्न हुआ ॥१६॥

मू. शान्तितास्तेजसो भागा ये त्वष्टा दशपंचच । त्व-
ष्टैव तेन शर्वस्य कृतं शूलं महात्मना ॥१७॥

टी. और जो तेज सूर्य भगवान् का पंद्रह भाग प्रार्थना करके शान्त करके विश्वकर्मा ने अलग निकाल लिया उसी तेज के एक भाग से महात्मा विश्वकर्मा ने महादेव का शूल निर्माण किया ॥१७॥

मू. चक्रं विष्णोर्वशूनाञ्च शङ्करस्य सुदारुणा । पा-
वकस्य तथा शक्तिः शिविका धनदस्य च ॥१८॥

टी. और उन्हीं तेजों में से विष्णु भगवान् का चक्र और वशुगणों का भयंकर बाण बनाया और उसी से अग्नि की शक्ति और कुबेर की पालकी बनाई ॥१८॥

मू. अन्येषाञ्च सुरारिणां मस्त्राण्युग्राणि यानिवै ।
यक्षविद्याधराणाञ्च तानि चक्रे सविश्वकृत ॥१९॥

टी. और अन्य अन्य देवता और विद्याधरों का उग्र अस्त्र

श्री. उसी तेज के भाग से विश्वकर्मा ने बनाया ॥२८॥

मू. ततश्च षोडशं भागं विभर्त्ति भगवान्निभुः। तत्ते
जः पञ्चदशधा शा न्तं तं विश्वकर्माणा ॥२९॥

श्री. और सोलहवों भाग तेज का सूर्य भगवान् ने आपसका
और पन्द्रह भाग जो छोड़ दिये उस से विश्वकर्मा ने देव
तों के जस्र बनाये ॥२९॥

मू. ततोऽश्वरूपधृग भानुस्तत्तमममत्कुरुन्।
दृष्ट्वा तत्र संज्ञाञ्च वडवारूपधारिणीं ॥३०॥

श्री. फिर सूर्य भगवान् घोड़े का रूप धारण करके उत्तरदि
शा कुरु देश में जहाँ घोड़ी का रूप धारण करके संज्ञा रह
ती थी गये और उसको देखा ॥३०॥

मू. सा च दृष्ट्वा तमायान्तं परपुंसो विशङ्कया। ज
गाम संमुखं तस्य पृष्ठरक्षा तत्परा ॥३१॥

श्री. और संज्ञा इनको आते हुवे देखकर दूसरे पुरुष का डर मान
कर इनके संमुख चली यह समझ कर कि जो मैं दूसरी तरफ मुँह क
रूँ तो कदाचित् पीछे से पहुँच कर मैथुन करे ॥३१॥

मू. ततश्च नासिका योगं तयोस्तत्र समेतयोः। ना
सत्य दस्वौ तनया बभूवुः वक्तविनिर्गतौ ॥३२॥

श्री. तब वह सूर्य रूप घोड़ा और घोड़ी रूप संज्ञा संमुख होकर ए
क ने अपनी नाक दूसरे की नाक से मिलाया जिस से नासत्य और
दस्व नाम दो लड़के संज्ञा के मुख से उत्पन्न हुवे ॥३२॥

मू. रेतसोऽन्ते च रेवन्तः खड्गि चर्म्मौ तनुवधूकाश्च
श्वारूढः समुद्भूतो वाणा नृणां समन्वितः ॥३३॥

श्री. और उस मस्ती की हालत में घोड़ा रूप सूर्य का बी
र्य जो पृथ्वी पर गिरा उससे एक मनुष्य रेवन्त नाम घोड़े पर

सवार और ढाल तलवार और तीर तरकस हाथ में लिये
हुवे वदन में हथियार लगाये हुवे जाहिर हुआ ॥२४॥

मू. ततः स्वरूपमनुलं दश्यामासभानुमान् । त-
स्यैषा च समालोक्य स्वरूपं मुदमाददे ॥२५॥

श्री. बार इसके सूर्य भगवान् ने अपने सुन्दर शान्तरूप को प्र-
कट किया जिसको संज्ञा देखकर बहुत प्रसन्न हुई ॥२५॥

मू. स्वरूपधारिणी ज्वेमामानिनायनिजाश्रयं । सं-
ज्ञां भार्या प्रीतिमती भास्करो वारितस्करः ॥२६॥

श्री. फिर संज्ञा ने भी अपने पूर्वरूप को धारण कर लिया त-
ब सूर्य भगवान् उस प्रीतिमती भार्या अर्थात् संज्ञा को अ-
पने आश्रम पर ले आये ॥२६॥

मू. ततः पूर्वसुतो यस्याः सोऽभूद्वैवस्वतो मनुः । द्वि-
तीयश्च यमः शापाद्धर्मदृष्टिर्भूत्सुतः ॥२७॥

श्री. संज्ञा के प्रथम पुत्र वैवस्वत मनु हुवे और दूसरे पुत्र शाप के
कारण से धर्माधर्म देखने वाले यम हुवे ॥२७॥

मू. तृतीया तु नदी जाता पादस्तोऽस्य महीतले । प-
तिष्यतीति शापान्तं तस्य च क्रेपिता स्वयं ॥२८॥

श्री. और तीसरी कन्या यमुना नदी हुई और यम को जो शा-
प पैर गिर जाने का हुआ था उसको सूर्य भगवान् ने शान्त
कर लिया यानी रोक लिया ॥२८॥

मू. धर्मदृष्टिर्यतश्चासौ समो मित्रे तथाऽहिते । त-
तो नियो गंतं याम्ये च कारतिमिरापहः ॥२९॥

श्री. वह यम जो कि शत्रु और मित्र के साथ बराबर भाव रखते थे और
धर्म पर चित्त रखते थे इसवास्ते उनको सूर्य भगवान् ने दक्षिण दिशा
में प्रजाओं के धर्म और अधर्म देखने के वास्ते कायम किया ॥२९॥

मू. यमुनाचनदीयजे कलिन्दान्तरवाहिनी । अ-
श्विनौ देवभिषजौ कृतौ पित्रा महात्मना ॥ ३० ॥

टी. और यमुना पिता के शाप से कलिन्द देश में नदी होकर ब-
हने लगी और घोड़ी रूप संज्ञा के जो दोनों पुत्र अश्विनी कुमार
थे उनको सूर्य भगवान् ने देवता का वैद्य बनाया ॥ ३० ॥

मू. गुह्यकाधिपति त्वेचरेवतोऽपिनियोजितः । छा-
यासंज्ञासुतानाञ्चनियोगः श्रूयतां मम ॥ ३१ ॥

टी. और रेवन्त को सूर्य भगवान् ने गुह्यकगणों का मालिक ब-
नाया अब संज्ञारूपी छाया के लड़कों को जो जो आज्ञा सूर्य भग-
वान् ने दी वह भी कहता हूँ सुनो ॥ ३१ ॥

मू. पूर्वजस्य मनोस्तुल्यश्चायासंज्ञासुतोऽग्रजः । त-
तः सावर्णिकी संज्ञा मवाप तनयोरवेः ॥ ३२ ॥

टी. कि संज्ञारूपी छाया के प्रथम पुत्र जो रूप और गुण में वैदस्वत
के समान थे उनका नाम सावर्णिक रक्ता ॥ ३२ ॥

मू. भविष्यतिमनुः सोऽपि बलिरिन्द्रो यदा तदा । श-
नैश्चरोग्रहाणाञ्च मध्ये पित्रा नियोजितः ॥ ३३ ॥

टी. जिस काल में राजा बलि बन्द होंगे उस काल में वही सावर्णिक म-
नु होंगे और दूसरे पुत्र जिनका नाम शनिश्चर था उनको उनके पि-
ता सूर्य भगवान् ने ग्रहों में स्थापित किया ॥ ३३ ॥

मू. तयोस्तृतीयाया कन्या तपती नाम साकुरुं । नृपा-
त्सम्बराणां तु त्रयमवाप मनुजेश्वरम् ॥ ३४ ॥

टी. और तीसरी कन्या जिसका नाम तपती था उसका विवाह कु-
रु देश के राजा सम्बराण से हुआ उस राजा से तपती के एक पु-
त्र महाराज नाम पैदा हुआ ॥ ३४ ॥

मू. तस्य वैवस्वतस्याहं मनोः सप्तममन्तरं । कथ-

۹ چار اور آچر کے ساتھ سب برصاٹ گھوٹا ہی اور آپ ہی کی جوت لگنے سے سب پوٹر ہوتا
 ہی۔ ۱۰ اور آپ ہی کی کون لگنے سے پانی وغیرہ پوٹر ہوتا ہی جب تک ایک کی کون نہ لگے تب
 تک ہوم دان وغیرہ کوئی دھرم بھی نہیں دیتا۔ ۱۱ اور یہ سب رچا اور یجر بید کا فتر
 ۱۲ اور سام بید کے سب منہ آپ کے انگ سے نکلے ہیں اور اسے جگتا تھرنگ سے اور یجر مری
 آپ ہی ہیں۔ ۱۳ اور جو کہ آپ سام بید مری میں اس واسطے تینون سمیت آپ ہی ہیں اور آپ
 پڑ اور آپر اور برتھ کے روپ ہیں۔ ۱۴ اور مورت اور امورت اور سوکشم اور استھول
 روپ ہو کر آپ برتان ہیں اور نیکیہ اور کاشٹھا وغیرہ کال روپ چھیا تک آپ ہی ہیں۔ اب
 پریش ہوئے اور اپنی خواہش سے اپنے بیج کو سمیٹ لیجئے۔ ۱۵ مارکٹ سے جی کہتے ہیں کہ اس طرح
 دیوتا اور رکھون کے است کر کے پر بیج راس سورج نے اپنے بیج کو سمیٹ لیا۔ ۱۶ اسی
 سورج کے رنگ مریج سے میدنی یعنی پرتھوی پیدا ہوئی اور یجر مریج سے آکاش اور سام
 مریج سے سورگ ہوا۔ ۱۷ اور سورج کے بیج سے پندرہ حصہ بٹو کر مانے پر ارتھ کر شات
 کر کے الگ نکال لیا اسی بیج کے ایک حصہ سے بٹو کر مانے سے ماد یو کا ترشول بنایا۔
 ۱۸ اور اسی بیج سے بنن کا جگر بنایا اور بٹو گنوں کا بھیا تک بان طیار کیا اور ان کی شکلی
 اور گیر کی پاکی بھی اسی سے بنایا۔ ۱۹ اور دوسرے دوسرے دیوتا اور بڑیا دھرو کے غور
 ہتھیار بھی اسی بیج کے حصہ سے بٹو کر مانے بنائے۔ ۲۰ سورج جھگوان نے سولہ ان حصہ
 بیج کا آب رکھا اور پندرہ حصہ جو چھوڑ دیا اسی سے بٹو کر مانے دیوتاؤں کے آستر شستر بنائی
 ۲۱ قصہ مختصر سورج جھگوان گھوڑا کار روپ دھار کر کے اتر جانب کر دیش میں جہان گھوڑی
 کے روپ میں سنگیار ہتی تھی گئے اور اسکو دیکھا۔ ۲۲ سنگیا اُنکو آتے ہوئے دیکھ کر دوسرے
 پریش کا ڈرمان کر کے سارے گئی اس خیال سے کہ اگر دوسری طرف میں رخ کروں تو شاید
 پیچھے سے پہنچ کر جھتی کرے۔ ۲۳ تب گھوڑا روپ سورج اور گھوڑی روپ سنگیا ایک جگہ مقابل
 ہوئے اور ایک دوسرے کی ناک سونگھنے لگے جس سے ناست اور دوسرے ڈولر کے گھوڑی روپ سنگیا
 کے منہ سے پیدا ہوئے۔ ۲۴ اور گھوڑا روپ سورج کا بیج (لفظہ) جو اس مستی کی حالت
 میں زمین پر گر اس سے ایک مرد گھوڑے پر سوار ریوٹ نام تیر و تر کش ڈھال تلوار لیے
 اور جون میں زندہ بکتر پہنے ظاہر ہوا۔ ۲۵ بعد اسکے سورج جھگوان نے اپنے خوبصورت اور
 شات سور روپ کو ظاہر کیا جسکو سنگیا دیکھ کر بہت خوش ہوئی۔ ۲۶ تب سنگیا نے بھی

اپنی ادنی صورت کو اختیار کیا تب سورج بھگوان اُس محبت دار سنگیا کو اپنی اشتم پر لے آئے
 ۲۷۔ الفرض سنگیا کے بڑے لڑکے بیوشوت تو من ہوئے اور دوسرے لڑکے سراب کی
 کی وجہ سے دھرم اور اودھرم کے بجا کرنے والے جبراج ہوئے۔ ۲۸۔ اور لڑکی جو سنگیا کے
 ہوئی تھی وہ جب ناندی ہوئی اور جم کو جو سنگیا روپی سایہ نے سراب پی کر جانے کا دیا تھا اُس
 سراب کو سورج بھگوان نے روک لیا۔ ۲۹۔ وہ جم دوست و دشمن کے ساتھ برابر نظر رکھتے
 اور دھرم کا ہر دم خیال رکھتے تھے اس واسطے سورج بھگوان نے انکو جام بینی دکھان کی طرف رعایا
 کا دھرم اور اودھرم دیکھنے کے واسطے مقرر کیا۔ ۳۰۔ اور جنبا باب کے سراب کی وجہ سے
 کلنڈ دیش میں ندی ہو کر بہنے لگی اور گھوڑی کا روپ دھارن کرنے کے وقت میں جو سنگیا
 کے دو لڑکے آسوئی گمار ہوئے تھے اُن دونوں کو سورج بھگوان نے سورگ کا بید یعنی طبیب
 مقرر کیا۔ ۳۱۔ اور ریوشت کو گھنگ گون کا مالک بنایا بعد اسکے سنگیا روپی سایہ کے لڑکوں کو
 سورج بھگوان نے جو جو حکم دیا وہ کہتا ہوں سُنو۔ ۳۲۔ کہ سنگیا روپی سایہ کے بڑے لڑکے
 جو بیوشوت من کے روپ اور شیل حمان تھے انکا نام سابرنگ رکھا۔ ۳۳۔ جس زمانہ میں
 راجا بل اندر ہوں گے اسوقت وہی سابرنگ من ہونگے اور دوسرے لڑکے جسکا نام شینچر
 تھا انکو سورج بھگوان نے گربوں میں قائم کیا۔ ۳۴۔ اور تیسری لڑکی جسکا نام پتی تھی
 اسکا بواہ کر دیش کے راجا شتبرن سے ہوا اُس راجا سے پتی کے مہاراج نام لڑکا پیدا ہوا
 ۳۵۔ اور بیوشوت من کے وقت میں جو راجا اور ریکھ اور دیوتا اور اندر اور ان کے لڑکے لوگ
 ہوئے انکا حال بھی کہتا ہوں سُنو۔ فقط

सू. मार्कण्डेय उवाच ॥ आदित्यावसवोरु-
 दाः साध्या विश्वे मरुद्गणाः । भृगवोऽङ्गिर-
 सश्चाष्टौ यत्र देवगणाः स्मृताः ॥ १ ॥ १ ॥

श्री. फिर मार्कण्डेयजी बोले कि हे क्रीष्टकि उस वैवस्वत म-
 न्वन्तर में आदित्य गण और वसुगण और रुद्रगण और साध्या
 गण और विश्वेगण और मरुद्गण और भृगुगण और अंगिरस

गण यही आठगण देवता के प्रसिद्ध हैं ॥ २ ॥

मू. आदित्यावसवोरुद्राविज्ञेयाः कश्यपात्मजाः ।
साध्याश्च वसवो विश्वे धर्मपुत्रगणास्त्रयः ॥ २ ॥

टी. आदित्य और वसु और रुद्र यह तीन गण कश्यपजी के पुत्र हैं और साधु और मरुत और विश्व यह तीन गण देवता के धर्मपुत्र कहलाते हैं ॥ २ ॥

मू. भृगोस्तुभृगवो देवाः पुत्रास्तु द्विरसः सुताः । एक
सर्गश्च मारीचो विज्ञेयः साम्प्रताधियः ॥ ३ ॥

टी. और भृगुगण भृगु के पुत्र हैं और अंगिरा गण अंगिरा मुनि के पुत्र हैं और यह सर्ग मारीच नाम कहलाते हैं जो इस समय तक वर्तमान हैं ॥ ३ ॥

मू. ऊर्जस्वीनाम चैवेन्द्रो महात्मा यज्ञभागभुक् ।
अतीतानागताये च वर्तन्ते साम्प्रतञ्चये ॥ ४ ॥

टी. और यज्ञ के भाग लेने वाले महात्मा ऊर्जस्वी नाम इन्द्र हैं और जो इन्द्रलोक पहिले हो चुके हैं और जो लोग आगे इन्द्र होंगे और जो इसकाल में विद्यमान हैं ॥ ४ ॥

मू. सर्वे ते विद्वेन्द्रास्तु विज्ञेयास्तु लक्षणाः ।
सहस्राक्षाः कुलिशिनः सर्वे एव पुरन्दराः ॥ ५ ॥

टी. इन सब इन्द्रों के लक्षण समान ही जानना और सब इन्द्र सहस्राक्ष अर्थात् हजार नेत्रवाले हैं और सब किसी का हथियार बज्र ही है और सब इन्द्र पुरन्दर कहलाते हैं ॥ ५ ॥

मू. मघवन्तो रूपाः सर्वे शृङ्गिनो गजगामिनः । ते
शतक्रतवः सर्वे भूताभिभवतेजसः ॥ ६ ॥

टी. और सब इन्द्र मघवन्त और रूपा और शृङ्गी और गजगामी और शतक्रतु और तेजसी पुत्र हैं ॥ ६ ॥

मू. धर्माद्यैः कारणैः शुद्धैरधिपत्यगुणान्विताः।
भूतभव्यभवन्नाथाः शृणु चैतन्नयं हि ज ॥ ७ ॥

टी. और ये सब लोग शुद्ध धर्म करके देवताओं के स्वामी हुवे हैं और
हे हिज ये लोग भूत और भविष्य और वर्तमान के मालिक हुवे हैं
और इस वैवस्वत के मन्वन्तर में त्रैलोक्य यह हैं ॥ ७ ॥

मू. भूर्लोकोऽयं स्मृतान्भूमिरन्तरिक्षं दिवः स्मृतं। दि
व्याख्यश्च तथा स्वर्गस्यैलोक्यमिति गद्यते ॥ ८ ॥

टी. पृथ्वी भूर्लोक कहलाता है और अन्तरिक्ष दिवलोक और स्वर्ग
दिव्यलोक कहलाता है ॥ ८ ॥

मू. अत्रिश्चैव वशिष्ठश्च काश्यपश्च महानृषिः। गौ
तमश्च भरद्वाजो विश्वामित्रोऽयकौशिकः ॥ ९ ॥

टी. और अत्रि और वशिष्ठ और काश्यप और गौतम और भरद्वाज
और विश्वामित्र ॥ ९ ॥

मू. तथैव पुत्रो भगवानृचीकस्य महात्मनः। जम
दग्निस्तु सप्तैते मुनयोऽत्र तथान्तरे ॥ १० ॥

टी. और मरीचि के पुत्र जमदग्नि यही लोग इस मन्वन्तर में सप्त
ऋषि कहलाते हैं ॥ १० ॥

मू. इक्ष्वाकुर्नाभगश्चैव धृष्टः शर्यातिरेव च। नरि
ष्यन्तश्च विख्यातो नाभगो दिष्ट एव च ॥ ११ ॥

टी. और इक्ष्वाकु और नाभग और धृष्ट और शर्याति और न
रिष्यन्त और नाभग और दिष्ट ॥ ११ ॥

मू. कुरुषश्च प्रवधश्च वसुमानलोकविश्रुतः। मनौ
वैवस्वतस्यैते नवपुत्राः प्रकीर्तिताः ॥ १२ ॥

टी. और कुरुष और प्रवध और वसुमान यही नव लड़के वैव
स्वत मनु के बड़े नामी हैं ॥ १२ ॥

वैवस्वत मनु के समान हैं वही जाठवे मनु होंगे

मू. रामो व्यासो गालवश्च दीप्रमान रूप एव च । ऋ
ष्यशृङ्गस्तथा द्वे शिस्तत्र स प्रपयोऽभवन् ॥ ४ ॥

टी. और उस समय में राम. व्यास. गालव. दीप्तिवान्. रूप. ऋषि. शृङ्गी. अर्थात् अश्वत्थामा वही लोग सप्त ऋषि होंगे ॥ ४ ॥

मू. सुतपाश्चामिताभाश्च मुख्याश्चैव त्रिधा सुराः विं
शकः कथितश्चैषां त्रयाणां त्रिगुणो गणः ॥ ५ ॥

टी. और सुतपा और अमिताभा और मुख्या इन्हीं तीन देवतों के त्रिगुण विंशक गण कहल विं गे ॥ ५ ॥

मू. तपस्तपश्च शक्रश्च्युतिज्योतिः प्रभाकरः । प्र
भासो दयितो धर्मस्तैजोरश्मिश्च वक्रतुः ॥ ६ ॥

टी. और तप. तपस्वी. शक्र. व्युति. ज्योति. प्रभाकर. प्रभास. दयित. धर्म. तेज. रश्मि. वक्रतु ॥ ६ ॥

मू. इत्यादिकस्तु सुतपादेवानां विंशको गणः । प्रभु
विभुर्विभासाद्यस्तथान्यो विंशको गणः ॥ ७ ॥

टी. और सुतपा आदि देवतों के एक विंशक गण होंगे और प्रभु और विभु और विभास इत्यादि दूसरे विंशक गण होंगे ॥ ७ ॥

मू. सुराणाममितानान्तु तृतीयमपि मे शृणु । दमो
दान्तः सौमो विन्नाद्याश्चैव विंशतिः ॥ ८ ॥

टी. और तीसरे अमितनाम देवतों के जो विंशक गण होंगे वह सुनो कि दम और दान्त और ऋज और सौम और विन्ना आदि वही लोग तीसरे विंशक गण होंगे ॥ ८ ॥

मू. मुख्या ह्येते समाख्याता देवा मन्वन्तराधिपाः ।
मरीचस्यैव ते पुत्राः कश्यपस्य प्रजापतेः ॥ ९ ॥

टी. उस मन्वन्तर के मालिक मुख्य वही देवता लोग होंगे और यह

सब देवता लोग आरीवि अर्थात् कश्यप प्रजापति के पुत्र लोग हैं ॥ ६ ॥

मू. भविष्याश्च भविष्यन्ति सावर्णि स्यान्तरे मनोः । ते
सामिन्द्रो भविष्यत्तु बलिर्वैरोचनिर्मुने ॥ १० ॥

टी. और हे मुनि उस सावर्णि मन्वन्तर में देवताओं के मासिक राजा बलि इन्द्र होंगे ॥ १० ॥

मू. पाताल आस्तेयोऽद्यापि दैत्यः समयवन्धनः । विरा
जाश्चार्जुनीरश्च निर्मोहः सत्यवाक् कृतिः ॥ ११ ॥

टी. वह राजा बलि अपनी प्रतिमा के पालने के वास्ते अवतक पाताल में विद्यमान अर्थात् प्राप्त हैं और विराजा और अर्जुनीर और निर्मोह और सत्यवाक् और कृति ॥ ११ ॥

मू. विषावाद्याश्चैव तनयाः सावर्णि स्य मनोर्नृपाः ॥ १२ ॥

टी. और विष्णु आदि सावर्णिक मनु के लड़के लोग राजा होंगे ॥ १२ ॥

इति श्री मार्कण्डेय पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे ॥ ८० ॥

اَوْھیاتے اسی

۱۔ یہ سب باتیں مارکنڈے جی سے سنکر کروشنکی کہنے لگے کہ سوائیمبھو وغیرہ سات مہانتوں کا حال تو آپ نے کہہ سنایا اور ان مہانتوں میں جو جو دیوتا اور رشی اور راجا لوگ ہوئے انکا حال بھی آپ نے کہا۔ ۲ اب اس کلب میں جو سات مہانتوں اور مہانتوں کے ان سب کا حال اور اس وقت میں جو جو دیوتا اور رشی اور راجا لوگ ہوں گے انکا بھی حال کہہ سنائیے۔

के पुत्र अष्टम मनु होंगे उनकी उत्पत्ति की कथा विस्तारपूर्वक मैं कहता हूँ सुनो ॥ १॥

मृ. महामाया नुभावेन यथा मन्वन्तराधिपः स
वभूव महाभागः सावर्णिस्तनयो रवेः ॥ २ ॥

टी. अर्थात् जिस तरह महामाया के प्रभाव से मन्वन्तर के सामी वह सावर्णि नाम से विख्यात हुवे उसका हाल सुनो ॥ २ ॥

मृ. सारोचिषेऽन्तरे पूर्वंचैत्रवंशसमुद्भवः ।
सुरथो नाम राजा भूतसमस्तैस्तिमाडले ॥ ३ ॥

टी. कि पहिले सारोचिष मन्वन्तर में सारोचिष मनु के पुत्र जो राजा चैत्र के वंश में सुरथ नाम पृथ्वी माडल के राजा हुवे ॥ ३ ॥

मृ. तस्य पालयतः सम्यक् प्रजाः पुत्रानिवोरसान् ।
वभूवुः शत्रवो भूपाः कोलाविध्वंसिनस्तथा ॥ ४ ॥

टी. वह राजा अपनी प्रजा को पुत्र की तरह पालन करते थे उसी समय कोलाविध्वंसी राजा लोग उनके शत्रु होकर उनके राज्य पर चढ़ आये ॥ ४ ॥

मृ. तस्यैतर्भवद्युद्धमतिप्रबलदण्डिनः । न्यूनैर-
पिसतैर्युद्धे कोलाविध्वंसिभिर्जितः ॥ ५ ॥

टी. तब महाराज सुरथ और उन कोलाविध्वंसी राजाओं में महायुद्ध हुआ यद्यपि राजा सुरथ सब तरह से बली थे परन्तु प्रारब्ध के प्रतिकूल होने से इनके शत्रु कोलाविध्वंसी लोगों ने इनकी राज्य छीनकर अपने बंश में कर लिया कोला एक दूसरे स्थान का नाम है जो दूसरी राजधानी सुरथ की थी उसको कई एक आदमियों ने लेकर बिगाड़ दिया और अपने प्रबन्ध में कालि या इस सबब से उन लोगों का नाम कोलाविध्वंसी हुआ ॥ ५ ॥

मृ. ततः स्वपुत्रमायातो निजदेशाधिपो भवत् । आ-
क्रान्तः समहाभागस्तैस्तदाप्रबलारिभिः ॥ ६ ॥

टी. तब सुरथ राजय हो कर वहाँ से चलकर अपनी निज राजधानी में आकर अपने देश ही भर का राज्य करने लगे परन्तु वहाँ भी उनलोगों ने न न लेने दिया किन्तु मबल हो कर महाराज सुरथ को घेर लिया ॥ ६ ॥

मू. अमात्यैर्बलिभिर्दुष्टैर्दुर्बलस्य दुरात्मभिः ।
कोशो बलं चापहन्तं तत्रापि स्वपुरे ततः ॥ ७ ॥

टी. तब इनके मन्त्री और अफसरों ने इनको कमजोर और बेकाबू समझ कर उन दुरात्मा लोगों ने इनका खजाना और फौज सब अपने अस्त्रियार में कर लिया ॥ ७ ॥

मू. ततो मृगयावाजेन हतस्याम्यः समूपतिः । ए-
काकीहयमारुह्य जगाम गहनं वनं ॥ ८ ॥

टी. जब इनके मन्त्री और नौकरों ने इनका खजाना लेकर हुस्न भी इनका उठा दिया तब महाराज सुरथ लज्जित होकर शिकार के बहाने से घोड़े पर सवार होकर अकेले दुर्गम वन में चले गये ॥ ८ ॥

मू. सतत्राश्रममद्राक्षीद्विजवर्जस्य मेधसः । प्रशा-
न्तश्चापदाकीर्णं मुनिशिष्योपशोभितम् ॥ ९ ॥

टी. उस रमणीय वन में जो पशु और यक्षी और मुनि और उनके शिष्यों से शोभायमान था मेधानाम द्विजोत्तम के आश्रम को देखा ॥ ९ ॥

मू. तस्थौ कञ्चित्सकालञ्च मुनिना तेन सत्कृतः ।
इतश्चेतश्च विचरंस्तस्मिन्मुनिवराश्रमे ॥ १० ॥

टी. और उस आश्रम पर वह राजा सुरथ जा कर दहलने फिरने लगा मु-
नि ने राजा को देखकर उनकी बड़ी खानिदारी की मुनि की खानिदारी करने से राजा कुछ दिन वहाँ बहर गया ॥ १० ॥

मू. सोऽचिन्तयत्तदा तत्र मम त्वारुष्टचेतनः । मत्पु-
त्रैः पालितं पूर्वं मया हीनं पुरहितम् ॥ मद्भृत्यै-
स्तैरसह तैर्धर्मतः पाल्यते न वा ॥ ११ ॥

टी. एक दिन राजा अपने नगर और प्रजा को समता की राह से याद करके सोचने लगा कि मैं तो अपने नगर को जो मेरे पुरो-
 र्षों का दसाया हुआ था छोड़ कर चला आया अब नहीं मालूम कि
 मेरे नौकर चाकर जो अधर्मी हैं मेरी प्रजा का पालन न्याय पूर्वक
 करते हैं या नहीं ॥ ११ ॥

मू. नजाने सप्रधानो मे शूरहस्ती सदा मदः । म
 मवेरि वशं यातः कान्भोगानुपलप्स्यते ॥ १२ ॥

टी. और यह भी नहीं जानता कि मेरे मस्त हाथी को महावत और दा-
 रोगा दाना पानी देते हैं या नहीं क्योंकि अब वह सब मेरे शत्रु हैं और
 शत्रु के वश में हैं यदि भूतों मरते हों तो कुछ आश्चर्य नहीं ॥ १२ ॥

मू. ये ममानुगतानित्यं प्रसादधनभोजनैः । अ-
 निरुत्तिं ध्रुवं तैः द्यकुर्वन्त्यन्यमहीभृतां ॥ १३ ॥

टी. और जो लोग रोज रोज मेरे पास आकर मेरी प्रसन्नता चाहते थे
 और भनभोजनादि मुझसे पाते थे वे लोग अब अपनी जीविका के वा-
 स्ते दूसरे राजाओं की सेवा करते होंगे ॥ १३ ॥

मू. असम्यक्प्रयशीलैस्तैः कुर्वन्निः सततं व्ययं । स-
 चिन्तः सोऽतिदुःखेन क्षयकोशो गमिष्यति ॥ १४ ॥

टी. और जिस खजाने को मैंने बड़े परिश्रम से जमा किया था
 उस खजाने को मेरे नौकर चाकर लोगों ने निरर्थक और अनाव-
 श्यक कामों में खर्च करके सब बरबाद कर दिया होगा ॥ १४ ॥

मू. एतच्चान्यच्च सततं चिन्तयामास पार्थिवः । त-
 त्रविप्राश्च माभ्यासे वैश्यमेकं ददर्श सः ॥ १५ ॥

टी. इन्हीं सब बातों को राजा सोच रहा था कि इतने में उसी मुनि
 के आश्रम के पास एक बनिया को देखा ॥ १५ ॥

मू. सपृष्टस्तेन कस्त्वं भी हेतुश्चागमनेऽत्रकः ।

सशोकइवकस्मात्वंदुर्मनाइवलक्ष्यसे ॥१६॥

री. और उस से पूछा कि तुम कौन हो और किस वास्ते आये हो और क्यों उदास हो ॥ १६ ॥

मू. इत्याकार्यवचस्तस्यभूपतेःप्राणयोदितं। प्रत्युवाचसतंवैश्यःप्रश्रयावनतो नृपं ॥१७॥

री. यह बात राजा की सुनकर वह वैश्य बड़ी आधीनता से राजा को प्रणाम करके बोला ॥ १७ ॥

मू. समाधिर्नामवैश्योऽहमुत्पन्नोधनिनांकुले। पुत्रदारैर्निरस्तश्चधनलोभादसाधुभिः ॥ १८ ॥

री. कि मेरा नाम समाधि है जाति का वैश्य हूँ धनी का पुत्र हूँ और मेरी स्त्री पुत्र ने मेरे धन पर लोभ करके मुझकी घर से निकाल दिया ॥

मू. विहीनश्चधनेर्दारैःपुत्रैरादायमेधनं। वनमभ्यागतोदुःखीनिरस्तश्चापवंधुभिः ॥१९॥

री. जोकि मेरी स्त्री और पुत्र ने मुझे निर्धन करके निकाल दिया है इस सबब से मैं दुखी होकर इस जंगल में चला आया भाई व धुने भी न्याय करके मेरी स्त्री और पुत्र को नहीं समझाया और उन सब ने भी मुझे त्याग दिया ॥ १९ ॥

मू. सोऽहंनवेन्निपुत्राणांकुशलाकुशलात्मिकां। प्रवृत्तिंस्वजनानान्चदाराणांचात्रसंस्थिताः ॥२०॥

री. जब मैं तो इस वन में हूँ और मुझको अपने स्त्री पुत्र भाई वन्धु कुशल अनकुशल की कुछ खबर नहीं है ॥ २० ॥

मू. किन्तुतेषांगृहेक्षेममक्षेमंकिन्तुसाम्प्रतं। कथन्तेकिन्तुसहृतादुर्वृत्तकिन्तुमेसुताः ॥२१॥

री. कि बेलोग अपने घर में कुशल क्षेम से हैं या नहीं और यह भी नहीं जानता कि मेरे लड़कों का कारबार अच्छी तरह चलता है

या विगड़ गया और वेलोग अच्छा काम करते हैं या नहीं ॥ २१ ॥

मू. राजोवाच ॥ यैर्निरस्तोभवास्तुव्यैः पुत्र
दारादिभिर्धनैः । तेषु किं भवतः स्नेहमनु
बध्नातिमानसं ॥ २२ ॥ २२ ॥ २२ ॥ २२ ॥

श्री. यह बात समाधि से सुनकर राजा सुरथ बोला कि जब तेरी स्त्री और
पुत्रादि लालची दुष्टों ने तेरा सब धन लेकर तुम्हारे घर से निकाल दिया तब
फिर उन लोगों की ममता अपने जी में क्यों रखता है ॥ २२ ॥

मू. वैश्य उवाच ॥ एवमेतद्यथा प्राह भवान्
स्मद्गतं वचः । किं करोमि न बध्नाति मम
निष्ठुरतां मनः ॥ २३ ॥ २३ ॥ २३ ॥ २३ ॥

श्री. वैश्य ने कहा कि हे महाराज आपका कहना सब सत्य है परन्तु
मैं क्या करूँ मेरा जी मेरे बश में नहीं है इसी सबब से उन लोगों
की ममता मुझसे छोड़ी नहीं जाती है ॥ २३ ॥

मू. यैः सन्त्यज्य पितृस्नेहं धनलुब्धैर्निराकृतः ।
पतिस्वजनहार्द्विहार्दितेष्वेव मे मनः ॥ २४ ॥

श्री. यद्यपि मेरी स्त्री और पुत्र और भाई बन्धु ने धन के लालच से
मेरी ममता छोड़ कर मुझे घर से निकाल दिया पर तौ भी मेरे जी में
उन लोगों की ममता भरी हुई है ॥ २४ ॥

मू. किमेतन्नाभिजानामि जानन्नपि महामते । य
त्प्रेमप्रवणञ्चित्तं विगुणोषपिवन्धुषु ॥ २५ ॥

श्री. हे महामति यह कैसी बात है कि मैं जानकर अनजान होता हूँ
कि जिन भाई बन्धु ने शत्रुता करके मुझको घर से निकाल दिया है
उनकी ममता से मेरा जी अलग नहीं होता है ॥ २५ ॥

मू. तेषां कृते मे निःश्वासो दौर्गमनस्य च जायते । क
रोमि किं यन्न मनस्तेष्वप्रीतिषु निष्ठुरम् ॥ २६ ॥

टी. और उन लोगों के देखे बिना शीघ्र से लम्बी स्त्रियों निकलती हैं और जी में उदासी छाई रहती है हे महाराज मैं क्या करूँ कि जिसमें मेरा चित्त इन लोगों की प्रीति छोड़कर निष्ठुर होजाय ॥२६॥

मू. मार्कण्डेय उवाच ॥ ततस्तौ सहितौ वि-
प्रतं मुनिं समुपस्थितौ । समाधिर्नाम व-
श्योऽसौ स च पार्थिव सत्तमः ॥२७॥ २७॥

टी. मार्कण्डेयजी कहते हैं कि हे द्विजोत्तम बाद इसके वह समा-
धि वैश्य और राजा सुरथ मेधा ऋषि के पास गये ॥२७॥

मू. कृत्वा तु तौ यथान्यायं तथा हन्ते न संविदं । उ-
पविष्टौ कथाः काश्चिच्चक्रतुर्बैश्यपार्थिवौ ॥२८॥

टी. और वहाँ जाकर मुनिको न्याय पूर्वक प्रणाम करके अ-
स्तुति किया मुनि ने भी दोनों मनुष्यों को आशीर्वाद देकर बैठ-
ने की आज्ञा दी तब राजा और वैश्य ने वहाँ बैठकर कुछ क-
था वार्त्ता कहना आरम्भ किया ॥२८॥

मू. भगवंस्त्वामहंपृष्टुमिच्छाम्येकं वदस्व ततः । दुः-
खाय यन्मे मनसः स्वचित्ताय तत्तां विना ॥२९॥

टी. यहाँ तक कि महाराज सुरथ ने ऋषि से कहा कि हे भगव-
न् आप से एक बात सन्देह की पूछता हूँ कहिये मुनि ने कहा
कि जो चाहो पूछो राजा ने कहा कि मेरा चित्त मेरे वश में नहीं है
इस वास्ते मुझको मन से दुःख होता है ॥२९॥

मू. समत्वं मम राजस्य राज्याङ्गेष्वखिलेष्वपि । जा-
नतोऽपि यज्ञस्य किमेतन्मुनि सत्तमः ॥३०॥

टी. और वह यह है कि मुझको अपनी राज्य और नीकर चाकर हा-
थी घोड़ा असबाब खजाना आदि में बहुत ममता रहती है यद्यपि
मैं जानता हूँ कि अब मैं इस सब से अलग हो गया हूँ अब इन सब

में प्रीति रखने से दुःख होगा परन्तु तौ भी अज्ञानी के समान इन सब में मेरा जी फँसा रहता है ॥ ३० ॥

मू. अयश्च निःकृतः पुत्रैर्दारैर्भृत्यैस्तयोदितः । स्व-
जनेन च सन्त्यक्तो षुहार्द्धं तथाप्यति ॥ ३१ ॥

श्री. और यह जो मेरे साथ वैश्य है इसको भी इसके बेटे और स्त्री और नीकर चाकर भाई बन्धु ने इसका धन लेकर घर से निकाल दिया परन्तु इसका चित्त उन्हों की प्रीति से अलग नहीं होता ॥ ३१ ॥

मू. एवमेष तथाहश्च द्वावप्यत्यन्तदुःखितौ । दृष्ट-
दोषेऽपि विष्टये ममत्वाकृष्टमानसौ ॥ ३२ ॥

श्री. मैं और वैश्य दोनों मनुष्य इस बात में बहुत दुखी हो रहा हूँ कि यद्यपि उन लोगों की खुदाई को जानते हैं तौ भी उन सबकी ममता हम लोगों के जी से नहीं जाती है ॥ ३२ ॥

मू. तत्केनैतन्महाभाग यन्मोहो ज्ञानिनोरपि । म-
मास्य च भवत्येषा विवेकान्धस्य मूढता ॥ ३३ ॥

श्री. हे महा भाग आप बतलाइये कि किस सबब से हम लोगों का जी अपने वश में नहीं है जो ज्ञान बूझकर अंधों की तरह उन सब की प्रीति में अज्ञान हो रहे हैं और यह अज्ञानता तो उनको होना चाहिये जिनको ज्ञान नहीं है ॥ ३३ ॥

मू. ऋषिरुवाच ॥ ज्ञानमस्ति समस्तस्य जन्तो-
र्विषयगोचरे । विषयश्च महाभाग याति चै-
वं पृथक् पृथक् ॥ ३४ ॥ ३४ ॥ ३४ ॥ ३४ ॥

श्री. यह प्रश्न महाराज सुरय का सुनकर मेधा ऋषि बोले कि हे महा राज इस संसार के विषय समझने में सब किसी को ज्ञान है और यह विषय भी सब किसी का अलग अलग है ॥ ३४ ॥

मू. दिवान्धाः प्राणिनः केचिद्रात्रावन्धास्तथापि

केचिद्दिवातया रात्रौ प्राणिनस्तुल्यदृश्यः ॥ ३५ ॥

टी. क्योंकि कितने जानवर दिन में जन्धे हैं और कितने रात्रि में जन्धे हैं और कितनों को दिन रात बराबर सूझता है और कितनों को कुछ नहीं सूझता ॥ ३५ ॥

मू. ज्ञानिनो मनुजाः सत्यं किन्तु नेहिके वलं । यतो हि ज्ञानिनः सर्वे पशुपक्षिमृगादयः ॥ ३६ ॥

टी. केवल मनुष्य ही के ज्ञान नहीं है किन्तु पशु और पक्षी के भी ज्ञान होता है ॥ ३६ ॥

मू. ज्ञानञ्च तन्मनुष्याणां यत्तेषां मृगपक्षिणां । मनुष्याणाञ्च यत्तेषां तुल्यमन्यत्तद्योभयोः ॥ ३७ ॥

टी. जो ज्ञान पशु पक्षी के है वह ज्ञान मनुष्य के भी है इस सब से दोनों बराबर हैं ॥ ३७ ॥

मू. ज्ञानेऽपि सति पश्येतात्पतंगान्कावचक्षुषु । कण्ठमोक्षाद्वतान्मोहान्पीड्यमानानपिशुधाश्च ।

टी. देखो पक्षी सब भूख से पीड़ित रहते हैं और जानते हैं कि बच्चों के खाने से हमारी भूख नहीं जायगी तौ भी ममता के चश होकर अपना आहार बच्चों के मुख में दे देते हैं आप भूखे रह जाते हैं ॥ ३८ ॥

मू. मानुषामनुजव्याघ्रसामिवाषाः सुतान्प्रति । लोभात्प्रत्युपकाराय नन्वेते किं न पश्यसि ॥ ३९ ॥

टी. हे महाराज मनुष्य लोग भी अपने उपकार के आशा पर अपने लड़कों को पालते हैं क्या तुम नहीं देखते हो जो सब मनुष्यों को जान है ॥ ३९ ॥

मू. तथापि ममतावर्त्तमोहगर्जे निपातिताः । महा माया प्रभावेन संसारस्थितिकारिणाः ॥ ४० ॥

टी. पर तौ भी संसार के पालने वाले परमेश्वर की जो महामाया

है उस के प्रभाव से मनुष्यलोक घिर कर मोह के कुदें में गिर पड़ते हैं अथवा गिराये जाते हैं ॥ ४० ॥

मू. तन्नात्रविस्मयः साय्यो योगजिद्वजगत्पतेः । म
हामायाहरेश्चैवातया संमोह्यते जगत् ॥ ४१ ॥

टी. महामाया के ऐसे प्रभाव में सन्देह न करना चाहिये क्योंकि यह योगनिद्रा महामाया जगत्पति श्री विष्णु भगवान् की है जि न की साया में जगत् मोहित है ॥ ४१ ॥

मू. ज्ञानिनामपि चेतां सिद्धी भगवती हि सा । यत्ना
दाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति ॥ ४२ ॥

टी. और यह महामाया भगवती देवी ज्ञानियों के चित्त को भी खींच कर मोह में फँसा देती है ॥ ४२ ॥

मू. तथा सिद्ध्यन्ते विश्वं जगदेतच्चराचरं । सैषा प्र
सन्ना वरदा चृणां भवति मुक्तये ॥ ४३ ॥

टी. और वही भगवती इस चराचर जगत् को उत्पन्न करती है और वही भगवती प्रसन्न होकर और वरदान देकर मनुष्यों को मुक्ति भी देती है ॥ ४३ ॥

मू. सा विद्या परमा मुक्तेर्हेतुभूता सनातनी । संसार
बन्धुहेतुश्च सैव सर्वेश्वरोऽवरी ॥ ४४ ॥

टी. और वह भगवती परमविद्या का स्वरूप और मुक्ति का कारण और सनातनी है और वही भगवती संसार के बन्धन का कारण और सम्पूर्ण ईश्वरों की ईश्वरी है ॥ ४४ ॥

मू. राजो बोधः ॥ भगवन् का हि सा देवी महा
मायेति प्रांभवान् । ब्रवीति कथमुत्पन्ना
सा कर्मास्याश्च किं हि ज ॥ ४५ ॥ ४५ ॥

टी. यह सुनकर राजा सुरप बोला कि हे भगवन् वह देवी कौन

है जिसकी आप महामाया कहते हैं और किस तरह उनकी उत्पत्ति है और क्या उनका चरित्र है ॥ ४५॥

मू. यत्स्वभावाचसादेवीयत्स्वरूपायदुद्धवा । तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामि ततो ब्रह्मविदां वर । ४६॥

टी. मैं उनका स्वरूप और स्वभाव आप से सुना चाहता हूँ किन्तु पूर्वक कह सुनाइये ॥ ४६॥

मू. ऋषिरुवाच ॥ नित्यैव सा जगन्मूर्तिस्तथा सर्वमिदं ततं । तथापि तत्समुत्पत्तिर्वह्नुधा श्रूयतां मम ॥ ४७॥ ४७॥ ४७॥ ४७॥

टी. ऋषि बोले कि वह भगवती नित्या और जगत् मूर्ति है यह हम सम्पूर्ण जगत् उन्हीं का बनाया हुआ है और उनकी उत्पत्ति और चरित्र बहुत तरह के हैं संक्षेप में कहता हूँ सुनो ॥ ४७॥

मू. देवानां कार्यसिद्ध्यर्थमाविर्भवति सा यदा । उत्पन्नेति तदालोकैस्तानित्वाप्यभिधीयते ॥ ४८॥

टी. कि जब देवता लोग अपना कार्य सिद्ध होने के वास्ते उनकी सृष्टि करते हैं तब वह उन लोगों का कार्य सिद्ध करने के वास्ते लोक में उत्पन्न होती है परन्तु तब भी वह नित्या कहलाती है ॥ ४८॥

मू. योगनिद्रां यदा विष्णुर्जगत्प्रेकार्णवीकृते । आस्तीर्य शेषमभजत्कल्याणं ते भगवान् प्रभुः ॥ ४९॥

टी. कल्याण के जन्म में जगत् प्रेकार्ण हो जाने पर जब विष्णु भगवान् शेष शय्या के ऊपर योगनिद्रा में प्राप्ति हुये यानी सो गये ॥ ४९॥

मू. तदा द्वावसुरीघोरौ निरव्यातौ मधुकैरभौ । विष्णुर्कार्णमलोद्धृतौ हन्तुं ब्रह्माणमुद्यतौ ॥ ५०॥

टी. तब उनके कान के मेल से दो असुर महाबोर मधु और कैरभ नाम उत्पन्न होकर ब्रह्मा के माले के वास्ते बुत्ते द हुये ॥ ५०॥

मू. सनाभिकमलेविष्णोःस्थितो ब्रह्माप्रजापतिः।
दृष्टातावसुरौचोग्रीप्रसुप्तञ्चजनार्दनं ॥ ५१ ॥

टी. तब ब्रह्मा ने जो विष्णु भगवान् के कमल नाभि में स्थित थे उन दोनों उग्र असुरों को देखा और जनार्दन विष्णु भगवान् को सोया हुआ देखकर ॥ ५१ ॥

मू. तुष्टावयोगनिद्रान्तामेकाग्रहृदयस्थितः। वि-
बोधनार्थाय हरेर्हरिनेत्रकृतालयां ॥ ५२ ॥

टी. उनके जागने के बाद विष्णु भगवान् के नेत्र में जो योगनिद्रा बास किये हुये थीं उन्हीं की स्तुति जी लगाकर करने लगे ॥ ५२ ॥

मू. विश्वेश्वरीजगद्धात्रीस्थितिसंहारकारिणीं।
निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलान्तेजसः प्रभुः ॥ ५३ ॥

टी. अर्थात् जो भगवती योगनिद्रा विश्वेश्वरी संसार की स्थिति और संहार करने वाली और अनुल तेज भगवान् विष्णु की शक्ति हैं ॥ ५३ ॥

मू. ब्रह्मोवाच ॥ त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं ह्रिवषट्
कारः स्वरत्मिका। सुधा त्वमक्षरे नित्ये वि-
धामात्रात्मिका स्थिता ॥ ५४ ॥ ५४ ॥ ५४ ॥

टी. उनकी स्तुति इस तरह से ब्रह्माजी करने लगे कि हे भगवती स्वाहा और स्वधा और वषट्कार स्वरूपिणी आप ही हैं और स्वर स्वरूपिणी और सुधा आप ही हैं और नित्य अक्षरों में तीन तरह से मात्रा स्वरूपिणी होकर आप विराजमान हैं ॥ ५४ ॥

मू. अर्द्धमात्रास्थितानित्यायानुच्चार्या विशेषतः।
त्वमेव सा त्वं सा वित्री त्वं देवि जननी परा ॥ ५५ ॥

टी. और अर्द्ध मात्रा रूपिणी होकर आप स्थित रहती हैं और आप नित्या हैं जिसको विशेष पूर्वक कोई उच्चारण नहीं कर सकता है वह आप ही हैं और शक्ति और हे देवी सब की परम जननी आप ही हैं ॥ ५५ ॥

मू. त्वयैव धार्यते सर्वं त्वयैतत्सृज्यते जगत् । त्व
यैतत्पाल्यते देवित्वमस्यन्ते च सर्वदा ॥ ५६ ॥

टी. सब जगत् की धारण और सृष्टि और पालन करने वाली और ज-
न्त में सब का नाश करने वाली भी आप ही हैं ॥ ५६ ॥

मू. विसृष्टौ सृष्टिरूपा त्वं स्थितिरूपा च पालने । त-
या संहतिरूपान्ते जगतोऽस्य जगन्मये ॥ ५७ ॥

टी. और हे जगन्मये आप संसार की सृष्टि में सृष्टि रूपा और पालन में स्थि-
ति रूपा और फिर इसी तरह नाश करने में संहार रूपा हैं ॥ ५७ ॥

मू. महाविद्या महामाया महामेधा महासृतिः । म-
हामोहा च भवती महादेवी महासुरी ॥ ५८ ॥

टी. और महाविद्या और महामाया और महामेधा और महासृति और म-
हामोह और भगवती और महादेवी और महासुरी आप ही हैं ॥ ५८ ॥

मू. प्रकृतिस्त्वच्च सर्वस्य गुणत्रयविभाविनी । का-
लरात्रिर्महारात्रिर्मोहरात्रिश्च दारुणा ॥ ५९ ॥

टी. फिर सब किसी की त्रिगुण मयी प्रकृति और दारुणा अर्थात् भयावनी-
कालरात्रि और महारात्रि और मोहरात्रि आप ही हैं ॥ ५९ ॥

मू. त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं ह्रीस्त्वं बुद्धिर्बोधलक्षणा ।
लज्जापुष्टिस्तथा तुष्टिस्त्वं शान्तिः शान्तिरेव ॥ ६० ॥

टी. और श्री और ईश्वरी और ह्री अर्थात् लज्जा वीर्य और
बुद्धि और बोध और लक्षणा और लज्जा यानी लाज और तुष्टि और
पुष्टि और शान्ति और हान्ति भी आप ही हैं ॥ ६० ॥

मू. खड्गिनी शूलिनी घोरगदिनी चक्रिणी तथा । श-
ङ्खिनी चापिनी वाणभुशुण्डी परिघायुधा ॥ ६१ ॥

टी. और खड्गिनी और शूलिनी और घोर अर्थात् एक हाथ में मुण्ड
धारण किये भयंकारी हो और गदिनी और चक्रिणी और शङ्खिनी और

चापिनी और बाण और मुण्डी और परिघ ये सब आयुध महा कालीरूप धारण करके दशै भुजा में आप रखती है ॥ ६१ ॥

मू. सौम्या सौम्यतराशेषसौम्येभ्यस्त्वतिसुन्दरी ।

परापराणां परमात्ममेव परमेश्वरी ॥ ६२ ॥

टी. और आप सौम्या हैं और सौम्यतरा हैं और सब सौम्यों से अतीव सुन्दरी हैं और सब से परे और परमा और परम परमेश्वरी हैं इस से आप परमेश्वरी कहलाती हैं ॥ ६२ ॥

मू. यच्च किञ्चित्कचिदस्तु सदसद्वाखिलात्मके ।

तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं तूयसे तदा ॥ ६३ ॥

टी. और हे अखिलात्मके जहाँ पर जो कुछ सत या असत वस्तु है उनमें जो शक्ति है वह आप ही हैं तो फिर आपकी स्तुति कहाँ तक की जाय ॥ ६३ ॥

मू. यया त्वया जगत्सृष्टा जगत्पातानियोजगत् ।

सोऽपि निद्रावशं नीतः कस्त्वांस्तोतुमिहेश्वरः ॥ ६४ ॥

टी. और जिस महामाया शक्ति से विष्णु भगवान् जगत् की उत्पत्ति और पालन और नाश करते हैं वह भी इस समय निद्रा के बश हैं तब तुम्हारी स्तुति कौन कर सक्ता है ॥ ६४ ॥

मू. विष्णुः शरीरग्रहणमहमीशान एव च । करिता

स्तोयताः तस्त्वांकः स्तोतुं शक्तिमान् भवेत् ॥ ६५ ॥

टी. क्योंकि विष्णु और हम और महादेव आपही की आज्ञा से शरीर धारण करते हैं तो आपकी स्तुति करने की किसको सामर्थ्य है ॥ ६५ ॥

मू. सात्वमित्यं प्रभावैः स्वरुदौर्देविसंस्तुता । मो

हयेतौ दुराधर्षावसुरौ मधुकैटभौ ॥ ६६ ॥

टी. और हे देवी आपका इस तरह उदार प्रभाव जो रक्षा साधारण माहात्म्य है उसी माहात्म्य से आपकी स्तुति होती है हे महामाया

आप इन दोनों दुराधर्म मधुकैटभ असुरों को मोह में प्राप्ति कर दीजिये ॥ ६६ ॥

मू. प्रबोधश्च जगत्स्वामी नीयतामच्युतो लघु । वो-
धश्चक्रियतामस्य हन्तुमेतौ महासुरौ ॥ ६७ ॥

टी. और आप जल्दी से जगत् स्वामी अच्युत भगवान् विष्णु को ज-
गा कर इन महा असुरों को मारने के वास्ते मुत्तैद कीजिये ॥ ६७ ॥

मू. ऋषिरुवाच ॥ एवं स्तुता तदा देवीतामसी
तत्र वेधसा । विष्णोः प्रबोधनार्थो यनिहन्तुं
मधुकैटभौ ॥ ६८ ॥ ६८ ॥ ६८ ॥ ६८ ॥

टी. ऋषि कहते हैं कि हे महाराज सुरध इस तरह उस समय वि-
ष्णु भगवान् के जगाने और मधुकैटभ असुर के मारने के वास्ते ब्र-
ह्माजी ने जब ताभसी महाकाली की स्तुति की ॥ ६८ ॥

मू. नेत्रास्य नासिका बाहु हृदयेभ्यस्तयो रसः । निर्ग-
म्य दर्शने तस्थौ ब्रह्माणोऽव्यक्तजन्मनः ॥ ६९ ॥

टी. तब वह महामाया विष्णु भगवान् के नेत्र और नासिका और
बाहु और हृदय और छाती से निकल कर ब्रह्माजी को दर्शन देने
के वास्ते बाहर खड़ी होगई ॥ ६९ ॥

मू. उत स्थौ च जगन्नाथस्तथा मुक्तो जनार्दनः । ए-
कार्णवे हि शयनात्ततः सदृशे चतौ ॥ ७० ॥

टी. योग निद्रा महामाया के बाहर निकलने से विष्णु भगवान् शेष
शय्या से उठ बैठे और उस एकार्णव में उन दोनों असुरों को दे-
खा और उन दोनों ने भी इनको देखा ॥ ७० ॥

मू. मधुकैटभौ दुरात्मानावतिवीर्यपराक्रमौ । क्रो-
धरक्तेक्षणावन्तु ब्रह्माणं जनितोद्यमौ ॥ ७१ ॥

टी. फिर वह दोनों असुर दुरात्मा महाबली पराक्रमी मधुकैटभ क्रोध से आं-
खें लाल किये हुये जब ब्रह्माजी को मारने पर मुत्तैद हो गये ॥ ७१ ॥

मू. समुत्थाय ततस्ताभ्यां युयुधे भगवान् हरिः । प-
ञ्चवर्षसहस्राणि बाहुप्रहराणि विभुः ॥ ७२ ॥

टी. तब भगवान् विष्णु उन दोनों असुरों के साथ बाहुयुद्ध करने लगे और वह बाहु युद्ध पाँच हजार वर्ष तक होता रहा ॥ ७२ ॥

मू. तावप्यतिबलोन्मत्तौ महामाया विमोहितौ ।
उक्तवन्तौ वरोऽस्मत्तो वियता मितिकेशवं ॥ ७३ ॥

टी. तब वह मधुकैटभ महामाया की माया में मोहित होकर केशव भगवान् से बोला कि हम दोनों तुम्हारी इस युद्ध से बहुत प्रसन्न हुए हैं अब तुम हमसे वर माँगो जो माँगेंगे हम देंगे ॥ ७३ ॥

मू. भगवानुवाच ॥ भवेतामद्य मे तुष्टौ मम व-
ध्यानुभावपि । किमन्येन वरेणात्र एताव-
द्धितं मम ॥ ७४ ॥ ७४ ॥ ७४ ॥ ७४ ॥

टी. विष्णु भगवान् ने कहा कि जो तुम दोनों प्रसन्न होकर मुझे वर देना चाहते हो तो मैं यही वरदान चाहता हूँ कि तुम दोनों मेरे हाथ से मारे जाव ॥ ७४ ॥

मू. ऋषिरुवाच ॥ वञ्चिताभ्यामिति तदा स-
र्वं मापो मयं जगत् । विलोक्य ताभ्यां ग-
दितो भगवान् कमलैक्षणः ॥ आवां जहि
नयत्रोर्वी सलिलेन परिप्लुता ॥ ७५ ॥

टी. मेधा ऋषि कहते हैं कि हे राजासुरय इस तरह मधुकैटभ विष्णु भगवान् के वाक्य फन्द में आकर और सब जगत् को जलामय देवकर विष्णु भगवान् से बोला कि एवमस्तु पर जहाँ जल न हो वहाँ पर हमको मारो ॥ ७५ ॥

मू. ऋषिरुवाच ॥ तथेत्युक्त्वा भगवता शंख-
चक्रगदामृता । कृत्वा चक्रेण वै छिन्ने

जघने शिरसीतयोः ॥ ७६ ॥ ७६ ॥ ७६ ॥

टी. ऋषि कहते हैं कि इस तरह मधु कैटभ के कहने पर वह शंख चक्र गदा धारी विष्णु भगवान् ने बहुत अच्छा कह कर अपनी जोंघ को बिना पानी की जगह समझ कर उसका माया उसी जोंघ पर रख कर सुदर्शन चक्र से काट डाला - विष्णु भगवान् का शरीर पंचतत्त्व से नहीं बना है शुद्ध मायाकृत है ॥ ७६ ॥

मृ. एवमेषां मुत्पन्ना ब्रह्मणा संस्तुता स्वयं ।
भावमस्या देव्यास्तुभूयः शृणु वरामिते ॥ ७७ ॥

टी. इस तरह वह दश भुजा वाली महाकाली उत्पन्न हुई हैं जिन की स्तुति ब्रह्माजी ने की है अब फिर वही त्रिगुण भई महालक्ष्मीजी का अवतार हुई हैं सो कहता हूँ सुनो ॥ ७७ ॥

इति श्री मार्कण्डेय पुराणे
सावर्णि के मन्वन्तरे
देवी माहात्म्ये मधु
कैटभ वधः
नाम ॥

॥ ८१ ॥



اڈھیاے اکیاسی

دیسی مانتھم

یہ مانتھم تیرہ اڈھیاے تک ہے
جسکا اکثر لوگ خلوص دل سے پاٹھ
کرتے ہیں اور دین و دنیا کی مرادین
پاتے ہیں

۱۔ مارکندے جی کہتے ہیں کہ ہے کرو شکی اب میں ساوَرَن نام سورج کے لڑکے
جو آٹھویں منٹ ہونگے انکی میدایش کا حال مفصل کہتا ہوں۔ ۲۔ یعنی جس طرح مہا مایا کی
کریا سے وہ منو نتر کے مالک اور ساوَرَن نام سے مشہور ہوئے اسکی کیفیت مفصل کہتا
ہوں سنو۔ ۳۔ کہ پہلے سواروچیک منو نتر میں سواروچیک من کے لڑکے راجا چیت کے پیش
میں سترتھ نام تمام روئے زمین کے راجا ہوئے۔ ۴۔ چنانچہ وہ راجا رعیت کو مثل اپنے
لڑکے کے ہر طرح سے پرورش کرتے کہ اسی درمیان میں گولا پڑھو نسی راجا لوگ دشمن ہو کر
ان کے ملک پر چڑھ آئے۔ ۵۔ اُس وقت راجا سترتھ اور گولا پڑھو نسی راجاؤں سے بڑی
لڑائی ہوئی ہر چند اُس لڑائی میں راجا سترتھ سب طرح سے زور آور تھے لیکن انکی بد قسمتی
و زوال اقبال کی وجہ سے دشمنوں سے فتح پاکر کل راج انکا اپنے قبضہ میں کر لیا۔
گولا ایک مقام کا نام ہے جہاں دوسری دار السلطنت سترتھ کی تھی اُس دار السلطنت کو
چند شخصوں نے مستحق ہو کر اپنے قبضہ میں کر لیا تھا اس وجہ سے اُن لوگوں کا نام گولا بدھو
ہوا۔ ۶۔ غرض کہ راجا سترتھ اُس سلطنت سے مدخل ہو کر اپنے شہر کی دار السلطنت میں آکر
اُسی سلطنت کے متعلق مقامات کا راج کرنے لگا لیکن وہاں بھی گولا پڑھو نسی لوگوں نے

چین نہ لینے دیا اس راج کو بھی چین لیا۔ ۸۷ اس حالت میں ستر کے وزیر و افسر
لوگ راجا ستر کے کو کمزور اور بے قابو سمجھ کر دشمن کی طرف تلکے اور ان کے خزانہ اور فوج کو
اپنے اختیار میں کر لیا۔ ۸۸ جب راجا ستر کے وزیروں اور اہلکاروں نے خزانہ پر
قبضہ کر کے حکم بھی انکا اٹھا دیا تب راجا ستر نے مشر مندہ ہو کر شکار کے بہانہ سے تنہا
گھوڑے پر سوار ہو کر ایک دشوار گزار جنگل میں چلا گیا۔ ۸۹ وہ جنگل بےش اور تنہی اور مین
اور ان کے سکھوں سے پر ہمار ہو رہا تھا ایسے پر ہمار جنگل میں میدھا نام ایک برآمدہ شخص
نظر آیا۔ ۹۰ اس سختان پر جا کر راجا ستر نے اپنے لگا راجا کو دیکھ کر میدھا میں نے بہت اور
کیا میں نے آدر کرنے سے راجا کو دنوں تک وہاں رہا۔ ۹۱ ایک دن راجا اپنے شہر اور رعایا کو
محبت کی وجہ سے یاد کر کے سوچنے لگا کہ میں تو اپنے شہر کو جو بزرگوں کا آباد کیا ہوا تھی
یہاں چلا آیا اب بغین معلوم کہ میرے ادھر می دبے ایمان نوکر جا کر لوگ میری رعایا کی پرویش
اور انصاف کرتے ہیں یا نہیں۔ ۹۲ اور یہ بھی نہیں جانتا کہ میرے مست یا مٹی کو قیلاً
اور داروغہ دانہ پانی دیتے ہیں یا نہیں کیونکہ اب وہ سب میرے دشمن کے اختیار میں ہیں اگر
جو کھون مارتے ہوں تو کچھ عجب نہیں۔ ۹۳ مائے افسوس جو لوگ ہر روز میرے پاس رہ کر
میری خوشی کے خواہاں تھے اور ہر طرح کی خیر خواہی کیا کرتے تھے وہی لوگ اب اپنی اوقات میری
کے واسطے دو میرے راجاؤں کی خدمت کرتے ہوئے ۹۴ اور جس خزانہ کو میں نے بری محنت
سے جمع کیا تھا اسکو میرے نوکر چاکروں نے بے موقع اور فضولیات میں خرچ کر کے برباد کر دیا
ہوگا۔ ۹۵ راجا انھیں باتوں کے سوچ میں تھا کہ اس مقام کے مقل ایسا اجنبی شخص کو
دیکھا۔ ۹۶ تو اس سے پوچھا کہ تم کون ہو اور کس واسطے یہاں آئے ہو اور رنجیدہ دل کس واسطے
ہو۔ ۹۷ یہ بات سن کر وہ شخص بڑے ادب سے راجا کو پرنام کر کے کہنے لگا کہ۔ ۹۸ سہادی
میرا نام ہے اور قوم کا بیس اور دھنی کا لڑکا ہوں میری استری اور لڑکے نے میرا سب دھن لیکر
مجھ کو گھر سے نکال دیا ہے۔ ۹۹ چونکہ میری استری اور میرے لڑکے نے مجھ کو نردھن کر کے
گھر سے نکال دیا اسوجہ سے میں پریشان ہو کر اس جنگل میں چلا آیا میرے بھائی بندوں نے
بھی کبھی انصاف کی راہ سے میری استری اور لڑکے کو نہ سمجھایا بلکہ ان لوگوں نے بھی مجھ کو چھوڑ
دیا۔ ۱۰۰ اب میں تو اس جنگل میں ہوں مجھ کو اپنی استری اور لڑکے اور بھائی بندوں کی کچھ خبر
ہیں۔ ۱۰۱ کہ دس لوگ خیر و عافیت سے ہیں یا نہیں اور میرے لڑکے کا کاروبار اچھی طرح سے

قتل حاصل ہوا اور سب کسی کے معاملات علحدہ علحدہ ہیں - ۳۵ دیکھیے کسی جانور کو تو نہ
 نہیں سوچتا اور کسی کو رات کی وقت نہیں سوچتا اور کسی کو دن اور رات ہر وقت سوچتا
 ہوا اور کسی کو کی وقت کچھ نہیں سوچتا - ۳۶ پس صرف آدمی ہی کو عقل نہیں ہر بلکہ جانور
 کے بھی عقل ہے - ۳۷ اور جو عقل حیوان میں ہو وہ آدمیوں میں بھی ہے اس سے دونوں
 با عقل ہیں - ۳۸ دیکھیے سب پرندوں کو کہ بھوک لگنے کے وقت جانتے ہیں کہ بھوک کو کھلا
 دینے سے ہماری بھوک نہ جاگی پر تو بھی بھوک میں پھنس کر اپنی غراک بچو لگو کھلا دیتے ہیں
 اور آپ کو کھتے رہ جاتے ہیں - ۳۹ اسے مہاراج اسی طرح آدمی بھی اپنے فائدہ کی امید پر
 اپنے لڑکوں کو پالتے ہیں کیا آپ نہیں دیکھتے کہ سب کو عقل حاصل ہے - ۴۰ پر تو بھی سنسار
 کے پالنے والے جو پریشور ہیں انکی مہاراجا کے پر بھاو سے آدمی لوگ بھول کر مٹھ (مٹھت) کے
 گنہگار بن کر پڑتے ہیں - ۴۱ اور مہاراجا کے پر بھاو میں کچھ سندھیدہ کرنا نہ چاہیے کیونکہ یہ
 جو کہ مٹھ مٹھایا جلت پت بٹن بھگوان کی سی جنگلی مایا میں سب جگت مٹھت ہو رہا ہے -
 ۴۲ مہاراجا دیسی گیانیوں کے بھی دل کو کھینچ کر مٹھ میں پھنسا دیتی ہے - ۴۳ اور وہی
 مٹھایا بھگوانی تمام دنیا کو پیدا کرتی ہے اور وہی مٹھایا خوش ہو کر بردان دیتی ہے اور آدمیوں کو
 گیان دے کر مٹھت بھی دیتی ہے - ۴۴ اور وہی بھگوانی پریم بدیا سوروپ ہے اور وہی مٹھت
 کی دینے والی اور ہمیشہ قائم ہے اور سنسار کے بندھن کی کارن اور سب ایشورون کی ایشوری
 ہے - ۴۵ یہ سنسار راجا مٹھت بولا کہ اسے مہاراج وہ دیسی کون ہے جسکو آپ مٹھایا کہتے ہیں
 اور کس طرح اسکی پیدائش ہو اور کیا اسکا چرتر ہے - ۴۶ اور کیا سنسار اور کیا سوروپ
 ہے مفصل کہ سنسار ہے - ۴۷ رکھنے کے لئے اسے راجا وہ بھگوانی ہمیشہ قائم اور جگت کا راجا
 ہے - سب جگت اسی کا بنایا ہوا ہے اور اسی پیدائش اور چرتر بہت طرح کے ہیں وہ میں کہتا ہوں
 سنو - ۴۸ کہ جب جب دیوتا لوگ اپنی مراد حاصل ہونے کے واسطے اسکی استھت کرتے
 ہیں تب وہ مٹھایا انھوں کی مراد پوری کرنے کے واسطے اس کو بنایا میں پیدائش ہوتی ہے -
 ۴۹ مٹھت کے اخیر میں جگت کے ناش ہو جانے پر جب بٹن بھگوان نے شنیشیتیا کے اوپر
 جو کہ دیوتا میں اگر نہیں کیا - ۵۰ تب انکے کان کے نیل سے دو امتر بھیا نک روپ مٹھ
 اور کیٹب نام پیدائش کو مہاجی کو مارنے کے واسطے طیار ہوئے - ۵۱ اسوقت مٹھ
 نے جو بٹن بھگوان کے ناچ کر کل میں تھے مٹھ اور کیٹب دو راجھوں کو دیکھا اور بٹن بھگوان کو

سوتے ہوئے دیکھ کر ۵۲ آنکے جگانے کے واسطے بھگوتی جوگ نڈرا جو بشن بھگوان کی آنکھوں
 میں تھین دل لگا کر انکی سہت کرنی لگی ۵۳ یعنی بھگوتی جوگ نڈرا پشوریشوری جو سنسار کو قائم
 اور نابود کرنیوالی اور بے انتہا بیج بشن بھگوان کی شکست ہیں - ۵۴ انکی استت اس طرح
 کرنے لگے کہ ہے بھگوتی سوامی اور سودھا اور کھٹ کار کارو پ آپ ہی ہیں اور آپ سور روپ
 اور سندھا ہیں اور نت اکچھون میں تین طرح کی مائتارو پ ہو کر آپ براجمان ہیں -
 ۵۵ اور آرتھ مائتارو پ ہو کر قائم ہیں آپکا اچارن جیسا کہ چاہیے کوئی نہیں کر سکتا سادھوی
 اور سکی مائتارو پ ہیں - ۵۶ سب جگت کی دھارن اور مرشٹ اور پالن کرنیوالی اور آخر کو
 سب کا ناش کرنیوالی بھی آپ ہی ہیں - ۵۷ ہے جگت نے آپ سنسار کی مرشٹ میں
 مرشٹ روپ اور پالن میں استت روپ اور ناش کرنے میں سنگھار روپ ہیں -
 ۵۸ اور مہا بڑیا اور مہا مایا اور مہا اسمرت اور مہا مونا اور بھگوتی اور مہا دیوی
 اور مہا ستری آپ ہی ہیں - ۵۹ اور سب کیسی ترگن مہی پرکرت اور بھیکری کال راتری
 اور مہا راتری اور مہا راتری آپ ہی ہیں - ۶۰ اور شرعی اور ایشوری اور بھیکارو پنی
 اور بوڈھ اور لچھن اور بڑھ اور پٹھ اور شانت اور چھانت آپ ہی ہیں -
 ۶۱ اور کھڑک اور شول اور گدا اور سنگھ اور چکر اور چاب اور بان اور بھٹ اور پرگمہ اور سب
 ہتھیار و نگو کالی روپ ہو کر دنو بھجیا میں آپ دھارن کیے ہوئے رہتی ہیں - ۶۲ اور آپ
 سب سندریوں سے سندری ہیں اور سب سے بڑھکر ہیں اور پرم پریشوری ہیں - ۶۳ اور
 ہے سبکی آتانت لہلاست جو کچھ جہان کہیں ہو انکی شکست آپ ہی ہیں تو پھر آپ کی استت
 کوئی کیونکر کر سکتا ہے - ۶۴ جس مہا مایا کی شکست سے بشن بھگوان جگت کو پیدا اور پالن
 ناش کرتے ہیں وہ سور ہے ہیں بت آپکی استت کون کر سکتا ہے - ۶۵ اور جبکہ بشن اور ہم
 اور مہا دیو آپ ہی کے حکم سے شریر دھارن کرتے ہیں تو آپ کی استت جیسا کہ چاہیے کیونکر
 کر سکتے ہیں - ۶۶ اے دیوی آپ کے اس طرح کے اوار پر بھاو میں جو سادھارن پر بھا
 کر نیکا مائتارو پنی مائتارو پ سے آپ کی استت ہوتی ہے تو اب اے مہا مایا ان دونوں اسر
 یعنی مڑھ اور کیتھ کو اپنی مایا میں بھلا لیجیے - ۶۷ اور جلدی سے جگت کے سوامی بشن بھگوان
 کو کران دونوں راجھسون کے مارنے کے واسطے مستعد کر دیجیے - ۶۸ میدھا رکھ کتے
 ہیں کہ اے راجا سر تو جب برٹھاجی نے اس طرح بشن بھگوان کے جگائے اور مڑھ اور کیتھ کے

मू. ऋषिरुवाच ॥ देवासुरमभूद्युद्धं पूर्णम-
व्यशतंपुनः । महिषेसुराणामधिपेदेवा
नाञ्चपुरन्दरे ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

टी. मेधा ऋषि कहते हैं कि हे सुख पूर्वकाल में असुरों का
स्वामी महिषासुर था और देवतों के स्वामी इन्द्र थे उस समय
देवतों और असुरों में सौ वर्ष तक युद्ध हुआ ॥१॥

मू. तत्रासुरैर्महावीर्यैर्देवसैन्यं पराजितं । जि-
त्वा च सकलान् देवानिन्द्रो भून्महिषासुरः ॥ २ ॥

टी. उस युद्ध में बड़े बड़े बली राक्षसों ने सम्पूर्ण देवतों को जीत
लिया तब महिषासुर आप इन्द्र हुआ ॥२॥

मू. ततः पराजिता देवाः पद्मयोनिं प्रजापतिं । पुर-
स्कृत्य गतास्तत्र यत्रेश्वर रुद्रध्वजौ ॥ ३ ॥

टी. तब देवता लोग पराजित होकर ब्रह्मा प्रजापति के पास गये
और फिर ब्रह्माजी को आगे कर जहाँ विष्णु भगवान् और म-
हादेवजी थे वहाँ गये ॥३॥

मू. यथावृत्तं तयोस्तद्वन्महिषासुरचेष्टितं । त्रिद-
शः कथयामासुर्देवाभिभवविस्तारं ॥ ४ ॥

टी. और उनसे युद्ध का सब वृत्तान्त जिस तरह महिषासुर विजय पा
कर इन्द्र हुआ वह सब देवतों ने कह सुनाया ॥४॥

मू. सूर्येन्द्राग्न्यनिलेन्दूनां यमस्य वरुणास्य च ।
अन्येषाञ्चाधिकारान्सस्य मेवाधितिष्ठति ॥ ५ ॥

टी. और कहा कि हे भगवन् सूर्य और इन्द्र और अग्नि और
वायु और चन्द्रमा और यम और वरुण आदि सब देवतों का अ-
धिकार महिषासुर आप कर रहा है ॥५॥

मू. स्वर्गान् निराकृताः सर्वे तेन देवगणाभुवि ।

विचरन्ति यथा मर्त्या महिषेण दुःसत्सना ॥ ६ ॥

री. और सब देवतों को उसने वहाँ से निकाल दिया अब देवता लोग मनुष्यों की तरह पृथ्वी में मारे मारे फिरते हैं ॥ ६ ॥

मू. एतदः कथितं सर्वममरविचेष्टितं । शरणाज्वप्रपन्नाः स्तोवधस्तस्य विचिन्त्यतां ॥ ७ ॥

री. हे महाराज महिषासुर के उन्नात का हाल विस्तार पूर्वक आप को कह सुनाया और हम लोग आपकी शरणागत हैं अब निमंत्रण बहुराक्षस मारा जाय सो कीजिये ॥ ७ ॥

मू. इत्थं निशम्य देवानां वचांसि मधुसूदनः । चकार कोपं शंभुश्च भृकुटी कुदिलाननौ ॥ ८ ॥

री. देवतों का यह वचन सुनकर महादेवजी और विष्णु भगवान् बड़े कोप को प्राप्त हुए कि जिसमें भृकुटी और मुख तमतमा गया ॥ ८ ॥

मू. ततो गीर्वाणोऽप्युपसृज्य चक्रिणो वदनात्ततः । निश्चक्राम महतेजो ब्रह्मणाः शंकरस्य च ॥ ९ ॥

री. तत्पश्चात् उसी कोप के व्यवस्था में भगवान् विष्णु के मुख से एक महातेज निकला फिर उसी तरह ब्रह्माजी और महादेवजी के मुख से भी निकला ॥ ९ ॥

मू. अन्येषाञ्चैव देवानां शक्रादीनां शरीरतः । निर्गतं सुमहतेजस्तच्चैक्यं समगच्छत् ॥ १० ॥

री. फिर इन्द्रादि जितने देवता लोग वहाँ पर थे उन सब के शरीर से भी जो तेज निकला वह सब इकट्ठा हो गया ॥ १० ॥

मू. अतीव तेजसः कूटं ज्वलन्तमिव पर्वतम । दृशुस्ते सुरास्तत्र ज्वाला व्याप्तिरिगन्तरं ॥ ११ ॥

री. फिर उस तेज को देवता लोग न्या देखते हैं कि वह तेज जल ते हुवे पहाड़ के समान हो गया और ज्वाला उसकी सम्पूर्ण दिशा

नें में झागया ॥ ११ ॥

मू. अतुलतततेजःसर्वदेवशरीरजम् । एकस्य
तदभूज्वारीयाप्तलोकत्रयं त्विषा ॥ १२ ॥

टी. फिर वही अतुल तेज जो सम्पूर्ण देवतों के अङ्ग से निकला
था एक स्त्री का रूप बन गया जो कि उत ज्वाला में रजोगुण ब्र-
ह्मा और सतोगुण विष्णु और तमोगुण महादेवजी का तेज भी इ-
कट्ठा हो गया था इस कारण से वह स्त्री त्रिगुणा अष्टादश भुजा से
प्रकट हो कर लोक में महा लक्ष्मी कहलाई ॥ १२ ॥

मू. यदभूच्छांभवंतेजस्तेनाजायततन्मुखं । या-
ग्येनचाभवन्केशावाहवोविष्णुतेजसः ॥ १३ ॥

टी. महादेवजी के तेज से उन महालक्ष्मीजी का मुख श्वेत और यम
के तेज से शिर के बाल व्याम रूप और विष्णु भगवान् के तेज से
व्याम रङ्ग उनकी अष्टादश भुजा हुई ॥ १३ ॥

मू. सौम्येनस्तनयोर्युगममध्यचैन्द्रेणचामवत् । वा-
रुणेनचजंधोरुनितम्बस्तेजसाभुवः ॥ १४ ॥

टी. और चन्द्रमा के तेज से दोनों स्तन गोरे और इन्द्र के तेज से
शरीर का मध्य भाग रक्त वर्ण हुआ और वरुण के तेज से जाँघ और
ऊरु और ऐंध्यी के तेज से नितम्ब हुआ ॥ १४ ॥

मू. ब्रह्मास्तेजसापादौतदङ्गुल्योर्कतेजसा । वसू-
नाच्चकराङ्गुल्यः कौबेरेणचनासिका ॥ १५ ॥

टी. और ब्रह्मा के तेज से दोनों चरण लाल और सूर्य के तेज से च-
रणों की अङ्गुलियां हुई और वसुओं के तेज से दोनों हाथों की अङ्गुलि-
याँ और कुबेर के तेज से उनकी नासिका हुई ॥ १५ ॥

मू. तस्यास्तुदंताःसंभूताःप्राजापत्येनतेजसा । नय-
नत्रितयंजनेतथापावकतेजसा ॥ १६ ॥

री. और दक्ष प्रजापति के तेज से सब दाँत और जग्न के तेज से
तीन आँखें उनकी हुई ॥ १६ ॥

मू. भुवोचसन्धयोस्तोजःअनणावनिलस्यच। अन्ये
धाञ्चैव देवानां संभवस्तेजसां शिवा ॥ १७ ॥

टी. और दोनों सन्ध्या के तेज से उनकी दोनों भुजों और वा-
यु के तेज से दोनों कान हुये तात्पर्य यह है कि इसी तरह सब
देवताओं के तेज से वह महालक्ष्मी शिवा प्रकट हुई ॥ १७ ॥

मू. ततः समस्त देवानां तेजो राशिसमुद्भवाम्। तां
विलोक्य मुदं प्रापुर्मम महिषादिताः ॥ १८ ॥

टी. तत्पश्चात् वह सब देवता लोग जो महिषामुर के नाश से
आत्यन्त पीड़ित हो रहे थे उस तेजो राशि से उत्पन्न महाल-
क्ष्मी जी को देखकर अति हर्षित हुये ॥ १८ ॥

मू. शूलं शूलादिनिष्कष्य ददौ तस्यै पिनाकधृक्।
चक्रं च दत्तवान् कृष्णः समुत्पात्य स्वचक्रतः १९

टी. उस समय महादेवजी ने अपने शूल से एक दूसरा शूल और भगवान्
श्रीकृष्णचन्द्र ने अपने चक्र से एक चक्र उत्पन्न करके उनको दिया ॥ १९ ॥

मू. शंसञ्च वरुणः शक्तिं ददौ तस्यै हुताशनः। नारु
तो दत्तवांश्चापं वाणपूर्णे तथैषुधी ॥ २० ॥

टी. और वरुण ने एक ब्रह्म और अग्नि ने अपनी शक्ति और वायु ने ध-
नुष और तीरों से भरे हुये दो तर्कष उनको दिये ॥ २० ॥

मू. वज्रमिन्द्रः समुत्पात्य कुलिशादमराधिपः। द-
दौ तस्यै सहस्राक्षो धातुमैरावताङ्गजान् ॥ २१ ॥

टी. और देवताओं के पति इन्द्र ने अपने वज्र से एक वज्र और ऐरावत
हाथी से उतारकर घाटा महालक्ष्मी जी को दिया ॥ २१ ॥

मू. कालदाडाय मौदार्यं पाशं चाम्बुपतिर्ददौ।

मू. प्रजापतिश्चाक्षमालांददौ ब्रह्माकमण्डलं ॥ २२ ॥

टी. और यमराज ने अपने काल दाढ़ से एक दाढ़ और वरुण ने फाँस और दक्ष प्रजापति ने अक्षमाला और ब्रह्माजी ने कमण्डलु दिया ॥ २२ ॥

मू. समस्तरोमकूपेषु निजरश्मीन् दिवाकरः । कालश्च दत्तवान् खड्गं तस्याश्चर्मचनिर्मलम् ॥ २३ ॥

टी. और सूर्य ने उनके सम्पूर्ण रोमकूपों में अपनी किरण भर दी और काल ने खड्ग और एक अमल ढाल दिया ॥ २३ ॥

मू. क्षीरौदश्यामलं हारमजरे च तथा म्वरे । चूडामणिं तथा दिव्यं कुण्डले कटकानि च ॥ २४ ॥

टी. और क्षीरसमुद्र ने एक बहुत अच्छा हार और दिव्याम्बर और दिव्य चूडामणि अर्थात् शिर के भूषण के वास्ते रत्न दिया और दोनों कानों के कुण्डल और पहुँची ॥ २४ ॥

मू. अर्द्धचन्द्रं तथा शुभ्रं केयूरान्सर्वबाहुषु । नूपुरैर्विमलौतह द्वैवैकमनुत्तमम् ॥ २५ ॥ २५ ॥

टी. और अर्द्धचन्द्रमा के समान स्वच्छ ललाट के भूषण और अगरहों बाहु में बिजायत और बाजूबन्द और दोनों चरणों में नूपुर और गले का उत्तम काण्ठ ॥ २५ ॥

मू. अङ्गुलीयकरत्नानि समस्तास्वंगुलीषु च । विश्वकर्मा ददौ तस्यै परशुं चातिनिर्मलम् ॥ २६ ॥

टी. और सब अंगुलियों में जड़ाऊ अँगूठी उनको विश्वकर्मा ने दिया और निर्मल फरसा ॥ २६ ॥

मू. अस्त्राण्यनेकरूपाणि तथा भेद्यंच दंशनम् । अस्नानपङ्कजमालां शिरस्युरसि चापराम् ॥ २७ ॥

टी. और और भी अनेक प्रकार के अस्त्र शस्त्रादि और अभेद दंशन

अर्थात् किसी हथियार से नहीं काटने योग्य वस्त्र भी दिया और शिर
और गले में पहिने के वास्ते निर्मल कमल का माला ॥ २७ ॥

मू. अक्षरजलधिरस्यैषः पद्मजं नातिशोभनम् । हि-
मवान्वाहनं सिंहं रत्नानि विविधानि च ॥ २८ ॥

टी. और हाथ में रखने के वास्ते अति शोभायमान कमल उनको न-
लधि नाम समुद्र ने दिया और हिमवान् पर्वत ने इतरह को रत्न
और स्वचारी के वास्ते सिंह दिया ॥ २८ ॥

मू. दद्यान्मृत्युं सुर्यापानपात्रं धनाधिपः । शेष-
श्च सर्वनागेशो महामणि विभूषितम् ॥ २९ ॥

टी. और कुबेर ने सुर से भरा हुआ पीने का पात्र दिया और शेष-
ध जी जो सब नागों के पति और पृथ्वी की शिर पर उठाये हुये हैं उ-
न्होंने रत्न जटित ॥ २९ ॥

मू. नागहारं ददौ तस्यै धत्ते यः पृथिवीमिमाम् । अ-
न्यैरपि सुरैर्देवीभूषणैरायुधैस्तथा ॥ ३० ॥

टी. नागहार दिया इन महालक्ष्मी को तो अगरह भुजा तो विशेष
धर्म ने वर्णन किये परन्तु हथियारों के धारण करने से हजार
भुजा होती हैं इसमें अष्टादश भुजा उनका विशेष रूप है प्रा-
क्ष्मी और वैष्णवी और शैवी ये त्रिगुण महालक्ष्मी आदि शक्ति
की अवतार हैं यह सब नित्य पूर्वक चैतन्य रहस्य में लिखा है फिर
बह देवी बहुत हथियारों और भूषणों से संयुक्त ॥ ३० ॥

मू. सम्मानिता नना दोचैः साङ्गहासं मुहुर्मुहुः । त-
स्यानादेन घोरोण कृत्स्नमापूरितं नभः ॥ ३१ ॥

टी. होकर बारम्बार प्रसन्नता से बड़े उच्चस्व से गर्ज संयुक्त होती उ-
म के गर्जने से सम्पूर्ण लोक दहल गये किन्तु उनके महाशब्द
से आकाश गूँज गया ॥ ३१ ॥

मू. अभायतातिमहताप्रतिशब्दोमहानभूत।चु-
 सुभुःसकललोकाःसमुद्राश्चचकंपिरे॥३२॥

टी. जिस से सब लोकों में हलचल पड़ गया और साती समुद्र
 कांपने लगे ॥ ३२ ॥

मू. चचालवसुधाधेलुःसकलाश्चमहीधराः।ज-
 येतिदेवाश्चमुदातामुचुःसिंहबाहिनीं॥३३॥

टी. और सम्पूर्ण पृथ्वी हिल गई पर्वत सब डोल गये यह देखकर
 देवता लोग हर्ष संयुक्त उस सिंह बाहनी महालक्ष्मी से बोले कि हे
 देवी आपकी जय हो हमारे शत्रुओं को भय दीजिये ॥ ३३ ॥

मू. तुष्टुवुर्मुनयश्चैनांभक्तिनम्रात्ममूर्त्तयः।दृष्ट्वा
 समस्तसंक्षुब्धंनैलोक्यममरायः॥३४॥

टी. इसी तरह सुनिलोग भी भक्ति पूर्वक देवीजी को प्रणाम कर
 के उनकी स्तुति करने लगे और यह दृष्ट्वा देखकर तीनों लोक
 और जितने राक्षस थे सब व्याकुल हो गये ॥ ३४ ॥

मू. सन्नद्धाखिलसैन्यास्तेसमुत्तस्थुरुदायुधाः।आ-
 किमेतदितिक्रोधादाभाष्यमहिषासुरः॥३५॥

टी. और सब राक्षस लोग अपने अपने अस्त्र शस्त्र लेलेकर यु-
 द्ध करने के वास्ते उपस्थित हो गये और महिषासुर भी मारे क्रोध के
 आश्चर्य से घबराकर ॥ ३५ ॥

मू. अभ्यधावतसंशब्दमशेषैसुरैर्दत्तः।सदृश
 ततोदेवीव्याप्तलोकत्रयंत्विषा॥३६॥

टी. सब असुरों को साथ लेकर जिस तरफ से गर्जने की आवृत्ति
 तीनी ही दौड़ा और वहाँ जाकर महालक्ष्मी को देखा कि उनकी ज्यो-
 ति सम्पूर्ण लोकों में फैल रही है ॥ ३६ ॥

मू. पादाक्रान्त्यानतभुवंकिरोदोल्लिखितांक्षयं

होमिताशेषपातालान्धनुर्व्यानिःस्वनेनतां । ३७

टी. और उनके चलने में पृथ्वी मुक गई है और उनके शिर के किरीट से सम्पूर्ण आकाश प्रकाशमान हो रहा है और उन के धनुष के खींचने की आवाज से सम्पूर्ण लोक और पाताल डोल रहे हैं ॥ ३७ ॥

मू. दिशोभुजसहस्रेणसमन्ताद्याप्यसंस्थितां । तः
तःप्रवृत्तेयुद्धं तयादेव्यासुरदिषां ॥ ३८ ॥

टी. और आप भगवती अपने हजारों भुजा से सब दिशाओं को व्याप्त करके विराजमान हो रही हैं ऐसा रूप उनका देख कर राक्षस लोग उनसे युद्ध करने लगे ॥ ३८ ॥

मू. शस्त्रास्त्रैर्वह्नुधामुक्तैरादीपितदिगंतरं । महि
षासुरसेनानीश्चिह्नुरारव्योमहासुरः ॥ ३९ ॥

टी. उस युद्ध में सब तरह के हथियार चलने की चमक से सब दिशा प्रकाशमान हो रहे थे उस समय महिषासुर के सेनापति चिह्नुर नाम का महा असुर ने भगवती से बहुत युद्ध किया ॥ ३९ ॥

मू. युयुधेचामरश्चान्यैश्चतुरंगवलान्वितः । रथा
नामयुतैःषड्भिरुदग्राव्योमहासुरः ॥ ४० ॥

टी. और चामर नाम असुर भी बहुत से शूरवीर राक्षसों की चतुरंगिणी सेना साथ लेकर बहुत लड़ा और उदग्र नाम असुर साठ हजार रथ अपने साथ लेकर युद्ध करने के वास्ते आया ॥ ४० ॥

मू. अयुधतायुतानाञ्चसहस्रेणमहाहनुः । प
ञ्चाशद्विश्वनियुतैःसिलोमामहासुरः ॥ ४१ ॥

टी. और हनु नाम असुर करोड़ सेना लेकर देवी के साथ लड़ा और असिलोम नाम महा असुर ने पाँच करोड़ सेना लेकर युद्ध किया ॥ ४१ ॥

सू. अयुतानांशतैःषड्विर्वाक्कलयुयुधेरणे । गज
वाजिसहस्रौघैरनेकैःपरिवारितः ॥४२॥४२॥

टी. और वाक्कल नाम असुर साठ लाख असुर लेकर राण
में आया और युद्ध किया और बिड़ाल नाम असुर कितने
हजार हाथी और घोड़े ॥४२॥

सू. वृत्तोरथानांकीट्याचयुद्धेतस्मिन्नयुध्यत । वि
डालारव्योयुतानाञ्चपञ्चाशद्विरथायुतैः ॥४३॥

टी. और एक करोड़ रथ साथ लेकर आया और युद्ध किया
निदान जब सब सेना उसकी काम आई तो फिर पाँच लाख
रथ अपने साथ लेकर ॥४३॥

सू. युयुधेसंयुगेतत्रथानांपरिवारितः । अन्येच
तत्रायुतशोरथनागहयैर्वृताः ॥४४॥४४॥

टी. उस संग्राम में आया और युद्ध किया और भी उस युद्ध में दश
हजार रथ और हाथी और घोड़े साथ में लिये हुवे ॥४४॥

सू. युयुधुसंयुगेदेव्यासहतत्रमहासुराः । को
टिकोटिसहस्रैस्तुरथानादन्तिनातथा ॥४५॥

टी. कितने असुरों ने देवी से युद्ध किया तदनन्तर कोटान
कोट सहस्र रथ और हाथी ॥४५॥

सू. हयानाच्चवृत्तोयुद्धेतत्राभून्महिषासुरः । तोम
रैर्भिदिपालैश्चशक्तिभिर्मुशलैस्तथा ॥४६॥

टी. और घोड़े साथ लेकर उस राण में महिषासुर आया और तोम
र और भिदिपाल और शक्ति और मूशल ॥४६॥

सू. युयुधेसंयुगेदेव्याखड्गैःपरशुपट्टिशैः । केचि
चचिक्षिपुःशक्तीःकेचित्पाशांस्तथापरे ॥४७॥

टी. और खड्ग और फरसा और किर्च इत्यादि हथियारों से

भगवती के साथ लड़ने लगा अर्थात् कोई असुर तो शक्ति और कोई फरसा इत्यादि चलाता था ॥ ४७ ॥

मू. देवींखड्गप्रहारैस्तुतेतांहंतुं प्रचक्रमुः । सापिदे
वीततस्तानिशस्त्राण्यस्त्राणिचण्डिका ॥ ४८ ॥

टी. और और भी नामी असुरलोग देवी के ऊपर खड्ग इत्यादि चलाते थे परन्तु उस चण्डिका देवी ने उन असुरों के हथियारों को ॥ ४८ ॥

मू. लीलयैवप्रचिच्छेदनिजशस्त्रास्त्रवर्षिणी । अ-
नायस्ताननादेवीस्तूयमानासुरर्षिभिः ॥ ४९ ॥

टी. बेपरवाई के साथ खेल की तरह अपने हथियारों से काट कर खाण्ड खाण्ड कर डाला तब देवता और ऋषिलोग आकर देवीजी की स्तुति करने लगे ॥ ४९ ॥

मू. मुमोचासुरदेहेषुशस्त्राण्यस्त्राणिचेश्वरी । सो
पिकुच्छेधुतसरोदेव्यावाहनकेशरी ॥ ५० ॥

टी. और देवीजी उन असुरों के अस्त्र शस्त्र को काट कर उनलोगों के ऊपर अपने हथियारों का वार करने लगीं और उनका वाहन सिंह भी क्रोध से ॥ ५० ॥

मू. चचारासुरसैन्येषुवनेष्विवहुताशनः । निःश्वा-
सान्मुमुचेयांश्चयुद्धमानारणेनिका ॥ ५१ ॥

टी. जिसतरह अग्नि जगै तरफ फैल कर जंगल की जलाकर धार कर देती है उसीतरह असुरों की सेना में वह सिंह बिस्मले लगा और असुरों को मार मार कर गिराने लगा और उस समय अग्नि का देवी की स्वास से ॥ ५१ ॥

मू. तावसद्यःसंभूतागणाःशतसहस्रशः । युयु-
धुस्तेपरशुभिर्भिन्दिपालासिपद्भिः ॥ ५२ ॥

टी. लाखों गंगा उत्पन्न हुवे और वे लोग करखा और भिदिपाल और तलवार ने
गा किंच इत्यादि से असुरों के साथ युद्ध करने लगे ॥ ५२ ॥

मू. नाशयन्तो मुरगणान् देवी शक्त्युपहृताः । अ-
वाद्यन्तपटहान् गणाः शंखांस्तथापरे ॥ ५३ ॥

टी. और असुरों को मारने लगे देवी के प्रभाव से प्रसन्न होकर सब देवता
लोग खुशी का नगारा बजाने लगे और कोई शंख और कोई ॥ ५३ ॥

मू. मृदङ्गं च तथैवान्ये तस्मिन् युद्धमहोत्सवे । ततो
देवी विशूलेन गदया शक्तिरृष्टिभिः ॥ ५४ ॥

टी. उस गंगा के महा उत्सव में मृदंग बजाते थे तब देवी ने विशूल और
गदा और बाणों की दृष्टि से ॥ ५४ ॥

मू. खड्गादिभिश्च शतशो निजघान महासुरान् । पा-
तयामास चैवान्यान्य एतस्वनविमोहितान् ॥ ५५ ॥

टी. और खड्ग इत्यादि से लाखों असुरों को मार डाला और कितनों को
घाटे के शब्द से मोहित कर पृथ्वी पर गिरा दिया ॥ ५५ ॥

मू. असुरान् भुवि पाशेन बद्ध्वा चान्यान कर्षयत् । के-
चिद्विधा कृतास्तीक्ष्णैः खड्गपातैस्तथापरे ॥ ५६ ॥

टी. और कितनों को पाश में बाँधकर खींचकर खड्ग से काट डाला ॥ ५६ ॥

मू. विषोयितानि पातेन गदया भुवि शेरते । वेमु-
श्च केचिदुधिरमुशलेन मृशं हताः ॥ ५७ ॥ •

टी. और कितने असुरों को गदा से मार डाला और कितने उस गदा
की मार से पृथ्वी पर अचेत हो पड़े थे और कितने बारम्बार मूशल
की मार से रक्त वमन करते थे ॥ ५७ ॥

मू. केचिन्निपतिता भूमौ भिन्नाः शूलेन वक्षसि । नि-
रन्तराः शरैर्घेण कृताः केचिद्राणजिरे ॥ ५८ ॥

टी. और कितने छाती में शूल के घाव लगने से और कितने बाणों

के घाय लगने से उस राणाजिर में मोर पड़े थे ॥ ५८ ॥

मू. सेनानुकारिणः प्राणानमुमु चक्षु दशावेनाः। के-
पांचिदाहवञ्छिन्नाश्चिन्नग्रीवास्तथापरे ॥ ५९ ॥

टी. और जो असुरलोग उस राण में सेना के आगे आगे चलते थे वे लोग कितने तो बाणों के लगने से मर गये और कितनों की भुजा कट गई और कितनों का गला छिद गया ॥ ५९ ॥

मू. शिरांसिपेतुरन्येषामन्येमध्ये विदारिताः। वि-
च्छिन्नजंघास्तपरेपेतुरुर्व्यामहासुराः ॥ ६० ॥

टी. और कितनों का शिर कटकर गिर पड़ा और कितने राक्षसलोग आधे धड़ से कटकर मर गये और कितने जाँघ कट जाने से पृथ्वी पर गिरे पड़े थे ॥ ६० ॥

मू. एकवाह्वश्चिराणाः केचिदेव्यादिधारुताः। छि-
न्येपिचान्येशिरसिपतिताः पुनरुत्थिताः ॥ ६१ ॥

टी. और किसी की एक ही बाँह कटकर गिरी पड़ी थी और किसी की आँख ही फूट गई थी और किसी का एक ही पाँव कट गया था और किसी को देवी ने काटकर दो आधा कर दिया था और कितने शिर कट जाने पर भी गिरकर फिर उठके दिखे ॥

मू. कवन्धायुयुधुर्देव्यागृहीतपरमायुधाः। ननृ-
तुश्चापरेतत्रयुद्धेतूर्यलयाञ्जिताः ॥ ६२ ॥

टी. कवन्ध हथियार लेकर देवी से युद्ध करते थे और उस युद्ध में चौताला के साथ नृत्य करते थे ॥ ६२ ॥

मू. कवन्धाश्छिन्नशिरसः खड्गशक्त्यष्टिपाणयः।
तिष्ठतिष्ठेतिभाषन्तो देवीमन्ये महासुराः ॥ ६३ ॥

टी. और कितने असुरों के शिर तो कट गये थे परन्तु कवन्ध और खड्ग शक्त्यष्टि जिसके दोनों तरफ धार होती है हाथ में लिये हुवे तिष्ठ तिष्ठ कहने हुवे भगवती से युद्ध करते थे ॥ ६३ ॥

मू. पातितैरथनागाश्चैरसुरैश्च वसुन्धरा । अग-
म्यासाभवत्तत्र यत्राभूत्समहारणः ॥ ६४ ॥

टी. जिस स्थान पर देवी से युद्ध हुआ था वह स्थान हाथी और घोड़ों
और रथ और असुरों के कटे हुये शिरों से भरा हुआ था ॥ ६४ ॥

मू. शोणितौघा महानद्यः सद्यस्तत्र विसुस्तुवुः । म-
ध्ये चासुरसैन्यस्य वाणासुरवाजिनां ॥ ६५ ॥

टी. हाथी और घोड़ों और असुरों के रुधिर से उस स्थान पर बड़े
जोर शोर से एक दरिया बह निकला ॥ ६५ ॥

मू. क्षाणतन्महासैन्यमसुराणां तथा म्बिका । नि-
न्येक्षयं यथा वह्निस्तृणादारुमहाचयं ॥ ६६ ॥

टी. और जिस तरह सूखे हुये तृण और काष्ठ के ढेर को अग्नि बहुत
जल्द जला देती है उस तरह अम्बिका देवी ने असुरों की सेना को
एक क्षण मात्र में नाश कर डाला ॥ ६६ ॥

मू. सचसिंहो महानादमुत्सृजधुतकेशरः । शरी-
रेभ्योऽभरारीणामसूनिवविचिन्वति ॥ ६७ ॥

टी. और जब वह सिंह देवी का बाहन शिर उठाकर गर्जता तो ऐसा जल
पड़ता कि मानौ उसकी गर्ज ने असुरों का प्राण निकाल लिया ॥ ६७ ॥

मू. देव्या गणैश्च तैस्तत्र कृतं युद्धं तथा सुरैः । यथै-
षान्तुष्टुवुर्देवाः पुष्पवृष्टिमुचोदिवि ॥ ६८ ॥

टी. और देवी के गण लोग जो असुरों से युद्ध करते थे उनके ऊपर दे-
वता लोग प्रसन्न होकर सुमन वृष्टि करते थे ॥ ६८ ॥

इति श्री मार्कण्डेयपुराणे सावर्णि के
मन्वन्तरे देवी माहात्म्ये महिषासुर सै-
न्यवधौ नाम ॥ ८२ ॥

ادھیائے بیاسی

دیوی مانتھ

۱۔ سیدھا رکھ کتے ہیں کہ ہے راجا سترتھ زمانہ گذشتہ میں اُسٹرون کا مالک مہکھا سترتھا
 اور دیوتوں کے مالک اندر تھے اُسوقت میں دیوتوں اور اُسٹرون میں بڑی لڑائی ہوئی اور
 وہ لڑائی تئیس برس تک رہی۔ ۲۔ جب راجپسوں نے دیوتاؤں پر فتح پایا اور مہکھا ستر
 اندر ہوا۔ ۳۔ تب دیوتاؤں اُسٹرون سے عاجز آکر برہما جی کے پاس گئے اور وہاں سے
 برہما جی کو آگے کر کے جہان مہادیو جی اور نشن بھگوان تھے وہاں گئے۔ ۴۔ اور ان سے
 لڑائی کا سبب حال یعنی مہکھا ستر کا فتح پانا اور اندر ہونا سبب مفصل کہہ سنایا۔
 ۵۔ اور کہا کہ ہے بھگوان۔ سوچ اور اندر اور اگن اور بایو اور چندرمان اور جہراج
 سب دیوتوں کا ادھکار خود مہکھا ستر کرتا ہے۔ ۶۔ اور سب دیوتاؤں کو اسے سوگ سے
 نکال دیا اب دیوتاؤں آدمیوں کی طرح پریشان ہو کر زمین پر مارے مارے پھرتے ہیں۔
 ۷۔ اے مہاراج اب مہکھا ستر کی زیادتی حد سے زیادہ ہو چکی اب جسمیں وہ مارا جا رہا ہے
 وہ تذبذب کیجیے۔ ۸۔ یہ حال سنکر مہادیو جی اور نشن بھگوان کا منہ غصہ کے مارے تھتا گیا
 ۹۔ اور اسی غصہ کی حالت میں برہما اور نشن اور مہادیو جی کے منہ سے ایک شعلہ نکلا۔
 ۱۰۔ اور اسی وقت سب دیوتاؤں کے جسم سے بھی ایک شعلہ نکلا اور وہ سب شعلہ مل کر
 ایک ہو گیا۔ ۱۱۔ پھر وہ سب شعلہ مثل ایک پہاڑ آتشی کے ہو گیا کہ جسکی روشنی چاروں طرف
 پھیل گئی۔ ۱۲۔ پھر وہ شعلہ کا انبار جو سب دیوتاؤں کے جسم سے نکلا تھا اور جس سے
 آئینوں کوک روشن ہو گئے تھے ایک استری کی صورت بن گیا اور چونکہ اُس صورت میں رجوگن
 اور توگن اور ستوگن کا بھی شعلہ ملا ہوا تھا اسوجہ سے وہ تینوں گن والی استری اٹھارہ چھٹی
 سے ظاہر ہو کر مہا چھی کیلائی۔ ۱۳۔ چنانچہ مہادیو جی کے پیچ سے مہا چھی کا منہ سفید یعنی گورا
 ہوا اور جہراج جی کے پیچ سے مہرے بال سیاہ ہوئے اور شیام رُپ نشن بھگوان کے پیچ سے

انکی اٹھارہ بوجھا شیاں رنگ ہوئیں - ۱۴ اور چندرمان کے تیج سے دونوں چھاتیان گوری ہوئیں اور اندر کے تیج سے درمیان کا جسم سرخ رنگ ہوا اور برن کے تیج سے جانگم اور ہردی اور پر تھوی کے تیج سے نیچے کا جسم ہوا - ۱۵ اور برمھاجی کے تیج سے دونوں سر سرخ رنگ ہوئے اور سورج کے تیج سے دونوں پیروں کی انگلیاں اور بسو کے تیج سے دونوں ماتھوں کی انگلیاں اور کیر کے تیج سے ناک ہوئی - ۱۶ اور دچھ پر جاپت کے تیج سے سب دانت اور اگن کے تیج سے تین آنکھیں ہوئیں - ۱۷ اور دونوں سمنڈھیا کے تیج سے دونوں بھون اور باتو کے تیج سے دونوں کان ہوئے الغرض اس طرح دیوتوں کے تیج سے مہا لچھی جی پیدا ہوئیں - ۱۸ دیوتا لوگ جو مہکھا شری کی زیادتی سے سخت عاثر تھے مہا لچھی جی کو دیکھ کر بہت خوش ہوئے - ۱۹ پھر اس وقت شری مہا دیو جی نے اپنے شریل سے ایک دوسرا شول پیدا کر کے دیوی کو دیا اور شری کرشن چندر مہاراج نے اپنے چکر سے ایک چکر پیدا کر کے دیا - ۲۰ اور برن نے ایک سنگھ اور اگن نے اپنی شکت اور باتو نے کمان اور تیروں سے بھرے ہوئے دو ترکش دیے - ۲۱ اور دیوتوں کے مالک اندر نے اپنے بجر سے ایک بجر اور ایراوت مائتھی پر سے آمار کر ایک گھنٹہ مہا لچھی کو دیا - ۲۲ اور جہراج نے اپنے کال دند سے دند پیدا کر کے دیا اور برن نے مکند اور دچھ پر جاپت نے اکیاون دانہ کالا اور برمھاجی نے مکندل دیا - ۲۳ اور سورج نے اُنکے سب روم کو پ یعنی مسامات میں اپنی روشنی بھر دی اور کال نے دھال اور تلوار دی - ۲۴ اور چھیر سندر نے بہت اچھا ہار دیا اور بہت عمدہ لباس اور چڑامن (نام جواہر) اور دونوں کانوں کے کندل اور پٹنجی - ۲۵ اور بہت صاف نصف چاند کے مانند پیشانی کا زیور اور تعویذ اور اٹھارہ بازوؤں کا بازو بند اور پازیب اور گلے کا بہت اچھا گنٹھا - ۲۶ اور سب انگلیوں میں جڑاؤ انگلی دیا اور بسو کو ماسنے بہت اچھا پھر سا دیا - ۲۷ علاوہ اسکے اور بھی بہت ہتھیار مثل تیر تلوار وغیرہ کے دیا اور ایک بجنتر (خود) بھی جیسر کوئی ہتھیار اثر نگری دیا اور سر اور گلے میں پتے کے واسطے اچھے کمل کے پھول لگا مالا - ۲۸ اور ماتھ میں رکھنے کے واسطے اچھا کمل کا پھول جلدھ سندر نے دیا - اور جاکو ہار نے بہت طرح کے جواہرات اور سواری کے واسطے ایک سنگھ دیا - ۲۹ اور کیر نے شراب سے بھر ہوا پیسے کا برتن دیا اور شیش جی جو تمام ناگوں کے مالک

اور تمام زمین کو اپنے سر پر اٹھائے ہوئے ہیں انھوں نے جو اسرات کا جزاؤں - ۳۵ ناگ مار
 دیا ان مہا پتھی جی کے اٹھارہ بھجوا تھیں اصل میں جنکا بیان اوپر کر چکا ہوں لیکن جو وقت ہتھیار
 دھارن کرتی ہیں اسوقت ہزار بھجوا ہو جاتی ہیں اور براہمی اور پشیموی اور شیموی یہ تینوں
 گن والی مہا پتھی جی اور شکت کی آوارہ ہیں یہ دیوی بہت سے ہتھیار اور زیورون کو دھارن
 کر کے دیوتوں کے - ۳۱ ساتھ ہو کر کئی بار ایسے گرج کے ساتھ ہنسن کہ اس گرجنے
 سے آسمان گونج اٹھا - ۳۲ اور تینوں لوگ دہل گئے اور ساتوں سمندر کانپ اٹھے -
 ۳۳ اور زمین ہل گئی اور پہاڑ اکھڑ گئے یہ حال دیکھ کر دیوتاؤں خوش ہو کر اس سنگھ باہنی مہا پتھی
 سے بولے کہ ہر دیوی آپ کی جی خواہ اب ایسا کیجیے کہ جس سے ہمارے دشمنوں کی چھوڑ
 ۳۴ اور اسی طرح مین لوگ بھی بھکت کے ساتھ پر نام کر کے انکی اسنت کرنے لگے - یہ
 دیکھ کر تینوں لوگ اور تمام راجپس گھبرا گئے - ۳۵ تب سب راجپس ہتھیار باندھ لیا
 جدہ کرنے کے واسطے مستعد ہو گئے - چنانچہ مکھیا مٹر مارے غصہ کے گھبرا کر - ۳۶ سب
 مٹھروں کو ساتھ لیکر جعفر سے گرجنے کی آواز آتی تھی دوڑا اور دھان جا کر مہا پتھی جی کو دیکھا
 کہ انکی روشنی تینوں لوگ میں پھیلی ہوئی ہے - ۳۷ اور ان کے چلنے سے زمین جھٹک جاتی
 ہے اور انکی بیشائی کی قوت سے تمام آکاش پرکاشن ہو رہا ہے اور انکے دھنکھنے کی آواز
 سے سب لوگ اور پناہل ہل رہے ہیں - ۳۸ انھوں نے بھگوتی اپنے ہزاروں بھجوا سے سب
 دشاؤں کو بیات کر کے براجمان تھیں وہ روپ انکا دیکھ کر راجپس لوگ ان سے جدہ کرنے لگے
 ۳۹ اس جدہ میں سب طرح کے ہتھیاروں کی چمک چاروں طرف پھیلی ہوئی تھی اسوقت
 پہلے مکھیا مٹر کے سپہ سالار چکر پھر نام ہمارا راجپس نے بھگوتی سے بڑا جدہ کیا -
 ۴۰ پھر چاند نام راجپس بہت سے پیر راجپس اور باہمی اور گھوڑے اور پیریل سپاہ کو
 ساتھ لیکر بہت تڑا پھر اگر نام راجپس ساتھ ہزار رہے اپنے ساتھ لیکر جدہ کرنے کے واسطے
 آیا - ۴۱ اور بنو نام مہا مٹر ایک کروڑ فوج لیکر دیوی کے ساتھ لڑا اور اسی نام مہا مٹر
 پانچ کروڑ فوج لیکر لڑا - ۴۲ اور باہکل نام مٹر ساتھ لاکھ فوج لیکر جنگ گاہ میں آکر لڑا
 اور پیرال نام مٹر کی ہزار باہمی اور گھوڑے - ۴۳ اور ایک کروڑ رہے اپنے ساتھ لیکر
 آیا اور لڑا جب سب فوج اسکی قتل ہو گئی تو پھر پانچ لاکھ رہے ساتھ لیکر لڑا -
 ۴۴ اور جی کتنے مٹر لوگ اس زرنگاہ میں دس دس ہزار رہے اور باہمی گھوڑے ساتھ لیکر -

۴۵ دیوی جی سے لڑے بنیاس کے ہزاروں کروڑ رتھ اور ماتھی - ۴۶ اور گھوڑے ساتھ
 لیکر مہکھا مہر رن میں آپہنچا اور توڑ اور بھند پال اور سانگ اور موسل - ۴۷ اور تلواریں
 اور پھر سا اور کرچ وغیرہ ہتھیاروں سے جھڑ کرنے لگا - کوئی امڑ برہمچاری اور کوئی امڑ پھر سا
 وغیرہ سے لڑتا تھا - ۴۸ اور اور بھی بڑے بڑے امڑ لوگ دیوی جی کے اوپر تلوار وغیرہ ہتھیار
 چلاتے تھے اور اُس جھڈ کا دینی اُن امڑوں کے ہتھیاروں کو ۴۹ بے پروائی سے کھیل کھیل
 اپنے ہتھیاروں سے کاٹ کر ٹکڑے ٹکڑے کر ڈالا اسوقت دیوتا اور رکھ لوگ دیوی جی کی
 استیثت کرنے لگے - ۵۰ الفرض دیوی جی امڑوں کے ہتھیاروں کو کاٹ کر اُن لوگوں کے
 اوپر اپنا وار کرنے لگیں اور دیوی جی کا باہن سنگھ جی مارے غصہ کے - ۵۱ جس طرح
 آگ پھیل کر تمام جنگل کو جلا کر خاک سیاہ کر دیتی ہے اسی طرح امڑوں کی فوج میں گھوم گھوم کر
 اُن ہتھیاروں کو خاک و خون میں ملاتا تھا اور اسوقت دیوی جی کے منہ اوزار سے جو سانس
 نکلتی تھی - ۵۲ اُس سے ہزاروں گن پیدا ہوتے تھے اور وہ گن لوگ پھر سا اور
 ارا اور تیغ اور کرچ وغیرہ سے امڑوں کے ساتھ جھڑ کرتے تھے - ۵۳ اور ان کو مارنے
 اور دیوی جی کا پر بھاد دیکھ کر دیوتا لوگ خوشی کا تقارہ بجاتے تھے اور کوئی سنگھ جاتا تھا -
 ۵۴ اور کوئی اس لڑائی کی خوشی میں مہرنگ بجاتا تھا پھر دیوی جی نے ستول اور گدا اور سیر
 کی بوچھار - ۵۵ اور تلوار وغیرہ سے لاکھوں امڑوں کو مار ڈالا اور کتنوں کو کھنٹے کی آوا
 سے ڈرا کر زمین پر گرادیا - ۵۶ اور کتنوں کو کند سے کھینچ کر تلوار سے کاٹ ڈالا -
 ۵۷ اور کتنوں کو گدا سے مار ڈالا اور کتنے گدا کی مار سے پیچھے ہٹ کر زمین پر گر پڑے اور کتنے
 موسل کی مار سے خون قے کرنے لگے - ۵۸ اور کتنے چھاتی پر برہمچاری گئے اور کتنے
 تیروں کے زخم کاری گئے سے اُس زرمگاہ میں مرے پڑے تھے - ۵۹ اور جو امڑ
 لوگ اُس لڑائی میں فوج کے آگے آگے چلتے تھے وہ لوگ کتنے تو تیروں کے گھنے سے
 مر گئے اور کتنوں کے بازو کٹ گئے اور کتنوں کے گلے چھید گئے - ۶۰ اور کتنوں کے سر
 کٹ کر زمین پر گر پڑے اور کتنے آدھے جسم سے کٹ کر مر گئے اور کتنے جانگم کٹ جانے سے
 زمین پر گرے پڑے تھے - ۶۱ اور کسی کا ایک ہی بازو کٹ کر زمین پر گر پڑا تھا اور کسی
 آنگھ پھوٹ گئی تھی اور کسی کا ایک ہی پیر کٹ گیا تھا اور کسی کو دیوی جی نے کاٹ کر دو آدھا
 کر دیا تھا اور کسی کا سر ہی کاٹ ڈالا تھا - ۶۲ لیکن وہ سر کٹا سر کٹ جانے پر بھی مرن

جسم سے اٹھ کر ہتھیار لیکر دیوی جی سے جڈہ کرتا تھا اور اُس جڈہ میں چوتالے کے ساتھ
 ۴۳ ناچتا تھا ۴۴ اور کتنے اُسٹرون کے سر تو کٹ گئے تھے مگر صرف جسم ہی سے ماتھو نہیں
 برچھا اور دو دھار ایلوار لیے ہوئے للکار للکار کر بھگوتی سے جڈہ کرتے تھے -
 ۴۴ جس جگہ دیوی جی کے ساتھ اُسٹرون سے لڑائی ہوئی تھی وہ جگہ ماتھی اور گھوڑوں
 اور اُسٹرون کے کٹ کٹ کر گرنے سے تمام بھری ہوئی تھی - ۴۵ اور اُس مقام پر
 ماتھی اور گھوڑوں اور راجھسٹون کے خون سے بڑے زور و شور کا ایک دریا بہتا تھا -
 ۴۶ اور حبطرچ سوکھی ہوئی گھاس اور لکڑی کے انبار کو آگ ایک دم میں جلا دیتی ہی
 اسی طرح ان راجھسٹون کی فوج کو دیوی جی نے ایک ساعت میں قتل کر ڈالا -
 ۴۷ اور دیوی جی کی سواری کا سنگھ بھی جسوقت گر جاتا تھا اسوقت مارے خوف کے
 راجھسٹون کی جان نکل جاتی تھی - ۴۸ اور جسوقت دیوی جی کے گن لوگ راجھسٹون
 سے جڈہ کرتے تھے اسوقت دیوتا لوگ خوش ہو کر ان کے اوپر آسمان سے پھوگولن کا
 مینہ برساتے تھے - فقط -

جلد دوسری تمام ہوئی

بقلم بندہ سوامی دیال

जिल्द दूसरी समाप्त हुई

1693



1693



1693;U

الف $\frac{1}{19}$

~~$\frac{2}{22}$~~

~~الف $\frac{1}{11}$~~

7/1

